इस कुर्आन मजीद और उस के अर्थों का अनुवाद तथा व्याख्या के छापने का आदेश

(सऊदी अरब के बादशाह)

हरमैन शरीफ़ैन सेवक किंग सलमान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद ने दिया।

وقف لله تعالى من خادم الحرمين الشّريفين
الملك سلمان بن عبد العزيز آل سعود
ولا يجوز بيعه

يوزّع مجّانًا

यह अनुवाद हरमैन शरीफ़ैन सेवक
किंग सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
की ओर से अल्लाह के वास्ते वक़्फ़ है।
और इसे बेचने की अनुमती नहीं है।

मुफ़्त में बांटा जाता है।

कुर्आन मजीद

और उस के अर्थों का
हिन्दी भाषा में अनुवाद
और व्याख्या।

अनुवाद और व्याख्या मौलाना अज़ीज़ुल हक़्क़ उमरी

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

مقدمة

بقلم معالي الشيخ الدكتور
عبد اللطيف بن عبد العزيز بن عبد الرحمن آل الشيخ
وزير الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد
المشرف العام على المجمع

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ﴾.
والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلّم القرآن وعلّمه».

أما بعد:

فإنفاذاً لتوجيهات خادم الحرمين الشريفين، الملك سلمان بن عبدالعزيز آل سعود، -حفظه الله-، بالعناية بكتاب الله، والعمل على تيسير نشره، وتوزيعه بين المسلمين، في مشارق الأرض ومغاربها، وتفسيره، وترجمة معانيه إلى مختلف لغات العالم.

وإيماناً من وزارة الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية بأهمية ترجمة معاني القرآن الكريم إلى جميع لغات العالم المهمة تسهيلاً لفهمه على المسلمين الناطقين بغير العربية، وتحقيقاً للبلاغ المأمور به في قوله ﷺ: «بلّغوا عني ولو آية».

وخدمة لإخواننا الناطقين باللغة الهندية يطيب لمجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة أن يقدم للقارئ الكريم هذه الترجمة إلى اللغة الهندية التي أعدَّها الشيخ عزيز الحق عُمَري، وقام بالإشراف عليها ومراجعتها من قبل المجمع الأستاذ الدكتور محمد الأعظمي، وقام بالتدقيق والمراجعة النهائية الدكتور سعيد أحمد حياة المشرَّفي.

ونحمد الله سبحانه وتعالى أن وفق لإنجاز هذا العمل العظيم الذي نرجو أن يكون خالصاً لوجهه الكريم، وأن ينفع به الناس.

إننا لندرك أن ترجمة معاني القرآن الكريم -مهما بلغت دقتها- ستكون قاصرة عن أداء المعاني العظيمة التي يدل عليها النص القرآني المعجز، وأن المعاني التي تؤديها الترجمة إنما هي حصيلة ما بلغه علم المترجم في فهم كتاب الله الكريم، وأنه يعتريها ما يعتري عمل البشر كلَّه من خطأ ونقص.

ومن ثم نرجو من كل قارئ لهذه الترجمة أن يوافي مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة النبوية بما قد يجده فيها من خطأ أو نقص أو زيادة للإفادة من الاستدراكات في الطبعات القادمة إن شاء الله.

والله الموفق، وهو الهادي إلى سواء السبيل، اللَّهُمَّ تقبل منا إنك أنت السميع العليم.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

प्राक्कथन

आदर्णीय शैख़ डॉ
अब्दुल लतीफ बिन अबदुल अज़ीज़ बिन अब्दुर रहमान आलुश्शैख़
इस्लामी कार्यों, प्रचार एवं प्रसार
मंत्री, एवं प्रधान निरीक्षक
किंग फ़हद कुर्आन प्रिंटिंग कॉम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा

सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का अपनी किताब में कथन हैः (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।)

और रहमत तथा सलाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम हैं। अर्थात हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। जिन का कथन हैः «तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुर्आन सीखता और सिखाता है।»

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सलाम के पश्चात्‌:

हरमैन शरीफ़ैन सेवकः शाह सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद (अल्लाह उन की रक्षा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुर्आन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवाद एंव व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफ़ैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुर्आन के अर्थों के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुर्आन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथनः «मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।» के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम "शाह फ़हद कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरा" की ओर से पूरे कुर्आन के अर्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो॰ मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी के संरक्षण में, मौलाना अज़ीज़ुल हक़्क़ उमरी ने तैयार किया है। और कुर्आन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफ़ी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभांतित होंगे।

हम मानते हैं कि कुर्आन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थों को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि कुर्आन अपनी वर्णन शैली में भी चमत्कार है। अतः अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने कुर्आन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से किंग फ़हद कुर्आन प्रिंटिंग कॉम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा

King Fahd Qur'an printing Complex,
Madina Munawarah, K. S. A.

को अवगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये। अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

हे हमारे पालनहार! हम से स्वीकार कर ले, तू ही सब सुनने वाला और जानने वाला है।
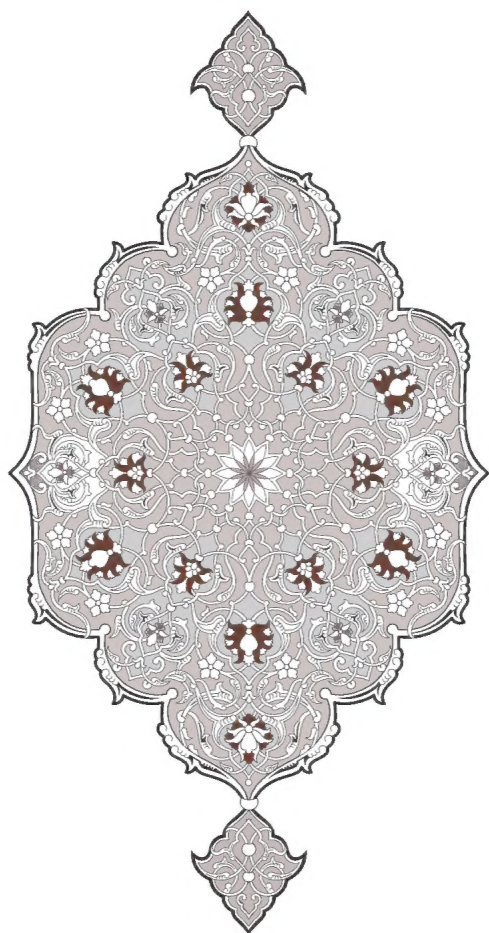
सूरह फ़ातिहा - 1

सूरह फ़ातिहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- यह सूरह आरंभिक युग में मक्का में उतरी, जो कुर्आन की भूमिका के समान है। इसी कारण इस का नाम ((सूरह फ़ातिहा)) अर्थातः "आरंभिक सूरह" है। इस का चमत्कार यह है कि इस की सात आयतों में पूरे कुर्आन का सारांश रख दिया गया है। और इस में कुर्आन के मौलिक संदेशः तौहीद, परलोक तथा रिसालत के विषय को संक्षेप में समो दिया गया है। इस में अल्लाह की दया, उस के पालक तथा पूज्य होने के गुणों को वर्णित किया गया है।
- इस सूरह के अर्थों पर विचार करने से बहुत से तथ्य उजागर हो जाते हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि सागर को गागर में बंद कर दिया गया है।
- इस सूरह में अल्लाह के गुण-गान तथा उस से प्रार्थना करने की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह की सराहना और प्रशंसा किन शब्दों से की जाये। इसी प्रकार इस में बंदों को न केवल वंदना की शिक्षा दी गई है बल्कि उन्हें जीवन यापन के गुण भी बताये गये हैं।
- अल्लाह ने इस से पहले बहुत से समुदायों को सुपथ दिखाया किन्तु उन्हों ने कुपथ को अपना लिया, और इस में उसी कुपथ के अंधेरे से निकलने की दुआ है। बंदा अल्लाह से मार्ग-दर्शन के लिये दुआ करता है तो अल्लाह उस के आगे पूरा कुर्आन रख देता है कि यह सीधी राह है जिसे तू खोज रहा है। अब मेरा नाम लेकर इस राह पर चल पड़।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ١

1. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٢

2. सब प्रशंसायें अल्लाह[1] के लिये हैं,

1 ((अल्लाह)) का अर्थः "हक़ीक़ी पूज्य" है। जो विश्व के रचयिता विधाता के लिये विशेष है।

जो सारे संसारों का पालनहार[1] है।

3. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्[2] है।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

4. जो प्रतिकार[3] (बदले) के दिन का मालिक है।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝

5. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता माँगते[4] हैं।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝

---

1 "पालनहार होने" का अर्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की रचना कर के उस के प्रतिपालन की ऐसी विचित्र व्यवस्था की है कि सभी को अपनी आवश्यकता तथा स्थिति के अनुसार सब कुछ मिल रहा है। और विश्व का यह पूरा कार्य, सूर्य, वायु, जल, धरती सब जीवन की रक्षा एवं जीवन की प्रत्येक योग्यता की रखवाली में लगे हुऐ हैं, इस से सत्य पूज्य का परिचय और ज्ञान होता है।

2 अर्थात वह विश्व की व्यवस्था एवं रक्षा अपनी अपार दया से कर रहा है, अतः प्रशंसा और पूजा के योग्य भी मात्र वही है।

3 प्रतिकार (बदले) के दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है। आयत का भावार्थ यह है कि सत्य धर्म प्रतिकार के नियम पर आधारित है। अर्थात जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। जैसे कोई जौ बोकर गेहूँ की, तथा आग में कूद कर शीतल होने की आशा नहीं कर सकता, ऐसे ही भले, बुरे कर्मों का भी अपना स्वभाविक गुण और प्रभाव होता है। फिर संसार में भी कुकर्मों का दुष्परिणाम कभी कभी देखा जाता है। परन्तु यह भी देखा जाता है कि दुराचारी, और अत्यचारी सुखी जीवन निर्वाह कर लेता है, और उसकी पकड़ इस संसार में नहीं होती, इस लिये न्याय के लिये एक दिन अवश्य होना चाहिये। और उसी का नाम "क़्यामत" (प्रलय का दिन) है।
"प्रतिकार के दिन का मालिक" होने का अर्थ यह है कि संसार में उस ने इन्सानों को भी अधिकार और राज्य दिये हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब अधिकार उसी का रहेगा। और वही न्याय पूर्वक सब को उन के कर्मों का प्रतिफल देगा।

4 इन आयतों में प्रार्थना के रूप में मात्र अल्लाह ही की पूजा और उसी को सहायतार्थ गुहारने की शिक्षा दी गई है। इस्लाम की परिभाषा में इसी का नाम "तौहीद" (एकेश्वरवाद) है। जो सत्य धर्म का आधार है। और अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी अन्य देवी देवता आदि को पुकारना, उस की पूजा करना, किसी प्रत्यक्ष साधन के बिना किसी को सहायता के लिये गुहारना, क्षचवम अथवा किसी व्यक्ति और वस्तु में अल्लाह का कोई विशेष गुण मानना आदि एकेश्वरवाद (तौहीद) के विरुद्ध है जो अक्षम्य पाप है। जिस के साथ कोई पुण्य का कार्य मान्य नहीं।

6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।

7. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया।[1] उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप[2] हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

---

1 इस आयत में सुपथ (सीधी राह) का चिन्ह यह बताया गया है कि यह उन की राह है जिन पर अल्लाह का पुरस्कार हुआ। उन की नहीं जो प्रकोपित हुये, और न उन की जो सत्य मार्ग से बहक गये।

2 "प्रकोपित" से अभिप्राय वह हैं जो सत्य धर्म को जानते हुये, मात्र अभिमान अथवा अपने पूर्वजों की परम्परागत प्रथा के मोह में अथवा अपनी बड़ाई के जाने के भय से नहीं मानते।

"कुपथ" (गुमराह) से अभिप्रेत वह हैं जो सत्य धर्म के होते हुऐ उस से दूर हो गये और देवी देवताओं आदि में अल्लाह के विशेष गुण मान कर उन को रोग निवारण, दुःख दूर करने और सुख संतान आदि देने के लिये गुहारने लगे।

सूरह फ़ातिहा का महत्वः

इस सूरह के अर्थों पर विचार किया जाये तो इस में और कुर्आन के शेष भागों में संक्षेप तथा विस्तार जैसा संबंध है। अर्थात कुर्आन की सभी सूरतों में कुर्आन के जो लक्ष्य विस्तार के साथ बताये गये हैं सूरह फ़ातिहा में उन्हीं को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। यदि कोई मात्र इसी सूरह के अर्थों को समझ ले तो भी वह सत्य धर्म तथा अल्लाह की इबादत (पूजा) के मूल लक्ष्यों को जान सकता है। और यही पूरे कुर्आन के विवरण का निचोड़ है।

सत्य धर्म का निचोड़ः

यदि सत्य धर्म पर विचार किया जाये तो उस में इन चार बातों का पाया जाना आवश्यक हैः

1- अल्लाह के विशेष गुणों की शुद्ध कल्पना।

2- प्रतिफल के नियम का विश्वास। अर्थात जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु का एक स्वभाविक प्रभाव होता है इसी प्रकार कर्मों के भी प्रभाव और प्रतिफल होते हैं। अर्थात् सुकर्म का शुभ, और कुकर्म का अशुभ फल।

3- मरने के पश्चात् आख़िरत में जीवन का विश्वास। कि मनुष्य का जीवन इसी संसार में समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि इस के पश्चात् भी एक जीवन है।

4- कर्मों के प्रतिकार (बदले) का विश्वास।

सूरह फ़ातिहा की शिक्षाः

सूरह फ़ातिहा एक प्रार्थना है। यदि किसी के दिल तथा मुख से रात दिन यही दुआ निकलती हो तो ऐसी दशा में उस के विचार तथा अक़ीदे (आस्था) की क्या

स्थिति हो सकती है! वह अल्लाह की सराहना करता है, परन्तु उस की नहीं जो वर्णों, जातियों तथा धार्मिक दलों का पूज्य है। बल्कि उस की जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है। इस लिये वह पूरी मानव जाति का समान रूप से प्रतिपालक तथा सब के लिये दयालु है।

फिर उस के गुणों में से दया और न्याय के गुणों ही को याद करता है, मानो अल्लाह उस के लिये सर्वथा दया और न्याय है फिर वह उसके सामने अपना सिर झुका देता है और अपने भक्त होने का इक़्रार करता है। वह कहता हैः (हे अल्लाह!) मात्र तेरे ही आगे भक्ति और विनय के लिये सिर झुक सकता है। और मात्र तू ही हमारी विवशता और आवश्यक्ता में सहायता का सहारा है। वह अपनी पूजा तथा प्रार्थना दोनों को एक के साथ जोड़ देता है। और इस प्रकार सभी संसारिक शक्तियों और मानवी आदेशों से निश्चिन्त हो जाता है। अब किसी के द्वार पर उस का सिर नहीं झुक सकता। अब वह सब से निर्भय है। किसी के आगे अपनी विनय का हाथ नहीं फैला सकता। फिर वह अल्लाह से सीधी राह पर चलने की प्रार्थना करता है। इसी प्रकार वह वंचना और गुमराही से शरण (बचाव) की माँग करता है। मानव की विश्व व्यापी बुराई से, वर्ग तथा देश और धार्मिक दलों के भेद भाव से ताकि विभेद का कोई धब्बा भी उसके दिल में न रहे।

यही वह इन्सान है जिस के निर्माण के लिये क़ुर्आन आया है।

(देखियेः "उम्मुल किताब" - मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

इस सूरह की प्रधानताः

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि जिब्रील फ़रिश्ता (अलैहिस्सलाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आकाश से एक कड़ी आवाज़ सुनाई दी। जिब्रील ने सिर ऊपर उठाया, और कहाः यह आकाश का द्वार आज ही खोला गया है। आज से पहले यह कभी नहीं खुला। फिर उस से एक फ़रिश्ता उतरा। और कहा कि यह फ़रिश्ता धरती पर पहली बार उतरा है। फिर उस फ़रिश्ते ने सलाम किया, और कहाः आप दो "ज्योती" से प्रसन्न हो जाईये, जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गईं: "फ़ातिहतुल किताब" (अर्थातः सूरह फ़ातिहा), और सूरह "बक़रः" की अन्तिम आयतें। आप इन दोनों का कोई भी शब्द पढ़ेंगे तो उस में जो भी है वह आप को प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 806)

और सहीह हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन", "सब्अ मसानी" (अर्थात सूरह फ़ातिहा), और महा क़ुर्आन है। जो विशेष रूप से मुझे प्रदान की गई है। (सहीह बुख़ारी, 4474)। इसी कारण हदीस में आया है कि जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े उस की नमाज़ नहीं होती। (बुख़ारी- 756, मुस्लिम- 394)।

सूरह बक़रह - 2

सूरह बक़रह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्‌नी है, इस में 286 आयतें हैं।

- यह सूरह क़ुर्आन की सब से बड़ी सूरह है। इस के एक स्थान पर "बक़रह" (अर्थात्: गाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस की आयत 1 से 21 तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे।
- आयत 22 से 29 तक में सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं। और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 39 तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत 40 से 123 तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही हैं जिन की भविष्यवाणी और उन पर ईमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर ईमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं हैं। वह अरबों में पैदा हुये हैं, इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत 124 से 167 तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इस्माईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। और उन्हों ने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की

प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक क़ुर्आन के साथ भेजा।

- आयत 168 से 242 तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबन्धित हैं। और कुछ मूल आस्थावों का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत 243 से 283 तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र काबा को मुश्रिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा ब्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 284 से 286 तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के ईमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद-भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाये। इस लिये अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्हों ने ऐसी दुआयें कीं जो उन के ईमान को उजागर करती हैं।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बक़रः पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है। (सहीह मुस्लिम- 780)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. अलिफ, लाम, मीम।

الٓمّٓ ۚ

2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ

3. जो ग़ैब (परोक्ष)[1] पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

1 इस्लाम की परिभाषा में, अल्लाह, उस के फ़रिश्तों, उस की पुस्तकों, उस के रसूलों तथा अन्तदिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान (विश्वास) को (ईमान बिल ग़ैब) कहा गया है। (इब्ने कसीर)

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣

स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤

4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-कुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों[1] पर ईमान रखते हैं। तथा आख़िरत (परलोक)[2] पर भी विश्वास रखते हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥

5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

6. वास्तव[3] में जो काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लायेंगे।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٧

7. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है। और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ

8. और[4] कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर

---

1 अर्थात तौरात, इंजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

2 आख़िरत पर ईमान का अर्थ हैः प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मों के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

3 इस से अभिप्राय वह लोग हैं, जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

4 प्रथम आयतों में अल्लाह ने ईमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफ़िरों की दशा का वर्णन किया है। और अब उन मुनाफ़िक़ों (दुविधावादियों) की दशा बता रहा है जो मुख से तो ईमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं।

الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٨

ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ
اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

9. वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠

10. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ
قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝١١

11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝١٢

12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا
اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ۗ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ
السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣

13. और[1] जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا
خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ
اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٤

14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।

1 यह दशा उन मुनाफ़िक़ों की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये, परन्तु दिल से इन्कार करते रहे।

15. अल्लाह उन से परिहास कर रहा है। तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने का अवसर दे रहा है।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

16. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली। परन्तु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ। और न उन्हों ने सीधी डगर पाई।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

17. उन[1] की दशा उन के जैसी है, जिन्हों ने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरों में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾

18. वह गूँगे, बहरे, अंधे हैं। अतः अब वह लौटने वाले नहीं।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

19. अथवा[2] (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं। और अल्लाह, काफ़िरों को अपने नियंत्रण में लिये हुये हैं।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

20. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिये चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं। और

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

---

1 यह दशा उन की है जो संदेह तथा दुविधा में पड़े रह गये। कुछ सत्य को उन्होंने स्वीकार भी किया, फिर भी अविश्वास के अंधेरों ही में रह गये।

2 यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफ़िक़ों की दशा की है।

यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعْبُدُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾

21. हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव[1] है।

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ فِرَٰشًا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءً وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

22. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये[2] भी उस के साझी न बनाओ।

وَإِن كُنتُمْ فِى رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا۟ بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِۦ وَٱدْعُوا۟ شُهَدَآءَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٢٣﴾

23. और यदि तुम्हें उस में कुछ संदेह हो जो (अथवा कुर्आन) हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ? और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे[3] हो।

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا۟ وَلَن تَفْعَلُوا۟ فَٱتَّقُوا۟ ٱلنَّارَ ٱلَّتِى وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٤﴾

24. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि (नरक) से बचो, जिस का

---

1 अर्थात संसार में कुकर्मों तथा परलोक की यातना से।

2 अर्थात जब यह जानते हो कि तुम्हारा उत्पत्तिकार तथा पालनहार अल्लाह के सिवा कोई नहीं, तो वंदना भी उसी एक की करो, जो उत्पत्तिकार तथा पूरे विश्व का व्यवस्थापक है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी के सत्य होने का प्रमाण आप पर उतारा गया कुर्आन है। यह उन की अपनी बनाई बात नहीं है। कुर्आन ने ऐसी चुनौती अन्य आयतों में भी दी है। (देखियेः सूरह क़सस, आयतः 49, इस्रा, आयतः 88, हूद आयतः 13, और यूनुस, आयतः 38)

ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे जो काफ़िरों के लिये तैयार की गयी है।

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾

25. हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दो, जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं, जिन में नहरें बह रही होंगी। जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगेः यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया। और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह,[1] मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नहीं लज्जाता। जो ईमान लाये वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते हैं कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है। तथा जो अवैज्ञाकारी हैं, उन्हीं को कुपथ करता है।

الَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٢٧﴾

27. जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे।

---

1 जब अल्लाह ने मुनाफ़िक़ों की दो उपमा दीं, तो उन्होंने कहा कि अल्लाह ऐसी तुच्छ उपमा कैसे दे सकता है? इसी पर यह आयत उतरी। (देखियेः तफ़्सीर इब्ने कसीर)।

28. तुम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये[1] जाओगे?

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

29. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया। फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिये। और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾

30. और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा[2] बनाने जा रहा हूँ। वह बोलेः क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? (अल्लाह) ने कहाः जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

31. और उस ने आदम[3] को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहाः मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो?

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

32. सब ने कहाः तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ

---

1 अर्थात परलोक में अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 ख़लीफ़ा का अर्थ हैः स्थानापन्न, अर्थात ऐसा जीव जिस का वंश हो, और एक दूसरे का स्थान ग्रहण करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

3 आदम प्रथम मनु का नाम।

الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾

सिखाया है। वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ[1] है।

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

33. (अल्लाह ने) कहाः हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ। और आदम ने जब उन के नाम बता दिये तो (अल्लाह ने) कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

34. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहाः आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफ़िरों में से हो गया।

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

35. और हम ने कहाः हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

36. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (सुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहाः तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि[2] तक उपभोग्य है।

---

1 तत्वज्ञः अर्थात जो भेद तथा रहस्य को जानता हो।

2 अर्थात अपनी निश्चित आयु तक सांसारिक जीवन के संसाधन से लाभान्वित होना है।

37. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान्[1] है।

فَتَلَقَّىٰٓ اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيۡهِ‌ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۳۷﴾

38. हम ने कहाः इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

قُلۡنَا اهۡبِطُوۡا مِنۡهَا جَمِيۡعًا‌ ۚ فَاِمَّا يَاۡتِيَنَّكُمۡ مِّنِّىۡ هُدًى فَمَنۡ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۳۸﴾

39. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी हैं, और वही उस में सदावासी होंगे।

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَكَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ‌ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۳۹﴾

40. हे बनी इस्राईल[2]! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, तथा मुझ से किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया वचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो[3]।

يٰبَنِىۡٓ اِسۡرَآءِيۡلَ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتِىَ الَّتِىۡٓ اَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ وَاَوۡفُوۡا بِعَهۡدِىۡٓ اُوۡفِ بِعَهۡدِكُمۡ‌ۚ وَاِيَّاىَ فَارۡهَبُوۡنِ ﴿۴۰﴾

1 आयत का भावार्थ यह है किः आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की हैः "आदम तथा हव्वा दोनों ने कहाः हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अत्याचार कर लिया, और यदि तू ने हमें क्षमा, और हम पर दया नहीं की तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे"। (सूरह आराफ़, आयत 23)

2 इस्राईल आदरणीय इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पौत्र याकूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की सन्तान को बनी इस्राईल कहा गया है। यहाँ उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है किः कुर्आन तथा अन्तिम नबी को मान लें जिस का वचन उन की पुस्तक "तौरात" में लिया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है किः इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्रों इस्माईल तथा इस्हाक़ हैं। इस्हाक़ की सन्तान से बहुत से नबी आये, परन्तु इस्माईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आये।

3 अर्थात वचन भंग करने से।

41. तथा उस (क़ुर्आन) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास[1] है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۖ وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾

42. तथा सत्य को असत्य में न मिलावो, और न सत्य को जानत हुये छुपाओ।[2]

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

43. तथा नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो)।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

44. क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो, और अपने आप को भूल जाते हो, जब किः तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?[3]

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾

45. तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं।[4]

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۗ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾

---

1 अर्थात धर्मपुस्तक तौरात।

2 अर्थातः अन्तिम नबी के गुणों को, जो तुम्हारी पुस्तकों में वर्णित किये गये हैं।

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस (कथन) में इस का दुष्परिणाम यह बताया गया है किः प्रलय के दिन एक व्यक्ति को लाया जायेगा, और नरक में फेंक दिया जायेगा। उस की अंतड़ियाँ निकल जायेंगी, और वह उन को लेकर नरक में ऐसे फिरेगा जैसे गधा चक्की के साथ फिरता है। तो नारकी उस के पास जायेंगे तथा कहेंगे किः तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तुम तो हमें सदाचार का आदेश देते, तथा दुराचार से रोकते थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देता था, परन्तु स्वयं नहीं करता था। तथा दुराचार से रोकता था और स्वयं नहीं रुकता था। (सहीह बुख़ारी, हदीस नंः 3267)

4 भावार्थ यह है कि धैर्य तथा नमाज़ से अल्लाह की आज्ञा के अनुपालन तथा

46. जो समझते हैं किः उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिये) जाना है।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾

47. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, और यह किः तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

48. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्थदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾

49. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों[1] से मुक्ति दिलाई। वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थेः वह तुम्हारे पुत्रों को वध कर रहे थे, तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।

وَإِذْ نَجَّيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

50. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते देखते फ़िरऔनियों को डुबो दिया।

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٠﴾

51. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिये) चालीस

وَإِذْ وَاعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ

सदाचार की भावना उत्पन्न होती है।

1 फ़िरऔन मिस्र के शासकों की उपाधि होती थी।

الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

रात्री का वचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फ़ुर्क़ान[1] प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

54. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे[2] को बध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहाः हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हम ने

---

1 फ़ुर्क़ान का अर्थः विवेककारी है, अर्थात जिस के द्वारा सत्योसत्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

2 अर्थात जिस ने बछड़े की पूजा की है, उसे, जो निर्दोष हो वह हत करे। यही दोषी के लिये क्षमा है। (इब्ने कसीर)

तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾

57. और हम ने तुम पर बादलों की छाँव[1] की, तथा तुम पर "मन्न"[2] और "सलवा" उतारा, तो उन स्वच्छ चीज़ों में से जो हम ने तुम को प्रदान की हैं खाओ। और उन्हों ने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वंय अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

58. और (याद करो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती[3] में प्रवेश करो, फिर उस में से जहाँ से चाहो मनमानी खाओ। और उस के द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश करो, और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾

59. फिर इन अत्याचारियों ने जो बात उन से कही गई थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हम ने इन अत्याचारियों पर आकाश से उन की अवैज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया।

وَإِذِ اسْتَسْقٰى مُوسٰى لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो

---

1 अधिकांश भाष्यकारों ने इसे "तीह" के क्षेत्र से संबंधित माना है। (देखियेः तफ़्सीरे कुर्तुबी)।

2 भाष्यकारों ने लिखा है किः "मन्न" एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोंद था, जो ओस के समान रात्री के समय आकाश से गिरता था। तथा "सलवा" एक प्रकार के पक्षी थे जो संध्या के समय सेना के पास हज़ारों की संख्या में एकत्र हो जाते, जिन्हें बनी इस्राईल पकड़ कर खाते थे।

3 साधारण भाष्यकारों ने इस बस्ती को "बैतुल मुक़द्दस्" माना है।

الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝٦٠

हम ने कहाः अपनी लाठी को पत्थर पर मारो। तो उस से बारह[1] सोते फूट पड़े। और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पह्चान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝٦١

61. तथा (याद करो) जब तुम ने कहाः हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहाः क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो? तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुम ने माँगा है वहाँ वह मिलेगा। और उन पर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गई, और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरे। यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे थे, और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्हों ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝٦٢

62. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है। और उन्हें

---

1 इस्राईली वंश के बारह क़बीले थे। अल्लाह ने प्रत्येक क़बीले के लिये अलग-अलग सोते निकाल दिये ताकि उन के बीच पानी के लिये झगड़ा न हो। (देखियेः तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)।

कोई डर नहीं होगा, और न ही वे उदासीन होंगे।[1]

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

63. और (याद करो) जब हम ने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुम से वचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश-निर्देश हैं) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

64. फिर उस के बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾

65. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम तिरिस्कृत बंदर[2] हो जाओ।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

66. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ

67. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः अल्लाह तुम्हें एक गाय

---

1 इस आयत में यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि मुक्ति केवल उन्हीं के गिरोह के लिये है। आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी अपने समय में सत्य आस्था तथा सत्कर्म के कारण मुक्ति के योग्य थे परन्तु अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप की शिक्षाओं को मानना मुक्ति के लिये अनिवार्य है।

2 यहूदियों के लिये यह नियम है कि वे शनिवार का आदर करें। और इस दिन कोई संसारिक कार्य न करें, तथा उपासना करें। परन्तु उन्हों ने इस का उल्लंघन किया और उन पर यह प्रकोप आया।

تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوٓا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ
أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَٰهِلِينَ ﴿٦٧﴾

बध करने का आदेश देता है। उन्हों ने कहाः क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहाः मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ
يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌۢ
بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

68. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहाः वह (अर्थातः अल्लाह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो, इस के बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا
تَسُرُّ النَّٰظِرِينَ ﴿٦٩﴾

69. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस का रंग बता दे। (मूसा ने) कहाः वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ
تَشَٰبَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّآ إِن شَآءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾

70. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ
وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْـَٰٔنَ
جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

71. मूसा बोलेः वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो। वह बोलेः अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे वध कर दिया। जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ۗ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ۗ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो[1], इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۗ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۗ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ۗ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

74. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिन से नहरें फूट पड़ती हैं। और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकल आता है। और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था?

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि इस प्रकार निहत व्यक्ति जीवित हो गया। और उस ने अपने हत्यारे को बताया, और फिर मर गया। इस हत्या के कारण ही बनी इस्राईल को गाय की बलि देने का आदेश दिया गया था। अगर वह चाहते तो किसी भी गाय की बलि दे देते, परन्तु उन्हों ने टाल मटोल से काम लिया, इस लिये अल्लाह ने उस गाय के विषय में कठोर आदेश दिया।

76. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान[1] लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली[2] हैं? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनायें, क्या तुम समझते नहीं हो?

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُم بِهِ عِندَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٧٦

77. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है?

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ٧٧

78. तथा उन में कुछ अनपढ़ हैं, वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायें करते, तथा केवल अनुमान लगाते हैं।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ٧٨

79. तो विनाश है उन के लिये[3] जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उस के द्वारा तनिक मूल्य खरीदें। तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उन की कमाई के कारण!

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِندِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ ٧٩

80. तथा उन्हों ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उन से कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना

وَقَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ٨٠

---

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

2 अर्थात अन्तिम नबी के विषय में तौरात में बताई हैं।

3 इस में यहूदी विद्वानों के कुकर्मों को बताया गया है।

वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨١

81. क्यों[1] नहीं, जो भी बुराई कमायेगा, तथा उस का पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय हैं। और वही उस में सदावासी होंगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨٢

82. तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदावासी होंगे।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ لَا
تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۣ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا
مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٨٣

83. और (याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) नहीं करोगे, तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे, और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ, और लोगों से भली बात बोलोगे, तथा नमाज़ की स्थापना करोगे, और ज़कात दोगे, फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने मुँह फेर लिया, और तुम (अभी भी) मुँह फेरे हुए हो।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَاۗءَكُمْ وَلَا
تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ
وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝٨٤

84. तथा (याद करो) जब हमने तुम से दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। फिर तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस के साक्षी हो।

1 यहाँ यहूदियों के दावे का खण्डन तथा नरक और स्वर्ग में प्रवेश के नियम का वर्णन है।

85. फिर[1] तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो, तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्थदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हराम (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें, और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

ثُمَّ أَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ
فَرِيقًا مِّنكُم مِّن دِيَٰرِهِمْ تَظَٰهَرُونَ عَلَيْهِم
بِٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَإِن يَأْتُوكُمْ أُسَٰرَىٰ
تُفَٰدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ
أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ ٱلْكِتَٰبِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ
فَمَا جَزَآءُ مَن يَفْعَلُ ذَٰلِكَ مِنكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي
ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰٓ أَشَدِّ
ٱلْعَذَابِ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

86. उन्हों ने ही आख़िरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन ख़रीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।

أُولَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشْتَرَوُا۟ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا بِٱلْءَاخِرَةِ
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ ٱلْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٨٦﴾

87. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को खुली

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ
بِٱلرُّسُلِ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ
وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُولٌۢ

1 मदीने में यहूदियों के तीन क़बीलों में बनी क़ैनुक़ाअ और बनी नज़ीर मदीने के अरब क़बीले खज़्रज के सहयोगी थे। और बनी क़ुरैज़ा औस क़बीले के सहयोगी थे। जब इन दोनों क़बीलों में युद्ध होता तो यहूदी क़बीले अपने पक्ष के साथ दूसरे पक्ष के साथी यहूदी की हत्या करते। और उसे बे घर कर देते थे। और युद्ध विराम के बाद पराजित पक्ष के बंदी यहूदी का अर्थदण्ड दे कर यह कहते हुये मुक्त करा देते कि हमारी पुस्तक तौरात का यही आदेश है। इसी का वर्णन अल्लाह ने इस आयत में किया है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

بِمَا لَا تَهْوَىٰٓ أَنفُسُكُمُ ٱسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ۝٨٧

निशानियाँ दीं, और रूहुल कुदुस[1] द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नबियों को झुठला दिया, और कुछ की हत्या करने लगे?

وَقَالُوا۟ قُلُوبُنَا غُلْفٌۢ ۚ بَل لَّعَنَهُمُ ٱللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ۝٨٨

88. तथा उन्हों ने कहा कि हमारे दिल तो बंद[2] हैं। बल्कि उन के कुफ्र (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसी लिये उन में से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتَٰبٌ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا۟ مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَلَمَّا جَآءَهُم مَّا عَرَفُوا۟ كَفَرُوا۟ بِهِۦ ۚ فَلَعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ۝٨٩

89. और जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (कुर्आन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जब किः इस से पूर्व वह स्वयं काफ़िरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज़ आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर[3] दिया, तो

1 रूहुल कुदुस से अभिप्रेतः फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं।

2 अर्थात्: नबी की बातों का हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

3 आयत का भावार्थ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पुस्तक (कुर्आन) के साथ आने से पहले वह काफ़िरों से युद्ध करते थे, तो उन पर विजय की प्रार्थना करते और बड़ी व्याकुलता के साथ आप के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिस की भविष्यवाणी उन के नबियों ने की थी, और प्रार्थनायें किया करते थे कि आप शीघ्र आयें, ताकि काफ़िरों का प्रभुत्व समाप्त हो, और हमारे उत्थान के युग का शुभारंभ हो। परन्तु जब आप आ गये तो उन्होंने आप के नबी होने का इन्कार कर दिया, क्यों कि आप बनी इस्राईल में नहीं पैदा हुये, जो यहूदियों का गोत्र है। फिर भी आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के पुत्र

काफ़िरों पर अल्लाह की धिक्कार है।

90. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक)[1] का इन्कार कर के बुरे बदले पर इन्हों ने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने जिस भक्त[2] पर चाहा उतार दिया। अतः वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफ़िरों के लिये अपमानकारी यातना है।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَن يُنَزِّلَ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩٠﴾

91. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा[3] है, उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं: हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतरा है, और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है। और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾

92. तथा मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया।

وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾

93. फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हम ने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

इस्माईल अलैहिस्सलाम के वंश से हैं, जैसे बनी इस्राईल उन के पुत्र इस्राईल की संतान हैं।

1 अर्थात् कुर्आन।

2 भक्त अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम को नबी बना दिया।

3 अर्थात् कुर्आन पर।

الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِ إِيمَانُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾

उठा कर लिया कि हम ने तुम को जो कुछ दिया है, उसे दृढ़ता से थाम[1] लो, तथा ध्यान से सुनो। तो तुम ने कहा कि हम ने सुन लिया, और अवज्ञा की। और उन के दिलों में उन के अविश्वास के कारण बछड़ा[2] बस गया। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि तुम ईमान रखते हो तो तुम्हारा ईमान तुम्हें कितनी बुरी बातों का आदेश दे रहा है।।

قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِندَ اللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾

94. तथा उन से कहो कि यदि अल्लाह के हाँ आख़िरत (परलोक) का घर[3] केवल तुम्हारे ही लिये है, दूसरों के सिवा, तो मृत्यु की कामना करो[4], यदि तुम सत्यवादी हो।

وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾

95. तथा वह अपने कुकर्मों के कारण कदापि इस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

96. और तुम उन को अवश्य सब लोगों तथा मिश्रणवादियों से भी अधिक जीवन का लोभी पाओगे। इन में से प्रत्येक व्यक्ति हज़ार वर्ष आयु दिये जाने की कामना करता है, जब कि आयु दिया जाना उन्हें यातना से नहीं बचा सकेगा। और अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

---

1 थामने का अर्थ उस के आदेशों का पालन करना है।

2 अर्थात् वह बछड़े के प्रेम में मुग्ध हो गये।

3 अर्थात् स्वर्ग।

4 मृत्यु की कामना करो, ताकि शीघ्र स्वर्ग में पहुँच जाओ।

97. (हे नबी!)[1] कह दो कि जो व्यक्ति जिब्रील का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (क़ुर्आन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾

98. जो अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह काफ़िरों का शत्रु है।[2]

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

99. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी हैं, और इस का इन्कार केवल वही लोग[3] करेंगे जो कुकर्मी हैं।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾

100. क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्हों ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतेरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

---

1 यहूदी, केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों ही को बुरा नहीं कहते थे, वह अल्लाह के फ़रिश्ते जिब्रील को भी गालियाँ देते थे कि वह दया का नहीं, प्रकोप का फ़रिश्ता है। और कहते थे कि हमारा मित्र मीकाईल है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने अल्लाह के किसी रसूल -चाहे वह फ़रिश्ता हो या इन्सान- से बैर रखा तो वह सभी रसूलों का शत्रु तथा कुकर्मी है। (इब्ने कसीर)

3 इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि यहूदियों के विद्वान इब्ने सूरिया ने कहाः हे मुहम्मद। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं लाये जिसे हम पहचानते हों। और न आप पर कोई खुली आयत उतारी गई कि हम आप का अनुसरण करें। इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

101. तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करते हुये जो उन के पास है, आ गया[1] तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

102. तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ़्र (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे, तथा उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गईं, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते किः हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः तू कुफ़्र में न पड़। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज़ सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें। और वह अल्लाह की अनुमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का खरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभोग्य है जिस

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُم بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्आन के साथ आ गये।

के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं[1], यदि वह जानते होते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

103. और यदि वह ईमान लाते, और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होता, यदि वह जानते होते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

104. हे ईमान वालो! तुम "राइना"[2] न कहो, "उन्ज़ुरना" कहो, और ध्यान से बात सुनो, तथा काफ़िरों के लिये दुखदायी यातना है।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

105. अहले किताब में से जो काफ़िर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये, यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जाये, और

---

1 इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी किया गया है कि सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, परन्तु शैतानों ने कुफ़्र किया, वह मानव को जादू सिखाते थे। और न दो फ़रिश्तों पर जादू उतारा गया, उन शैतानों या मानव में से हारूत तथा मारूत जादू सिखाते थे। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)। जिस ने प्रथम अनुवाद किया है उस का यह विचार है कि मानव के रूप में दो फ़रिश्तों को उन की परीक्षा के लिये भेजा गया था।
सुलैमान अलैहिस्सलाम एक नबी और राजा हुये हैं। आप दावूद अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।

2 इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा में यहूदी भी आ जाते थे। और मुसलमानों को आप से कोई बात समझनी होती तो "राइना" कहते। अर्थातः हम पर ध्यान दीजिये, या हमारी बात सुनिये। इबरानी भाषा में इस का बुरा अर्थ भी निकलता था, जिस से यहूदी प्रसन्न होते थे, इस लिये मुसलमानों को आदेश दिया गया किः इस के स्थान पर तुम "उन्ज़ुरना" कहा करो। अर्थात हमारी ओर देखिये। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष दया करता है, और अल्लाह बड़ा दानशील है।

106. हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं तो उस से उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे[1] कर सकता है?

مَا نَنۡسَخۡ مِنۡ اٰيَةٍ اَوۡ نُنۡسِهَا نَاۡتِ بِخَيۡرٍ مِّنۡهَآ اَوۡ مِثۡلِهَا ؕ اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿١٠٦﴾

107. क्या तुम यह नहीं जानते कि: अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है, और उस के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?

اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَمَا لَـكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿١٠٧﴾

108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मूसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ़्र से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया।

اَمۡ تُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ تَسۡـــَٔلُوۡا رَسُوۡلَـكُمۡ كَمَا سُٮِٕلَ مُوۡسٰى مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَمَنۡ يَّتَبَدَّلِ الۡکُفۡرَ بِالۡاِيۡمَانِ فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ﴿١٠٨﴾

109. अहले किताब में से बहुत से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ़्र की ओर फेर दें। जब कि सत्य उन के लिये उजागर हो गया, फिर भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَدَّ كَثِيۡرٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَوۡ يَرُدُّوۡنَكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ اِيۡمَانِكُمۡ كُفَّارًا ۖۚ حَسَدًا مِّنۡ عِنۡدِ اَنۡفُسِهِمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الۡحَـقُّ ۚ فَاعۡفُوۡا وَاصۡفَحُوۡا حَتّٰى يَاۡتِىَ اللّٰهُ بِاَمۡرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿١٠٩﴾

---

1 इस आयत में यहूदियों के तौरात के आदेशों के निरस्त किये जाने तथा ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूव्वत के इन्कार का खण्डन किया गया है।

110. तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا الزَّكَوٰةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾

111. तथा उन्हों ने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा[1](ईसाई) न हो। यह उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١١١﴾

112. क्यों नहीं?[2] जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के समर्पित कर देगा, तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾

113. तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक[3] पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्हों ने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान[4] नहीं,

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَٰرَىٰ عَلَىٰ شَىْءٍ وَقَالَتِ النَّصَٰرَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَىْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَٰبَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾

1 अर्थात यहूदियों ने कहा कि केवल यहूदी जायेंगे, और ईसाईयों ने कहा कि केवल ईसाई जायेंगे।

2 स्वर्ग में प्रवेश का साधारण नियम अर्थात मुक्ति एकेश्वरवाद तथा सदाचार पर आधारित है, किसी जाति अथवा गिरोह पर नहीं।

3 अर्थात तौरात तथा इंजील जिस में सब नबियों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।

4 धर्म पुस्तक से अज्ञान अरब थे। जो यह कहते थे कि: (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ नहीं है।

यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं। उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उन के बीच कर देगा।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾

114. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम का वर्णन करने से रोके। और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे[1], उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये आख़िरत (परलोक) में घोर यातना है।

وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

115. तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तुम जिधर भी मुख करो[2], उधर ही अल्लाह का मुख है। और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ ﴿١١٦﴾

116. तथा उन्हों ने कहा[3] कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी हैं।

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾

117. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो

---

1 जैसे मक्का वासियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को सन् 6 हिजरी में काबा में आने से रोक दिया। या ईसाईयों ने बैतुल मुक़द्दस् को ढाने में बुख़्त नस्सर (राजा) की सहायता की।

2 अर्थात अल्लाह के आदेशानुसार जिधर भी रुख़ करोगे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

3 अर्थात यहूद और नसारा तथा मिश्रणवादियों ने।

जा" और वह हो जाती है।

118. तथा उन्हों ने कहा जो ज्ञान[1] नहीं रखते कि अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती। इसी प्रकार की बात इन से पूर्व के लोगों ने कही थीं। इन के दिल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۗ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾

119. (हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान[2] करने वाला बना कर भेजा है। और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

120. हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकांक्षाओं का अनुसरण किया, इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आप का कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा।

وَلَن تَرْضَىٰ عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾

121. और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे वैसे पढ़ते हैं, जैसे

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ

1 अर्थात अरब के मिश्रणवादियों ने।

2 अर्थात सत्य ज्ञान के अनुपालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना देने, तथा इन्कार पर नरक से सावधान करने के लिये। इस के पश्चात् भी कोई न माने तो आप उस के उत्तरदायी नहीं हैं।

पढ़ना चाहिये, वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।

أُولَٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِۦ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِهِۦ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ﴿١٢١﴾

122. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वासियों पर प्रधानता दी थी।

يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتِىَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّى فَضَّلْتُكُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٢٢﴾

123. तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।

وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا لَّا تَجْزِى نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَٰعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾

124. और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पूरा उतरा, तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहाः तथा मेरी सन्तान से भी। (अल्लाह ने कहाः) मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी[1] हैं।

وَإِذِ ٱبْتَلَىٰٓ إِبْرَٰهِۦمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمَٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ۖ قَالَ إِنِّى جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۖ قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِى ۖ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٢٤﴾

125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थातः काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि "मक़ामे इब्राहीम" को नमाज़ का

وَإِذْ جَعَلْنَا ٱلْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَٱتَّخِذُوا۟ مِن مَّقَامِ إِبْرَٰهِۦمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِۦمَ وَإِسْمَٰعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلْعَٰكِفِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ ﴿١٢٥﴾

1 आयत में अत्याचार से अभिप्रेत केवल मानव पर अत्याचार नहीं, बल्कि सत्य को नकारना तथा शिर्क करना भी अत्याचार में सम्मिलित हैं।

स्थान[1] बना लो। तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ़[2] करने वालों, और सज्दा तथा रुकू करने वालों के लिये पवित्र रखो।

126. और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शान्ति का नगर बना दे। तथा इस के वासियों को जो उन में से अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान कर। (अल्लाह ने) कहाः तथा जो काफ़िर हैं उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ أَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهٗٓ إِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और ईस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थेः हे हमारे पालनहार! हम से यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرٰهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمٰعِيلُ ۚ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

128. हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ إِنَّكَ

1 "मक़ामे इब्राहीम" से तात्पर्य वह पत्थर है जिस पर खड़े हो कर उन्हों ने काबा का निर्माण किया। जिस पर उन के पदचिन्ह आज भी सुरक्षित हैं। तथा तवाफ़ के पश्चात् वहाँ दो रकअत नमाज़ पढ़नी सुन्नत है।

2 "एतिकाफ़" का अर्थ किसी मस्जिद में एकांत में हो कर अल्लाह की इबादत करना है।

أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾

दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे। तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में तू अतिक्षमी दयावान् है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾

129. हे हमारे पालनहार! उन के बीच इन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें सुनाये, और उन्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ[1] है।

وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ ۚ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٣٠﴾

130. तथा कौन होगा, जो इब्राहीम के धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले? जब कि हम ने उसे संसार में चुन[2] लिया, तथा आख़िरत (परलोक) में उस की गणना सदाचारियों में होगी।

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ ۖ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣١﴾

131. तथा (याद करो) जब उस के पालनहार ने उस से कहाः मेरा आज्ञाकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त कहाः मैं विश्व के पालनहार का आज्ञाकारी हो गया।

---

1 यह इब्राहीम तथा इस्माईल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना का अन्त है। एक रसूल से अभिप्रेतः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। क्योंकि इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में आप के सिवा कोई दूसरा रसूल नहीं हुआ। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना, ईसा की शुभ सूचना, तथा अपनी माता का स्वप्न हूँ। आप की माता आमिना ने गर्भ अवस्था में एक स्वप्न देखा कि मुझ से एक प्रकाश निकला, जिस से शाम (देश) के भवन प्रकाशमान हो गये। (देखियेः हाकिम 2600)। इस को उन्हों ने सहीह कहा है। और इमाम ज़हबी ने इस की पुष्टि की है।

2 अर्थात मार्गदर्शन देने तथा नबी बनाने के लिये निर्वाचित कर लिया।

132. तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याकूब ने इसी बात पर बल दिया कि: हे मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

133. क्या तुम याकूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याकूब ने अपने पुत्रों से कहाः मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (वंदना) करोगे? उन्हों ने कहाः हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ के एक पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे, और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾

134. यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्हों ने जो कर्म किये वे उन के लिये हैं। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

135. और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें: नहीं। हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾

136. (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर जो (कुर्आन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याकूब, तथा उन की संतान की

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

ओर उतारा गया। और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नबियों को उन के पालनहार की ओर से दिया गया। हम इन में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

137. तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान ले आयें, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे। और यदि विमुख हों तो वह विरोध में लीन हैं। उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये अल्लाह बस है। और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنتُم بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾

138. तुम सब अल्लाह के रंग[1] (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो। और अल्लाह के रंग से अच्छा किस का रंग होगा? हम तो उसी की इबादत (वंदना) करते हैं।

صِبْغَةَ اللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ ﴿١٣٨﴾

139. (हे नबी!) कह दो किः क्या तुम हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के विषय में झगड़ते हो? जब कि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है।[2] फिर हमारे लिये हमारा कर्म है, और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। और हम तो बस उसी की इबादत (वंदना) करने वाले हैं।

قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾

140. हे अह्ले किताब! क्या तुम कहते हो

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ

1 इस में ईसाई धर्म की (बैट्रिज़्म) की परम्परा का खण्डन है। ईसाईयों ने पीले रंग का जल बना रखा था। और जब कोई ईसाई होता या उन के यहाँ कोई शिशु जन्म लेता तो उस में स्नान करा के ईसाई बनाते थे। अल्लाह के रंग से अभिप्राय एकेश्वरवाद पर आधारित स्वभाविक धर्म इस्लाम है। (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)

2 अर्थात फिर वंदनीय भी केवल वही है।

وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ قُلْ ءَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَادَةً عِندَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब तथा उन की संतान यहूदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा। जिस के पास अल्लाह का साक्ष्य हो, और उसे छुपा दे? और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से अचेत तो नहीं है[1]।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

141. यह एक समुदाय था, जो जा चुका। उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा[2]।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَن قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُل لِّلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾

142. शीघ्र ही मूर्ख लोग कहेंगे कि उन को जिस क़िबले[3] पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हे बता दो कि पूर्व और पश्चिम् सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي

143. और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी[4]

---

1 इस में यहूदियों तथा ईसाईयों के इस दावे का खण्डन किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम आदि नबी यहूदी अथवा ईसाई थे।

2 अर्थात तुम्हारे पूर्वजों के सदाचारों से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, और न उन के पापों के विषय में तुम से प्रश्न किया जायेगा, अतः अपने कर्मों पर ध्यान दो।

3 नमाज़ में मुख करने की दिशा।

4 साक्षी होने का अर्थ जैसा कि हदीस में आया है यह है कि प्रलय के दिन नूह अलैहिस्सलाम को बुलाया जायेगा और उन से प्रश्न किया जायेगा कि क्या तुम ने अपनी जाति को संदेश पहुँचाया? वह कहेंगेः हाँ। फिर उन की जाति से प्रश्न किया जायेगा, तो वह कहेंगे कि हमारे पास सावधान करने के लिये कोई नहीं

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ۗ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾

बनो, और रसूल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह क़िबला जिस पर तुम थे, इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है। और यह बात बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात बैतुलमक़्दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे,[1] वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करुणामय तथा दयावान् है।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾

144. (हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस क़िबले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लो[2], तथा (हे मुसलमानो!) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से

आया। तो अल्लाह तआला नूह अलैहिस्सलाम से कहेगा कि तुम्हारा साक्षी कौन है? वह कहेंगेः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन की उम्मत। फिर आप की उम्मत साक्ष्य देगी कि नूह ने अल्लाह का सन्देश पहुँचाया है। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम पर अर्थात मुसलमानों पर साक्षी होंगे। (सहीह बुख़ारी, 4486)

1 अर्थात उस का फल प्रदान करेगा।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से मदीना प्रस्थान करने के पश्चात्, बैतुलमक़्दिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ते रहे। फिर आप को काबा की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया गया।

सत्य है[1], और अल्लाह उन के कर्मों से असूचित नहीं है।

وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُم بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾

145. और यदि आप अह्ले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के क़िब्ले का अनुसरण नहीं करेंगे। और न आप उन के किबले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के किबले का अनुसरण करेगा। और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आप ने उन की अकांक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

146. और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही[2] पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छुपा रहा है।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾

147. सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

148. प्रत्येक के लिये एक दिशा है, जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

---

1 क्योंकि अंतिम नबी के गुणों में उन की पुस्तकों में बताया गया है कि वह क़िब्ला बदल देंगे।

2 आप के उन गुणों के कारण जो उन की पुस्तकों में अंतिम नबी के विषय में वर्णित किये गये हैं।

149. और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें। निःसन्देह यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾

150. और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें, और (हे मुसलमानो!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेरो, ताकि उन को तुम्हारे विरुद्ध किसी विवाद का अव्सर न मिले। मगर उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें। अतः उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ। और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾

151. जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) सिखाता है, तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

152. अतः मुझे याद करो,[1] मैं तुम्हें याद करूँगा।[2] और मेरे आभारी रहो। और मेरे कृतघ्न न बनो।

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾

153. हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾

---

1 अर्थात मेरी आज्ञा का अनुपालन और मेरी अराधना करो।

2 अर्थात अपनी क्षमा और पुरस्कार द्वारा ।

154. तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित हैं, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾

155. तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे, और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो।

وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾

156. जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

157. इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया हैं, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

158. बेशक सफ़ा तथा मरवा पहाड़ी[1] अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये। और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति ज्ञानी है।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

159. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् किः

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ

1 यह दो पर्वत हैं जो काबा की पूर्वी दिशा में स्थित हैं। जिन के बीच सात फेरे लगाना हज्ज तथा उमरे का अनिवार्य कर्म है। जिस का आरंभ सफ़ा पर्वत से करना सुन्नत है।

हम ने पुस्तक[1] में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है[2], तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।

يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾

160. और जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तौबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान् हूँ।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ بَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

161. वास्तव में जो काफ़िर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही हैं जिन पर अल्लाह तथा फ़रिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾

162. वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

163. और तुम्हारा पूज्य एक ही[3] पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾

164. बैशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती हैं, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

1 अर्थात तौरात,इंजील आदि पुस्तकों में।

2 अल्लाह के धिक्कारने का अर्थ अपनी दया से दूर करना है।

3 अर्थात जो अपने स्तित्व तथा नामों और गुणों तथा कर्मों में अकेला है।

है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उस में प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच उस की आज्ञा[1] के अधीन रहते हैं, (इन सब चीज़ों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

165. कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाते हैं, और उन से, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय[2] जो बात जानेंगे इसी समय[3] जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है। और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا
يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۗ وَلَوْ
يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ
لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

166. जब यह दशा[4] होगी कि जिस का अनुसरण किया गया[5] वह

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا

---

1 अर्थात इस विश्व की पूरी व्यवस्था इस बात का तर्क और प्रमाण है कि इस का व्यवस्थापक अल्लाह ही एकमात्र पूज्य तथा अपने गुण कर्मों में एकता है। अतः पूजा अर्चना भी उसी एक की होनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है ।

2 अर्थात प्रलय के दिन।

3 अर्थात संसार ही में।

4 अर्थात प्रलय के दिन।

5 अर्थात संसार में जिन प्रमुखों का अनुसरण किया गया।

الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और उन के आपस के सभी सम्बन्ध[1] टूट जायेंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

167. तथा जो अनुयायी होंगे,वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाते जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अल्लाह उन के कर्मों को उन के लिये संताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٦٨﴾

168. हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो[2], वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

169. वह तुम को बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है, और यह कि अल्लाह पर उस चीज़ का आरोप[3] धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧٠﴾

170. और जब उन[4] से कहा जाता है कि जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है क्या यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह

---

1 अर्थात सामीप्य, अनुसरण तथा धर्म आदि के।

2 अर्थात उस की बताई बातों को न मानो।

3 अर्थात वैध को अवैध करने आदि का।

4 अर्थात अहले किताब तथा मिश्रणवादियों से।

उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)

171. उन की दशा जो काफ़िर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हाँक पुकार के सिवा कुछ[1] नहीं सुनता, यह (काफ़िर) बहरे, गूंगे तथा अँधे हैं। इस लिए कुछ नहीं समझते।

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾

172. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (वंदना) करते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾

173. (अल्लाह) ने तुम पर मुर्दार[2] तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यक्ता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोइ दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।[3]

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٧٣﴾

174. वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ

1 अर्थात ध्वनि सुनता है परन्तु बात का अर्थ नहीं समझता।

2 जिसे धर्म विधान के अनुसार बध न किया गया हो, अधिक विवरण सूरह माइदह में आ रहा है।

3 अर्थात ऐसा विवश व्यक्ति जो हलाल जीविका न पा सके उस के लिये निषेध नहीं कि वह अपनी आवश्यक्तानुसार हराम चीज़ें खा ले। परन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस की सीमा का उल्लंघन न करे और जहाँ उसे हलाल जीविका मिल जाये वहाँ हराम खाने से रुक जाये।

وَيَشْتَرُونَ بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُو۟لَٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِى
بُطُونِهِمْ إِلَّا ٱلنَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَلَا
يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾

रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अल्लाह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा। और उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱشْتَرَوُا۟ ٱلضَّلَٰلَةَ بِٱلْهُدَىٰ
وَٱلْعَذَابَ بِٱلْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ أَصْبَرَهُمْ عَلَى ٱلنَّارِ ﴿١٧٥﴾

175. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ ख़रीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वह कितने सहनशील हैं?

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ ۗ وَإِنَّ
ٱلَّذِينَ ٱخْتَلَفُوا۟ فِى ٱلْكِتَٰبِ لَفِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾

176. इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।

لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ
وَٱلْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ
ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ وَءَاتَى ٱلْمَالَ
عَلَىٰ حُبِّهِۦ ذَوِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ
وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ وَٱلسَّآئِلِينَ وَفِى ٱلرِّقَابِ
وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ
إِذَا عَٰهَدُوا۟ ۖ وَٱلصَّٰبِرِينَ فِى ٱلْبَأْسَآءِ
وَٱلضَّرَّآءِ وَحِينَ ٱلْبَأْسِ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ
صَدَقُوا۟ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

177. भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया। तथा फ़रिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखते हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फ़कीरों) को और दास मुक्ति के लिये दिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा ज़कात दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे। और निर्धनता और रोग तथा युद्ध की

स्थिति में धैर्यवान रहे। यही लोग सच्चे हैं, तथा यही (अल्लाह से) डरते[1] हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِصَاصُ فِى ٱلْقَتْلَى ۖ ٱلْحُرُّ بِٱلْحُرِّ وَٱلْعَبْدُ بِٱلْعَبْدِ وَٱلْأُنثَىٰ بِٱلْأُنثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِىَ لَهُۥ مِنْ أَخِيهِ شَىْءٌ فَٱتِّبَاعٌۢ بِٱلْمَعْرُوفِ وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَٰنٍ ۗ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ ٱعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٧٨

178. हे ईमान वालो! तुम पर निहत व्यक्तियों के बारे में क़िसास (बराबरी का बदला) अनिवार्य[2] कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दास का दास से, और नारी का नारी से, और जिस अपराधी के लिये उस के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर[3] दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्थदण्ड) चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा

---

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नमाज़ में क़िब्ले की ओर मुख करना अनिवार्य है, फिर भी सत्धर्म इतना ही नहीं कि धर्म की किसी एक बात को अपना लिया जाये। सत्धर्म तो सत्य आस्था, सत्कर्म और पूरे जीवन को अल्लाह की आज्ञा के अधीन कर देने का नाम है।

2 अर्थात यह नहीं हो सकता कि निहत की प्रधानता अथवा उच्च वंश का होने के कारण कई व्यक्ति मार दिये जायें, जैसा कि इस्लाम से पूर्व जाहिलिय्यत की रीति थी कि एक के बदले कई को ही नहीं, यदि निर्बल क़बीला हो तो, पूरे क़बीले ही को मार दिया जाता था। इस्लाम ने यह नियम बना दिया कि स्वतंत्र तथा दास और नर नारी सब मानवता में बराबर हैं। अतः बदले में केवल उसी को मारा जाये जो अपराधी है। वह स्वतंत्र हो या दास, नर हो या नारी। (संक्षिप्त, इब्ने कसीर)

3 क्षमा दो प्रकार से हो सकता हैः एक तो यह कि निहत के लोग अपराधी को क्षमा कर दें। दूसरा यह कि क़िसास को क्षमा कर के दियत (अर्थदण्ड) लेना स्वीकार कर लें। इसी स्थिति में कहा गया है कि नियमानुसार दियत (अर्थदण्ड) चुका दें।

दया है। इस पर भी जो अत्याचार[1] करे तो उस के लिये दुःखदायी यातना है।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يَّاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179. और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये क़िसास (के नियम में) जीवन है, ताकि तुम रक्तपात से बचो।[2]

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾

180. और जब तुम में से किसी के निधन का समय हो, और वह धन छोड़ रहा हो तो उस पर माता पिता और समीपवर्तियों के लिये साधारण नियमानुसार वसिय्यत (उत्तरदान) करना अनिवार्य कर दिया गया है। यह आज्ञाकारियों के लिये सुनिश्चित[3] है।

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾

181. फिर जिस ने वसिय्यत सुनने के पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

---

1 अर्थात क्षमा कर देने या दियत लेने के पश्चात् भी अपराधी को मार डाले तो उसे क़िसास में हत किया जायेगा।

2 क्योंकि इस नियम के कारण कोई किसी को हत करने का साहस नहीं करेगा। इस लिये इस के कारण समाज शान्तिमय हो जायेगा। अर्थात एक क़िसास से लोगों के जीवन की रक्षा होगी। जैसा कि उन देशों में जहाँ क़िसास का नियम है देखा जा सकता है। कुर्आन इसी ओर संकेत करते हुये कहता है कि क़िसास नियम के अन्दर वास्तव में जीवन है।

3 यह वसय्यित (मीरास) की आयत उतरने से पहले अनिवार्य थी, जिसे (मीरास) की आयत से निरस्त कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि अल्लाह ने प्रत्येक अधिकारी को उस का अधिकार दे दिया है, अतः अब वारिस के लिये कोई वसिय्यत नहीं है। फिर जो वारिस न हो तो उसे भी तिहाई धन से अधिक की वसिय्यत उचित नहीं है। (सहीह बुख़ारी-4577, सुनन अबू दावूद-2870, इब्ने माजा-2210)

182. फिर जिसे डर हो कि वसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

فَمَنْ خَافَ مِن مُّوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ
بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨٢﴾

183. हे ईमान वालो! तुम पर रोज़े[1] उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا
كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾

184. वह गिनती के कुछ दिन हैं। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों से पूरी करे। और जो उस (रोज़े) को सहन न कर सके[2] वह फिद्या (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़ा रखना ही अच्छा है।

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ
يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ
خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن
كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

185. रमज़ान का महीना वह है, जिस में क़ुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى
لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن
شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا

---

1 रोज़े को अर्बी भाषा में "सौम" कहा जाता है, जिस का अर्थः रुकना तथा त्याग देना है। इस्लाम में रोज़ा सन् दो हिजरी में अनिवार्य किया गया। जिस का अर्थ है प्रत्युष (भोर) से सूर्यास्त तक रोज़े की नीति से खाने पीने तथा संभोग आदी चीज़ों से रुक जाना।

2 अर्थात अधिक बुढ़ापे अथवा ऐसे रोग के कारण जिस से आरोग्य होने की आशा न हो तो प्रत्येक रोज़े के बदले एक निर्धन को खाना खिला दिया करें।

أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित[1] हो तो वह उस का रोज़ा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी[2] अथवा यात्रा[3] पर हो, तो उसे दूसरे दिनों से गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ[4] बन सको।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

186. (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें ।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ

187. तुम्हारे लिये रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र[5] हैं, तथा तुम उन का वस्त्र हो। अल्लाह को ज्ञान हो गया कि

---

1 अर्थात अपने नगर में उपस्थित हो।

2 अर्थात रोग के कारण रोज़े न रख सकता हो।

3 अर्थात इतनी दूर की यात्रा पर हो जिस में रोज़ा न रखने की अनुमति हो।

4 इस आयत में रोज़े की दशा तथा गिनती पूरी करने पर प्रार्थना करने की प्रेरणा दी गयी है।

5 इस से पति पत्नी के जीवन साथी, तथा एक की दूसरे के लिये आवश्यक्ता को दर्शाया गया है ।

وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾

तुम अपना उपभोग[1] कर रहे थे। उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा कर दिया। अब उन से (रात्रि में) सहवास करो, और अल्लाह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो, और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ, यहाँ तक कि भोर की सफ़ेद धारी, रात की काली धारी से उजागर हो[2] जाये फिर रोज़े को रात्रि (सुर्यास्त) तक पूरा करो, और उन से सहवास न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ़ (एकान्तवास) में रहो। यह अल्लाह की सीमायें हैं, इन के समीप भी न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि वह (उन के उल्लंघन) से बचें।

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾

188. तथा आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग जान बूझ कर पाप[3] द्वारा खा जाओ।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ

189. (हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के (घट्ने बढ़ने) के विषय में प्रश्न

1 अर्थात पत्नी से सहवास कर रहे थे।

2 इस्लाम के आरंभिक युग में रात्री में सो जाने के पश्चात् रमज़ान में खाने पीने तथा स्त्री से सहवास की अनुमति नहीं थी। इस आयत में इन सब की अनुमति दी गयी है ।

3 इस आयत में यह संकेत है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों के स्वत्व और धन से तथा अवैध धन उपार्जन से स्वयं को रोक न सकता हो इबादत का कोई लाभ नहीं।

لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾

करते हैं? कह दें: इस से लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं है कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम[1] सफल हो जाओ।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

190. तथा तुम अल्लाह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हों। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾

191. और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्हों ने तुम को निकाला है, इस लिये कि फ़ितना[2] (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न[3] करें। परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करें तो उन की हत्या करो, यही काफ़िरों का बदला है।

فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٢﴾

192. फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रुक जायें तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है।

---

1 इस्लाम से पूर्व अरब में यह प्रथा थी कि जब हज्ज का एहराम बाँध लेते तो अपने घरों में द्वार से प्रवेश न कर के पीछे से प्रवेश करते थे। इस अंधविश्वास के खण्डन के लिये यह आयत उतरी कि भलाई इन रीतियों में नहीं बल्कि अल्लाह से डरने और उस के आदेशों के उल्लंघन से बचने में है।

2 अर्थात अधर्म, मिश्रणवाद और सत्धर्म इस्लाम से रोकना।

3 अर्थात स्वयं युद्ध का आरंभ न करो।

193. तथा उन से युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना न रह जाये, और धर्म केवल अल्लाह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩٣

194. सम्मानित[1] मास,सम्मानित मास के बदले है। और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝١٩٤

195. तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन ख़र्च करो, और अपने आप को विनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٩٥

196. तथा हज्ज और उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ[2] तो जो क़ुर्बानी सुलभ हो (कर दो), और अपने सिर न मुँडाओ, जब तक कि क़ुर्बानी अपने स्थान पर न पहुँच[3] जाये, यदि तुम

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۣ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى

1 सम्मानित मासों से अभिप्रेत चार अर्बी महीनेः ज़ुलक़ादह, ज़ुलहिज्जह, मुहर्रम तथा रजब हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग से इन मासों का आदर सम्मान होता आ रहा है। आयत का अर्थ यह है कि कोई सम्मानित स्थान अथवा युग में अतिक्रमण करे तो उसे बराबरी का बदला दिया जाये।

2 अर्थात शत्रु अथवा रोग के कारण।

3 अर्थात क़ुरबानी न कर लो ।

الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले) तो उस के बदले में रोज़ा रखना या दान[1] देना अथवा कुर्बानी देना है, और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक लाभान्वित[2] हो वह जो कुर्बानी सुलभ हो उसे करे। और जिसे उपलब्ध न हो तो वह तीन रोज़े हज्ज के दिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उस के लिये है जो मस्जिदे हराम का निवासी न हो। और अल्लाह से डरो, तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

197. हज्ज के महीने प्रसिद्ध हैं, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम वासना तथा अवैज्ञा और झगड़े की बातें न करे, तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा, और अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

---

1 जो तीन रोज़े अथवा तीन निर्धनों को खिलाना या एक बकरे की कुरबानी देना है (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

2 लाभान्वित होने का अर्थ यह है कि उमरे का एहराम बाँधे, और उस के कार्यक्रम पूरे कर के एहराम खोल दे, और जो चीज़ें एहराम की स्थिति में अवैध थीं, उन से लाभन्वित हो। फिर हज्ज के समय उस का एहराम बाँधे, इसे (हज्ज तमत्तुअ) कहा जाता है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

198. तथा तुम पर कोई दोष[1] नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफ़ात[2] से चलो, तो मश्अरे हराम (मुज़्दलिफ़ह) के पास अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुपथों में थे।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ١٩٨

199. फिर तुम[3] भी वहीं से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है।

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١٩٩

200. और जब तुम अपने (हज्ज के) मनासिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण[4] करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं किः हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दे। अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ٢٠٠

---

1 अर्थात व्यापार करने में कोई दोष नहीं है।

2 अरफ़ात उस स्थान का नाम है जिस में हाजी 9 ज़िलहिज्जह को विराम करते, तथा सूर्यास्त के पश्चात् वहाँ से वापिस होते हैं।

3 यह आदेश क़ुरैश के उन लोगों को दिया गया है जो मुज़्दलिफ़ह ही से वापिस चले आते थे। और अरफ़ात नहीं जाते थे। (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)

4 जाहिलिय्यत में अरबों की यह रीति थी कि हज्ज पूरा करने के पश्चात् अपने पूर्वजों के कर्मों की चर्चा कर के उन पर गर्व किया करते थे। तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस का अर्थ यह किया है कि जिस प्रकार शिशु अपने माता पिता को गुहारता, पुकारता है उसी प्रकार तुम अल्लाह को गुहारो और पुकारो। (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)

201. तथा उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

202. इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

203. तथा इन गिनती[1] के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल[2] दे, तो उस पर कोई दोष नहीं, और जो विलम्ब[3] करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۗ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

204. हे नबी! लोगों[4] में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को संसारिक विषय में भाती है, तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

---

1 गिन्ती के कुछ दिनों से अभिप्रेत ज़ुलहिज्जह मास की 11, 12, और 13 तारीख़ें हैं। जिन को (अय्यामे तश्रीक़) कहते हैं।

2 अर्थात 12 ज़ुलहिज्जह को ही सूर्यास्त के पहले कँकरी मारने के पश्चात् चल दे।

3 विलम्ब करे, अर्थात मिना में रात बिताये। और तेरह ज़ुलहिज्जह को कँकरी मारे, फिर मिना से निकल जाये।

4 अर्थात मुनाफ़िक़ों (दुविधा वादियों) में।

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِى ٱلْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ ٱلْحَرْثَ وَٱلنَّسْلَ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

205. तथा जब वह आप के पास से जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है, और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।

وَإِذَا قِيلَ لَهُ ٱتَّقِ ٱللَّهَ أَخَذَتْهُ ٱلْعِزَّةُ بِٱلْإِثْمِ ۚ فَحَسْبُهُۥ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

206. तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफ़ी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।

وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَشْرِى نَفْسَهُ ٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ رَءُوفٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

207. तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच[1] देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱدْخُلُوا۟ فِى ٱلسِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا۟ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۚ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾

208. हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश[2] कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

فَإِن زَلَلْتُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ فَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾

209. फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों)[3] के आने के पश्चात् विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वज्ञ[4] है।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّآ أَن يَأْتِيَهُمُ ٱللَّهُ فِى ظُلَلٍ مِّنَ ٱلْغَمَامِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَقُضِىَ

210. क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वह इस की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह

1 अर्थात उस की राह में और उस की आज्ञा के अनुपालन द्वारा।

2 अर्थात इस्लाम के पूरे संविधान का अनुपालन करो।

3 खुले तर्कों से अभिप्राय कुर्आन और सुन्नत है।

4 अर्थात तथ्य को जानता और प्रत्येक वस्तु को उस के उचित स्थान पर रखता है।

الْاَمْرُ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾

बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फ़रिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे[1] जायेंगे।

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰھُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

212. काफ़िरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास[2] करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान[3] पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۣ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّـبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِـيْمَا

213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,[4] और

1 अर्थात सब निर्णय परलोक में वही करेगा।

2 अर्थात उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण।

3 आयत का भावार्थ यह है कि काफ़िर संसारिक धन धान्य ही को महत्व देते हैं। जब कि परलोक की सफलता जो सत्धर्म और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।

4 आयत 213 का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नबी आने लगे ताकि सब को एक सत्धर्म पर कर दें। और आकाशीय पुस्तकें भी इसी लिये अवतरित हूईं कि विभेद में निर्णय

اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۖ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢١٣﴾

(अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्हों ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُم ۖ مَّسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ ۗ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾

214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झंझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गयाः) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप[1] है।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ ۖ قُلْ مَا أَنفَقْتُم مِّنْ

215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (ख़र्च)करें? उन से कहो

कर के सब को एक मूल सत्धर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सत्धर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अल्लाह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा। परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गये। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयीं, और तुम पर भी आयेंगी।

خَيۡرٖ فَلِلۡوَٰلِدَيۡنِ وَٱلۡأَقۡرَبِينَ وَٱلۡيَتَٰمَىٰ وَٱلۡمَسَٰكِينِ وَٱبۡنِ ٱلسَّبِيلِۗ وَمَا تَفۡعَلُواْ مِنۡ خَيۡرٖ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٞ ٢١٥

कि जो भी धन तुम ख़र्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।

كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡقِتَالُ وَهُوَ كُرۡهٞ لَّكُمۡۖ وَعَسَىٰٓ أَن تَكۡرَهُواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ شَرّٞ لَّكُمۡۚ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ ٢١٦

216. हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हे प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं[1] जानते।

يَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلشَّهۡرِ ٱلۡحَرَامِ قِتَالٖ فِيهِۖ قُلۡ قِتَالٞ فِيهِ كَبِيرٞۚ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَكُفۡرُۢ بِهِۦ وَٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِ وَإِخۡرَاجُ أَهۡلِهِۦ مِنۡهُ أَكۡبَرُ عِندَ ٱللَّهِۚ وَٱلۡفِتۡنَةُ أَكۡبَرُ مِنَ ٱلۡقَتۡلِۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَٰتِلُونَكُمۡ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمۡ عَن دِينِكُمۡ إِنِ ٱسۡتَطَٰعُواْۚ وَمَن يَرۡتَدِدۡ مِنكُمۡ عَن دِينِهِۦ فَيَمُتۡ وَهُوَ كَافِرٞ فَأُوْلَٰٓئِكَ حَبِطَتۡ أَعۡمَٰلُهُمۡ فِي ٱلدُّنۡيَا وَٱلۡأٓخِرَةِۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ٢١٧

217. हे नबी! वह[2] आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फ़ितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया हैं, जैसा कि इस्लाम के आरंभिक युग में हुआ, तो सत्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

2 अर्थात मिश्रणवादी।

में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ़्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा वही नारकी हैं। और वह उस में सदावासी होंगे।

218. (इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत[1] की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक[2] बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यक्ता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मादेशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾

---

1 हिज्रत का अर्थ हैः अल्लाह के लिये स्वदेश त्याग देना।

2 अर्थात अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत 43 तथा सूरह माइदह आयत 90 में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾

220. और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही हैं, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख़्ती[1] कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।

وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتّٰى يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ وَاللَّهُ يَدْعُوا إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ وَيُبَيِّنُ آيٰتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾

221. तथा मुश्रिक[2] स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुश्रिकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुश्रिक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के

---

1 उन का खाना पीना अलग करने का आदेश दे कर।

2 इस्लाम के विरोधियों से युद्ध ने यह प्रश्न उभार दिया कि उन से विवाह उचित है या नहीं? उस पर कहा जा रहा है कि उन से विवाह सम्बन्ध अवैध है, और इस का कारण भी बता दिया गया है कि वह तुम्हें सत्य से फेरना चाहते हैं। उन के साथ तुम्हारा विवाहिक सम्बन्ध कभी सफलता का कारण नहीं हो सकता।

فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ
الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न[1] जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भाँति स्वच्छ[2] हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश[3] दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ
وَقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
مُلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾

223. तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ[4] हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا
وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٤﴾

224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक[5] न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِنْ

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ

---

1 अर्थात संभोग करने के लिये।

2 मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात् स्नान कर के स्वच्छ हो जायें।

3 अर्थात जिस स्थान को अल्लाह ने उचित किया है, वहीं संभोग करो।

4 अर्थात संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

5 अर्थात सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचित है।

يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

अपने दिलों के संकल्प से लोगे, उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की शपथ लेते हों, वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर[1] यदि अपनी शपथ से इस (बीच) फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

227. और यदि उन्होंने तलाक़ का संकल्प ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो वह तीन बार रजवती होने तक अपने आप को विवाह से रोकी रखें। उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाषयों में पैदा किया[2] है, उसे छुपायें। यदि वह अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान रखती हों। तथा उन के पति इस अवधि में अपनी पत्नियों को लौटा लेने के अधिकारी[3] हैं यदि वह मिलाप[4] चाहते हों। तथा

---

1 यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अर्बी में "ईला" के नाम से जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कफ़्फ़ारह (प्रायश्चित) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे शपथ से फिरने या तलाक़ देने के लिये बाध्य करेगा।

2 अर्थात मासिक धर्म अथवा गर्भ को।

3 यह बताया गया है कि पति तलाक़ के पश्चात् पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे इस का अधिकार है। क्यों कि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।

4 हानि पहुँचाने अथवा दुख देने के लिये नहीं।

सामान्य नियमानुसार स्त्रियों[1] के लिये वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अल्लाह अति प्रभुत्वशील तत्वज्ञ है।

229. तलाक़ दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ

1 यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था, और उन की मुक्ति इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें, प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी, रूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से संबोधित पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ खड़ी नहीं हो सकती थी।
कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का सारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हव्वा हुई। इस लिये पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी, धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी।
परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुला एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं
कुर्आन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिक्ता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें अगामी सूरह "निसा" में मिल जाता है कि यह इस लिये है कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर ख़र्च करते हैं। अर्थात परिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये। और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशेषता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती। यह केवल एक परिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

أَوْ تَسْرِيحٌۢ بِإِحْسَٰنٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن
تَأْخُذُوا۟ مِمَّآ ءَاتَيْتُمُوهُنَّ شَيْـًٔا إِلَّآ أَن يَخَافَآ
أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا
حُدُودَ ٱللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا ٱفْتَدَتْ
بِهِۦ ۗ تِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَن
يَتَعَدَّ حُدُودَ ٱللَّهِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٢٩﴾

भाँति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय[1] हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति[2] करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी हैं।

فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُۥ مِنۢ بَعْدُ حَتَّىٰ
تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُۥ ۗ فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَآ أَن يَتَرَاجَعَآ إِن ظَنَّآ أَن يُقِيمَا
حُدُودَ ٱللَّهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक़ दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख[3] सकेंगे। और यह

---

1 अर्थात पति के संरक्षकों को।

2 पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में "खुल्अ" कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक़ का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी "खुल्अ" ले लेने का अधिकार दिया है। अर्थात वह अपने पति से तलाक़ माँग सकती है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक़ दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अव्सर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सहीह विवाह कर ले, फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग

अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾

231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।[1]

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी

के पश्चात् तलाक़ दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अवधि पूरी करने के पश्चात् नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है। लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

1 आयत का अर्थ यह है कि पत्नी को पत्नी के रूप में रखो, और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक़ दे कर उन की राह खोल दो। जाहिलिय्यत के युग के समान अँधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिक्ता एवं संयम के आदर्श बनो और क़ुर्आन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करो।

कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

تَرَاضَوْا بَيْنَهُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ
يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ مِنكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾

233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ
لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا
وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَّهُ
بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا
فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

अल्लाह देख रहा[1] है।

234. और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें।[2] फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष[3] नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का वचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार[4] कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِن لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَن تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٣٥﴾

1 तलाक़ की स्थिति में यदि माँ की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि माँ ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का ख़र्च पिता पर है। और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बताये गये हैं कि न तो माँ को बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक ख़र्च का भार न डाला जाये।

2 उस की निश्चित अवधि चार महीने दस दिन है। वह तुरंत दूसरा विवाह नहीं कर सकती, और न इस से अधिक पति का सोग मनाये। जैसा कि जाहिलिय्यत में होता था कि पत्नी को एक वर्ष तक पति का सोग मनाना पड़ता था।

3 यदि स्त्री निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे, तो उसे रोका न जाये।

4 विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुली तथा नियमानुसार हो, गुप्त नहीं।

निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये[1], तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उसे अल्लाह जानता है। अतः उस से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने से पहले तलाक़ दे दो। (इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो। नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी शक्ति के अनुसार देना है। यह उपकारियों पर आवश्यक है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٣٦﴾

237. और यदि तुम उन को उन से संभोग करने से पहले तलाक़ दो इस स्थिति में कि तुम ने उन के लिये महर (विवाह उपहार) निर्धारित किया है तो निर्धारित महर का आधा देना अनिवार्य है। यह और बात है कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह का बंधन[2] है। और क्षमा कर देना संयम से अधिक समीप है। और

وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٧﴾

1 जब तक अवधि पूरी न हो विवाह की बात तथा वचन नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात पति अपनी ओर से अधिक अर्थात पूरा महर दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बताया गया है कि यदि विवाह के पश्चात् पति और पत्नी में कोई सम्बंध स्थापित हुआ हो, तो इस स्थिति में यदि महर निर्धारित न किया गया हो तो पति अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता हो, उसे अवश्य दे। और यदि महर निर्धारित हो तो इस स्थिति मे आधा महर पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इस से अधिक दे सके तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह सब देख रहा है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ﴿٢٣٨﴾

238. नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो।[1] तथा अल्लाह के लिये विनय पूर्वक खड़े रहो।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾

239. और यदि तुम्हें भय[2] हो तो पैदल या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चिंत हो जाओ तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे,वैसे अल्लाह को याद करो।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

240. और जो तुम में से मर जायें, तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उन को ख़र्च देने, तथा (घर से) न निकालने की वसिय्यत कर जायें तो यदि वह स्वयं निकल जायें[3] तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

241. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिये, यह आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।

---

1 अस्र की नमाज़ पर ध्यान रखने के लिये इस कारण बल दिया गया है कि व्यवसाय में लीन रहने का समय होता है।

2 अर्थात शत्रु आदि का।

3 अर्थात एक वर्ष पूरा होने से पहले। क्यों कि उन की निश्चित अवधि चार महीनो और दस दिन ही निर्धारित है।

242. इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।

كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾

243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये[1], जब कि उन की संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञयता नहीं करते।[2]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

244. और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾

245. कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार[3] देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।

مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾

246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहाः हमारे लिये एक राजा बना दो।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي

1 इस में बनी इस्राईल के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों, वह जीवन में सफल नहीं हो सकते, तथा जीवन और मौत अल्लाह के हाथ में है।

3 अर्थात जिहाद के लिये धन ख़र्च करना अल्लाह को उधार देना है।

سَبِيلِ اللّٰهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَآئِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِالظّٰلِمِينَ ﴿٢٤٦﴾

हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहाः ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्हों ने कहाः ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का अदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوٓا أَنّٰى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُۥ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللّٰهُ يُؤْتِي مُلْكَهُۥ مَنْ يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾

247. तथा उन के नबी ने कहाः अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगेः "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहाः अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी[1] है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِۦٓ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسٰى وَآلُ هٰرُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

248. तथा उन के नबी ने उन से कहाः उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुये

---

1 अर्थात उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

अवशेष हैं, उसे फ़रिश्ते उठाये हुये होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो तो इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी[1] (लक्षण) है।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾

249. फिर जब तालूत सेना ले कर चला, तो उस ने कहाः निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पीयेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परन्तु जो अपने हाथ से चुल्लू भर पी ले (तो कोई दोष नहीं। तो थोड़े के सिवा सब ने उस में से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उस के साथ ईमान लाये, उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रु) जालूत और उस की सेना से युद्ध करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहाः बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमति से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾

250. और जब वह जालूत और उस की सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर। तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दे। और काफ़िरों पर हमारी सहायता कर।

فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ

251. तो उन्हों ने अल्लाह की अनुमति से

1 अर्थात अल्लाह की ओर से तालूत को निर्वाचित किये जाने की।

اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾

उन्हें पराजित कर दिया, और दावूद ने जालूत का बध कर दिया। तथा अल्लाह ने उस (दावूद)[1] को राज्य और हिक्मत (नुबूवत) प्रदान की, तथा उसे जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

252. (हे नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾

253. वह रसूल हैं। उन को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अल्लाह से बात की। और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया। तथा मरयम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं। और रूहुलकुदुस[2] द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अल्लाह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्हों ने विभेद किया, तो उन में से कोई ईमान लाया, और किसी ने कुफ़्र किया। और यदि अल्लाह चाहता तो

1 दावूद अलैहिस्सलाम तालूत की सेना में एक सैनिक थे, जिन को अल्लाह ने राज्य देने के साथ नबी भी बनाया। उन्हीं के पुत्र सुलैमान अलैहिस्सलाम थे। दावूद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने धर्मपुस्तक ज़बूर प्रदान की। सूरह साद में उन की कथा आ रही है।

2 "रूहुलकुदुस" का शाब्दिक अर्थः पवित्रात्मा है। और इस से अभिप्रेत एक फ़रिश्ता है, जिस का नाम "जिब्रील" अलैहिस्सलाम हैं।

वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. हे ईमान वालो! हम ने तुम्हें जो कुछ दिया है उस में से दान करो, उस दिन (अर्थात प्रलय) के आने से पहले, जिस में कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) काम आयेगी, तथा काफ़िर लोग[1] ही अत्याचारी[2] हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟ مِمَّا رَزَقْنَٰكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَٰعَةٌ ۗ وَٱلْكَٰفِرُونَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٥٤﴾

255. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित[3] तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का[4] है। कौन है जो उस के पास उस की अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उन के समक्ष और जो कुछ उन से ओझल है सब को जानता है। वह उस के ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उस की कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च[5] महान् है।

ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

---

1 अर्थात जो इस तथ्य को नहीं मानते वही स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं।

2 आयत का भावार्थ यह है कि परलोक की मुक्ति ईमान और सदाचार पर निर्भर है, न वहाँ मुक्ति का सौदा होगा न मैत्री और सिफ़ारिश काम आयेगी।

3 अर्थात स्वयंभू, अनन्त है।

4 अर्थात जो स्वयं स्थित तथा सब उस की सहायता से स्थित हैं।

5 यह कुर्आन की सर्वमहान् आयत है। और इस का नाम "आयतुलकुर्सी" है। हदीस में इस की बड़ी प्रधानता बताई गई है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

256. धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अतः अब जो तागूत (अर्थात अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता[1] है।

لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشۡدُ مِنَ ٱلۡغَيِّۚ فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٢٥٦

257. अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये। वह उन को अंधेरों से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हैं। उन के सहायक तागूत (उन के मिथ्या पूज्य) हैं। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरों की ओर ले जाते हैं। यही नारकी हैं, जो उस में सदावासी होंगे।

ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ يُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَوۡلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخۡرِجُونَهُم مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِۗ أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ٢٥٧

258. हे नबी! क्या आप ने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिस ने इब्राहीम से उस के पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहाः मेरा पालनहार वह है जो जीवित करता तथा मारता है तो उस ने कहाः मैं भी जीवित[2] करता

أَلَمۡ تَرَ إِلَى ٱلَّذِي حَآجَّ إِبۡرَٰهِـۧمَ فِي رَبِّهِۦٓ أَنۡ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلۡمُلۡكَ إِذۡ قَالَ إِبۡرَٰهِـۧمُ رَبِّيَ ٱلَّذِي يُحۡيِۦ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا۠ أُحۡيِۦ وَأُمِيتُۖ قَالَ إِبۡرَٰهِـۧمُ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَأۡتِي بِٱلشَّمۡسِ مِنَ ٱلۡمَشۡرِقِ فَأۡتِ بِهَا مِنَ ٱلۡمَغۡرِبِ فَبُهِتَ ٱلَّذِي كَفَرَۗ وَٱللَّهُ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ٢٥٨

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि धर्म तथा आस्था के विषय में बल प्रयोग की अनुमति नहीं, धर्म दिल की आस्था और विश्वास की चीज़ है। जो शिक्षा दिक्षा से पैदा हो सकता है, न कि बल प्रयोग और दबाव से। इस में यह संकेत भी है कि इस्लाम में जिहाद अत्याचार को रोकने तथा सत्धर्म की रक्षा के लिये है न कि धर्म के प्रसार के लिये। धर्म के प्रसार का साधन एक ही है, और वह प्रचार है, सत्य प्रकाश है। यदि अंधकार हो तो केवल प्रकाश की आवश्यक्ता है। फिर प्रकाश जिस ओर फिरेगा तो अंधकार स्वयं दूर हो जायेगा।

2 अर्थात जिसे चाहूँ मार दूँ, और जिसे चाहूँ क्षमा कर दूँ। इस आयत में अल्लाह

तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहाः अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ला दे! (यह सुन कर) काफ़िर चकित रह गया। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰی قَرْیَةٍ وَّهِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰی عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰی یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰی طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ یَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰی حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَی الْعِظَامِ كَیْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَیَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۵۹﴾

259. अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो एक ऐसी नगरी से गुज़रा जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उस ने कहाः अल्लाह इस के ध्वस्त हो जाने के पश्चात इसे कैसे जीवित (आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया। और कहाः तुम कितनी अवधि तक मुर्दे पड़े रहे? उस ने कहाः एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहाः बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है। तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये एक निशानी (चिन्ह) बना दें। तथा (गधे की) स्थियों को देखो कि हम उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उन पर कैसे माँस चढ़ाते हैं। इस प्रकार जब उस के समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह[1] पुकार उठा कि मुझे ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

के विश्व व्यवस्थापक होने का प्रमाणिकरण है। और इस के पश्चात् की आयत में उस के मुर्दे को जीवित करने की शक्ति का प्रमाणिकरण है।

1 इस व्यक्ति के विषय में भाष्यकारों ने विभेद किया है। परन्तु सम्भवतः वह व्यक्ति (उज़ैर) थे। और नगरी (बैतुल मक्दिस) थी। जिसे बुख़्त नस्सर राजा ने आक्रमण कर के उजाड़ दिया था। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۖ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

260. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहाः हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दे को कैसे जीवित कर देता है? कहाः क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहाः क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहाः चार पक्षी ले आओ। और उन को अपने से परचा लो। (फिर उन को बध कर के) उन का एक एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन को पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾

261. जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते हैं, उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिस ने सात बालियाँ उगाई हों। (उस की) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल[1] ज्ञानी है।

اَلَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَّلَا أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

262. जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताते, और न (जिसे दिया हो) दुःख देते हैं उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिकार (बदला) है, और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन[2] होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَا

263. भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात्

1 अर्थात उस का प्रदान विशाल है, और उस के योग्य को जानता है।

2 अर्थात संसार में दान न करने पर कोई संताप होगा।

أَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ

दुख दिया जाये। तथा अल्लाह निस्पृह सहनशील है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

264. हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दुख दे कर, अपने दानों को व्यर्थ न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उस का उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये, और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दे। वह अपनी कमाई का कुछ भी न पा सकेंगे, और अल्लाह काफ़िरों को सीधी डगर नहीं दिखाता।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

265. तथा उन की उपमा जो अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग़ (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे भाग पर हो, उस पर घोर वर्षा हुई, तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उस के लिये) फुहार ही बस[1] हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ

266. क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उस के खजूर तथा अँगूरों के बाग़ हों,

1 यहाँ से अल्लाह की प्रसन्नता के लिये जिहाद तथा दीन, दुखियों की सहायता के लिये धन दान करने की विभिन्न रूप से प्रेरणा दी जा रही है। भावार्थ यह है कि यदि निः स्वार्थता से थोड़ा दान भी किया जाये, तो शुभ होता है, जैसे वर्षा की फुहारें भी एक बाग़ (उद्यान) को हरा भरा कर देती हैं।

وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾

जिन में नहरें बह रही हों, उन में उस के लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों, तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उस के निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिस में आग हो, झुलस जाये।[1] इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِآخِذِيهِ إِلَّا أَن تُغْمِضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾

267. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीज़ों में से जो तुम ने कमाई हैं, तथा उन चीज़ों में से जो हम ने तुम्हारे लिये धरती से उपजाई हैं, दान करो। तथा उस में से उस चीज़ को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु यह कि अंदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह प्रशंसित है।

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ۖ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾

268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निर्लज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ

269. वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे

---

1 अर्थात यही दशा प्रलय के दिन काफ़िर की होगी। उस के पास फल पाने के लिये कोई कर्म नहीं होगा। और न कर्म का अव्सर होगा। तथा जैसे उस के निर्बल बच्चे उस के काम नहीं आ सके, उसी प्रकार उस श का दिखावे का दान भी काम नहीं आयेगा, वह अपनी आवश्यक्ता के समय अपने कर्मों के फल से वंचित कर दिया जायेगा। जैसे इस व्यक्ति ने अपने बुढ़ापे तथा बच्चों की निर्बलता के समय अपना बाग़ खो दिया।

وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

270. तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौती[1] मानो, अल्लाह उसे जानता है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

إِن تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّـَٔاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾

271. यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छुपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा[2] है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उस से अल्लाह सूचित है।

لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَـٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَآءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾

272. उन को सीधी डगर पर लगा देना आप का दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देते हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उस का भरपूर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा, और तुम पर अत्याचार[3] नहीं किया जायेगा।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

273. दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर

---

1 अर्थात अल्लाह की विशेष रूप से इबादत (वन्दना) करने का संकल्प ले। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

2 आयत का भावार्थ यह है कि दिखावे के दान से रोकने का यह अर्थ नहीं है कि: छुपा कर ही दान दिया जाये, बल्कि उस का अर्थ केवल यह है कि निःस्वार्थ दान जैसे भी दिया जाये, उस का प्रतिफल मिलेगा।

3 अर्थात उस के प्रतिफल में कोई कमी न की जायेगी।

لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُم
بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا وَمَا
تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾

गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर[1] सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगे। तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِاللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾

274. जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا
يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ
مِّن رَّبِّهِ فَانتَهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾

275. जो लोग ब्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्हों ने कहा कि व्यापार भी तो ब्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा ब्याज को हराम (अवैध) कर दिया[2] है। अब

---

1 इस से सांकेतिक वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये। जिस के कारण उन का सारा सामान मक्का में छूट गया। और अब उन के पास कुछ भी नहीं बचा। परन्तु वह लोगों के सामने हाथ फैला कर भीख नहीं माँगते।

2 इस्लाम मानव में परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति उत्पन्न करना चाहता है, इसी कारण उस ने दान करने का निर्देश दिया है कि एक मानव दूसरे की आवश्यक्ता पूर्ति करे। तथा उस की आवश्यक्ता को अपनी आवश्यक्ता समझे। परन्तु ब्याज खाने की मांसिकता सर्वथा इस के विपरीत है। ब्याज भक्षी किसी की आवश्यक्ता को देखता है तो उस के भीतर उस की सहायता की भावना उत्पन्न नहीं होती। वह उस की विवशता से अपना स्वार्थ पूरा करता तथा उस की आवश्यक्ता को अपने धनी होने का साधन बनाता है। और क्रमशः एक निर्दयी हिंसक पशु बन

जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश आ गया, और इस कारण उस से रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी हैं, जो उस में सदावासी होंगे।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

276. अल्लाह व्याज को मिटाता है, और दानों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी कृतघ्न घोर पापी से प्रेम नहीं करता।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾

277. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज़ की स्थापना करते रहे, और ज़कात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

278. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

279. और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है।

कर रह जाता है, इस के सिवा व्याज की रीति धन को सीमित करती है, जब कि इस्लाम धन को फैलाना चाहता है, इस के लिये व्याज को मिटाना, तथा दान की भावना का उत्थान चाहता है। यदि दान की भावना का पूर्णतः उत्थान हो जाये तो कोई व्यक्ति दीन तथा निर्धन रह ही नहीं सकता।

न तुम अत्याचार करो[1], न तुम पर अत्याचार किया जाये।

280. और यदि तुम्हारा ऋणी असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो। और अगर क्षमा कर दो (अर्थात दान कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो।

وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ
تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾

281. तथा उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा किसी पर अत्याचार न होगा।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ إِلَى اللّٰهِ ۖ ثُمَّ تُوَفّٰى
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾

282. हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिये उधार लेन देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी है। वह लिखने से इन्कार न करे। तथा वह लिखवाये जिस पर उधार है। और अपने पालनहार अल्लाह से डरे। और उस में से कुछ कम न करे। यदि जिस पर उधार है वह निर्बोध अथवा निर्बल हो, अथवा लिखवा न सकता हो तो उस का संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये। तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी (गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को उन साक्षियों में से जिन को साक्षी बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلٰٓى أَجَلٍ
مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۚ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۚ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ
وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا
يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۚ فَإِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ
سَفِيْهًا أَوْ ضَعِيْفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ أَنْ يُّمِلَّ هُوَ
فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ
مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ
وَّامْرَأَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ أَنْ
تَضِلَّ إِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدٰىهُمَا الْأُخْرٰى ۚ وَلَا
يَأْبَ الشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوْا ۚ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا أَنْ
تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا أَوْ كَبِيْرًا إِلٰٓى أَجَلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ أَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنٰىٓ أَلَّا تَرْتَابُوْٓا
إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا
بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا
تَكْتُبُوْهَا ۚ وَأَشْهِدُوْٓا إِذَا تَبَايَعْتُمْ

---

1 अर्थात मूल धन से अधिक लो।

وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ەۗ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٢٨٢

(स्त्रियों) में से एक भूल जाये तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बुलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायक। और इस से अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये। और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैज्ञा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निःसन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝٢٨٣

283. और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यक्ता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दे। तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

284. आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन

ही में रखो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

285. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया जो उस के लिये अल्लाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे, और हमें तेरे ही पास[1] आना है।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۗ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۗ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

286. अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें तो हमें न पकड़। हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफ़िरों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

1 इस आयत में सत्धर्म इस्लाम की आस्था तथा कर्म का सारांश बताया गया है।

सूरह आले इमरान - 3

सूरह आले इमरान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में **200** आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत **33** में आले इमरान (इमरान की संतान) का वर्णन हुआ है जो ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्‌यम (अलैहिस्सलाम) के पिता का नाम है। इस लिये इस का नाम ((आले इमरान)) रखा गया है।
- इस की आरंभिक आयत **9** तक तौहीद (अद्वैतवाद) को प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है इस लिये सभी धार्मिक विवाद में यही निर्णयकारी है।
- आयत **10** से **32** तक अहले किताब तथा दूसरों को चेतावनी दी गई है कि यदि उन्हों ने कुर्आन के मार्गदर्शन को जिस का नाम इस्लाम है नहीं माना तो यह अल्लाह से कुफ़्र होगा जिस का दण्ड सदैव के लिये नरक होगा। और उन्हों ने धर्म का जो वस्त्र धारण कर रखा है प्रलय के दिन उस की वास्तविक्ता खुल जायेगी और वह अपमानित हो कर रह जायेंगे।
- आयत **33** से **63** तक में मर्‌यम (अलैहस्सलाम) तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) से संबन्धित तथ्यों को उजागर किया गया जो उन निर्मूल विचारों का खण्डन करते हैं जिन्हें ईसाईयों ने धर्म में मिला लिया है और इस संदर्भ में ज़करिय्या (अलैहिस्सलाम) तथा यह्या (अलैहिस्सलाम) का भी वर्णन हुआ है।
- आयत **64** से **101** तक अहले किताब ईसाईयों के कुपथ और उन के नैतिक तथा धार्मिक पतन का वर्णन करते हुये मुसलमानों को उन से बचने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत **102** से **120** तक मुसलमानों को इस्लाम पर स्थित रहने तथा कुर्आन पाक को दृढ़ता से थामे रहने और अपने भीतर एक ऐसा गिरोह बनाने के निर्देश दिये गये हैं जो धार्मिक सुधार तथा सत्य का प्रचार करे और इसी के साथ अहले किताब के उपद्रव से सावधान रहने पर बल दिया गया है।
- आयत **121** से **189** तक उहुद के युद्ध की स्थितियों की समीक्षा की गई हैं तथा उन कमज़ोरियों की ओर संकेत किया गया है जो उस समय उजागर हुईं।
- आयत **190** से अन्त तक इस का वर्णन है कि ईमान कोई अन्ध विश्वास

नहीं, यह समझ बूझ तथा स्वभाव की आवाज़ है। और जब मनुष्य इसे दिल से स्वीकार कर लेता है तो उस का संबन्ध अल्लाह से हो जाता और उस की यह प्रार्थना होती है कि उस का अन्त शुभ हो। उस समय उस का पालनहार उसे शुभपरिणाम की शुभसूचना सुनाता है कि उस ने सत्धर्म का पालन करने में जो योगदान दिये हैं वह उसे उन का भरपूर सुफल प्रदान करेगा। फिर अन्त में सत्य की राह में संघर्ष करने और सत्य तथा असत्य के संघर्ष में स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓمّٓ ۟

1. अलिफ़, लाम, मीम।

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۟

2. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۟

3. उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्आन) उतारी है, जो इस से पहले की पुस्तकों के लिये प्रमाणकारी है, और उसी ने तौरात तथा इंजील उतारी हैं।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۟

4. इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फ़ुर्क़ान उतारा है[1], तथा जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۟

5. निस्संदेह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज़ छुपी नहीं है।

1 अर्थात तौरात और इंजील अपने समय में लोगों के लिये मार्गदर्शन थीं। परन्तु फ़ुर्क़ान (कुर्आन) उतरने के पश्चात् अब वह मार्गदर्शन केवल कुर्आन पाक में है।

6. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाषयों में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑥

7. उसी ने आप पर[1] यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है जिस में कुछ आयतें मुह्कम[2] (सुदृढ़) हैं जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिह[3] (संदिग्ध)हैं। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पक्के हैं वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ⑦

8. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार!

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने मानव का रूप आकार बनाने और उसकी आर्थिक आवश्यक्ता की व्यवस्था करने के समान, उस की आत्मिक आवश्यक्ता के लिये कुर्आन उतारा है, जो अल्लाह की प्रकाशना तथा मार्गदर्शन और फ़ुर्क़ान है। जिस के द्वारा सत्योसत्य में विवेक (अन्तर) कर के सत्य को स्वीकार करे।

2 मुह्कम (सुदृढ़) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन के अर्थ स्थिर, खुले हुये हैं। जैसे एकेश्वरवाद, रिसालत तथा आदेशों और निषेधों एवं हलाल (वैध) और हराम (अवैध) से सम्बन्धित आयतें, यही पुस्तक का मूल आधार हैं।

3 मुतशाबिह (संदिग्ध) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन में उन तथ्यों की ओर संकेत किया गया है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों में नहीं आ सकते, जैसे मौत के पश्चात् जीवन, तथा परलोक की बातें, इन आयतों के विषय में अल्लाह ने हमें जो जानकारी दी है हम उन पर विश्वास करते हैं, क्यों कि इनका विस्तार विवरण हमारी बुद्धि से बाहर है, परन्तु जिन के श दिलों में खोट है वह इन की वास्तविक्ता जानने के पीछे पड़ जाते हैं जो उन की शक्ति से बाहर है।

لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ⑧

हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ⑨

9. हे हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई संदेह नहीं, निस्संदेह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरुद्ध नहीं करता।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ⑩

10. निश्चय जो काफ़िर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के ईंधन बनेंगे।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑪

11. जैसे फ़िरऔनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्हों ने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ⑫

12. हे नबी! काफ़िरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना[1] है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ⑬

13. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये, एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफ़िर था, वह अपनी आँखो से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग

1 इस में काफ़िरों की मुसलमानों के हाथों पराजय की भविष्यवाणी है।

रहे हैं। तथा अल्लाह अपनी सहायता द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। निःसंदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बड़ी शिक्षा[1] है।

14. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीज़ें, जैसे स्त्रियाँ, संतान, सोने चाँदी के ढ़ेर, निशान लगे घोड़े, पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई हैं। यह सब संसारिक जीवन के उपभोग्य हैं। और उत्तम आवास अल्लाह के पास है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ
وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ
ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ
الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾

15. (हे नबी!) कह दोः क्या मैं तुम्हें इस से उत्तम चीज़ बता दूँ? उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं। जिन में नहरें बह रही हैं। वह उन में सदावासी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ होंगी, तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ
رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌ ۢ بِالْعِبَادِ ۚ ﴿۱۵﴾

16. जो (यह) प्रार्थना करते हैं कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ ﴿۱۶﴾

17. जो सहनशील हैं, सत्यवादी हैं, आज्ञाकारी हैं, दानशील तथा भोरों में अल्लाह से क्षमा याचना करने वाले हैं।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ
وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾

18. अल्लाह साक्षी है जो न्याय के साथ क़ायम है, कि उस के सिवा कोई

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا

---

1 अर्थात इस बात की कि विजय अल्लाह के समर्थन से प्राप्त होती है, सेना की संख्या से नहीं।

ٱلْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِٱلْقِسْطِ ۚ لَآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَـٰمُ ۗ وَمَا ٱخْتَلَفَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَـٰبَ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ ﴿١٩﴾

19. निस्संदेह (वास्तविक) धर्म अल्लाह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने के पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

فَإِنْ حَآجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِىَ لِلَّهِ وَمَنِ ٱتَّبَعَنِ ۗ وَقُل لِّلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَـٰبَ وَٱلْأُمِّيِّـۧنَ ءَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا۟ فَقَدِ ٱهْتَدَوا۟ ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ ٱلْبَلَـٰغُ ۗ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

20. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अल्लाह के अज्ञाकारी हो गये। तथा अहले किताब, और उम्मियों (अर्थात जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा[1] देना है। तथा अल्लाह भक्तों को देख रहा है।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ وَيَقْتُلُونَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ ٱلَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِٱلْقِسْطِ مِنَ ٱلنَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾

21. जो लोग अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करते हों, तथा नबियों को अवैध बध करते हों, तथा उन लोगों का बध करते हों जो न्याय का आदेश देते हैं तो उन्हें दुःखदायी यातना[2] की शुभ सूचना सुना दो।

---

1 अर्थात उन से वाद विवाद करना व्यर्थ है।

2 इस में यहूद की आस्थिक तथा कर्मिक कुपथा की ओर संकेत है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٢٢﴾

22. यही हैं जिन के कर्म संसार तथा परलोक में अकारथ गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِنْهُمْ وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

23. हे नबी! क्या आप ने उन की[1] दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे हैं, ताकि उन के बीच निर्णय[2] करे तो उन का एक गिरोह मुँह फेर रहा है। और वह हैं ही मुँह फेरने वाले।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

24. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्हों ने कहा कि नरक की अग्नि हमें गिनती के कुछ दिन ही छूऐगी, तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

25. तो उन की क्या दशा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे, जिस (के आने) में कोई संदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा, और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।?

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ

26. हे (नबी)! कहोः हे अल्लाह! राज्य के[3] अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य

---

1 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं।

2 अर्थात विभेद का निर्णय कर दे। इस आयत में अल्लाह की पुस्तक से अभिप्रायः तौरात और इंजील हैं। और अर्थ यह है कि जब उन्हें उन की पुस्तकों की ओर बुलाया जाता है कि अपनी पुस्तकों ही को निर्णायक मान लो, तथा बताओ कि उन में अंतिम नबी पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है या नहीं? तो वह कतरा जाते हैं, जैसे कि उन्हें कोई ज्ञान ही न हो।

3 अल्लाह की अपार शक्ति का वर्णन।

وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٦

दे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْـحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْـحَيِّ ۡ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٢٧

27. तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है, तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर[1] देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْھُمْ تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٢٨

28. मुमिनों को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरुद्ध काफ़िरों को अपना सहायकमित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये।[2] और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है। और अल्लाह ही की ओर जाना है।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٩

29. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚۖ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْۗءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًۢا بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٣٠

30. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मों के बीच बड़ी दूरी होती।

---

1 इस में रात्रि-दिवस के परिवर्तन की ओर संकेत है।

2 अर्थात संधि मित्र बना सकते हो।

तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता[1] है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।

قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾

31. हे नबी! कह दोः यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम[2] करेगा। तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

32. हे नबी! कह दोः अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफ़िरों से प्रेम नहीं करता।

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾

33. वस्तुतः अल्लाह ने आदम, नूह, इब्राहीम की संतान तथा इमरान की संतान को संसार वासियों में चुन लिया था।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِن بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

34. यह एक दूसरे की संतान हैं, और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

35. जब इमरान की पत्नी[3] ने कहाः हे मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है, मैं ने तेरे[4] लिये उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से स्वीकार कर ले। वास्तव में तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

---

1 अर्थात अपनी अवैज्ञा से ।

2 इस में यह संकेत है कि जो अल्लाह से प्रेम का दावा करता हो, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अनुसरण न करता हो तो वह अल्लाह का प्रेमी नहीं हो सकता।

3 अर्थात मर्यम की माँ।

4 अर्थात बैतुल मक़दिस की सेवा के लिये।

36. फिर जब उस ने बालिका जनी तो (संताप से) कहाः मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था-और नर, नारी के समान नहीं होता-, और मैं ने उस का नाम मर्‌यम रखा है। और मैं उसे तथा उस की संतान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।[1]

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

37. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और ज़करिय्या को उस का संरक्षक बनाया। ज़करिय्या जब भी उस के मेहराब (उपासना कोष्ट) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहता कि हे मर्‌यम! यह कहाँ से (आया) है? वह कहतीः यह अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

38. तब ज़करिय्या ने अपने पालनहार से प्रार्थना की हे मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर। निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾

39. तो फ़रिश्तों ने उसे पुकारा- जब वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था- किः अल्लाह तुझे "यह्या" की शुभः

فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ

1 हदीस में है कि जब कोई शिशु जन्म लेता है, तो शैतान उसे स्पर्श करता है जिस के कारण वह चीख़ कर रोता है, परन्तु मर्‌यम और उस के पुत्र को स्पर्श नहीं किया है। (सही बुख़ारी भ 4548)

وَسَيِّدًا وَّحَصُورًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾

सूचना दे रहा है, जो अल्लाह के शब्द (ईसा) का पुष्टि करने वाला, प्रमुख तथा संयमी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِىَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِىْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾

40. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहाँ से होगा, जब कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। और मेरी पत्नी बाँझ[1] है? उस ने कहाः अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِىِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾

41. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दे। उस ने कहाः तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत से। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रह। और संध्या, प्रातः उस की पवित्रता का वर्णन कर।

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. और (याद करो) जब फ़रिश्तों ने मर्यम से कहाः हे मर्यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. हे मर्यम! अपने पालनहार की अज्ञाकारी रहो। और सजदा करो तथा रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रहो।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. यह ग़ैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशना कर रहे हैं। और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी

1 यह प्रश्न ज़करिय्या ने प्रसन्न हो कर आश्चर्य से किया।

लेखनियाँ[1] फेंक रहे थे कि कौन मर्यम का अभिरक्षण करेगा। और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड़ रहे थे।

إِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾

45. जब फ़रिश्तों ने कहाः हे मरयम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द[2] की शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह ईसा पुत्र मर्यम होगा। वह लोक-परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٤٦﴾

46. वह लोगों से गोद में तथा अधेड़ आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।

قَالَتْ رَبِّ أَنّٰى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ إِذَا قَضٰى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

47. मर्यम ने (आश्चर्य से) कहाः मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने[3] कहाः इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है किः "हो जा" तो वह हो जाता है।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾

48. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबोध और तौरात तथा इंजील की शिक्षा देगा।

وَرَسُولًا إِلٰى بَنِيٓ إِسْرٰٓءِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ

49. और फिर वह बनी इस्राईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार

---

1 अर्थात यह निर्णय करने के लिये किः मर्यम का संरक्षक कौन हो?

2 अर्थात वह अल्लाह के शब्द "कुन" से पैदा होगा। जिस का अर्थ है "हो जा"।

3 अर्थात फ़रिश्ते ने।

की ओर से निशानी लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार के समान बनाऊँगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को स्वस्थ कर दूँगा। और मुर्दों को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्संदेह इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानियाँ हैं, यदि तुम ईमान वाले हो।

مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ أَنِّيٓ أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًۢا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾

50. तथा मैं उस की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है "तौरात"। तुम्हारे लिये कुछ चीज़ों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ, जो तुम पर हराम (अवैध) की गयी हैं। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अतः तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٥٠﴾

51. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अतः उसी की इबादत (वंदना) करो। यही सीधी डगर है।

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

52. तथा जब ईसा ने उन से कुफ़्र का संवेदन किया तो कहाः अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरों) ने कहाः हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) हैं।

فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِيٓ إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ ۖ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

53. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।

رَبَّنَآ ءَامَنَّا بِمَآ أَنزَلْتَ وَٱتَّبَعْنَا ٱلرَّسُولَ فَٱكْتُبْنَا مَعَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٥٣﴾

54. तथा उन्हों ने षड्यंत्र[1] रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचने वालों में सब से अच्छा है।

وَمَكَرُوا۟ وَمَكَرَ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَٰكِرِينَ ﴿٥٤﴾

55. जब अल्लाह ने कहाः हे ईसा! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला तथा अपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफ़िरों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफ़िरों के ऊपर[2] करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

إِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَىٰٓ إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَجَاعِلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوكَ فَوْقَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ۖ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾

56. फिर जो काफ़िर हो गये, उन्हें लोक परलोक में कड़ी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।

فَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٥٦﴾

57. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥٧﴾

58. हे नबी! यह हमारी आयतें और

ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ ٱلْءَايَٰتِ وَٱلذِّكْرِ ٱلْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

---

1 अर्थात ईसा (अलैहिस्सलाम) को हत् करने का। तो अल्लाह ने उन्हें विफल कर दिया। (देखियेः सूरह निसा, आयत 157)।

2 अर्थात यहूदियों तथा मुश्रिकों के ऊपर।

तत्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

59. वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है,[1] जैसे आदम की। उसे (अर्थात आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहाः "हो जा" तो वह हो गया।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

60. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य[2] है, अतः आप संदेह करने वालों में न हों।

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٦١﴾

61. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों, और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं, और स्वयं को भी, फिर अल्लाह से सविनय प्रार्थना करें, कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर[3] हो।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

62. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

---

1 अर्थात जैसे प्रथम पुरुष आदम (अलैहिस्सलाम) को बिना माता-पिता के उत्पन्न किया, उसी प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) को बिना पिता के उत्पन्न कर दिया, अतः वह भी मानव पुरुष हैं।

2 अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम का मानव पुरुष होना। अतः आप उन के विषय में किसी संदेह में न पड़ें।

3 अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि वह हम में से मिथ्यावादियों को अपनी दया से दूर कर दे।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌۢ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

63. फिर भी यदि वह मुँह[1] फेरें, तो निस्संदेह अल्लाह उपद्रवियों को भली भाँति जानता है।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا إِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ
شَيْـًٔا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّنْ دُونِ
اللّٰهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

64. हे नबी! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है। कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें, तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न बनाये। फिर यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के)[2] अज्ञाकारी हैं।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِىٓ إِبْرٰهِيمَ وَمَآ
أُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾

65. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद[3] क्यों करते हो, जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात् उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?

هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ حٰجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ
بِهِۦ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ
بِهِۦ عِلْمٌ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

66. और फिर तुम्हीं ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान[4] था, तो उस विषय में क्यों विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें

---

1 अर्थात सत्य को जानने की इस विधि को स्वीकार न करें।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम से संबंधित विवाद के निवारण के लिये एक दूसरी विधि बताई गई है।

3 अर्थात यह क्यों कहते हो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम हमारे धर्म पर थे। तौरात और इंजील तो उन के सहस्त्रों वर्ष के पश्चात् अवतरित हूई। तो वह इन धर्मों पर कैसे हो सकते हैं।

4 अर्थात अपने धर्म के विषय में।

कोई ज्ञान[1] नहीं? तथा अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

67. इब्राहीम न यहूदी था, न नसरानी (ईसाई)। परन्तु वह एकेश्वरवादी, मुस्लिम "आज्ञाकारी" था। तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

مَا كَانَ إِبْرٰهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾

68. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक समीप तो वह लोग हैं जिन्हों ने उस का अनुसरण किया, तथा यह नबी[2], और जो ईमान लाये। और अल्लाह ईमान वालों का संरक्षकभमित्र है।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾

69. अहले किताब में से एक गिरोह की कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दे। जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा है, परन्तु वह समझते नहीं हैं।

وَدَّت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾

70. हे अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों[3] के साथ कुफ्र क्यों कर रहे हो, जब किः तुम साक्षी[4] हो? के विषय में।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾

71. हे अहले किताब! क्यों सत्य को असत्य के साथ मिलाकर संदिग्ध कर देते हो, और सत्य को छुपाते हो, जब कि तुम जानते हो।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبٰطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾

72. अहले किताब के एक समुदाय ने कहाः कि दिन के आरंभ में उस पर ईमान ले आओ जो ईमान वालों पर

وَقَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ آمِنُوا بِالَّذِي أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرَهُ

---

1 अर्थात इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म के बारे में।

2 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायी।

3 जो तुम्हारी किताब में अंतिम नबी से संबंधित हैं।

4 अर्थात उन अयतों के सत्य होने के साक्षी हो।

लَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾

उतारा गया है, और उस के अन्त (अर्थातः संध्या समय) कुफ़्र कर दो, संभवतः वह फिर[1] जायें।

وَلَا تُؤْمِنُوٓا إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَى اللَّهِ أَن يُؤْتَىٰٓ أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَآجُّوكُمْ عِندَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

73. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन तो वही है जो अल्लाह का मार्गदर्शन है। (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास विवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَآءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

74. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अल्लाह बड़ा दानशील है।

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِن تَأْمَنْهُ بِقِنطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُم مَّنْ إِن تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

75. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चाँदी-सोने का ढ़ेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा। तथा उन में वह भी है किः जिस के पास एक दीनार[2] भी धरोहर रख दो, तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्हों ने कहा कि उम्मियों के बारे में हम पर कोई

---

1 अर्थात मुसलमान इस्लाम से फिर जायें।

2 दीनार- सोने के सिक्के को कहा जाता है।

दोष[1] नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ۝

76. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۝

77. निस्संदेह जो अल्लाह के[2] वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य ख़रीदते हैं, उन्हीं का अख़िरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ۝

78. और बैशक उन में से एक गिरोह[3] ऐसा है जो अपनी ज़ुबानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ते हैं ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते हैं कि वह अल्लाह के पास से है जब कि वह अल्लाह के पास से नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا

79. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वत दी हो उस के लिये योग्य नहीं कि लोगों

---

1 अर्थात उन के धन का अपभोग करने पर कोई पाप नहीं। क्यों किः यहूदियों ने अपने अतिरिक्त सब का धन हलाल समझ रखा था। और दूसरों को वह "उम्मी" कहा करते थे। अर्थात वह लोग जिन के पास कोई आसमानी किताब नहीं है।

2 अल्लाह के वचन से अभिप्राय वह वचन है, जो उन से धर्म पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

3 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं। और पुस्तक से अभिप्राय तौरात है।

لِّي مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾

से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ।[1] अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾

80. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फ़रिश्तों तथा नबियों को अपना पालनहार[2] (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ़्र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अल्लाह के आज्ञाकारी हो?

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُم مِّن كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنصُرُنَّهُ ۚ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾

81. तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्वदर्शिता) दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हूये आये, जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अल्लाह) ने कहाः क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहाः हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे[3] साथ साक्षियो में हूँ।

---

1 भावार्थ यह है कि जब नबी के लिये योग्य नहीं किः लोगों से कहे कि मेरी इबादत करो तो किसी अन्य के लिये कैसे योग्य हो सकता है?

2 जैसे अपने पालनहार के आगे झुकते हो, उसी प्रकार उन के आगे भी झुको।

3 भावार्थ यह है किः जब आगामी नबियों को ईमान लाना आवश्यक है, तो उन के अनुयायियों को भी ईमान लाना आवश्यक होगा। अतः अंतिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लहु अलैहि,व सल्लम) पर ईमान लाना सभी के लिये अनिवार्य है।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. फिर जिस ने इस के[1] पश्चात् मुँह फेर लिया, तो वही अवैज्ञाकारी है।

اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

83. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं? जब कि जो आकाशों तथा धरती में हैं, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी[2] हैं, तथा सब उसी की ओर फेरे[3] जायेंगे।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. (हे नबी!) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ और याक़ूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा, ईसा, तथा अन्य नबियों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) ईमान लाये। हम उन (नबियों) में किसी के बीच कोई अंतर नही[4] करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

85. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

---

1 अर्थात इस वचन और प्रण के पश्चात्।

2 अर्थात उसी की आज्ञा तथा व्यवस्था के अधीन हैं। फिर तुम्हें इस स्वभाविक धर्म से इन्कार क्यों है?

3 अर्थात प्रलय के दिन अपने कर्मों के प्रतिफल के लिये।

4 अर्थात मूल धर्म अल्लाह की आज्ञाकारिता है, और अल्लाह की पुस्तकों तथा उस के नबियों के बीच अंतर करना, किसी को मानना और किसी को न मानना अल्लाह पर ईमान और उस की आज्ञाकारिता के विपरीत है।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾

86. अल्लाह ऐसी जाति को कैसे मार्गदर्शन देगा जो अपने ईमान के पश्चात् काफ़िर हो गये, और साक्षी रहे कि यह रसूल सत्य हैं, तथा उन के पास खुले तर्क आ गये?? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾

87. इन्हीं का प्रतिकार (बदला) यह है कि उन पर अल्लाह तथा फ़रिश्तों और सब लोगों की धिक्कार होगी।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٨﴾

88. वह उस में सदावासी होंगे, उन से यातना कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٨٩﴾

89. परन्तु जिन्हों ने इस के पश्चात् तौबः (क्षमा याचना) कर ली, तथा सुधार कर लिया, तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾

90. वास्तव में जो अपने ईमान लाने के पश्चात् काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गये तो उन की तौबः (क्षमा याचना) कदापि[1] स्वीकार नहीं की जायेगी, तथा वही कुपथ हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٩١﴾

91. निश्चय जो काफ़िर हो गये, तथा काफ़िर रहते हुये मर गये तो उन से धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, यद्यपि उस के द्वारा अर्थदण्ड दे। उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है। और उन का कोई सहायक न होगा।

1 अर्थात यदि मौत के समय क्षमा याचना करें।

92. तुम पुण्य[1] नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾

93. प्रत्येक खाद्य पदार्थ बनी इस्राईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इस्राईल[2] ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नबी!) कहो कि तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो, यदि तुम सत्यवादी हो।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾

94. फिर इस के पश्चात् जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अत्याचारी हैं।

فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾

95. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो, तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾

96. निस्संदेह पहला घर जो मानव के लिये (अल्लाह की वन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ۚ﴿۹۶﴾

1 अर्थात पुण्य का फल स्वर्ग।

2 जब क़ुर्आन ने यह कहा कि यहूद पर बहुत से स्वच्छ खाद्य पदार्थ उन के अत्याचार के कारण अवैध कर दिये गये। (देखियेः सूरह निसा आयत 160, सूरह अन्आम आयत 146)। अन्यथा यह सभी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग में वैध थे। तो यहूद ने इसे झुठलाया तथा कहने लगे कि यह सब तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग ही से अवैध चले आ रहे हैं। इसी पर यह आयतें श उतरी। कि तौरात से इस का प्रमाण प्रस्तुत करो कि यह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग ही से अवैध है। यह और बात है कि इस्राईल ने कुछ चीज़ों जैसे ऊँट का मांस रोग अथवा मनौती के कारण अपने लिये स्वंय अवैध कर लिया था। यहाँ यह याद रखें कि इस्लाम में किसी उचित चीज़ को अनुचित करने की अनुमति किसी को नहीं है। (देखियेः शौकानी।)

में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।

فِيهِ ءَايَٰتٌۢ بَيِّنَٰتٌ مَّقَامُ إِبْرَٰهِيمَ ۖ وَمَن دَخَلَهُۥ كَانَ ءَامِنًا ۗ وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلْبَيْتِ مَنِ ٱسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ عَنِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٩٧﴾

97. उस में खुली निशानियाँ हैं (जिन में) मक़ामे[1] इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शांत (सुरक्षित) हो गया। तथा अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हो। तथा जो कुफ़्र करेगा, तो अल्लाह संसार वासियों से निस्पृह है।

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَٱللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

98. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! यह क्या है कि तुम अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे हो, जब कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों का साक्षी है?

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾

99. हे अहले किताब! किस लिये लोगों को जो ईमान लाना चाहें, अल्लाह की राह से रोक रहे हो, उसे उलझाना चाहते हो जब कि तुम साक्षी[2] हो, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।?

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تُطِيعُوا۟ فَرِيقًا مِّنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ كَٰفِرِينَ ﴿١٠٠﴾

100. हे ईमान वालो! यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफ़िर बना देंगे।

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ

101. तथा तुम कुफ़्र कैसे करोगे जब कि

---

1 अर्थात वह पत्थर जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने काबा का निर्माण किया जिस पर उन के पैरों के निशान आज तक हैं।

2 अर्थात इस्लाम के सत्धर्म होने को जानते हो।

तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जा रही हैं, और तुम में उस के रसूल[1] मौजूद हैं? और जिस ने अल्लाह को[2] थाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।

وَفِيكُمْ رَسُولُهُۥ ۗ وَمَن يَعْتَصِم بِٱللَّهِ فَقَدْ هُدِىَ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٠١﴾

102. हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٢﴾

103. तथा अल्लाह की रस्सी[3] को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और विभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गड़हे के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

وَٱعْتَصِمُوا۟ بِحَبْلِ ٱللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا۟ ۚ وَٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَآءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِۦٓ إِخْوَٰنًا وَكُنتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ ٱلنَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

104. तथा तुम में एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिये जो भली बातों[4] की ओर बुलाये, तथा भलाई का आदेश देता रहे, और

وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى ٱلْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

---

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात अल्लाह का आज्ञाकारी हो गया।

3 अल्लाह की रस्सी से अभिप्राय कुर्आन और नबी (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत है। यही दोनों मुसलमानों की एकता और परस्पर प्रेम का सूत्र हैं।

4 अर्थात धर्मानुसार बातों का।

बुराई[1] से रोकता रहे, और वही सफल होंगे।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۚ وَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

105. तथा उन[2] के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾

106. जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जिन के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़्र कर लिया था? तो अपने कुफ़्र करने का दण्ड चखो।

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللّٰهِ ۖ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿١٠٧﴾

107. तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अल्लाह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावासी होंगे।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللّٰهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعٰلَمِينَ ﴿١٠٨﴾

108. यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को हक़्क़ के साथ सुना रहे हैं, तथा अल्लाह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿١٠٩﴾

109. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अल्लाह ही की ओर सब विषय फेरे जायेंगे।

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ ۗ وَلَوْ اٰمَنَ أَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۚ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿١١٠﴾

110. तुम सब से अच्छी उम्मत हो, जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो, तथा बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान (विश्वास)

---

1 अर्थात धर्म विरोधी बातों से।

2 अर्थात अहले किताब (यहूदी व ईसाई।)।

रखते[1] हो। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ ईमान वाले हैं, और अधिक्तर अवैज्ञाकारी हैं।

111. वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۚ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾

112. इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण[2] अथवा लोगों की शरण में हो[3], यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये, तथा उन पर दरिद्रता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे थे और नबियों का अवैध बध कर रहे थे। यह इस कारण कि उन्हों ने अवैज्ञा की, और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّھُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾

113. वह सभी समान नहीं हैं, अहले

لَيْسُوْا سَوَاۗءً ۭ مِنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَاۗىِٕمَةٌ

1 इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है, तथा उन्हें उम्मत कहा गया है। किसी जाति अथवा वर्ग और वर्ण के नाम से संबोधित नहीं किया गया है। और इस में यह संकेत है कि मुसलमान उन का नाम है जो सत्धर्म के अनुयायी हों। तथा उन के अस्तित्व का लक्ष्य यह बताया गया है कि वह सम्पूर्ण मानव विश्व को सत्धर्म इस्लाम की ओर बुलायें जो सर्व मानव जाति का धर्म है। किसी विशेष जाति और क्षेत्र अथवा देश का धर्म नहीं है।

2 दूसरा बचाव का तरीक़ा यह है कि किसी गैर मुस्लिम शक्ति की उन्हें सहायता प्राप्त हो जाये।

3 अल्लाह की शरण से अभिप्राय इस्लाम धर्म है।

يَتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾

किताब में एक (सत्य पर) स्थित उम्मत[1] भी है, जो अल्लाह की आयतें रातों में पढ़ते है, तथा सजदा करते रहते हैं।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हैं, तथा भलाई का अदेश देते, और बुराई से रोकते हैं, तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं, और यही सदाचारियों में हैं।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾

115. वह जो भी भलाई करेंगे, उस की उपेक्षा(अनादर) नहीं किया जायेगा और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْھُمْ اَمْوَالُھُمْ وَلَآ اَوْلَادُھُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَـيْـــًٔـا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ ھُمْ فِيْھَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾

116. (परन्तु) जो काफ़िर[2] हो गये, उन के धन और उन की संतान अल्लाह (की यातना) से उन्हें तनिक भी बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी हैं, वही उस में सदावासी होंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْھَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ فَاَھْلَكَتْهُ ۭ وَمَا ظَلَمَھُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَھُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾

117. जो दान वह इस संसारिक जीवन में करतें हैं वह उस वायु के समान है जिस में पाला हो, जो किसी क़ौम की खेती को लग जाये जिन्हों ने अपने ऊपर अत्याचार[3] किया हो, और उस का नाश कर दे।तथा अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह

1 अर्थात जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) आदि।

2 अर्थात अल्लाह की अयतों (कुर्आन) को नकार दिया।

3 अवैज्ञा तथा अस्वीकार करते रहे थे। इस में यह संकेत है कि अल्लाह पर ईमान के बिना दानों का प्रतिफल परलोक में नहीं मिलेगा।

स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

118. हे ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ,[1] वह तुम्हारा बिगाड़ने में तनिक भी नहीं चूकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है, तथा जो उन के दिल छुपा रहे हैं वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है,यदि तुम समझो।

هَا أَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

119. सावधान! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करते हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करते। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उँगलियों की पोरें चबाते हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्संदेह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾

120. यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है। और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

---

1 अर्थात वह ग़ैर मुस्लिम जिन पर तुम को विश्वास नहीं की वह तुम्हारे लिये किसी प्रकार की अच्छी भावना रखते हों।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾

121. तथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध[1] के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

إِذْ هَمَّت طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾

122. तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों[2] ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अल्लाह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ

123. अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब कि तुम निर्बल थे।

---

1 साधारण भाष्यकारों ने इसे उहुद के युद्ध से संबंधित माना है। जो बद्र के युद्ध के पश्चात् सन् 3 हिज्री में हुआ। जिस में कुरैश ने बद्र की पराजय का बदला लेने के लिये तीन हज़ार की सेना के साथ उहुद पर्वत के समीप पड़ाव डाल दिया। जब आप को इस की सूचना मिली तो मुसलमानों से परामर्श किया। अधिकांश की राय हुई कि मदीना नगर से बाहर निकल कर युद्ध किया जाये। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार मुसलमानों को लेकर निकले। जिस में से अब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफ़िक़ों का मुख्या अपने तीन सौ साथियों के साथ वापिस हो गया। आप ने रणक्षेत्र में अपने पीछे से शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिये 70 धनुर्धरों को नियुक्त कर दिया। और उन का सेनापति अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को बना दिया। तथा यह आदेश दिया कि कदापि इस स्थान को न छोड़ना। युद्ध आरंभ होते ही कुरैश पराजित हो कर भाग खड़े हुये। यह देख कर धनुर्धरों में से अधिकांश ने अपना स्थान छोड़ दिया। कुरैश के सेनापति ख़ालिद पुत्र वलीद ने अपने सवारों के साथ फिर कर धनुर्धरों के स्थान पर आक्रमण कर दिया। फिर अकस्मात् मुसलमानों पर पीछे से आक्रमण कर के उन की विजय को पराजय में बदल दिया। जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आघात पहुँचा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर।)

2 अर्थात दो क़बीले बनू सलमा तथा बनू हारिसा ने भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य के साथ वापिस हो जाना चाहा। (सहीह बुख़ारी हदीस 4558)

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾

अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि उस के कृतज्ञ रहो।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ﴿١٢٤﴾

124. (हे नबी! वह समय भी याद करें) जब आप ईमान वालों से कह रहे थेः क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं है कि अल्लाह तुम्हें (आकाश से) उतारे हुये तीन हज़ार फ़रिश्तों द्वारा समर्थन दे?

بَلَىٰ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾

125. क्यों[1] नहीं? यदि तुम सहन करोगे, तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह (शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी उत्तेजना के साथ आ गये, तो तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं) पाँच हज़ार चिन्ह[2] लगे फ़रिश्तों द्वारा समर्थन देगा।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾

126. और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिये केवल शुभ सूचना बनाया है। और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾

127. ताकि[3] वह काफ़िरों का एक भाग काट दे, अथवा उन को अपमानित कर दे। फिर वह असफल वापिस हो जायें।

---

1 अर्थात इतना समर्थन बहुत है।

2 अर्थात उन पर तथा उन के घोड़ों पर चिन्ह लगे होंगे।

3 अर्थात अल्लाह तुम्हें फ़रिश्तों द्वारा समर्थन इस लिये देगा ताकि काफ़िरों का कुछ बल तोड़ दे, और उन्हें निष्फल वापिस कर दे।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَٰلِمُونَ ﴿١٢٨﴾

128. हे नबी! इस[1] विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार[2] करे, या दण्ड[3] दे, क्यों कि वह अत्याचारी हैं।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

129. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَوٰٓا أَضْعَٰفًا مُّضَٰعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾

130. हे ईमान वालो! कई कई गुणा कर के ब्याज[4] न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيٓ أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِينَ ﴿١٣١﴾

131. तथा उस अग्नि से बचो जो काफ़िरों के लिये तैयार की गयी है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾

132. तथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

وَسَارِعُوٓا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا

133. और अपने पालनहार की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ,

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज्र की नमाज़ में रुकूअ के पश्चात् यह प्रार्थना करते थे कि हे अल्लाह! अमुक को अपनी दया से दूर कर दे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी - 4559)

2 अर्थात उन्हें मार्गदर्शन दे।

3 यदि काफ़िर ही रह जायें।

4 उहुद की पराजय का कारण धन का लोभ बना था। इस लिये यहाँ ब्याज से सावधान किया जा रहा है, जो धन के लोभ का अति भयावह साधन है। तथा आज्ञाकारिता की प्रेरणा दी जा रही है। कई कई गुणा ब्याज न खाने का अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार ब्याज न खाओ, बल्कि ब्याज अधिक हो या थोड़ी सर्वथा हराम (वर्जित) है। यहाँ जाहिलिय्यत के युग में ब्याज की जो रीति थी, उस का वर्णन किया गया है। जैसा कि आधुनिक युग में ब्याज पर ब्याज लेने की रीति है।

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾

जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गयी है।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ
الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾

134. जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते, और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं। और अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى
مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

135. और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें, अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो अल्लाह को याद करतें हैं, फिर अपने पापों के लिये क्षमा माँगते हैं। तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۗ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

136. इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं, जिन में वह सदावासी होंगे, तो क्या ही अच्छा है सत्कर्मियों का यह प्रतिफल?

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِى
الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

137. तुम से पहले भी इसी प्रकार हो चुका[1] है। तुम धरती में फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा रहा?

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ
لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

138. यह (कुर्आन) लोगों के लिये एक वर्णन तथा मार्ग दर्शन, और एक शिक्षा है (अल्लाह से) डरने वालों के लिये।

---

1 उहुद की पराजय पर मुसलमानों को दिलासा दी जा रही है जिस में उन के 70 व्यक्ति मारे गये। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

139. (इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो।

إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾

140. यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो क़ौम (शत्रु)[1] को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते[2] हैं। और ताकि अल्लाह उन को जान ले[3] जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ﴿١٤١﴾

141. तथा ताकि अल्लाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफ़िरों का नाश कर दे।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٢﴾

142. क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अल्लाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?

وَلَقَدْ كُنتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِن قَبْلِ أَن تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿١٤٣﴾

143. तथा तुम मौत की कामना कर[4] रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो, तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।

---

1 इस में कुरैश की बद्र में पराजय और उन के 70 व्यक्तियों के मारे जाने की ओर संकेत है।

2 अर्थात कभी किसी की जीत होती है, कभी किसी की।

3 अर्थात अच्छे बुरे में विवेक (अन्तर) कर दे।

4 अर्थात अल्लाह की राह में शहीद हो जाने की।

144. मुहम्मद केवल एक रसूल हैं, इस से पहले बहुत से रसूल हो चुके हैं, तो क्या यदि वह मर गये अथवा मार दिये गये, तो तुम अपनी एड़ियों के बल[1] फिर जाओगे? तथा जो अपनी एड़ियों के बल फिर जायेगा, तो वह अल्लाह को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगा, और अल्लाह शीघ्र ही कृतज्ञों को प्रतिफल प्रदान करेगा।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾

145. कोई प्राणी ऐसा नहीं जो अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाये, उस का अंकित निर्धारित समय है, और जो संसारिक प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उस में से कुछ देंगे, तथा जो परलोक का प्रतिफल चाहेगा हम उसे उस में से देंगे। और हम कृतज्ञों को शीघ्र ही प्रतिफल देंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا مُؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۚ وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٥﴾

146. कितने ही नबी थे जिन के साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया, तो वह अल्लाह की राह में आई आपदा पर न आलसी हुये, न निर्बल बने और न (शत्रु से) दबे। तथा अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है।

وَكَأَيِّنْ مِنْ نَبِيٍّ قُتِلَ مَعَهُ رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٦﴾

---

1 अर्थात इस्लाम से फिर जावोगे भावार्थ यह है कि सत्धर्म इस्लाम स्थायी है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के न रहने से समाप्त नहीं हो जायेगा। उहुद में जब किसी विरोधी ने यह बात उड़ाई कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मार दिये गये तो यह सुन कर बहुत से मुसलमान हताश हो गये। कुछ ने कहा कि अब लड़ने से क्या लाभ? तथा मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होते तो मार नहीं खाते। इस आयत में यह संकेत है कि दूसरे नबियों के समान आप को भी एक दिन संसार से जाना है। तो क्या तुम उन्हीं के लिये इस्लाम को मानते हो, और आप नहीं रहेंगे तो इस्लाम नहीं रहेगा?

147. तथा उन का कथन बस यही था कि उन्हों ने कहाः हे हमारे पालनहार! हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को, और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे, और काफ़िर जाति के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ رَبَّنَا ٱغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِىٓ أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿١٤٧﴾

148. तो अल्लाह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आख़िरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है।

فَـَٔاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ ثَوَابَ ٱلدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ ٱلْـَٔاخِرَةِ ۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٨﴾

149. हे ईमान वालो! यदि तुम काफ़िरों की बात मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओगे।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تُطِيعُوا۟ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰٓ أَعْقَـٰبِكُمْ فَتَنقَلِبُوا۟ خَـٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।

بَلِ ٱللَّهُ مَوْلَىٰكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلنَّـٰصِرِينَ ﴿١٥٠﴾

151. शीघ्र ही हम काफ़िरों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्हों ने अल्लाह का साझी उसे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है?

سَنُلْقِى فِى قُلُوبِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلرُّعْبَ بِمَآ أَشْرَكُوا۟ بِٱللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِۦ سُلْطَـٰنًا ۖ وَمَأْوَىٰهُمُ ٱلنَّارُ ۚ وَبِئْسَ مَثْوَى ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿١٥١﴾

152. तथा अल्लाह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट[1] रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ ٱللَّهُ وَعْدَهُۥٓ إِذْ تَحُسُّونَهُم بِإِذْنِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَـٰزَعْتُمْ فِى ٱلْأَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّنۢ بَعْدِ مَآ أَرَىٰكُم

1 अर्थात उहद के आरंभिक क्षणों में।

مَّا تُحِبُّونَ ۚ مِنكُم مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنكُم مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾

कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश[1] में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चात् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अल्लाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَىٰ أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

153. (और याद करो) जब तुम चढ़े (भागे) जा रहे थे, और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार[2] रहे थे, तो (अल्लाह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम से खो गया और जो दुख तुम्हें पहुँचा उस पर उदासीन न हो, तथा अल्लाह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ

154. फिर तुम पर शोक के पश्चात् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह[3] को आने लगी, और

1 अर्थात कुछ धनुर्धरों ने आप के आदेश का पालन नहीं किया, और परिहार का धन संचित करने के लिये अपना स्थान त्याग दिया, जो पराजय का कारण बन गया। और शत्रु को उस दिशा से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।

2 बराअ बिन आज़िब कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहुद के दिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पैदल सेना पर रखा। और वह पराजित हो कर आ गये, इसी के बारे में यह आयत है। उस समय नबी के साथ बारह व्यक्ति ही रह गये। (सहीह बुख़ारी -4561)

3 अबु तलहा रज़ियल्लाह अन्हु ने कहाः हम उहुद में ऊँघने लगे। मेरी तलवार मेरे हाथ से गिरने लगती और मैं पकड़ लेता, फिर गिरने लगती और पकड़ लेता।

يَظُنُّونَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلّٰهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾

एक गिरोह को अपनी[1] पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के बारे में असत्य जाहिलिय्यत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वह अपने मनों में जो छुपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते, आप कह दें: यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने के स्थानों की ओर निकल आते। और ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दे। और अल्लाह दिलों के भेदों से अवगत है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾

155. वस्तुतः तुम में से जिन्हों ने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुँह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मों के कारण फिसला दिया। तथा अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ يُحْيِي

156. हे ईमान वालो! उन के समान न हो जाओ जो काफ़िर हो गये, तथा अपने भाईयों से- जब यात्रा में हों, अथवा युद्ध में- कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और

(सहीह बुख़ारी -4562)

1 यह मुनाफ़िक़ लोग थे।

وَيُمِيتُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٥٦﴾

न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे संताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है, और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿١٥٧﴾

157. यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

وَلَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾

158. तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

159. अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के[1] लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अक्खड़ तथा कड़े दिल के होते, तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो, और उन के लिये क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।

إِن يَنصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا الَّذِي يَنصُرُكُم مِّن بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह

1 अर्थात अपने साथियों के लिये, जो उहुद में रणक्षेत्र से भाग गये।

ही पर भरोसा करना चाहिये।

161. किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग[1] करे। और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۚ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

162. तो क्या जिस ने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध[2] लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾

163. अल्लाह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अल्लाह उसे देख[3] रहा है जो वह कर रहें हैं।

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾

164. अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (कुर्आन) और हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿١٦٤﴾

1 उहुद के दिन जो अपना स्थान छोड़ कर इस विचार से आ गये कि यदि हम न पहुँचे तो दूसरे लोग ग़नीमत का सब धन ले जायेंगे, उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है कि तुम ने कैसे सोच लिया कि इस धन मे से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा, क्या तुम्हें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो! नबी से किसी प्रकार का अपभोग असम्भव है। यह घोर पाप है जो कोई नबी कभी नहीं कर सकता।

2 अर्थात पापों मे लीन रहा।

3 अर्थात लोगों के कर्मों के अनुसार उन की अलग अलग श्रेणियाँ हैं।

वह इस से पहले खुले कुपथ में थे।

أَوَلَمَّآ أَصَٰبَتۡكُم مُّصِيبَةٞ قَدۡ أَصَبۡتُم مِّثۡلَيۡهَا قُلۡتُمۡ أَنَّىٰ هَٰذَاۖ قُلۡ هُوَ مِنۡ عِندِ أَنفُسِكُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ١٦٥

165. तथा जब तुम को एक दुःख पहुँचा[1] जब कि इस के दुगना तुम ने पहुँचाया[2], तो तुम ने कह दिया कि यह कहाँ से आ गया? (हे नबी!) कह दोः यह तुम्हारे पास से[3] आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَمَآ أَصَٰبَكُمۡ يَوۡمَ ٱلۡتَقَى ٱلۡجَمۡعَانِ فَبِإِذۡنِ ٱللَّهِ وَلِيَعۡلَمَ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ١٦٦

166. तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन तुम पर आई, तो वह अल्लाह की अनुमति से, और ताकि वह ईमान वालों को जान ले।

وَلِيَعۡلَمَ ٱلَّذِينَ نَافَقُواْۚ وَقِيلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡاْ قَٰتِلُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ أَوِ ٱدۡفَعُواْۖ قَالُواْ لَوۡ نَعۡلَمُ قِتَالٗا لَّٱتَّبَعۡنَٰكُمۡۗ هُمۡ لِلۡكُفۡرِ يَوۡمَئِذٍ أَقۡرَبُ مِنۡهُمۡ لِلۡإِيمَٰنِۚ يَقُولُونَ بِأَفۡوَٰهِهِم مَّا لَيۡسَ فِي قُلُوبِهِمۡۚ وَٱللَّهُ أَعۡلَمُ بِمَا يَكۡتُمُونَ ١٦٧

167. और ताकि उन को जान ले, जो मुनाफ़िक़ हैं। और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्हों ने कहा कि यदि हम युद्ध होना जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते। वह उस दिन ईमान से अधिक कुफ़्र के समीप थे, वह अपने मुखों से ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के दिलों में नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।

ٱلَّذِينَ قَالُواْ لِإِخۡوَٰنِهِمۡ وَقَعَدُواْ لَوۡ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُواْۗ قُلۡ فَٱدۡرَءُواْ عَنۡ أَنفُسِكُمُ ٱلۡمَوۡتَ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ١٦٨

168. इन्हों ने ही अपने भाईयों से कहा, और (स्वयं घरों में) आसीन रह गयेः यदि वह हमारी बात मानते, तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह

1 अर्थात उहुद के दिन।

2 अर्थात बद्र के दिन।

3 अर्थात तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने के कारण आया, जो धनुर्धरों को दिया गया था।

दोः फिर तो मौत से[1] अपनी रक्षा कर लो, यदि तुम सच्चे हो।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾

169. जो अल्लाह की राह में मार दिये गये तो तुम उन को मरा हुआ न समझो, बल्कि वह जीवित हैं,[2] अपने पालनहार के पास जीविका दिये जा रहे हैं।

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾

170. तथा उस से प्रसन्न हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है, और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो रहे हैं जो उन से मिले नहीं, उन के पीछे[3] रह गये हैं कि उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

171. वह अल्लाह के पुरस्कार और प्रदान के कारण प्रसन्न हो रहे हैं। तथा इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ

172. जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार[4] किया, इस के

---

1 अर्थात अपने उपाय से सदाजीवी हो जाओ।

2 शहीदों का जीवन कैसा होता है? हदीस में है कि उन की आत्मायें हरे पक्षियों के भीतर रख दी जाती हैं और वह स्वंग में चुगते तथा आनन्द लेते फिरते हैं। (सहीह मुस्लिम- हदीस -1887)

3 अर्थात उन मुजाहिदीन के लिये जो अभी संसार में जीवित रह गये हैं।

4 जब काफ़िर उहुद से मक्का वापिस हुये तो मदीने से 30 मील दूर "रौहाअ" से फिर मदीने वापिस आने का निश्चय किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचना मिली तो सेना लेकर "हमराउल असद" तक पहुँचे जिसे सुन कर वह भाग गये। इधर मुसलमान सफल वापिस आये। इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों की सराहना की गई है जिन्हों ने उहुद में घाव खाने के पश्चात् भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ दिया। यह आयतें इसी से संबंधित हैं।

पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँचा, उन में से उन के लिये जिन्हों ने सुकर्म किया तथा (अल्लाह से) डरे, महा प्रतिफल है।

مَآ أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾

173. यह वह लोग हैं, जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों (शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प[1] लिया है। अतः उन से डरो, तो इस ने उन के ईमान को और अधिक कर दिया, और उन्हों ने कहाः हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है।

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا
لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا
اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾

174. तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ[2] वापिस हुये। उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा। तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَمْسَسْهُمْ
سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ﴿١٧٤﴾

175. वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन[3] से न डरो, तथा मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا
تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾

176. हे नबी! आप को वह काफ़िर उदासीन न करें, जो कुफ़्र में अग्रसर हैं, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि आख़िरत (परलोक) में

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَنْ
يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي
الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾

---

1 अर्थात शत्रु ने मक्का जाते हुये राह में सोचा कि मुसलमानों के परास्त हो जाने पर यह अच्छा अवसर था कि मदीने पर आक्रमण कर के उन का उन्मूलन कर दिया जाये, तथा वापिस आने का निश्चय किया। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)।

2 अर्थात "हमराउल असद" से मदीना वापिस हुये।

3 अर्थात मिश्रणवादियों से।

उन का कोई भाग न बनाये, तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

177. वस्तुतः जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीद लिया, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, तथा उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

178. जो काफ़िर हो गये, वह कदापि यह न समझें कि हमारा उन को अव्सर[1] देना उन के लिये अच्छा है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये अव्सर दे रहें हैं कि उन के पाप[2] अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٧٨﴾

179. अल्लाह ऐसा नहीं है कि ईमान वालों को उसी (दशा) पर छोड़ दे, जिस पर तुम हो, जब तक बुरे को अच्छे से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा (भी) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब (परोक्ष) से[3] सूचित कर दे, और परन्तु अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर अवगत करने के लिये) जिसे चाहे चुन लेता है। तथा यदि तुम ईमान लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।

مَّا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِن رُّسُلِهِ مَن يَشَاءُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

---

1 अर्थात उन्हें संसारिक सुख सुविधा देना। भावार्थ यह है कि इस संसार में अल्लाह, सत्योसत्य, न्याय तथा अत्याचार सब के लिये अवसर देता है। परन्तु इस से धोखा नहीं खाना चाहिये, यह देखना चाहिये कि परलोक की सफलता किस में है। सत्य ही स्थायी है तथा असत्य को ध्वस्त हो जाना है।

2 यह स्वभाविक नियम है कि पाप करने से पापाचारी में पाप करने की भावना अधिक हो जाती है।

3 अर्थात तुम्हें बता दे कि कौन ईमान वाला और कौन दुविधावादी है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۭ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾

180. वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी)करते हैं, जो अल्लाह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया[1] है कि वह उन के लिये अच्छा है, बल्कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्हों ने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार[2] बना दिया जायेगा। और आकाशों तथा धरती की मीरास (उत्तराधिकार) अल्लाह के[3] लिये है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَاۗءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾

181. अल्लाह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन और हम धनी[4] हैं, उन्हों ने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नबियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾

182. यह तुम्हारे? कर्तूतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अल्लाह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं है।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ

183. जिन्हों ने कहाः अल्लाह ने हम से वचन लिया है कि किसी रसूल का

---

1 अर्थात धन धान्य की ज़कात नहीं देते।

2 सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः जिसे अल्लाह ने धन दिया है, और वह उस की ज़कात नहीं देता तो प्रलय के दिन उस का धन गंजा सर्प बना दिया जायेगा, जो उस के गले का हार बन जायेगा। और उसे अपने जबड़ों से पकड़ लेगा, तथा कहेगा कि मैं तुम्हारा कोष हूँ, मैं तुम्हारा धन हूँ। (सहीह बुख़ारीः 4565)

3 अर्थात प्रलय के दिन वही अकेला सब का स्वामी होगा।

4 यह बात यहूदियों ने कही थी। (देखियेः सूरह बक़रह आयतः 254)

لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾

विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दें जिसे अग्नि खा[1] जाये। (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज़ लाये जो तुम ने कहीं। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾

184. फिर यदि इन्हों ने[2] आप को झुठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये हैं, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।[3]

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾

185. प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्मों का) प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया[4], तो वह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

لَتُبْلَوُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا ۚ

186. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे धनों तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी। और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुःखद बातें सुनोगे जो तुम

1 अर्थात आकाश से अग्नि आकर जला दे, जो उस के स्वीकार्य होने का लक्षण है।

2 अर्थात यहूद आदि ने।

3 प्रकाशक जो सत्य को उजागर कर दे।

4 अर्थात सत्य आस्था और सत्कर्मों के द्वारा इस्लाम के नियमों का पालन कर के।

وَإِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَإِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

से पूर्व पुस्तक दिये गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी[1] हैं। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अल्लाह से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾

187. तथा (हे नबी!) याद करो जब अल्लाह ने उन से दृढ़ वचन लिया था जो पुस्तक[2] दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करते रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्हों ने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद[3] लिया। तो वह कितनी बुरी चीज़ खरीद रहे हैं?!

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ أَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ أَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾

188. (हे नबी!) जो[4] अपने कर्तूतों पर प्रसन्न हो रहे हैं और चाहते हैं कि उन कर्मों के लिये सराहे जायें जो उन्हों ने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे। तथा उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

1 मिश्रणवादी अर्थात मूर्तियों के पुजारी, जो पूजा अर्चना तथा अल्लाह के विशेष गुणों में अन्य को उस का साझी बनाते हैं।

2 जो पुस्तक दिये गये, अर्थातः यहूद और नसारा (ईसाई) जिन को तौरात तथा इंजील दी गयी।

3 अर्थात तुच्छ संसारिक लाभ के लिये सत्य का सौदा करने लगे।

4 अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि कुछ द्विधावादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में आप युध्द के लिये निकलते तो आप का साथ नहीं देते थे। और इस पर प्रसन्न होते थे और जब आप वापिस आते तो बहाने बनाते और शपथ लेते थे। और जो नहीं किया है उस की सराहना चाहते थे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी -4567)

189. तथा आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨٩﴾

190. वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्री तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण)[1] हैं।

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

191. जो खड़े, बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं:) हे हमारे पालनहार! तू ने इसे[2] व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

192. हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾

193. हे हमारे पालनहार! हम ने एक[3] पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

1 अर्थात अल्लाह के राज्य, स्वामित्व तथा एकमात्र पूज्य होने को।

2 अर्थात यह विचित्र रचना तथा व्यवस्था अकारण नहीं तथा आवश्यक है कि इस जीवन के पश्चात् भी कोई जीवन हो। जिस में इस जीवन के कर्मों के परिणाम सामने आयें।

3 अर्थात अन्तिम नबी मुहम्म्द सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

कर दे, तथा हमारी मौत पुनीतों (सदाचारियों) के साथ हो।

194. हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया है, हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय के दिन हमें अपमानित न कर, वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।

رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾

195. तो उन के पालनहार ने उन की (प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि): निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य को व्यर्थ नहीं करता[1], नर हो अथवा नारी। तो जिन्हों ने हिजरत (प्रस्थान) की, तथा अपने घरों से निकाले गये, और मेरी राह में सताये गये और युद्ध किया, तथा मारे गये, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही हैं। यह अल्लाह के पास से उन का प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के पास अच्छा प्रतिफल है।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ ۖ بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾

196. हे नबी! नगरों में काफ़िरों का (सुख सुविधा के साथ) फिरना आप को धोखे में न डाल दे।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾

197. यह तनिक लाभ[2] है, फिर उन का स्थान नरक है। और वह क्या ही बुरा आवास है!

مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

---

1 अर्थात अल्लाह का यह नियम है कि वह सत्कर्म अकारथ नहीं करता, उस का प्रतिफल अवश्य देता है।

2 अर्थात सामयिक संसारिक आनन्द है।

198. परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अल्लाह के पास से अतिथि सत्कार होगा। तथा जो अल्लाह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾

199. और निःसंदेह अहले किताब (अर्थात यहूद और ईसाई) में से कुछ एसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी। अल्लाह से डरे रहते हैं। और उस की आयतों को थोड़ी थोड़ी क़ीमतों पर बेचते भी नहीं।[1] उन का बद्ला उन के रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾

200. हे ईमान वालो! तुम धेर्य रखो।[2] और एक दूसरे को थामे रखो। और जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾

---

1 अर्थात यह यहूदियों और ईसाईयों का दूसरा समुदाय है जो अल्लाह पर और उस की किताबों पर सहीह प्रकार से ईमान रखता था। और सत्य को स्वीकार करता था। तथा इस्लाम और रसूल तथा मुसलमानों के विपरीत साजिशें नहीं करता था। और चन्द टकों के कारण अल्लाह के आदेशों में हेर फेर नहीं करता था।

2 अर्थात अल्लाह और उस के रसूल की फरमाँ बरदारी कर के और अपनी मनमानी छोड़ कर धेर्य करो। और यदि शत्रु से लड़ाई हो जाये तो उस में सामने आने वाली परेशानियों पर डटे रहना बहुत बड़ा धेर्य है। इसी प्रकार शत्रु के बारे में सदेव चोकन्ना रहना भी बहुत बड़े साहस का काम है। इसी लिये हदीस में आया है कि अल्लाह के रास्ते में एक दिन मोरचे बन्द रहना इस दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से उत्तम है। (सहीह बुख़ारी)

सूरह निसा - 4

यह सूरह मद्नी है, इस में 176 आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝

1. हे मनुष्यों!अपने[1] उस पालनहार से डरो, जिस ने तुम को एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया, तथा उसी से उस की पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया, और उन दोनों से बहुत से नर नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से (अधिकार) माँगते हो, तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो, निस्संदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ

2. तथा (हे संरक्षको!) अनाथों को उन

1 यहाँ से सामाजिक व्यवस्था का नियम बताया गया है कि विश्व के सभी नर नारी एक ही माता पिता से उत्पन्न किये गये हैं। इस लिये सब समान हैं। और सब के साथ अच्छा व्यवहार तथा भाई चारे की भावना रखनी चाहिये। और सब के अधिकार की रक्षा करनी चाहिये। यह उस अल्लाह का आदेश है जो तुम्हारे मूल का उत्पत्तिकार है। और जिस के नाम से तुम एक दूसरे से अपना अधिकार माँगते हो कि अल्लाह के लिये मेरी सहायता करो। फिर इस साधारण संबंध के सिवा गर्भाशयिक अर्थात समीपवर्ती परिवारिक संबंध भी हैं जिसे जोड़ने पर अधिक बल दिया गया है। एक हदीस में है कि संबंध भंगी स्वर्ग में नहीं जायेगा। (सहीह बुख़ारी - 5984, मुस्लिम- 2555) इस आयत के पश्चात् कई आयतों में इन्हीं अल्लाह के निर्धारित किये मानव अधिकारों का वर्णन किया जा रहा है।

بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَأْكُلُوٓا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰٓ أَمْوَالِكُمْ ۚ
إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۝٢

के धन चुका दो, और (उन की) अच्छी चीज़ से (अपनी) बुरी चीज़ न बदलो, और उन के धन अपने धनों में मिला कर न खाओ, निस्संदेह वह बहुत बड़ा पाप है।

وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ
فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُم مِّنَ النِّسَاءِ
مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا
فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ
أَلَّا تَعُولُوا ۝٣

3. और यदि तुम डरो कि अनाथ (बालिकाओं) के विषय[1] में न्याय नहीं कर सकोगे तो नारियों में से जो भी तुम्हें भायें, दो से, तीन से चार तक से विवाह कर लो। और यदि डरो कि न्याय नहीं करोगे तो एक ही से करो, अथवा जो तुम्हारे स्वामित्व[2] में हों उसी पर बस करो। यह अधिक समीप है कि अन्याय न करो।

وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِن طِبْنَ
لَكُمْ عَن شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا
مَّرِيئًا ۝٤

4. तथा स्त्रियों को उन के महर (विवाह उपहार) सप्रसन्नता से चुका दो। फिर यदि वह उस में से कुछ तुम्हें अपनी इच्छा से दे दें तो प्रसन्न हो कर खाओ।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ

5. तथा अपने धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये जीवन स्थापन का साधन बनाया है अज्ञानों को न[3] दो। हाँ,उस में से

---

1 अरब में इस्लाम से पूर्व अनाथ बालिका का संरक्षक यदि उस के खुजूर का बाग़ हो तो उस पर अधिकार रखने के लिये उस से विवाह कर लेता था। और उस में उसे कोई रुचि नहीं होती थी। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी हदीस नं॰,4573)

2 अर्थात युद्ध में बंदी बनाई गई दासी।

3 अर्थात धन, जीवन स्थापन का साधन है। इस लिये जब तक अनाथ चतुर तथा व्यस्क न हो जायें और अपने लाभ की रक्षा न कर सकें उस समय तक उन का धन उन के नियंत्रण में न दो।

وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝

उन्हें खाना, कपड़ा दो, और उन से भली बात बोलो।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝

6. तथा अनाथों की परीक्षा लेते रहो यहाँ तक कि वह विवाह की आयु को पहुँच जायें। तो यदि तुम उन में सुधार देखो तो उन का धन उन को समर्पित कर दो। और उसे अपव्यय तथा शीघ्रता से इस लिये न खाओ कि वह बड़े हो जायेंगे। और जो धनी हो तो वह बचे, तथा जो निर्धन हो तो वह नियमानुसार खा ले। तथा जब तुम उन का धन उन के हवाले करो तो उन पर साक्षी बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफ़ी है।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝

7. और पुरुषों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो, तथा स्त्रियों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो, वह थोड़ा हो अथवा अधिक, सब के भाग[1] निर्धारित हैं।

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى

8. और जब मीरास विभाजन के समय

1 इस्लाम से पहले साधारणतः यह विचार था कि पुत्रियों का धन और संपत्ति की विरासत (उत्तराधिकार) में कोई भाग नहीं। इस में इस कुरीति का निवारण किया गया और यह नियम बना दिया गया कि अधिकार में पुत्र और पुत्री दोनों समान हैं। यह इस्लाम ही की विशेषता है जो संसार के किसी धर्म अथवा विधान में नहीं पाई जाती। इस्लाम ही ने सर्वप्रथम नारी के साथ न्याय किया, और उसे पुरुषों के बराबर अधिकार दिया है।

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨

समीपवर्ती[1], तथा अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी थोड़ा बहुत दे दो, तथा उन से भली बात बोलो।

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩

9. और उन लोगों को डरना चाहिये, जो यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जायें, और उन के नाश होने का भय हो, अतः उन्हें चाहिये कि अल्लाह से डरें, और सीधी बात बोलें।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۗ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝١٠

10. जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं, और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रवेश करेंगे।

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَاۤءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۗ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ اٰبَاۤؤُكُمْ وَاَبْنَاۤؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١١

11. अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का भाग दो पुत्रियों के बराबर है। और यदि पुत्रियाँ दो[2] से अधिक हों तो उन के लिये छोड़े हुये धन का दो तिहाई (भाग) है। और यदि एक ही हो तो उस के लिये आधा है। और उस के माता पिता के लिये, दोनों में से प्रत्येक के लिये उस में से छठा भाग है जो छोड़ा हो, यदि उस के कोई संतान[3] हो। और यदि उस के कोई संतान(पुत्र या पुत्री) न हों और उस का वारिस उस का पिता हो,

1 इन से अभिप्राय वह समीपवर्ती है जिन का मीरास में निर्धारित भाग न हो। जैसे अनाथ, पौत्र तथा पौत्री आदि। (सहीह बुख़ारी- 4576)

2 अर्थात केवल पुत्रियाँ हों, तो दो हों अथवा दो से अधिक हों।

3 अर्थात न पुत्र हो और न पुत्री।

तो उस की माता का तिहाई (भाग)[1] है, (और शेष पिता का)। फिर यदि (माता पिता के सिवा) उस के एक से अधिक भाई अथवा बहनें हों तो उस की माता के लिये छठा भाग है जो वसिय्यत[2] तथा क़र्ज़ चुकाने के पश्चात् होगा। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिताओं और पुत्रों मे से कौन तुम्हारे लिये अधिक लाभदायक है। वास्तव में अल्लाह अति बड़ा तथा गुणी, ज्ञानी तत्वज्ञ है।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ
وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ
مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوصِينَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ
وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
تُوصُونَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّورَثُ كَلَالَةً
أَوِ امْرَأَةٌ وَّلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوٓا أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي
الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوصَىٰ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ
مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾

12. और तुम्हारे लिये उस का आधा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जायें, यदि उन के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि उन की कोई संतान हो तो तुम्हारे लिये उस का चौथाई है जो वह छोड़ गई हों, वसिय्यत (उत्तरदान) या ऋण चुकाने के पश्चात्। और (पत्नियों) के लिये उस का चौथाई है जो (माल आदि) तुम ने छोड़ा हो, यदि तुम्हारे कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि तुम्हारे कोई संतान हो तो उन के लिये उस का आठवा[3] (भाग)

---

1 और शेष पिता का होगा। भाई, बहनों को कुछ नहीं मिलेगा।

2 वसिय्यत का अर्थ उत्तरदान है, जो एक तिहाई या उस से कम होना चाहिये परन्तु वारिस के लिये उत्तरदान नहीं है। (देखियेः त्रिमिज़ी- 975) पहले ऋण चुकाया जायेगा, फिर वसिय्यत पूरी की जायेगी, फिर माँ का छठा भाग दिया जायेगा।

3 यहाँ यह बात विचारणीय है कि जब इस्लाम में पुत्र पुत्री तथा नर नारी बराबर हैं, तो फिर पुत्री को पुत्र के आधा, तथा पत्नी को पति के आधा भाग क्यों

है, जो तुम ने छोड़ा है, वसिय्यत (उत्तरदान) जो तुम ने किया हो पूरा करने अथवा ऋण चुकाने के पश्चात्। और यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री का वारिस होने की बात हो जो (कलाला)[1] हो, तथा (दूसरी माता से) उस का भाई अथवा बहन हो तो उन में से प्रत्येक के लिये छठा (भाग) है। फिर यदि (माँ जाये) (भाई या बहनें) इस से अधिक हों तो वह सब तिहाई (भाग) में (बराबर के) साझी होंगे। यह सब वसिय्यत (उत्तरदान) तथा ऋण चुकाने के पश्चात् होगा। और किसी को हानि नहीं पहुँचाई जायेगी। यह अल्लाह की ओर से वसिय्यत है। और अल्लाह ज्ञानी तथा हिक्मत वाला है।

दिया गया है? इस का कारण यह है कि पुत्री जब युवती और विवाहित हो जाती है, तो उसे अपने पति से महर (विवाह उपहार) मिलता है, और उस के तथा उस की संतान के यदि हो, तो भरण पोषण का भार उस के पति पर होता है। इस के विपरीत पुत्र युवक होता है तो विवाह करने पर अपनी पत्नी को महर (विवाह उपहार) देने के साथ ही उस का तथा अपनी संतान के भरण पोषण का भार भी उसी पर होता है। इसी लिये पुत्र को पुत्री के भाग का दुगना दिया जाता है, जो न्यायोचित है।

1 कलालः वह पुरूष अथवा स्त्री है जिस के न पिता हो और न पुत्र-पुत्री। अब इस के वारिस तीन प्रकार के हो सकते हैंः
1. सगे भाई बहन।
2. पिता एक तथा माताएँ अलग हों।
3. माता एक तथा पिता अलग हों। यहाँ इसी प्रकार का आदेश वर्णित किया गया है। ऋण चुकाने के पश्चात बिना कोई हानि पहुँचाये, यह अल्लाह की ओर से आदेश है, तथा अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील है।

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

13. यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमायें हैं, और जो अल्लाह तथा उस के रसूल का आज्ञाकारी रहेगा तो उसे ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। जिन में वह सदावासी होंगे। तथा यही बड़ी सफलता है।

وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٤﴾

14. और जो अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा तथा उस की सीमाओं का उल्लंघन करेगा तो उस को नरक में प्रवेश देगा। जिस में वह सदावासी होगा। और उसी के लिये अपमान कारी यातना है।

وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِن نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنكُمْ ۖ فَإِن شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾

15. तथा तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्याभिचार कर जायें तो उन पर अपनों में से चार साक्षी लाओ। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तो उन्हें घरों में बन्द कर दो यहाँ तक कि उन को मौत आ जाये अथवा अल्लाह उन के लिये कोई अन्य[1]राह बना दे।

وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنكُمْ فَآذُوهُمَا ۖ فَإِن تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿١٦﴾

16. और तुम में से जो दो व्यक्ति ऐसा करें तो दोनों को दुःख पहुँचाओ। यहाँ तक कि वह तौबा (क्षमा याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें। तो उन को छोड दो। निश्चय अल्लाह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

1 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग व्याभिचार का साम्यिक दण्ड था इस का स्थायी दण्ड सूरह नूर आयत 2 में आ रहा है। जिस के उतरने पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह ने जो वचन दिया था उसे पूरा कर दिया। उसे मुझ से सीख लो।

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾

17. अल्लाह के पास उन्हीं की तौबः (क्षमा याचना) स्वीकार है, जो अन जाने में बुराई कर जाते हैं, फिर शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौबः (क्षमायाचना) स्वीकार कर लेता है, तथा अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾

18. और उन की तौबः (क्षमा याचना) स्वीकार्य नहीं, जो बुराईयाँ करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत का समय आ जाता है, तो कहता है, अब मैं ने तौबः कर ली, और न ही उन की जो काफ़िर रहते हुये मर जाते हैं, इन्हीं के लिये हम ने दुखःदायी यातना तैयार कर रखी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾

19. हे ईमान वालो! तुम्हारे लिये हलाल (वैध) नहीं है कि बलपूर्वक स्त्रियों के वारिस बन जाओ।[1] तथा उन्हें इस लिये न रोको कि उन्हें जो दिया हो उस में से कुछ मार लो। परन्तु यह कि खुली बुराई कर जायें। तथा उन के साथ उचित[2] व्यवहार से रहो। फिर यदि वह तुम्हें अप्रिय लगें तो संभव है कि तुम किसी चीज़ को अप्रिय समझो, और अल्लाह ने उस में

---

1 हदीस में है कि जब कोई मर जाता तो उस के वारिस उस की पत्नी पर भी अधिकार कर लेते थे इसी को रोकने के लिये यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी - 4579)

2 हदीस में है कि पूरा ईमान उस में है जो सुशील हो। और भला वह है जो अपनी पत्नियों के लिये भला हो। (त्रिमिज़ी- 1162)

बड़ी भलाई[1] रख दी हो।

وَإِنْ أَرَدتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾

20. और यदि तुम किसी पत्नी के स्थान पर किसी दूसरी पत्नी से विवाह करना चाहो और तुम ने उन में से एक को (सोने चाँदी का) ढेर भी (महर में) दिया हो तो उस में से कुछ न लो। क्या तुम चाहते हो कि उसे आरोप लगा कर तथा खुले पाप द्वारा ले लो?

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾

21. तथा तुम उसे ले भी कैसे सकते हो, जब कि तुम एक दूसरे से मिलन कर चुके हो। तथा उन्होंने तुम से (विवाह के समय) दृढ़ वचन लिया है।

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾

22. और उन स्त्रियों से विवाह[2] न करो जिन से तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो, परन्तु जो पहले हो चुका।[3] वास्तव में यह निर्लज्जा की तथा अप्रिय बात और बुरी रीति थी।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ

23. तुम पर[4] हराम (अवैध) कर दी

---

1 अर्थात पत्नी किसी कारण न भाये तो तुरन्त तलाक़ न दे दो बल्कि धैर्य से काम लो।

2 जैसा कि इस्लाम से पहले लोग किया करते थे। और हो सकता है कि आज भी संसार के किसी कोने में ऐसा होता हो। परन्तु यदि भोग करने से पहले बाप ने तलाक़ दे दी हो तो उस स्त्री से विवाह किया जा सकता है।

3 अर्थात इस आदेश के आने से पहले जो कुछ हो गया अल्लाह उसे क्षमा करने वाला है।

4 दादियाँ तथा नानियाँ भी इसी में आती हैं। इसी प्रकार पुत्रियों में अपनी संतान की नीचे तक की पुत्रियाँ, और बहनों में सगी हों या पिता अथवा माता से हों,

وَخَلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۖ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۖ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

गई हैः तुम्हारी मातायें, तथा तुम्हारी पुत्रियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ, और तुम्हारी मौसियाँ और भतीजियाँ, और भाँजियाँ, तथा तुम्हारी वह मातायें जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया हो, तथा दूध पीने से संबंधित बहनें, और तुम्हारी पत्नियों की मातायें, तथा तुम्हारी पत्नियों की पुत्रियाँ जिन का पालन पोषण तुम्हारी गोद में हुआ हो, जिन पत्नियों से तुम ने संभोग किया हो, और यदि उन से संभोग न किया हो तो तुम पर कोई दोष नहीं। तथा तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ, और यह[1] कि तुम दो बहनों को एकत्र करो, परन्तु जो हो चुका। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ

24. तथा उन स्त्रियों से (विवाह वर्जित है) जो दूसरों के निकाह में हों।

फूफियों में पिता तथा दादाओं की बहनें, और मौसियों में माताओं तथा नानियों की बहनें, तथा भतीजी और भाँजी में उन की संतान भी आती है। हदीस में है कि दूध से वह सभी रिश्ते हराम हो जाते हैं जो गोत्र से हराम होते हैं। (सहीह बुख़ारी- 5099 मुस्लिम- 1444)।

पत्नी की पुत्री जो दूसरे पति से हो उसी समय हराम (वर्जित) होगी जब उस की माता से संभोग किया हो, केवल विवाह कर लेने से हराम नहीं होगी। जैसे दो बहनों को निकाह में एकत्र करना वर्जित है उसी प्रकार किसी स्त्री के साथ उस की फूफी अथवा मौसी को भी एकत्र करना हदीस से वर्जित है। (देखियेः सहीह बुख़ारी-5109-सहीह मुस्लिम-1408)

1 अर्थात जाहिलिय्यत के युग में।

أَيْمَانُكُمْ كِتَابَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَٰلِكُمْ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٢٤﴾

परन्तु तुम्हारी दासियाँ[1] जो (युद्ध में) तुम्हारे हाथ आई हों। (यह) तुम पर अल्लाह ने लिख दिया[2] है। और इन के सिवा (स्त्रियाँ) तुम्हारे लिये हलाल (उचित) कर दी गयी हैं। (प्रतिबंध यह है कि) अपने धनों द्वारा व्यभिचार से सुरक्षित रहने के लिये विवाह करो। फिर उन में से जिस से लाभ उठाओ उन्हें उन का महर् (विवाह उपहार) अवश्य चुका दो। तथा महर् (विवाह उपहार) निर्धारित करने के पश्चात् (यदि) आपस की सहमति से (कोई कमी या अधिक्ता कर लो) तो तुम पर कोई दोष नहीं। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَانْكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَافِحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ

25. और जो व्यक्ति तुम में से स्वतंत्र ईमान वालियों से विवाह करने की सकत न रखे तो वह अपने हाथों में आई हुई अपनी ईमान वाली दासियों से (विवाह कर ले)। तथा अल्लाह तुम्हारे ईमान को अधिक जानता है। तुम आपस में एक ही हो।[3] अतः

---

1 दासी वह स्त्री जो युद्ध में बन्दी बनाई गई हो। उस से एक बार मासिक धर्म आने के पश्चात् सम्भोग करना उचित है, और उसे मुक्त कर के उस से विवाह कर लेने का बड़ा पुण्य है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात तुम्हारे लिये नियम बना दिया है।

3 तुम आपस में एक ही हो, अर्थात मानवता में बराबर हो। ज्ञातव्य है कि इस्लाम से पहले दासिता की परम्परा पूरे विश्व में फैली हुई थी। बलवान जातियाँ निर्बलों को दास बना कर उन के साथ हिंसक व्यवहार करती थीं। कुरआन ने दासिता को केवल युद्ध के बंदियों में सीमित कर दिया। और उन्हें भी अर्थदण्ड ले कर अथवा उपकार कर के मुक्त करने की प्रेरणा दी। फिर उन के साथ अच्छे व्यवहार पर बल दिया। तथा ऐसे आदेश और नियम बना दिऐ किःदासिता,

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنكُمْ ۚ وَأَن تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٥﴾

तुम उन के स्वामियों की अनुमति से उन (दासियों) से विवाह कर लो, और उन्हें नियमानुसार उन के महूरें (विवाह उपहार) चुका दो, वह सती हों, व्याभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी बना रखी हों। फिर जब वह विवाहित हो जायें तो यदि व्याभिचार कर जायें, तो उन पर उस का आधा[1] दण्ड है, जो स्वतंत्र स्त्रियों पर है। यह (दासी से विवाह) उस के लिये है, जो तुम में से व्याभिचार से डरता हो। और सहन करो तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिये उजागर कर दे,तथा तुम को भी उन की नितियों की राह दर्शा दे जो तुम से पहले थे। और तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकार करे। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾

27. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे। तथा जो लोग आकांक्षाओं के पीछे पड़े हुये हैं वह चाहते हैं कि तुम बहुत अधिक झुक[2] जाओ।

दासिता नहीं रह गई। यहाँ इसी बात पर बल दिया गया है कि दासियों से विवाह कर लेने में कोई दोष नहीं। इसलिये मानव्ता में सब बराबर हैं, और प्रधानता का मापदण्ड ईमान तथा सत्कर्म हैं।

1 अर्थात पचास कोड़े।

2 अर्थात सत्धर्म से कतरा जाओ।

28. अल्लाह तुम्हारा (बोझ) हल्का करना[1] चाहता है। तथा मानव निर्बल पैदा किया गया है।

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

29. हे ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, परन्तु यह किः लेन देन तुम्हारी आपस की स्वीकृति से (धर्मविधानानुसार) हो। और आत्महत्या[2] न करो, वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾

30. और जो अतिक्रमण तथा अत्याचार से ऐसा करेगा, समीप है किः हम उसे अग्नि में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

31. तथा यदि तुम उन महा पापों से बचते रहे, जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे। और तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे।

إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾

32. तथा उस की कामना न करो, जिस के द्वारा अल्लाह ने तुम को एक दूसरे पर श्रेष्ठता दी है। पुरुषों के लिये उस का भाग है जो उन्होंने कमाया।[3],

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا اللَّهَ مِن فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ

---

1 अर्थात अपने धर्मविधान द्वारा।

2 इस का अर्थ यह भी किया गया है किः अवैध कर्मों द्वारा अपना विनाश न करो, तथा यह भी किः आपस में रक्तपात न करो, और यह तीनों ही अर्थ सहीह हैं। (तफ़्सीरे कुर्तबी)

3 कुरआन उतरने से पहले संसार का यह साधारण विश्वव्यापी विचार था किः नारी का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं है। उसे केवल पुरुषों की सेवा और काम वासना की पूर्ति के लिये बनाया गया है। कुर्आन इस विचार के विरुद्ध यह कहता है कि अल्लाह ने मानव को नर तथा नारी दो लिंगों में विभाजित कर दिया है। और

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾

और स्त्रियों के लिए उस का भाग है जो उन्होंने कमाया है। तथा अल्लाह से उस के अधिक की प्रार्थना करते रहो, निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾

33. और हम ने प्रत्येक के लिये वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिये हैं उस में से जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो। तथा जिन से तुम ने समझौता[1] किया हो उन्हें उन का भाग दो। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ से सूचित है।

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَاللَّاتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾

34. पुरुष स्त्रियों के व्यवस्थापक[2] हैं, इस कारण कि अल्लाह ने उन में से एक को दूसरे पर प्रधानता दी है। तथा इस कारण कि उन्हों ने अपने धनों में से (उन पर) ख़र्च किया है। अतः सदाचारी स्त्रियाँ वह हैं जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारों की रक्षा

दोनों ही समान रूप से अपना अपना अस्तित्व, अपने अपने कर्तव्य तथा कर्म रखते हैं। और जैसे आर्थिक कार्यालय के लिये एक लिंग की आवश्यक्ता है वैसे ही दूसरे की भी है। मानव के सामाजिक जीवन के लिये यह दोनों एक दूसरे के सहायक हैं।

1 यह संधिभ मीरास इस्लाम के आरंभिक युग में थी, जिसे (मवारीस की आयत) से निरस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

2 आयत का भावार्थ यह है कि परिवारिक जीवन के प्रबंध के लिये एक प्रबंधक होना आवश्यक है। और इस प्रबंध तथा व्यवस्था का भार पुरुष पर रखा गया है। जो कोई विशेषता नहीं, बल्कि एक भार है। इस का यह अर्थ नहीं कि जन्म से पुरुष की स्त्री पर कोई विशेषता है। प्रथम आयत में यह आदेश दिया गया है कि यदि पत्नी पति की अनुगामी न हो तो वह उसे समझाये। परन्तु यदि दोष पुरुष का हो तो दोनों के बीच मध्यस्थता द्वारा संधि कराने की प्रेरणा दी गयी है।

करती हों। और तुम्हें जिन की अवज्ञा का डर हो तो उन्हें समझाओ। और शयनागारों (सोने के स्थानों) में उन से अलग हो जाओ। तथा उनको मारो। फिर यदि वह तुम्हारी बात मानें तो उन पर अत्याचार का बहाना न खोजो। और अल्लाह सब से ऊपर, सब से बड़ा है।

35. और यदि तुम[1] को दोनों के बीच वियोग का डर हो तो एक मध्यस्थ उस (पति) के घराने से तथा एक मध्यस्थ उस (पत्नी) के घराने से नियुक्त करो, यदि वह दोनों संधि कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों[2] के बीच संधि करा देगा। वास्तव में अल्लाह अति ज्ञानी सर्वसूचित है।

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ شِقَاقَ بَيۡنِهِمَا فَابۡعَثُوۡا حَكَمًا مِّنۡ اَهۡلِهٖ وَحَكَمًا مِّنۡ اَهۡلِهَا ۚ اِنۡ يُّرِيۡدَاۤ اِصۡلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيۡنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيۡمًا خَبِيۡرًا ﴿٣٥﴾

36. तथा अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। तथा माता पिता, समीपवर्तियों और अनाथों एवं निर्धनों तथा समीप और दूर के पड़ोसी, यात्रा के साथी तथा यात्री और अपने दास दासियों के साथ उपकार करो। निःसंदेह अल्लाह उस से प्रेम नहीं करता जो अभिमानी अहंकारी[3] हो।

وَاعۡبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشۡرِكُوۡا بِهٖ شَيۡـًٔـا ‌ؕ وَّبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا وَّبِذِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَالۡجَارِ ذِى الۡقُرۡبٰى وَالۡجَارِ الۡجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالۡجَـنۡۢبِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ۙ وَمَا مَلَـكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنۡ كَانَ مُخۡتَالًا فَخُوۡرَا ۙ ﴿٣٦﴾

37. और जो स्वयं कृपण (कंजूसी) करते हैं, तथा दूसरों को भी कृपण (कंजूसी) का आदेश देते हैं, और उसे

اۨلَّذِيۡنَ يَبۡخَلُوۡنَ وَيَاۡمُرُوۡنَ النَّاسَ بِالۡبُخۡلِ وَيَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ اٰتٰٮهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ

1 इस में पति पत्नी के संरक्षकों को संबोधित किया गया है।

2 अर्थात पति पत्नी में।

3 अर्थात डींगें मारता तथा इतराता हो।

छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है। और हम ने कृतघ्नों के लिये अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٣٧﴾

38. तथा जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए दान करते हैं, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान नहीं रखते। तथा शैतान जिस का साथी हो, तो वह बहुत बुरा साथी[1] है।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾

39. और उन का क्या बिगड़ जाता, यदि वह अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान (विश्वास) रखते, और अल्लाह ने जो उन्हें दिया है उस में से दान करते? और अल्लाह उन्हें भली भाँति जानता है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾

40. अल्लाह कण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करता, यदि कुछ भलाई (किसी ने) की हो, तो (अल्लाह) उसे अधिक कर देता है, तथा अपने पास से बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾

41. तो क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) से एक साक्षी लायेंगे, और (हे नबी!) आप को

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾

1 आयत 36 से 38 तक साधारण सहानुभूति और उपकार का आदेश दिया गया है कि: अल्लाह ने जो धन धान्य तुम को दिया उस से मानव की सहायता और सेवा करो। जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता हो उस का हाथ अल्लाह की राह में दान करने से कभी नहीं रुक सकता। फिर भी दान करो तो अल्लाह के लिये करो, दिखावे और नाम के लिये न करो। जो नाम के लिये दान करता है वह अल्लाह तथा आख़िरत पर सच्चा ईमान (विश्वास) नहीं रखता।

उन पर साक्षी लायेंगे।[1]

42. उस दिन जो काफ़िर तथा रसूल के अवैज्ञाकारी हो गये यह कामना करेंगे कि उन के सहित भूमि बराबर[2] कर दी जाये। और वे अल्लाह से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे।

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾

43. हे ईमान वालो! तुम जब नशे[3] में रहो तो नमाज़ के समीप न जाओ। जब तक जो कुछ बोलो उसे न समझो। और न जनाबत[4] की स्थिति में (मस्जिदों के समीप जाओ) परन्तु रास्ता पार करते हुये। और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में रहो, या स्त्रियों से सहवास कर लो, फिर जल न पाओ, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम[5] कर लो। उसे अपने मुखों तथा हाथों पर फेर लो। वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त (सहिष्णु) क्षमाशील है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾

44. क्या आप ने उनकी दशा नहीं देखी

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ

1 आयत का भावार्थ यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह प्रत्येक समुदाय के रसूल को उन के कर्म का साक्षी बनायेगा। इस प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अपने समुदाय पर साक्षी बनायेगा। तथा सब रसूलों पर कि उन्हों ने अपने पालनहार का संदेश पहुँचाया है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात भूमि में धँस जायें, और उन के ऊपर से भूमि बराबर हो जाये। या वह भी मिट्टी हो जायें।

3 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग का है जब मदिरा को वर्जित नहीं किया गया था। (इब्ने कसीर)

4 जनाबत का अर्थ वीर्यपात के कारण मलिन तथा अपवित्र होना है।

5 अर्थात यदि जल का अभाव हो, अथवा रोग के कारण जल प्रयोग हानिकारक हो तो वुज़ू तथा स्नान के स्थान पर तयम्मुम कर लो।

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ۝٤٤

जिन्हें पुस्तक[1] का कुछ भाग दिया गया? वह कुपथ खरीद रहे हैं, तथा चाहते हैं कि तुम भी सुपथ से विचलित हो जाओ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ڰ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝٤٥

45. तथा अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं से भली भाँति अवगत् है। और (तुम्हारे लिये) अल्लाह की रक्षा काफ़ी है। तथा अल्लाह की सहायता काफ़ी है।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّۢا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٤٦

46. (हे नबी!) यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो शब्दों को उन के (वास्तविक) स्थानों से फेरते हैं। और (आप से) कहते हैं कि हम ने सुन लिया, तथा (आप की) अवज्ञा की, और आप सुनिये, आप सुनाये न जायें, तथा अपनी ज़ुबानें मोड़ कर "राइना" कहते और सत्धर्म में व्यंग करते हैं, और यदि वह "हम ने सुन लिया तथा आज्ञाकारी हो गये", और "हमें देखिये" कहते, तो उन के लिये अधिक अच्छी तथा सही बात होती। परन्तु अल्लाह ने उन के कुफ़्र के कारण उन्हें धिक्कार दिया है। अतः उन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝٤٧

47. हे अहले किताब! उस (क़ुर्आन) पर ईमान लाओ जिसे हम ने उन का प्रमाणकारी बना कर उतारा है जो (पुस्तकें) तुम्हारे साथ हैं। इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे फेर दें।

1 अर्थात अहले किताब की जिन को तौरात का ज्ञान दिया गया। भावार्थ यह है कि उन की दशा से शिक्षा ग्रहण करो। उन्हीं के समान सत्य से विचलित न हो जाओ।

अथवा उन्हें ऐसे ही धिक्कार[1] दें जैसे शनिवार वालों को धिक्कार दिया। और अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

48. निःसंदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि उस का साझी बनाया जाये[2], और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٤٩﴾

49. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपने आप पवित्र बन रहे हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहे पवित्र करता है। और (लोगों पर) कण बराबर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

انْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُبِينًا ﴿٥٠﴾

50. देखो यह लोग कैसे अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे[3] हैं! उन के खुले पाप के लिये यही बहुत है।

---

1 मदीने के यहूदियों का यह दुर्भाग्य था कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलते, तो द्विअर्थक तथा संदिग्ध शब्द बोल कर दिल की भड़ास निकालते, उसी पर उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है। शनिवार वाले, अर्थात जिन को शनिवार के दिन शिकार से रोका गया था। और जब वे नहीं माने तो उन्हें बन्दर बना दिया गया।

2 अर्थात पूजा, अराधना तथा अल्लाह के विशेष गुण-कर्मों में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को साझी बनाना घोर अक्षम्य पाप है, जो सत्धर्म के मूलाधार एकेश्वरवाद के विरुद्ध, और अल्लाह पर मिथ्या आरोप है। यहूदियों ने अपने धर्माचार्यों तथा पादरियों के विषय में यह अंधविश्वास बना लिया किः उन की बात को धर्म समझ कर उन्हीं का अनुपालन कर रहे थे। और मूल पुस्तकों को त्याग दिया था, कुर्आन इसी को शिर्क कहता है, वह कहता है किः सभी पाप क्षमा किये जा सकते हैं परन्तु शिर्क के लिये क्षमा नहीं, क्योंकिः इस से मूलधर्म की नींव ही हिल जाती है। और मार्गदर्शन का केन्द्र ही बदल जाता है।

3 अर्थात अल्लाह का नियम तो यह है किः पवित्रता, ईमान तथा सत्कर्म पर निर्भर है , और यह कहते हैं किः यहूदिय्यत पर है।

51. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह मुर्तियों तथा शैतानों की इबादत (वंदना) करते हैं। और काफ़िरों[1] के बारे में कहते हैं कि यह ईमान वालों से अधिक सीधी डगर पर हैं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ﴿٥١﴾

52. और जिसे अल्लाह धिक्कार दे तो आप उस का कदापि कोई सहायक नहीं पायेंगे।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٥٢﴾

53. क्या उन के पास राज्य का कोई भाग है, इस लिए लोगों को (उस में से) तनिक भी नहीं देंगे?

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾

54. बल्कि वह लोगों[2] से उस अनुग्रह पर विद्वेष कर रहे हैं जो अल्लाह ने उन को प्रदान किया है। तो हम ने (पहले भी) इब्राहीम के घराने को पुस्तक तथा हिक्मत (तत्वदर्शिता) दी है और उन्हें बड़ा राज्य प्रदान किया।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾

55. फिर उन में से कोई ईमान लाया, और कोई उस से विमुख हो गया। (तो उस के लिए) नरक की भड़कती अग्नि बहुत है।

فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ﴿٥٥﴾

56. वास्तव में जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا

---

1 अर्थात मक्का के मुर्ति के पूजारियों के बारे में मदीना के यहूदियों की यह दशा थी कि वह सदैव मुर्ति पूजा के विरोधी रहे। और उस का अपमान करते रहे। परन्तु अब मुसलमानों के विरोध में उन की प्रशंसा करते तथा कहते कि मुर्ति पूजकों का आचरण स्वभाव अधिक अच्छा है।

2 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर कि अल्लाह ने आप को नबी बना दिया तथा मुसलमानों को ईमान दे दिया।

الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

जब जब उन की खालें पकेंगी हम उन की खालें दूसरी बदल देंगे, ताकि वह यातना चखें, निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾

57. और जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार किये तो हम उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे, उन के लिए उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी और हम उन को घनी छाओं में रखेंगे।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

58. अल्लाह[1] तुम्हें आदेश देता है कि धरोहर उन के स्वामियों को चुका दो, और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो। अल्लाह तुम्हें अच्छी बात का निर्देश दे रहा है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने, देखने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾

59. हे ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो, और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो, तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो, फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हो। यह (तुम्हारे लिये) अच्छा[2] और इस का

---

1 यहाँ से ईमान वालों को संबोधित किया जा रहा है कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए मूल नियम यह है कि जिस का जो भी अधिकार हो उसे स्वीकार किया जाये और दिया जाये। इसी प्रकार कोई भी निर्णय बिना पक्षपात के न्याय के साथ किया जाये, किसी प्रकार कोई अन्याय नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात किसी के विचार और राय को मानने से। क्यों कि क़ुर्आन और नबी

परिणाम अच्छा है।

60. (हे नबी!) क्या आप ने उन (द्विधावादियों) को नहीं जाना, जिन का यह दावा है कि वह जो कुछ आप पर अवतरित हुआ है तथा जो कुछ आप से पूर्व अवतरित हुआ है, उस पर ईमान रखते हैं, तथा चाहते हैं कि अपने विवाद का निर्णय विद्रोही के पास ले जायें, जब कि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें। और शैतान चाहता है कि उन्हें सत्धर्म से बहुत दूर[1] कर दे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَن يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾

61. तथा जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है तथा रसूल की (सुन्नत की) ओर तो आप मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मुँह फेर रहे हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾

62. फिर यदि उन के अपने ही कर्तूतों के कारण उन पर कोई आपदा आ पड़े, तो फिर आप के पास आकर शपथ लेते हैं कि हम ने[2] तो केवल भलाई

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत ही धर्मादेशों की शिलाधार है।

1 आयत का भावार्थ यह है कि जो धर्म विधान कुर्आन तथा सुन्नत के सिवा किसी अन्य विधान से अपना निर्णय चाहते हों उन का ईमान का दावा मिथ्या है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मुनाफ़िक़ ईमान का दावा तो करते थे, परन्तु अपने विवाद चुकाने के लिये इस्लाम के विरोधियों के पास जाते, फिर जब कभी उन की दो रंगी पकड़ी जाती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर मिथ्या शपथ लेते। और यह कहते कि हम केवल विवाद सुलझाने के लिये उन के पास चले गये थे। (इब्ने कसीर)

तथा (दोनों पक्ष में) मेल कराना
चाहा था।

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ
فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ
قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾

63. यही वह लोग हैं जिन के दिलों के भीतर की बातें अल्लाह जानता है। अतः आप उन को क्षमा कर दें, तथा उन्हें उपदेश दें, और उन से ऐसी प्रभावी बात बोलें जो उन के दिलों में उतर जाये।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ
اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ
فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ
لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٤﴾

64. और हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये। और जब उन लोगों ने अपने ऊपर अत्याचार किया तो यदि वह आप के पास आते, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करते, तथा उन के लिये रसूल क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को अति क्षमाशील दयावान् पाते।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا
شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا
قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾

65. तो आप के पालनहार की शपथ! वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें[1], फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें, और पूर्णतः स्वीकार कर लें।

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ
اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ
مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ

66. और यदि हम उन्हें[2] आदेश देते कि स्वयं को बध करो, तथा अपने घरों से निकल जाओ तो इन में से थोड़े के सिवा कोई ऐसा नहीं करता। और

1 यह आदेश आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में था। तथा आप के निधन के पश्चात अब आप की सुन्नत से निर्णय लेना है।

2 अर्थात जो दूसरों से निर्णय कराते हैं।

यदि उन्हें जो निर्देश दिया जाता है वह उस का पालन करते तो उन के लिये अच्छा और अधिक स्थिरता का कारण होता।

خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾

67. और हम उन को अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते।

وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾

68. तथा हम उन्हें सीधी डगर दर्शा देते।

وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾

69. तथा जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे तो वही (स्वर्ग में) उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया है, अर्थात नबियों तथा सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ। और वह क्या ही अच्छे साथी हैं?

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ﴿٦٩﴾

70. यह प्रदान अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह का ज्ञान बहुत[1] है।

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ﴿٧٠﴾

71. हे ईमान वालो! अपने (शत्रु से) बचाव के साधन तय्यार रखो, फिर गिरोहों में अथवा एक साथ निकल पड़ो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا ﴿٧١﴾

72. और तुम में कोई ऐसा व्यक्ति[2] भी है जो तुम से अवश्य पीछे रह जायेगा, और यदि तुम पर (युद्ध में) कोई आपदा आ पड़े तो कहेगाः अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया कि मैं उनके साथ उपस्थित न था।

وَإِنَّ مِنكُمْ لَمَن لَّيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُن مَّعَهُمْ شَهِيدًا ﴿٧٢﴾

73. और यदि तुम पर अल्लाह की दया हो

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن

1 अर्थात अपनी दया तथा प्रदान के योग्य को जानने के लिये।

2 यहाँ युद्ध से संबंधित अब्दुल्लाह बिन उबय्य जैसे मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُۥ مَوَدَّةٌ يَٰلَيْتَنِى كُنتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٣﴾

जाये, तो वह अवश्य यह कामना करेगा कि काश! मैं भी उन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता। मानो उस के और तुम्हारे मध्य कोई मित्रता ही न थी।

فَلْيُقَٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ٱلَّذِينَ يَشْرُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا بِٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَمَن يُقَٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾

74. तो चाहिये कि अल्लाह की राह[1] में वह लोग युद्ध करें जो आख़िरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन बेच चुके हैं। और जो अल्लाह की राह में युद्ध करेगा, तो वह मारा जाये अथवा विजयी हो जाये तो हम उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ ٱلرِّجَالِ وَٱلنِّسَآءِ وَٱلْوِلْدَٰنِ ٱلَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ ٱلظَّالِمِ أَهْلُهَا وَٱجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا وَٱجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

75. और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में युद्ध नहीं करते, जब कि कितने ही निर्बल पुरुष तथा स्त्रियाँ और बच्चे हैं, जो गुहार रहे हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें इस नगर[2] से निकाल दे, जिस के निवासी अत्याचारी हैं। और हमारे लिये अपनी ओर से कोई रक्षक बना दे, और हमारे लिये अपनी ओर से कोई सहायक बना दे।

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِ ٱلطَّٰغُوتِ

76. जो लोग ईमान लाये वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं। और जो काफ़िर हैं वह उपद्रव के लिये युद्ध करते हैं। तो

1 अल्लाह के धर्म को ऊँचा करने, और उस की रक्षा के लिये। किसी स्वार्थ अथवा किसी देश और संसारिक धन धान्य की प्राप्ति के लिये नहीं।

2 अर्थात मक्का नगर से। यहाँ इस तथ्य को उजागर कर दिया गया है कि क़ुर्आन ने युद्ध का आदेश इस लिये नहीं दिया है कि दूसरों पर अत्याचार किया जाये। बल्कि नृशंसितों तथा निर्बलों की सहायता के लिये दिया है। इसी लिये वह बार बार कहता है कि "अल्लाह की राह में युद्ध करो" अपने स्वार्थ और मनोकांक्षाओं के लिये नहीं। न्याय तथा सत्य की स्थापना और सुरक्षा के लिये युद्ध करो।

فَقَاتِلُوٓا۟ أَوْلِيَآءَ ٱلشَّيْطَٰنِ ۖ إِنَّ كَيْدَ ٱلشَّيْطَٰنِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾

शैतान के साथियों से युद्ध करो। निःसंदेह शैतान की चाल निर्बल होती है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوٓا۟ أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ ٱلْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ ٱلنَّاسَ كَخَشْيَةِ ٱللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا۟ رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا ٱلْقِتَالَ لَوْلَآ أَخَّرْتَنَآ إِلَىٰٓ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَٰعُ ٱلدُّنْيَا قَلِيلٌ وَٱلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ ٱتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾

77. (हे नबी!) क्या आप ने उन की नहीं देखी, जिस से कहा गया कि अपने हाथों को (युद्ध से) रोके रखो, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो? और जब उन पर युद्ध करना लिख दिया गया तो उन में से एक गिरोह लोगों से ऐसे डर रहा है जैसे अल्लाह से डर रहा हो। या उस से भी अधिक। तथा वह कहते हैं कि हे हमारे पालनहार! हम को युद्ध करने का आदेश क्यों दे दिया, क्यों न हमें थोड़े दिनों का और अवसर दिया? आप कह दें कि संसारिक सुख बहुत थोड़ा है, तथा परलोक उस के लिये अधिक अच्छा है जो अल्लाह[1] से डरा, और उन पर कण भर भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

أَيْنَمَا تَكُونُوا۟ يُدْرِككُّمُ ٱلْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِى بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا۟ هَٰذِهِۦ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا۟ هَٰذِهِۦ مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰٓؤُلَآءِ ٱلْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴿٧٨﴾

78. तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें मौत आ पकड़ेगी, यद्यपि दृढ़ दुर्गों में क्यों न रहो। तथा उन को यदि कोई सुख पहुँचता है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। और यदि कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि यह आपके कारण है। (हे नबी!) उन से कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है। इन लोगों को क्या हो गया कि कोई बात समझने के समीप भी नहीं[2] होते?

---

1 अर्थात परलोक का सुख उस के लिये है जिस ने अल्लाह के आदेशों का पालन किया।

2 भावार्थ यह है कि जब मुसलमानों को कोई हानि हो जाती तो मुनाफ़िक़

79. (वास्तविक्ता तो यह है कि) तुम को जो सुख पहुँचता है वह अल्लाह की ओर से होता है। तथा जो हानि पहुँचती है वह स्वयं (तुम्हारे कुकर्मों के) कारण होती है। और हम ने आप को सब मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा[1] है। और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य बहुत है।

مَآ أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَآ أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَٰكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝٧٩

80. जिस ने रसूल की आज्ञा का अनुपालन किया (वास्तव में) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया है। तथा जिस ने मुँह फेर लिया तो (हे नबी!) हम ने आप को उन का प्रहरी (रक्षक) बना कर नहीं भेजा[2] है।

مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝٨٠

81. तथा वह (आपके सामने कहते हैं कि हम आज्ञाकारी हैं, और जब आप के पास से जाते हैं तो इन में से कुछ लोग रात में आप की बात के

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِى تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ

(द्विधावादी) तथा यहूदी कहतेः यह सब नबी सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के कारण हुआ। कुर्आन कहता है कि सब कुछ अल्लाह की ओर से होता है। अर्थात उस ने प्रत्येक दशा तथा परिणाम के लिए कुछ नियम बना दिये हैं। और जो कुछ भी होता है वह उन्हीं दशाओं का परिणाम होता है। अतः तुम्हारी यह बातें जो कह रहे हो, बड़ी अज्ञानता की बातें हैं।

1 इस का भावार्थ यह है कि तुम्हें जो कुछ हानि होती है तो वह तुम्हारे कुकर्मों का दुष्परिणाम होता है। इस का आरोप दूसरे पर न धरो। इस्लाम के नबी तो अल्लाह के रसूल हैं। और रसूल का काम यही है कि संदेश पहुँचा दें, और तुम्हारा कर्तब्य है कि उन के सभी आदेशों का अनुपालन करो। फिर यदि तुम अवैज्ञा करो, और उस का दुष्परिणाम सामने आये, तो दोष तुम्हारा है, न कि इस्लाम के नबी का।

2 अर्थात आप का कर्तब्य अल्लाह का संदेश पहुँचाना है, उन के कर्मों तथा उन्हें सीधी डगर पर लगा देने का दायित्व आप पर नहीं।

بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٨١

विरुद्ध परामर्श करते हैं। और वह जो परामर्श कर रहें हैं उसे अल्लाह लिख रहा है। अतः आप उन पर ध्यान न दें। और अल्लाह पर भरोसा करें, तथा अल्लाह पर भरोसा काफ़ी है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ
اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝٨٢

82. तो क्या वह क़ुर्आन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते?[1]

وَإِذَا جَاۗءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوْا بِهٖ ۚ
وَلَوْ رَدُّوْهُ إِلَى الرَّسُوْلِ وَإِلٰٓى أُولِى الْأَمْرِ مِنْهُمْ
لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ إِلَّا قَلِيْلًا ۝٨٣

83. और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई सूचना आती है तो उसे फैला देते हैं। और यदि वह उसे अल्लाह के रसूल तथा अपने अधिकारियों की ओर फेर देते तो जो बात की तह तक पहुँचते हैं वे उस की वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम पर अल्लाह की अनुकम्पा तथा दया न होती तो तुम में थोड़े के सिवा सब शैतान के पीछे लग[2] जाते।

فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ
وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّكُفَّ بَأْسَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَاللّٰهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَّأَشَدُّ تَنْكِيْلًا ۝٨٤

84. तो (हे नबी!) आप अल्लाह की राह में युद्ध करें। केवल आप पर यह भार डाला जा रहा है, तथा ईमान वालों को (इस की) प्रेरणा दें। संभव है कि अल्लाह काफ़िरों का बल (तोड़ दे)। और अल्लाह का बल और उस का दण्ड सब से कड़ा है।

---

1 अर्थात जो व्यक्ति क़ुर्आन में विचार करेगा, उस पर यह तथ्य खुल जायेगा कि क़ुर्आन अल्लाह की वाणी है।

2 इस आयत द्वारा यह निर्देश दिया जा रहा है कि जब भी साधारण शान्ति या भय की कोई सूचना मिले तो उसे अधिकारियों तथा शासकों तक पहुँचा दिया जाये।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ
وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۗ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾

85. जो अच्छी अनुशंसा (सिफ़ारिश) करेगा उसे उस का भाग (प्रतिफल) मिलेगा। तथा जो बुरी अनुशंसा (सिफ़ारिश) करेगा तो उसे भी उस का भाग (कुफल)[1] मिलेगा। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ
اَوْ رُدُّوْهَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾

86. और जब तुम से सलाम किया जाये, तो उस से अच्छा उत्तर दो, अथवा उसी को दुहरा दो। निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिसाब लेने वाला है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَا رَيْبَ فِيْهِ ۗ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾

87. अल्लाह के सिवा कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं, वह अवश्य तुम्हें प्रलय के दिन एकत्र करेगा, इस में कोई संदेह नहीं। तथा बात कहने में अल्लाह से अधिक सच्चा कौन हो सकता है?

فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ
بِمَا كَسَبُوْا ۗ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ
اللّٰهُ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾

88. तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) के बारे में दो पक्ष[2] बन गये हो। जब कि अल्लाह ने उन के कुकर्मों के कारण उन्हें औंधा कर दिया है। क्या तुम उसे सुपथ दर्शा देना चाहते हो जिसे अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और जिसे अल्लाह कुपथ

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि अच्छाई तथा बुराई में किसी की सहायता करने का भी पुण्य और पाप मिलता है।

2 मक्का वासियों में कुछ अपने स्वार्थ के लिये मौखिक मुसलमान हो गये थे, और जब युद्ध आरंभ हुआ तो उन के बारे में मुसलमानों में दो विचार हो गये। कुछ उन्हें अपना मित्र और कुछ उन्हें अपना शत्रु समझ रहे थे। अल्लाह ने यहाँ बता दिया कि वह लोग मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) हैं। जब तक मक्का से हिजरत कर के मदीना में न आ जायें, और शत्रु ही के साथ रह जायें, तो उन्हें भी शत्रु समझा जायेगा। यह वह मुनाफ़िक़ नहीं हैं जिन की चर्चा पहले की गयी है। यह मक्का के विशेष मुनाफ़िक़ हैं, जिन से युद्ध की स्थिति में कोई मित्रता की जा सकती थी, और न ही उन से कोई संबंध रखा जा सकता था।

कर दे तो तुम उस के लिये कोई राह नहीं पा सकते।

وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٨٩﴾

89. (हे ईमान वालो!) वे तो यह कामना करते हैं कि उन्हीं के समान तुम भी काफ़िर हो जाओ, तथा उन के बराबर हो जाओ। अतः उन में से किसी को मित्र न बनाओ, जब तक अल्लाह की राह में हिज्रत न करें। और यदि वह इस से विमुख हों तो उन्हें जहाँ पाओ बध करो और उन में से किसी को मित्र न बनाओ, और न सहायक बनाओ।

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ﴿٩٠﴾

90. परन्तु इन में से जो किसी ऐसी क़ौम से जा मिलें जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, अथवा ऐसे लोग हों जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उन के दिल इस से संकुचित हो रहे हों कि वह तुम से युद्ध करें, अथवा (तुम्हारे साथ) अपनी जाति से युद्ध करें। और यदि अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर सामर्थ्य दे देता, फिर वह तुम से युद्ध करते, तो यदि वह तुम से बिलग रह गये और तुम से युद्ध नहीं किया, और तुम से संधि कर ली, तो उन के विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिये कोई (युद्ध करने की) राह नहीं बनाई[1] है।

سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ

91. तथा तुम को कुछ ऐसे दूसरे लोग भी

1 अर्थात इस्लाम में युद्ध का आदेश उन के विरुद्ध दिया गया है जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध कर रहें हों। अन्यथा उन से युद्ध करने का कोई कारण नहीं रह जाता क्यों कि मूल चीज़ शान्ति तथा संधि है, युद्ध और हत्या नहीं ।

मिलेंगे जो तुम्हारी ओर से भी शान्त रहना चाहते हैं, और अपनी जाति की ओर से भी शान्त रहना (चाहते हैं)। फिर जब भी उपद्रव की ओर फेर दिये जायें, तो उस में औंधे हो कर गिर जाते हैं। तो यदि वह तुम से बिलग न रहें और तुम से संधि न करें, तथा अपना हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो, और जहाँ पाओ बध करो। हम ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये खुला तर्क बना दिया है।

وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿٩١﴾

92. किसी ईमान वाले के लिये वैध नहीं है कि वह किसी ईमान वाले की हत्या कर दे, परन्तु चूक[1] से। तथा जो किसी ईमान वाले की चूक से हत्या कर दे तो उसे एक ईमान वाला दास मुक्त करना है, और उस के घर वालों को दियत (अर्थदण्ड)[2] दे, परन्तु यह कि वह दान (क्षमा) कर दें। फिर यदि वह (निहत) उस जाति में से हो जो तुम्हारी शत्रु है,

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً ۚ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٢﴾

---

1 अर्थात निशाना चूक कर उसे लग जाये।

2 यह अर्थदण्ड सौ ऊँट अथवा उन का मूल्य है। आयत का भावार्थ यह है कि जिन की हत्या करने का आदेश दिया गया है वह केवल इस लिये दिया गया है कि उन्हों ने इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया है। अन्यथा यदि युद्ध की स्थिति न हो तो हत्या एक महापाप है। और किसी मुसलमान के लिये कदापि यह वैध नहीं कि किसी मुसलमान की, या जिस से समझौता हो, उस की जान बूझ कर हत्या कर दे। संधि मित्र से अभिप्राय वह सभी ग़ैर मुस्लिम हैं जिन से मुसलमानों का युद्ध न हो, संधि तथा संविदा हो। फिर यदि चूक से किसी ने किसी की हत्या कर दी तो उस का यह आदेश है जो इस आयत में बताया गया है। यह ज्ञातव्य है कि कुर्आन ने केवल दो ही स्थिति में हत्या को उचित किया हैः युद्ध की स्थिति में, अथवा नियमानुसार किसी अपराधी की हत्या की जाये। जैसे हत्यारे को हत्या के बदले हत किया जाये।

और वह (निहत) ईमान वाला है तो एक ईमान वाला दास मुक्त करना है। और यदि ऐसी क़ौम से हो जिस के और तुम्हारे बीच संधि है तो उस के घर वालों को अर्थदण्ड देना, तथा एक ईमान वाला दास (भी) मुक्त करना है, और जो दास न पाये तो उसे निरंतर दो महीने रोज़ा रखना है। अल्लाह की ओर से (उस के पाप की) यही क्षमा है। और अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ۝٩٣

93. और जो किसी ईमान वाले की हत्या जान बूझ कर कर दे तो उस का कुफल (बदला) नरक है। जिस में वह सदावासी होगा, और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा धिक्कार है। और उस ने उस के लिये घोर यातना तैयार कर रखी है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝٩٤

94. हे ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकलो तो भली भाँति परख[1] लो, और कोई तुम को सलाम[2] करे तो यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो। क्या तुम संसारिक जीवन का उपकरण चाहते हो? और अल्लाह के पास बहुत से परिहार (शत्रुधन) हैं। तुम भी पहले ऐसे[3] ही थे, तो अल्लाह ने तुम

---

1 अर्थात यह कि वह शत्रु हैं या मित्र हैं।

2 सलाम करना मुसलमान होने का एक लक्षण है।

3 अर्थात इस्लाम के शब्द के सिवा तुम्हारे पास इस्लाम का कोई चिन्ह नहीं था। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हु कहते हैं कि रात के समय एक व्यक्ति यात्रा कर रहा था। जब उस से कुछ मुसलमान मिले तो उस ने अस्सलामु अलैकुम कहा।

पर उपकार किया। अतः भली भाँति परख लिया करो, निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۹۵﴾

95. ईमान वालों में जो अकारण अपने घरों में रह जाते हैं, और जो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन को जो अपने धनों तथा प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, उन पर जो घरो में रह जाते हैं, पद में प्रधानता दी है। और प्रत्येक को अल्लाह ने भलाई का वचन दिया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को उन पर जो घरों में बैठे रह जाने वाले हैं, बड़े प्रतिफल में भी प्रधानता दी है।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾

96. अल्लाह की ओर से कई (उच्च) श्रेणियाँ हैं। तथा क्षमा और दया है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۹۷﴾

97. निःसंदेह वह लोग जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वह अपने ऊपर (कुफ़्र के देश में रह कर) अत्याचार करने वाले हों, तो उन से कहते हैंः तुम किस चीज़ में थे? वह कहते हैं कि हम धरती में विवश थे। तब फ़रिश्ते कहते हैंः क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि

फिर भी एक मुसलमान ने उसे झूठा समझ कर मार दिया। इसी पर यह आयत उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस का पता चला तो आप बहुत नाराज़ हुये। (इब्ने कसीर)

उस में हिज्रत कर[1] जाते? तो इन्हीं का आवास नरक है। और वह क्या ही बुरा स्थान है!

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾

98. परन्तु जो पुरुष और स्त्रियाँ तथा बच्चे ऐसे विवश हों कि कोई उपाय न रख सकें, और न (हिज्रत की) कोई राह पाते हों।

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾

99. तो आशा है कि अल्लाह उन को क्षमा कर देगा। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञान्त क्षमाशील है।

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠٠﴾

100. तथा जो कोई अल्लाह की राह में हिज्रत करेगा तो वह धरती में बहुत से निवास स्थान तथा विस्तार पायेगा। और जो अपने घर से अल्लाह और उस के रसूल की ओर निकल गया, फिर उसे (राह में ही) मौत ने पकड़ लिया तो उस का प्रतिफल अल्लाह के पास निश्चित हो

1 जब सत्य के विरोधियों के अत्याचार से विवश हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने हिज्रत (प्रस्थान) कर गये, तो अरब में दो प्रकार के देश हो गये। मदीना दारुल हिज्रत (प्रवास गृह) था। जिस में मुसलमान हिज्रत कर के एकत्र हो गये। तथा दारुल हर्ब। अर्थात वह क्षेत्र जो शत्रुवों के नियंत्रण में था। और जिस का केन्द्र मक्का था। यहाँ जो मुसलमान थे वह अपनी आस्था तथा धार्मिक कर्म से वंचित थे। उन्हें शत्रु का अत्याचार सहना पड़ता था। इस लिये उन्हें यह आदेश दिया गया था कि मदीने हिज्रत कर जायें। और यदि वह शक्ति रखते हुये हिज्रत नहीं करेंगे तो अपने इस आलस्य के लिए उत्तर दायी होंगे। इस के पश्चात् आगामी आयत में उन की चर्चा की जा रही है जो हिज्रत करने से विवश थे। मक्का से मदीना हिज्रत करने का यह आदेश मक्का की विजय सन् 8 हिज्री के पश्चात् निरस्त कर दिया गया। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में कुछ मुसलमान काफ़िरों की संख्या बढ़ाने के लिये उन के साथ हो जाते थे। और तीर या तलवार लगने से मारे जाते थे, उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी, 4596)

गया। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَوٰةِ ۖ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكٰفِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا ﴿١٠١﴾

101. और जब तुम धरती में यात्रा करो तो नमाज़[1] क़स्र (संक्षिप्त) करने में तुम पर कोई दोष नहीं, यदि तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें सतायेंगे। वास्तव में काफ़िर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَوٰةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ ۚ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٠٢﴾

102. तथा (हे नबी!) जब आप (रणक्षेत्र में) उपस्थित हों, और उन के लिये नमाज़ की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये, और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहे। और जब वह सजदा कर लें, तो तुम्हारे पीछे हो जायें, तथा दूसरा गिरोह आये जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है, और आप के साथ नमाज़ पढ़ें। और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। काफ़िर चाहते हैं कि तुम अपने शस्त्रों से निश्चेत हो जाओ तो तुम पर यकायक धावा बोल दें। और तुम पर कोई दोष नहीं, यदि वर्षा के कारण तुम्हें दुख हो अथवा तुम रोगी रहो कि अपने शस्त्र[2] उतार दो। तथा अपने बचाव का

---

1 क़स्र का अर्थ चार रक्अत वाली नमाज़ को दो रक्अत पढ़ना है। यह अनुमति प्रत्येक यात्रा के लिये है शत्रु का भय हो, या न हो।

2 इस का नाम (सलातुल ख़ौफ़) अर्थात भय के समय की नमाज़ है। जब रणक्षेत्र में प्रत्येक समय भय लगा रहे, तो उस की विधि यह है कि सेना के दो भाग कर लें। एक भाग को नमाज़ पढ़ायें, तथा दूसरा शत्रु के सम्मख खड़ा रहे, फिर दूसरा आये और नमाज़ पढ़े। इस प्रकार प्रत्येक गिरोह की एक रक्अत और इमाम की दो रक्अत होंगी। हदीसों में इस की और भी विधियाँ आई हैं। और यह युद्ध की स्थितियों पर निर्भर है।

ध्यान रखो। निःसंदेह अल्लाह ने काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना तय्यार कर रखी है।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَوٰةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ ۚ إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

103. फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर लो, तो खड़े, बैठे, लेटे प्रत्येक स्थिति में अल्लाह का स्मरण करो। और जब तुम शान्त हो जाओ तो पूरी नमाज़ पढ़ो। निःसंदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾

104. तथा तुम (शत्रु) जाति का पीछा करने में शिथिल न बनो, यदि तुम्हें दुःख पहुँचा है, तो तुम्हारे समान उन्हें भी दुःख पहुँचा है। तथा तुम अल्लाह से जो आशा[1] रखते हो, वह आशा वह नहीं रखते। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَىٰكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾

105. (हे नबी!) हम ने आप की ओर इस पुस्तक (क़ुर्आन) को सत्य के साथ उतारा है, ताकि आप लोगों के बीच उस के अनुसार निर्णय करें, जो अल्लाह ने आप को बताया है, और विश्वासघातियों के पक्षधर न[2] बनें।

---

1 अर्थात प्रतिफल तथा सहायता और समर्थन की।

2 यहाँ से अर्थात आयत **105** से **113** तक, के विषय में भाष्यकारों ने लिखा है कि एक व्यक्ति ने एक अन्सारी की कवच (ज़िरह) चुरा ली। और जब देखा कि उस का भेद खुल जायेगा तो उस का आरोप एक यहूदी पर लगा दिया। और उस के क़बीले के लोग भी उस के पक्षधर हो गये। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये, और कहा कि आप इसे निर्दोष घोषित कर दें। और उन की बातों के कारण समीप था कि आप उसे निर्दोष घोषित कर के यहूदी को अपराधी बना देते कि आप को सावधान करने के लिये यह आयतें उतरीं। (इब्ने जरीर) इन आयतों का साधारण भावार्थ यह है कि मुसलमान न्यायधीश को चाहिये कि किसी पक्ष

106. तथा अल्लाह से क्षमा याचना करते रहें, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٠٦

107. और उन का पक्ष न लें, जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हों, निःसंदेह अल्लाह विश्वासघाती, पापी से प्रेम नहीं करता।[1]

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝١٠٧

108. वह (अपने करतूत) लोगों से छुपा सकते हैं। तथा अल्लाह से नहीं छुपा सकते। और वह उन के साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं, जिस से वह प्रसन्न नहीं[2] होता। तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वह कर रहे हैं।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝١٠٨

109. सुनो! तुम्हीं वह हो कि संसारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ लिये। तो प्रलय के दिन उन की ओर से कौन अल्लाह से झगड़ेगा, और कौन उन का अभिभाषक (प्रतिनिधि) होगा?

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝١٠٩

110. जो व्यक्ति कोई कुकर्म करेगा, अथवा अपने ऊपर अत्याचार करेगा, और फिर अल्लाह से क्षमा याचना करेगा, तो वह उसे अति क्षमी दयावान् पाएगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١١٠

का इस लिये पक्षपात न करे कि वह मुसलमान है। और दूसरा मुसलमान नहीं है, बल्कि उसे हर हाल में निष्पक्ष हो कर न्याय करना चाहिए।

1 आयत का भावार्थ यह है कि न्यायधीश को ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिस में किसी का पक्षपात हो।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मुसलमानों को अपना सहधर्मी अथवा अपनी जाति या परिवार का होने के कारण किसी अपराधी का पक्षपात नहीं करना चाहिये। क्योंकि संसार न जाने, परन्तु अल्लाह तो जानता है कि कौन अपराधी है, कौन नहीं।

وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُۥ عَلَىٰ نَفْسِهِۦ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾

111. और जो व्यक्ति कोई पाप करता है तो अपने ऊपर करता[1] है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

وَمَن يَكْسِبْ خَطِيٓـَٔةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِۦ بَرِيٓـًٔا فَقَدِ ٱحْتَمَلَ بُهْتَٰنًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿١١٢﴾

112. और जो व्यक्ति कोई चूक अथवा पाप स्वयं करे, और फिर किसी निर्दोष पर उस का आरोप लगा दे तो उस ने मिथ्या दोषारोपण तथा खुले पाप का[2] बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُۥ لَهَمَّت طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَىْءٍ ۚ وَأَنزَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾

113. और (हे नबी!) यदि आप पर अल्लाह की दया तथा कृपा न होती तो उन के एक गिरोह ने संकल्प ले लिया था कि आप को कुपथ कर दें, और वह स्वयं को ही कुपथ कर[3] रहे थे। तथा वह आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। क्यों कि अल्लाह ने आप पर पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) उतारी है। और आप को उस का ज्ञान दे दिया है जिसे आप नहीं जानते थे। तथा यह आप पर अल्लाह की बड़ी दया है।

لَّا خَيْرَ فِى كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَىٰهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَٰحٍۭ بَيْنَ ٱلنَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِ ٱللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾

114. उन के अधिकांश सरगोशी में कोई भलाई नहीं होती, परन्तु जो दान अथवा सदाचार या लोगों में सुधार कराने का आदेश दे। और जो कोई ऐसे कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के

---

1 भावार्थ यह है कि जो अपराध करता है उस के अपराध का दुष्परिणाम उसी के ऊपर है। अतः तुम यह न सोचो कि अपराधी के अपने सहधर्मी अथवा संबंधी होने के कारण, उस का अपराध सिद्ध हो गया, तो हम पर भी धब्बा लग जायेगा।

2 अर्थात स्वयं पाप कर के दूसरे पर आरोप लगाना दुहरा पाप है।

3 कि आप निर्दोष को अपराधी समझ लें।

लिये करेगा तो हम उसे बहुत भारी प्रतिफल प्रदान करेंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۗ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾

115. तथा जो व्यक्ति अपने ऊपर मार्गदर्शन उजागर हो जाने के[1] पश्चात् रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों की राह के सिवा (दूसरी राह) का अनुसरण करे तो हम उसे वहीं फेर[2] देंगे जिधर फिरा है। और उसे नरक में झोंक देंगे तथा वह बुरा निवास स्थान है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾

116. निःसंदेह अल्लाह इसे क्षमा[3] नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये, और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा। तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾

117. वह (मिश्रणवादी) अल्लाह के सिवा देवियों को ही पुकारते हैं। और धिक्कारे हुये शैतान को पुकारते हैं।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾

118. अल्लाह ने जिसे धिक्कार दिया है। और उस (शैतान) ने कहा था कि मैं तेरे भक्तों से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा।

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ

119. और उन्हें अवश्य बहकाऊँगा, तथा

---

1 ईमान वालों से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा (साथी) हैं।

2 विद्वानों ने लिखा है कि यह आयत भी उसी मुनाफ़िक़ से संबंधित है। क्योंकि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के विरुद्ध दण्ड का निर्णय कर दिया तो वह भाग कर मक्का के मिश्रणवादियों से मिल गया। (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)। फिर भी इस आयत का आदेश साधारण है।

3 अर्थात शिर्क (मिश्रणवाद) अक्षम्य पाप है।

فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ
وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾

कामनायें दिलाऊँगा, और आदेश दूँगा कि वह पशुओं के कान चीर दें। तथा उन्हें आदेश दूँगा, तो वे अवश्य अल्लाह की संरचना में परिवर्तन[1] कर देंगे। तथा जो शैतान को अल्लाह के सिवा सहायक बनायेगा तो वह खुली क्षति में पड़ गया।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ
اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾

120. वह उन को वचन देता, तथा कामनाओं में उलझाता है। और उन को जो वचन देता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं है।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا
مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

121. उन्हीं का निवास स्थान नरक है। और वह उस से भागने की कोई राह नहीं पायेंगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۗ وَمَنْ
اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾

122. तथा जो लोग ईमान लाये, और सत्कर्म किये, हम उन को ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वे उस में सदावासी होंगे। यह अल्लाह का सत्य वचन है। और अल्लाह से अधिक सत्य कथन किस का हो सकता है?

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ۗ
مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾

123. (यह प्रतिफल) तुम्हारी कामनाओं तथा अहले किताब की कामनाओं पर निर्भर नहीं। जो कोई भी दुष्कर्म करेगा तो वह उस का कुफल पायेगा, तथा अल्लाह के सिवा अपना कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेगा।

---

1 इस के बहुत से अर्थ हो सकते हैं, जैसे गोदना, गुद्वाना, स्त्री का पुरुष का आचरण और स्वभाव बनाना, इसी प्रकार पुरुष का स्त्री का आचरण, तथा रूप धारण करना आदि।

124. तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान भी[1] रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे, और तनिक भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا
يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾

125. तथा उस व्यक्ति से अच्छा किस का धर्म हो सकता है जिस ने स्वयं को अल्लाह के लिये झुका दिया, और वह एकेश्वरवादी भी हो। और एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण कर रहा हो? और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया।

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ
وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ
وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

126. तथा अल्लाह ही का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को अपने नियंत्रण में लिये हुये है।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَكَانَ
اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

127. (हे नबी!) वह स्त्रियों के बारे में आप से धर्मादेश पूछ रहे हैं। आप कह दें कि अल्लाह उन के बारे में तुम्हें आदेश देता है, और वह आदेश भी हैं जो इस से पूर्व पुस्तक (क़ुर्आन) में तुम्हें उन अनाथ स्त्रियों के बारे में सुनाये गये हैं, जिन के निर्धारित अधिकार तुम नहीं देते,

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِى النِّسَاۤءِ ۗ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ
فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى
النِّسَاۤءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ
وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ
مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ۗ
وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾

---

1 अर्थात सत्कर्म का प्रतिफल सत्य आस्था और ईमान पर आधारित है कि अल्लाह तथा उस के सब नबियों पर ईमान लाया जाये। तथा हदीसों से विद्दित होता है कि एक बार मुसलमानों और अहले किताब के बीच विवाद हो गया। यहूदियों ने कहा कि हमारा धर्म सब से अच्छा है। मुक्ति केवल हमारे ही धर्म में है। मुसलमानों ने कहाः हमारा धर्म सब से अच्छा तथा अंतिम धर्म है। उसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

और उन से विवाह करने की रुचि रखते हो, तथा उन बच्चों के बारे में भी जो निर्बल हैं। तथा (यह भी आदेश देता है कि) अनाथों के लिये न्याय पर स्थित रहो।[1] तथा तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

128. और यदि किसी स्त्री को अपने पति से दुर्व्यवहार अथवा विमुख होने की शंका हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में कोई संधि कर लें, और संधि कर लेना ही अच्छा[2] है। और लोभ तो सभी में होता है। और यदि तुम एक दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो तो निःसंदेह तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से सूचित है।

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾

129. और यदि तुम अपनी पत्नियों के बीच न्याय करना चाहो, तो भी ऐसा कदापि नहीं कर[3] सकोगे। अतः एक ही की ओर पूर्णतः झुक[4]

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ

---

1 इस्लाम से पहले यदि अनाथ स्त्री सुन्दर होती तो उस का संरक्षक यदि उस का विवाह उस से हो सकता हो, तो उस से विवाह कर लेता परन्तु उसे महर् (विवाह उपहार) नहीं देता। और यदि सुन्दर न हो तो दूसरे से उसे विवाह नहीं करने देता था। ताकि उस का धन उसी के पास रह जाये। इसी प्रकार अनाथ बच्चों के साथ भी अत्याचार और अन्याय किया जाता था, जिन से रोकने के लिये यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

2 अर्थ यह है कि स्त्री, पुरुष की इच्छा और रुचि पर ध्यान दे। तो यह संधि की रीति अलगाव से अच्छी है।

3 क्यों कि यह स्वभाविक है कि मन का आकर्षण किसी एक की ओर होगा।

4 अर्थात जिस में उसके पति की रुचि न हो, और न व्यवहारिक रूप से बिना

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا﴿١٢٩﴾

न जाओ, और (शेष को) बीच में लटकी हुई न छोड़ दो। और यदि (अपने व्यवहार में) सुधार[1] रखो और अल्लाह से डरते रहो तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا﴿١٣٠﴾

130. और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दूसरे से) निश्चिंत[2] कर देगा। और अल्लाह बड़ा उदार तत्वज्ञ है।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا﴿١٣١﴾

131. तथा अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने तुम से पूर्व अहले किताब को तथा तुम को आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो। और यदि तुम कुफ़्र (अवैज्ञा) करोगे तो निस्संदेह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह निस्पृह[3] प्रशंसित है।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا﴿١٣٢﴾

132. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है। और अल्लाह काम बनाने के लिये बस है।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ

133. और वह चाहे तो, हे लोगो! तुम्हें ले जाये[4] और तुम्हारे स्थान पर

पति के हो।

1 अर्थात सब के साथ व्यवहार तथा सहवास संबंध में बराबरी करो।

2 अर्थात यदि निभाव न हो सके तो विवाह बंधन में रहना आवश्यक नहीं। दोनों अलग हों जायें, अल्लाह दोनों के लिये पति तथा पत्नी की व्यवस्था बना देगा।

3 अर्थात उस की अवैज्ञा से तुम्हारा ही बिगड़ेगा।

4 अर्थात तुम्हारी अवैज्ञा के कारण तुम्हें ध्वस्त कर दे। और दूसरे आज्ञाकारियों

بِاٰخَرِيْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾

दूसरों को ला दे। तथा अल्लाह ऐसा कर सकता है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾

134. जो संसारिक प्रतिकार (बदला) चाहता हो तो अल्लाह के पास संसार तथा परलोक दोनों का प्रतिकार (बदला) है। तथा अल्लाह सब की बात सुनता और सब के कर्म देख रहा है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾

135. हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रह कर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाह) बन जाओ। यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता पिता और समीपवर्तियों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह तुम से अधिक उन दोनों का हितैषी है। अतः अपनी मनोकांक्षा के लिये न्याय से न फिरो। और यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे, अथवा साक्ष्य देने से कतराओगे, तो निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम करते हो।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾

136. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल, और उस पुस्तक (कुर्आन) पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, तथा उन पुस्तकों पर जो इस से पहले उतारी हैं, ईमान लाओ। और जो अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों, उस की पुस्तकों और अन्त दिवस (प्रलय) को अस्वीकार करेगा, तो वह कुपथ में बहुत दूर जा पड़ा।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ

137. निःसंदेह जो ईमान लाये, फिर

को पैदा कर दे।

ازْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ
سَبِيلًا ۝١٣٧

काफ़िर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते ही चले गये तो अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें सीधी डगर दिखायेगा।

بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝١٣٨

138. (हे नबी!) आप मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) को शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا ۝١٣٩

139. जो ईमान वालों को छोड़ कर, काफ़िरों को अपना सहायक मित्र बनाते हैं, क्या वह उन के पास मान सम्मान चाहते हैं? तो निःसंदेह सब मान सम्मान अल्लाह ही के लिये[1] है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ
اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ
حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا
مِّثْلُهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ
وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۝١٤٠

140. और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए अपनी पुस्तक (क़ुर्आन) में यह आदेश उतार[2] दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है, तथा उन का उपहास किया जा रहा है, तो उन के साथ न बेठो, यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें। निःसंदेह तुम उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे। निश्चय अल्लाह मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) तथा काफ़िरों सब को नरक में एकत्र करने वाला है।

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِن كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ
اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ

141. जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहा करते हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की सहायता से विजय प्राप्त हो, तो कहते हैं: क्या

1 अर्थात अल्लाह के अधिकार में है, काफ़िरों के नहीं।

2 अर्थात सूरह अन्आम आयत नम्बर 68 में।

نَصِيبٌ ۙ قَالُوٓا۟ أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُم مِّنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ فَٱللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ وَلَن يَجْعَلَ ٱللَّهُ لِلْكَٰفِرِينَ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾

हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि उन (काफ़िरों) का पल्ला भारी रहे, तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर छा नहीं गये थे, और तुम्हें ईमान वालों से बचा रहे थे? तो अल्लाह ही प्रलय के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफ़िरों के लिये ईमान वालों पर कदापि कोई राह नहीं बनायेगा। [1]

إِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَهُوَ خَٰدِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوٓا۟ إِلَى ٱلصَّلَوٰةِ قَامُوا۟ كُسَالَىٰ يُرَآءُونَ ٱلنَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ ٱللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾

142. वास्तव में मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, जब किः वही उन्हें धोखे में डाल रहा[2] है, और जब वह नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो आलसी होकर खड़े होते हैं, वह लोगों को दिखाते हैं, और अल्लाह का स्मरण थोड़ा ही करते हैं।

مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ ٱللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُۥ سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾

143. वह इस के बीच द्विधा में पड़े हुये हैं, न इधर न उधर। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो आप उस के लिये कोई राह नहीं पा सकेंगे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلْكَٰفِرِينَ

144. हे ईमान वालो! ईमान वालों को

1 अर्थात द्विधावादी काफ़िरों की कितनी ही सहायता करें, उन की ईमान वालों पर स्थायी विजय नहीं होगी। यहाँ से द्विधावादियों के आचरण और स्वभाव की चर्चा की जा रही है।

2 अर्थात उन्हें अवसर दे रहा है, जिसे वह अपनी सफलता समझते हैं। आयत 139 से यहाँ तक मुनाफ़िक़ों के कर्म और आचरण से संबंधित जो बातें बताई गई हैं वह चार हैंः

1- वह मुसलमानों की सफलता पर विश्वास नहीं रखते।

2- मुसलमानों को सफलता मिले तो उनके साथ हो जाते हैं, और काफ़िरों को मिले तो उन के साथ।

3- नमाज़ मन से नहीं बल्कि केवल दिखाने के लिये पढ़ते हैं।

4- वह ईमान और कुफ़्र के बीच द्विधा में रहते हैं।

أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَن
تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾

छोड़ कर काफ़िरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने विरुद्ध अल्लाह के लिये खुला तर्क बनाना चाहते हो?

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ
وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾

145. निश्चय मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे। और आप उन का कोई सहायक नहीं पायेंगे।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ
وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ
وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾

146. परन्तु जिन्हों ने क्षमा याचना कर ली, तथा अपना सुधार कर लिया, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लिया, तथा अपने धर्म को विशुद्ध कर लिया, तो वह लोग ईमान वालों के साथ होंगे। और अल्लाह ईमान वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।

مَّا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ
وَآمَنتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

147. अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा ईमान रखो। और अल्लाह[1] बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।

لَّا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا
مَن ظُلِمَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٤٨﴾

148. अल्लाह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती, परन्तु जिस पर अत्याचार किया गया[2] हो। और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

إِن تُبْدُوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَن سُوءٍ فَإِنَّ

149. यदि तुम कोई भली बात खुल कर

---

1 इस आयत में यह संकेत है कि अल्लाह, कुफल और सुफल मानव कर्म के परिणाम स्वरूप देता है। जो उसके निर्धारित किये हुये नियम का परिणाम होता है। जिस प्रकार संसार की प्रत्येक चीज़ का एक प्रभाव होता है, ऐसे ही मानव के प्रत्येक कर्म का भी एक प्रभाव होता है।

2 आयत में कहा गया है कि किसी व्यक्ति में कोई बुराई हो तो उस की चर्चा न करते फिरो। परन्तु उत्पीड़ित व्यक्ति अत्याचारी के अत्याचार की चर्चा कर सकता है।

اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾

करो अथवा उसे गुप्त करो या
किसी बुराई को क्षमा कर दो,
तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी सर्व
शक्तिशाली है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ
أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ
بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ
يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾

150. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों
के साथ कुफ़्र (अविश्वास) करते हैं,
और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस
के रसूलों के बीच अन्तर करें, तथा
कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान
रखते हैं, तथा कुछ के साथ कुफ़्र
करते हैं, और इस के बीच राह[1]
बनाना चाहते हैं।

أُولٰئِكَ هُمُ الْكٰفِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِينَ
عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٥١﴾

151. वही शुद्ध काफ़िर हैं, और हम
ने काफ़िरों के लिये अपमानकारी
यातना तय्यार कर रखी है।

وَالَّذِينَ اٰمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ
مِنْهُمْ أُولٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٥٢﴾

152. तथा जो लोग अल्लाह और उस के
रसूलों पर ईमान लाये, और उन में
से किसी के बीच अंतर नहीं किया,
तो उन्हीं को हम उन का प्रतिफल
प्रदान करेंगे, तथा अल्लाह अति
क्षमाशील दयावान् है।

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِنَ
السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسٰى أَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوا
أَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ
ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوسٰى

153. हे नबी! आप से अहले किताब माँग
करते हैं कि आप उन पर आकाश
से कोई पुस्तक उतार दें, तो इन्होंने
मूसा से इस से भी बड़ी माँग की
थी। उन्हों ने कहा कि हमें अल्लाह
को प्रत्यक्ष[2] दिखा दो, तो इन के

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि सब नबी भाई हैं उन के बाप एक और मायें अलग-अलग हैं। सब का धर्म एक है, और हमारे बीच कोई नबी नहीं है। (सहीह बुख़ारी - 3443)

2 अर्थात आँखों से दिखा दो।

سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

अत्याचारों के कारण इन्हें बिजली ने धर लिया, फिर इन्होंने खुली निशानियाँ आने के पश्चात् बछड़े को पूज्य बना लिया, फिर हम ने इसे भी क्षमा कर दिया, और हम ने मूसा को खुला प्रभुत्व प्रदान किया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

154. और हम ने (उन से वचन लेने के लिये) उन के ऊपर तूर (पर्वत) उठा दिया, तथा हम ने उन से कहाः द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, तथा हम ने उन से कहा कि शनिवार[1] के विषय में अति न करो। और हम ने उन से दृढ़ वचन लिया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾

155. तो उन के अपना वचन भंग करने, तथा उन के अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करने, और उन के नबियों को अवैध बध करने, तथा उन के यह कहने के कारण कि हमारे दिल बंद हैं। (ऐसी बात नहीं है) बल्कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है। अतः इन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰي مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾

156. तथा उन के कुफ़्र और मर्यम पर घोर आरोप लगाने के कारण।

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ۭ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿١٥٧﴾

157. तथा उन के (गर्व से) कहने के कारण कि हम ने अल्लाह के रसूल, मर्यम के पुत्रः ईसा मसीह को बध कर दिया, जब कि (वास्तव में) उसे बध नहीं किया। और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उन के

1 देखियेः सूरह बक़रह आयत- 65।

लिये (इसे) संदिग्ध कर दिया गया। और निःसंदेह जिन लोगों ने इस में विभेद किया वह भी शंका में पड़े हुये हैं। और उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं, केवल अनुमान के पीछे पड़े हुये हैं। और निश्चय उसे उन्होंने बध नहीं किया है।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝١٥٨

158. बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर (आकाश) में उठा लिया है, तथा अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۝١٥٩

159. और सभी अहले किताब उस (ईसा) के मरण से पहले उस पर अवश्य ईमान[1] लायेंगे, और प्रलय के दिन वह उन के विरुद्ध साक्षी[2] होगा।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝١٦٠

160. यहूदियों के (इन्हीं) अत्याचार के कारण हम ने उन पर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को हराम (वर्जित) कर दिया जो उन के लिये हलाल (वैध) थे। तथा उन के बहुधा अल्लाह की राह से रोकने के कारण।

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٦١

161. तथा उन के ब्याज लेने के कारण जब कि उन्हें उस से रोका गया था, और उन के लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण, तथा

---

1 अर्थात प्रलय के समीप ईसा अलैहिस्साम के आकाश से उतरने पर उस समय के सभी अहले किताब उन पर ईमान लायेंगे, और वह उस समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी होंगे। सलीब तोड़ देंगे, और सूअरों को मार डालेंगे, तथा इस्लाम के नियमानुसार निर्णय और शासन करेंगे। (सहीह बुख़ारी- 2222,3449, मुस्लिम- 155,156)

2 अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय के दिन ईसाइयों के बारे में साक्षी होंगे। (देखियेः सूरह माइदा, आयत 117)

हम ने उन में से काफ़िरों के लिये दुखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

لَكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ أُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ أَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

162. परन्तु जो उन में से ज्ञान में पक्के हैं, तथा वह ईमान वाले जो आप की ओर उतारी गयी (पुस्तक क़ुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गयी (पुस्तक) पर ईमान रखते हैं, और जो नमाज़ की स्थापना करने वाले, तथा ज़कात देने वाले, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान रखने वाले हैं, उन्हीं को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَأَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾

163. (हे नबी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वह्यी भेजी है, जैसे नूह और उस के पश्चात् के नबियों के पास भेजी, और इब्राहीम तथा इस्माईल और इस्हाक़ तथा याक़ूब और उस की संतान, तथा ईसा और अय्यूब, तथा यूनुस और हारून तथा सुलैमान के पास वह्यी भेजी, और हम ने दावूद को ज़बूर प्रदान [1] की थी।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾

164. कुछ रसूल तो ऐसे हैं जिन की चर्चा हम इस से पहले आप से कर चुके हैं। और कुछ की चर्चा आप से नहीं की है, और अल्लाह ने मूसा से वास्तव में बात की।

---

1 वह्यी का अर्थः संकेत करना, दिल में कोई बात डाल देना, गुप्त रूप से कोई बात कहना तथा संदेश भेजना है। हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रश्न कियाः अल्लाह के रसूल आप पर वह्यी कैसे आती है? आप ने कहाः कभी निरन्तर घंटी की ध्वनि जैसे आती है जो मेरे लिये बहुत भारी होती है। और यह दशा दूर होने पर मुझे सब बात याद रहती है। और कभी फ़रिश्ता मनुष्य के रूप में आकर मुझ से बात करता है तो मैं उसे याद कर लेता हूँ। (सहीह बुख़ारी - 2, मुस्लिम- 2333)

165. यह सभी रसूल शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन रसूलों के (आगमन के) पश्चात् लोगों के लिये अल्लाह पर कोई तर्क न रह[1] जाये। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

166. (हे नबी!) (आप को यहूदी आदि नबी न मानें) परन्तु अल्लाह उस (क़ुर्आन) के द्वारा जिसे आप पर उतारा है, साक्ष्य (गवाही) देता है कि (आप नबी हैं)। उस ने इसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है, तथा फ़रिश्ते साक्ष्य देते हैं, और अल्लाह का साक्ष्य ही बहुत है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝

167. वास्तव में जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह[2] से रोका वह सुपथ से बहुत दूर जा पड़े।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا بَعِيْدًا ۝

168. निःसंदेह जो काफ़िर हो गये, और अत्याचार करते रह गये, तो अल्लाह ऐसा नहीं है कि उन्हें क्षमा कर दे, तथा न उन्हें कोई राह दिखायेगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۝

169. परन्तु नरक की राह, जिस में वह सदावासी होंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

170. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से रसूल सत्य

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ

1 अर्थात कोई अल्लाह के सामने यह न कह सके कि हमें मार्गदर्शन देने के लिये कोई नहीं आया।

2 अर्थात इस्लाम से रोका।

رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

ले कर[1] आ गये हैं। अतः उन पर ईमान लाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, तथा यदि कुफ़ करोगे, तो अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ انتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۘ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾

171. हे अहले किताब (ईसाइयो!) अपने धर्म में अधिकता न[2] करो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह का रसूल और उस का शब्द है, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उस की ओर से एक आत्मा[3] है, अतः अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन हैं, इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो,

---

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लाम धर्म लेकर आ गये। यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि कुर्आन ने किसी जाति अथवा देशवासी को संबोधित नहीं किया है। वह कहता है कि आप पूरे मानव विश्व के नबी हैं। तथा इस्लाम और कुर्आन पूरे मानव विश्व के लिये सत्धर्म है जो उस अल्लाह का भेजा हुआ सत्धर्म है जिस की आज्ञा के आधीन यह पूरा विश्व है। अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ।

2 अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम को रसूल से पूज्य न बनाओ, और यह न कहो कि वह अल्लाह का पुत्र है, और अल्लाह तीन हैं: पिता और पुत्र तथा पवित्रात्मा।

3 अर्थात ईसा अल्लाह का एक भक्त है, जिसे अपने शब्द (कुन्) अर्थात "हो जा" से उत्पन्न किया है। इस शब्द के साथ उस ने फ़रिश्ते जिबरील को मर्यम के पास भेजा, और उस ने उस में अल्लाह की अनुमति से यह शब्द फूँक दिया, और ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये। (इब्ने कसीर)

आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह काम बनाने के[1] लिये बहुत है।

172. मसीह कदापि अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझता, और न (अल्लाह के) समीपवर्ती फ़रिश्ते, तथा जो व्यक्ति उस की (वंदना को) अपमान समझेगा, तथा अभिमान करेगा, तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۗ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

173. फिर जो लोग ईमान लाये, तथा सत्यकर्म किये, तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल देगा, और उन्हें अपनी दया से अधिक भी देगा।[2] परन्तु जिन्हों ने (वंदना को) अपमान समझा, और अभिमान किया, तो उन्हें दुखदायी यातना देगा। तथा अल्लाह के सिवा वह कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾

174. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण[3] आ गया है। और हम ने तुम्हारी ओर खुली वह़्यी [4] उतार दी है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾

175. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये, तथा इस (क़ुर्आन को) दृढ़ता से

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ

---

1 अर्थात उसे क्या आवश्यक्ता है कि किसी को संसार में अपना पुत्र बना कर भेजे।

2 यहाँ (अधिक) से अभिप्रायः स्वर्ग में अल्लाह का दर्शन है। (सहीह मुस्लिमः 181 त्रिमिज़ीः 2552)

3 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

4 अर्थात क़ुर्आन शरीफ़। (इब्ने जरीर)

فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾

पकड़ लिया वह उन्हीं को अपनी दया तथा अनुग्रह से (स्वर्ग) में प्रवेश देगा। और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखा देगा।

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

176. (हे नबी!) वह आप से कलाला के विषय में आदेश चाहते हैं। तो आप कह दें कि वह कलाला के विषय में तुम्हें आदेश दे रहा है कि यदि कोई एसा पुरुष मर जाये जिस के संतान न हो, (और न पिता और दादा) और उस के एक बहन हो, तो उस के लिये उस के छोड़े हुये धन का आधा है। और वह (पुरुष) उस के पूरे (धन का) वारिस होगा यदि उस (बहन) के कोई संतान न हो, (और न पिता और दादा हो)। और यदि उस की दो बहनें हों (अथवा अधिक) तो उन्हें छोड़े हुये धन का दो तिहाई मिलेगा। और यदि भाई बहन दोनों हों तो नर (भाई) को दो नारियों (बहनों) के बराबर[1] भाग मिलेगा। अल्लाह तुम्हारे लिये (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि तुम कुपथ न हो जाओ, तथा अल्लाह सब कुछ जानता है।

---

1 कलाला की मीरास का नियम आयत नं0 12 में आ चुका। जो उस के तीन प्रकार में से एक के लिये था। अब यहाँ शेष दो प्रकारों का आदेश बताया जा रहा है। अर्थात यदि कलाला के सगे भाई बहन हों अथवा अल्लाती (जो एक पिता तथा कई माता से हों) तो उन के लिये यह आदेश है।

सूरह माइदा - 5

सूरह माइदा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 120 आयतें हैं

- इस सूरह में शरीअत (धर्म विधान) के पूरे होने की घोषणा के साथ इस के आदेशों तथा नियमों के पालन और धार्मिक नियमों को लागू करने पर बल दिया गया है। यह चूंकि धार्मिक विधान के पूरे होने का समय था इस लिये व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन से संबंधित धार्मिक आदेशों को बताने के साथ मुसलमानों को अल्लाह की प्रतिज्ञा पर अस्थित रहने पर बल दिया गया है। और इस संदर्भ में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि वह यहूदियों तथा ईसाईयों की नीति न अपनायें जिन्हों ने वचन भंग कर दिया और धर्म विधान को नाश कर दिया और उस की सीमा से निकल भागे और धर्म में नई-नई बातें पैदा कर लीं। चूंकि कुर्आन की शैली मार्ग दर्शन तथा प्रशिक्षण की है इस लिये इन सभी बातों को मिला जुला कर वर्णित किया गया है ताकि मनों में धार्मिक नियमों के पालन की भावना पैदा हो जाये। इस में यहूदियों तथा ईसाईयों को अन्तिम सीमा तक झंझोड़ा गया है और मुसलमानों का मार्ग उजागर किया गया है।
- इस में प्रतिबंधों तथा अल्लाह से किये वचन के पालन और न्याय की नीति अपनाने पर बल दिया गया है।
- इस में धर्म के वह आदेश बताये गये हैं जो वैध तथा अवैध से संबंधित हैं।
- इस में प्रलय के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गवाही देने की बात कही गई है। और ईसा (अलैहिस्सलाम) का उदाहरण दिया गया है।
- इस में यहूदियों तथा ईसाईयों आदि को अरबी नबी पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۗ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ①

1. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! प्रतिबंधों का पूर्ण रूप[1] से पालन करो, तुम्हारे लिये सब पशु हलाल (वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का आदेश तुम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये इस के कि तुम एहराम[2] की स्थिति में अपने लिये शिकार को हलाल (वैध) न कर लो, बैशक अल्लाह जो आदेश चाहता है, देता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۗ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ۗ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ②

2. हे ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों[3] (चिन्हों) का अनादर न करो, और न सम्मानित मासों[4] का, और न (हज्ज की) कुर्बानी का, न उन में से जिन के गले में पट्टे पड़े हों, और न उन का जो अपने पालनहार की अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर (काबा) की ओर जा रहे हों, और जब एहराम खोल दो, तो शिकार कर सकते हो, तथा तुम्हें किसी गिरोह की शत्रुता इस बात पर न उभार दे कि अत्याचार करने लगो, क्यों कि उन्हों ने मस्जिदे-हराम से तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता

---

1 यह प्रतिबंध धार्मिक आदेशों से संबंधित हों अथवा आपस के हों।

2 अर्थात जब हज्ज अथवा उमरे का एहराम बाँधे रहो।

3 अल्लाह की बंदना के लिये निर्धारित चिन्हों का।

4 अर्थात जुलक़ादा, जुलहिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के मासों में युद्ध न करो।

करो, तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَآ أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾

3. तुम पर मुर्दार[1] हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सूअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिर कर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इन में[2] से जिसे तुम वध (ज़िब्ह) कर लो, और जिसे थान पर बध किया गया हो, और यह कि पांसे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदेश उल्लंघन के कार्य हैं। आज काफ़िर तुम्हारे धर्म से निराश[3] हो गये हैं। अतः उन से न डरो, मुझी से डरो। आज[4] मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा

---

1 मुर्दार से अभिप्राय वह पशु है, जिसे धर्म के नियमानुसार वध (ज़िब्ह) न किया गया हो

2 अर्थात जीवित मिल जाये और उसे नियमानुसार बध (ज़िब्ह) कर दो।

3 अर्थात इस से कि तुम फिर से मूर्तियों के पुजारी हो जाओगे।

4 सूरह बक़रह आयत नं० 28 में कहा गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह प्रार्थना की थी कि "इन में से एक आज्ञाकारी समुदाय बना दे"। फिर आयत 150 में अल्लाह ने कहा कि "अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे"। और यहाँ कहा कि आज अपना पुरस्कार पूरा कर दिया। यह आयत हज्जतुल वदाअ में अरफ़ा के दिन अरफ़ात में उतरी। (सहीह बुख़ारी-4606) जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंतिम हज्ज था, जिस के लगभग तीन महीने बाद आप संसार से चले गये।

कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

4. वे आप से प्रश्न करते हैं कि उन के लिये क्या हलाल (वैध) किया गया? आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उस में से कुछ सिखा कर सधाया हो। तो जो, (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम[1] लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

5. आज सब स्वच्छ खाद्य तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतवंती स्त्रियाँ, तथा उन में से सतवंती स्त्रियाँ जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन का महर् (विवाह

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ

1 अर्थात सधाये हुये कुत्ते और बाज़-शिकरे आदि का शिकार, उस के शिकार के उचित होने के लिये निम्नलिखित दो बातें आवश्यक हैः
1. उसे बिस्मिल्लाह कह कर छोड़ा गया हो। इसी प्रकार शिकार जीवित हो तो बिस्मिल्लाह कर के वध किया जाये।
2.उस ने शिकार में से कुछ खाया न हो। (बुख़ारीः 5478, मु॰1930)

بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ⑤

उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं, और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा, उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَٰكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑥

6. हे ईमान वालो! जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह[1] कर लो, तथा अपने पावों टख़्नों तक (धो लो) और यदि जनाबत[2] की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जाओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मुम कर लो, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह[3] कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي

7. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार

1 मसह का अर्थ है, दोनों हाथ भिगो कर सिर पर फेरना।

2 जनाबत से अभिप्राय वह मलिनता है जो स्वप्न दोष तथा स्त्री संभोग से होती है। यही आदेश मासिक धर्म तथा प्रसव का भी है।

3 हदीस में है कि एक यात्रा में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का हार खो गया, जिस के लिये बैदा के स्थान पर रुकना पड़ा। भोर की नमाज़ के वुज़ू के लिये पानी नहीं मिल सका और यह आयत उतरी। (देखियेः सहीह बुख़ारी- 4607) मसह का अर्थ हाथ फेरना है। तयम्मुम के लिये देखिये सूरह निसा, आयत 43)।

وَاثَقَكُم بِهِۦٓ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑦

और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहाः हम ने सुन लिया और आज्ञाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا كُونُوا قَوَّٰمِينَ لِلَّهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑧

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थातः सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप[1] है। निःसंदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से भली भाँति सूचित है।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ ۙ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ⑨

9. जो लोग ईमान लाये, तथा सत्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَآ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ الْجَحِيمِ ⑩

10. तथा जो काफ़िर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी हैं।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَن يَبْسُطُوٓا إِلَيْكُمْ

11. हे ईमान वालो! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना[2] चाहा, तो अल्लाह ने

---

1 हदीस में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः जो न्याय करते हैं वह अल्लाह के पास नूर (प्रकाश) के मंच पर उस के दायें ओर रहेंगे,- और उस के दोनों हाथ दायें है- जो अपने आदेश तथा अपने परिजनों और जो उन के अधिकार में हो, में न्याय करते हैं। (सहीह मुस्लिम - 1827)

2 अर्थात तुम पर आक्रमण करने का निश्चय किया तो अल्लाह ने उन के आक्रमण से तुम्हारी रक्षा की। इस आयत से सम्बन्धित बुख़ारी में सहीह हदीस आती है कि

أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

उन के हाथों को तुम से रोक दिया, तथा अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर निर्भर करना चाहिये।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنتُم بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّأُكَفِّرَنَّ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ فَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٢﴾

12. तथा अल्लाह ने बनी इस्राईल से (भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे, तथा अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना करते, और ज़कात देते रहे, तथा मेरे रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते, और उन को समर्थन देते रहे, तथा अल्लाह को उत्तम ऋण देते रहे, तो मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। और तुम में से जो इस के पश्चात् भी कुफ़्र (अविश्वास) करेगा वह सुपथ[1] से विचलित हो गया।

فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ

13. तो उन के अपना वचन भंग करने के कारण, हम ने उन को धिक्कार दिया, और उन के दिलों को कड़ा कर दिया, वह अल्लाह की बातों को उन

एक युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकान्त में एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे कि एक व्यक्ति आया और आप की तलवार खींच कर कहा तुम को अब मुझ से कौन बचायेगा? आप ने कहाः अल्लाह। यह सुनते ही तलवार उस के हाथ से गिर गई। और आप ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुख़ारी- 4139)

1 अल्लाह को ऋण देने का अर्थ उस के लिये दान करना है। इस आयत में ईमान वालों को सावधान किया गया है कि तुम अहले किताबः यहूद और नसारा जैसे न हो जाना जो अल्लाह के वचन को भंग कर के उस की धिक्कार के अधिकारी बन गये। (इब्ने कसीर)

وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

के वास्तविक स्थानों से फेर देते[1] हैं, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे, परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अतः आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें, निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰۤى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. तथा जिन्हों ने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं, हम ने उन से (भी) दृढ़ वचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, तो प्रलय के दिन तक के लिये हम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे हैं, उन्हें[2] बता देगा।

---

1 सही हदीस में आया है कि कुछ यहूदी, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक नर और नारी को लाये जिन्हों ने व्यभिचार किया था, आप ने कहाः तुम तौरात में क्या पाते हो? उन्हों ने कहाः उन का अपमान करें और कोड़े मारें। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहाः तुम झुठे हो। बल्कि उस में (रज्म) करने का आदेश है। तौरात लाओ। वह तौरात लाये तो एक ने रज्म की आयत पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहाः हाथ उठाओ। उस ने हाथ उठाया तो उस में रज्म की आयत थी। (सहीह बुख़ारी - 3559, सहीह मुस्लिम - 1699)

2 आयत का अर्थ यह है कि जब ईसाइयों ने वचन भंग कर दिया तो उन में कई परस्पर विरोधी समप्रदाय हो गये, जैसे याकूबिय्यः, नसतूरियः आरयूसियः और सभी एक दूसरे के शत्रु हो गये। तथा इस समय आर्थिक और राजनितिक सम्प्र दायों में विभाजित हो कर आपस में रक्तपात कर रहें हैं। इस में भी मुसलमानों को सावधान किया गया है कि कुर्आन के अर्थों में परिवर्तन कर के ईसाइयों के समान सम्प्रदायों में विभाजित न होना।

15. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं[1], जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहें हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुर्आन) आ गई है।

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ كَثِيرٗا مِّمَّا كُنتُمۡ تُخۡفُونَ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَيَعۡفُواْ عَن كَثِيرٖۚ قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ ١٥

16. जिस के द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है, और उन्हें सुपथ दिखाता है।

يَهۡدِي بِهِ ٱللَّهُ مَنِ ٱتَّبَعَ رِضۡوَٰنَهُۥ سُبُلَ ٱلسَّلَٰمِ وَيُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ بِإِذۡنِهِۦ وَيَهۡدِيهِمۡ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ ١٦

17. निश्चय वह काफ़िर[2] हो गये, जिन्हों ने कहा कि मर्यम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि अल्लाह मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा जो भी धरती में है, सब का विनाश कर देना चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है, सब अल्लाह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

لَّقَدۡ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓاْ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلۡمَسِيحُ ٱبۡنُ مَرۡيَمَۚ قُلۡ فَمَن يَمۡلِكُ مِنَ ٱللَّهِ شَيۡـًٔا إِنۡ أَرَادَ أَن يُهۡلِكَ ٱلۡمَسِيحَ ٱبۡنَ مَرۡيَمَ وَأُمَّهُۥ وَمَن فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗاۗ وَلِلَّهِ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَاۚ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ١٧

18. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें

وَقَالَتِ ٱلۡيَهُودُ وَٱلنَّصَٰرَىٰ نَحۡنُ أَبۡنَٰٓؤُاْ ٱللَّهِ وَأَحِبَّٰٓؤُهُۥۚ قُلۡ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمۖ بَلۡ أَنتُم

1 अर्थात मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम। तथा प्रकाश से अभिप्राय कुर्आन पाक है।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह होने की मिथ्या आस्था का खण्डन किया जा रहा है।

بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ⑱

तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशों और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य)[1] है, और उसी की ओर सब को जाना है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۖ فَقَدْ جَاءَكُم بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑲

19. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये[2] हैं, वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنبِيَاءَ وَجَعَلَكُم مُّلُوكًا وَآتَاكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ⑳

20. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने तुम में नबी और शासक बनाये, तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार वासियों में किसी को नहीं दिया।

1 इस आयत में ईसाइयों तथा यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया जा रहा है कि वह अल्लाह के प्रियवर हैं, इस लिये जो भी करें, उन के लिये मुक्ति ही मुक्ति है।

2 अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, ईसा अलैहिस्सलाम के छः सौ वर्ष पश्चात् 610- ई॰ में नबी हुये। आप के और ईसा अलैहिस्सलाम के बीच कोई नबी नहीं आया।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِينَ ﴿٢١﴾

21. हे मेरी जाति! उस पवित्र धरती (बैतुल मक़्दिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरो, अन्यथा असफल हो जाओगे।

قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُونَ ﴿٢٢﴾

22. उन्हों ने कहाः हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें,तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غٰلِبُونَ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

23. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अल्लाह से) डरते थे, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया, कहा किः उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाओगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगे। तथा अल्लाह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।

قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقٰتِلَا إِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُونَ ﴿٢٤﴾

24. वह बोलेः हे मूसा! हम उस में कदापि प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अतः तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यहीं बैठे रहेंगे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾

25. (यह दशा देख कर) मूसा ने कहाः हे मेरे पालनहार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे तथा अवैज्ञाकारी जाति के बीच निर्णय कर दे।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً

26. अल्लाह ने कहाः वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हराम (वर्जित)

يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

कर दी गई। वह धरती में फिरते रहेंगे, अतः तुम अवैज्ञाकारी जाति पर तरस न खाओ।[1]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

27. तथा उन को आदम के दो पुत्रो का सहीह समाचार[2] सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहाः मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूँगा। उस (प्रथम)ने कहाः अल्लाह आज्ञाकारियों ही से स्वीकार करता है।

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۖ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

28. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओग[3], तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अल्लाह से डरता हूँ।

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

29. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अत्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।

---

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल को ले कर मिस्र से निकले, तो अल्लाह ने उन्हें बैतुल मक़्दिस में प्रवेश कर जाने का आदेश दिया, जिस पर अमालिक़ा जाति का अधिकार था। और वही उस के शासक थे,परन्तु बनी इस्राईल ने जो कायर हो गये थे, अमालिक़ा से युद्ध करने का साहस नहीं किया। और इस आदेश का विरोध किया, जिस के परिणाम स्वरूप उसी क्षेत्र में 40 वर्ष तक फिरते रहे। और जब 40 वर्ष बीत गये, और एक नया वंश जो साहसी था पैदा हो गया तो उस ने उस धरती पर अधिकार कर लिया। (इब्ने कसीर)

2 भाष्यकारों ने इन दोनों के नाम क़ाबील और हाबील बताये हैं।

3 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः जो भी प्राणी अत्याचार से मारा जाये तो आदम के प्रथम पुत्र पर उन के खून का भाग होता है क्यों कि उसी ने प्रथम हत्या की रीति बनाई है। (सहीह बुख़ारीः 6867, मुस्लिमः 1677)

30. अंततः उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और विनाशों में हो गया।

فَطَوَّعَتْ لَهُۥ نَفْسُهُۥ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُۥ فَأَصْبَحَ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾

31. फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरेद रहा था, ताकि उसे दिखाये कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये, उस ने कहाः मुझ पर खेद है! क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ, फिर बड़ा लज्जित हुआ।

فَبَعَثَ ٱللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِى ٱلْأَرْضِ لِيُرِيَهُۥ كَيْفَ يُوَٰرِى سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ قَالَ يَٰوَيْلَتَىٰٓ أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا ٱلْغُرَابِ فَأُوَٰرِىَ سَوْءَةَ أَخِى ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ ٱلنَّٰدِمِينَ ﴿٣١﴾

32. इसी कारण हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया[1] कि जिस ने भी किसी प्राणी को किसी के खून का बदला लेने, या धरती में विद्रोह फैलाने के दंड के अतिरिक्त किसी अन्य कारण से मार डाला तो समझो उस ने पुरे मनुष्यों की हत्या[2] कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ أَنَّهُۥ مَن قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِى ٱلْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ ٱلنَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَآ أَحْيَا ٱلنَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِٱلْبَيِّنَٰتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِى ٱلْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

33. जो लोग[3] अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध करते हों, तथा धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या

إِنَّمَا جَزَٰٓؤُا۟ ٱلَّذِينَ يُحَارِبُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَيَسْعَوْنَ فِى ٱلْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوٓا۟ أَوْ يُصَلَّبُوٓا۟ أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ

---

1 अर्थात नियम बना दिया, इस्लाम में भी यही नियम और आदेश है।

2 क्यों कि सभी प्राण, प्राण होने में बराबर हैं।

3 इस आयत में देश द्रोहियों तथा तस्करों को दण्ड देने का नियम तथा आदेश बताया जा रहा है। तथा अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों के उल्लंघन को उन के विरुद्ध युद्ध कहा गया है। (अधिक विवरण के लिये देखियेः सहीह बुख़ारी, हदीस- 4610)

خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

की जाये, तथा उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

34. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने नियंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

35. हे ईमान वालो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला[1] खोजो, तथा उस की राह में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾

36. जो लोग काफ़िर हैं, यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें और उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्थ दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा, और उन्हें दुखदायी यातना होगी।

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم

37. वह चाहेंगे कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं

---

1 (वसीला) का अर्थ हैः अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और उस की अवैज्ञा से बचने तथा ऐसे कर्मों के करने का जिन से वह प्रसन्न हो। वसीला हदीस में स्वर्ग के उस सर्वोच्च स्थान को भी कहा गया है जो स्वर्ग में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि ,व सल्लम) को मिलेगा जिस का नाम ((मक़ामे महमूद)) है। इसी लिये आप ने कहाः जो अज़ान के पश्चात् मेरे लिये वसीला की दुआ करेगा वह मेरी सिफ़ारिश के योग्य होगा। (बुख़ारी- 4719) पीरों और फ़क़ीरों आदि की समाधियों को वसीला समझना निर्मूल और शिर्क है।

يَخۡرِجِيۡنَ مِنۡهَا ۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ۝

सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقۡطَعُوۡۤا اَيۡدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝

38. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतूत के बदले, जो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है[1] और अल्लाह प्रभुावशाली गुणी है।

فَمَنۡ تَابَ مِنۡۢ بَعۡدِ ظُلۡمِهٖ وَاَصۡلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوۡبُ عَلَيۡهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝

39. फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात् तौबः (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अल्लाह उस की तौबः स्वीकार कर लेगा[2], निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

---

1 यहाँ पर चोरी के विषय में इस्लाम का धर्म विधान वर्णित किया जा रहा है कि यदि चौथाई दीनार अथवा उस के मूल्य के सामान की चोरी की जाये, तो चोर का सीधा हाथ कलाई से काट दो। इस के लिये स्थान तथा समय के और भी प्रतिबंध हैं। शिक्षाप्रद दण्ड होने का अर्थ यह है कि दूसरे इस से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराध से स्वच्छ और पवित्र हो जाये। तथा यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस घोर दण्ड के कारण, इस्लाम के चौदह सौ वर्षों में जिन्हें यह दण्ड दिया गया है, वह बहुत कम हैं। क्योंकि यह सज़ा ही ऐसी है कि जहाँ भी इस को लागू किया जायेगा वहाँ चोर और डाकू बहुत कुछ सोच समझ कर ही आगे क़दम बढ़ायेंगे। जिस के फलस्वरूप पूरा समाज अम्न और चेन का गहवारा बन जायेगा। इस के विपरीत संसार के आधुनिक विधानों ने अपराधियों को सुधारने तथा उन्हें सभ्य बनाने का जो नियम बनाया है, उस ने अपराधियों में अपराध का साहस बढ़ा दिया है। अतः यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम का यह दण्ड चोरी जैसे अपराध को रोकने में अब तक सब से अधिक सफल सिद्ध हुआ है। और यह दण्ड मानवता के मान और उस के अधिकार के विपरीत नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति ने अपना माल अपने खून पसीना, परिश्रम तथा अपने हाथों की शक्ति से कमाया है तो यदि कोई चोर आ कर उस को उचकना चाहे तो उस की सज़ा यही होनी चाहिये कि उस का वह हाथ ही काट दिया जाये जिस से वह अन्य का माल हड़प करना चाह रहा है।

2 अर्थात उसे परलोक में दण्ड नहीं देगा, परन्तु न्यायालय चोरी सिद्ध होने पर उसे चोरी का दण्ड देगा। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٠﴾

40. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّاعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِن بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾

41. हे नबी! वह आप को उदासीन न करें, जो कुफ़्र में तीव्रगामी हैं, उन में से जिन्हों ने कहा कि हम ईमान लाये, जब कि उन के दिल ईमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी हैं, जिन की दशा यह है कि मिथ्या बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चित स्थानों के पश्चात् वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं। वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया है) तो मान लो, और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो। (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लाह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये परलोक में घोर[1] यातना है।

1 मदीना के यहूदी विद्वान, मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजते कि आप की बातें सुनें। और उन को सूचित करें। तथा अपने विवाद आपके पास ले जायें। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई निर्णय करें तो हमारे आदेशानुसार हो तो स्वीकार करें अन्यथा स्वीकार न करें। जब कि तौरात की आयतों में इन के आदेश थे, फिर भी वे उन में परिवर्तन कर के उन का अर्थ कुछ का कुछ बना देते थे। (देखिये व्याख्या आयत- 13)

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٤٢

42. वह मिथ्या बातें सुनने वाले अवैध भक्षी हैं। अतः यदि वह आप के पास आयें, तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्संदेह अल्लाह न्यायकारियों से प्रेम करता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٣

43. और वह आप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरात (पुस्तक) मौजूद है, जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुँह फेर रहे हैं? वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही[1] नहीं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝٤٤

44. निःसंदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नबी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे,[2] उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी और विद्वान लोग। क्योंकि वह अल्लाह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अतः तुम (भी) लोगों से न डरो, मुझी से डरो, और मेरी आयतों के बदले तनिक मूल्य न ख़रीदो, और जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक

---

1 क्यों कि वह न तो आप को नबी मानते, और न आप का निर्णय मानते, तथा न तौरात का आदेश मानते हैं।

2 इस्लाम में भी यही नियम है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाँत तोड़ने पर यही निर्णय दिया था। (सहीह बुख़ारीः 4611)

के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही काफ़िर हैं।

45. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आघातों में बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे, तो वह उस के लिये (उस के पापों का) प्रायश्चित हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही अत्याचारी हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ٤٥

46. फिर हम ने उन (नबियों) के पश्चात् मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इंजील प्रदान की, जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِمْ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ٤٦

47. और इंजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी हैं।

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ٤٧

48. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुर्आन)

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ

يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۗ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ﴿٤٨﴾

उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक[1] है, अतः आप लोगों का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख हो कर न चलें, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया[2] था, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो[3], अल्लाह ही की ओर तुम सब को लौट कर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

1 संरक्षक होने का अर्थ यह है कि कुर्आन अपने पूर्व की धर्म पुस्तकों का केवल पुष्टिकर ही नहीं, कसोटि (परख) भी है। अतः आदि पुस्तकों में जो भी बात कुर्आन के विरुद्ध होगी वह सत्य नहीं परिवर्तित होगी, सत्य वही होगी जो अल्लाह की अन्तिम किताब कुर्आन पाक के अनुकूल हो।

2 यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब तौरात तथा इंजील और कुर्आन सब एक ही सत्य लाये हैं, तो फिर इन के धर्म विधानों तथा कार्य प्रणाली में अन्तर क्यों है? कुर्आन उस का उत्तर देता है कि एक चीज़ मूल धर्म है, अर्थात एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म का नियम, और दूसरी चीज़ धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली है, जिस के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाये, तो मूल धर्म तो एक ही है, परन्तु समय और स्थितियों के अनुसार कार्य प्रणाली में अन्तर होता रहा है, क्यों कि प्रत्येक युग की स्थितियाँ एक समान नहीं थीं, और यह मूल धर्म का अन्तर नहीं, कार्य प्रणाली का अन्तर हुआ। अतः अब समय तथा स्थितियाँ बदल जाने के पश्चात् कुर्आन जो धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली प्रस्तुत कर रहा है वही सत्धर्म है।

3 अर्थात कुर्आन के आदेशों का पालन करने में।

وَأَنِ احْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَن يَفْتِنُوكَ عَن بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُصِيبَهُم بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾

49. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की मन मानी पर न चलें तथा उन से सावधान रहें कि आप को जो अल्लाह ने आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अल्लाह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दे। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾

50. तो क्या वह जाहिलिय्यत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

51. हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ, वह एक दूसरे के मित्र हैं, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ﴿٥٢﴾

52. फिर (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कुचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोई बात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्हों ने अपने मनों में छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ

53. तथा (उस समय) ईमान वाले कहेंगे।

جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ﴿٥٣﴾

क्या यही वह हैं, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथें ले कर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ हैं? इन के कर्म अकारथ गये और अंततः वह असफल हो गये।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾

54. हे ईमान वालो! तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उस से प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफ़िरों के लिये कड़े[1] होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है, जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अति ज्ञानी है।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

55. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह हैं, जो ईमान लाये, जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं, और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।

وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾

56. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा,तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا

57. हे ईमान वालो! उन को जिन्हों ने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल

1 कड़े होने का अर्थ यह है कि वह युद्ध तथा अपने धर्म की रक्षा के समय उन के दबाव में नहीं आयेंगे, न जिहाद की निन्दा उन्हें अपने धर्म की रक्षा से रोक सकेगी।

دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफ़िरों को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا
وَّلَعِبًا ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करते तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا
بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ
وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है, जिस का तुम बदला लेना चाहते हो, कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लाये हैं, और इस लिये कि तुम में अधिक्तर उल्लंघनकारी हैं?

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ
الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۚ اُولٰٓئِكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾

60. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ, जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पास इस से भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागूत (असुर- धर्म विरोधी शक्तियों) को पूजने लगे। इन्हीं का स्थान सब से बुरा है, तथा सर्वाधि कुपथ हैं।

وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ

61. जब वह[1] तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, जब

1 इस में द्विविधावादियों का दूराचार बताया गया हैं।

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

कि वह कुफ़्र लिये हुये आये और उसी के साथ वापिस हुये, तथा अल्लाह उसे भली भांति जानता है, जिस को वह छुपा रहे हैं।

وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾

62. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे कि पाप तथा अत्याचार और अपने अवैध खाने में दौड़ रहे हैं, वह बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَن قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

63. उन को उन के धर्माचारी तथा विद्वान पाप की बात करने तथा अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह बहुत बुरी रीति बना रहे हैं?

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾

64. तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बँधे[1] हुये हैं, उन्हीं के हाथ बँधे हुये हैं। और वह अपने इस कथन के कारण धिक्कार दिये गये हैं, बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हुये हैं, वह जैसे चाहे व्यय (ख़र्च) करता है, और इन में से अधिक्तर को जो (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से आप पर उतारा गया है, उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय के दिन तक के लिये शत्रुता तथा बैर डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की अग्नि सुलगाते हैं, तो अल्लाह उसे बुझा[2] देता है। वह धरती में उपद्रव

1 अरबी मुहावरे में हाथ बंधे का अर्थ है कंजूस होना, और दान-दक्षिणा से हाथ रोकना। (देखियेः सूरह आले इमरान, आयत- 181)

2 अर्थात उन के षड्यंत्र को सफल नहीं होने देता बल्कि उस का कुफल उन्हीं को भोगना पड़ता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में विभिन्न दशाओं में हुआ।

का प्रयास करते हैं, और अल्लाह विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾

65. और यदि अहले किताब ईमान लाते, तथा अल्लाह से डरते, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देते, और उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۚ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۗ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. तथा यदि वह स्थापित[1] रखते तौरात और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से, तथा पैरों के नीचे (धरती) से[2] जीविका मिलती, उन में एक संतुलित समुदाय भी है। और उन में से बहुत से कुकर्म कर रहे हैं।

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. हे रसूल![3] जो कुछ आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उसे (सब को) पहुँचा दें, और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप ने उस का उपदेश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह (विरोधियों से) आप की रक्षा करेगा[4], निश्चय अल्लाह,

---

1 अर्थात उन के आदेशों का पालन करते और उसे अपना जीवन विधान बनाते।

2 अर्थात आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज में अधिक्ता होती।

3 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

4 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने के पश्चात् आप पर विरोधियों ने कई बार प्राण घातक आक्रमण का प्रयास किया। जब आप ने मक्का में सफ़ा पर्वत से एकेश्वरवाद का उपदेश दिया तो आप के चचा अबू लह्ब ने आप पर पत्थर चलाये। फिर उसी युग में आप काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू जह्ल ने आप की गरदन रौंदने का प्रयास किया, किन्तु आप के रक्षक फ़रिश्तों को देख कर भागा। और जब कुरैश ने यह योजना बनाई कि

काफ़िरों को मार्गदर्शन नहीं देता।

68. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल किताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुर्आन) की स्थापना[1] न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिक्तर को जो (कुर्आन) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَىْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٦٨﴾

आप को बध कर दिया जाये और प्रत्येक क़बीले का एक युवक आप के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा रहे और आप निकलें तो सब एक साथ प्रहार कर दें, तब भी आप उन के बीच से निकल गये। और किसी ने देखा भी नहीं। फिर आप ने अपने साथी अबू बक्र के साथ हिज्रत के समय सौर पर्वत की गुफ़ा में शरण ली। और काफ़िर गुफा के मुंह तक आप की खोज में आ पहुँचे। उन्हें आप के साथी ने देखा, किन्तु वे आप को नहीं देख सके। और जब वहाँ से मदीना चले तो सुराक़ा नामी एक व्यक्ति ने कुरैश के पुरस्कार के लोभ में आ कर आप का पीछा किया। किन्तु उस के घोड़े के अगले पैर भूमी में धंस गये। उस ने आप को गुहारा, आप ने दुआ कर दी, और उस का घोड़ा निकल गया। उस ने ऐसा प्रयास तीन बार किया फिर भी असफल रहा। आप ने उस को क्षमा कर दिया। और यह देख कर वह मुसलमान हो गया। आप ने फरमाया कि एक दिन तुम अपने हाथ में ईरान के राजा के कंगन पहनोगे। और उमर बिन ख़त्ताब के युग में यह बात सच साबित हुई। मदीने में भी यहूदियों के क़बीले बनू नज़ीर ने छत के ऊपर से आप पर भारी पत्थर गिराने का प्रयास किया जिस से अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। ख़ैबर की एक यहूदी स्त्री ने आप को विष मिला के बकरी का माँस खिलाया। परन्तु आप पर उस का कोई बड़ा प्रभाव नहीं हुआ। जब कि आप का एक साथी उसे खा कर मर गया। एक युध्द यात्रा में आप अकेले एक वृक्ष के नीचे सो गये, एक व्यक्ति आया, और आप की तलवार ले कर कहाः मुझ से आप को कौन बचायेगा? आप ने कहाः अल्लाह। यह सुन कर वह काँपने लगा, और उस के हाथ से तलवार गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। इन सब घटनाओं से यह सिध्द हो जाता है कि अल्लाह ने आप की रक्षा करने का जो बचन आप को दिया, उस को पूरा कर दिया।

1 अर्थात उन के आदेशों का पालन न करो।

कर देगा, अतः आप काफ़िरों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।

69. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और साबी, तथा ईसाई, जो भी अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर नहीं, और न वह उदासीन[1] होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ
وَالنَّصَارَىٰ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ
صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾

70. हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया, तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्हों ने झुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ
رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُهُمْ
فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

71. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी, इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया, फिर भी उन में से अधिक्तर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।

وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

72. निश्चय वह काफ़िर हो गये, जिन्हों

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम से पहले यहूदी, ईसाई तथा साबी जिन्हों ने अपने धर्म को पकड़ रखा है, और उस में किसी प्रकार का हेर-फेर नहीं किया, अल्लाह तथा आख़िरत पर ईमान रखा और सदाचार किये उन को कोई भय और चिन्ता नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार की आयत सूरह बकरह (62) मे भी आई है जिस के विषय में आता है कि कुछ लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया कि उन लोगों का क्या होगा जो अपने धर्म पर स्थित थे और मर गये? इसी पर यह आयत उतरी। परन्तु अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के लाये धर्म पर ईमान लाना अनिवार्य है इस के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٧٢﴾

ने कहा कि अल्लाह,[1] मर्यम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा थाः हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

73. निश्चय वह भी काफ़िर हो गये, जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है, और यदि वह जो कुछ कहते हैं, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफ़िरों को दुखदायी यातना होगी।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾

74. वह अल्लाह से तौबः तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है?

مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾

75. मर्यम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल हैं, उस से पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं, उस की माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी। परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

कर रहें हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ बहके[1] जा रहे हैं।

76. आप उन से कह दें कि क्या तुम अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वंदना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता? तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

77. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले किताब! अपने धर्म में अवैध अति न करो[2], तथा उन की अभिलाषाओं पर न चलो, जो तुम से पहले कुपथ हो[3] चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये, और संमार्ग से विचलित हो गये।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

78. बनी इस्राईल में से जो काफ़िर हो गये, वह दावूद तथा मर्यम के पुत्र ईसा की ज़ुबान पर धिक्कार दिये[4] गये, यह इस कारण कि उन्हों ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का) उल्लंघन कर रहे थे।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾

79. वह एक दूसरे को किसी बुराई से, जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी, परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

2 (अति न करो): अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम को प्रभु अथवा प्रभु का पुत्र न बनाओ।

3 इन से अभिप्राय वह हो सकते हैं, जो नबियों को स्वयं प्रभु अथवा प्रभु का अंश मानते हैं।

4 अर्थात धर्म पुस्तक ज़बूर तथा इंजील में इन के धिक्कृत होने की सूचना दी गयी हैं। (इब्ने कसीर)

مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

वह बड़ी बुराई कर रहे थे।[1]

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. आप उन में से अधिक्तर को देखेंगे कि काफ़िरों को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्हों ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हो गया तथा यातना में वही सदावासी होंगे।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَاۗءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾

81. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर, और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाते, तो उन को मित्र न बनाते[2], परन्तु उन में अधिक्तर उल्लंघनकारी हैं।

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये हैं, सब से कड़ा शत्रु यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये हैं उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी हैं, और वह अभिमान[3] नहीं करते।

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ

83. तथा जब वह (ईसाई) उस (क़ुर्आन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उन की आखें

---

1 इस आयत में उन पर धिक्कार का कारण बताया गया है।

2 भावार्थ यह है कि यदि यहूदी, मूसा अलैहिस्सलाम को अपना नबी, और तौरात को अल्लाह की किताब मानते हैं, जैसा कि उन का दावा है तो वे मुसलमानों के शत्रु और काफ़िरों को मित्र नहीं बनाते। क़ुर्आन का यह सच आज भी देखा जा सकता है।

3 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि यह आयत हब्शा के राजा नजाशी और उस के साथियों के बारे में उतरी, जो क़ुर्आन सुन कर रोने लगे, और मुसलमान हो गये। (इब्ने जरीर)

आँसू से उबल रहीं हैं, उस सत्य के कारण जिसे उन्हों ने पहचान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (सत्य) के साक्षियों में लिख[1] ले।

الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾

84. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस सत्य (कुर्आन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾

85. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (बदला) है।

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾

86. तथा जो काफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

87. हे ईमान वलो! उन स्वच्छ पवित्र चीज़ों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की हैं, हराम (अवैध)[2] न करो, और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्संदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾

---

1 जब जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हब्शा के राजा नजाशी को सूरह मर्यम की आरंभिक आयतें सुनाईं तो वह और उस के पादरी रोने लगे। (सीरत इब्ने हिशाम-1।359)

2 अर्थात किसी भी खाद्य अथवा वस्तु को वैध अथवा अवैध करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

3 यहाँ से वर्णन क्रम, फिर आदेशों तथा निषेधों की ओर फिर रहा है। अन्य धर्मों के अनुयायियों ने सन्यास को अल्लाह के सामिप्य का साधन समझ लिया

से प्रेम नहीं करता।

88. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की हैं। तथा अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ शपथों[1] पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझ कर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का[2] प्रायश्चित दस निर्धनों को भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें वस्त्र दो, अथवा एक दास मुक्त करो, और जिसे यह सब उपलब्ध न हो, तो तीन दिन रोज़ा रखना है। यह तुम्हारी शपथों का प्रायश्चित है, जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا عَقَّدتُّمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾

90. हे ईमान वालो! निस्संदेह[3] मदिरा,

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ

था, और ईसाइयों ने सन्यास की रीति बना ली थी और अपने ऊपर संसारिक उचित स्वाद तथा सुख को अवैध कर लिया था। इस लिये यहाँ सावधान किया जा रहा है कि यह कोई अच्छाई नहीं, बल्कि धर्म सीमा का उल्लंघन है।

1 व्यर्थः अर्थात बिना निश्चय के। जैसे कोई बात बात पर बोलता हैः (नहीं, अल्लाह की शपथ!) अथवाः (हाँ, अल्लाह की शपथ!) (बुख़ारी- 4613)

2 अर्थात यदि शपथ तोड़ दे, तो यह प्रायश्चित है।

3 शराब के निषेध के विषय में पहले सूरह बकरा आयत 219, और सूरह निसा आयत 43 में दो आदेश आ चुके हैं। और यह अन्तिम आदेश है, जिस में शराब

وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾

जूआ तथा देवस्थान[1] और पाँसे[2] शैतानी मलिन कर्म हैं, अतः इन से दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

إِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

91. शैतान तो यही चाहता है कि शराब (मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾

92. तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, तथा (उन की अवैज्ञा से) सावधान रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल खुला उपदेश पहुँचा देना है।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

93. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार करते रहे, उस में कोई दोष नहीं, जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया, जब वह अल्लाह से डरते रहे, तथा ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह से डरे और सदाचार करते रहे, तो अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता[3] है।

को सदैव के लिये वर्जित कर दिया गया है।

1 देव स्थानः अर्थात वह वेदियाँ जिन पर देवी देवताओं के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती हैं। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य के नाम से बलि दिया हुआ पशु अथवा प्रसाद अवैध है।

2 पाँसेः यह तीन तीर होते थे, जिन से वह कोई काम करने के समय यह निर्णय लेते थे कि उसे करें या न करें। उन में एक पर "करो", और दूसरे पर "मत करो" और तीसरे पर "शून्य" लिखा होता था। जूवे में लाट्री और रेश इत्यादि भी शामिल हैं।

3 आयत का भावार्थ यह है कि जिन्हों ने वर्जित चीज़ों का निषेधाज्ञा से पहले प्रयोग

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَيَبْلُوَنَّكُمُ ٱللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ ٱلصَّيْدِ تَنَالُهُۥٓ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ ٱللَّهُ مَن يَخَافُهُۥ بِٱلْغَيْبِ ۚ فَمَنِ ٱعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾

94. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा, ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उसी के लिये दुःखदायी यातना है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَقْتُلُواْ ٱلصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَهُۥ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ ٱلنَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِۦ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًۢا بَٰلِغَ ٱلْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّٰرَةٌ طَعَامُ مَسَٰكِينَ أَوْ عَدْلُ ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِۦ ۗ عَفَا ٱللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ ٱللَّهُ مِنْهُ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ ذُو ٱنتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

95. हे ईमान वालो! शिकार न करो[1], जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझ कर ऐसा कर जाये, तो पालतू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हद्य (उपहार स्वरूप) भेजा जाये। अथवा[2] प्रायश्चित है, जो कुछ निर्धनों का खाना है, अथवा उस के बराबर रोज़े रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखे। इस आदेश से पूर्व जो हुआ, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह

किया, फिर जब भी उन को अवैध किया गया तो उन से रुक गये, उन पर कोई दोष नहीं। सहीह हदीस में है कि जब शराब वर्जित की गयी तो कुछ लोगों ने कहा कि कुछ लोग इस स्थिति में मारे गये कि वह शराब पिये हुये थे, उसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारी-4620)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः जो भी नशा लाये वह मदिरा और अवैध है। (सहीह बुख़ारी-2003)। और इस्लाम में उस का दण्ड अस्सी कोड़े हैं। (बुख़ारी- 6779)

1 इस से अभिप्राय थल का शिकार है।

2 अर्थात यदि शिकार के पशु के समान पालतू पशु न हो, तो उस का मूल्य हरम के निर्धनों को खाने के लिये भेजा जाये अथवा उस के मूल्य से जितने निर्धनों को खिलाया जा सकता हो उतने ब्रत रखे।

प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

96. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य[1] हलाल (वैध) कर दिया गया है, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर थल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

97. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों[2] और (हज्ज) की क़ुर्बानी तथा क़ुर्बानी के पशुओं को जिन्हें पट्टे पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अल्लाह जो कुछ आकाशों और जो कुछ धरती में है सब को जानता है। तथा निस्संदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

98. तुम जान लो कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

99. अल्लाह के रसूल का दायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुँचा दे। और अल्लाह जो तुम बोलते और जो

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

---

1 अर्थात जो बिना शिकार किये हाथ आये, जैसे मरी हुई मछली। अर्थात जल का शिकार एहराम की स्थिति में तथा साधारण अवस्था में उचित है।

2 आदरणीय मासों से अभिप्रेतः ज़ुलक़ादा ज़ुलहिज्जा तथा मुहर्रम और रजब के महीने हैं।

मन में रखते हो, सब जानता है।

100. (हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिक्ता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानों! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।[1]

قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

101. हे ईमान वालो! ऐसी बहुत सी चीज़ों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें, तो तुम्हें बुरा लग जाये। तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि क़ुर्आन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेंगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील[2] है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝

102. ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले[3] किये, फिर इस के कारण वह काफ़िर हो गये।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जिसे रोक दिया है, वही मलिन और जिस की अनुमति दी है, वही पवित्र है। अतः मलिन में रुची न रखो, और किसी चीज़ की कमी और अधिक्ता को न देखो, उस के लाभ और हानि को देखो।

2 इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि कुछ लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उपहास के लिये प्रश्न किया करते थे। कोई प्रश्न करता कि मेरा पिता कौन है? किसी की ऊँटनी खो गयी हो तो आप से प्रश्न करता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी-4622)

3 अर्थात अपने रसूलों से। आयत का भावार्थ यह है कि धर्म के विषय में कुरेद न करो। जो करना है, अल्लाह ने बता दिया है, और जो नहीं बताया है,उसे क्षमा कर दिया है, अतः अपने मन से प्रश्न न करो, अन्यथा धर्म में सुविधा की जगह असुविधा पैदा होगी, और प्रतिबंध अधिक हो जायेंगे, तो फिर तुम उन का पालन न कर सकोगे।

103. अल्लाह ने बहीरा और साइबा तथा वसीला और हाम कुछ नहीं बनाया[1] है, परन्तु जो काफ़िर हो गये, वह अल्लाह पर झूठ घड़ रहे हैं, और उन में अधिकतर निर्बोध हैं।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

104. और जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है, तथा रसूल की ओर (आओ) तो कहते हैं: हम को वही बस है, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, क्या उन के पूर्वज कुछ न जानते रहे हों और न संमार्ग पर रहे हों?

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۗ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝

105. हे ईमान वालो! तुम अपनी चिन्ता करो, तुम्हें वे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे जो कुपथ हो गये, जब तुम सुपथ पर रहो। अल्लाह की ओर तुम सब को (परलोक में) फिर कर

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۗ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

1 अरब के मिश्रणवादी देवी देवता के नाम पर कुछ पशुओं को छोड़ देते थे, और उन्हें पवित्र समझते थे, यहाँ उन्हीं की चर्चा की गयी है।
बहीरा- वह ऊँटनी जिस को, उस का कान चीर कर देवताओं के लिये मुक्त कर दिया जाता था, और उस का दूध कोई नहीं दूह सकता था।
साइबा- वह पशु जिसे देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे, जिस पर न कोई बोझ लाद सकता था, न सवार हो सकता था।
वसीला- वह ऊँटनी जिस का पहला तथा दूसरा बच्चा मादा हो, ऐसी ऊँटनी को भी देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे।
हाम- नर जिस के वीर्य से दस बच्चे हो जायें, उन्हें भी देवताओं के नाम पर साँड बना कर मुक्त कर दिया जाता था।
भावार्थ यह है किः यह अनर्गल चीज़ें हैं। अल्लाह ने इन का आदेश नहीं दिया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मैं ने नरक को देखा कि उस की ज्वाला एक दूसरे को तोड़ रही है। और अमर बिन लुहय्य को देखा कि वह अपनी आँतें खींच रहा है। उसी ने सब से पहले साइबा बनाया था। (बुख़ारी- 4624)

जाना है, फिर वह तुम्हें तुम्हारे[1] कर्मों से सूचित कर देगा।

106. हे इमान वालो! यदि किसी के मरण का समय हो, तो वसिय्यत[2] के समय तुम में से दो न्यायकारियों को अथवा तुम्हारे सिवा दो दूसरों को गवाह बनाये, यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो, और तुम्हें मरण की आपदा आ पहुँचे। और उन दोनों को नमाज के बाद रोक लो, फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ लें, यदि तुम्हें उन पर संदेह हो। वह यह कहें कि हम गवाही के द्वारा कोई मूल्य नहीं खरीदते, यद्यपि वह समीपवर्ती क्यों न हों,और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं, यदि हम ऐसा करें तो पापियों में हैं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾

107. फिर यदि ज्ञान हो जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के अधिकारी हुये हैं, तो उन दोनों के स्थान पर दो दूसरे गवाह खड़े हो जायें, उन में से जिन का अधिकार पहले दोनों ने दबाया है, और वह दोनों शपथ लें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सहीह है,और हम ने कोई अत्याचार नहीं किया है। यदि किया है, तो

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِن شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾

1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि लोग कुपथ हो जायें, तो उन का कुपथ होना तुम्हारे लिये तर्क (दलील) नहीं हो सकता कि जब सभी कुपथ हो रहे हैं तो हम अकेले क्या करें? प्रत्येक व्यक्ति पर स्वयं अपना दायित्व है, दूसरों का दायित्व उस पर नहीं, अतः पूरा संसार कुपथ हो जाये तब भी तुम सत्य पर स्थित रहो।

2 वसिय्यत का अर्थ हैः उत्तरदान, मरणासन्न आदेश।

(निस्संदेह) हम अत्याचारी हैं।

ذٰلِكَ أَدْنٰىٓ أَنْ يَّأْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوْٓا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌۢ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝١٠٨

108. इस प्रकार अधिक आशा है कि वह सही गवाही देंगे, अथवा इस बात से डरेंगे कि उन की शपथों को दूसरी शपथों के पश्चात् न माना जाये, तथा अल्लाह से डरते रहो, और (उस का आदेश) सुनो, और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सीधी राह नहीं[1] दिखाता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ أُجِبْتُمْ ۗ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۗ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝١٠٩

109. जिस दिन अल्लाह सब रसूलों को एकत्र करेगा, फिर उन से कहेगा कि तुम्हें (तुम्हारी जातियों की ओर से) क्या उत्तर दिया गया? वह कहेंगे कि हमें इस का कोई ज्ञान[2] नहीं। निस्संदेह तू ही सब छुपे तथ्यों का ज्ञानी है।

إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِىْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ إِذْ أَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ ۚ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِىْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِإِذْنِىْ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِىْ ۚ

110. तथा याद करो, जब अल्लाह ने कहाः हे मर्यम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरे पुरस्कार को याद कर, जब मैं ने पवित्रात्मा (जिब्रील) द्वारा तुझे समर्थन दिया, तू गहवारे (गोद) में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था, तथा तुझे पुस्तक और प्रबोध तथा तौरात

---

1 आयत 106 से 108 तक में वसिय्यत तथा उस के साक्ष्य का नियम बताया जा रहा है कि दो विश्वस्त व्यक्तियों को साक्षी बनाया जाये, और यदि मुसलमान न मिलें तो ग़ैर मुस्लिम भी साक्षी हो सकते हैं।
साक्षियों को शपथ के साथ साक्ष्य देना चाहिये।
विवाद की दशा में दोनों पक्ष अपने अपने साक्षी लायें।
जो इन्कार करे उस पर शपथ है।

2 अर्थात हम नहीं जानते कि उन के मन में क्या था, और हमारे बाद उन का कर्म क्या रहा?

وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٠﴾

और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का रूप बनाता, और उस में फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दों को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैं ने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियाँ लाया, तो उन में से काफ़िरों ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

111. तथा याद कर, जब मैं ने तेरे हवारियों के दिलों में यह बात डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम ईमान लाये, और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

112. जब हवारियों ने कहाः हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से थाल (दस्तर ख़्वान) उतार दे। उस (ईसा) ने कहाः तुम अल्लाह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

قَالُوا نُرِيدُ أَن نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾

113. उन्हों ने कहाः हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वास हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सच्च है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।

114. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना कीः हे अल्लाह हमारे पालनहार! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिये उत्सव (का दिन) बन जाये, तथा तेरी ओर से एक चिन्ह (निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً
مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً
مِّنكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١٤﴾

115. अल्लाह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ़्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा, ऐसा दण्ड[1] कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूँगा।

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ
فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ
الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾

116. तथा जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगाः हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगाः तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैं ने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही परोक्ष (ग़ैब) का अति ज्ञानी है।

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ
اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا
يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ
فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي
نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

117. मैं ने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي

1 अधिक्तर भाष्यकारों ने लिखा है, कि वह थाल आकाश से उतरा। (इब्ने कसीर)

وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया[1], तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

118. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।

قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

119. अल्लाह कहेगाः यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

120. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का[2] है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

1 और मुझे आकाश पर उठा लिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, जब प्रलय के दिन कुछ लोग बायें से धर लिये जायेंगे तो मैं भी यही कहूँगा। (बुख़ारी- 4626)

2 आयत 116 से अब तक की आयतों का सारांश यह है कि अल्लाह ने पहले अपने वह पुरस्कार याद दिलाये जो ईसा अलैहिस्सलाम पर किये। फिर कहा कि सत्य की शिक्षावों के होते तेरे अनुयायियों ने क्यों तुझे तथा तेरी माता को पूज्य बना लिया? इस पर ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मैं इस से नर्दोष हूँ। अभिप्राय यह है कि सभी नबियों ने एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म की शिक्षा दी। परन्तु उन के अनुयायियों ने उन्हीं को पूज्य बना लिया। इसलिये इस का भार अनुयायियों और वे जिस की पूजा कर रहें हैं उन पर है। वह स्वयं इस से निर्दोष हैं।

सूरह अन्आम - 6

सूरह अन्आम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 165 आयते हैं

- अन्आम का अर्थः चौपाये होता है। इस सूरह में कुछ चौपायों के वैध तथा अवैध होने के संबंध में अरब वासियों के भ्रम का खण्डन किया गया है। और इसी लिये इस सूरह का नाम (अन्आम) रखा गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन किया गया है। और एकेश्वर का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में आख़िरत (परलोक) के प्रति आस्था का प्रचार है। तथा इस कुविचार का खण्डन है कि जो कुछ है यही संसारिक जीवन है
- इस में उन नैतिक नियमों को बताया गया है जिन पर इस्लामी समाज की स्थापना होती है और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुध्द आपत्तियों का उत्तर दिया गया है
- आकाशों तथा धरती और स्वयं मनुष्य में अल्लाह के एक होने की निशानियों पर धयान दिलाया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मुसलमानों को दिलासा दी गई है।
- इस्लाम के विरोधियों को उन की अचेतना पर सावधान किया गया है।
- अन्त में कहा गया है कि लोगों ने अलग-अलग धर्म बना लिये है जिन का सत्धर्म से कोई संबंध नहीं। और प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۗ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

1. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला

بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ①

बनाया, फिर भी जो काफ़िर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझते[1] हैं।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ②

2. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न[2] किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी, और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास[3] है, फिर भी तुम संदेह करते हो।

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ③

3. वही अल्लाह पूज्य है आकाशों तथा धरती में। वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तुम जो भी करते हो उस को जानता है।

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ④

4. और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्हों ने मुँह फेर न[4] लिये हों।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑤

5. उन्हों ने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेंगे[5] जिस का उपहास कर रहें हैं।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ

6. क्या वह नहीं जानते कि उन से पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर

---

1 अर्थात वह अंधेरों और प्रकाश में विवेक (अन्तर) नहीं करते, और रचित को रचयिता का स्थान देते हैं।

2 अर्थात तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम को।

3 दो अवधि एक जीवन और कर्म के लिये, तथा दूसरी कर्मों के फल के लिये।

4 अर्थात मिश्रणवादियों के पास।

5 अर्थात उस के तथ्य का ज्ञान हो जायेगा। यह आयत मक्का में उस समय उतरी जब मुसलमान विवश थे, परन्तु बद्र के युद्ध के बाद यह भविष्य वाणी पूरी होने लगी और अन्ततः मिश्रणवादी परास्त हो गये।

فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ⑥

दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दीं, फिर हम ने उन के पापों के कारण उन्हें नाश कर दिया,[1] और उन के पश्चात् दूसरी जातियों को पैदा कर दिया।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑦

7. (हे नबी!) यदि हम आप पर काग़ज़ में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार[2] दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छूयें, तब भी जो काफिर हैं, कह देंगे कि यह तो केवल खुला हुआ जादू है।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ⑧

8. तथा उन्हों ने कहाः[3] इस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा[4] गया? और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतार देते, तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता।[5]

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ ⑨

9. और यदि हम किसी फ़रिश्ते को नबी बनाते, तो उसे किसी पुरुष ही के में बनाते,[6] और उन को उसी संदेह में

1 अर्थात अल्लाह का यह नियम है कि पापियों को कुछ अव्सर देता है, और अन्ततः उन का विनाश कर देता है।

2 इस में इन काफ़िरों के दुराग्रह की दशा का वर्णन है।

3 जैसा कि वह माँग करते हैं। (देखियेः सूरह बनी इस्राईल, आयतः 93)

4 अर्थात अपने वास्तविक रूप में जब कि जिब्रील(अलैहिस्सलाम) मनुष्य के रूप में आया करते थे।

5 अर्थात मानने या न मानने का।

6 क्योंकि फ़रिश्ते को आँखों से उस के स्वभाविक रूप में देखना मानव के बस में नहीं है। और यदि फ़रिश्ते को रसूल बना कर मनुष्य के रूप में भेजा जाता

डाल देते जो संदेह (अब) कर रहे हैं।

10. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया, तो जिन्हों ने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने) घेर लिया।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

11. (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या[1] हुआ?

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

12. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह किस का है? कहोः अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर[2] लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र[3] करेगा जिस में कोई संदेह नहीं, जिन्हों ने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

قُل لِّمَن مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

तब भी यह कहते यह तो मनुष्य है। यह रसूल कैसे हो सकता है?

1 अर्थात मक्का से शाम तक आद, समूद तथा लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियों के अवशेष पड़े हुये हैं, वहाँ जाओ और उन के दुष्परिणामों से शिक्षा लो।

2 अर्थात पूरे विश्व की व्यवस्था उस की दया का प्रमाण है। तथा अपनी दया के कारण ही विश्व में दण्ड नहीं दे रहा है। हदीस में है कि जब अल्लाह ने उत्पत्ति कर ली तो एक लेख लिखा जो उस के पास उस के अर्श (सिंहासन) के ऊपर हैः ((निश्चय मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़ कर है।)) (सहीह बुख़ारी- **3194**, मुस्लिम-**2751**) दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के पास सौ दया हैं। उस में से एक को जिन्नों, इन्सानों तथा पशुवों और कीड़ों-मकोड़ों के लिये उतारा है। जिस से वह आपस में प्रेम तथा दया करते हैं तथा निन्नावे दया अपने पास रख ली है। जिन से प्रलय के दिन अपने बंदों (भक्तों) पर दया करेगा। (सहीह बुख़ारी-**6000**, सहीह मुस्लिम-**2752**)

3 अर्थात कर्मों का फल देने के लिये।

13. तथा उसी का[1] है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَهُۥ مَا سَكَنَ فِى ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ ۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

14. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किसी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुश्रिकों में से न बनूँ।

قُلْ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّىٓ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾

15. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन[2] की यातना से।

قُلْ إِنِّىٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّى عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

16. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।

مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُۥ ۚ وَذَٰلِكَ ٱلْفَوْزُ ٱلْمُبِينُ ﴿١٦﴾

17. यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।

وَإِن يَمْسَسْكَ ٱللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

18. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर

وَهُوَ ٱلْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْخَبِيرُ ﴿١٨﴾

---

1 अर्थात उसी के अधिकार में तथा उसी के आधीन है।

2 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ही ने इस विश्व की उत्पत्ति की है, वही अपनी दया से इस की व्यवस्था कर रहा है, और सब को जीविका प्रदान कर रहा है, तो फिर तुम्हारा स्वभाविक कर्म भी यही होना चाहिये कि उसी एक की वंदना करो। यह तो बड़े कुपथ की बात होगी कि उस से मुँह फेर कर दूसरों की पूजा अराधना करो और उन के आगे झुको।

पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُل لَّا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾

19. हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछो कि किस की गवाही सब से बढ़ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह[1] है। तथा मेरी ओर यह कुर्आन वह्यी (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ[2] तथा उसे जिस तक यह पहुँचे। क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता। आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾

20. जिन लोगों को हम ने पुस्तक[3] प्रदान की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते[4] हैं, परन्तु जिन्हों ने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾

21. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये[5], अथवा उस की आयतों को

---

1 अर्थात मेरे नबी होने का साक्षी अल्लाह तथा उस का मुझ पर उतारा हुआ कुर्आन है।

2 अर्थात अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से।

3 अर्थात तौरात तथा इंजील आदि।

4 अर्थात आप के उन गुणों द्वारा जो उन की पुस्तकों में वर्णित है।

5 अर्थात अल्लाह का साझी बनाये।

झूठलाये? निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

22. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, तो जिन्हों ने शिर्क किया है, उन से कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे?

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوٓا۟ أَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

23. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस के सिवा कि: वह कहेंगे कि अल्लाह की शपथ! हम मुश्रिक थे ही नहीं।

ثُمَّ لَمْ تَكُن فِتْنَتُهُمْ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ وَٱللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

24. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ बोल गये और उन से वह (मिथ्या पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!

ٱنظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

25. और उन (मुश्रिकों) में से कुछ आप की बात ध्यान से सुनते हैं, और (वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर पर्दे (आवरण) डाल रखे हैं कि बात न समझें[1], और उन के कान भारी कर दिये हैं, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक लक्षण देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह आप के पास आ कर झगड़ते हैं, जो काफ़िर हैं तो वह कहते हैं कि यह तो पूर्वजों की कथायें हैं।

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِن يَرَوْا۟ كُلَّ ءَايَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا۟ بِهَا ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءُوكَ يُجَٰدِلُونَكَ يَقُولُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

26. वह उसे[2] (सुनने से) दूसरों को रोकते हैं, तथा स्वयं भी दूर रहते हैं। और वह अपना ही विनाश कर रहें हैं। परन्तु समझते नहीं हैं।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِن يُهْلِكُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

---

1 न समझने तथा न सुनने का अर्थ यह है कि उस से प्रभावित नहीं होते क्यों कि कुफ़्र तथा निफ़ाक़ के कारण सत्य से प्रभावित होने की क्षमता खो जाती है।

2 अर्थात कुर्आन सुनने से।

27. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे, तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर फेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झुठलाते, और हम ईमान वालों में हो जाते।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا۟ عَلَى ٱلنَّارِ فَقَالُوا۟ يَـٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِـَٔايَـٰتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

28. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी, जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे[1], और यदि संसार में फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह हैं ही झूठे।

بَلْ بَدَا لَهُم مَّا كَانُوا۟ يُخْفُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا۟ لَعَادُوا۟ لِمَا نُهُوا۟ عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَـٰذِبُونَ ﴿٢٨﴾

29. तथा उन्हों ने कहा किः जीवन बस हमारा संसारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना[2] नहीं है।

وَقَالُوٓا۟ إِنْ هِىَ إِلَّا حَيَاتُنَا ٱلدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

30. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अल्लाह उन से कहेगाः क्या यह (जीवन) सत्य नहीं? वह कहेंगेः क्यों नहीं, हमारे पालनहार की शपथ!? इस पर अल्लाह कहेगाः तो अब अपने कुफ़् करने की यातना चखो।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا۟ عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَـٰذَا بِٱلْحَقِّ ۚ قَالُوا۟ بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

31. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्हों

قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا

1 अर्थात जिस तथ्य को वह शपथ लेकर छुपा रहे थे कि हम मिश्रणवादी नहीं थे, उस समय खुल जायेगा। अथवा आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पहचानते हुये भी यह बात जो छुपा रहे थे, वह खुल जायेगी। अथवा द्विधावादियों के दिल का वह रोग खुल जायेगा, जिसे वह संसार में छुपा रहे थे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

2 अर्थात हम मरने के पश्चात् परलोक में कर्मों का फल भोगने के लिये जीवित नहीं किये जायेंगे।

جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُورِهِمْ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगेः हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूक हुई। और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

32. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन[1] है। तथा परलोक का घर ही उत्तम[2] है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझत[3] नहीं हो?

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِينَ بِآيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾

33. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते,परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلٰى مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتّٰى أَتٰهُمْ نَصْرُنَا وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَإِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

34. और आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये। तो इसे उन्हों ने सहन किया, और उन्हें दुःख दिया गया, यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं[4] सकता, और आप के

---

1 अर्थात साम्यिक और आस्थायी है।

2 अर्थात स्थायी है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यदि कर्मों के फल के लिये कोई दूसरा जीवन न हो तो, संसारिक जीवन एक मनोरंजन और खेल से अधिक कुछ नहीं रह जायेगा। तो क्या यह संसारिक व्यवस्था इसी लिये की गयी है कि कुछ दिनों खेलो और फिर समाप्त हो जाये? यह बात तो समझ बूझ का निर्णय नहीं हो सकती। अतः एक दूसरे जीवन का होना ही समझ बूझ का निर्णय है।

4 अर्थात अल्लाह के निर्धारित नियम को, कि पहले वह परीक्षा में डालता है, फिर

पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

35. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके, तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हों।

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٥﴾

36. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दे हैं उन्हें तो अल्लाह[1] ही जीवित करेगा, फिर उसी की ओर फेरे जायेंगे।

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

37. तथा उन्हों ने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिक्तर लोग अज्ञान हैं।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

38. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ते पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक[2] में कुछ

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ

सहायता करता है।

1 अर्थात प्रलय के दिन उन की समाधियों से। आयत का भावार्थ यह है कि आप के सदुपदेश को वही स्वीकार करेंगे जिन की अन्तरात्मा जीवित हो। परन्तु जिन के दिल निर्जीव हैं तो यदि आप धरती अथवा आकाश से लाकर उन्हें कोई चमत्कार भी दिखा दें तब भी वह उन के लिये व्यर्थ होगा। यह सत्य को स्वीकार करने की योग्यता ही खो चुके हैं।

2 पुस्तक का अर्थ ((लौहे महफ़ूज़)) है जिस में सारे संसार का भाग्य लिखा हुआ है।

شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾

कमी नहीं की[1] है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये[2] जायेंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

39. तथा जिन्हों ने हमारी निशानियों को झुठला दिया, वह गूँगे, बहरे, अंधेरों में हैं। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

40. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहे, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी[3] बनाते हो।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ

42. और आप से पहले भी समुदायों की

---

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि यदि तुम निशानियों और चमत्कार की माँग करते हो. तो यह पूरे विश्व में जो जीव और पक्षी हैं, जिन के जीवन साधनों की व्यवस्था अल्लाह ने की है, और सब के भाग्य में जो लिख दिया है, वह पूरा हो रहा है। क्या तुम्हारे लिये अल्लाह के अस्तित्व और गुणों के प्रतीक नहीं हैं? यदि तुम ज्ञान तथा समझ से काम लो, तो यह विश्व की व्यवस्था ही ऐसा लक्षण और प्रमाण है कि जिस के पश्चात् किसी अन्य चमत्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।

2 अर्थ यह है सब जीवों के प्राण मरने के पश्चात् उसी के पास एकत्रित हो जाते हैं क्यों कि वही सब का उत्पत्तिकार है।

3 इस आयत का भावार्थ यह है कि किसी घोर आपदा के समय तुम्हारा अल्लाह ही को गुहारना स्वयं तुम्हारी ओर से उस के अकेले पूज्य होने का प्रमाण और स्वीकार है।

وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

और हम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला[1], ताकि वह विनय करें।

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

43. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मों को सुन्दर बना[2] दिया।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾

44. तो जब उन्हों ने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

45. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्हों ने अत्याचार किया, और सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ﴿٤٦﴾

46. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुम ने इस पर भी विचार किया कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें[3] प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी

---

1 अर्थात ताकि अल्लाह से विनय करें, और उस के सामने झुक जायें।

2 आयत का अर्थ यह है कि जब कुकर्मों के कारण दिल कड़े हो जाते हैं, तो कोई भी बात उन्हें सुधार के लिये तय्यार नहीं कर सकती।

3 अर्थात इस बात की निशानियाँ की अल्लाह ही पूज्य है, और दूसरे सभी पूज्य

वह मुँह[1] फेर रहे हैं।

47. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल कर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुश्रिकों) के सिवा किस का विनाश होगा?

قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا ٱلْقَوْمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٤٧﴾

48. और हम रसूलों को इसी लिये भेजते हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सुचना दें। तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें। तो जो ईमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदासीन होंगे।

وَمَا نُرْسِلُ ٱلْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ فَمَنْ ءَامَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾

49. और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।

وَٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا يَمَسُّهُمُ ٱلْعَذَابُ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

50. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोष नहीं है, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ, तथा न मैं यह कहता कि मैं कोई फ़रिश्ता हूँ। मैं तो केवल उसी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा[2] तथा आँख वाला बराबर हो जायेंगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?

قُل لَّآ أَقُولُ لَكُمْ عِندِى خَزَآئِنُ ٱللَّهِ وَلَآ أَعْلَمُ ٱلْغَيْبَ وَلَآ أَقُولُ لَكُمْ إِنِّى مَلَكٌ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى ٱلْأَعْمَىٰ وَٱلْبَصِيرُ ۚ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

51. और इस (वह्यी द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हों कि

وَأَنذِرْ بِهِ ٱلَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوٓا۟ إِلَىٰ

मिथ्या हैं। (इब्ने कसीर)

1 अर्थात सत्य से।

2 अन्धा से अभिप्रायः सत्य से विचलित है। इस आयत में कहा गया है कि नबी, मानव पुरुष से अधिक और कुछ नहीं होता। वह सत्य का अनुयायी तथा उसी का प्रचारक होता है।

رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّن دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफ़ारशी) न होगा, संभवतः वह आज्ञाकारी हो जायें।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِم مِّن شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

52. (हे नबी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की वंदना प्रातः संध्या करते उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिसाब का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिसाब का कोई भार उन पर[1] है, अतः यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّن بَيْنِنَا ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٣﴾

53. और इसी प्रकार[2] हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही हैं जिन पर हमारे बीच से अल्लाह ने उपकार किया[3] है? तो क्या अल्लाह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ

54. तथा (हे नबी!) जब आप के पास वह लोग आयें, जो हमारी आयतों (कुर्आन) पर ईमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम[4] पर सलाम (शान्ति)

1 अर्थात न आप उन के कर्मों के उत्तरदायी हैं, न वे आप के कर्मों के। रिवायतों से विद्वित होता है कि मक्का के कुछ धनी मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आप की बातें सुनना चाहते हैं। किन्तु आप के पास नीच लोग रहते हैं, जिन के साथ हम नहीं बैठ सकते। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)। हदीस में है कि अल्लाह, तुम्हारे रूप और वस्त्र नहीं देखता किन्तु तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम- 2564)

2 अर्थात धनी और निर्धन बना कर।

3 अर्थात मार्ग दर्शन प्रदान किया।

4 अर्थात उन के सलाम का उत्तर दें, और उन का आदर सम्मान करें।

وَاَصۡلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ

है। अल्लाह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ وَلِتَسۡتَبِيۡنَ سَبِيۡلُ الۡمُجۡرِمِيۡنَ

55. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ संदिग्ध न हो।)

قُلۡ اِنِّىۡ نُهِيۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ‌ ؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهۡوَآءَكُمۡ‌ ۙ قَدۡ ضَلَلۡتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ

56. (हे नबी!) आप (मुश्रिकों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की वंदना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैं ने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।

قُلۡ اِنِّىۡ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّىۡ وَكَذَّبۡتُمۡ بِهٖ‌ ؕ مَا عِنۡدِىۡ مَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ بِهٖ‌ ؕ اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ‌ ؕ يَقُصُّ الۡحَـقَّ‌ وَهُوَ خَيۡرُ الۡفٰصِلِيۡنَ

57. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित[1] हूँ। और तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।

1 अर्थात सत्धर्म पर जो वह़्यी द्वारा मुझ पर उतारा गया है। आयत का भावार्थ यह है कि वह़्यी (प्रकाशना) की राह ही सत्य और विश्वास तथा ज्ञान की राह है। और जो उसे नहीं मानते उन के पास शंका और अनुमान के सिवा कुछ नहीं।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٥٨

58. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अल्लाह अत्यचारियों[1] को भलि भाँति जानता है।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٥٩

59. और उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुंजियाँ[2] हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अन्न जो धरती के अंधेरों में हो, और न कोई आर्द्र (भीगा) और शुष्क (सूखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।

وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٦٠

60. वही है जो रात्रि में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है, तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये।[3] फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (वापस) होना है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۭ

61. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है, और तुम पर

1 अर्थात निर्णय का अधिकार अल्लाह को है, जो उस के निर्धारित समय पर हो जायेगा।

2 सहीह हदीस में है कि ग़ैब की कुंजियाँ पाँच हैंः अल्लाह ही के पास प्रलय का ज्ञान है। और वही वर्षा करता है। और जो गर्भाशयों में है उस को वही जानता है। तथा कोई जीव नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेगा। और न ही यह जानता है कि वह किस भूमि में मरेगा। (सहीह बुख़ारी- 4627)

3 अर्थात संसारिक जीवन की निर्धारित अवधि।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

रक्षकों[1] को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फ़रिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

62. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापिस लाये जाते हैं। सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

63. हे नबी! उन से पूछिये कि थल तथा जल के अंधेरों में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनय पूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है। फिर भी तुम उस का साझी बनाते हो।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. आप उन से कह दें कि वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे। अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण[2] का स्वाद चखा दे। देखिये कि हम किस प्रकार

---

1 अर्थात फ़रिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने के लिये।

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत के लिये तीन दुआऐं कीः मेरी उम्मत का विनाश डूब कर न हो। साधारण आकाल से न हो। और आपस के संघर्ष से न हो। तो पहली दो दुआ स्वीकार हुईं। और तीसरी से आप को रोक दिया गया। (बुख़ारी- 2216)

आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि संभवतः वह समझ जायें।

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٦٦﴾

66. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस (क़ुर्आन) को झुठला दिया, जब कि वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं[1] हूँ।

لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

67. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम जान लोगे।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾

68. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में दोष निकालते हों तो उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में लग जायें। और यदि आप को शैतान भुला दे तो याद आ जाने के पश्चात् अत्याचारी लोगों के साथ न बेठें।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَٰكِنْ ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾

69. तथा उन[2] के हिसाब में से कुछ का भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से डरते हों, परन्तु याद दिला[3] देना उन का कर्तव्य है, ताकि वह भी डरने लगें।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ

70. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने धर्म को क्रीड़ा और खेल बना लिया है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस (क़ुर्आन) द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई प्राणी अपने कर्तूतों के कारण बंधक

---

1 कि तुम्हें बलपूर्वक मनवाऊँ। मेरा दायित्व केवल तुम को अल्लाह का आदेश पहुँचा देना है।

2 अर्थात जो अल्लाह की आयतों में दोष निकालते हैं।

3 अर्थात समझा देना।

وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ۠

न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफ़ारशी) न होगा। और यदि वह सब कुछ बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेगा।[1] यही लोग अपने कर्तूतों के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ़्र (अविश्वास) के कारण खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना होगी।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۝

71. हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की वंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एड़ियों के बल फिर जायें, इस के पश्चात जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्य चकित हो, उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ?[2] आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्ग दर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ۝

72. और नमाज़ की स्थापना करें, और उस से डरते रहें। तथा वही है जिस के पास तुम एकत्रित किये जाओगे।

1 संसारिक दण्ड से बचाव के लिये तीन साधनों से काम लिया जाता हैः मैत्री, सिफ़ारिश और अर्थदण्ड। परन्तु अल्लाह के हाँ ऐसे साधन किसी काम नहीं आयेंगे। वहाँ केवल ईमान और सत्कर्म ही काम आयेंगे।

2 इस में कुफ़्र और ईमान का उदाहरण दिया गया है कि ईमान की राह निश्चित है। और अविश्वास की राह अनिश्चित तथा अनेक है।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۗ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾

73. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की[1] है। और जिस दिन वह कहेगा कि "हो जा" तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा[2] प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वसूचित है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

74. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहाः क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾

76. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहाः यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَىِٕنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّاۤلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

77. फिर जब उस ने चाँद को चमकते देखा तो कहाः यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहाः यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّا

78. फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते

1 अर्थात विश्व की व्यवस्था यह बता रही है कि इस का कोई रचयिता है।

2 जिन चीज़ों को हम अपनी पाँच ज्ञान इन्द्रियों से जान लेते हैं वह हमारे लिये प्रत्यक्ष है, और जिन का ज्ञान नहीं कर सकते वह परोक्ष है।

أَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾

देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सब से बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! निःसंदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम (अल्लाह का) साझी बनाते हो।

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَّمَآ أَنَا۠ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾

79. मैं ने तो अपना मुख एकाग्र हो कर उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुश्रिकों में से नहीं[1] हूँ।

وَحَآجَّهُ قَوْمُهُ قَالَ أَتُحَٰٓجُّوٓنِّي فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ وَلَآ أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَشَآءَ رَبِّي شَيْـًٔا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

80. और जब उस की जाति ने उस से वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझ से झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझे सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे (तभी वह मुझे हानि पहुँचा सकता है।) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?

وَكَيْفَ أَخَافُ مَآ أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِۦ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

81. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को तुम ने उस का साझी बना लिया है, जब तुम उस चीज़ को उस का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का अल्लाह

1 इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस युग में नबी हुये जब बाबिल तथा नेनवा के निवासी आकाशीय ग्रहों की पूजा कर रहे थे। परन्तु इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने सत्य की राह खोल दी। उन्होंने इन आकाशीय ग्रहों पर विचार किया तथा उन को निकलते और फिर डूबते देख कर यह निर्णय लिया कि यह किसी की रचना तथा उस के अधीन हैं। और इन का रचयिता कोई और है। अतः रचित तथा रचना कभी पूज्य नहीं हो सकती, पूज्य वही हो सकता है जो इन सब का रचयिता तथा व्यवस्थापक है।

ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण) नहीं उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन अधिक शान्त रहने का अधिकारी है, यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?

82. जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को अत्याचार (शिर्क) से लिप्त नहीं[1] किया, उन्हीं के लिये शान्ति है, तथा वही मार्ग दर्शन पर हैं।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾

83. यह हमारा तर्क था, जो हम ने इब्राहीम को उस की जाति के विरुद्ध प्रदान किया, हम जिस के पदों[2] को चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। वास्तव में आप का पालनहार गुणी तथा ज्ञानी है।

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ۚ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾

84. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र) इसहाक़ तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये। प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन दिया। और इब्राहीम की संतति में से दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा यूसुफ़ और मूसा तथा हारून को। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल प्रदान करते हैं।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۗ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾

85. तथा ज़करिय्या और यह्या तथा ईसा और इल्यास को। यह सभी

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۗ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾

1 हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने कहाः हम में कौन है जिस ने अत्याचार न किया हो? उस समय यह आयत उतरी। जिस का अर्थ यह है कि निश्चय शिर्क (मिश्रणवाद) ही सब से बड़ा अत्याचार है। (सहीह बुख़ारी-4629)

2 एक व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहाः हे सर्वोत्तम पुरुष! आप ने कहाः वह (सर्वोत्तम पुरुष) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (सहीह मुस्लिम- 2369)

सदाचारियों में से थे।

وَإِسْمَٰعِيلَ وَٱلْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٦﴾

86. तथा इस्माईल और यसअ तथा यूनुस और लूत को। प्रत्येक को हम ने संसार वासियों पर प्रधानता दी।

وَمِنْ ءَابَآئِهِمْ وَذُرِّيَّٰتِهِمْ وَإِخْوَٰنِهِمْ وَٱجْتَبَيْنَٰهُمْ وَهَدَيْنَٰهُمْ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾

87. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाईयों को और हम ने इन सब को निर्वाचित कर लिया। और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।

ذَٰلِكَ هُدَى ٱللَّهِ يَهْدِى بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا۟ لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾

88. यही अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिर्क करते, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।[1]

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ وَٱلنُّبُوَّةَ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا۟ بِهَا بِكَٰفِرِينَ ﴿٨٩﴾

89. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवत प्रदान की। फिर यदि यह (मुश्रिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगों को सौंप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُ ۖ فَبِهُدَىٰهُمُ ٱقْتَدِهْ ۗ قُل لَّآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَٰلَمِينَ ﴿٩٠﴾

90. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन को अल्लाह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलें तथा कह दें कि मैं इस (कार्य)[2] पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता। यह सब संसार वासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

---

1 इन आयतों में 18 नबियों की चर्चा करने के पश्चात् यह कहा है कि यदि यह सब भी मिश्रण करते तो इन के सत्कर्म व्यर्थ हो जाते। जिस से अभिप्राय शिर्क (मिश्रणवाद) की गंभीरता से सावधान करना है।

2 अर्थात इस्लाम का उपदेश देने पर

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾

91. तथा उन्हों ने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसे मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किस ने उतारी है जिसे तुम पन्नों में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये बयान करते हो और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया, जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलते हुये छोड़ दें।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾

92. तथा यह (क़ुर्आन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व (की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप «उम्मुल क़ुरा» (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक के निवासियों को सचेत[1] करें। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाज़ों का पालन करते[2] हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ

93. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे

---

1 अर्थात पूरे मानव संसार को अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान करें। इस में यह संकेत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव संसार के पथ प्रदर्शक तथा क़ुर्आन सब के लिये मार्गदर्शन है। और आप केवल किसी एक जाति या क्षेत्र अथवा देश के नबी नहीं हैं।

2 अर्थात नमाज़ उस के निर्धारित समय पर बराबर पढ़ते हैं।

أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾

कि मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की गई है, जब कि उस की ओर वह्यी (प्रकाशना) नहीं की गयी। तथा जो यह कहे कि अल्लाह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूँगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फ़रिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी जो अल्लाह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾

94. तथा (अल्लाह) कहेगाः तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही में) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफ़ारशियों) को नहीं देख रहे हैं? जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अल्लाह के) साझी हैं। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं, और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

95. वास्तव में अल्लाह ही अन्न तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अल्लाह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾

96. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उसी ने सुख के लिये रात्रि बनाई तथा सूर्य और चाँद हिसाब के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप)[1] है।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

97. उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से थल तथा जल के अंधकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग ज्ञान रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

98. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया। फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान है। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की, फिर हम ने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं। तथा खजूर के गाभ से गुच्छे झुके हुये। और अँगूरों तथा ज़ैतून और अनार के बाग़ समरूप तथा स्वाद में अलग-अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। निःसंदेह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ

1 जिस में एक पल की भी कमी अथवा अधिक्ता नहीं होती।

(लक्षण)[1] हैं जो ईमान लाते हैं।

100. और उन्हों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया। जब कि अल्लाह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है उन बातों से जो वह लोग कह रहे हैं।

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۟

101. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है? तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानता है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۟

102. वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उस के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उस की इबादत (वंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज़ का अभिरक्षक है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۟

103. उस का आँख इद्राक नहीं कर सकतीं,[2] जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ؗ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۟

---

1 अर्थात अल्लाह के पालनहार होने की निशानियाँ।
आयत का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ने तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये हैं तो फिर तुम्हारे आत्मिक जीवन के सुधार के लिये भी प्रकाशना और पुस्तक द्वारा तुम्हारे मार्गदर्शन की व्यवस्था की है तो तुम्हें उस पर आश्चर्य क्यों है, तथा इसे अस्वीकार क्यों करते हो?

2 अर्थात इस संसार में उसे कोई नहीं देख सकता।

104. तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी हैं। तो जिस ने समझ बूझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक[1] नहीं हूँ।

قَدْ جَآءَكُم بَصَآئِرُ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ عَمِىَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَآ أَنَا۠ عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾

105. और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे हैं। और ताकि वह (काफ़िर) कहें कि आप ने पढ[2] लिया है। और ताकि हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ ٱلْءَايَٰتِ وَلِيَقُولُوا۟ دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُۥ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٥﴾

106. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। और मुश्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।

ٱتَّبِعْ مَآ أُوحِىَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾

107. और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग साझी न बनाते। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर[3] अभिकारी हैं।

وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشْرَكُوا۟ ۗ وَمَا جَعَلْنَٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾

108. और (हे ईमान वालो!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अति

وَلَا تَسُبُّوا۟ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ فَيَسُبُّوا۟ ٱللَّهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا

---

1 अर्थात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सत्धर्म के प्रचारक हैं।

2 अर्थात काफ़िर यह कहें कि आप ने यह अहले किताब से सीख लिया है और इसे अस्वीकार कर दें। (इब्ने कसीर)

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी का यह कर्तव्य नहीं कि वह सब को सीधी राह दिखा दे। उस का कर्तव्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है।

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَاۤ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾

109. और उन (मुश्रिकों) ने बल पूर्वक शपथें लीं कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें: आयतें (निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास हैं। और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान[1] नहीं लायेंगे।

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾

110. और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही फेर[2] देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुर्आन) पर ईमान नहीं लाये। और हम उन्हें उन के

1 मक्का के मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि यदि सफ़ा (पर्वत) सोने का हो जाये तो वह ईमान लायेंगे। कुछ मुसलमानों ने भी सोचा कि यदि ऐसा हो जाये तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात कोई चमत्कार आ जाने के पश्चात् भी ईमान नहीं लायेंगे, क्यों कि अल्लाह, जिसे सुपथ दर्शाना चाहता है, वह सत्य को सुनते ही उसे स्वीकार कर लेता है। किन्तु जिस ने सत्य के विरोध ही को अपना आचरण-स्वभाव बना लिया हो तो वह चमत्कार देख कर भी कोई बहाना बना लेता है। और ईमान नहीं लाता। जैसे इस से पहले नबियों के साथ हो चुका है। और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी निशानियाँ दिखाई फिर भी ये मुश्रिक ईमान नहीं लाये। जैसे आप ने मक्का वासियों की माँग पर चाँद के दो भाग कर दिये। जिन दोनों के बीच लोगों ने हिरा (पर्वत) को देखा। (परन्तु वे फिर भी ईमान नहीं लाये।) (सहीह बुख़ारी- 3637, मुस्लिम- 2802)

कुकर्मों में बहकते छोड़ देंगे।

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

111. और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फ़रिश्ते उतार देते और इन से मुर्दे बात करते और इन के समक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता। और इन में से अधिक्तर (तथ्य से) अज्ञान हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिन्नों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाते रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करते। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. (वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगें जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۗ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खुली पुस्तक (कुर्आन) उतारी[1] है? तथा जिन को हम ने पुस्तक[2] प्रदान की है वह जानते हैं

---

1 अर्थात इस में निर्णय के नियमों का विवरण है।

2 अर्थात जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जिब्रील प्रथम वह्यी लाये और

कि यह (क़ुर्आन) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अतः आप संदेह करने वालों में न हों।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِهِۦ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾

115. आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِى ٱلْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾

116. और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिक्तर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलत[1] हैं, और आँकलन करते हैं।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِۦ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِٱلْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

117. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर हैं।

فَكُلُوا۟ مِمَّا ذُكِرَ ٱسْمُ ٱللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِـَٔايَٰتِهِۦ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

118. तो उन पशुवों में से जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ,[2] यदि तुम उस

आप ने मक्का के ईसाई विद्वान वर्क़ा बिन नौफ़ल को बताया तो उस ने कहा कि यह वही फ़रिश्ता है जिसे अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। (बुख़ारी -3, मुस्लिम-160) इसी प्रकार मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को माना और इस्लाम लाये।

1 आयत का भावार्थ यह है कि सत्योसत्य का निर्णय उस के अनुयायियों की संख्या से नहीं। सत्य के मूल नियमों से ही किया जा सकता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मेरी उम्मत के 72 सम्प्रदाय नरक में जायेंगे। और एक स्वर्ग में जायेगा। और वह, वह होगा जो मेरे और मेरे साथियों के पथ पर होगा। (तिर्मिज़ी- 263)

2 इस का अर्थ यह है कि बध करते समय जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, बल्कि देवी-देवता तथा पीर-फ़क़ीर के नाम पर बलि दिया गया

की आयतों (आदेशों) पर ईमान (विश्वास) रखते हो।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

119. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया[1] हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है? परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) विवश कर दिये जाओ[2], और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण बहकाते हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लंघनकारियों को भली भाँति जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

120. (हे लोगो!) खुले तथा छुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मों का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

121. तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःसंदेह शैतान अपने सहायकों के मनों में संशय डालते रहते हैं, ताकि वह तुम से विवाद

हो तो वह तुम्हारे लिये वर्जित है। (इब्ने कसीर)

1 अर्थात उन पशुवों को खाने में कोई हरज नहीं जो मुसलमानों की दुकानों पर मिलते हैं क्यों कि कोई मुसलमान अल्लाह का नाम लिये बिना बध नहीं करता। और यदि शंका हो तो खाते समय ((बिस्मिल्लाह)) कह ले। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है। (देखियेः बुख़ारी- 5507)

2 अर्थात उस वर्जित को प्राण रक्षा के लिये खाना उचित है।

करें।[1] और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुश्रिक हो।

122. तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोगों के बीच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अंधेरों में हो उस से निकल न रहा हो?[2] इसी प्रकार काफ़िरों के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَٰهُ وَجَعَلْنَا لَهُۥ نُورًا يَمْشِى بِهِۦ فِى ٱلنَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُۥ فِى ٱلظُّلُمَٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَٰفِرِينَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

123. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में षड्यंत्र रचें। तथा वह अपने ही विरुद्ध षड्यंत्र रचते[3] हैं परन्तु समझते नहीं हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَٰبِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا۟ فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

124. और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ قَالُوا۟ لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَآ أُوتِىَ رُسُلُ ٱللَّهِ ۘ ٱللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُۥ ۗ سَيُصِيبُ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ صَغَارٌ عِندَ ٱللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

---

1 अर्थात यह कहें कि जिसे अल्लाह ने मारा हो, उसे नहीं खाते। और जिसे तुम ने बध किया हो उसे खाते हो? (इब्ने कसीर)

2 इस आयत में ईमान की उपमा जीवन से तथा ज्ञान की प्रकाश से, और अविश्वास की मरण तथा अज्ञानता की उपमा अँधकारों से दी गयी है।

3 भावार्थ यह है कि जब किसी नगर में कोई सत्य का प्रचारक खड़ा होता है तो वहाँ के प्रमुखों को यह भय होता है कि हमारा अधिकार समाप्त हो जायेगा। इस लिये वह सत्य के विरोधी बन जाते हैं। और उस के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगते हैं। मक्का के प्रमुखों ने भी यही नीति अपना रखी थी।

संदेश पहुँचाने का काम किस से ले। जो अपराधी हैं शीघ्र ही अल्लाह के पास उन्हें अपमान तथा कड़ी यातना उस षड्यंत्र के बदले मिलेगी जो वे कर रहे हैं।

125. तो जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उस का सीना (वक्ष) इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा[1] हो। इसी प्रकार अल्लाह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ۚ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾

126. और यही (इस्लाम) आप के पालनहार की सीधी राह है। हम ने उन लोगों के लिये आयतों को खोल दिया है जो शिक्षा ग्रहण करते हों।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

127. उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾

128. तथा (हे नबी!) याद करो जब वह सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे जिन्नों के गिरोह! तुम ने बहुत से मनुष्यों को कुपथ कर दिया और मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ

1 अर्थात उसे इस्लाम का मार्ग एक कठिन चढ़ाई लगता है जिस के विचार ही से उस का सीना तंग हो जाता है और श्वास रोध होने लगात है।

خَٰلِدِينَ فِيهَآ إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

हे हमारे पालनहार! हम एक दूसरे से लाभांवित होते रहे,[1] और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अल्लाह) कहेगाः तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।

وَكَذَٰلِكَ نُوَلِّى بَعْضَ ٱلظَّٰلِمِينَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿١٢٩﴾

129. और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मों के कारण एक दूसरे का सहायक बना देते हैं।

يَٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتِى وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا۟ شَهِدْنَا عَلَىٰٓ أَنفُسِنَا ۖ وَغَرَّتْهُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا وَشَهِدُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا۟ كَٰفِرِينَ ﴿١٣٠﴾

130. (तथा कहेगाः) हे जिन्नों तथा मनुष्यों के (मुश्रिक) समुदाय! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये[2], जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगेः हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था। और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये

---

1 इस का भावार्थ यह है कि जिन्नों ने लोगों को संशय और धोखे में रख कर कुपथ किया, और लोगों ने उन्हें अल्लाह का साझी बनाया और उन के नाम पर बलि देते और चढ़ावे चढ़ाते रहे और ओझाई तथा जादू तंत्र द्वारा लोगों को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते रहे।

2 क़ुर्आन की अनेक आयतों से यह विद्धित होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन्नों के भी नबी थे जैसा कि सूरह जिन्न आयत 1, 2 में उन के क़ुर्आन सुनने और ईमान लाने का वर्णन है। ऐसे ही सूरह अहक़ाफ़ में है कि जिन्नों ने कहाः हम ने ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात् उतरी है। इसी प्रकार वह सुलैमान के आधीन थे। परन्तु क़ुर्आन और हदीस से जिन्नों में नबी होने का कोई संकेत नहीं मिलता। एक विचार यह भी है कि जिन्न आदम (अलैहिस्सलाम) से पहले के हैं इसलिये हो सकता है पहले उन में भी नबी आये हों।

कि वास्तव में वही काफ़िर थे।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

131. (हे नबी!) यह (नबियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्तियों का विनाश कर दे,[1] जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

132. प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद हैं। और आप का पालनहार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133. तथा आप का पालनहार निस्पृह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये। जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की संतति से पैदा किया है।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

134. तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

135. आप कह दें: हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम)[2] अच्छा है। निःसंदेह

---

1 अर्थात संसार की कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिस में संमार्ग दर्शाने के लिये नबी न आये हों। अल्लाह का यह नियम नहीं है कि किसी जाति को वह्यी द्वारा मार्गदर्शन से वंचित रखे और फिर उस का नाश कर दे। यह अल्लाह के न्याय के बिल्कुल प्रतिकूल है।

2 इस आयत में काफ़िरों को सचेत किया गया है कि यदि सत्य को नहीं मानते तो

अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

136. तथा उन लोगों ने उस खेती और पशुओं में जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चित कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह उन (देवतावों) का है जिन को उन्होंने (अल्लाह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के साझियों[1] को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करते हैं!

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

137. और इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है, ताकि उन का विनाश कर दें। और ताकि उन के धर्म को उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह यह (कुकर्म) नहीं करते। अतः आप उन्हें छोड़[2] दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ

138. तथा वे कहते हैं कि यह पशु और

जो कर रहे हो वही करो तुम्हें जल्द ही इस के परिणाम का पता चल जायेगा।

1 इस आयत में अरब के मुश्रिकों की कुछ धार्मिक परम्पराओं का खण्डन किया गया है कि सब कुछ तो अल्लाह पैदा करता है और यह उस में से अपने देवतावों का भाग बनाते हैं। फिर अल्लाह का जो भाग है उसे देवतावों को दे देते हैं। परन्तु देवतावों के भाग में से अल्लाह के लिये व्यय करने को तैयार नहीं होते।

2 अरब के कुछ मुश्रिक अपनी पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे।

لَّا يَطْعَمُهَآ إِلَّا مَن نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَٰمٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَٰمٌ لَّا يَذْكُرُونَ ٱسْمَ ٱللَّهِ عَلَيْهَا ٱفْتِرَآءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

खेत वर्जित हैं, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु हैं, जिन की पीठ हराम[1] (वर्जित) है, और कुछ पशु हैं, जिन पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते, अल्लाह पर आरोप लगाने के कारण, अल्लाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।

وَقَالُوا۟ مَا فِى بُطُونِ هَٰذِهِ ٱلْأَنْعَٰمِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰٓ أَزْوَٰجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُۥ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾

139. तथा उन्हों ने कहा कि जो इस पशुवों के गर्भों में है वह हमारे पुरुषों के लिये विशेष है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में साझी हो सकते[2] हैं। अल्लाह उन के विशेष करने का कुफल उन्हें अवश्य देगा, वास्तव में वह तत्वज्ञ अति ज्ञानी है।

قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ قَتَلُوٓا۟ أَوْلَٰدَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا۟ مَا رَزَقَهُمُ ٱللَّهُ ٱفْتِرَآءً عَلَى ٱللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا۟ وَمَا كَانُوا۟ مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

140. वास्तव में वह क्षति में पड़ गये जिन्हों ने मूर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान कि अल्लाह पर आरोप लगा कर, अवैध बना लिया, वह बहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।

---

1 अर्थात उन पर सवारी करना तथा बोझ लादना अवैध है। (देखियेः सूरह माइदा-103)।

2 अर्थात बधित पशु के गर्भ से बच्चा निकल जाता और जीवित होता तो उसे केवल पुरुष खा सकते थे। और मुर्दा होता तो सभी (स्त्री-पुरुष) खा सकते थे। (देखियेः सूरह नह्ल 16: 58-59)। सूरह अन्आम-151, तथा सूरह इस्रा-31)। जैसा कि आधुनिक सभ्य समाज में «सुखी परिवार» के लिये अनेक प्रकार से किया जा रहा है।

141. अल्लाह वही है जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग़ पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और ज़ैतून तथा अनार सम्रूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय[1] (बेजा ख़र्च) न करो। निःसंदेह अल्लाह बेजा ख़र्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

وَهُوَ الَّذِيٓ أَنشَأَ جَنَّٰتٍ مَّعۡرُوشَٰتٍ وَغَيۡرَ مَعۡرُوشَٰتٍ وَٱلنَّخۡلَ وَٱلزَّرۡعَ مُخۡتَلِفًا أُكُلُهُۥ وَٱلزَّيۡتُونَ وَٱلرُّمَّانَ مُتَشَٰبِهًا وَغَيۡرَ مُتَشَٰبِهٍۚ كُلُواْ مِن ثَمَرِهِۦٓ إِذَآ أَثۡمَرَ وَءَاتُواْ حَقَّهُۥ يَوۡمَ حَصَادِهِۦۖ وَلَا تُسۡرِفُوٓاْۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلۡمُسۡرِفِينَ ﴿١٤١﴾

142. तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोझ लादने योग्य[2] हैं। और कुछ धरती से लगे[3] हुये, तुम उन में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पद्चिन्हों पर न चलो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु[4] है।

وَمِنَ ٱلۡأَنۡعَٰمِ حَمُولَةٗ وَفَرۡشٗاۚ كُلُواْ مِمَّا رَزَقَكُمُ ٱللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيۡطَٰنِۚ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٞ ﴿١٤٢﴾

143. आठ पशु आपस में जोड़े हैंः भेड़ में से दो, तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये

ثَمَٰنِيَةَ أَزۡوَٰجٖۖ مِّنَ ٱلضَّأۡنِ ٱثۡنَيۡنِ وَمِنَ ٱلۡمَعۡزِ ٱثۡنَيۡنِۗ قُلۡ ءَآلذَّكَرَيۡنِ حَرَّمَ أَمِ ٱلۡأُنثَيَيۡنِ أَمَّا ٱشۡتَمَلَتۡ عَلَيۡهِ أَرۡحَامُ

---

1 अर्थात इस प्रकार उन्होंने पशुओं में विभिन्न रूप बना लिये थे। जिन को चाहते अल्लाह के लिये विशेष कर देते और जिसे चाहते अपने देवी देवता के लिये विशेष कर देते। यहाँ इन्हीं अन्ध विश्वासियों का खण्डन किया जा रहा है। दान करो अथवा खाओ परन्तु अपव्यय न करो। क्योंकि यह शैतान का काम है, सब में संतुलन होना चाहिये।

2 जैसे ऊँट और बैल आदि।

3 जैसे बकरी और भेड़ आदि।

4 अल्लाह ने चौपायों को केवल सवारी और खाने के लिये बनाया है, देवी-देवतावों के नाम चढ़ाने के लिये नहीं। अब यदि कोई ऐसा करता है तो वह शैतान का बन्दा है और शैतान के बनाये मार्ग पर चलता है जिस से यहाँ मना किया जा रहा है।

الْأُنثَيَيْنِ ۖ نَبِّـُٔونِى بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١٤٣﴾

हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءَآلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ وَصَّىٰكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظَّٰلِمِينَ ﴿١٤٤﴾

144. और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों।? क्या तुम उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय अल्लाह अत्याचारियों को संमार्ग नहीं दिखाता।

قُل لَّآ أَجِدُ فِى مَآ أُوحِىَ إِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُۥٓ إِلَّآ أَن يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُۥ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِۦ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٥﴾

145. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी है इन[1] में से खाने वालों पर कोई चीज़ वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो[2] अथवा बहा हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्रोही तथा सीमा लाँघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार

1 जो तुम ने वर्जित किया है।

2 अर्थात धर्म विधान अनुसार बध न किया गया हो।

अति क्षमी दयावान्[1] है।

146. तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी[2] जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी[3] थी। परन्तु जो दोनों की पीठों या आंतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें[4] प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

147. फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

148. मिश्रणवादी अवश्य कहेंगेः यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अल्लाह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾

---

1 अर्थात कोई भूक से विवश हो जाये तो अपनी प्राण रक्षा के लिये इन प्रतिबंधों के साथ हराम खा ले तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा।

2 अर्थात जिन की उँगलियाँ फटी हुई न हों जैसे ऊँट, शुतुरमुर्ग़, तथा बत्तख़ इत्यादि। (इब्ने कसीर)

3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः यहूदियों पर अल्लाह की धिक्कार हो! जब चर्बियाँ वर्जित की गईं तो उन्हें पिघला कर उन का मुल्य खा गये। (बुख़ारी - 2236)

4 देखियेः सूरह आले इमरान, आयतः 93 तथा सूरह निसा आयतः 160।

कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पूछिये कि क्या तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सको? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَاءَ لَهَدٰىكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾

149. (हे नबी!) आप कह दें कि पूर्ण तर्क अल्लाह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता[1]।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾

150. आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ[2], जो साक्ष्य दें कि अल्लाह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन के साथ हो कर इसे न मानें, तथा उन की मनमानी पर न चलें, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करते हैं।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ

151. आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम

---

1 परन्तु उस ने इसे लोगों को समझ बूझ दे कर प्रत्येक दशा का एक परिणाम निर्धारित कर दिया है। और सत्योसत्य दोनों की राहें खोल दी हैं। अब जो व्यक्ति जो राह चाहे अपना ले। और अब यह कहना अज्ञानता की बात है कि यदि अल्लाह चाहता तो हम संमार्ग पर होते।

2 हदीस में है कि सब से बड़ा पापः अल्लाह का साझी बनाना तथा माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार और झूठी शपथ लेना है।
(तिर्मिज़ी -3020, यह हदीस हसन है।)

وَلَا تَقْتُلُوٓا۟ أَوْلَٰدَكُم مِّنْ إِمْلَٰقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا۟ ٱلْفَوَٰحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا۟ ٱلنَّفْسَ ٱلَّتِى حَرَّمَ ٱللَّهُ إِلَّا بِٱلْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾

(अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। और माता- पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को निर्धनता के भय से बध न करो। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी देंगे और निर्लज्जा की बातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हराम (अवैध) कर दिया है उसे बध न करो परन्तु उचित कारण[1] से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।

وَلَا تَقْرَبُوا۟ مَالَ ٱلْيَتِيمِ إِلَّا بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُۥ ۖ وَأَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَٱلْمِيزَانَ بِٱلْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَٱعْدِلُوا۟ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ ٱللَّهِ أَوْفُوا۟ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾

152. और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये। तथा नाप - तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सकत से अधिक भार नहीं रखते और जब बोलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया है, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَٰطِى مُسْتَقِيمًا فَٱتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا۟

153. तथा (उस ने बताया है कि) यह

1 सहीह हदीस में है कि किसी मुसलमान का खून तीन कारणों के सिवा अवैध हैः
1. किसी ने विवाहित हो कर व्यभिचार किया हो।
2. किसी मुसलमान को जान बूझ कर अवैध मार डाला हो।
3. इस्लाम से फिर गया हो और अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करने लगे। (सहीह मुस्लिम, हदीस-1676)

السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِۦ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾

(इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह[1] है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तित्तर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

ثُمَّ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ تَمَامًا عَلَى ٱلَّذِىٓ أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾

154. फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।

وَهَٰذَا كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ مُبَارَكٌ فَٱتَّبِعُوهُ وَٱتَّقُوا۟ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾

155. तथा (उसी प्रकार) यह पुस्तक (कुर्आन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो[2] और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

أَن تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ أُنزِلَ ٱلْكِتَٰبُ عَلَىٰ طَآئِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَٰفِلِينَ ﴿١٥٦﴾

156. ताकि (हे अरब वासियो!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो सुमदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने-पढ़ाने से अनजान रह गये।

أَوْ تَقُولُوا۟ لَوْ أَنَّآ أُنزِلَ عَلَيْنَا ٱلْكِتَٰبُ لَكُنَّآ أَهْدَىٰ

157. या यह न कहो कि यदि हम पर

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक लकीर बनाई, और कहाः यह अल्लाह की राह है। फिर दायें बायें कई लकीरें खींची और कहाः इन पर शैतान है जो इन की ओर बुलाता है और यही आयत पढ़ी। (मुस्नद अहमद-431)

2 अर्थात अब अहले किताब सहित पूरे संसार वासियों के लिये प्रलय तक इसी कुर्आन का अनुसरण ही अल्लाह की दया का साधन है।

مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते, तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया, मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जाये? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّآ أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ إِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا إِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

158. क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आ जायें, या स्वयं उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये?[1] जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह

1 आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी तर्कों के प्रस्तुत किये जाने पर भी यदि यह ईमान नहीं लाते तो क्या उस समय ईमान लायेंगे जब फ़रिश्ते उन के प्राण निकालने आयेंगे? या प्रलय के दिन जब अल्लाह इन का निर्णय करने आयेगा? या जब प्रलय की कुछ निशानियाँ आ जायेंगी? जैसे सूर्य का पश्चिम से निकल आना। सहीह बुख़ारी की हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि प्रलय उस समय तक नहीं आयेगी जब तक कि सूर्य पश्चिम से नहीं निकलेगा। और जब निकलेगा तो जो देखेंगे सभी ईमान ले आयेंगे। और यह वह समय होगा कि किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारी, हदीस-4636)

दें कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

159. जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

160. जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

161. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ) दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुश्रिकों में से न था।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

162. आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

163. जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

164. आप उन से कह दें कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ? जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज़ का पालनहार है। तथा

कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा, तो उस का भार उसी पर होगा। और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने पालनहार के पास ही जाना है। तो जिन बातों में तुम विभेद कर रहे हो वह तुम्हें बता देगा।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَآ ءَاتَىٰكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُۥ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌۢ ﴿١٦٥﴾

165. वही है जिस ने तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम में से कुछ को (धन शक्ति में) दूसरे से कई श्रेणियाँ ऊँचा किया है। ताकि उस में तुम्हारी परीक्षा[1] ले जो तुम्हें दिया है। वास्तव में आप का पालनहार शीघ्र ही दण्ड देने वाला[2] है और वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

---

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः कॉबा के रब्ब की शपथ! वह क्षति में पड़ गया। अबूज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहाः कौन? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः (धनी)। परन्तु जो दान करता रहता है। (सहीह बुख़ारी-6638, सही मुस्लिम-990)

2 अर्थात अवैज्ञाकारियों को।

सूरह आराफ़ - 7

सूरह आराफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 206 आयतें हैं।

इस में «आराफ़» की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह आराफ़ है।

- इस में अल्लाह के भेजे हुये नबी का अनुसरण करने पर बल दिया गया है, जिस में डराने तथा सावधान करने की भाषा अपनाई गई है।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) को शैतान के धोखा देने का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य उस से सावधान रहे।
- इस में यह बताया गया है कि अगले नबियों की जातियाँ नबियों के विरोध का दुष्परिणाम देख चुकी है, फिर अहले किताब को संबोधित किया गया है और एक जगह पूरे संसार वासियों को संबोधित किया गया है।
- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की वंदना की, और उसी की ओर बुलाया और सब का मूल धर्म एक है।
- इस में यह भी बताया गया है कि ईमान लाने के पश्चात् निफ़ाक़ (द्विधा) का क्या दुष्परिणाम होता है और वचन तोड़ने का अन्त क्या होता है।
- सूरह के अन्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को उपदेश देने के कुछ गुण बताये गये हैं और विरोधियों की बातों को सहन करने तथा उत्तोजित हो कर ऐसा कार्य करने से रोका गया है जो इस्लाम के लिये हानिकारक हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓمّٓصٓ ①

1. अलिफ़, लाम, मीम, स़ाद।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ②

2. यह पुस्तक है, जो आप की ओर उतारी गई है। अतः (हे नबी!) आप के मन में इस से कोई संकोच न

हो, ताकि आप इस के द्वारा सावधान करें[1], और ईमान वालों के लिये उपदेश है।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣

3. (हे लोगो!) जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ۝٤

4. तथा बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٥

5. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी[2] थे।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦

6. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य[3] प्रश्न करेंगे।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝٧

7. फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविक्ता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ

8. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्मों की)

1 अर्थात अल्लाह के इन्कार तथा उस के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात अपनी हठधर्मी को उस समय स्वीकार किया।

3 अर्थात प्रलय के दिन उन समुदायों से प्रश्न किया जायेगा कि तुम्हारे पास रसूल आये या नहीं? वह उत्तर देंगेः आये थे। परन्तु हम ही अत्याचारी थे। हम ने उन की एक न सुनी। फिर रसूलों से प्रश्न किया जायेगा कि उन्होंने अल्लाह का संदेश पहुँचाया या नहीं? तो वह कहेंगेः अवश्य हम ने तेरा संदेश पहुँचा दिया।

فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٨﴾

तौल न्याय के साथ होगी। फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही सफल होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

9. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो वही स्वयं को क्षति में डाल लिये होंगे। क्यों कि वह हमारी आयतों के साथ अत्याचार करते[1] रहे।

وَلَقَدْ مَكَّنَّٰكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَٰيِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿١٠﴾

10. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बनाये। तुम थोड़े ही कृतज्ञ होते हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنَٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿١١﴾

11. और हम ने ही तुम्हें पैदा किया[2],फिर तुम्हारा रूप बनाया, फिर हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा करने वालों में से न हुआ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِى مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُۥ مِن طِينٍ ﴿١٢﴾

12. अल्लाह ने उस से कहाः किस बात ने तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब कि मैं ने तुझे आदेश दिया था? उस ने कहाः मैं उस से उत्तम हूँ। मेरी रचना तू ने अग्नि से की, और उस की मिट्टी से।

قَالَ فَٱهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَن تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَٱخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ ٱلصَّٰغِرِينَ ﴿١٣﴾

13. तो अल्लाह ने कहाः इस (स्वर्ग) से उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं कि इस में घमंड करे। तू निकल जा। वास्तव में तू अपमानितों में है।

---

1 भावार्थ यह है कि यह अल्लाह का नियम है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा समुदाय को उन के कर्मानुसार फल मिलेगा। और कर्मों की तौल के लिये अल्लाह ने नाप निर्धारित कर दी है।

2 अर्थात मूल पुरुष आदम को अस्तित्व दिया।

قَالَ أَنظِرْنِىٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

14. उस ने कहाः मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ ٱلْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾

15. अल्लाह ने कहाः तुझे अवसर दिया जा रहा है।

قَالَ فَبِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَٰطَكَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

16. उस ने कहाः तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की घात में लगा रहूँगा।

ثُمَّ لَءَاتِيَنَّهُم مِّنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَٰنِهِمْ وَعَن شَمَآئِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَٰكِرِينَ ﴿١٧﴾

17. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊँगा।[1] और तू उन में से अधिक्तर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।[2]

قَالَ ٱخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

18. अल्लाह ने कहाः यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा। जो भी उन में से तेरी राह चलेगा तो मैं तुम सभी से नरक को अवश्य भर दूँगा।

وَيَٰٓـَٔادَمُ ٱسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ ٱلْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ ٱلشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٩﴾

19. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا ٱلشَّيْطَٰنُ لِيُبْدِىَ لَهُمَا مَا وُۥرِىَ عَنْهُمَا مِن سَوْءَٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَىٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ ٱلشَّجَرَةِ إِلَّآ أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ ٱلْخَٰلِدِينَ ﴿٢٠﴾

20. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया, ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहाः तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फ़रिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।

---

1 अर्थात प्रत्येक दिशा से घेरूँगा और कुपथ करूँगा।

2 शैतान ने अपना विचार सच्च कर दिखाया और अधिक्तर लोग उस के जाल में फंस कर शिर्क जैसे महा पाप में पड़ गये। (देखिये सूरह सबा आयत-20)

وَقَاسَمَهُمَآ إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ ٱلنَّٰصِحِينَ ﴿٢١﴾

21. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।

فَدَلَّىٰهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا ٱلشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا
وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ ٱلْجَنَّةِ وَنَادَىٰهُمَا رَبُّهُمَآ
أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَن تِلْكُمَا ٱلشَّجَرَةِ وَأَقُل لَّكُمَآ إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ
لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٢﴾

22. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्तांग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज़ दीः क्या मैं ने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रू है?

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا
لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٢٣﴾

23. दोनों ने कहाः हे हमारे पालनहार! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो[1] जायेंगे।

قَالَ ٱهْبِطُوا۟ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِى
ٱلْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾

24. उस ने कहाः तुम सब उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रू हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾

25. तथा कहाः तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَٰرِى سَوْءَٰتِكُمْ
وَرِيشًا وَلِبَاسُ ٱلتَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ ءَايَٰتِ
ٱللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾

26. हे आदम के पुत्रो! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता, तथा शोभा है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह

---

1 अर्थात आदम तथा हव्वा ने अपने पाप के लिये अल्लाह से क्षमा माँग ली। शैतान के समान अभिमान नहीं किया।

की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा लें।[1]

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۤءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. हे आदम के पुत्रो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के वस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे। वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۤءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۤءِ ۗ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. तथा जब वह (मुश्रिक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते हैं कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अल्लाह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अल्लाह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۗ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾

29. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज़ के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो[2] और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारो। जिस

---

1 तथा उस के आज्ञाकारी एवं कृतज्ञ बनें।

2 इस आयत में सत्य धर्म के निम्नलिखित तीन मूल नियम बताये गये हैं:
कर्म में संतुलन,
वंदना में अल्लाह की ओर ध्यान,
तथा धर्म में विशुद्धता तथा एक अल्लाह की वंदना करना।

प्रकार उस ने तुम्हें पहले पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٣٠

30. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थित रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक बना लिया, फिर भी वह समझते हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣١

31. हे आदम के पुत्रो! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज़ के समय) अपनी शोभा धारण करो[1], तथा खाओ और पीओ और बेजा ख़र्च न करो। वस्तुतः वह बेजा ख़र्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣٢

32. (हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है[2] जिसे उस ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें: यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) है, जो ईमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष[3] है। इसी प्रकार हम

1 कुरैश नग्न होकर कॉबा की परिक्रमा करते थे। इसी पर यह आयत उतरी।

2 इस आयत में सन्यास का खण्डन किया गया है कि जीवन के सुखों तथा शोभावों से लाभान्वित होना धर्म के विरुद्ध नहीं है। इन सब से लाभान्वित होने में ही अल्लाह की प्रसन्नता है। नग्न रहना तथा संसारिक सुखों से वंचित हो जाना सत्धर्म नहीं है। धर्म की यह शिक्षा है कि अपनी शोभावों से सुसज्जित हो कर अल्लाह की वंदना और उपासना करो।

3 एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से

अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उन के लिये करते हैं जो ज्ञान रखते हों।

33. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले तथा छुपे कुकर्मों और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अल्लाह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

34. प्रत्येक समुदाय का[1] एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सवेर नहीं होगी।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٤﴾

35. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ जायें जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह[2] उदासीन होंगे।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

36. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उन से घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

37. फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ

कहाः क्या तुम प्रसन्न नहीं हो कि संसार काफ़िरों के लिये हो और परलोक हमारे लिये? (बुख़ारी- 2468 , मुस्लिम- 1479)

1 अर्थात काफ़िर समुदाय की यातना के लिये।

2 इस आयत में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये समय समय पर रसूलों के आने के बारे में सूचित किया गया है और बताया जा रहा है कि अब इसी नियमानुसार अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये हैं। अतः उन की बात मान लो, अन्यथा इस का परिणाम स्वयं तुम्हारे सामने आ जायेगा।

है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस समय हमारे फ़रिश्ते उन का प्राण निकालने के लिये आयेंगे तो उन से कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह कहेंगे कि वह तो हम से खो गये, तथा अपने ही विरुद्ध साक्षी (गवाह) बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफ़िर थे।

بِاٰيٰتِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۭ
حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا
اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا
ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا
كٰفِرِيْنَ ۝37

38. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो तुम से पहले के जिन्नों और मनुष्यों में से नरक में हैं। जब भी कोई समुदाय (नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने समान दूसरे समुदाय को धिक्कार करेगा, यहाँ तक कि जब उस में सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का पिछला अपने पहले के लिये कहेगाः हे हमारे पालनहार इन्हों ने ही हमें कुपथ किया है। अतः इन्हें दुगनी यातना दे। वह (अल्लाह) कहेगा तुम में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना है, परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ
حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ
لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا
مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝38

39. तथा उन का पहला समुदाय अपने दूसरे समुदाय से कहेगाः (यदि हम दोषी थे) तो हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं[1] हुई, तो तुम अपने

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا
مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُوْنَ ۝39

1 और हम और तुम यातना में बराबर हैं। आयत में इस तथ्य की ओर संकेत है कि कोई समुदाय कुपथ होता है तो वह स्वयं कुपथ नहीं होता, वह दूसरों को भी अपने कुचरित्र से कुपथ करता है अतः सभी दुगनी यातना के अधिकारी हुये।

कुकर्मों की यातना का स्वाद लो।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

40. वास्तव में जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक[1] ऊँट सूई के नाके से पार न हो जाये। और हम इसी प्रकार अपराधियों को बदला देते हैं।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

41. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला[2]) देते हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾

42. और जो ईमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सकत से (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी हैं और वही उस में सदावासी होंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

43. तथा उन के दिलों में जो द्वेष होगा उसे हम निकाल देंगे।[3] उन (स्वर्गों में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रसूल सत्य ले कर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि

---

1 अर्थात उन का स्वर्ग में प्रवेश असंभव होगा।

2 अर्थात उन के कुकर्मों तथा अत्याचारों का।

3 स्वर्गियों को सब प्रकार के सुख, सुविधा के साथ यह भी बड़ी नेमत मिलेगी कि उन के दिलों का बैर निकाल दिया जायेगा, ताकि स्वर्ग में मित्र बन कर रहें। क्योंकि आपस के बैर से सब सुख किरकिरा हो जाता है।

इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो।

وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا۟ نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾

44. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सच्च पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुम ने सच्च पाया? वह कहेंगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर

ٱلَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ كَٰفِرُونَ ﴿٤٥﴾

45. जो लोगों को अल्लाह की राह (सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा करना चाहते थे। और वही परलोक के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى ٱلْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّۢا بِسِيمَىٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا۟ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ أَن سَلَٰمٌ عَلَيْكُمْ ۚ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾

46. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ़[1] (ऊँचाईयों) पर होंगे। जो प्रत्येक को उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्ग वासियों को पुकार कर उन्हें सलाम करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं किया होगा, परन्तु उस की आशा रखते होंगे।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَٰرُهُمْ تِلْقَآءَ أَصْحَٰبِ ٱلنَّارِ قَالُوا۟ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٧﴾

47. और जब उन की आँखें नरक वासियों की ओर फिरेंगी तो कहेंगेः हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم

48. फिर आराफ़ (ऊँचाईयों) के लोग

1 आराफ़ नरक तथा स्वर्ग के मध्य एक दीवार है जिस पर वह लोग रहेंगे जिन के सुकर्म और कुकर्म बराबर होंगे। और वह अल्लाह की दया से स्वर्ग में प्रवेश की आशा रखते होंगे। (इब्ने कसीर)

بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेंगे[1], उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमंड तुम्हारे किसी काम नहीं आया।

اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝

49. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं हैं जिन के सम्बंध में तुम शपथ ले कर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदासीन होगे।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

50. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तनिक पानी डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफ़िरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝

51. (उस का निर्णय है कि) जिन्हों ने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था[2] और इस लिये भी कि वह

---

1 जिन को संसार में पहचानते थे और याद दिलायेंगे कि जिस पर तुम्हें घमंड था आज तुम्हारे काम नहीं आया।

2 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः प्रलय के दिन अल्लाह ऐसे बंदों से कहेगाः क्या मैं ने तुम्हें बीवी-बच्चे नहीं दिये, आदर-मान नहीं दिया? क्या ऊँट-

हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

52. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सविस्तार वर्णित कर दिया है जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

53. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूले हुये थे कहेंगे कि हमारे पालनहार के रसूल सच्च ले कर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफ़ारशी) है, जो हमारी अनुशंसा (सिफ़ारिश) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जायें तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्हों ने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गईं।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَاۗءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

54. तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया[1], फिर अर्श

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۣ يُغْشِي الَّيْلَ

घोड़े तेरे आधीन नहीं किये, क्या तू मुख्या बन कर चुंगी नहीं लेता था? वह कहेगाः हे अल्लाह सब सहीह है। अल्लाह प्रश्न करेगाः क्या मुझ से मिलने की आशा रखता था? वह कहेगाः नहीं। अल्लाह कहेगा जैसे तू मुझे भूला रहा, आज मैं तुझे भूल जाता हूँ। (सहीह मुस्लिम- **2968**)

1 यह छः दिन शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, और बृहस्पतिवार हैं। पहले दो दिन में धरती को, फिर आकाश को बनाया, फिर आकाश को दो दिन में बराबर किया, फिर धरती को फैलाया और उस में पर्वत, पानी और

(सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्री से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है, सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शासक[1] है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتٍۭ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٥٤﴾

55. तुम अपने (उसी) पालनहार को रोते हुये तथा धीरे-धीरे पुकारो। निःसंदेह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

56. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात्[2] उपद्रव न करो, और उसी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये[3] प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَٰحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

57. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती हैं तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं, फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِۦ مِن كُلِّ الثَّمَرَٰتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

उपज की व्यवस्था दो दिन में की। इस प्रकार यह कुल छः दिन हुये। (देखियेः सूरह सज्दा, आयत- 9,10)

1 अर्थात इस विश्व की व्यवस्था का अधिकार उस के सिवा किसी को नहीं है।

2 अर्थात सत्धर्म और रसूलों द्वारा सुधार किये जाने के पश्चात्।

3 अर्थात पापाचार से डरते और उस की दया की आशा रखते हुये।

मुर्दों को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

58. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा ख़राब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी[1] आयतें (निशानियाँ) उन के लिये दुहराते हैं जो शुक्र अदा करते है।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾

59. हम ने नूह[2] को उस की जाति की ओर (अपना संदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾

60. उस की जाति के प्रमुखों ने कहाः हमें

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मुझे अल्लाह ने जिस मार्ग दर्शन और ज्ञान के साथ भेजा है वह उस वर्षा के समान है जो किसी भूमि में हुई। तो उस का कुछ भाग अच्छा था जिस ने पानी लिया और उस से बहुत सी घास और चारा उगाया। और कुछ कड़ा था जिस ने पानी रोक लिया तो लोगों को लाभ हुआ और उस से पिया और सींचा। और कुछ चिकना था, जिस ने न पानी रोका न घास उपजाई। तो यही उस की दशा है जिस ने अल्लाह के धर्म को समझा और उसे सीखा तथा सिखाया। और उस की जिस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया और न अल्लाह के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जिस के साथ मुझे भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी-79)

2 बताया जाता है कि नूह (अलैहिस्सलाम) प्रथम मनु आदम (अलैहिस्सलाम) के दसवें वंश में थे। उन से कुछ पहले तक लोग इस्लाम पर चले आ रहे थे। फिर अपने धर्म से फिर गये और अपने पुनीत पूर्वजों की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे। तब अल्लाह ने नूह को भेजा। किन्तु कुछ के सिवा किसी ने उन की बात नहीं मानी। अन्ततः सब डुबो दिये गये। फिर नूह के तीन पुत्रों से मानव वंश चला इसी लिये उन को दूसरा आदम भी कहा जाता है। (देखिये सूरह नूह, आयतः 71)

लगता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

61. उस ने कहाः हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ। परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ। और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अल्लाह की ओर से उन चीज़ों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अल्लाह की दया के योग्य हो जाओ??

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

64. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अँधे थे।

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. (और इसी प्रकार) आद[1] की ओर उन के भाई हूद को (भेजा)। उस ने कहाः हे मेरी जाति! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैज्ञा से) नहीं डरते?

1 नूह की जाति के पश्चात् अरब में आद जाति का उत्थान हुआ। जिस का निवास स्थान अहक़ाफ़ का क्षेत्र था। जो हिजाज़ तथा यमामा के बीच स्थित है। उन की आबादियाँ उमान से हज़रमौत और ईराक़ तक फैली हुई थीं।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾

66. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों में समझ रहे हैं।

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾

67. उस ने कहाः हे मेरी जाति! मुझ में कोई ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾

68. मैं तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

69. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे? तथा याद करो कि अल्लाह ने नूह की जाति के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अतः अल्लाह के पुरस्कारों को याद[1] करो। संभवतः तुम सफल हो जाओगे।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧٠﴾

70. उन्हों ने कहाः क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अल्लाह की इबादत (वंदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं? तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ

71. उस ने कहाः तुम पर तुम्हारे

1 अर्थात उस के आज्ञाकारी तथा कृतज्ञ बनो।

وَّغَضَبٌ ۚ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

पालनहार का प्रकोप और क्रोध आ पड़ा है। क्या तुम मुझ से कुछ (मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो जिन का तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख दिया है। जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है? तो तुम (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. फिर हम ने उसे और उस के साथियों को बचा लिया। तथा उन की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों (आदेशों) को झुठला दिया था। और वह ईमान लाने वाले नहीं थे।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

73. और (इसी प्रकार) समूद[1] (जाति) के पास उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहाः हे मेरी जाति! अल्लाह की (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण (चमत्कार) आ गया है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार[2] है। अतः इसे अल्लाह की धरती में चरने के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें दुखदायी यातना घेर लेगी।

---

1 समूद जाति अरब के उस क्षेत्र में रहती थी जो हिजाज़ तथा शाम के बीच «वादिये-कुर» तक चला गया है। जिस को आज ((अल उला)) कहते हैं। इसी को दूसरे स्थान पर «अलहिज्र» भी कहा गया है।

2 समूद जाति ने अपने नबी सालेह अलैहिस्सलाम से यह माँग की थी किः पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दें। और सालेह अलैहिस्सलाम की प्रार्थना से अल्लाह ने उन की यह माँग पूरी कर दी। (इब्ने कसीर)

74. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

وَاذْكُرُوٓا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ ٱلْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوٓا ءَالَآءَ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾

75. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थेः क्या तुम विश्वास रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्हों ने कहाः निश्चय जिस (संदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।

قَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِۦ لِلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ قَالُوٓا إِنَّا بِمَآ أُرْسِلَ بِهِۦ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾

76. (तो इस पर) घमंडियों[1] ने कहाः हम तो जिस का तुम ने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا بِٱلَّذِىٓ ءَامَنتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ﴿٧٦﴾

77. फिर उन्हों ने ऊँटनी को बध कर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहाः हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।

فَعَقَرُوا ٱلنَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَٰصَٰلِحُ ٱئْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾

78. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

فَأَخَذَتْهُمُ ٱلرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ جَٰثِمِينَ ﴿٧٨﴾

79. तो सालेह ने उन से मुँह फेर लिया और

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ

---

1 अर्थात अपने संसारिक सुखों के कारण अपने बड़े होने का गर्व था।

رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٧٩

कहाः हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के उपदेश पहुँचा दिये थे और मैं ने तुम्हारा भला चाहा। परन्तु तुम उपकारियों से प्रेम नहीं करते।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٠

80. और हम ने लूत[1] को भेजा। जब उस ने अपनी जाति से कहाः क्या तुम ऐसी निर्लज्जा का काम कर रहे हो जो तुम से पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है?

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۚ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝٨١

81. तुम स्त्रियों को छोड़ कर कामवासना की पूर्ति के लिये पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघने वाली जाति[2]हो।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٨٢

82. और उस की जाति का उत्तर बस यह था कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٨٣

83. हम ने उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा बचा लिया, वह पीछे रह जाने वाली थी।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٨٤

84. और हम ने उन पर (पत्थरों) की वर्षा कर दी। तो देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा रहा?

---

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। और वह जिस जाति के मार्गदर्शन के लिये भेजे गये थे वह उस क्षेत्र में रहती थी जहाँ अब «मृत सागर» स्थित है। उस का नाम भाष्यकारों ने सदूम बताया है।

2 लूत अलैहिस्सलाम की जाति ने निर्लज्जा और बालमैथुन की कुरीति बनाई थी जो मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध था। आज रिसर्च से पता चला कि यह विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण है जिस में विशेष कर «एड्स» के रोगों का वर्णन करते हैं। परन्तु आज पश्चिमि देश दुबारा उस अंधकार युग की ओर जा रहे हैं। और इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम दे रखा है।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ
جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

85. तथा मद्यन[1] की ओर हम ने उस के भाई शुऐब को रसूल बना कर भेजा। उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का खुला तर्क (प्रमाण) आ गया है। अतः नाप और तौल पुरी करो और लोगों की चीज़ों में कमी न करो। तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात् उपद्रव न करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ईमान वाले हो।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ
وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ
وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ
قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

86. तथा प्रत्येक मार्ग पर लोगों को धमकाने के लिये न बैठो और उन्हें अल्लाह की राह से न रोको जो उस पर ईमान लाये[2] हैं। और उसे टेढ़ा न बनाओ, तथा उस समय को याद करो जब तुम थोड़े थे, तो तुम्हें अल्लाह ने अधिक कर दिया। तथा देखो कि उपद्रवियों का परिणाम क्या हुआ?

وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا

87. और यदि तुम्हारा एक समुदाय उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं

---

1 मद्यन् एक क़बीले का नाम था। और उसी के नाम पर एक नगर बस गया जो हिजाज़ के उत्तर-पश्चिम तथा फ़लस्तीन के दक्षिण में लाल सागर और अक़्बा खाड़ी के किनारे पर रहता था। यह लोग व्यापार करते थे प्राचीन व्यापार राजपथ, लाल सागर के किनारे यमन से मक्का तथा यंबुअ होते हुये सीरिया तक जाता था।

2 जैसे मक्का वाले मक्का के बाहर से आने वालों को क़ुर्आन सुनने से रोका करते थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादूगर कह कर आप के पास जाने से रोकते थे। परन्तु उन की एक न चली, और क़ुर्आन लोगों के दिलों में उतरता और इस्लाम फैलता गया। इस से पता चलता है कि नबियों की शिक्षाओं के साथ उन की जातियों ने एक जैसा व्यवहार किया।

بِالَّذِيٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

भेजा गया हूँ और दूसरा ईमान नहीं लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे। और वह उत्तम न्याय करने वाला है।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۗ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾

88. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें घमंड था कहा कि हे शुऐब! हम तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने नगर से अवश्य निकाल देंगे। अथवा तुम सब को हमारे धर्म में अवश्य वापिस आना होगा। (शुऐब) ने कहाः क्या यदि हम उसे दिल से न मानें तो?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۗ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۗ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۗ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾

89. हम ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस के पश्चात् वापिस आ गये, जब कि हमें अल्लाह ने उस से मुक्त कर दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं कि उस में फिर आ जायें, परन्तु यह कि हमारा पालनहार चाहता हो। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है, अल्लाह ही पर हमारा भरोसा है। हे हमारे पालनहार! हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दे। और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90. तथा उस की जाति के काफ़िर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम लोग शुऐब का अनुसरण करोगे तो वस्तुतः तुम लोगों का उस समय नाश हो जायेगा।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾

91. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया फिर भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

92. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया (उन की यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾

93. तो शुऐब उन से विमुख हो गया, तथा कहाः हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये, तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो काफ़िर जाति (के विनाश) पर कैसे शोक करूँ?

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾

94. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नबी भेजा, तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दुःख में ग्रस्त कर दिया कि संभवतः वह विन्ती करें।[1]

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾

95. फिर हम ने आपदा को सुख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये, और उन्हों ने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दुःख तथा सुख पहुँचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩٥﴾

96. और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि सभी नबी अपनी जाति में पैदा हुये। सब अकेले धर्म का प्रचार करने के लिये आये। और सब का उपदेश एक था कि अल्लाह की वंदना करो उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। सब ने सत्कर्म की प्रेरणा दी, और कुकर्म के दुष्परिणाम से सावधान किया। सब का साथ निर्धनों तथा निर्बलों ने दिया। प्रमुखों और बड़ों ने उन का विरोध किया। नबियों का विरोध भी उन्हें धमकी तथा दुःख दे कर किया गया। और सब का परिणाम भी एक प्रकार हुआ, अर्थात उन को अल्लाह की यातना ने घेर लिया। और यही सदा इस संसार में अल्लाह का नियम रहा है।

परन्तु उन्हों ने झुठला दिया। अतः हम ने उन के कर्तूतों के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया।

97. तो क्या नगर वासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाये, और वह पड़े सो रहे हों?

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝٩٧

98. अथवा नगरवासी निश्चिन्त हो गये हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝٩٨

99. तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चिन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाश होने वाली जाति ही निश्चिन्त होती है।

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۝٩٩

100. तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली जो धरती के वारिस होते हैं उस के अगले वासियों के पश्चात? कि यदि हम चाहें, तो उन के पापों के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर दें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वह कोई बात ही न सुन सकें।?

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ أَهْلِهَا أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝١٠٠

101. (हे नबी!) यह वह नगर हैं जिन की कथा हम आप को सुना रहे हैं। इन सब के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला[1] चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝١٠١

1 अर्थात सत्य का प्रमाण आने से पहले झुठला दिया था उस के पश्चात् भी अपनी हठधर्मी से उसी पर अड़े रहे।

के दिलों पर मुहर लगाता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ ۖ وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

102. और हम ने उन में अधिक्तर को वचन पर स्थित नहीं पाया।[1] तथा हम ने उन में अधिक्तर को अवज्ञाकारी पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

103. फिर हम ने इन रसूलों के पश्चात् मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फ़िरऔन[2] और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्हों ने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया, तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ?

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

104. तथा मूसा ने कहाः हे फ़िरऔन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (संदेश वाहक) हूँ।

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَن لَّا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾

105. मेरे लिये यही योग्य है कि अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कोई बात न करूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ। इस लिये मेरे साथ बनी इस्राईल[3] को जाने दे।

---

1 इस से उस प्रण (वचन) की ओर संकेत है, जो अल्लाह ने सब से «आदि काल» में लिया था कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार (पूज्य) नहीं हूँ? तो सब ने इसे स्वीकार किया था। (देखियेः सूरह आराफ़, आयत, 172)

2 मिस्र के शासकों की उपाधि फ़िरऔन होती थी। यह ईसा पूर्व डेढ़ हज़ार वर्ष की बात है। उन का राज्य शाम से लीबिया तथा हब्शा तक था। फ़िरऔन अपने को सब से बड़ा पूज्य मानता था और लोग भी उस की पूजा करते थे। उस की ओर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को एक अल्लाह की इबादत का संदेश देकर भेजा कि पूज्य तो केवल अल्लाह है उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

3 बनी इस्राईल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के युग में मिस्र आये थे। तथा चार सौ वर्ष का युग बड़े आदर के साथ व्यतीत किया। फिर उन के कुकर्मों के कारण फ़िरऔन

106. उस ने कहाः यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।	قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٠٦﴾
107. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।	فَأَلْقٰى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾
108. और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।	وَّنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِينَ ﴿١٠٨﴾
109. फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहाः वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।	قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾
110. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?	يُّرِيدُ أَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾
111. सब ने कहाः उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।	قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حٰشِرِينَ ﴿١١١﴾
112. जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।	يَأْتُوكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾
113. और जादूगर फ़िरऔन के पास आ गये। उन्हों ने कहाः हमें निश्चय पुरस्कार मिलेगा, यदि हम ही विजयी हो गये तो?	وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِينَ ﴿١١٣﴾
114. फ़िरऔन ने कहाः हाँ। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।	قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

और उस की जाति ने उन को अपना दास बना लिया। जिस के कारण मूसा (अलैहिस्सलाम) ने बनी इस्राईल को मुक्त करने की माँग की। (इब्ने कसीर)

قَالُوا يٰمُوسٰى إِمَّآ أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّآ أَنْ نَّكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

115. जादूगरों ने कहाः हे मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे, या हमें फेंकना होगा?

قَالَ أَلْقُوا ۚ فَلَمَّآ أَلْقَوْا سَحَرُوٓا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

116. मूसा ने कहाः तुम्हीं फेंको। तो उन्हों ने जब (रस्सियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوسٰٓى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾

117. तो हम ने मूसा को वह्यी की, कि अपनी लाठी फेंको। और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾

118. अतः सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ हो कर[1] रह गया।

فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صٰغِرِينَ ﴿١١٩﴾

119. अन्ततः वह पराजित कर दिये गये, और तुच्छ तथा अपमानित हो कर रह गये।

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِينَ ﴿١٢٠﴾

120. तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देख कर सज्दे में गिर गये।

قَالُوٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٢١﴾

121. उन्हों ने कहाः हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।

رَبِّ مُوسٰى وَهٰرُونَ ﴿١٢٢﴾

122. जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ أَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ إِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَآ أَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

123. फ़िरऔन ने कहाः इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर ईमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस

---

1 क़ुर्आन ने अब से तेरह सौ वर्ष पहले यह घोषणा कर दी थी कि जादू तथा मंत्र-तंत्र निर्मूल हैं।

(के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।

124. मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूँगा।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

125. उन्हों ने कहाः हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾

126. तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गईं? तो हम उन पर ईमान ला चुके हैं। हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे! और हमें इस दशा में (संसार से) उठा कि तेरे आज्ञाकारी रहें।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۗ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

127. और फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहाः क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों[1] को छोड़ दें? उस ने कहाः हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۗ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

128. मूसा ने अपनी जाति से कहाः अल्लाह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अल्लाह की है, वह

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ

1 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मिस्री अनेक देवताओं की पूजा करते थे। जिन में सब से बड़ा देवताः सूर्य था। जिसे «रूअ», कहते थे। और राजा को उसी का अवतार मानते थे, और उस की पूजा, और उस के लिये सजदा करते थे जिस प्रकार अल्लाह के लिये सजदा किया जाता है।

عِبَادِهٖ ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ
مَا جِئْتَنَا ۗ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾

129. उन्हों ने कहाः हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताये जा रहे हैं)! मूसा ने कहाः समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ
مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

130. और हम ने फ़िरऔन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ اَلَآ
اِنَّمَا طٰۤئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾

131. तो जब उन पर सम्पन्नता आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो! उन का बुरा सगुन तो अल्लाह के पास[1] था, परन्तु अधिक्तर लोग इस का ज्ञान नहीं रखते।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا
بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

132. और उन्हों ने कहाः तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।

1 अर्थात अल्लाह ने प्रत्येक दशा के लिये एक नियम बना दिया है जिस के अनुसार कर्मों के परिणाम सामने आते हैं चाहे वह अशुभ हों या न हों सब अल्लाह के निर्धारित नियमअनुसार होते हैं।

133. अन्ततः हम ने उन पर तूफ़ान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल और जुऐं एवं मेढक और रक्त की वर्षा भेजी। अलग अलग निशानियाँ, फिर भी उन्हों ने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾

134. और जब उन पर यातना आ पड़ी तो उन्हों ने कहाः हे मूसा! तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَا مُوسَى ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ لَئِن كَشَفْتَ عَنَّا
الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿١٣٤﴾

135. फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक उन्हें पहुँचना था, तो अकस्मात् वह वचन भंग करने लगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُم
بَالِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿١٣٥﴾

136. अन्ततः हम ने उन से बदला लिया और उन्हें सागर में डुबो दिया इस कारण कि उन्हों ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया और उन से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फ़िरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलें छप्परों पर चढ़ा रही थीं।[1]

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٣٦﴾

137. और हम ने उस जाति (बनी

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ

1 अर्थातः उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग़ बग़ीचे।

مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

इस्राईल) को जो निर्बल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पश्चिमों तथा पूर्वों का जिस में हम ने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नबी!) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया, उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फ़िरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलें छप्परों पर चढ़ा रहे थे।[1]

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوا يَا مُوسَى اجْعَل لَّنَا إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

138. और बनी इस्राईल को हम ने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से हो कर गये जो अपनी मूर्तियों की पूजा कर रही थी, उन्हों ने कहाः हे मूसा! हमारे लिये वैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य हैं। मूसा ने कहाः वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾

139. यह लोग जिस रीति में हैं उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।

قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾

140. मूसा ने कहाः क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उस ने तुम्हें सारे संसारों के वासियों पर प्रधानता दी है?

وَإِذْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ

141. तथा उस समय को याद करो, जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन की जाति से बचाया। वह तुम्हें घोर यातना दे रहे

1 अर्थातः उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग़ बग़ीचे।

نِسَآءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾

थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी।

وَوَٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَٰثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَٰتُ رَبِّهِۦٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَٰرُونَ ٱخْلُفْنِى فِى قَوْمِى وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾

142. और हम ने मूसा को तीस रातों का वचन[1] दिया। और उस की पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे पालनहार की निर्धारित अवधि चालीस रात पूरी हो गयी। तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहाः तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि रहना तथा सुधार करते रहना, और उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ قَالَ رَبِّ أَرِنِىٓ أَنظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرَىٰنِى وَلَٰكِنِ ٱنظُرْ إِلَى ٱلْجَبَلِ فَإِنِ ٱسْتَقَرَّ مَكَانَهُۥ فَسَوْفَ تَرَىٰنِى ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُۥ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُۥ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحَٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٣﴾

143. और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर आ गया, और उस के पालनहार ने उस से बात की, तो उस ने कहाः हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने आप को दिखा दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ। अल्लाह ने कहाः तू मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की ओर देख। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन कर सकेगा। फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया। और मूसा निश्चेत हो कर गिर गया। और जब चेतना में आया, तो उस ने कहाः तू पवित्र है! मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सर्व

1 अर्थात तूर पर्वत पर आकर अल्लाह की इबादत करने और धर्मविधान प्रदान करने के लिये।

प्रथम[1] ईमान लाने वालों में से हूँ।

144. अल्लाह ने कहाः हे मूसा! मैं ने तुझे लोगों पर प्रधानता दे कर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अतः जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

145. और हम ने उस के लिये तख़्तियों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो, और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करें। और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾

146. मैं उन्हें[2] अपनी आयतों (निशानियों) से फेर[3] दूँगा जो धरती में अवैध अभिमान करते हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेंगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾

1 इस से प्रत्यक्ष हुआ कि कोई व्यक्ति इस संसार में रहते हुये अल्लाह को नहीं देख सकता और जो ऐसा कहते हैं वह शैतान के बहकावे में हैं। परन्तु सहीह हदीस से सिद्ध होता है कि आख़िरत में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे।

2 अर्थात तुम्हें उन पर विजय दूँगा जो अवैज्ञाकारी हैं, जैसे उस समय की अमालिक़ा इत्यादि जातियों पर।

3 अर्थात जो जान बूझ कर अवैज्ञा करेगा अल्लाह का नियम यही है कि वह तर्कों तथा प्रकाशों से प्रभावित होने की योग्यता खो देगा। इस का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह किसी को अकारण कुपथ पर बाध्य कर देता है।

उन्हों ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾

147. और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

148. और मूसा की जाति ने उस के (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली, जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्हों ने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात[1] करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्हों ने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

149. और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपथ हो गये हैं, तो कहने लगेः यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया नहीं की, और हमें क्षमा नहीं किया, तो हम अवश्य विनाशों में हो जायेंगे।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ

150. और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुःख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहाः तुम ने मेरे

1 अर्थात उस से एक ही प्रकार की ध्वनि क्यों निकलती है। बाबिल और मिस्र में भी प्राचीन युग में गाय-बैल की पूजा हो रही थी। और यदि बाबिल की सभ्यता को प्राचीन मान लिया जाये तो यह विचार दूसरे देशों में वहीं से फैला होगा।

رَبِّكُمْ ۚ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾

पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया। क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहले ही जल्दी कर[1] गये। तथा उस ने लेख तख़्तियाँ डाल दीं, तथा अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहाः हे मेरे माँ जाये भाई! लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अतः तू शत्रुओं को मुझ पर हँसने का अवसर न दे। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾

151. मूसा ने कहाः[2] हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दे। और हमें अपनी दया में प्रवेश दे। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

152. जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे संसारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

153. और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चात् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ

154. फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उस ने लेख तख़्तियाँ उठा

---

1 अर्थात मेरे आने की प्रतीक्षा नहीं की।

2 अर्थात जब यह सिद्ध हो गया कि मेरा भाई निर्दोष है।

وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

लीं, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हों।

وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾

155. और मूसा ने हमारे निर्धारित[1] समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर[2] लिया तो मूसा ने कहाः हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुकर्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्बोध कर गये? यह[3] तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे, और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

156. और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आये। उस (अल्लाह) ने कहाः मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये

---

1 अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया था कि वह तूर पर्वत के पास बछड़े की पूजा से क्षमा याचना के लिये कुछ लोगों को लायें। (इब्ने कसीर)

2 जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने यह माँग की कि हम को हमारी आँखों से अल्लाह को दिखा दे। अन्यथा हम तेरा विश्वास नहीं करेंगे। उस समय उन पर भूकम्प आया। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात बछड़े की पूजा।

है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा ज़कात देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٧﴾

157. जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी[1] हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे, और दुराचार से रोकेंगे। और उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल (वैध)तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (कुर्आन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

158. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि

---

1 अर्थात बनी इस्राईल से नहीं। इस से अभिप्राय अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिन के आगमन की भविष्यवाणी तौरात, इंजील तथा दूसरे धर्म शास्त्रों में पाई जाती है। यहाँ पर आप की तीन विशेषताओं की चर्चा की गयी हैः

1. आप सदाचार का आदेश देंगे तथा दुराचार से रोकेंगे।

2. स्वच्छ चीज़ों के प्रयोग को उचित तथा मलीन चीज़ों के प्रयोग को अनुचित घोषित करेंगे।

3. अहले किताब जिन कड़े धार्मिक नियमों के बोझ तले दबे हुये थे उन्हें उन से मुक्त करेंगे। और सरल इस्लामी धर्मविधान प्रस्तुत करेंगे, और उन के आगमन के पश्चात लोक-परलोक की सफलता आप ही के धर्मविधान के अनुसरण में सीमित होगी।

جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِ وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग दर्शन पा जाओ।[1]

وَمِنْ قَوْمِ مُوسٰى أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾

159. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلٰى مُوسٰى إِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ

160. और[2] हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर वह्यी भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल माँगा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो,

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम के नबी किसी विशेष जाति तथा देश के नबी नहीं हैं, प्रलय तक के लिये पूरी मानव जाति के नबी हैं। यह सब को एक अल्लाह की वंदना कराने के लिये आये हैं, जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं। आप का चिन्ह अल्लाह पर तथा सब प्राचीन पुस्तकों और नबियों पर ईमान है। आप का अनुसरण करने का अर्थ यह है कि अब उसी प्रकार अल्लाह की पूजा-अराधना करो जैसे आप ने की और बताई है। और आप के लाये हुये धर्म विधान का पालन करो।

2 इस से अभिप्राय वह लोग हैं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के लाये हुये धर्म पर क़ायम थे और आने वाले नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आये तो तुरन्त आप पर ईमान लाये, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि।

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

तो उस से बारह स्रोत उबल पड़े, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और उन पर बादलों की छाँव की, और उन पर मन्न तथा सल्वा उतारा। (हम ने कहा): इन स्वच्छ चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की हैं, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ۭ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

161. और जब उन (बनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मक़्दिस) में बस जाओ, और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे, और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾

162. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बात को दूसरी बात से[1] बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।

وَسْـَٔـلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا

163. तथा (हे नबी!) इन से उस नगरी के सम्बंध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्त (शनिवार) के

1 और चूतड़ों के बल खिसकते और यह कहते हुये प्रवेश किया कि गेहूँ मिले। (सहीह बुख़ारी- 4641)

وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ ۚ نَبْلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾

दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन[1] कर रहे थे, जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्त के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्त का दिन न हो तो नहीं आती थीं। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

164. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अल्लाह (उन की अवज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है? उन्होंने कहाः तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जायें।[2]

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾

165. फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया, जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी यातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।

فَلَمَّا عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

166. फिर जब उन्हों ने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर

---

1 क्यों कि उन के लिये यह आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे। अधिकांश भाष्यकारों ने उस नगरी का नाम ईला (ईलात) बताया है जो कुलज़ुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

2 आयत में यह संकेत है कि बुराई को रोकने से निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि हो सकता है कि किसी के दिल में बात लग ही जाये, और यदि न भी लगे तो अपना कर्तव्य पूरा हो जायेगा।

हो जाओ।

167. और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देते रहेंगे।[1] निःसंदेह आप का पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَن يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٧﴾

168. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे, और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाईयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्मों से) रुक जायें।

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ مِّنْهُمُ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَبَلَوْنَاهُم بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

169. फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी हो कर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि उसी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक का दृढ़ वचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सच्च ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَٰذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِن يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهُ يَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِم مِّيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لَّا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

1 यह चेतावनी बनी इस्राईल को बहुत पहले से दी जा रही थी। ईसा (अलैहिस्सलाम) से पूर्व आने वाले नबियों ने बनी ईस्राईल को डराया कि अल्लाह की अवैज्ञा से बचो। और स्वयं ईसा ने भी उन को डराया परन्तु वह अपनी अवैज्ञा पर बाक़ी रहे जिस के कारण अल्लाह की यातना ने उन्हें घेर लिया और कई बार बैतुल मक़्दिस को उजाड़ा गया, और तौरात जलाई गई।

अध्ययन कर चुके हैं? और परलोक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों। तो क्या वह इतना भी नहीं[1] समझते?

170. और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज़ की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत् नहीं करते।

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتٰبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۭ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

171. और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छतरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से थाम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

172. तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनायाः क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहाः क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी[2] हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلٰى أَنْفُسِهِمْ ۚ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوا بَلٰى ۛ شَهِدْنَا ۛ أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِينَ ﴿١٧٢﴾

1 इस आयत में यहूदी विद्वानों की दुर्दशा बताई गयी है कि वह तुच्छ संसारिक लाभ के लिये धर्म में परिवर्तन कर देते थे और अवैध को वैध बना लेते थे। फिर भी उन्हें यह गर्व था कि अल्लाह उन्हें अवश्य क्षमा कर देगा।

2 यह उस समय की बात है जब आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के पश्चात् उन की सभी संतान को जो प्रलय तक होगी, उन की आत्माओं से अल्लाह ने अपने पालनहार होने की गवाही ली थी। (इब्ने कसीर)

173. अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की संतान थे। तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश[1] करेगा?

أَوْ تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ أَشْرَكَ ءَابَآؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۢ بَعْدِهِمْ ۖ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

174. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾

175. और उन्हें उस की दशा पढ़ कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।

وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ٱلَّذِىٓ ءَاتَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا فَٱنسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ ٱلشَّيْطَٰنُ فَكَانَ مِنَ ٱلْغَاوِينَ ﴿١٧٥﴾

176. और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देते, परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हाँको तब भी जीभ निकाले हाँपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हाँपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवतः वह सोच विचार करें।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَٰهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُۥٓ أَخْلَدَ إِلَى ٱلْأَرْضِ وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ ۚ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ ٱلْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَث ۚ ذَّٰلِكَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا ۚ فَٱقْصُصِ ٱلْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾

177. उन की उपमा कितनी बुरी है

سَآءَ مَثَلًا ٱلْقَوْمُ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद की आस्था सभी मानव का स्वभाविक धर्म है। कोई यह नहीं कह सकता की मैं अपने पूर्वजों की गुमराही से गुमराह हो गया। यह स्वभाविक आन्तरिक आवाज़ है जो कभी दब नहीं सकती।

وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया! और वे अपने ही ऊपर अत्याचार[1] कर रहे थे।

مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

178. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी राह पा सकता है। और जिसे कुपथ कर दे[2] तो वही लोग असफल हैं।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

179. और बहुत से जिन्न और मानव को हम ने नरक के लिये पैदा किया है। उन के पास दिल हैं जिन से सोच विचार नहीं करते, तथा उन की आँखें हैं जिन से[3] देखते नहीं, और कान हैं जिन से सुनते नहीं। वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं, यही लोग अचेतना में पड़े हुये हैं।

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾

180. और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो। और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों

---

1 भाष्यकारों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग और प्राचीन युग के कई ऐसे व्यक्तियों का नाम लिया है जिन का यह उदाहरण हो सकता है। परन्तु आयत का भावार्थ बस इतना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिस में यह अवगुण पाये जाते हों उस की दशा यही होती है, जिस की जीभ से माया मोह के कारण राल टपकती रहती है, और उस की लोभाग्नि कभी नहीं बुझती।

2 कुर्आन ने बार बार इस तथ्य को दुहराया है कि मार्गदर्शन के लिये सोच विचार की आवश्यक्ता है। और जो लोग अल्लाह की दी हुई विचार शक्ति से काम नहीं लेते वही सीधी राह नहीं पाते। यही अल्लाह के सुपथ और कुपथ करने का अर्थ है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि सत्य को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं: ध्यान और ज्ञान। ध्यान यह है कि अल्लाह की दी हुयी विचार शक्ति से काम लिया जाये। और ज्ञान यह है कि इस विश्व की व्यवस्था को देखा जाये और नबियों द्वारा प्रस्तुत किये हुये सत्य को सुना जाये, और जो इन दोनों से वंचित हो वह अन्धा बहरा है।

में परिवर्तन[1] करते हैं, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मों का कुफल दे दिया जायेगा।

181. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है, जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِۦ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमशः (विनाश तक) ऐसे पहुँचायेंगे कि उन्हें इस का ज्ञान नहीं होगा।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

183. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।

وَأُمْلِى لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِى مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾

184. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी[2] तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا۟ ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٨٤﴾

185. क्या उन्हों ने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है, उसे नहीं देखा?[3] और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर

أَوَلَمْ يَنظُرُوا۟ فِى مَلَكُوتِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَىْءٍ وَأَنْ عَسَىٰٓ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَىِّ حَدِيثٍۭ بَعْدَهُۥ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

---

1 अर्थात उस के गौणिक नामों से अपनी मूर्तियों को पुकारते हैं। जैसे अज़ीज़ से «उज़्ज़ा», और इलाह से «लात» इत्यादि।

2 साथी से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिन को नबी होने से पहले वही लोग "अमीन" कहते थे।

3 अर्थात यदि यह विचार करें, तो इस पूरे विश्व की व्यवस्था और उस का एक एक कण अल्लाह के अस्तित्व और उस के गुणों का प्रमाण है। और उसी ने मानव जीवन की व्यवस्था के लिये नबियों को भेजा है।

इस (कुर्आन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेंगे?

186. जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शक नहीं। और उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये छोड़ देता है।

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١٨٦

187. (हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर वही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु[1] अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۗ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘؕ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۗ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٨٧

188. आप कह दें कि मुझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝١٨٨

189. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव[2] से की, और

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ

1 मक्का के मिश्रणवादी आप से उपहास स्वरूप प्रश्न करते थे, कि यदि प्रलय होना सत्य है, तो बताओ वह कब होगी?

2 अर्थात आदम अलैहिस्सलाम से।

उसी से उस का जोड़ा बनाया, ताकि उस से उसे संतोष मिले। फिर जब किसी[1] ने उस (अपनी स्त्री) से सहवास किया तो उस (स्त्री) को हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के साथ वह चलती फिरती रही, फिर जब बोझल हो गयी तो दोनों (पति-पत्नी) ने अपने पालनहार से प्रार्थना कीः यदि तू हमें एक अच्छा बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٨٩﴾

190. और जब उन दोनों को (अल्लाह ने) एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया तो अल्लाह ने जो प्रदान किया उस में दूसरों को उस का साझी बनाने लगे। तो अल्लाह इन की शिर्क[2] की बातों से बहुत ऊँचा है।

فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا ۚ فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٩٠﴾

191. क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और वह स्वयं पैदा किये हुये हैं?

أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿١٩١﴾

192. तथा न उन की सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं।?

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٢﴾

193. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنتُمْ صَامِتُونَ ﴿١٩٣﴾

1 अर्थात जब मानव जाति के किसी पुरुष ने स्त्री के साथ सहवास किया।

2 इन आयतों में यह बताया गया है कि मिश्रणवादी स्वस्थ बच्चे अथवा किसी भी आवश्यक्ता या आपदा निवारण के लिये अल्लाह ही से प्रार्थना करते हैं। और जब स्वस्थ सुन्दर बच्चा पैदा हो जाता है तो देवी देवताओं, और पीरों के नाम चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं। और इसे उन्हीं की दया समझते हैं।

उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

194. वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दास हैं। अतः तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं?।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ ﴿١٩٥﴾

195. क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आँखें हैं जिन से देखती हों? अथवा कान हैं जिन से सुनती हों? आप कह दें कि अपने साझियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾

196. वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है। जिस ने यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

197. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

198. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं, जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

199. (हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें। तथा

अज्ञानियों की ओर ध्यान[1] न दें।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝٢٠٠

200. और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُّبْصِرُونَ ۝٢٠١

201. वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौंक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝٢٠٢

202. और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَآ أَتَّبِعُ مَا يُوحٰٓى إِلَيَّ مِنْ رَّبِّي ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُونَ ۝٢٠٣

203. और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर वह्यी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से, (प्रमाण) हैं, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝٢٠٤

204. और जब क़ुर्आन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया[2] की जाये।

---

1 हदीस में है कि अल्लाह ने इसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बारे में उतारा है। (देखियेः सहीह बुख़ारी- 4643)

2 यह क़ुर्आन की एक विशेषता है कि जब भी उसे पढ़ा जाये तो मुसलमान पर

205. और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝

206. वास्तव में जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के समीप हैं वह उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, और उसी को सज्दा[1] करते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝

अनिवार्य है कि वह ध्यान लगा कर अल्लाह का कलाम सुने। हो सकता है कि उस पर अल्लाह की दया हो जाये। काफ़िर कहते थे कि जब कुर्आन पढ़ा जाये तो सुनो नहीं, बल्कि शोर गुल करो। (देखियेः सूरह हा,मीम सज्दा-26)

1 इस आयत के पढ़ने तथा सुनने वाले को चाहिये कि सज्दा तिलावत करें।

सूरह अन्फ़ाल - 8

सूरह अन्फ़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 75 आयतें हैं।

- यह सूरह सन् 2 हिज्री में बद्र के युद्ध के पश्चात् उतरी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब काफ़िरों ने मारने की योजना बनाई और आप मदीना हिज़रत कर गये तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्य को पत्र लिखा और यह धमकी दी कि आप उन को मदीना से निकाल दें अन्यथा वह मदीना पर अक्रमण कर देंगे। अब मुसलमानों के लिये यही उपाय था कि शाम के व्यापारिक मार्ग से अपने विरोधियों को रोक दिया जाये। सन् 2 हिज्री में मक्के का एक बड़ा क़ाफ़िला शाम से मक्का वापिस हो रहा था। जब वह मदीना के पास पहुँचा तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ उस की ताक में निकले। मुसलमानों के भय से क़ाफ़िले का मुख्या अबू सुफ़्यान ने एक व्यक्ति को मक्का भेज दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तुम्हारे क़ाफ़िले की ताक में हैं। यह सुनते ही एक हज़ार की सेना निकल पड़ी। अबू सुफ़्यान दूसरी राह से बच निकला। परन्तु मक्का की सेना ने यह सोचा कि मुसलमानों को सदा के लिये कुचल दिया जाये। और इस प्रकार मुसलमानों से बद्र के क्षेत्र में सामना हुआ तथा दोनों के बीच यह प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष हुआ जिस में मक्का के काफ़िरों के बड़े बड़े 70 व्यक्ति मारे गये और इतने ही बंदी बना लिये गये।
- यह इस्लाम का प्रथम ऐतिहासिक युद्ध था जिस में सत्य की विजय हुई। इस लिये इस में युद्ध से संबंधित कई नैतिक शिक्षायें दी गई हैं। जैसे यह की जिहाद धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये, धन के लोभ, तथा किसी पर अत्याचार के लिये नहीं।
- विजय होने पर अल्लाह का आभारी होना चाहिये। क्यों कि विजय उसी की सहायता से होती है। अपनी वीरता पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- जो ग़ैर मुस्लिम अत्याचार न करें उन पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। और जिन से संधि हो उन पर धोखा दे कर नहीं आक्रमण करना चाहिये और न ही उन के विरुद्ध किसी की सहायता करनी चाहिये।

- शत्रु से जो सामान (ग़नीमत) मिले उसे अल्लाह का माल समझना चाहिये और उस के नियमानुसार उस का पाँचवाँ भाग निर्धनों और अनाथों की सहायता के लिये ख़र्च करना चाहिये जो अनिवार्य है।
- इस में युद्ध के बंदियों को भी शिक्षा प्रद शैली में संबोधित किया गया है।
- इस सूरह से इस्लामी जिहाद की वास्तविक्ता की जानकारी होती हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۗ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ①

1. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं। कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के हैं। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो[1] यदि तुम ईमान वाले हो।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ②

2. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल काँप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरह वर्ष तक मक्का के मिश्रणवादियों के अत्याचार सहन किये। फिर मदीना हिज्रत कर गये। परन्तु वहाँ भी मक्का वासियों ने आप को चैन नहीं लेने दिया। और निरन्तर आक्रमण आरंभ कर दिये। ऐसी दशा में आप भी अपनी रक्षा के लिये वीरता के साथ अपने 313 साथियों को लेकर बद्र के रणक्षेत्र में पहुँचे। जिस में मिश्रणवादियों की पराजय हुई। और कुछ सामान भी मुसलमानों के हाथ आया। जिसे इस्लामी परिभाषा में "माले ग़नीमत" कहा जाता है। और उसी के विषय में प्रश्न का उत्तर इस आयत में दिया गया है। यह प्रथम युद्ध हिज्रत के दूसरे वर्ष हुआ।

पर ही भरोसा रखते हों।

3. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُونَ ۝٣

4. वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।

أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝٤

5. जिस प्रकार[1] आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सत्य के साथ) निकाला। जब कि ईमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।

كَمَآ أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكٰرِهُونَ ۝٥

6. वह आप से सच्च (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।

يُجٰدِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝٦

7. तथा (वह समय याद करो) जब अल्लाह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा। और तुम चाहते थे कि निर्बल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।[2] परन्तु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सत्य को सिद्ध कर दे,

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ إِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللّٰهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِينَ ۝٧

1 अर्थात यह युद्ध के माल का विषय भी उसी प्रकार है, कि अल्लाह ने उसे अपना और अपने रसूल का भाग बना दिया। जिस प्रकार अपने आदेश से आप को युद्ध के लिये निकाला।

2 इस में निर्बल गिरोह व्यापारिक क़ाफ़िले को कहा गया है। अर्थात क़ुरैश मक्का का व्यापारिक क़ाफ़िला जो सीरिया की ओर से आ रहा था, या उन की सेना जो मक्का से आ रही थी।

और काफ़िरों की जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾

8. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दे। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾

9. जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गुहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहाः) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगातार एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा[1] हूँ।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

10. और अल्लाह ने यह इस लिये बता दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से होती है। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾

11. और वह समय याद करो जब अल्लाह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और

---

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बद्र के दिन कहाः यह घोड़े की लगाम थामे और हथियार लगाये जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आये हुये हैं। (देखियेः सहीह बुख़ारी- 3995)
इसी प्रकार एक मुसलमान एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था कि अपने ऊपर से घुड़सवार की आवाज़ सुनीः हैज़ुम (घोड़े का नाम) आगे बढ़। फिर देखा कि मुश्रिक उस के सामने चित गिरा हुआ है। उस की नाक और चेहरे पर कोड़े की मार का निशान है। फिर उस ने यह बात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बतायी। तो आप ने कहाः सच्च है। यह तीसरे आकाश की सहायता है। (देखियेः सहीह मुस्लिम- 1763)

(तुम्हारे) पाँव जमा[1] दे।

12. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फ़रिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफ़िरों के दिलों में भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानो!) तुम उन की गरदनों पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

13. यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अल्लाह उसे कड़ी यातना देने वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

14. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफ़िरों के लिये नरक की यातना (भी) है।

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

15. हे ईमान वालो! जब काफ़िरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

16. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अल्लाह के

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

---

1 बद्र के युद्ध के समय मुसलमानों की संख्या मात्र 313 थी। और सिवाये एक व्यक्ति के किसी के पास घोड़ा न था। मुसलमान डरे सहमे थे। जल के स्थान पर पहले ही शत्रु ने अधिकार कर लिया था। भूमि रेतीली थी जिस में पाँव धँस जाते थे। और शत्रु सवार थे। और उन की संख्या भी तीन गुणा थी। ऐसी दशा में अल्लाह ने मुसलमानों पर निद्रा उतार कर उन्हें निश्चन्त कर दिया और वर्षा करके पानी की व्यवस्था कर दी। जिस से भूमि भी कड़ी हो गई। और अपनी असफलता का भय जो शैतानी संशय था वह भी दूर हो गया।

प्रकोप में घिर जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

17. अतः (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया। और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा ईमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने[1] वाला है।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

18. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह काफ़िरों की चालों को निर्बल करने वाला है।

ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾

19. यदि तुम[2] निर्णय चाहते हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह ईमान वालों के साथ है।

إِن تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِن تَنتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَعُودُوا نَعُدْ وَلَن تُغْنِيَ عَنكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

20. हे ईमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ

1 आयत का भावार्थ यह है कि शत्रु पर विजय तुम्हारी शक्ति से नहीं हुई। इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रण क्षेत्र में कंकरियाँ लेकर शत्रु की सेना की ओर फेंकीं जो प्रत्येक शत्रु की आँख में पड़ गई। और वहीं से उन की पराजय का आरंभ हुआ तो उस धूल को शत्रु की आँखों तक अल्लाह ही ने पहुँचाया था। (इब्ने कसीर)

2 आयत में मक्का के काफ़िरों को संबोधित किया गया है जो कहते थे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस का निर्णय कब होगा? (देखियेः सूरह सज्दा, आयत-28)

وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾

रहो तथा उस के रसूल को। और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

21. तथा उन के समान[1] न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

22. वास्तव में अल्लाह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) हैं जो बहरे गूँगे हों, जो कुछ समझते न हों।

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

23. और यदि अल्लाह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता। और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे। और वह विमुख हैं ही।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

24. हे ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उस की ओर बुलाये जो तुम्हारी[2] (आत्मा) को जीवन प्रदान करे। और जान लो कि अल्लाह मानव और उस के दिल के बीच आड़े[3] आ जाता है। और निःसंदेह तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

25. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अत्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विश्वास रखो[4] कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

1 इस में संकेत अहले किताब की ओर है।

2 इस से अभिप्रेत क़ुर्आन तथा इस्लाम है। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात जो अल्लाह, और उस के रसूल की बात नहीं मानता, तो अल्लाह उसे मार्गदर्शन भी नहीं देता।

4 इस आयत का भावार्थ यह है कि अपने समाज में बुराईयों को न पनपने दो। अन्यथा जो आपदा आयेगी वह सर्वसाधारण पर आयेगी। (इब्ने कसीर)

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٢٦

26. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्बल समझे जाते थे। तुम डर रहे थे कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हे समर्थन दिया। और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ٢٧

27. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात[1] करो, जानते हुये।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ٢٨

28. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ٢٩

29. हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये विवेक[2] बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ٣٠

30. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफ़िर आप के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, ताकि आप को क़ैद कर लें। अथवा आप को वध कर दें, अथवा देश निकाला दे दें। तथा वे षड्यंत्र रच रहे थे,

---

1 अर्थात अल्लाह तथा उस के रसूल के लिये जो तुम्हारा दायित्व और कर्तव्य है उसे पूरा करो। (इब्ने कसीर)

2 विवेक का अर्थ हैः सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की शक्ति। कुछ ने फ़ुर्क़ान का अर्थ निर्णय लिया है अर्थात अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे विरोधियों के बीच निर्णय कर देगा।

और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय[1] सब से उत्तम है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

31. और जब उन को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं: हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहें तो इसी (कुर्आन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

32. तथा (याद करो) जब उन्हों ने कहा: हे अल्लाह! यदि यह[2] तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दुःखदायी यातना ला दे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

33. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

34. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (कॉबा) से रोक रहे हैं, जब कि वह उस के संरक्षक नहीं हैं। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आज्ञकारी हैं, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً

35. और अल्लाह के घर (कॉबा) के पास

1 अर्थात उन की सभी योजनाओं को असफल कर के आप को सुरक्षित मदीना पहुँचा दिया।

2 अर्थात कुर्आन। यह बात कुरैश के मुख्या अबू जहल ने कही थी जिस पर आगे की आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी- 4648)

وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

इन की नमाज़ इस के सिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें। तो अब[1] अपने कुफ़्र (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

36. जो काफ़िर हो गये वह अपना धन इस लिये ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन ख़र्च करते रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे। तथा जो काफ़िर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

37. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दे, यही क्षतिग्रस्त हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

38. (हे नबी!) इन काफ़िरों से कह दोः यदि वह रुक[2] गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जातियों की दुर्गत हो चुकी है।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ

39. हे ईमान वालो! उन से उस समय तक युद्ध करो कि[3] फित्ना

1 अर्थात बद्र में पराजय की यातना।

2 अर्थात ईमान लाये।

3 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहाः नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुश्रिकों से उस समय युद्ध कर रहे थे जब मुसलमान कम थे। और उन्हें अपने धर्म के कारण सताया, मारा और बंदी बना लिया जाता था। (सहीह बुख़ारी - 4650, 4651)

الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾

(अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये। तो यदि वह (अत्याचार से) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۗ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

40. और यदि वह मुँह फेरें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है?

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

41. और जान[1] लो कि तुम्हें जो कुछ ग़नीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय[2] के दिन उतारी जिस दिन

---

1 इस में ग़नीमत (युद्ध में मिले सामान) के वितरण का नियम बताया गया हैः कि उस के पाँच भाग करके चार भाग मुजाहिदों को दिये जायें। पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन भाग। फिर पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये था जिसे आप अपने परिवार और समीप वर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों की सहायता के लिये ख़र्च करते थे। इस प्रकार इस्लाम ने अनाथों तथा निर्धनों की सहायता पर सदा ध्यान दिया है। और ग़नीमत में उन्हें भी भाग दिया है यह इस्लाम की वह विशेषता है जो किसी धर्म में नहीं मिलेगी।

2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। निर्णय के दिन से अभिप्राय बद्र के युद्ध का दिन है जो सत्य और असत्य के बीच निर्णय का दिन था। जिस में काफ़िरों के बड़े बड़े प्रमुख और धवीर मारे गये जिन के शव बद्र के एक कूवें में फेंक दिये गये। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कुवें के किनारे खड़े हुये और उन्हें उन के नामों से पुकारने लगे कि क्या तुम प्रसन्न होते कि अल्लाह और उस के रसूल को मानते? हम ने अपने पालनहार का वचन सच्च पाया तो क्या तुम ने भी सच्च पाया? उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहाः क्या आप ऐसे शरीरों से बात कर रहे हैं जिन में प्राण नहीं? आप ने कहाः मेरी बात

दो सेनाऐं भिड़ गईं। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

إِذْ أَنتُم بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُم بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ ۚ وَلَوْ تَوَاعَدتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ ۙ وَلَٰكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَن بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَن بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

42. तथा उस समय को याद करो जब तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे था। और यदि तुम आपस में (युद्ध का) निश्चय करते तो निश्चित समय से अवश्य कतरा जाते। परन्तु अल्लाह ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो होना था उस का निर्णय कर दे। ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे। और वस्तुतः अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

43. तथा (हे नबी! वह समय याद करें) जब आप को (अल्लाह) आप के सपने[1] में उन्हें (शत्रु को) थोड़ा दिखा रहा था। और यदि उन्हें आप को अधिक दिखा देता तो तुम साहस खो देते। और इस (युद्ध के) विषय में आपस में झगड़ने लगते। परन्तु अल्लाह ने तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह सीनों (अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती अवगत है।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا

44. तथा (याद करो उस समय को) जब अल्लाह उन (शत्रु) को

तुम उन से अधिक नहीं सुन रहे हो। (सहीह बुख़ारी- 3976)

1 इस में उस स्वप्न की ओर संकेत है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध से पहले दिखाया गया था।

وَيُقَلِّلُكُمْ فِىٓ أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِىَ ٱللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرْجَعُ ٱلْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था, अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे[1] जाते हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَٱثْبُتُوا۟ وَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

45. हे ईमान वालो! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिरोह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल रहो।

وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَا تَنَٰزَعُوا۟ فَتَفْشَلُوا۟ وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَٱصْبِرُوٓا۟ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿٤٦﴾

46. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमज़ोर हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَلَا تَكُونُوا۟ كَٱلَّذِينَ خَرَجُوا۟ مِن دِيَٰرِهِم بَطَرًا وَرِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

47. और उन[2] के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकले। और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ أَعْمَٰلَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ ٱلْيَوْمَ مِنَ ٱلنَّاسِ وَإِنِّى جَارٌ لَّكُمْ ۖ فَلَمَّا تَرَآءَتِ ٱلْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ

48. जब शैतान[3] ने उन के लिये उन के कुकर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहाः आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और

---

1 अर्थात सब का निर्णय वही करता है।

2 इस से अभिप्राय मक्का की सेना है जिसको अबू जहल लाया था।

3 बद्र के युद्ध में शैतान भी अपनी सेना के साथ सुराक़ा बिन मालिक के रूप में आया था। परन्तु जब फ़रिश्तों को देखा तो भाग गया। (इब्ने कसीर)

إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّنكُمْ إِنِّيٓ أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّيٓ أَخَافُ ٱللَّهَ ۚ وَٱللَّهُ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

मैं तुम्हारा सहायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गईं, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अल्लाह से डर रहा हूँ। और अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

إِذْ يَقُولُ ٱلْمُنَٰفِقُونَ وَٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰٓؤُلَآءِ دِينُهُمْ ۗ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

49. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफ़िक़ तथा जिन के दिलों में रोग है, वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अल्लाह पर निर्भर करे तो वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۙ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَٰرَهُمْ وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

50. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फ़रिश्ते (बधित) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना[1] चखो।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

51. यही तुम्हारे कर्तूतों का प्रतिफल है। और अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं है।

كَدَأْبِ ءَالِ فِرْعَوْنَ ۙ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا۟

52. इन की दशा भी फ़िरऔनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से

1 बद्र के युद्ध में काफ़िरों के कई प्रमुख मारे गये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध से पहले बता दिया कि अमुक इस स्थान पर मारा जायेगा तथा अमुक इस स्थान पर। और युद्ध समाप्त होने पर उन का शव उन्हीं स्थानों पर मिला तनिक भी इधर-उधर नहीं हुआ। (बुख़ारी- 4480)
ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के समय कहा कि सारे जत्थे पराजित हो जायेंगे और पीठ दिखा देंगे। और उसी समय शत्रु पराजित होने लगे। (बुख़ारी-4875)

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾

53. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दशा में परिवर्तन न कर लें। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

54. इन की दशा फ़िरऔनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फ़िरऔनियों को डुबो दिया। और वह सभी अत्याचारी[1] थे।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. वास्तव में सब से बुरे जीव अल्लाह के पास वह हैं जो काफ़िर हो गये, और ईमान नहीं लाते।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. यह वे[2] लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।

---

1 इस आयत में तथा आयत नं॰ 52 में व्यक्तियों तथा जातियों के उत्थान और पतन का विधान बताया गया है कि वह स्वयं अपने कर्मों से अपना जीवन बनाती या अपना विनाश करती हैं।

2 इस में मदीना के यहूदियों की ओर संकेत है। जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संधि थी। फिर भी वे मुसलमानों के विरोध में गतिशील थे और बद्र के तुरन्त बाद ही कुरैश को बदले के लिये भड़काने लगे थे।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

57. तो यदि ऐसे (वचनभंगी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे हैं वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

58. और यदि आप को किसी जाति से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़[1] दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

59. जो काफ़िर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

60. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तय्यार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ।[2] जिन को तुम नही जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (ख़र्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَإِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

61. और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

---

1 अर्थात उन्हें पहले सूचित कर दो कि अब हमारे तुम्हारे बीच संधि नहीं है।

2 ताकि वह तुम पर आक्रमण करने का साहस न करें, और आक्रमण करें तो अपनी रक्षा करो।

62. और यदि वह (संधि कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफ़ी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।

وَإِنْ يُرِيدُوٓا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ ٱللَّهُ ۚ هُوَ ٱلَّذِىٓ أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِۦ وَبِٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

63. और उन के दिलों को जोड़ दिया। और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (ख़र्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ (निपुण) है।

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا مَّآ أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُۥ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾

64. हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफ़ी है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ حَسْبُكَ ٱللَّهُ وَمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾

65. हे नबी! ईमान वालों को युद्ध की प्रेरणा दो।[1] यदि तुम में से बीस धैर्यवान होंगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से सौ होंगे तो उन काफ़िरों के एक हज़ार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस लिये कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ حَرِّضِ ٱلْمُؤْمِنِينَ عَلَى ٱلْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَٰبِرُونَ يَغْلِبُوا۟ مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ يَغْلِبُوٓا۟ أَلْفًا مِّنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और जान लिया कि तुम में कुछ निर्बलता है, तो यदि तुम में से सौ सहनशील हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से एक हज़ार हों तो अल्लाह की अनुमति से दो हज़ार पर

ٱلْـَٰٔنَ خَفَّفَ ٱللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا۟ مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوٓا۟ أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿٦٦﴾

1 इस लिये कि काफ़िर मैदान में आ गये हैं और आप से युद्ध करना चाहते हैं। ऐसी दशा में जिहाद अनिवार्य हो जाता है ताकि शत्रु के आक्रमण से बचा जाये।

प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।[1]

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٦٧

67. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो, और अल्लाह (तुम्हारे लिये) आख़िरत (परलोक) चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ٦٨

68. यदि इस के बारे में पहले से अल्लाह का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्थ दण्ड) तुम ने लिया[2] है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٦٩

69. तो उस ग़नीमत में से[3] खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमा करने वाला दयावान् है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٧٠

70. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी हैं, उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज़ (ईमान) प्रदान करेगा जो (अर्थदण्ड) तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा।

---

1 अर्थात उन का सहायक है जो दुख तथा सुख प्रत्येक दशा में उस के नियमों का पालन करते हैं।

2 यह आयत बद्र के बंदियों के बारे में उतरी। जब अल्लाह के किसी आदेश के बिना आपस के परामर्श से उन से अर्थदण्ड ले लिया गया। (इब्ने कसीर)

3 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मेरी एक विशेषता यह भी है कि मेरे लिये ग़नीमत उचित कर दी गई जो मुझ से पहले किसी नबी के लिये उचित नहीं थी। (बुख़ारी- 335 मुस्लिम- 521)

और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

71. और यदि वह आप के साथ विश्वासघात करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। इसी लिये अल्लाह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

72. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिज्रत (प्रस्थान) कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिज्रत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबन्ध नहीं, यहाँ तक कि हिज्रत करके आ जायें। और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगें, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾

73. और काफ़िर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ

74. तथा जो ईमान लाये, और हिज्रत कर गये, और अल्लाह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने

ٱلْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾

(उन को) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ مَعَكُمْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُو۟لُوا۟ ٱلْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِى كِتَٰبِ ٱللَّهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌۢ ﴿٧٥﴾

75. तथा जो लोग इन के पश्चात् ईमान लाये और हिज्रत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती अल्लाह के लेख (आदेश) में अधिक समीप[1] हैं। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

1 अर्थात मीरास में उन को प्राथमिक्ता प्राप्त है।

सूरह तौबा - 9

सूरह तौबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 129 आयतें हैं।

इस सुरह में तौबा की शुभ सूचना तथा वचन भंगी काफ़िरों से विरक्त होने की घोषणा है। इसलिये इस का नाम सूरह तौबा और बराआ (विरक्ति) दोनों है।

- यह सन् (8-9) हिज्री के बीच मक्का की विजय के पश्चात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समय-समय से उतरी। और सन् (9) हिज्री में जब आप ने अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को हज्ज का अमीर बना कर भेजा तो इस की आरंभिक आयतें उतरीं। और यह एलान किया गया कि काफ़िरों से संधि तोड़ दी गई और अहले किताब से संबंधित इस्लामी शासन की नीति बताते हुये उन्हें सावधान किया गया।
- इस में इस्लामी वर्ष और महीने का पालन करने का निर्देश दिया गया।
- तबूक के युद्ध के लिये मुसलमानों को उभारा गया तथा मुनाफ़िक़ों की निन्दा की गई जो जिहाद से जी चुराते थे।
- यह बताया गया कि ज़कात किन को दी जाये। और ईमान वालों को सफल होने की शुभ सूचना दी गई।
- मुनाफ़िक़ों के साथ जिहाद करने का आदेश दिया गया। और उन्हें सुधर जाने और अल्लाह तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा का पालन करने को कहा गया अन्यथा वह अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सच्चे साथियों को शुभ सूचना देने के साथ ग्रामीण वासियों को उन के निफ़ाक़ पर धमकी दी गई।
- जिहाद से जी चुराने वालों के झूठ को उजागर किया गया और ईमान वालों के दोष क्षमा करने का एलान किया गया।
- मुनाफ़िक़ों के मस्जिद बना कर षड्यंत्र रचने का भंडा फोड़ने के साथ मुश्रिकों के लिये क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया। और मदीना के आस-पास के ग्रामिणों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान दे देने तथा धर्म के समझने के निर्देश दिये गये।

- ईमान वालों को जिहाद का निर्देश और मुनाफ़िक़ों को अन्तिम चेतावनी दी गई।
- अन्त में कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी केवल भलाई चाहते हैं। इसलिये यदि तुम उन का आदर करोगे तो तुम्हारा ही भला होगा।

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١

1. अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मुक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया[1] था।

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝٢

2. तो (हे काफ़िरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र हो कर) फिरो। तथा जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अल्लाह, काफ़िरों को अपमानित करने वाला है।

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۗ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣

3. तथा अल्लाह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है, महा हज्ज[2] के दिन कि अल्लाह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि

---

1 यह सूरह सन् 9 हिज्री में उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुँचे तो आप ने अनेक जातियों से समझौता किया था। परन्तु सभी ने समय समय से समझौते का उल्लंघन किया। लेकिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर उस का पालन करते रहे। और अब यह घोषणा कर दी गई कि मिश्रणवादियों से कोई समझौता नहीं रहेगा।

2 यह एलान ज़िल हिज्जा सन् (10) हिज्री को मिना में किया गया। कि अब काफ़िरों से कोई संधि नहीं रहेगी। इस वर्ष के बाद कोई मुश्रिक हज्ज नहीं करेगा और न कोई कॉबा का नंगा तवाफ़ करेगा। (बुख़ारी- 4655)

तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो। और आप उन्हें जो काफ़िर हो गये दुःखदायी यातना का शुभ समाचार सुना दें।

4. सिवाय उन मुश्रिकों के जिन से तुम ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की, तो उन से उन की संधि उन की अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٤﴾

5. अतः जब सम्मानित महीने बीत जायें तो मिश्रणवादियों का बध करो उन्हें जहाँ पाओ, और उन्हें पकड़ो, और घेरो[1], और उन की घात में रहो। फिर यदि वह तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें तथा ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥﴾

6. और यदि मुश्रिकों में से कोई तुम से शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक कि अल्लाह की बातें सुन ले। फिर उसे पहुँचा दो उस के शान्ती के स्थान तक। यह इसलिये कि वह ज्ञान नहीं रखते।

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾

7. इन मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) की कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल के पास कैसे हो सकती है? उन के सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित मस्जिद (कॉबा) के पास संधि

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾

1 यह आदेश मक्का के मुश्रिकों के बारे में दिया गया है, जो इस्लाम के विरोधी थे और मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

की[1] थी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहें तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ⑧

8. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते है, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।

اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑨

9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया[2], और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ⑩

10. वह किसी ईमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑪

11. तो यदि वह (शिर्क से) तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें, और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो ज्ञान रखते हों।

وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا

12. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़्र

---

1 इस से अभिप्रेत हुदैबिया की संधि है जो सन् (6) हिजरी में हुई। जिसे काफ़िरों ने तोड़ दिया। और यही सन् (8) हिजरी में मक्का की विजय का कारण बना।

2 अर्थात संसारिक स्वार्थ के लिये सत्धर्म ईस्लाम को नहीं माना।

أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ ﴿١٢﴾

के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वह (अत्याचार से) रुक जायें।

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

13. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्हों ने अपने वचन भंग कर दिये? तथा रसूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान[1] वाले हो।

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

14. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हे अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमान वालों के दिलों का सब दुःख दूर कर देगा।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

15. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा। और अल्लाह अति ज्ञानी नीतिज्ञ है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

16. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हे नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَن يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ

17. मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये

---

1 आयत नं० 7 से लेकर 13 तक यह बताया गया है कि शत्रु ने निरन्तर संधि को तोड़ा है। और तुम्हें युद्ध के लिये बाध्य कर दिया है। अब उन के अत्याचार और आक्रमण को रोकने का यही उपाय रह गया है कि उन से युद्ध किया जाये।

شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾

योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ़्र (अधर्म) के साक्षी हैं। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

18. वास्तव मे अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया, तथा नमाज़ की स्थापना की, और ज़कात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

19. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (कॉबा) की सेवा को उस के (ईमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20 जो लोग ईमान लाये तथा हिज्रत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले हैं।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۙ﴿٢١﴾

21. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

22. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के

लिये) बड़ा प्रतिफल है।

23. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ़्र से प्रेम करें। और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوٓا۟ ءَابَآءَكُمْ وَإِخْوَٰنَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ ٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْكُفْرَ عَلَى ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾

24. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन से मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतिक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये। और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾

25. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथा हुनैन[1] के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम को तुम्हारी अधिक्ता पर गर्व था, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर

لَقَدْ نَصَرَكُمُ ٱللَّهُ فِى مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْـًٔا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ ٱلْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾

1 «हुनैन» मक्का तथा ताइफ़ के बीच एक वादी है। वहीं पर यह युद्ध सन् 8 हिज्री में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। आप को मक्का में यह सूचना मिली कि हवाज़िन और सक़ीफ़ क़बीले मक्का पर आक्रमण करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। जिस पर आप बारह हज़ार की सेना लेकर निकले। जब कि शत्रु की संख्या केवल चार हज़ार थी। फिर भी उन्हों ने अपने तीरों से मुसलमानों का मुँह फेर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी रणक्षेत्र में रह गये, अन्ततः फिर इस्लामी सेना ने व्यवस्थित हो कर विजय प्राप्त की। (इब्ने कसीर)

धरती अपने विस्तार के होते संकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागे।

26. फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारीं जिन्हें तुम ने नहीं देखा[1], और काफ़िरों को यातना दी। और यही काफ़िरों का प्रतिकार (बदला) है।

ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾

27. फिर अल्लाह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे[2] और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن
يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾

28. हे ईमान वालो! मुश्रिक (मिश्रणवादी) मलीन हैं। अतः इस वर्ष[3] के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (कॉबा) के समीप भी न आयें। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय[4] हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ
فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ
هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ
مِن فَضْلِهِ إِن شَاءَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

29. (हे ईमान वालो!) उन से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अल्लाह और उस के

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ

1 अर्थात फ़रिश्ते भी उतारे गये जो मुसलमानों के साथ मिल कर काफ़िरों से जिहाद कर रहे थे। जिन के कारण मुसलमान विजयी हुये और काफ़िरों को बंदी बना लिया गया जिन को बाद में मुक्त कर दिया गया।

2 अर्थात उस के सत्धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेने के कारण।

3 अर्थात सन् 9 हिज्री के पश्चात्।

4 अर्थात उन से व्यापार न करने के कारण। अपवित्र होने का अर्थ शिर्क के कारण मन की मलीनता है। (इब्ने कसीर)

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٢٩﴾

रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सत्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज़्या[1] दें और वह अपमानित हो कर रहें।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۖ ذَٰلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾

30. तथा यहूद ने कहा कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है। और नसारा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह उन के अपने मुँह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफ़िर हो गये। उन पर अल्लाह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

31. उन्हों ने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य[2] बना लिया। तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस से पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे हैं।

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ

32. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा[3] दें। और अल्लाह

---

1 जिज़्या अर्थात रक्षा कर। जो उस रक्षा का बदला है जो इस्लामी देश में बसे हुये अहले किताब से इसलिये लिया जाता है ताकि वह यह सोचें कि अल्लाह के लिये ज़कात न देने और गुमराही पर अड़े रहने का मूल्य चुकाना कितना बड़ा दुर्भाग्य है जिस में वह फँसे हुये हैं।

2 हदीस में हैं कि उन के बनाये हुये वैध तथा अवैध को मानना ही उन को पूज्य बनाना है। (तिर्मिज़ी - **2471**- यह सहीह हदीस है।)

3 आयत का अर्थ यह है कि यहूदी, ईसाई तथा काफ़िर स्वयं तो कुपथ हैं ही वह

وَيَأْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे।

هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. उसी ने अपने रसूल[1] को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकी उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे[2], यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾

34. हे ईमान वालो! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं। और (उन्हें) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तथा जो सोना-चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुःखदायी यातना की शुभसूचना सुना दें।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पार्श्वों (पहलू) और पीठों को दाग़ा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

36. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अल्लाह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती

सत्धर्म इस्लाम से रोकने के लिये भी धोखा-धड़ी से काम लेते हैं जिस में वह कदापि सफल नहीं होंगे।

1 रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

2 इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों की संख्या लगभग दो अरब है। और अब भी इस्लाम पूरी दुनिया में तेज़ी से फैलता जा रहा है।

وَالْأَرْضَ مِنْهَآ أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ ۚ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَآفَّةً ۚ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝٣٦

की रचना की है। उन में से चार हराम (सम्मानित)[1] महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपने प्राणों पर अत्याचार[2] न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं, और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ ۖ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُۥ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُۥ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوٓءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝٣٧

37. नसी[3] (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ़्र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफ़िर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उसी को दूसरे वर्ष हराम (अवैध) कर देते हैं। ताकि अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफ़िरों को सुपथ नहीं दर्शाता।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُم بِالْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَٰعُ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا

38. हे ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आख़िरत

1 जिन में युद्ध निषेध है। और वह ज़ुलक़ादा, ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के अर्बी महीने हैं। (बुख़ारी- 4662)

2 अर्थात इन में युद्ध तथा रक्तपात न करो, इन का आदर करो।

3 इस्लाम से पहले मक्का के मिश्रणवादी अपने स्वार्थ के लिये सम्मानित महीनों साधारणतः मुहर्रम के महीने को सफ़र के महीने से बदल कर युद्ध कर लेते थे। इसी प्रकार प्रत्येक तीन वर्ष पर एक महीना अधिक कर लिया जाता था ताकि चाँद का वर्ष सूर्य के वर्ष के अनुसार रहे। क़ुर्आन ने इस कुरीति का खण्डन किया है, और इसे अधर्म कहा है। (इब्ने कसीर)

فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۝

(परलोक) की अपेक्षा संसारिक जीवन से प्रसन्न हो गये हो? जब कि परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन के लाभ बहुत थोड़े है।[1]

---

1 यह आयतें तबूक के युद्ध से संबन्धित है। तबूक मदीने और शाम के बीच एक स्थान का नाम है। जो मदीने से 610 कि॰मी॰ दूर है।
सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली कि रोम के राजा कैसर ने मदीने पर आक्रमण करने का आदेश दिया है। यह मुसलमानों के लिये अरब से बाहर एक बड़ी शक्ति से युद्ध करने का प्रथम अव्सर था। अतः आप ने तय्यारी और कूच का एलान कर दिया। यह बड़ा भीषण समय था, इस लिये मुसलमानों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस युद्ध के लिये निकलें।
तबूक का युध्द मक्का की विजय के पश्चात् ऐसे समाचार मिलने लगे कि रोम का राजा क़ैसर मुसलमानों पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप ने भी मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उस समय स्थिति बड़ी गंभीर थी। मदीना में अकाल था। कड़ी धूप तथा खजूरों के पकने का समय था। सवारी तथा यात्रा के संसाधन की कमी थी। मदीना के मुनाफ़िक़ अबू आमिर राहिब के द्वारा ग़स्सान के ईसाई राजा और क़ैसर से मिले हुये थे। उन्होंने मदीना के पास अपने षड्यंत्र के लिये एक मस्जिद भी बना ली थी। और चाहते थे कि मुसलमान पराजित हो जायें। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का उपहास करते थे। और तबूक की यात्रा के बीच आप पर प्राण घातक आक्रमण भी किया। और बहुत से द्विधावादियों ने आप का साथ भी नहीं दिया और झुठे बहाने बना लिये। रजब सन् 9 हिज्री में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हज़ार मुसलमानों के साथ निकले। इन में दस हज़ार सवार थे। तबूक पहुँच कर पता लगा कि क़ैसर और उस के सहयोगियों ने साहस खो दिया है। क्योंकि इस से पहले मूता के रण में तीन हज़ार मुसलमानों ने एक लाख ईसाईयों का मुक़ाबला किया था। इसलिये क़ैसर तीस हज़ार की सेना से भिड़ने का साहस न कर सका। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबूक में बीस दिन रह कर रोमियों के आधीन इस क्षेत्र के राज्यों को अपने आधीन बनाया। जिस से इस्लामी राज्य की सीमायें रोमी राज्य की सीमा तक पहुँच गईं। जब आप मदीना पहुँचे तो द्विधावादियों ने झूठे बहाने बना कर क्षमा माँग ली। तीन मुसलमान जो आप के साथ आलस्य के कारण नहीं जा सके थे और अपना दोष स्वीकार कर लिया था आप ने उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। किन्तु अल्लाह ने उन तीनों को भी उन के सत्य के कारण क्षमा कर दिया। आप ने उस मस्जिद को भी गिराने का आदेश दिया जिसे मुनाफ़िक़ों ने अपने षड्यंत्र का केन्द्र बनाया था।

إِلَّا تَنفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

39. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें अल्लाह दुःखदायी यातना देगा, तथा तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा। और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

40. यदि तुम उस (नबी) की सहायता नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की सहायता उस समय[1] की है जब काफ़िरों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया। वह दो में दूसरे थे। जब दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहे थेः उदासीन न हो, निश्चय अल्लाह हमारे साथ है।[2] तो अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया जिसे तुम ने नहीं देखा। और काफ़िरों की बात नीची कर दी। और अल्लाह की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ

41. हल्के[3] होकर और बोझल (जैसे हो)

1 यह उस अवसर की चर्चा है जब मक्का के मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बध कर देने का निर्णय किया। उसी रात आप मक्का से निकल कर सौर पर्वत नामक गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। फिर मदीना पहुँचे। उस समय गुफा में केवल आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे।

2 हदीस में है कि अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैं गुफा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। और मैं ने मुश्रिकों के पैर देख लिये। और आप से कहाः यदि इन में से कोई अपना पैर उठा दे तो हमें देख लेगा। आप ने कहाः उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है। (सहीह बुख़ारी- 4663)

3 संसाधन हो या न हो।

وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

निकल पड़ो। और अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۭ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

42. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफ़िक़) अवश्य आप के साथ हो जाते। परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब) अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

43. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे! आप ने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सच्चे हैं उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते।?

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝

44. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हों कि अपने धनों तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँती जानता है।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝

45. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और अपने संदेह में पड़े हुये हैं।

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ

46. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना

وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٤٦

अप्रिय था, अतः उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧

47. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करते। और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करते। और तुम में वह भी हैं जो उन की बातों पर ध्यान देते हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝٤٨

48. (हे नबी!) वह इस से पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बातों में हेर फेर कर चुके हैं। यहाँ तक कि सत्य आ गया, और अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बात उन्हें अप्रिय है।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝٤٩

49. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता हैः आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालें। सुन लो! परीक्षा में तो यह पहले ही से पड़े हुए हैं। और वास्तव में नरक काफ़िरों को घेरी हुयी है।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٠

50. (हे नबी!) यदि आप का कुछ भला होता है तो उन (द्वविधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैंः हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٥١

51. आप कह देंः हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर

ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَآ إِلَّآ إِحْدَى ٱلْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَن يُصِيبَكُمُ ٱللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِندِهِۦٓ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوٓا۟ إِنَّا مَعَكُم مُّتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

52. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो[1] भलाईयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

قُلْ أَنفِقُوا۟ طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿٥٣﴾

53. आप (मुनाफ़िक़ों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्यों कि तुम अवज्ञाकारी हो।

وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَٰتُهُمْ إِلَّآ أَنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِٱللَّهِ وَبِرَسُولِهِۦ وَلَا يَأْتُونَ ٱلصَّلَوٰةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَٰرِهُونَ ﴿٥٤﴾

54. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय कुछ नहीं है कि उन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है। और वह नमाज़ के लिये आलसी होकर आते हैं, तथा दान भी करते हैं तो अनिच्छा करते हैं।

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَٰلُهُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿٥٥﴾

55. अतः आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करे। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इन के द्वारा संसारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा मे निकलें कि वह काफ़िर हों।

وَيَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ

56. वह (मुनाफ़िक़) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से हैं,

1 दो भलाईयों से अभिप्रायः विजय या अल्लाह की राह में शहीद होना है। (इब्ने कसीर)

وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝٥٦

जब कि वह तुम में से नहीं हैं, परन्तु भयभीत लोग हैं।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧

57. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨

58. (हे नबी!) उन (मुनाफ़िक़ों) में से कुछ ज़कात के वितरण में आप पर आक्षेप करते है। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं, और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩

59. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें अल्लाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी, हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠

60. ज़कात (देय, दान) केवल फ़क़ीरों[1], मिस्कीनों और कार्य- -कर्ताओं[2] के लिये, तथा उन के लिये जिन के दिलों को जोड़ा जा रहा है।[3] और दास मुक्ति, तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की

---

1 क़ुर्आन ने यहाँ फ़क़ीर और मिस्कीन के शब्दों का प्रयोग किया है। फ़क़ीर का अर्थ है जिस के पास कुछ न हो। परन्तु मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ धन हो मगर उस की आवश्यक्ता की पूर्ति न होती हो।

2 जो ज़कात के काम में लगे हों।

3 इस से अभिप्राय वह हैं जो नये नये इस्लाम लाये हों। तो उन के लिये भी ज़कात है। या जो इस्लाम मे रुचि रखते हों, और इस्लाम के सहायक हों।

राह में तथा यात्रियों के लिये है। अल्लाह की ओर से अनिवार्य (देय) है।[1] और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

61. तथा उन(मुनाफ़िक़ों) में से कुछ नबी को दुःख देते हैं, और कहते हैं कि वह बड़े सुनवा[2] हैं। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे हैं। वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते हैं, और उन के लिये दया हैं जो तुम में से ईमान लाये हैं। और जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिये दुःखदायी यातना है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

62. वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ

1 संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस ने दीन दुःखियों की सहायता और सेवा की प्रेरणा न दी हो। और उसे इबादत (वंदना) का अनिवार्य अंश न कहा हो। परन्तु इस्लाम की यह विशेषता है कि उस ने प्रत्येक धनी मुसलमान पर एक विशेष कर-निर्धारित कर दिया है जो उस पर अपनी पूरी आय का हिसाब करके प्रत्येक वर्ष देना अनिवार्य है। फिर उसे इतना महत्व दिया है कि कर्मों में नमाज़ के पश्चात् उसी का स्थान है। और क़ुर्आन में दोनों कर्मों की चर्चा एक साथ करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी समुदाय में इस्लामी जीवन के सब से पहले यही दो लक्षण हैं। नमाज़ तथा ज़कात, यदि इस्लाम में ज़कात के नियम का पालन किया जाये तो समाज में कोई ग़रीब नहीं रह जायेगा। और धनवानों तथा निर्धनों के बीच प्रेम की ऐसी भावना पैदा हो जायेगी कि पुरा समाज सुखी और शान्तिमय बन जायेगा। ब्याज का भी निवारण हो जायेगा। तथा धन कुछ हाथों में सीमित नहीं रह कर उस का लाभ पूरे समाज को मिलेगा। फिर इस्लाम ने इस का नियम निर्धारित किया है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा और यह भी निश्चित कर दिया कि ज़कात का धन किन को दिया जायेगा, और इस आयत में उन्हीं की चर्चा की गई है, जो यह हैं: 1- फ़क़ीर, 2- मिस्कीन, 3- ज़कात के कार्यकर्ता, 4- नये मुसलमान, 5- दास-दासी, 6- ऋणी, 7- धर्म के रक्षक, 8- और यात्री। अल्लाह की राह से अभिप्राय वह लोग हैं जो धर्म की रक्षा के लिये काम कर रहे हैं।

2 अर्थात जो कहो मान लेते हैं।

लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अल्लाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य हैं कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले हैं।

وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَن يُرْضُوهُ إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝٦٢

63. क्या वह नहीं जानते कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस मे वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝٦٣

64. मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) इस से डरते हैं कि उन[1] पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हँसी उड़ा लो। निश्चय अल्लाह उसे खोल कर रहेगा जिस से तुम डर रहे हो।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَن تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُم بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ۝٦٤

65. और यदि आप[2] उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे। आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?

وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ۝٦٥

66. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़्र किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्यों कि वही अपराधी हैं।

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِن نَّعْفُ عَن طَائِفَةٍ مِّنكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝٦٦

67. मुनाफ़िक़ पुरुष तथा स्त्रियाँ सब

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُم مِّن بَعْضٍ

1 ईमान वालों पर।

2 तबूक की यात्रा के बीच मुनाफ़िक़ लोग, नबी तथा इस्लाम के विरुद्ध बहुत सी दुःखदायी बात कर रहे थे।

एक-दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं। और अपने हाथ बंद किये रहते[1] हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला[2] दिया। वास्तव में मुनाफ़िक़ ही भ्रष्टाचारी हैं।

يَأْمُرُونَ بِالْمُنكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾

68. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पूरुषों तथा स्त्रियों और काफ़िरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावासी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾

69. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्हों ने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अतः तुम भी अपने भाग का आनन्द लो, जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझते हो जैसे वह उलझते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُم بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُم بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٦٩﴾

70. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थेः नूह की जाति तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जाति के और मद्यन[3] के वासियों

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ

---

1 अर्थात दान नहीं करते।

2 अल्लाह के भुला देने का अर्थ हैः उन पर दया न करना।

3 मद्यन् के वासी शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति थे।

के, और उन बस्तियों के जो पलट दी[1] गईं? उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार[2] कर रहे थे।

فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

71. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं। और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

72. अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अल्लाह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी, वही बहुत बड़ी सफलता है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۗ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

73. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो, और उन पर सख़्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۗ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

74. वह अल्लाह की शपथ लेते हैं कि उन्हों

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۗ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ

1 इस से अभिप्राय लूत अलैहिस्सलाम की जाति है। (इब्ने कसीर)

2 अपने रसूलों को अस्वीकार कर के।

وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾

ने यह[1] बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कुफ़्र की बात कही[2] है। और इस्लाम ले आने के पश्चात् काफ़िर हो गए हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर नहीं सके। और उन को यही बात बुरी लगी कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह से धनी[3] कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अल्लाह उन्हें दुःखदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई संरक्षक और सहायक न होगा।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. उन में से कुछ ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन-धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे, और सुकर्मियों में हो जायेंगे।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. फिर जब अल्लाह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कंजूसी कर गये, और वचन से विमुख हो कर फिर गये।

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ

77. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन

---

1 अर्थात ऐसी बात जो रसूल और मुसलमानों को बुरी लगे।

2 यह उन बातों की ओर संकेत है जो द्विधावादियों ने तबूक की मुहिम के समय की थीं। उन की ऐसी बातों के विवरण के लिये (देखियेः सूरह मुनाफ़िकून, आयतः 7-8)

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले मदीने का कोई महत्व न था। आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं थी। जो कुछ था यहूदियों के अधिकार मे था। वह ब्याज भक्षी थे, शराब का व्यापार करते थे, और अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। आप के आगमन के पश्चात आर्थिक दशा सुधर गई, और व्यवसायिक उन्नति हुई।

بِمَآ أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अल्लाह से मिलें। क्यों कि उन्हों ने उस वचन को भंग कर दिया जो अल्लाह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾

78. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है।

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

79. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों में से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं। तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफ़िक़) उन से उपहास करते है, अल्लाह उन से उपहास करता[1] है। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٨٠﴾

80. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र कर दिया। और अल्लाह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

---

1 अर्थात उन के उपहास का कुफल दे रहा है। अबू मस्ऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब हमें दान देने का आदेश दिया गया तो हम कमाने के लिये बोझ लादने लगे ताकि हम दान कर सकें। और अबू अक़ील (रज़ियल्लाहु अन्हु) आधा साअ (सवा किलो) लाये। और एक व्यक्ति उन से अधिक लेकर आया। तो मुनाफ़िक़ों ने कहाः अल्लाह को उस के (थोड़े से) दान की ज़रूरत नहीं। और यह दिखावे के लिये (अधिक) लाया है। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी- **4668**)

81. वे प्रसन्न[1] हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करें अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्हों ने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझते (तो ऐसी बात न करते)।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا
اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۗ
لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝٨١

82. तो उन्हें चाहिये कि हँसें कम, और रोयें अधिक। जो कुछ वे कर रहे हैं उस का बदला यही है।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاۤءًۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٢

83. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिरोह के पास (तबूक से) वापस लाये, और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति मांगें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम बार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۤىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوْكَ
لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ
تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۗ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ
مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝٨٣

84. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाज़े की नमाज़ कभी न पढ़ें, और न उस की समाधि (क़ब्र) पर खड़े हों। क्योंकि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया है, और अवज्ञाकारी रहते हुये मरे[2] हैं।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ
عَلٰى قَبْرِهٖ ۗ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا
وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨٤

---

1 अर्थात मुनाफ़िक़ जो मदीना में रह गये और तबूक की यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गये।

2 सहीह हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुनाफ़िक़ों

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

85. आप को उन के धन तथा उन की संतान चकित न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफ़िर हों।

وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٨٦﴾

86. तथा जब कोई सूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफ़िक़ों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दें। हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।

رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

87. तथा प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रहें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।

لَٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

88. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं, और वही सफल होने वाले हैं।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

89. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

90. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये, ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से

के मुख्या अब्दुल्लाह बिन उबय्य का जनाज़ा पढ़ा तो यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी - 4672)

झूठ बोला। तो इन में से काफ़िरों को दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِن سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩١﴾

91. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाते कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अल्लाह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوا وَّأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنفِقُونَ ﴿٩٢﴾

92. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि, मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखें आँसू बहा रही[1] थीं।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

93. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं। और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

94. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे। आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अल्लाह

---

1 यह विभिन्न क़बीलों के लोग थे। जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये कि आप हमारे लिये सवारी का प्रबंध कर दें। हम भी आप के साथ तबूक के जिहाद में जायेंगे। परन्तु आप सवारी का कोई प्रबंध न कर सके और वह रोते हुये वापिस हो गये। (इब्ने कसीर)

और उस के रसूल तुम्हारा कर्म देखेंगे। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।

95. वह तुम से अल्लाह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन हैं। और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

96. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अल्लाह उल्लंघनकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

97. देहाती[1] अविश्वास तथा द्विवधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य हैं कि: उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अल्लाह ने उतारा है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

98. देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने दिये हुए दान को अर्थदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

99. और देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

---

1 इस से अभिप्राय मदीना के आस पास के क़बीले हैं।

الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۭ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और अपने दिये हुये दान को अल्लाह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते हैं। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

100. तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन[1] और अन्सारी, और जिन लोगों ने सुकर्म के साथ उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, वही बड़ी सफलता है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۭ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ڀ مَرَدُوْا عَلَي النِّفَاقِ ۣ لَا تَعْلَمُهُمْ ۭ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۭ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101. और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण हैं उन में से कुछ मुनाफ़िक (द्विधावादी) हैं। और कुछ मदीना में हैं। जो (अपने) निफ़ाक़ में अभ्यस्त (निपुण) हैं। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते हैं। हम उन्हें दो बार[2] यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।

---

1 प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन उन को कहा गया है जो मक्का से हिज्रत करके हुदैबिया की संधि सन् 6 से पहले मदीना आ गये थे। और प्रथम अग्रसर अन्सार मदीना के वह मुसलमान हैं जो मुहाजिरीन के सहायक बने और हुदैबिया में उपस्थित थे। (इब्ने कसीर)

2 संसार में तथा क़ब्र में फिर परलोक की घोर यातना होगी। (इब्ने कसीर)

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰۲﴾

102. और कुछ दूसरे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सुकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म को मिश्रित कर लिया है। आशा है किः अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾

103. हे नबी! आप उन के धनों से दान लें, और उस के द्वारा उन (के धनों) को पवित्र और उन (के मनों) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें। वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾

104. क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

105. और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और ईमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾

106. और (इन के सिवाय) कुछ दूसरे भी हैं जो अल्लाह के आदेश के लिये विलंबित[1] हैं। वह उन्हें दण्ड दे,

---

1 अर्थात अपने विषय में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह तीन व्यक्ति

अथवा उन को क्षमा कर दे तो अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

107. तथा (द्विधावादियों में) वह भी हैं जिन्हों ने एक मस्जिद[1] बनाई, इस लिये कि (इस्लाम को) हानि पहुँचायें, तथा कुफ़्र करें, और ईमान वालों में विभेद उत्पन्न करें, तथा उस का घात-स्थल बनाने के लिये जो इस से पूर्व अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध कर[2] चुका है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि हमारा संकल्प भलाई के सिवा और कुछ न था। तथा अल्लाह साक्ष्य देता है कि वह निश्चय मिथ्यावादी हैं।

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ

108. (हे नबी!) आप उस में कभी खड़े

थे, जिन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबूक से वापिस आने पर यह कहा कि वह अपने आलस्य के कारण आप का साथ नहीं दे सके। आप ने उन से कहा कि अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा करो। और आगामी आयत 117 में उन के बारे में आदेश आ रहा है।

1 इस्लामी इतिहास में यह «मस्जिदे ज़िरार» के नाम से याद की जाती है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आये तो आप के आदेश से "कुबा" नाम के स्थान में एक मस्जिद बनाई गई। जो इस्लामी युग की प्रथम मस्जिद है। कुछ मुनाफ़िक़ों ने उसी के पास एक नई मस्जिद का शनिर्माण किया। और जब आप तबूक के लिये निकल रहे थे तो आप से कहा कि आप एक दिन उस में नमाज़ पढ़ा दें। आप ने कहा किः यात्रा से वापसी पर देखा जायेगा। और जब वापिस मदीना के समीप पहुँचे तो यह आयत उतरी, और आप के आदेश से उसे ध्वस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

2 इस से अभिप्रेत अबू आमिर राहिब है। जिस ने कुछ लोगों से कहा कि एक मस्जिद बनाओ और जितनी शक्ति और अस्त्र-शस्त्र हो सके तय्यार कर लो। मैं रोम के राजा क़ैसर के पास जा रहा हूँ। रोमियों की सेना लाऊँगा, और मुहम्मद तथा उस के साथियों को मदीना से निकाल दूगाँ। (इब्ने कसीर)

أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ﴿١٠٨﴾

न हों। वास्तव में वह मस्जिद[1] जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज़ के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं, जो स्वच्छता से प्रेम[2] करते हैं, और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾

109. तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है, अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरते हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾

110. यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक संदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا

111. निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उन के धनों को इस के बदले ख़रीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है। वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन

---

1 इस मस्जिद से अभिप्राय कुबा की मस्जिद है। तथा मस्जिद नबवी शरीफ़ भी इसी में आती है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात शुद्धता के लिये जल का प्रयोग करते हैं।

بِبَيۡعِكُمُ ٱلَّذِي بَايَعۡتُم بِهِۦۚ وَذَٰلِكَ هُوَ ٱلۡفَوۡزُ ٱلۡعَظِيمُ ١١١

है, तौरात तथा इंजील और कुर्आन में। और अल्लाह से बढ़ कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो सकता है? अतः अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया। और यही बड़ी सफलता है।

ٱلتَّٰٓئِبُونَ ٱلۡعَٰبِدُونَ ٱلۡحَٰمِدُونَ ٱلسَّٰٓئِحُونَ ٱلرَّٰكِعُونَ ٱلسَّٰجِدُونَ ٱلۡأٓمِرُونَ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَٱلنَّاهُونَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ وَٱلۡحَٰفِظُونَ لِحُدُودِ ٱللَّهِۗ وَبَشِّرِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ١١٢

112. जो क्षमा याचना करने, वंदना करने तथा अल्लाह की स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने तथा रुकुअ और सज्दा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَن يَسۡتَغۡفِرُواْ لِلۡمُشۡرِكِينَ وَلَوۡ كَانُوٓاْ أُوْلِي قُرۡبَىٰ مِنۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمۡ أَنَّهُمۡ أَصۡحَٰبُ ٱلۡجَحِيمِ ١١٣

113. किसी नबी तथा[1] उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी[2] हैं।

وَمَا كَانَ ٱسۡتِغۡفَارُ إِبۡرَٰهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوۡعِدَةٖ وَعَدَهَآ إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥٓ أَنَّهُۥ

114. और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उस ने

1 हदीस में है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब के निधन का समय आया तो आप उस के पास गये। और कहाः चाचा! «ला इलाहा इल्लल्लाह» पढ़ लो। मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिये इस को प्रमाण बना लूँगा। उस समय अबू जह्ल और अब्दुल्लाह बिन अबु उमय्या ने कहाः क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से फिर जाओगे? (अतः वह काफ़िर ही मरा।) तब आप ने कहाः मैं तुम्हारे लिये क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा, जब तक उस से रोक न दिया जाऊँ। और इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी- 4675)

2 देखियेः सूरह माइदा, आयतः 72, तथा सूरह निसा, आयतः 48,116।

عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

उस को इस का वचन दिया[1] था। और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ
حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

115. अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से बचना चाहिये उसे उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي
وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

116. वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।

لَّقَد تَّابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ
وَالْأَنصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ
الْعُسْرَةِ مِن بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ
فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ
رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

117. अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्हों ने तंगी के समय आप का साथ दिया, इस के पश्चात् कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ

118. तथा उन तीनों[2] पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था,

---

1 देखियेः सूरह मुम्तहिना, आयतः 4।

2 यह वही तीन हैं जिन की चर्चा आयत नं॰ 106 में आ चुकी है। इन के नाम थे 1-काब बिन मालिक, 2- हिलाल बिन उमय्या, 3- मुरारह बिन रबीअ। (सहीह बुख़ारी - 4677)

जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण[1] हो गये, और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उसी की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾

119. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सच्चों के साथ हो जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾

120. मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और थकान तथा भूक नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रौंदते हैं जो काफ़िरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

121. और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है,

وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

---

1 क्यों कि उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था।

ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

122. ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें। तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करे। और ताकि अपनी जाति को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्मों से) बचें।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

123. हे ईमान वालो! अपने आस-पास के काफ़िरों से युद्ध करो[2], और चाहिये कि वह तुम में कुटिलता पायें, तथा विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

124. और जब (कुर्आन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहते हैं कि तुम में से किस का ईमान (विश्वास) इस ने अधिक किया?[3] तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विश्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।

---

1 इस आयत में यह संकेत है कि धार्मिक शिक्षा की एक साधारण व्यवस्था होनी चाहिये। और यह नहीं हो सकता कि सब धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये निकल पड़ें। इस के लिये प्रत्येक समुदाय से कुछ लोग जा कर धर्म की शिक्षा ग्रहण करें। फिर दूसरों को धर्म की बातें बतायें।
कुर्आन के इसी संकेत ने मुसलमानों में शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी भावना उत्पन्न कर दी कि एक शताब्दी के भीतर उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी व्यवस्था बना दी जिस का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता।

2 जो शत्रु इस्लामी केन्द्र के समीप के क्षेत्रों में हों पहले उन से अपनी रक्षा करो।

3 अर्थात उपहास करते हैं।

125. परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो उस ने उन की गंन्दगी ओर अधिक बढ़ा दी। और वह काफ़िर रहते हुये ही मर गये।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾

126. क्या वह नहीं देखते कि उन की परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती[1] है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।?

اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

127. और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर चल देते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से) [2] फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾

128. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह बात भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो। वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं। और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् हैं।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾

129. (हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हक़ीक़ी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

---

1 अर्थात उन पर आपदा आती है तथा अपमानित किये जाते हैं। (इब्ने कसीर)

2 इस से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

सूरह यूनुस - 10

यह सूरह मक्की है, इस में 109 आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١

1. अलिफ़, लाम, रा। यह तत्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (क़ुर्आन) की आयतें हैं।

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

2. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर[1] प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें। और जो ईमान लायें उन्हें शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है? तो काफ़िरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۗ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣

3. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस नें आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विश्व की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफ़ारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः

---

1 सत्य सम्मान से अभिप्रेत स्वर्ग है। अर्थात उन के सत्कर्मों का फल उन्हें अल्लाह की ओर से मिलेगा।

उसी की इबादत (वंदना)[1] करो। क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

4. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान[2] करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफ़िर हो गये उन के लिये खौलता पेय तथा दुखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

5. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिये, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

6. निःसंदेह रात्रि तथा दिवस के एक दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हों।

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَآيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ﴿٦﴾

7. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन)

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيٰوةِ

1 भावार्थ यह है कि जब विश्व की व्यवस्था वही अकेला कर रहा है तो पूज्य भी वही अकेला होना चाहिये।

2 भावार्थ यह है कि यह दूसरा परलोक का जीवन इस लिये आवश्यक है कि कर्मों के फल का नियम यह चाहता है कि जब एक जीवन कर्म के लिये है तो दूसरा कर्मों के प्रतिफल के लिये होना चाहिये।

हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न हैं तथा उसी से संतुष्ट हैं, तथा जो हमारी निशानियों से असावधान हैं।

الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۝٧

8. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝٨

9. वास्तव में जो ईमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के ईमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝٩

10. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगीः "हे अल्लाह! तू पवित्र है।" और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगाः "तुम पर शान्ति हो।" और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगाः "सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है।"

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٠

11. और यदि अल्लाह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहते हैं तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता। अतः जो (मरने के पश्चात्) हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये[1] छोड़ देते हैं।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝١١

12. और जब मानव को कोई दुःख पहुँचता

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ

1 आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह के दुष्कर्मों का दण्ड देने का नियम यह नहीं है कि तुरन्त संसार ही में उस का कुफल दे दिया जाये। परन्तु दुष्कर्मी को यहाँ अवसर दिया जाता है अन्यथा उन का समय कभी का पूरा हो चुका होता।

اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ
مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۗ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾

है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस का दुख दूर कर देते हैं, तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दुख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तूत शोभित बना दिये गये हैं।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ
وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا
لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾

13. और तुम से पहले हम कई जातियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्हों ने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे किः ईमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14. फिर हम ने धरती में उन के पश्चात् तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें किः तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं?

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ
لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَاۤ اَوْ
بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ
نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْۤ اَخَافُ
اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

15. और (हे नबी!) जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुर्आन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिवर्तन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अवैज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَدْرٰىكُمْ

16. आप कह दें: यदि अल्लाह चाहता तो मैं कुर्आन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और

بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

न वह तुम्हें इस से सूचित करता। फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो?[1]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾

17. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये, अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और वह अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ। और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफ़ारशी) हैं आप कहियेः क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है, और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً

19. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्हों ने विभेद[2] किया। और

1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि तुम एक इसी बात पर विचार करो कि मैं तुम्हारे लिये कोई अपरिचित अज्ञात नहीं हूँ। मैं तुम्हीं में से हूँ। यहीं मक्का में पैदा हुआ, और चालीस वर्ष की आयु तुम्हारे बीच व्यवतीत की। मेरा पूरा जीवन चरित्र तुम्हारे सामने है, इस अवधि में तुम ने सत्य और अमानत के विरुद्ध मुझ में कोई बात नहीं देखी तो अब चालीस वर्ष के पश्चात यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह पर यह मिथ्या आरोप लगा दूँ कि उस ने यह कुर्आन मुझ पर उतारा है? मेरा पवित्र जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह कुर्आन अल्लाह की वाणी है। और मैं उस का नबी हूँ। और उसी की अनुमति से यह कुर्आन तुम्हें सुना रहा हूँ।

2 अतः कुछ शिर्क करने और देवी देवताओं को पूजने लगे। (इब्ने कसीर)

فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न[1] होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

20. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया?[2] आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अल्लाह के अधिकार में हैं। अतः तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।[3]

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

21. और जब हम, लोगों को दुःख पहुँचने के पश्चात दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में षड्यंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾

22. वही है जो जल तथा थल में तुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को ले कर अनुकूल वायु के कारण चलती हैं, और वह उस से प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचन्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते

---

1 कि संसार में लोगों को कर्म करने का अवसर दिया जाये।

2 जैसे कि सफ़ा पर्वत सोने का हो जाता। अथवा मक्का के पर्वतों के स्थान पर उद्यान हो जाते। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात अल्लाह के आदेश की।

हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अल्लाह से उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के[1] प्रार्थना करते हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।

فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात् धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ[2] हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे?

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिस से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाते हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभांवित होने पर सामर्थ्य रखते हैं, तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया, और हम ने उसे इस प्रकार काट कर रख दिया,

---

1 और सब देवी देवताओं को भूल जाते हैं।

2 भावार्थ यह है कि जब तक संसारिक जीवन के संसाधन का कोई सहारा होता है तो लोग अल्लाह को भूले रहते हैं। और जब यह सहारा नहीं होता तो उन का अन्तर्ज्ञान उभरता है। और वह अल्लाह को पुकारने लगते हैं। और जब दुःख दूर हो जाता है तो फिर वही दशा हो जाती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सदा सुख दुःख में उसे याद करते रहो।

जैसे कि कल वहाँ थी[1] ही नहीं। इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन खोल-खोल कर, करते हैं, ताकि लोग मनन चिंतन करें।

25. और अल्लाह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग) की ओर बुला रहा है। और जिसे चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۗ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ٢٥

26. जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक।[2]

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۗ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۗ اُولٰۤىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ٢٦

27. और जिन लोगों ने बुराईयाँ कीं तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा। तथा उन पर अपमान छाया होगा। और उन के लिये अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर ऐसे कालिमा छायी होगी जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये हों। वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاۤءُ سَيِّئَةٍ ۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۗ اُولٰۤىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ٢٧

28. जिस दिन हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये) साझी भी। फिर हम उन के बीच अलगाव कर देंगे। और उन के साझी कहेंगेः तुम तो हमारी वंदना ही नहीं करते थे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَاۤؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاۤؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ٢٨

---

1 अर्थात संसारिक आनंद और सुख वर्षा की उपज के समान सामयिक और अस्थायी है।

2 अधिकांश भाष्यकारों ने, «अधिक» का भावार्थः "आख़िरत में अल्लाह का दर्शन" और «भलाई»काः "स्वर्ग" किया है। (इब्ने कसीर)

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ
عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी वंदना से हम असूचित थे।

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ
مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. वहीं प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फेर दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगी।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ
السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ
فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾

31. (हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती[1] से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालता है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह।[2] फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ
فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयीं कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآىِٕكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

34. आप उन से कहियेः क्या तुम्हारे साझियों में कोई है, जो उत्पत्ति का

1 आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज से।

2 जब यह स्वीकार करते हो कि विश्व की व्यवस्था अल्लाह ही कर रहा है तो पूजा अराधना भी उसी की होनी चाहिये।

قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो? आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ करता, फिर उसे दुहराता है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. आप कहियेः क्या तुम्हारे साझियों में कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य है कि उस का अनुपालन किया जाये अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. और उन (मिश्रणवादियों) में अधिकांश अनुमान का अनुसरण करते हैं। और सत्य को जानने में अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता। वास्तव में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे हैं भली भाँति जानता है।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. और यह कुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाये, परन्तु उन की पुष्टि है जो इस से पहले (पुस्तकें) उतरी हैं। और यह पुस्तक (कुर्आन) विवरण[1] है। इस में कोई संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के पालनहार की ओर से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. क्या वह कहते हैं कि इस (कुर्आन) को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया है? आप कह देंः इसी के समान एक सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा

---

1 अर्थात अल्लाह की पुस्तकों में जो शिक्षा दी गयी है उस का कुर्आन में सविस्तार वर्णन है।

जिसे (अपनी सहायता के लिये) बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सत्यवादी हो।

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

39. बल्कि उन्हों ने उस (क़ुर्आन) को झुठला दिया जो उन के ज्ञान के घेरे में नहीं[1] आया, और न उस का परिणाम उन के सामने आया। इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, जो इन से पहले थे। तो देखो कि अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

وَمِنْهُم مَّن يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُم مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾

40. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस (क़ुर्आन) पर ईमान लाते हैं और कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक जानता है।

وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

41. और यदि वे आप को झुठलायें तो आप कह देंः मेरे लिये मेरा कर्म है और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ। तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम करते हो।

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾

42. इन में से कुछ लोग आप की ओर कान लगाते हैं। तो क्या आप बहरों[2] को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ भी न समझ सकते हों?

وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾

43. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आप की ओर तकते हैं तो क्या आप अन्धे को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ

---

1 अर्थात बिना सोचे समझे इसे झुठलाने के लिये तैयार हो गये।

2 अर्थात जो दिल और अन्तर्ज्ञान के बहरे हैं।

सूझता न हो?

44. वास्तव में अल्लाह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।[1]

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَظْلِمُ ٱلنَّاسَ شَيْـًٔا وَلَٰكِنَّ ٱلنَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

45. और जिस दिन अल्लाह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के केवल कुछ क्षण रहे। वह आपस में परिचित होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न हुये।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوٓا۟ إِلَّا سَاعَةً مِّنَ ٱلنَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ وَمَا كَانُوا۟ مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

46. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अल्लाह उस पर साक्षी है जो वे कर रहे हैं।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ ٱلَّذِى نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ ٱللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

47. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَآءَ رَسُولُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُم بِٱلْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

48. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा, यदि तुम सत्यवादी हो?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٨﴾

49. आप कह दें कि मैं स्वयं अपने लाभ

قُل لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِى ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُ

---

1 भावार्थ यह है कि लोग अल्लाह की दी हुयी समझ-बूझ से काम न ले कर सत्य और वास्तविक्ता के ज्ञान की अर्हता खो देते हैं।

لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾

तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

50. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं?

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

51. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की मांग कर रहे थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

52. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

53. और वह आप से पूछते हैं कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ! यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۖ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

54. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है, जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। और उन के बीच न्याय के

साथ निर्णय कर दिया जायेगा, और
उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

55. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ
आकाशों तथा धरती में है। सुनो!
उस का वचन सत्य है। परन्तु
अधिक्तर लोग इसे नहीं जानते।

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِنَّ وَعْدَ
اللَّهِ حَقٌّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

56. वही जीवन देता तथा वही मारता है।
और उसी की ओर तुम सब लौटाये
जाओगे।[1]

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

57. हे लोगो![2] तुम्हारे पास तुम्हारे
पालनहार की ओर से शिक्षा
(कुर्आन) आ गयी है, जो अन्तरात्मा
के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य
कर) तथा मार्ग दर्शन और दया है
उन के लिये जो विश्वास रखते हों।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ
لِّمَا فِي الصُّدُورِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

58. आप कह दें कि यह (कुर्आन) अल्लाह
का अनुग्रह और उस की दया है।
अतः लोगों को इस से प्रसन्न हो जाना
चाहिये। और यह उस (धन-धान्य) से
उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۭ
هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

59. (हे नबी!) उन से कहोः क्या तुम ने
इस पर विचार किया है कि अल्लाह
ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी
है, तुम ने उस में से कुछ को हराम
(अवैध) बना दिया है, और कुछ को

قُلْ أَرَءَيْتُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ
حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۭ قُلْ آٰللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ
تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾

---

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 इस में कुर्आन के चार गुणों का वर्णन किया गया हैः
1. यह सत्य शिक्षा है।
2. द्विधा के सभी रोगों के लिये स्वास्थ्यकर है।
3. संमार्ग दर्शाता है।
4. ईमान वालों के लिये दया का उपदेश है।

हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे[1] हो?

60. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्हों ने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील[2] है। परन्तु उन में अधिक्तर कृतज्ञ नहीं होते।

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

61. (हे नबी!) आप जिस दशा में हों, और कुर्आन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾

62. सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे।

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

63. जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे।

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

64. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि किसी चीज़ को वर्जित करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। अपने विचार से किसी चीज़ को अवैध करना अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाना है।

2 इसी लिये प्रलय तक का अवसर दिया है।

शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी। अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है।

لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾

65. तथा (हे नबी!) आप को उन (काफ़िरों) की बात उदासीन न करे। वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिये है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾

66. सुनो! वास्तव में अल्लाह ही के अधिकार में है जो आकाशों में तथा धरती में है। और जो अल्लाह के सिवा दूसरे साझियों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे लगे हुये हैं। और वे केवल आँकलन कर रहे हैं।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

67. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई है ताकि उस में सुख पाओ। और दिन बनाया, ताकि उस के प्रकाश में देखो। निःसंदेह इस में (अल्लाह के व्यवस्थापक होने की) उन के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जो (सत्य को) सुनते हों।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

68. और उन्हों ने कह दिया कि अल्लाह ने कोई पुत्र बना लिया है। वह पवित्र है! वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है? क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कह रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِندَكُم مِّن سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

69. (हे नबी!) आप कह दें: जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाते हैं वह सफल नहीं होंगे।

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

70. उन के लिये संसार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

71. आप उन्हें नूह की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जाति से कहाः हे मेरी जाति! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैं ने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी-देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُم مَّقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونِ ﴿٧١﴾

72. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैं ने तुम से किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾

73. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अतः देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾

74. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर[1] लगा देते हैं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾

75. फिर हम ने उन के पश्चात मूसा और हारून को फ़िरऔन और उस के प्रमुखों के पास भेजा। तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

76. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्हों ने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧٦﴾

77. मूसा ने कहाः क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ﴿٧٧﴾

78. उन्हों ने कहाः क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं हैं।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

79. और फ़िरऔन ने कहाः (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾

---

1 अर्थात् जो बिना सोचे समझे सत्य को नकार देते हैं उन के सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो जाती है।

80. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहाः जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٨٠﴾

81. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहाः तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।

فَلَمَّآ أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾

82. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَٰتِهِۦ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾

83. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई ईमान नहीं लाया। फ़िरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फ़िरऔन का धरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुतः उल्लंघनकारियों में था।

فَمَآ ءَامَنَ لِمُوسَىٰٓ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِۦ عَلَىٰ خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ ۚ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْأَرْضِ وَإِنَّهُۥ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾

84. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहाः हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰقَوْمِ إِن كُنتُمْ ءَامَنتُم بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوٓا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾

85. तो उन्हों ने कहाः हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّٰلِمِينَ ﴿٨٥﴾

86. और अपनी दया से हमें काफ़िरों से बचा ले।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَٰفِرِينَ ﴿٨٦﴾

87. और हम ने मूसा तथा उस के भाई

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّءَا لِقَوْمِكُمَا

بِمِصْرَ بُيُوتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

(हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को क़िब्ला[1] बना लो। तथा नमाज़ की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝

88. और मूसा ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! तू ने फ़िरऔन और उस के प्रमुखों को संसारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रदान किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह से विचलित करते रहें? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे, और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दुःखदायी यातना न देख लें।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

89. अल्लाह ने कहाः तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۗ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

90. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फ़िरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोलाः मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।

---

1 «क़िब्ला» उस दिशा को कहा जाता है जिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ी जाती है।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

91. (अल्लाह ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी[1] बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान[2] दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की। फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अल्लाह उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْــَٔـلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاۗءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

94. फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह[3] हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

95. और आप कदापि उन में से न हों जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुठला

---

1 बताया जाता है किः 1898 ई॰ में इस फ़िरऔन का मम्मी किया हुआ शव मिल गया है जो क़ाहिरा के विचित्रालय में रखा हुआ है।

2 इस से अभिप्राय मिस्र और शाम के नगर हैं।

3 आयत में संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है। परन्तु वास्तव में उन को संबोधित किया गया है जिन को कुछ संदेह था। यह अर्बी की एक भाषा शैली है।

فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٥﴾

दिया, अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

96. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह ईमान नहीं लायेंगे।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

97. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दुःखदायी यातना नहीं देख लेंगे।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِينٍ ﴿٩٨﴾

98. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती ईमान[1] लाये फिर उस का ईमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनुस की जाति के सिवा, जब वह ईमान लाये तो हम ने उन से संसारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर[2] दी, और उन्हें एक निश्चित अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَآمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾

99. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में हैं सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि ईमान ले आयें?[3]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ وَيَجْعَلُ

100. किसी प्राणी के लिये यह संभव नहीं है कि अल्लाह की अनुमति[4]

---

1 अर्थात यातना का लक्षण देखने के पश्चात्।

2 यूनुस अलैहिस्सलाम का युग ईसा मसीह से आठ सौ वर्ष पहले बताया जाता है। भाष्यकारों ने लिखा है कि वह यातना की सूचना दे कर अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर नीनवा से निकल गये। इस लिये जब यातना के लक्षण नागरिकों ने देखे और अल्लाह से क्षमायाचना करने लगे तो उन से यातना दूर कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

3 इस आयत में यह बताया गया है कि सत्धर्म और ईमान ऐसा विषय है जिस में बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह अनहोनी बात है कि किसी को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया जाये। (देखियेः सूरह बक़रा, आयत-256)।

4 अर्थात उस के स्वभाविक नियम के अनुसार जो सोच-विचार से काम लेता है

الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है, जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْآيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾

101. (हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती हैं जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾

102. तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहियेः फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

103. फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेते हैं।

قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ أَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِي يَتَوَفّٰكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾

104. आप कह देंः हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वंदना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٥﴾

105. और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेश्वरवादी हो कर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।

वही ईमान लाता है।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

106. और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

107. और यदि अल्लाह आप को कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

108. (हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया[1] है। अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिये लाभदायक है। और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ।[2]

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

109. आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णेता है।

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्आन ले कर आ गये हैं।

2 अर्थात् मेरा कर्तव्य यह नहीं है कि तुम्हें बलपूर्वक सीधी डगर पर कर दूँ।

सूरह हूद - 11

यह सूरह मक्की है, इस में 123 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

1. अलिफ़, लाम, रा। यह पुस्तक है जिस की आयतें सुदृढ़ की गयीं, फिर सविस्तार वर्णित की गयी हैं उस की ओर से जो तत्वज्ञ सर्वसूचित है।

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝١

2. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۝٢

3. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝٣

4. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤

5. सुनो! यह लोग अपने सीनों को

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ

يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٥﴾

मोड़ते हैं, ताकि उस[1] से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँपते हैं, तब भी वह (अल्लाह) उन के छुपे को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला[2] है जो सीनों में (भेद) हैं।

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦﴾

6. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है। तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौंपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।[3]

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

7. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफ़िर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ

8. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो

---

1 अर्थात् अल्लाह से।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मिश्रणवादी अपने दिलों में कुफ़्र को यह समझ कर छुपाते हैं कि अल्लाह उसे नहीं जानेगा। जब कि वह उन के खुले छुपे और उन के दिलों के भेदों तक को जानता है।

3 अर्थातः अल्लाह, प्रत्येक व्यक्ति की जीवन मरण आदि की सब दशाओं से अवगत है।

لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٨﴾

अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज़ रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरेगी नहीं। और उन्हें वह (यातना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ ۚ إِنَّهُ لَيَـُٔوسٌ كَفُورٌ ﴿٩﴾

9. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताशा कृतघ्न हो जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿١٠﴾

10. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेगा कि मेरा सब दुःख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़नेलगता है।[1]

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾

11. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और सुकर्म किये, तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَا أَنتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾

12. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले हैं और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले हैं। और अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ पर रक्षक है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ

13. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (कुर्आन) को स्वयं बना लिया है?

1 इस में मनुष्य की स्वभाविक दशा की ओर संकेत है।

مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ[1], और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

14. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुर्आन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

15. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

16. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे हैं असत्य सिद्ध होने वाला है।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ

17. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण[2] रखता हो, और

---

1 अल्लाह का यह चैलन्ज है कि अगर तुम को शंका है कि यह कुर्आन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं बना लिया है तो तुम इस जैसी दस सूरतें ही बना कर दिखा दो। और यह चैलन्ज प्रलय तक के लिये है। और कोई दस तो क्या इस जैसी एक सूरह भी नहीं ला सकता। (देखियेः सूरह यूनुस, आयतः 38, तथा सूरह बक़रा, आयतः 23)

2 अर्थात जो अपने अस्तित्व तथा विश्व की रचना और व्यवस्था पर विचार कर के यह जानता था कि इस का स्वामी तथा शासक केवल अल्लाह ही है, उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता।

مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ اُولٰۗىِٕكَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ
فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۤ اِنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

उस के साथ ही एक गवाह (साक्षी)[1] भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्ग दर्शक तथा दया बन कर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस(कुर्आन) पर ईमान रखते हैं। और संप्रदायों में से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अतः आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिक्तर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ
يُعْرَضُوْنَ عَلٰي رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَاۗءِ
الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰي رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ
عَلَي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾

18. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे? वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे, और साक्षी (फ़रिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोले। सुनो! अत्याचारियों पर अल्लाह की धिक्कार है।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا
عِوَجًا ۭ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19. वही लोग अल्लाह की राह से रोक रहे हैं, और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।

اُولٰۗىِٕكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا
كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ ۘ يُضٰعَفُ
لَهُمُ الْعَذَابُ ۭ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ
وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. वह लोग धरती में विवश करने वाले नहीं थे। और न उन का अल्लाह के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. उन्हों ने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया, और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।

1 अर्थात नबी और कुर्आन।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

22. यह आवश्यक है कि परलोक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾

23. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

24. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो, और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते?[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٥﴾

25. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रसूल बना कर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

26. कि इबादत (वंदना) केवल अल्लाह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुख दायी दिन की यातना से डरता हूँ।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

27. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफ़िर हो गये, कहाः हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं। और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

---

1 कि दोनो का परिणाम एक नहीं हो सकता। एक को नरक में और दूसरे को स्वर्ग में जाना है। (देखियेः सूरह, हश्र आयतः 20)

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾

28. उस (अथात् नूह) ने कहाः हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया[1] प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें सुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका[2] दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?

وَيٰقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُم مُّلَاقُوا رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾

29. और हे मेरी जाति के लोगों! मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं, निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो।

وَيٰقَوْمِ مَن يَنصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن طَرَدتُّهُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾

30. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अल्लाह की पकड़ से[3] मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

31. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोषागार (ख़ज़ाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी

1 अर्थात नबूवत और मार्गदर्शन।

2 अर्थात में बलपूर्वक तुम्हें सत्य नहीं मनवा सकता।

3 अर्थात अल्लाह की पकड़ से, जिस के पास ईमान और कर्म की प्रधानता है, धन-धान्य की नहीं।

आँखें घृणा से देखती हैं अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

قَالُوا يٰنُوحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾

32. उन्हों ने कहाः हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देते हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللّٰهُ إِنْ شَآءَ وَمَآ أَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

33. उस ने कहाः उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيٓ إِنْ أَرَدْتُّ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ
كَانَ اللّٰهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

34. और मेरी शुभ चिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हित चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपथ करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ
إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾

35. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

وَأُوحِيَ إِلٰى نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا
مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

36. और नूह की ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अतः उस से दुखी न बनो जो वह कर रहे हैं।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي

37. और हमारी आँखों के सामने हमारी

فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

वह़्यी के अनुसार एक नाव बनाओ, और मुझ से उन के बारे में कुछ[1] न कहना जिन्हों ने अत्याचार किये हैं। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

38. और वह नाव बनाने लगा, और जब भी उस की जाति के प्रमुख उस के पास से गुज़रते, तो उस की हँसी उड़ाते। नूह ने कहाः यदि तुम हमारी हँसी उड़ाते हो तो हम भी ऐसे ही (एक दिन) तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

39. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर अपमान कारी यातना आयेगी। और स्थाई दुःख किस पर उतरेगा?

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया, और तन्नूर उबलने लगा तो हम ने (नूह से) कहाः उस में प्रत्येक प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो। और अपने परिजनों को, उन के सिवा जिन के बारे में पहले बता दिया गया है, और जो ईमान लाये हैं। और उस के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤١﴾

41. और उस (नूह) ने कहाः इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही से इस का चलना तथा इसे रुकना है। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَا بُنَيَّ ارْكَب مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾

42. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची लहरों में चलती रही। और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से अलग थाः हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार

1 अर्थात प्रार्थना और सिफ़ारिश न करना।

हो जा, और काफ़िरों के साथ न रह।

43. उस ने कहाः मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूँगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहाः आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आड़े आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ۭ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝٤٣

44. और कहा गयाः हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू थम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया, और नाव "जूदी"[1] पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया से) दूरी है।

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ
وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى
الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٤

45. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहाः मेरे पालनहार! मेरा पुत्र मेरे परिजनों में से है। निश्चय तेरा वचन सत्य है, तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ
اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ
الْحٰكِمِيْنَ ۝٤٥

46. उस (अल्लाह) ने उत्तर दियाः वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मी है। अतः मुझ से उस चीज़ का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ
صَالِحٍ ڶ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنِّىْٓ
اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٤٦

47. नूह ने कहाः मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से

قَالَ رَبِّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ

---

1 "जूदी" एक पर्वत का नाम है जो कुर्दिस्तान में "इब्ने उमर" द्वीप के उत्तर-पुर्व ओर स्थित है। और आज भी जूदी के नाम से ही प्रसिद्ध है।

بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

ऐसी चीज़ की मांग करूँ जिस (की वास्तविक्ता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।[1] और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۗ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

48. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۤءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

49. यह ग़ैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (वह़्यी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अतः आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝

50. और "आद" (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगों! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।[2]

يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۗ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى

51. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता।

1 अर्थात जब नूह (अलैहिस्सलाम) को बता दिया गया कि तुम्हारा पुत्र ईमान वालों में से नहीं है इस लिये वह अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकता तो नूह तुरन्त अल्लाह से क्षमा माँगने लगे।

2 अर्थात अल्लाह के सिवा तुम ने जो पूज्य बना रखे हैं वह तुम्हारे मन घड़त पूज्य हैं।

الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अल्लाह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।[1]

وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

52. हे मेरी जाति के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा माँगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी हो कर मुँह न फेरो।

قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

53. उन्हों ने कहाः हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं है, और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं।

إِن نَّقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

54. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहाः मैं अल्लाह को (गवाह) बनाता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।

مِن دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾

55. उस (अल्लाह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षडयंत्र रच लो, फिर

1 अर्थात यदि तुम समझ रखते तो अवश्य सोचते कि एक व्यक्ति अपने किसी संसारिक स्वार्थ के बिना क्यों हमें रातो दिन उपदेश दे रहा है और सारे दुख झेल रहा है। उस के पास कोई ऐसी बात अवश्य होगी जिस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

मुझे कुछ भी अवसर न दो।[1]

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

56. वास्तव में, मैं ने अल्लाह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह[2] पर है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

57. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैं ने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है। और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी[3] और जाति को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज़ का रक्षक है।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।

وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾

59. वही (जाति) "आद" है, जिस ने अपने पालनहार की आयतों (निशानियों) का इन्कार किया, और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।

---

1 अर्थात तुम और तुम्हारे सब देवी-देवता मिल कर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। क्योंकि मेरा भरोसा जिस अल्लाह पर है पूरा संसार उस के नियंत्रण में है उस के आगे किसी की शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बिगाड़ सके।

2 अर्थात उस की राह अत्याचार की राह नहीं हो सकती कि तुम दुराचारी और कुपथ में रह कर सफल रहो और मैं सदाचारी रह कर हानि में पड़ूँ।

3 अर्थात तुम्हें ध्वस्त निरस्त कर देगा।

60. और इस संसार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जातिः आद के लिये दूरी[1] हो!

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

61. और समूद[2] की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अतः उस से क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है।[3]

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾

62. उन्हों ने कहाः हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज़ (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।

قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا ۖ أَتَنْهَانَا أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٦٢﴾

63. उस (सालेह) ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي

---

1 अर्थात अल्लाह की दया से दूरी। इस का प्रयोग धिक्कार और विनाश के अर्थ में होता है।

2 यह जाति तबूक और मदीना के बीच "अल-हिज्र" में आबाद थी।

3 देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 186।

وَآتَانِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٦٣﴾

यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो, तो कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।

وَيَا قَوْمِ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾

64. और हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह[1] की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरे। और उसे कोई दुख न पहुँचाओ, अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ﴿٦٥﴾

65. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहाः तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٦٦﴾

66. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٦٧﴾

67. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया, और अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

1 उसे अल्लाह की ऊँटनी इस लिये कहा गया है कि उसे अल्लाह ने उन के लिये एक पर्वत से निकाला था। क्योंकि उन्हों ने इस की माँग की थी कि यदि पर्वत से ऊँटनी निकलेगी तो हम ईमान लायेंगे। (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا إِنَّ ثَمُودَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ﴿٦٨﴾

68. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे। सावधान! समूद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुन लो, समूद के लिये दूरी हो।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ ۖ فَمَا لَبِثَ أَن جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ ﴿٦٩﴾

69. और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास शुभसूचना ले कर आये। उन्होंने सलाम किया तो उस ने उत्तर में सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह एक भुना हुआ बछड़ा[1] ले आये।

فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٠﴾

70. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर से संशय में पड़ गया। और उन से दिल में भय का अनुभव किया। उन्होंने कहाः भय न करो। हम लूत[2] की जाति की ओर भेजे गये हैं।

وَامْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ وَمِن وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ﴿٧١﴾

71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी हो कर सुन रही थी। तो वह हँस पड़ी[3], तो उसे हम ने इस्हाक़ (के जन्म) की शुभ सूचना[4] दी। और इस्हाक़ के पश्चात् याकूब की।

قَالَتْ يَا وَيْلَتَىٰ أَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَٰذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٧٢﴾

72. वह बोलीः हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ, और मेरा यह पति भी बूढ़ा है? वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है।

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۖ رَحْمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

73. फ़रिश्तों ने कहाः क्या तू अल्लाह के

1 अर्थात अतिथि सत्कार के लिये।

2 लूत अलैहिस्सलाम को भाष्यकारों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भतीजा बताया है, जिन को अल्लाह ने सदूम की ओर नबी बना कर भेजा।

3 कि भय की कोई बात नहीं है।

4 फ़रिश्तों द्वारा।

आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अल्लाह की दया तथा सम्पन्नता है, निःसंदेह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।

عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ﴿٧٣﴾

74. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभ सूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा।[1]

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾

75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहने वाला था।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيبٌ ﴿٧٥﴾

76. (फ़रिश्तों ने कहा)ः हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ो, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश[2] आ गया है, तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾

77. और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया। और कहाः यह तो बड़ी विपता का[3] दिन है।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

78. और उस की जाति के लोग दोड़ते हुये उस के पास आ गये। और इस

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا

1 अर्थात प्रार्थना करने लगा कि लूत की जाति को अभी संभलने का और अवसर दिया जाये हो सकता है वह ईमान लायें।

2 अर्थात यातना का आदेश।

3 फ़रिश्ते सुन्दर किशोरों के रूप में आये थे। और लूत अलैहिस्सलाम की जाति का आचरण यह था कि वह बालमैथुन में रुचि रखती थी। इसलिये उन्होंने उन को पकड़ने की कोशिश की। इसीलिये इन अतिथियों के आने पर लूत अलैहिस्सलाम व्याकुल हो गये थे।

يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰۤؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝

से पूर्व वह कुकर्म[1] किया करते थे। लूत ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी[2] पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अतः अल्लाह से डरो, और मेरे अतिथियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝

79. उन लोगों ने कहाः तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं।[3] तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْۤ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝

80. उस (लूत) ने कहाः काश मेरे पास बल होता! या कोई दृढ़ सहारा होता जिस की शरण लेता!

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْۤا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝

81. फ़रिश्तों ने कहाः हे लूत! हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फ़रिश्ते) हैं। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रातः काल है। क्या प्रातः काल समीप नहीं है?

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا

82. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने उस बस्ती को तहस नहस

1 अर्थात बालमैथुन। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात बस्ती की स्त्रियाँ। क्यों कि जाति का नबी उन के पिता के समान होता है। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

3 अर्थात हमें स्त्रियों में कोई रुचि नहीं है।

कर दिया। और उन पर पकी हुई कंकरियों की बारिश कर दी।

عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾

83. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह लगायी हुयीं थीं। और वह[1] (बस्ती) अत्याचारियों[2] से कोई दूर नहीं है।

مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

84. और मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा कोई तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल में कमी न करो।[3] मैं तुम्हें सम्पन्न देख रहा हूँ। इसलिये मुझे डर है कि तुम्हें कहीं यातना न घेर ले।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾

85. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को उन की चीज़ें कम न दो, तथा धरती में उपद्रव फैलाते न फिरो।

وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

86. अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिये अच्छी है, यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

87. उन्हों ने कहाः हे शुऐब! क्या तेरी नमाज़ (इबादत) तुझे आदेश दे रही है कि हम उसे त्याग दें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? अथवा अपने धनों में जो चाहें करें?

قَالُوا يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

---

1 अर्थात सदूम, जो समूद की बस्ती थी।

2 अर्थात आज भी जो उन की नीति पर चल रहे हैं उन पर ऐसी ही यातना आ सकती है।

3 शुऐब की जाति में शिर्क (मिश्रणवाद) के सिवा नाप तौल में कमी करने का रोग भी था।

वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है!

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۭ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

88. शुऐब ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ?) मैं नहीं चाहता कि उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ। और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अल्लाह के योगदान पर निर्भर करता है। मैं ने उसी पर भरोसा किया है, और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾

89. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾

90. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾

91. उन्हों ने कहाः हे शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।

92. शुऐब ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अल्लाह से अधिक भारी हैं? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है?[1] निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۗ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

93. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۗ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۗ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

94. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शुऐब को, और जो उस के साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ﴿٩٤﴾

95. जैसे वह कभी उन में बसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۗ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٩٦﴾

1 अर्थात तुम मेरे भाई बन्धु के भय से मेरे विरुद्ध कुछ करने से रुक गये तो क्या वह तुम्हारे विचार में अल्लाह से अधिक प्रभाव रखते हैं?

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِۦ فَٱتَّبَعُوٓا۟ أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَآ أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾

97. फ़िरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्हों ने फ़िरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फ़िरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।

يَقْدُمُ قَوْمَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ ٱلنَّارَ ۖ وَبِئْسَ ٱلْوِرْدُ ٱلْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾

98. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?

وَأُتْبِعُوا۟ فِى هَٰذِهِۦ لَعْنَةً وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ بِئْسَ ٱلرِّفْدُ ٱلْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾

99. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?

ذَٰلِكَ مِنْ أَنۢبَآءِ ٱلْقُرَىٰ نَقُصُّهُۥ عَلَيْكَ ۖ مِنْهَا قَآئِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾

100. हे नबी! यह उन बस्तियों के समाचार हैं जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।

وَمَا ظَلَمْنَٰهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ ۖ فَمَآ أَغْنَتْ عَنْهُمْ ءَالِهَتُهُمُ ٱلَّتِى يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

101. और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, उन के कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया, और उन्हों ने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ ٱلْقُرَىٰ وَهِىَ ظَٰلِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُۥٓ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

102. और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, बस्ती को

1 अर्थात यह जातियाँ अपने देवी-देवता की पूजा इसलिये करती थीं कि वह उन्हें लाभ पहुँचायेंगे। किन्तु उन की पूजा ही उन पर अधिक यातना का कारण बन गई।

पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दुखदायी और कड़ी होती[1] है।

103. निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरे। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾

104. और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُودٍ ﴿١٠٤﴾

105. जब वह दिन आ जायेगा तो अल्लाह की अनुमति बिना कोई प्राणी बात नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ﴿١٠٥﴾

106. फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे, उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ﴿١٠٦﴾

107. वे उस में सदावासी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

108. और जो भाग्यवान हैं, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۖ عَطَاءً غَيْرَ مَجْذُوذٍ ﴿١٠٨﴾

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि अल्लाह अत्याचारी को अवसर देता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उस से बचता नहीं, और आप ने फिर यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰: 4686)

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَٰؤُلَاءِ ۚ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُم مِّن قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَمُوَفُّوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾

109. अतः (हे नबी!) आप उस के बारे में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते[1] रहे हैं। वस्तुतः हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾

110. और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात[2] निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे[3] उस के बारे में संदेह और शंका में हैं।

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

111. और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

112. अतः (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये। और वह भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न[4] करो क्योंकि वह (अल्लाह)

---

1 अर्थात इन की पूजा निर्मूल और बाप-दादा की परम्परा पर आधारित है, जिस का सत्य से कोई संबन्ध नही है।

2 अर्थात यह कि संसार में प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार कर्म करने का अवसर दिया जायेगा।

3 अर्थात मिश्रणवादी क़ुर्आन के विषय में।

4 अर्थात धर्मादेश की सीमा का।

तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۤءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۗ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۗ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. तथा आप नमाज़ की स्थापना करें, दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने[1] पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते[2] हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾

115. तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾

116. तो तुम से पहले युगों में ऐसे सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे, जो धन-धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बन कर रहे।

---

1 नमाज़ के समय के सविस्तार विवरण के लिये देखियेः सूरह बनी इस्राईल, आयतः 78, सूरह ताहा, आयतः 130, तथा सूरह रूम, आयतः 17-18।

2 हदीस में आता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः यदि किसी के द्वार पर एक नहर जारी हो जिस में वह पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उस के शरीर पर कुछ मैल रह जायेगा? इसी प्रकार पाँचों नमाज़ों से अल्लाह भूल-चूक को दूर (क्षमा) कर देता है। (बुख़ारीः 528, मुस्लिमः 667) किन्तु बड़े बड़े पाप जैसे शिर्क, हत्या इत्यादि, बिना तौबा के क्षमा नहीं किये जाते।

117. और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

118. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾

119. परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है।[1] और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिन्नों तथा मानवों से अवश्य भर दूँगा[2]।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾

120. और (हे नबी!) यह नबियों की सब कथाऐं हम आप को सुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़ कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

121. और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۗ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾

122. तथा तुम प्रतीक्षा[3] करो, हम भी

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

1 अर्थात एक ही सत्धर्म पर सब को कर देता। परन्तु उस ने प्रत्येक को अपने विचार की स्वतंत्रता दी है कि जिस धर्म या विचार को चाहे अपनाये ताकि प्रलय के दिन सत्धर्म को ग्रहण न करने पर उन्हें यातना का स्वाद चखाया जाये।

2 क्योंकि इस स्वतंत्रता का ग़लत प्रयोग कर के अधिक्तर लोग सत्धर्म को छोड़ बैठे।

3 अर्थात अपने परिणाम की।

प्रतीक्षा करने वाले हैं।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۟

123. अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीज़ों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (वंदना) करें, और उसी पर निर्भर रहें। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।
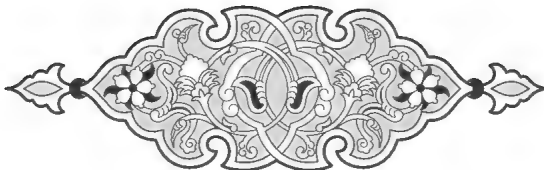
सूरह यूसुफ़ - 12

सूरह यूसुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस में नबी यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की पूरी कथा का वर्णन किया गया है। इस के द्वारा यह संकेत किया गया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन को मक्का में कुरैश ने जान से मार देने अथवा देश से निकाल देने की योजना बनायी है वह ऐसे ही निष्फल हो जायेंगे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाईयों की सारी योजना निष्फल हो गई। और एक दिन ऐसा भी आया कि सब भाई उन के आगे हाथ फैलाये खड़े थे। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना हिज्रत कर गये। फिर सन् (8) हिज्री में आप ने मक्का को विजय किया तो आप के विरोधि कुरैश आप के आगे उसी प्रकार विवश खड़े थे जैसे युसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाई उन के आगे हाथ फैलाये कह रहे थे की आप हमे दान कीजिये, अल्लाह दानशीलों को अच्छा बदला देता है। और जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों को क्षमा कर दिया वैसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहाः जाओ, तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सर्वोत्तम दयावान् है। आप उन के अत्याचार का बदला ले सकते थे किन्तु जब आप ने उन से पूछा कि तुम्हारा विचार क्या है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?? तो उन के यह कहने पर कि आप सज्जन भाई तथा सज्जन भाई के पुत्र हैं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम पर कोई दोष नहीं, जाओ तुम सभी स्वतंत्र हो।

हदीस में है कि सज्जन के सज्जन पुत्र के सज्जन पुत्र, यूसुफ़ पुत्र याकूब पुत्र इस्हाक़ पुत्र इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (देखियेः सहीह बुख़ारी, हदीस नंः 3382)

एक दूसरी हदीस में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि यदि मैं उतने दिन बंदी रहता जितने दिन यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) बंदी रहे तो जो व्यक्ति उन को बुलाने आया था मैं उस

के साथ चला जाता।

(देखियेः सहीह बुख़ारीः हदीस नं॰: 3372, और सहीह मुस्लिमः हदीस नं॰: 2370)

याद रहे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से अभिप्राय यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सहन की सराहना करना है।

- इस सूरह में यह शिक्षा है कि जो अल्लाह चाहे वही होता है। विरोधियों के चाहने से कुछ नहीं होता, इस में नव युवको के लिये अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये भी एक शिक्षा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 अलिफ़, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۞

2. हम ने इस क़ुर्आन को अर्बी में उतारा है, ताकि तुम समझो।[1]

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۞

3. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस क़ुर्आन की वह्यी द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं। अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۞

4. जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहाः हे मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۞

5. उस ने कहाः हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ

1 क्यों कि क़ुर्आन के प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे फिर उन के द्वारा दूसरे साधारण मनुष्यों को संबोधित किया गया है तो यदि प्रथम संबोधित ही क़ुर्आन नहीं समझ सकते तो दूसरों को कैसे समझा सकते थे?

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَٰنَ لِلْإِنسَٰنِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ⑤

अपने भाईयों को न बताना[1] अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे। वास्तव में शैतान मानव का खुला शत्रु है।

وَكَذَٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُۥ عَلَيْكَ وَعَلَىٰٓ ءَالِ يَعْقُوبَ كَمَآ أَتَمَّهَا عَلَىٰٓ أَبَوَيْكَ مِن قَبْلُ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْحَٰقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑥

6. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याक़ूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा।[2] जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।

لَّقَدْ كَانَ فِى يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِۦٓ ءَايَٰتٌ لِّلسَّآئِلِينَ ⑦

7. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाईयों (की कथा) में पूछने वालों के[3] लिये कई निशानियाँ हैं।

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰٓ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ⑧

8. जब उन (भाईयों) ने कहाः यूसुफ़ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय हैं। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।

ٱقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ ٱطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنۢ بَعْدِهِۦ قَوْمًا صَٰلِحِينَ ⑨

9. यूसुफ़ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ़ हो जायेगा। और इस के

---

1 यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दूसरी माँओं से दस भाई थे। और एक सगा भाई था। याक़ूब अलैहिस्सलाम यह जानते थे कि सौतीले भाई, यूसुफ़ से ईर्ष्या करते हैं। इसलिये उन को सावधान कर दिया कि अपना स्वप्न उन्हें न बतायें।

2 यहाँ पुरस्कार से अभिप्राय नबी बनाना है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

3 यह प्रश्न यहूदियों ने मक्का वासियों के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था, कि वह कौनसे नबी हैं जो शाम में रहते थे, और जब उन का पुत्र मिस्र निकल गया तो उस पर रोते-रोते अन्धे हो गये?? इस पर यह पूरी सूरह उतरी। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

पश्चात् पवित्र बन जाओ।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿١٠﴾

10. उन में से एक ने कहाः यूसुफ़ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे कोई क़ाफ़िला निकाल ले जायेगा, यदि कुछ करने वाले हो।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿١١﴾

11. उन्हों ने कहाः हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ़ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक हैं।

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٢﴾

12. उसे कल हमारे साथ (वन में) भेज दें। वह खाये पिये और खेले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿١٣﴾

13. उस (पिता) ने कहा। मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٤﴾

14. सब (भाईयों) ने कहाः यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह हैं, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

15. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुऐं में डाल दें, और हम ने उस (यूसुफ़) की ओर वह्यी की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾

16. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ

17. सब ने कहाः हे पिता! हम आपस में

عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

दौड़ करने लगे। और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़िया खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं हैं, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।

وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

18. और वह यूसुफ़ के कुर्ते पर झूठा रक्त[1] लगा कर लाये। उस ने कहाः बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है! तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अल्लाह ही से सहायता माँगनी है।

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

19. और एक क़ाफ़िला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकाराः शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक सामग्री समझ कर छुपा लिया। और अल्लाह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾

20. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दिरहमों में बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहाः उस को आदर-मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और ताकि उसे बातों का अर्थ सिखायें।

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि वे बकरी के बच्चे का रक्त लगा कर लाये थे।

और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है। परन्तु अधिक्तर लोग जानते नहीं हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُۥٓ ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

22. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।

وَرَٰوَدَتْهُ ٱلَّتِى هُوَ فِى بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِۦ وَغَلَّقَتِ ٱلْأَبْوَٰبَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ ٱللَّهِ ۖ إِنَّهُۥ رَبِّىٓ أَحْسَنَ مَثْوَاىَ ۖ إِنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾

23. और वह जिस स्त्री[1] के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोलीः "आ जाओ"। उस ने कहाः अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वामी है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِۦ ۖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ أَن رَّءَا بُرْهَٰنَ رَبِّهِۦ ۚ كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ ٱلسُّوٓءَ وَٱلْفَحْشَآءَ ۚ إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

24. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ़) भी उस की इच्छा करते, यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते।[2] इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्जा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।

وَٱسْتَبَقَا ٱلْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُۥ مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا ٱلْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ

25. और दोनों द्वार की ओर दोड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के

1 अभिप्रेत मिस्र के राजा (अज़ीज़) की पत्नी है।

2 यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कोई फ़रिश्ता नहीं एक मनुष्य थे। इस लिये बुराई का इरादा कर सकते थे किन्तु उसी समय उन के दिल में यह बात आई कि मैं पाप कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकूँगा। इस प्रकार अल्लाह ने उन्हें बुराई से बचा लिया, जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की बहुत बड़ी प्रधानता है।

أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوٓءًا إِلَّآ أَن يُسۡجَنَ أَوۡ عَذَابٌ أَلِيمٞ ۝٢٥

पति को द्वार के पास पाया। उस (स्त्री) ने कहाः जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दुःखदायी यातना (दी जाये)?

قَالَ هِيَ رَٰوَدَتۡنِي عَن نَّفۡسِيۚ وَشَهِدَ شَاهِدٞ مِّنۡ أَهۡلِهَآ إِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن قُبُلٖ فَصَدَقَتۡ وَهُوَ مِنَ ٱلۡكَٰذِبِينَ ۝٢٦

26. उस ने कहाः इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।

وَإِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٖ فَكَذَبَتۡ وَهُوَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ۝٢٧

27. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ़) सच्चा है।

فَلَمَّا رَءَا قَمِيصَهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٖ قَالَ إِنَّهُۥ مِن كَيۡدِكُنَّۖ إِنَّ كَيۡدَكُنَّ عَظِيمٞ ۝٢٨

28. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहाः वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चालें हैं और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।

يُوسُفُ أَعۡرِضۡ عَنۡ هَٰذَاۚ وَٱسۡتَغۡفِرِي لِذَنۢبِكِۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ ٱلۡخَاطِـِٔينَ ۝٢٩

29. हे यूसुफ़! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा माँग, वास्तव में तू पापियों में से है।

۞وَقَالَ نِسۡوَةٞ فِي ٱلۡمَدِينَةِ ٱمۡرَأَتُ ٱلۡعَزِيزِ تُرَٰوِدُ فَتَىٰهَا عَن نَّفۡسِهِۦۖ قَدۡ شَغَفَهَا حُبًّاۖ إِنَّا لَنَرَىٰهَا فِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٖ ۝٣٠

30. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहाः अज़ीज़ (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दास को रिझा रही है। उसे प्रेम ने मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।

فَلَمَّا سَمِعَتۡ بِمَكۡرِهِنَّ أَرۡسَلَتۡ إِلَيۡهِنَّ وَأَعۡتَدَتۡ لَهُنَّ مُتَّكَـٔٗا وَءَاتَتۡ كُلَّ وَٰحِدَةٖ مِّنۡهُنَّ سِكِّينٗا وَقَالَتِ ٱخۡرُجۡ عَلَيۡهِنَّۖ فَلَمَّا رَأَيۡنَهُۥٓ أَكۡبَرۡنَهُۥ وَقَطَّعۡنَ

31. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कारी की बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तकिये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी

أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَآ إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

दे दी।[1] उस ने (यूसुफ़ से) कहाः इन के समक्ष "निकल आ"। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चकित (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठीं, तथा पुकार उठीं: अल्लाह पवित्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फ़रिश्ता है।

قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَآ ءَامُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾

32. उस ने कहाः यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैं ने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला। और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾

33. यूसुफ़ ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! मुझे क़ैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही हैं। और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूँगा। और अज्ञानों में से हो जाऊँगा।

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

34. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّن بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾

35. फिर उन लोगों[2] ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख[3] लीं, कि उस (यूसुफ़) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।

---

1 ताकि अतिथि स्त्रियाँ उस से फलों को काट कर खायें जो उन के लिये रखे गये थे।

2 अर्थात अज़ीज़ (मिस्र देश का शासक) और उस के साथियों ने।

3 अर्थात यूसुफ़ के निर्दोष होने की निशानियाँ।

36. और उस के साथ क़ैद में दो युवकों ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहाः मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहाः मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने सिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं कि तुम सदाचारियों में से हो।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۗ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۗ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

37. यूसुफ़ ने कहाः तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी हैं। मैं नें उस जाति का धर्म तज दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वही परलोक को नकारने वाले हैं।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۗ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۗ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

38. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इस्हाक़ और याक़ूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोंगों पर। परन्तु अधिक्तर लोग कृतज्ञ नहीं होते।[1]

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۗ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾

39. हे मेरे क़ैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम हैं, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह??

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

40. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (वंदना) करते हो वह केवल नाम हैं,

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ

1 अर्थात तौहीद और नबियों के धर्म को नहीं मानते जो अल्लाह का उपकार है।

أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं। अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिक्तर लोग नहीं जानते हैं।

يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا ۖ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِن رَّأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ ﴿٤١﴾

41. हे मेरे क़ैद के दोनों साथियो! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फाँसी दी जायेगी, और पक्षी उस के सिर में से खायेंगे। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ رَبِّكَ فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾

42. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला हैः मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना। तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अतः वह (यूसुफ़) कई वर्ष क़ैद में रह गया।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾

43. और (एक दिन) राजा ने कहाः मैं सात मोटी गायों को सपने में देखता हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबंध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾

44. सब ने कहाः यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।

45. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयीः मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बता दूँगा, तुम मुझे भेज[1] दो।

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾

46. हे यूसुफ़! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं, और सात सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान[2] लें।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾

47. यूसुफ़ ने कहाः तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो, परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾

48. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

49. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरसाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

50. और राजा ने कहाः उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ़ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

---

1 अर्थात क़ैद ख़ाने में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास।

2 अर्थात आप की प्रतिष्ठा और ज्ञान को।

जाओ[1], और उस से पूछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्हों ने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि-भांति अवगत है।

51. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछाः तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ़ के मन को रिझाया? सब ने कहाः अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अज़ीज़ की पत्नी बोल उठीः अब सत्य उजागर हो गया, वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निःसंदेह वह सत्वादियों में है।[2]

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوسُفَ عَنْ نَّفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوٓءٍ ۚ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾

52. यह (यूसुफ़) ने इस लिये किया, ताकि उसे (अज़ीज़ को) विश्वास हो जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के साथ विश्वास घात नहीं किया। और वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से प्रेम नहीं करता।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

53. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारता है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌ ۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ۚ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾

1 यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को बंदी बनाये जाने से अधिक उस का कारण जानने की चिन्ता थी। वह चाहते थे कि क़ैद से निकलने से पहले यह सिद्ध होना चाहिये कि मैं निर्दोष था।

2 यह क़ुर्आन पाक का बड़ा उपकार है कि उस ने रसूलों तथा नबियों पर लगाये गये बहुत से आरोपों का निवारण (खण्डन) कर दिया है। जिसे अहले किताब (यहूदी तथा ईसाई) ने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के विषय में बहुत सी निर्मूल बातें घड़ ली थीं जिन को क़ुर्आन ने आकर साफ़ कर दिया।

क्षमाशील तथा दयावान् है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

54. राजा ने कहाः उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ। और जब उस (यूसुफ़) से बात की, तो कहाः वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

55. उस (यूसुफ़) ने कहाः मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा ज्ञानी हूँ।

وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَاءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

56. और इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।

وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

57. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरते रहे।

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾

58. और यूसुफ़ के भाई आये[1], तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।

وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٥٩﴾

59. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहाः अपने सौतीले भाई[2] को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ?

---

1 अर्थात अकाल के युग में अन्न लेने के लिये फ़िलस्तीन से मिस्र आये थे।

2 जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सगा भाई बिन्यामीन था।

60. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं, और न तुम मेरे समीप होगे।

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾

61. वह बोलेः हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفٰعِلُونَ ﴿٦١﴾

62. और यूसुफ़ ने अपने सेवकों को आदेश दियाः उन का मूलधन[1] उन की बोरियों में रख दो, संभवतः वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवतः वापिस आयें।

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلٰى أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾

63. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहाः हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (ग़ल्ला) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلٰى أَبِيهِمْ قَالُوا يٰأَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُونَ ﴿٦٣﴾

64. उस (पिता) ने कहाः क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ़) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ? तो अल्लाह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنْتُكُمْ عَلٰى أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ ﴿٦٤﴾

65. और जब उन्हों ने अपना सामान खोला, तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेर दिया गया है, उन्हों ने कहाः हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يٰأَبَانَا مَا نَبْغِي هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيرٌ ﴿٦٥﴾

1 अर्थात जिस धन से अन्न ख़रीदा है।

लिये ग़ल्ले (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे[1], यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।

66. उस (पिता) ने कहाः मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझे दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह कि तुम को घेर लिया[2] जाये। और जब उन्हों ने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी बात (वचन) का निरीक्षक है।

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

67. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहाः हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज़ से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।

وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي عَنكُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

68. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया।[3] और वास्तव में वह उस का

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم مَّا كَانَ يُغْنِي عَنْهُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

1 अर्थात अपने भाई बिन्यामीन का जो उन की दूसरी माँ से था।

2 अर्थात विवश कर दिये जाओ।

3 अर्थात एक अपना उपाय था।

ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविक्ता) का ज्ञान नहीं रखते।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ
إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

69. और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहाः मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अतः उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे हैं।

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي
رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ
إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ﴿٧٠﴾

70. फिर जब उस (यूसुफ़) ने उन का सामान तय्यार करा दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकाराः हे क़ाफ़िले वालो! तुम लोग तो चोर हो।

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِم مَّاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾

71. उन्होंने फिर कर कहाः तुम क्या खो रहे हो?

قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ
حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾

72. उन (कर्मचारियों) ने कहाः हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उस का प्रतिभू[1] हूँ।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُم مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي
الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٧٣﴾

73. उन्हों ने कहाः तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।

قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِن كُنتُمْ كَاذِبِينَ ﴿٧٤﴾

74. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा?[2]

قَالُوا جَزَاؤُهُ مَن وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ

75. उन्हों ने कहाः उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये,

1 अर्थात एक ऊँट के बोझ बराबर पुरस्कार देने का भार मुझ पर है।

2 अर्थात चोर का।

كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٥

वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देते हैं।[1]

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ
اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا
لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ
وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝٧٦

76. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ़) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बोरी से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ़ के लिये उपाय[2] किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी[3] है।

قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ
قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝٧٧

77. उन भाईयों ने कहाः यदि उस ने चोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ़ ने) कहाः सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا

78. उन्हों ने कहाः हे अज़ीज़![4] उस

1 अर्थात याकूब अलैहिस्सलाम के धर्म विधान में चोर को दास बना लेने का नियम था। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

2 अपने भाई बिन्यामीन को रोक लेने की विधि बना दी।

3 अर्थात अल्लाह से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। इसलिये किसी को अपने ज्ञान पर गर्व नहीं होना चाहिये।

4 यहाँ पर «अज़ीज़» का प्रयोग यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के लिये किया गया है। क्योंकि उन्हीं के पास सरकार के अधिक्तर अधिकार थे।

फَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٨

का पिता बहुत बूढ़ा है। अतः हम में से किसी एक को उस के स्थान पर ले लो। वास्तव में हम आप को परोपकारी देख रहे हैं।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝٧٩

79. उस (यूसुफ़) ने कहाः अल्लाह की शरण कि हम (किसी अन्य को) पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे) जिस के पास अपना सामान पाया है। (यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में अत्याचारी होंगे।

فَلَمَّا اسْتَيْــَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۗ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨٠

80. फिर जब उस से निराश हो गये तो एकान्त में हो कर परामर्श करने लगे। उन के बड़े ने कहाः क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को साक्षी बना कर दृढ़ वचन लिया था? और इस से पहले जो अपराध तुम ने यूसुफ़ के बारे में किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता अनुमति न दे दें। अथवा अल्लाह मेरे लिये निर्णय न कर दे। और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝٨١

81. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ, और कहो कि हे हमारे पिता! आप के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही साक्ष्य दिया जिसे हम ने[1] जाना, और हम ग़ैब के रखवाले नहीं[2] थे।

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ

82. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें,

1 अर्थात राजा का प्याला उस के सामान से निकलते देखा।

2 अर्थात आप को उस के वापिस लाने का वचन देते समय यह नहीं जानते थे कि वह चोरी करेगा। (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी)

جिस में हम थे, और उस क़ाफ़िले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं।

أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٨٢﴾

83. उस (पिता) ने कहाः ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है। तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में वही जानने वाला तत्वदर्शी है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾

84. और उन से मुँह फेर लिया, और कहाः हाय यूसुफ! और उस की दोनों आखें शोक के कारण (रोते-रोते) सफ़ेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾

85. उन (पुत्रों) ने कहाः अल्लाह की शपथ! आप बराबर यूसुफ़ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना विनाश कर लें।

قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَأُ تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ تَكُونَ
حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾

86. उस ने कहाः मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُو بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

87. हे मेरे पुत्रो! जाओ, और यूसुफ़ और उस के भाई का पता लगाओ। और अल्लाह की दया से निराश न हो। वास्तव में अल्लाह की दया से वही निराश होते हैं जो काफ़िर हैं।

يَا بَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِن يُوسُفَ وَأَخِيهِ
وَلَا تَيْأَسُوا مِن رَّوْحِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَيْأَسُ مِن
رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾

88. फिर जब उस (यूसुफ़) के पास (मिस्र में) गये तो कहाः हे अज़ीज़! हम

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا

وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝٨٨

पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं, अतः हमें (अन्न का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें। वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ۝٨٩

89. उस (यूसुफ़) ने कहाः क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّـتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٩٠

90. उन्हों ने कहाः क्या आप यूसुफ़ हैं? यूसुफ़ ने कहाः मैं यूसुफ हूँ। और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِــِٕيْنَ ۝٩١

91. उन्होंने कहाः अल्लाह की शपथ! उस ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۭ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝٩٢

92. यूसुफ़ ने कहाः आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे! वही सर्वाधिक दयावान् है।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰي وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩٣

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ۝٩٤

94. और जब क़ाफ़िले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहाः मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे

बहका हुआ बूढ़ा न समझो।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

95. उन लोगों[1] ने कहाः अल्लाह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. फिर जब शुभ-सूचक आ गया, तो उस ने वह (कुर्ता) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहाः क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अल्लाह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

97. सब (भाईयों) ने कहाः हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा मांगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

98. याकूब ने कहाः मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करूँगा, वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ ؕ

99. फिर जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहाः नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अल्लाह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ

100. तथा अपने माता-पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के समक्ष सज्दे में गिर गये।[2] और यूसुफ़ ने कहाः

1 याकूब अलैहिस्सलाम के परिजनों ने जो फ़िलस्तीन में उन के पास थे।

2 जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो सब भाई तथा माता-पिता उन के सम्मान के लिये सज्दे में गिर गये। जो अब इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है। यही

مِنَ السِّجۡنِ وَجَآءَ بِكُم مِّنَ الۡبَدۡوِ مِنۢ بَعۡدِ اَنۡ نَّزَغَ الشَّيۡطٰنُ بَيۡنِيۡ وَبَيۡنَ اِخۡوَتِيۡ ؕ اِنَّ رَبِّيۡ لَطِيۡفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ۝١٠٠

हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सच्च कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को गाँवों से मेरे पास (नगर में) ले आया, इस के पश्चात् कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

رَبِّ قَدۡ اٰتَيۡتَنِيۡ مِنَ الۡمُلۡكِ وَعَلَّمۡتَنِيۡ مِنۡ تَاۡوِيۡلِ الۡاَحَادِيۡثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۟ اَنۡتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيۡ مُسۡلِمًا وَّاَلۡحِقۡنِيۡ بِالصّٰلِحِيۡنَ ۝١٠١

101. हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।

ذٰلِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَيۡبِ نُوۡحِيۡهِ اِلَيۡكَ ۚ وَمَا كُنۡتَ لَدَيۡهِمۡ اِذۡ اَجۡمَعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ وَهُمۡ يَمۡكُرُوۡنَ ۝١٠٢

102. (हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिस की वह्यी हम आप की ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

وَمَاۤ اَكۡثَرُ النَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ۝١٠٣

103. और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।

उस स्वप्न का फल था जिस में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सितारों, सूर्य तथा चाँद को अपने लिये सज्दा करते देखा था।

104. और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (क़ुर्आन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿١٠٤﴾

105. तथा आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण[1]) हैं जिन पर से लोग गुज़रते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते। [2]

وَكَأَيِّن مِّنْ ءَايَةٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾

106. और उन में से अधिक्तर अल्लाह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुश्‌रिक (मिश्रणवादी)[3] भी हैं।

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِٱللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾

107. तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये, और वह अचेत रह जायें?

أَفَأَمِنُوٓا۟ أَن تَأْتِيَهُمْ غَٰشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ ٱللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ ٱلسَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾

108. (हे नबी!) आप कह दें: यही मेरी डगर है, मैं अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ। मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ, और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अल्लाह पवित्र है, और मैं मुश्‌रिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।

قُلْ هَٰذِهِۦ سَبِيلِىٓ أَدْعُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ ۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا۠ وَمَنِ ٱتَّبَعَنِى ۖ وَسُبْحَٰنَ ٱللَّهِ وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾

---

1 अर्थात सहस्त्रों वर्ष की यह कथा इस विवरण के साथ वह्यी द्वारा ही संभव है, जो आप के अल्लाह के नबी होने तथा क़ुर्आन के अल्लाह की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

2 अर्थात विश्व की प्रत्येक चीज़ अल्लाह के अस्तित्व और उस की शक्ति और सद्‌गुणों की परिचायक है, मात्र सोच विचार की आवश्यक्ता है।

3 अर्थात अल्लाह के अस्तित्व और गुणों का विश्वास रखते हैं, फिर भी पूजा-अर्चना अन्य की करते हैं।

109. और हम ने आप से पहले मानव[1] पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशना भेजते रहे, नगर वासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन से पहले थे? और निश्चय आख़िरत (परलोक) का घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अल्लाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِىٓ إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ ٱلْقُرَىٰٓ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَيَنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾

110. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये, और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते हैं बचा लेते हैं, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।

حَتَّىٰٓ إِذَا ٱسْتَيْـَٔسَ ٱلرُّسُلُ وَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا۟ جَآءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّىَ مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ ٱلْقَوْمِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾

111. इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (क़ुर्आन) ऐसी बातों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं

لَقَدْ كَانَ فِى قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ

1 क़ुर्आन की अनेक आयतों में आप को यह बात मिलेगी कि रसूलों का अस्वीकार उन की जातियों ने दो ही कारण से किया।:
एक तो यह कि उन के एकेश्वरवाद की शिक्षा उन के बाप-दादा की परम्परा के विरुद्ध थी, इसलिये सत्य को जानते हुये भी उन्होंने उस का विरोध किया। दूसरा यह कि उन के दिल में यह बात नहीं उतरी कि कोई मानव पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? रसूल तो किसी फ़रिश्ते को होना चाहिये। फिर यदि रसूलों को किसी जाति ने स्वीकार भी किया तो कुछ युगों के पश्चात् उसे ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र बनाकर एकेश्वरवाद को आघात पहुँचाया और शिर्क (मिश्रणवाद) का द्वार खोल दिया। इसीलिये क़ुर्आन ने इन दोनों कुविचारों का बार बार खण्डन किया है।

الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

बना लिया जाता हो, परन्तु इस से पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (ब्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।
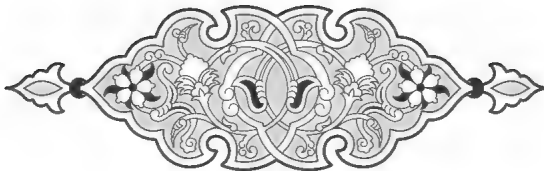
सूरह रअद - 13

सूरह रअद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 43 आयतें हैं।

- «रअद» का अर्थः बादल की गरज है। इस सूरह की आयत नं॰ (13) में बताया गया है कि वह अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का गान करती है। इसी से इस का नाम रअद रखा गया है।
- इस सूरह में यह बताया गया है कि इस पुस्तक (कुर्आन पाक) का अल्लाह की ओर से उतरना सच्च है तथा उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से परलोक का विश्वास होता है तथा विरोधियों को चेतावनी दी गई है।
- तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के विषय तथा सत्य और असत्य के अलग अलग परिणाम को बताया गया है। और सत्य के अनुयायियों के गुण और परलोक में उन का परिणाम तथा विरोधियों के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।
- विरोधियों को चेतावनी दी गई, तथा ईमान वालों को शुभ सूचना सुनाई गई है।
- और अन्त में रिसालत (दूतत्व) के विरोधियों को सावधान करने साथ आज्ञाकारियों के अच्छे अन्त को प्रस्तुत किया गया है ताकि विरोधियों को अल्लाह से भय की प्रेरणा मिले।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓمٓرۚ تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱلۡكِتَٰبِۗ وَٱلَّذِيٓ أُنزِلَ إِلَيۡكَ مِن رَّبِّكَ ٱلۡحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يُؤۡمِنُونَ ١

1. अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिक्तर लोग

ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

ٱللَّهُ ٱلَّذِى رَفَعَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ وَسَخَّرَ ٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ يُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ لَعَلَّكُم بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾

2. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बद्ध किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (ब्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।

وَهُوَ ٱلَّذِى مَدَّ ٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنْهَٰرًا ۖ وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ ۖ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾

3. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि से दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।

وَفِى ٱلْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَٰوِرَٰتٌ وَجَنَّٰتٌ مِّنْ أَعْنَٰبٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَآءٍ وَٰحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِى ٱلْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾

4. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग़) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं। कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो सूझ-बूझ रखते हैं।

وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَءِذَا كُنَّا تُرَٰبًا أَءِنَّا

5. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह[1]

1 क्यों कि वह जानते हैं कि बीज धरती में सड़कर मिल जाता है, फिर उस से

لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ۚ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٥

कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्हों ने ही अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक़ पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस में वह सदा रहेंगे।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٦

6. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह हैं भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाऐं आ चुकी हैं, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧

7. तथा जो काफ़िर हो गये वह कहते हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा[1] गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۗ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨

8. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है, तथा गर्भाशय जो कम और अधिक[2] करते हैं, प्रत्येक चीज़ की

पौधा उगता है।

1 जिस से स्पष्ट हो जाता कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

2 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः ग़ैब (परोक्ष) की तालिकायें पाँच हैं। जिन को केवल अल्लाह ही जानता हैः कल की बात अल्लाह ही जानता है, और गर्भाशय जो कमी करते हैं उसे अल्लाह ही जानता है। वर्षा कब होगी उसे अल्लाह ही जानता है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस धरती पर मरेगा। और न अल्लाह के सिवा कोई यह जानता

उस के यहाँ एक निश्चित मात्रा है।

9. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।

10. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बात चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अँधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।

11. उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं। उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अल्लाह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फेरा नहीं जा सकता, और न उन का उस (अल्लाह) के सिवा कोई सहायक है।

12. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा[1] बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।

13. और कड़क, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फ़रिश्ते उस के भय से काँपते हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝١٠

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝١١

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝١٢

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝١٣

है कि प्रलय कब आयेगी। (सहीह बुख़ारी-4697)

1 अर्थात वर्षा होने की आशा।

उपाय बड़ा प्रबल है।[1]

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۗ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾

14. उसी (अल्लाह) को पुकारना सत्य है, और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की ओर फैलाया हुया हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफ़िरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾

15. और अल्लाह ही को सजदा करता है, चाह या न चाह, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाईयाँ[2] भी प्रातः और संध्या।[3]

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ قُلِ اللّٰهُ ۗ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۗ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾

16. उन से पुछोः आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दोः अल्लाह है। कहो कि क्या तुम ने अल्लाह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहोः क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होते हैं??[4] अथवा उन्होंने अल्लाह का साझी बना लिया

---

1 अर्थात जैसे कोई प्यासा पानी की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना करे कि मेरे मुँह में आ जा तो न पानी में सुनने की शक्ति है न उस के मुँह तक पहुँचने की। ऐसे ही काफ़िर, अल्लाह के सिवा जिन को पुकारते हैं न उन में सुनने की शक्ति है और न वह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं।

2 अर्थात सब उस के स्वभाविक नियम के आधीन हैं।

3 यहाँ सजदा करना चाहिये।

4 अंधेरे से अभिप्राय कुफ़्र के अंधेरे, तथा प्राकश से अभिप्राय ईमान का प्राकश है।

है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अतः उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का उत्पत्ति करने वाला है,[1] और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।

17. उस ने आकाश से जल बरसाया, जिस से वादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार बह पड़ीं। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज़ को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है, फिर जो झाग है वह सूख कर ध्वस्त हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता[2] है।

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्हों ने नहीं मानी, तो यदि

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ

1 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की है। वही वास्तविक पूज्य है। और जो स्वयं उत्पत्ति हो वह पूज्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को कुर्आन पाक की और भी कई आयतों में प्रस्तुत किया गया है।

2 इस उदाहरण में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष को दिखाया गया है कि वह्यी द्वारा जो सत्य उतारा गया है वह वर्षा के समान है। और जो उस से लाभ प्राप्त करते हैं वह नालों के समान हैं। और सत्य के विरोधी सैलाब के झाग के समान हैं जो कुछ देर के लिये उभरता है फिर विलय हो जाता है। दूसरे उदाहरण में सत्य को सोने और चाँदी के समान बताया गया है जिसे पिघलाने से मैल उभरता है फिर मैल उड़ता है। इसी प्रकार असत्य विलय हो जाता है। और केवल सत्य रह जाता है।

जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अल्लाह के दण्ड से बचने के लिये) अर्थदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।

مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ١٨

19. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (क़ुर्आन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ١٩

20. जो अल्लाह से किया वचन[1] पूरा करते हैं, और वचन भंग नहीं करते।

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ٢٠

21. और उन (संबंधों) को जोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरते हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ٢١

22. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीक़े से दान करते रहे, तो वही हैं, जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ٢٢

23. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फ़रिश्ते उन के

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ٢٣

1 भाष्य के लिये देखिये सूरह आराफ़, आयतः 172।

पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत् के लिये) प्रवेश करेंगे।

سَلَٰمٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى ٱلدَّارِ ﴿٢٤﴾

24. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर!

وَٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مِيثَٰقِهِۦ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوٓءُ ٱلدَّارِ ﴿٢٥﴾

25. और जो लोग अल्लाह से किये वचन को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं, और अल्लाह ने जिस संबन्ध को जोड़ने का आदेश दिया[1] है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। वही हैं जिन के लिये धिक्कार है, और जिन के लिये बुरा आवास है।

ٱللَّهُ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا۟ بِٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا فِى ٱلْءَاخِرَةِ إِلَّا مَتَٰعٌ ﴿٢٦﴾

26. और अल्लाह जिसे चाहे उसे जीविका फैला कर देता है, और जिसे चाहे नाप कर देता है। और वह (काफ़िर) संसारिक जीवन में मग्न हैं, तथा संसारिक जीवन परलोक की अपेच्छा तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है।

وَيَقُولُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ قُلْ إِنَّ ٱللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَآءُ وَيَهْدِىٓ إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾

27. और जो काफ़िर हो गये, वह कहते हैं: इस पर इस के पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि वास्तव में अल्लाह जिसे चाहे कुपथ करता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उस की ओर ध्यानमग्न हों।

---

1 हदीस में आया है कि जो वयक्ति यह चाहता हो कि उस की जीविका अधिक, और आयु लम्बी हो तो वह अपने संबंधों के जोड़े। (सहीह बुख़ारी, 2067, सहीह मुस्लिम, 2557)

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

28. (अर्थात वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

29. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द[1], और उत्तम ठिकाना है।

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

30. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनायें जो हम ने आप की ओर वह़्यी द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह देंः वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ

31. यदि कोई ऐसा क़ुर्आन होता जिस से पर्वत खिसका[2] दिये जाते, या धरती खण्ड-खण्ड कर दी जाती, या इस के द्वारा मुर्दों से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात

---

1 यहाँ "तूबा" शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस का शाब्दिक अर्थः सुख और सम्पन्नता है। कुछ भाष्यकारों ने इसे स्वर्ग का एक बृक्ष बताया है जिस का साया बड़ा आनन्ददायक होगा।

2 मक्का के काफ़िर आप से यह माँग करते थे कि यदि आप नबी हैं तो हमारे बाप दादा को जीवित कर दें। ताकि हम उन से बात करें। या मक्का के पर्वतों को खिसका दें। कुछ मुसलमानों के दिलों में भी यह इच्छा हुई कि ऐसा हो जाता है तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। उसी पर यह आयत उतरी। (देखियेः फ़त्हुल बयान, भाष्य सूरह रअद)

أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٣١﴾

यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को हैं, तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता! और काफ़िरों को उन के कर्तूत के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन[1] आ जाये, और अल्लाह, वचन का विरुद्ध नहीं करता।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

32. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफ़िरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَم بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

33. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तूत से अव्गत है, और उन्हों ने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात[2] करते हो? बल्कि काफ़िरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं। और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।

لَّهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٣٤﴾

34. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसंदेह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को

---

1 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का वचन है।

2 अर्थात निर्मूल और निराधार।

अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا ۚ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوا ۖ وَّعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

35. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफ़िरों का परिणाम नरक है।

وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ ۖ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَن يُنكِرُ بَعْضَهُ ۚ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُو وَإِلَيْهِ مَآبِ ﴿٣٦﴾

36. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुर्आन) से प्रसन्न हो रहे हैं[1] जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते।[2] आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे जाना है।[3]

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَمَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

37. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्बी आदेश के रूप में उतारा है[4] और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।

---

1 अर्थात वह यहूदी, ईसाई और मूर्तिपूजक जो इस्लाम लाये।

2 अर्थात जो अब तक मुसलमान नहीं हुये।

3 अर्थात कोई ईमान लाये या न लाये, मैं तो कदापि किसी को उस का साझी नहीं बना सकता।

4 ताकि वह बहाना न करें कि हम कुर्आन को समझ नहीं सके, इसलिये कि सारे नबियों पर जो पुस्तकें उतरीं वह उन्हीं की भाषाओं में थीं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

38. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियाँ तथा बाल-बच्चे[1] बनाये। किसी रसूल के बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे। और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।[2]

يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِندَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٣٩﴾

39. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित)रखता है। उसी के पास मूल[3] पुस्तक है।

وَإِن مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

40. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफ़िरों) को दी है, अथवा आप को (पहले ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिसाब लेना हमारा काम है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

41. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से कम करते[4] जा रहे हैं। और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ

42. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षडयंत्र रचा, और षडयंत्र (को निष्फल करने) का सब

---

1 अर्थात वह मनुष्य थे, नूर या फ़रिश्ते नहीं।

2 अर्थात अल्लाह का वादा अपने समय पर पूरा हो कर रहेगा उस में देर- सवेर नहीं होगी।

3 अर्थात (लौहे महफ़ूज़) जिस में सब कुछ अंकित है।

4 अर्थात मुसलमानों की विजय द्वारा काफ़िरों के देश में कमी करते जा रहे हैं।

الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफ़िरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है?

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِندَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ﴿٤٣﴾

43. (हे नबी!) जो काफ़िर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफ़ी है।[1]

---

1 अर्थात उन अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की जिन को अपनी पुस्तकों से नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आने की शुभसूचना का ज्ञान हुआ तो वह इस्लाम ले आये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा नजाशी (हब्शा देश का राजा), और तमीम दारी इत्यादि। और आप के रसूल होने की गवाही देते हैं।

सूरह इब्राहीम - 14

सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं॰ 35 में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ का वर्णन है। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में रसूल तथा क़ुर्आन के भेजने का कारण बताया गया है। और नबियों के कुछ एतिहास प्रस्तुत किये गये हैं। जिन से रसूलों के विरोधियों के दुष्परिणाम सामने आते हैं। और परलोक में भी उस दण्ड की झलक दिखायी गई है जिस से रोयें खड़े हो जाते हैं।
- इस में बताया गया है कि ईमान वाले कैसे सफल होंगे, तथा काफ़िरों को अल्लाह के उपकार का आभारी न होने पर सावधान करने के साथ ही ईमान वालों को अल्लाह का कृतज्ञ होने की नीति बतायी गयी है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कि उस एतिहासिक प्रार्थना का वर्णन है जो उन्हों ने अपनी संतति को शिर्क से सुरक्षित रखने के लिये की थी। किन्तु आज उन की संतान जो कुछ कर रही है वह उन की दुआ के सर्वथा विपरीत है।
- और अन्त में प्रलय और उस की यातना का भ्याव चित्रण किया गया है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓرۚ كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ ٱلنَّاسَ مِنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَٰطِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَمِيدِ ①

1. अलिफ़, लाम, रा। यह (क़ुर्आन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अव्तरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

2. अल्लाह की ओर। जिस के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफ़िरों के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝٢

3. जो संसारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोकते हैं, और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝٣

4. और हम ने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिक्मत वाला है।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۗ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَاۤءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٤

5. और हम ने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओ। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٥

6. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो, जब उस ने तुम को फ़िरओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۤءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَاۤءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۤءَكُمْ ۗ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۤءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝٦

रहने देते[1] थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝

7. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोसणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूँगा। तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।

وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

8. और मूसा ने कहाः यदि तुम और सभी लोग जो धरती में हैं कुफ़्र करें, तो भी अल्लाह निरीह तथा[2]सराहा हुआ है।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝

9. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया, जो तुम से पहले थेः नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये, तो उन्हों ने अपने हाथ अपने मुखों में दे[3] लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के बारे में संदेह में हैं, जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में हैं।

---

1 ताकि उन के पुरुषों की अधिक संख्या से अपने राज्य के लिये भय न हो। और उन की स्त्रियों का अपमान करें।

2 हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः हे मेरे बंदो! यदि तुम्हारे अगले-पिछले तथा सब मनुष्य और जिन्न संसार के सब से बुरे मनुष्य के बराबर हो जायें तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं आयेगी। (सहीह मुस्लिम, 2577)

3 यह ऐसी ही भाषा शैली है, जिसे हम अपनी भाषा में बोलते हैं कि कानों पर हाथ रख लिया, और दाँतों से उंगली दबा ली।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾

10. उन के रसूलों ने कहाः क्या उस अल्लाह के बारे में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला[1] रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित[2] अवधि तक अवसर दे। उन्हों ने कहाः तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे। तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

11. उन से उन के रसूलों ने कहाः हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये।

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾

12. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी हैं? और हम अवश्य उस दुख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ

13. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहाः हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे, अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना

1 अपनी आज्ञा पालन की ओर।

2 अर्थात मरण तक संसारिक यातना से सुरक्षित रखे। (कुर्तुबी)

लَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ

होगा। तो उन के पालनहार ने उन की ओर वह्यी की, कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ

14. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े[1] होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ

15. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।

مِّنْ وَّرَآىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ

16. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ

17. वह उसे थोड़ा-थोड़ा गले से उतारेगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान से मौत आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ اِۨشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आँधी के दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य से) दूर का कुपथ है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ

19. क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे?

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ

20. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।

1 अर्थात संसार में मेरी महिमा का विचार कर के सदाचार किया।

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَىٰنَا اللَّهُ لَهَدَيْنَٰكُمْ ۖ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن مَّحِيصٍ ﴿٢١﴾

21. और सब अल्लाह के सामने खुल कर[1] आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उन से कहेंगे जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगेः यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्ग दर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।

وَقَالَ الشَّيْطَٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَٰنٍ إِلَّآ أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوٓا أَنفُسَكُم ۖ مَّآ أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَآ أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

22. और शैतान कहेगा, जब निर्णय कर दिया[2] जायेगाः वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैं ने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परन्तु यह कि मैं ने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया, जो इस से पहले[3] तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्संदेह अत्याचारियों के लिये दुख दायी यातना है।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ جَنَّٰتٍ

23. और जो ईमान लाये, और सदाचार

---

1 अर्थात प्रलय के दिन अपनी समाधियों से निकल कर।

2 स्वर्ग और नरक के योग्य का निर्णय कर दिया जायेगा।

3 संसार में।

تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴿٢٣﴾

करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उस में उन का स्वागत् यह होगाः तुम पर शान्ति हो।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾

24. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ने कलिमा तय्येबा[1] (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है, और उस की शाखा आकाश में है?

تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

25. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِن فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِن قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

26. और बुरी[2] बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिस के लिये कोई स्थिरता नहीं है।

---

1 (कलिमा तय्येबा) से अभिप्रत "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। जो इस्लाम का धर्म सूत्र है। इस का अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है। और यही एकेश्वरवाद का मूलाधार है। अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम के पास थे कि आप ने कहाः मुझे ऐसा वृक्ष बताओ जो मुसलमान के समान होता है। जिस का पत्ता नहीं गिरता, तथा प्रत्येक समय अपना फल दिया करता है? इब्ने उमर ने कहाः मेरे मन में यह बात आयी कि वह खजूर का वृक्ष है। और अबू बक्र तथा उमर को देखा कि बोल नहीं रहे हैं इसलिये मैं ने भी बोलना अच्छा नहीं समझा। जब वे कुछ नहीं बोले, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः वह खजूर का वृक्ष है। (संक्षिप्त अनुवाद के साथ, सहीह बुख़ारीः 4698, सहीह मुस्लिमः 2811)

2 अर्थात शिर्क तथा मिश्रणवाद की बात।

27. अल्लाह ईमान वालों को स्थिर[1] कथन के सहारे लोक तथा परलोक में स्थिरता प्रदान करता है, तथा अत्याचारियों को कुपथ कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है, करता है।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

28. क्या आप ने उन्हें[2] नहीं देखा जिन्हों ने अल्लाह के अनुग्रह को कुफ़्र से बदल दिया, और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

29. (अर्थात) नरक में, जिस में वह झोंके जायेंगे। और वह रहने का बुरा स्थान है।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

30. और उन्हों ने अल्लाह के साझी बना लिये, ताकि उस की राह (सत्धर्म) से कुपथ कर दें। आप कह दें कि तनिक आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की ओर ही जाना है।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

31. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह दो, जो ईमान लाये हैं, कि नमाज़ की स्थापना करें और उस में से जो हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले तरीक़े से दान करें, उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई क्रय-विक्रय

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾

---

1 स्थित तथा दृढ़ कथन से अभिप्रेत "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। (कुर्तुबी)
बराअ बिन आज़िब रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप ने कहाः मुसलमान से जब क़ब्र में प्रश्न किया जाता है, तो वह «ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह» की गवाही देता है। अर्थात अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इसी के बारे में यह आयत है। (सहीह बुख़ारीः 4699)

2 अर्थातः मक्का के मुश्रिक, जिन्हों ने आप का विरोध किया। (देखियेः सहीह बुख़ारीः 4700)

होगा, और न कोई मैत्री।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾

32. और अल्लाह वही है, जिस ने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की, और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे वश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये वशवर्ती किया।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

33. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चाँद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं। और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को वश में[1] कर दिया।

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۚ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

34. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा।[2] और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

35. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ

36. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अतः जो

1 वश में करने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने इन के ऐसे नियम बना दिये हैं, जिन के कारण यह मानव के लिये लाभदायक हो सकें।

2 अर्थात तुम्हारी प्रत्येक प्राकृतिक माँग पूरी की, और तुम्हारे जीवन की आवश्यक्ता के सभी संसाधनों की व्यवस्था कर दी।

فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَإِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَإِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।

رَبَّنَآ إِنِّيْٓ أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ أَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करें। अतः लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों।

رَبَّنَآ إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾

38. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कुछ छुपा नहीं रहता, धरती में और न आकाशों में।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ إِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ ۗ إِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾

39. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾

40. मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

41. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माता-पिता और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जायेगा।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ

42. और तुम कदापि अल्लाह को उस से अचेत न समझो जो अत्याचारी कर

الظّٰلِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

रहे हैं। वह तो उन्हें उस[1] दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आखें खुली रह जायेंगी।

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۖ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿٤٣﴾

43. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेंगी, और उन के दिल गिरे[2] हुये होंगे।

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ نُجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾

44. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी। तो अत्याचारी कहेंगेः हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?

وَسَكَنْتُمْ فِي مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٥﴾

45. जब कि तुम उन्हीं की बस्तियों में बसे हो, जिन्हों ने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हम ने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾

46. और उन्हों ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास[3] है। और उन का षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।

---

1 अर्थात प्रलय के दिन के लिये।

2 यहाँ अर्बी भाषा का शब्द "हवाअ" प्रयुक्त हुआ है। जिस का एक अर्थ शून्य (ख़ाली), अर्थात भय के कारण उसे अपनी सुध न होगी।

3 अर्थात अल्लाह उस को निष्फल करना जानता है।

47. अतः कदापि यह न समझें कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝٤٧

48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से, तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष[1] उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝٤٨

49. और आप उस दिन अपराधियों को ज़ंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝٤٩

50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छायी होगी।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝٥٠

51. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उस के किये का बदला दे। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٥١

52. यह मनुष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٥٢

1 अर्थात अपनी क़ब्रों (समाधियों) से निकल कर।

सूरह हिज्र - 15

सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 99 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं॰ 80-87 में हिज्र के वासीः ((समूद जाति)) के अपने रसूलों के झुठलाने के कारण विनाश की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम ((सूरह हिज्र)) है।
- इस की आयत 1 में कुर्आन की विशेषता का वर्णन है। तथा 2-15 में रिसालत के विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है। फिर आयत 16 से 25 तक में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिन पर विचार करने से वह्यी तथा रिसालत और हश्र से संबंधित संदेहों का निवारण हो जाता है।
- आयत 26-44 में इब्लीस के कुपथ हो जाने का वर्णन है जो मनुष्य को कुपथ करने के लिये वह्यी तथा रिसालत के बारे में संदेह पैदा कर के उसे सत्य से दूर रखना चाहता है जिस का परिणाम नरक है। तथा आयत 45 से 48 तक उन के अच्छे परिणाम को बताया गया है जो उस की बात में नहीं आये और अल्लाह से डरते तथा शिर्क और उस की अवैज्ञा से बचते रहे।
- आयत 49-84 में नबियों के इतिहास से यह बताया गया है कि अल्लाह के सदाचारी भक्तों पर उस की दया होती है और दूराचारियों पर यातना के कोड़े बरसते हैं।
- आयत 85-99 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा सदाचारियों के लिये दिलासा का सामान भी है और यह निर्देश भी है कि जो माया मोह में मग्न हैं उन के आर्थिक धन की ओर लालसा से न देखें बल्कि उस बड़े धन का आदर करें जो कुर्आन के रूप में उन्हें प्रदान किया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ①

1. अलिफ़, लाम, रा। वह इस पुस्तक, तथा खुले क़ुर्आन की आयतें हैं।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ②

2. (एक समय आयेगा), जब काफ़िर यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता यदि वे मुसलमान[1] होते?

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ③

3. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह खाते, तथा आनन्द लेते रहें, और उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर शीघ्र ही वह जान लेंगे।[2]

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ④

4. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त किया उस के लिये एक निश्चित अवधि अंत थी।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ⑤

5. कोई जाति न अपनी निश्चित् अवधि से आगे जा सकती है, और न पीछे रह सकती।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ⑥

6. तथा उन (काफ़िरों) ने कहाः हे वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा (क़ुर्आन) उतारा गया है! वास्तव में तू पागल है।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑦

7. क्यों हमारे पास फ़रिश्तों को नहीं लाता यदि तू सच्चों में से है?

---

1 ऐसा उस समय होगा जब फ़रिश्ते उन की आत्मा निकालने आयेंगे, और उन को उन का नरक का स्थान दिखा देंगे। और क़्यामत के दिन तो ऐसी दूर्दशा होगी कि धूल हो जाने की कामना करेंगे। (देखियेः सूरह नबा, आयतः 40)

2 अपने दुष्परिणाम का।

8. जब कि हम फ़रिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही[1] उतारते हैं, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ۝

9. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (क़ुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक[2] हैं।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ۝

10. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जातियों में रसूल भेजे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ۝

11. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ۝

---

1 अर्थात यातनाओं के निर्णय के साथ।

2 यह इतिहासिक सत्य है। इस विश्व के धर्म ग्रंथों में क़ुर्आन ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिस में उस के अवतरित होने के समय से अब तक एक अक्षर तो क्या एक मात्रा का भी परिवर्तन नहीं हुआ। और न हो सकता है। यह विशेषता इस विश्व के किसी भी धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है। तौरात हो अथवा इंजील या इस विश्व के अन्य धर्म शास्त्र हों, सब में इतने परिवर्तन किये गये हैं कि सत्य मूल धर्म की पहचान असम्भव हो गयी है।
इसी प्रकार इस (क़ुर्आन) की व्याख्या जिसे हदीस कहा जाता है वह भी सुरक्षित है। और उस का पालन किये बिना किसी का जीवन इस्लामी नहीं हो सकता। क्योंकि क़ुर्आन का आदेश है कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हें जो दें उस को ले लो। और जिस से रोक दें उस से रुक जाओ। (देखियेः सूरह हश्र आयत नंः 7)
क़ुर्आन कहता है कि हे नबी! अल्लाह ने आप पर क़ुर्आन इस लिये उतारा है कि आप लोगों के लिये उस की व्याख्या कर दें। (सूरह नह्ल, आयत नंः 44) जिस व्याख्या से नमाज़, व्रत आदि इस्लामी अनिवार्य कर्तव्यों की विधि का ज्ञान होता है। इसी लिये उस को सुरक्षित किया गया है। और हम हदीस के एक-एक रावी के जन्म और मौत का समय और उस की पूरी दशा को जानते हैं। और यह भी जानते हैं कि वह विश्वासनीय है या नहीं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस संसार में इस्लाम के सिवा कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस की मूल पुस्तकें तथा उस के नबी की सारी बातें सुरक्षित हों।

12. इसी प्रकार हम इसे[1] अपराधियों के दिलों में पुरो देते हैं।

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢

13. वे उस पर ईमान नहीं लाते, और प्रथम जातियों से यही रीति चली आ रही है।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣

14. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤

15. तब भी वह यही कहते कि हमारी आँखें धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥

16. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं, और उसे देखने वालों के लिये सुसज्जित किया है।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٦

17. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝١٧

18. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे, तो एक खुली ज्वाला उस का पीछा करती[2] है।

اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝١٨

19. और हम ने धरती को फैलाया, और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीज़ें उगायीं।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝١٩

20. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝٢٠

---

1 अर्थात् रसूलों के साथ परिहास को, अर्थात उसे इस का दण्ड देंगे।

2 शैतान चोरी से फ़रिश्तों की बात सुनने का प्रयास करते हैं। तो ज्वलंत उल्का उन्हें मारता है। अधिक विवरण के लिये देखियेः (सूरह मुल्क, आयत नं०: 5)

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾

21. और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

22. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कोषाधिकारी नहीं हो।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

23. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

24. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

25. और वास्तव में आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा[1], निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

26. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

27. और इस से पहले जिन्नों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

28. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहाः मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

29. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ, और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।[2]

---

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

2 फरिश्तों के लिये आदम का सजदा अल्लाह के आदेश से उन की परिक्षा के लिये था किन्तु इस्लाम में मनुष्य के लिये किसी मनुष्य या वस्तु को सजदा करना

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

30. अतः उन सब फ़रिश्तों ने सजदा किया।

إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبٰىٓ أَن يَكُونَ مَعَ السّٰجِدِينَ ﴿٣١﴾

31. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।

قَالَ يٰٓإِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السّٰجِدِينَ ﴿٣٢﴾

32. अल्लाह ने पूछाः हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?

قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُۥ مِن صَلْصٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

33. उस ने कहाः मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिसे तू ने सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

34. अल्लाह ने कहाः यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾

35. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन तक।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِىٓ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

36. (इब्लीस) ने कहा[1]: मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुनः जीवित किये जायेंगे।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾

37. अल्लाह ने कहाः तुझे अवसर दे दिया गया है।

إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

38. विद्धित समय के दिन तक के लिये।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِى الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

39. वह बोलाः मेरे पालनहार! तेरे मुझ को कुपथ कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और

शिर्क और अक्षम्य पाप है। (सूरह, हा, मीम, सज्दाः आयत नंः 37)

1 अर्थात फ़रिश्ते परिक्षा में सफल हुये और इब्लीस असफल रहा। क्यों कि उस ने आदेश का पालन न कर के अपनी मनमानी की। इसी प्रकार वह भी हैं जो अल्लाह की बात न मान कर मनमानी करते हैं।

उन सभी को कुपथ कर दूँगा।

40. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

41. अल्लाह ने कहाः यही मुझ तक (पहुँचने की) सीधी राह है।

قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

42. वस्तुतः मेरे भक्तों पर तेरा कोई अधिकार नहीं[1] चलेगा, सिवाये उस के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

43. और वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

44. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक विभाजित भाग[2] है।

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

45. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों तथा स्रोतों में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

46. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾

47. और हम निकाल देंगे उन के दिलों में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई होकर एक दूसरे के सम्मुख तख़्तों के ऊपर रहेंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

48. न उस में उन्हें कोई थकान होगी और न वहाँ से निकाले जायेंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

49. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

---

1 अर्थात जो बन्दे क़ुर्आन तथा हदीस (नबी का तरीक़ा) का ज्ञान रखेंगे उन पर शैतान का प्रभाव नहीं होगा। और जो इन दोनों के ज्ञान से जाहिल होंगे वही उस के झाँसे में आयेंगे। किन्तु जो तौबा कर लें तो उन को क्षमा कर दिया जायेगा।

2 अर्थात् इबलीस के अनुयायी अपने कुकर्मों के अनुसार नरक के द्वार में प्रवेश करेंगे।

सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान्[1] हूँ।

50. और मेरी यातना ही दुखदायी यातना है।

وَاَنَّ عَذَابِىْ هُوَالْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ۝

51. और आप उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۝

52. जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहाः वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ۝

53. उन्हों ने कहाः डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे हैं।

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝

54. उस ने कहाः क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभ सूचना दी है, तुम मुझे यह शुभ सूचना कैसे दे रहे हो?

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِىْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِىَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝

55. उन्हों ने कहाः हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अतः तुम निराश न हो।

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ۝

56. (इब्राहीम) ने कहाः अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपथ लोग ही हुआ करते हैं।

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّاۗلُّوْنَ ۝

57. उस ने कहाः हे अल्लाह के भेजे हुये फ़रिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝

58. उन्हों ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝

59. लूत के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले हैं।

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

1 हदीस में है कि अल्लाह ने सौ दया पैदा कीं, निन्नानवे अपने पास रख लीं। और एक को पूरे संसार के लिये भेज दिया। तो यदि काफ़िर उस की पूरी दया जान जाये तो स्वर्ग से निराश नहीं होगा। और ईमान वाला उस की पूरी यातना जान जाये तो नरक से निर्भय नहीं होगा। (सहीह बुख़ारीः 6469)

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾

60. परन्तु लूत की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾

61. फिर जब लूत के घर भेजे हुये (फ़रिश्ते) आये।

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾

62. तो लूत ने कहाः तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।

قَالُوا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

63. उन्हों ने कहाः डरो नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये हैं, जिस के बारे में वह संदेह कर रहे थे।

وَأَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿٦٤﴾

64. हम तुम्हारे पास सत्य लाये हैं, और वास्तव में हम सत्यवादी हैं।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾

65. अतः कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾

66. और हम ने लूत को निर्णय सुना दिया कि भोर होते ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

67. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।[1]

قَالَ إِنَّ هٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾

68. लूत ने कहाः यह मेरे अतिथी हैं, अतः मेरा अपमान न करो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿٦٩﴾

69. तथा अल्लाह से डरो, और मेरा अनादर न करो।

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِينَ ﴿٧٠﴾

70. उन्हों ने कहाः क्या हम ने तुम्हें विश्व

1 अर्थात जब फ़रिश्तों को नवयुवकों के रूप में देखा तो लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ आ गये ताकि उन के साथ अशलील कर्म करें।

वासियों से नहीं रोका[1] था?

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيٓ إِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾

71. लूत ने कहाः यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले[2] हो।

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. हे नबी! आप की आयु की शपथ![3] वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾

74. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों[4] के लिये।

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

76. और वह (बस्ती) साधारण[5] मार्ग पर स्थित है।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।

وَإِنْ كَانَ أَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. और वास्तव में (ऐय्का) के[6] वासी अत्याचारी थे।

---

1 सब के समर्थक न बनो।

2 अर्थात इन से विवाह कर लो, और अपनी कामवासना पूरी करो, और कुकर्म न करो।

3 अल्लाह के सिवा किसी मनुष्य के लिये उचित नहीं है कि वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की शपथ ले।

4 अर्थात जो लक्षणों से तथ्य को समझ जाते हैं।

5 अर्थात जो साधारण मार्ग हिज़ाज़ (मक्का) से शाम को जाता है। यह शिक्षाप्रद बस्ती उसी मार्ग में आती है, जिस से तुम गुज़रते हुये शाम जाते हो।

6 इस से अभिप्रेत शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति है, ऐय्का का अर्थ वन तथा झाड़ी है।

79. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों[1] ही साधारण मार्ग पर हैं।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ٧٩

80. और हिज्र के[2] लोगों ने रसूलों को झुठलाया।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ٨٠

81. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दीं, तो वह उन से विमुख ही रहे।

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ٨١

82. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ٨٢

83. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ٨٣

84. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ٨٤

85. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है, और निश्चय प्रलय आनी है। अतः (हे नबी!) आप (उन को) भली भाँति क्षमा कर दें।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ٨٥

86. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्टा सर्वज्ञ है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ٨٦

87. तथा (हे नबी!) हम ने आप को सात ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन[3] प्रदान किया है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ٨٧

---

1 अर्थात मदयन और ऐय्का का क्षेत्र भी हिज़ाज़ से फ़िलस्तीन और सीरिया जाते हुये, राह में पड़ता है।

2 हिज्र समूद जाति की बस्ती थी जो सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी, यह बस्ती मदीना और तबूक के बीच स्थित थी।

3 अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

88. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, और न उन पर शोक करें, और ईमान वालों के लिये सुशील रहें।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَٱخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

89. और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी[1] देने वाला हूँ।

وَقُلْ إِنِّىٓ أَنَا ٱلنَّذِيرُ ٱلْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

90. जैसे हम ने खण्डन कारियों[2] पर (यातना) उतारी।

كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى ٱلْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾

91. जिन्हों ने क़ुर्आन को खण्ड खण्ड कर दिया।[3]

ٱلَّذِينَ جَعَلُوا۟ ٱلْقُرْءَانَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

92. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

93. तुम क्या करते रहे?

عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

94. अतः आप को जो आदेश दिया जा

فَٱصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

कथन है कि उम्मुल क़ुर्आन (सूरह फ़ातिहा) ही वह सात आयतें हैं जो दुहराई जाती हैं, तथा महा क़ुर्आन है। (सहीह बुख़ारी- 4704)
एक दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन्" ही वह सात आयतें हैं जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा क़ुर्आन है, जो मुझे प्रदान किया गया है। (संक्षिप्त अनुवाद, सहीह बुख़ारी- 4702)। यही कारण है कि इस के पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती। (देखियेः सहीह बुख़ारीः 756, मुस्लिमः 394)

1 अर्थात् अवैज्ञा पर यातना की।

2 खण्डन कारियों से अभिप्रायः यहूद और ईसाई हैं। जिन्हों ने अपनी पुस्तकों तौरात तथा इंजील को खण्ड खण्ड कर दिया। अर्थात् उन के कुछ भाग पर ईमान लाये और कुछ को नकार दिया। (सहीह बुख़ारी- 4705-4706)

3 इसी प्रकार इन्हों ने भी क़ुर्आन के कुछ भाग को मान लिया और कुछ का अगलों की कहानियाँ बताकर इन्कार कर दिया। तो ऐसे सभी लोगों से प्रलय के दिन पूछ होगी कि मेरी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?

रहा है, उसे खोल कर सुना दें। और मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करें।

95. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफ़ी हैं।

إِنَّا كَفَيْنَٰكَ ٱلْمُسْتَهْزِءِينَ ﴿٩٥﴾

96. जो अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा।

ٱلَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

97. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचित हो रहा है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

98. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें, तथा सज्दा करने वालों में रहें।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٩٨﴾

99. और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करते रहें, यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।[1]

وَٱعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ ٱلْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

1 अर्थात मरण का समय जिस का विश्वास सभी को है। (कुर्तुबी)

सूरह नह्ल - 16

सूरह नह्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 128 आयतें हैं।

- नह्ल का अर्थ मधु मक्खी है। जिस में अल्लाह के पालनहार होने की निशानी है। इस सूरह की आयत 68 से यह नाम लिया गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन तथा तौहीद के सत्य होने को प्रमाणित किया गया है। और नबी को न मानने पर दुष्परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- विरोधियों के संदेह दूर कर के अल्लाह के उपकारों की चर्चा की गई है और प्रलय के दिन मुश्रिकों तथा काफ़िरों की दुर दशा को बताया गया है।
- बंदो का अधिकार देने तथा बुराईयों से बचने और पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है।
- शैतान के संशय से शरण माँगने का निर्देश दिया गया है और मक्का वासियों के लिये एक कृतध्न बस्ती का उदाहरण देकर उन्हें कृतज्ञ होने का निर्देश दिया गया है।
- यह निर्देश दिया गया है कि शिर्क के कारण अल्लाह की वैध की हुई चीज़ो को वर्जित न करो और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में बताया गया है कि वह एकेश्वरवादी और कृतज्ञ थे, और मुश्रिक नहीं थे।
- यह बताया गया है कि सब्त (शनिवार) मनाने का आदेश केवल यहूद को उन के विभेद करने के कारण दिया गया था।
- और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

أَتَىٰٓ أَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ سُبْحٰنَهٗ

1. अल्लाह का आदेश आ गया है। अतः (हे काफ़िरो!) उस के शीघ्र आने की

وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ①

माँग न करो। वह (अल्लाह) पवित्र तथा उस शिर्क (मिश्रणवाद) से ऊँचा है, जो वह कर रहे हैं।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ②

2. वह फ़रिश्तों को वह़्यी के साथ अपने आदेश से अपने जिस भक्त पर चाहता है उतारता है, कि (लोगो को) सावधान करो, कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है अतः मुझ से ही डरो।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ③

3. उस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति सत्य के साथ की है, वह उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ④

4. उस ने मनुष्य की उत्पत्ति वीर्य से की फिर वह अकस्मात् खुला झगड़ालू बन गया।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ⑤

5. तथा चौपायों की उत्पत्ति की, जिन में तुम्हारे लिये गमी[1] और बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को खाते हो।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ⑥

6. तथा उन में तुम्हारे लिये एक शोभा है, जिस समय संध्या को चरा कर लाते हो और जब प्रातः चराने ले जाते हो।

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ⑦

7. और वह तुम्हारे बोझों को उन नगरों तक लाद कर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते। वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ⑧

8. तथा घोड़े, और ख़च्चर तथा गधे पैदा किये, ताकि उन पर सवारी करो। और शोभा (बनें)। और ऐसी चीज़ों की उत्पत्ति करेगा, जिन्हें

1 अर्थात् उन की ऊन तथा खाल से गर्म वस्त्र बनाते हो।

(अभी) तुम नहीं जानते हो।[1]

9. और अल्लाह पर, सीधी राह बताना है, और उन में से कुछ[2] टेढ़े हैं। तथा यदि अल्लाह चाहता तो तुम सभी को सीधी राह दिखा देता।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۟

10. वही है, जिस ने आकाश से जल बरसाया, जिस में से कुछ तुम पीते हो, तथा कुछ से वृक्ष उपजते हैं, जिस में तुम (पशुओं को) चराते हो।

هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۟

11. और तुम्हारे लिये उस से खेती उपजाता है, और ज़ैतून तथा खजूर और अँगूर और प्रत्येक प्रकार के फल। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۟

12. और उस ने तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिवस को सेवा में लगा रखा है। तथा सूर्य और चाँद को, और सितारे उस के आदेश के आधीन हैं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۟

13. तथा जो तुम्हारे लिये धरती में विभिन्न रंगों की चीज़ें उत्पन्न की हैं वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۟

---

1 अर्थात् सवारी के साधन इत्यादि। और आज हम उन में से बहुत सी चीज़ों को अपनी आँखों से देख रहे हैं जिन की ओर अल्लाह ने आज से चौदह सौ वर्ष पहले इस आयत के अन्दर संकेत किया था। जैसेः कार, रेल और विमान आदि०००।

2 अर्थात जो इस्लाम के विरुद्ध हैं।

14. और वही है जिस ने सागर को वश में कर रखा है, ताकि तुम उस से ताज़ा[1] मांस खाओ, और उस से अलंकार[2] निकालो जिसे पहनते हो, तथा तुम नौकाओं को देखते हो कि सागर में (जल को) फाड़ती हुई चलती हैं, और इस लिये ताकि तुम उस (अल्लाह) के अनुग्रह[3] की खोज करो, और ताकि कृतज्ञ बनो।

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾

15. और उस ने धरती में पर्वत गाड़ दिये, ताकि तुम को लेकर डोलने न लगे, तथा नदियाँ और राहें, ताकि तुम राह पाओ।

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾

16. तथा बहुत से चिन्ह (बना दिये) और वे सितारों से (भी) राह[4] पाते हैं।

وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

17. तो क्या जो उत्पत्ति करता है, उस के समान है, जो उत्पत्ति नहीं करता? क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते[5]?

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

18. और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा तथा दया करने वाला है।

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾

19. तथा अल्लाह जानता है, जो तुम छुपाते हो, और जो तुम व्यक्त करते हो।

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

20. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ

---

1 अर्थात मछलियाँ।

2 अलंकार अर्थात् मोती और मूँगा निकालो।

3 अर्थात सागरों में व्यापारिक यात्रा कर के अपनी जीविका की खोज करो।

4 अर्थात रात्रि में।

5 और उस की उत्पत्ति को उस का साझी और पूज्य बनाते हो।

हैं, वे किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते। जब कि वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं।

شَيْـًٔا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ٢٠

21. वे निर्जीव प्राणहीन हैं, और (यह भी) नहीं जानते कि कब पुनः जीवित किये जायेंगे।

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَآءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ٢١

22. तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उन के दिल निवर्ती (विरोधी) हैं, और वे अभिमानी हैं।

إِلَـٰهُكُمْ إِلَـٰهٌ وَٰحِدٌ ۚ فَٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْـَٔاخِرَةِ قُلُوبُهُم مُّنكِرَةٌ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ٢٢

23. जो कुछ वे छुपाते तथा व्यक्त करते हैं निश्चय अल्लाह उसे जानता है। वास्तव में वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता।

لَا جَرَمَ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُسْتَكْبِرِينَ ٢٣

24. और जब उन से पूछा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है?[1] तो कहते हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوٓا۟ أَسَـٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ٢٤

25. ताकि वे अपने (पापों का) पूरा बोझ प्रलय के दिन उठायें, तथा कुछ उन लोगों का बोझ (भी) जिन्हें बिना ज्ञान के कुपथ कर रहे थे, सावधान! वे कितना बुरा बोझ उठायेंगे!

لِيَحْمِلُوٓا۟ أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ ٱلَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ٢٥

26. इन से पहले के लोग भी षड्यंत्र रचते रहे, तो अल्लाह ने उन के षड्यंत्र के भवन का उन्मूलन कर दिया, फिर ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी, और उन पर ऐसी दिशा

قَدْ مَكَرَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى ٱللَّهُ بُنْيَـٰنَهُم مِّنَ ٱلْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ ٱلسَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ٢٦

---

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर। तो यह जानते हुये कि अल्लाह ने कुर्आन उतारा है झूठ बोलते हैं और स्वयं को तथा दूसरों को धोखा देते हैं।

से यातना आ गई, जिसे वे सोच भी नहीं रहे थे।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. फिर प्रलय के दिन उन्हें अपमानित करेगा, और कहेगा कि मेरे वह साझी कहाँ हैं, जिन के लिये तुम झगड़ रहे थे? वे कहेंगेः जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि वास्तव में आज अपमान तथा बुराई (यातना) काफ़िरों के लिये है।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ۗ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं, तो वह आज्ञाकारी बन जाते[1] हैं, (कहते हैं कि) हम कोई बुराई (शिर्क) नहीं कर रहे थे। क्यों नहीं? वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. तो नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ, उस में सदावासी रहोगे, अतः क्या ही बुरा है अभिमानियों का निवास स्थान!

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۗ قَالُوْا خَيْرًا ۗ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ۗ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾

30. और उन से पूछा गया जो अपने पालनहार से डरे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो उन्होंने कहाः अच्छी चीज़ उतारी है। उन के लिये जिन्होंने इस लोक में सदाचार किये बड़ी भलाई है। और वास्तव में परलोक का घर (स्वर्ग) अति उत्तम है। और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है!

1 अर्थात मरण के समय अल्लाह को मान लेते हैं।

جَنّٰتُ عَدۡنٍ يَّدۡخُلُوۡنَهَا تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ لَهُمۡ فِيۡهَا مَا يَشَآءُوۡنَ‌ؕ كَذٰلِكَ يَجۡزِى اللّٰهُ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝

31. सदा रहने के स्वर्ग जिस में प्रवेश करेंगे, जिन में नहरें बहती होंगी, उन के लिये उस में जो चाहेंगे (मिलेगा)। इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल (बदला) देता है।

الَّذِيۡنَ تَتَوَفّٰٮهُمُ الۡمَلٰۤـئِكَةُ طَيِّبِيۡنَ‌ ۙ يَقُوۡلُوۡنَ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمُ ۙ ادۡخُلُوا الۡجَـنَّةَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝

32. जिन के प्राण फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ-पवित्र हैं, तो कहते हैं: "तुम पर शान्ति हो।" तुम अपने सुकर्मों के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ تَاۡتِيَهُمُ الۡمَلٰۤـئِكَةُ اَوۡ يَاۡتِىَ اَمۡرُ رَبِّكَ‌ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ‌ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰـكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ۝

33. क्या वे इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते[1] आ जायें, अथवा आप के पालनहार का आदेश[2] आ पहुँचे? ऐसे ही उन से पूर्व के लोगों ने किया, और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयँ अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

فَاَصَابَهُمۡ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوۡا وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝

34. तो उन के कुकर्मों की बुराईयाँ[3] उन पर आ पड़ीं, और उन्हें उसी (यातना) ने घेर लिया जिस का वे परिहास कर रहे थे।

وَقَالَ الَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا لَوۡ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدۡنَا مِنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ شَىۡءٍ نَّحۡنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمۡنَا مِنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ شَىۡءٍ‌ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ‌ ۚ فَهَلۡ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ۝

35. और कहा जिन लोगों ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया: यदि अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी चीज़ की इबादत (वंदना) न करते न हम, और न हमारे बाप-दादा। और न उस के आदेश के बिना किसी चीज़ को हराम (वर्जित) करते। ऐसे

---

1 अर्थात प्राण निकालने के लिये।

2 अर्थात अल्लाह की यातना या प्रलय।

3 अर्थात दुष्परिणाम।

ही इन से पूर्व वाले लोगों ने किया। तो रसूलों पर केवल खुले रूप से उपदेश पहुँचा देना है।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

36. और हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और तागूत (असुर-अल्लाह के सिवा पूज्यों) से बचो, तो उन में से कुछ को अल्लाह ने सुपथ दिखा दिया और कुछ पर कुपथ सिद्ध हो गया। तो धरती में चलो-फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा रहा?

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

37. (हे नबी!) आप ऐसे लोगों को सुपथ दिखाने पर लोलुप हों, तो भी अल्लाह उसे सुपथ नहीं दिखायेगा जिसे कुपथ कर दे। और न उन का कोई सहायक होगा।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

38. और उन (काफ़िरों) ने अल्लाह की भरपूर शपथ ली कि अल्लाह उसे पुनः जीवित नहीं करेगा जो मर जाता है। क्यों नहीं? यह तो अल्लाह का अपने ऊपर सत्य वचन है, परन्तु अधिक्तर लोग नहीं जानते।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

39. (ऐसा करना इस लिये आवश्यक है) ताकि अल्लाह उस तथ्य को उजागर कर दे जिस में[1] वे विभेद कर रहे थे, और ताकि काफ़िर जान लें कि वही झूठे थे।

---

1 अर्थात पूनरोज्जीन आदि के विषय में।

40. हमारा कथन, जब हम किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने का निश्चय करें, तो इस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दें कि "हो जा", और वह हो जाती है।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

41. तथा जो लोग अल्लाह के लिये हिज्रत (प्रस्थान) कर गये अत्याचार सहने के पश्चात्, तो हम उन्हें संसार में अच्छा निवास-स्थान देंगे, और परलोक का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है, यदि वह[1] जानते।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

42. जिन लोगों ने धैर्य धारण किया, तथा अपने पालनहार पर ही वे भरोसा करते हैं।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

43. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी मानव-पुरुष थे। जिन की ओर हम वह्यी (प्रकाशना) करते रहे। तो तुम ज्ञानियों से पूछ लो, यदि (स्वयं) नहीं[2] जानते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

44. प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाणों तथा पुस्तकों के साथ (उन्हें भेजा) और आप की ओर यह शिक्षा (क़ुर्आन) अवतरित की, ताकि आप उसे सर्वमानव के लिये उजागर कर दें जो कुछ उन

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

---

1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी हैं, जिन को मक्का के मुश्रिकों ने अत्याचार कर के निकाल दिया। और हब्शा और फिर मदीने हिज्रत कर गये।

2 मक्का के मुश्रिकों ने कहा कि यदि अल्लाह को कोई रसूल भेजना होता तो किसी फ़रिश्ते को भेजता। उसी पर यह आयत उतरी। ज्ञानियों से अभिप्राय वह अहले किताब हैं जिन्हें आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान हो।

की ओर उतारा गया है ताकि वह सोच-विचार करें।

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

45. तो क्या वे निर्भय हो गये हैं, जिन्होंने बुरे षड्यंत्र रचे हैं, कि अल्लाह उन्हें धरती में धंसा दे? अथवा उन पर यातना ऐसी दिशा से आ जाये जिसे वह सोचते भी न हों?

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

46. या उन्हें चलते-फिरते पकड़ ले, तो वह (अल्लाह को) विवश करने वाले नहीं हैं।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾

47. अथवा उन्हें भय की दशा में पकड़[1] ले? निश्चय तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

48. क्या अल्लाह की उत्पन्न की हुयी किसी चीज़ को उन्होंने नहीं देखा? जिस की छाया दायें तथा बायें झुकती है, अल्लाह को सज्दा करते हुये? और वे सर्व विनयशील हैं।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

49. तथा अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों में तथा धरती में चर (जीव) तथा फ़रिश्ते हैं, और वह अहंकार नहीं करते।

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

50. वे[2] अपने पालनहार से डरते हैं जो उन के ऊपर है, और वही करते हैं जो आदेश दिये जाते हैं।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

51. और अल्लाह ने कहाः दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है। अतः तुम मुझी से डरो।

1 अर्थात जब कि पहले से उन्हें आपदा का भय हो।

2 अर्थात फ़रिश्ते।

52. और उसी का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और उसी की वंदना स्थायी है, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा दूसरे से डरते हो?

وَلَهُ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

53. तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें दुख पहुँचता है, तो उसी को पुकारते हो।

وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾

54. फिर जब तुम से दुख दूर कर देता है तो तुम्हारा एक समुदाय अपने पालनहार का साझी बनाने लगता है।

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

55. ताकि हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उस के प्रति कृतघ्न हों तो आनन्द ले लो, तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

56. और वे जिन को जानते[1] तक नहीं उन का एक भाग उस में से बनाते हैं जो जीविका हम ने उन्हें दी है। तो अल्लाह की शपथ! तुम से अवश्य पूछा जायेगा उस के विषय में जो तुम झूठी बातें बना रहे थे?

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

57. और वह अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बनाते[2] हैं, वह पवित्र है! और उन के लिये वह[3] है, जो वे स्वयं चाहते हों!?

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ ۙ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

---

1 अर्थात अपने देवी देवताओं की वास्तविक्ता को नहीं जानते।

2 अरब के मुश्रिकों के पूज्यों में देवताओं से अधिक देवियाँ थीं। जिन के संबन्ध में उन का विचार था कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं। इसी प्रकार फ़रिश्तों को भी वे अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे, जिस का यहाँ खण्डन किया गया है।

3 अर्थात पुत्र।

58. और जब उन में से किसी को पुत्री (के जन्म) की शुभसूचना दी जाये, तो उस का मुख काला हो जाता है, और वह शोक पूर्ण हो जाता है।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾

59. और लोगों से छुपा फिरता है उस बुरी सूचना के कारण जो उसे दी गयी है। (सोचता है कि) क्या[1] उसे अपमान के साथ रोक ले, अथवा भूमि में गाड़ दे? देखो! वह कितना बुरा निर्णय करते हैं।

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

60. उन्हीं के लिये जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते अवगुण हैं, और अल्लाह के लिये सद्गुण हैं। तथा वह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी है।

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾

61. और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अत्याचार[2] पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े। परन्तु वह एक निर्धारित अवधि तक निलम्बित करता[3] है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾

62. वह अल्लाह के लिये उसे[4] बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं। तथा उन की ज़ुबानें झूठ बोलती हैं कि उन्हीं के लिये भलाई है। निश्चय

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُم مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

---

1 अर्थात जीवित रहने दे। इस्लाम से पूर्व अरब समाज के कुछ क़बीलों में पुत्रियों के जन्म को लज्जा की चीज़ समझा जाता था। जिस का चित्रण इस आयत में किया गया है।

2 अर्थात् शिर्क और पापाचारों पर।

3 अर्थात अवसर देता है।

4 अर्थात पुत्रियाँ।

उन्हीं के लिये नरक है, और वही सब से पहले (नरक में) झोंके जायेंगे।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

63. अल्लाह की शपथ! (हे नबी!) आप से पहले हम ने बहुत से समुदायों की ओर रसूल भेजे। तो उन के लिये शैतान ने उन के कुकर्मों को सुसिज्जत बना दिया। अतः वही आज उन का सहायक है, और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुर्आन) इसी लिये उतारी है ताकि आप उन के लिये उसे उजागर कर दें जिस में वह विभेद कर रहे हैं, तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. और अल्लाह ने ही आकाश से जल बरसाया, फिर उस ने निर्जीव धरती को जीवित कर दिया। निश्चय इस में उन लोगों के लिये एक निशानी है जो सुनते हैं।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۗ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. तथा वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उस से जो उस के भीतर है गोबर तथा रक्त के बीच से शुद्ध दूध पिलाते हैं। जो पीने वालों के लिये रुचिकर होता है।

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. तथा खजूरों और अँगूरों के फलों से जिस से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका भी, वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. और हम ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनायी छतों में।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. फिर प्रत्येक फलों का रस चूस, और अपने पालनहार की सरल राहों पर चलती रह। उस के भीतर से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है, जिस में लोगों के लिये आरोग्य है। वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾

70. और अल्लाह ही ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, फिर तुम्हें मौत देता है। और तुम में से कुछ को अबोध आयु तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के पश्चात् कुछ न जाने। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सर्व सामर्थ्यवान[1] है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۗ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

71. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है, तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दासों की ओर फेरने वाले नहीं कि वह उस में बराबर हो जायें तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानत हैं?[2]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ

72. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से पत्नियाँ बनायीं। और तुम्हारे लिये

---

1 अर्थात वह पुनः जीवित भी कर सकता है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जब वह स्वयं अपने दासों को अपने बराबर करने के लिये तय्यार नहीं हैं तो फिर अल्लाह की उत्पत्ति और उस के दासों को कैसे पूजा-अर्चना में उस के बराबर करते हैं? क्या यह अल्लाह के उपकारों का इन्कार नहीं है?

لَكُم مِّنْ أَزْوَاجِكُم بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٢﴾

तुम्हारी पत्नियों से पुत्र तथा पौत्र बनाये। और तुम्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की। तो क्या वे असत्य पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह के पुरस्कारों के प्रति अविश्वास रखते हैं?

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾

73. और अल्लाह के सिवा उन की वंदना करते हैं। जो उन के लिये आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने का अधिकार नहीं रखते, और न इस का सामर्थ्य रखते हैं।

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾

74. और अल्लाह के लिये उदाहरण न दो। वास्तव में अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।[1]

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوكًا لَّا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَمَن رَّزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا ۖ هَلْ يَسْتَوُونَ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

75. अल्लाह ने एक उदाहरण[2] दिया हैः एक पराधीन दास है, जो किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता, और दूसरा (स्वाधीन) व्यक्ति है, जिसे हम ने अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उस में से छुपे और खुले व्यय करता है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह[3] के लिये है। बल्कि अधिक्तर लोग (यह बात) नहीं जानते।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ

76. तथा अल्लाह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूँगा

---

1 क्यों कि उस के समान कोई नहीं।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जैसे पराधीन दास और धनी स्वतंत्र व्यक्ति को तुम बराबर नहीं समझते, ऐसे मुझे और इन मुर्तियों को कैसे बराबर समझ रहे हो जो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकतीं। और यदि मक्खी उन का चढ़ावा ले भागे तो वह छीन भी नहीं सकतीं।? इस से बड़ा अत्याचार क्या हो सकता है?

3 अर्थात अल्लाह के सिवा तुम्हारे पूज्यों में से कोई प्रशंसा के योग्य नहीं।

لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۗ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

है। वह किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता। वह अपने स्वामी पर बोझ है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाई नहीं लाता। तो क्या वह, और जो न्याय का आदेश देता हो, और स्वयं सीधी[1] राह पर हो बराबर हो जायेंगे??

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

77. और अल्लाह ही को आकाशों तथा धरती के परोक्ष[2] का ज्ञान है। और प्रलय (क़्यामत) का विषय तो बस पलक झपकने जैसा[3] होगा, अथवा उस से भी अधिक शीघ्र। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

78. और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकाला, इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम (उस का) उपकार मानो।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ۗ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. क्या वे पक्षियों को नहीं देखते कि वह अन्तरिक्ष में कैसे वशीभूत हैं? उन्हें अल्लाह ही थामता[4] है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا

80. और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को निवास स्थान बनाया। और पशुओं की खालों से तुम्हारे लिये ऐसे घर[5] बनाये जिन्हें तुम अपनी यात्रा तथा अपने

1 यह दूसरा उदाहरण है जो मुर्तियों का दिया है। जो गूँगी-बहरी होती हैं।

2 अर्थात गुप्त तथ्यों का।

3 अर्थात पलभर में आयेगी।

4 अर्थात पक्षियों को यह क्षमता अल्लाह ही ने दी है।

5 अर्थात चमड़ों के खेमे।

विराम के दिन हल्का (अल्पभार) पाते हो। और उन की ऊन और रोम तथा बालों से उपक्रण और लाभ के समान जीवन की निश्चित अवधि तक के लिये (बनाये)।

وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨٠﴾

81. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये उस चीज़ में से जो उत्पन्न की है छाया बनायी है। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुफाएं बनायी हैं। और तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें धूप से बचायें। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें तुम्हारे आक्रमण से बचायें।[1] इसी प्रकार वह तुम पर अपने उपकार पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُم بَأْسَكُمْ كَذَٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

82. फिर यदि वे विमुख हों तो आप पर बस प्रत्यक्ष (खुला) उपदेश पहुँचा देना है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٨٢﴾

83. वे अल्लाह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं। और उन में अधिक्तर कृतघ्न हैं।

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٣﴾

84. और जिस[2] दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी (गवाह) खड़ा[3] करेंगे, फिर काफ़िरों को बात करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और न उन से क्षमा याचना की माँग की जायेगी।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

85. और जब अत्याचारी यातना देखेंगे, उन की यातना कुछ कम नहीं की जायेगी,

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ

---

1 अर्थात कवच आदि।

2 अर्थात प्रलय के दिन।

3 (देखियेः सूरह निसा, आयतः 41)

عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾

और न उन्हें अवकाश दिया[1] जायेगा।

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِن دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

86. और जब मुशरिक अपने (बनाये हुये) साझियों को देखेंगे तो कहेंगेः हे हमारे पालनहार! यही हमारे साझी हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकार रहे थे। तो वह (पूज्य) बोलेंगे कि निश्चय तुम सब मिथ्यावादी (झुठे) हो।

وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ ۖ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

87. उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जायेंगे, और उन से खो जायेंगी जो मिथ्या बातें वह बनाते थे।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

88. जो लोग काफ़िर हो गये और (दूसरों को भी) अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोक दिय, उन्हें हम यातना पर यातना देंगे, उस उपद्रव के बदले जो वे कर रहे थे।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

89. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी उन के विरुद्ध उन्हीं में से खड़ा कर देंगे। और (हे नबी!) हम आप को उन पर साक्षी (गवाह) बनायेंगे।[2] और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुर्आन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है। तथा मार्ग दर्शन और दया तथा शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

90. वस्तुतः अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है। और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा

1 अर्थात तौबा करने का।

2 (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 143)

है। और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

91. और जब अल्लाग से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो। और अपनी शपथों को सुदृढ करने के पश्चात् भंग न करो, जब तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बनाया है। निश्चय अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِن بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

92. और तुम्हारी दशा उस स्त्री जैसी न हो जाये जिस ने अपना सूत कातने के पश्चात् उधेड़ दिया। तुम अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन बनाते हो ताकि एक समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक लाभ प्राप्त करे। अल्लाह इस[1] (वचन) के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। और प्रलय के दिन तुम्हारे लिये अवश्य उसे उजागर कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

93. और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है कुपथ कर देता है, और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और तुम से उस के बारे में अवश्य पूछा जायेगा जो तुम कर रहे थे।

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا

94. और अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन न बनाओ, ऐसा न हो कि कोई पग अपने स्थिर

---

1 अर्थात् किसी समुदाय से समझौता कर के विश्वासघात न किया जाये कि दूसरे समुदाय से अधिक लाभ मिलने पर समझौता तोड़ दिया जाये।

صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾

(दृढ़) होने के पश्चात् (ईमान से) फिसल[1] जाये और तुम उस के बदले बुरा परिणाम चखो कि तुम ने अल्लाह की राह से रोका है। और तुम्हारे लिये बड़ी यातना हो।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. और अल्लाह से किये हुये वचन को तनिक मूल्य के बदले न बेचो।[2] वास्तव में जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम जानो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. जो तुम्हारे पास है वह व्यय (ख़र्च) हो जायेगा। और जो अल्लाह के पास है वह शेष रह जाने वाला है। और हम, जो धैर्य धारण करते हैं उन्हें अवश्य उन का पारिश्रमिक (बदला) उन के उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

97. जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करायेंगे। और उन्हें उन का पारिश्रमिक उन के उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ

98. तो (हे नबी!) जब आप क़ुर्आन का अध्ययन करें तो धिक्कारे हुये शैतान से

1 अर्थात ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति इस्लाम की सत्यता को स्वीकार करने के पश्चात् केवल तुम्हारे दुराचार को देख कर इस्लाम से फिर जाये। और तुम्हारे समुदाय में सम्मिलित होने से रुक जाये। अन्यथा तुम्हारा व्यवहार भी दूसरों से कुछ भिन्न नहीं है।

2 अर्थात् संसारिक लाभ के लिये वचन भंग न करो। (देखियेः सूरह, आराफ़, आयतः 172)

الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝٩٨

अल्लाह की शरण[1] माँग लिया करें।

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٩٩

99. वस्तुतः उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُوْنَ ۝١٠٠

100. उस का वश तो केवल उन पर चलता है जो उसे अपना संरक्षक बनाते हैं। और जो मिश्रणवादी (मुश्‌रिक) हैं।

وَإِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا إِنَّمَآ أَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٠١

101. और जब हम किसी आयत (विधान) के स्थान पर कोई आयत बदल देते हैं, और अल्लाह ही अधिक जानता है उसे जिस को वह उतारता है, तो कहते हैं कि आप तो केवल घड़ लेते हैं, बल्कि उन में अधिक्तर जानते ही नहीं।

قُلْ نَزَّلَهُ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝١٠٢

102. आप कह दें कि इसे ((रूहुल कुदुस))[2] ने आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ क्रमशः उतारा है ताकि उन्हें सुदृढ़ कर दे जो ईमान लाये हैं। तथा मार्ग दर्शन और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٠٣

103. तथा हम जानते हैं कि वे (काफ़िर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा[3] है। जब कि उस की भाषा जिस की ओर संकेत करते

---

1 अर्थात ((अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम)) पढ़ लिया करें।

2 इस का अर्थः पवित्रात्मा है। जो जिब्रील अलैहिस्सलाम की उपाधि है। यही वह फ़रिश्ता है जो वह्यी लाता था।

3 इस आयत में मक्का के मिश्रणवादियों के इस आरोप का खण्डन किया गया है कि कुर्आन आप को एक विदेशी सिखा रहा है।

हैं विदेशी है और यह[1] स्पष्ट अर्बी भाषा है।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

104. वास्तव में जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन्हें अल्लाह सुपथ नहीं दर्शाता। और उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

105. झूठ केवल वही घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही मिथ्यावादी (झूठे) हैं।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

106. जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया अपने ईमान लाने के पश्चात्, परन्तु जो बाध्य कर दिया गया हो इस दशा में कि उस का दिल ईमान से संतुष्ट हो, (उस के लिये क्षमा है)। परन्तु जिस ने कुफ़्र के साथ सीना खोल दिया[2] हो, तो उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है, और उन्हीं के लिये महा यातना है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾

107. यह इसलिये कि उन्हों ने संसारिक जीवन को परलोक पर प्राथमिकता दी है। और वास्तव में अल्लाह, काफ़िरों को सुपथ नहीं दिखाता।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾

108. वही लोग हैं जिन के दिलों तथा कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। तथा यही लोग अचेत हैं।

---

1 अर्थात मक्के वाले जिसे कहते हैं कि वह मुहम्मद को क़ुर्आन सिखाता है उस की भाषा तो अर्बी है ही नहीं तो वह आप को क़ुर्आन कैसे सिखा सकता है जो बहुत उत्तम तथा श्रेष्ठ अर्बी भाषा में है। क्या वे इतना भी नहीं समझते?

2 अर्थात स्वेच्छा कुफ़्र किया हो।

لَاجَرَمَ اَنَّهُمۡ فِی الۡاٰخِرَةِ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿١٠٩﴾

109. निश्चय वही लोग परलोक में क्षतिग्रस्त होने वाले हैं।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا فُتِنُوۡا ثُمَّ جٰهَدُوۡا وَصَبَرُوۡۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ بَعۡدِهَا لَـغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١١٠﴾

110. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन लोगों[1] के लिये जिन्होंने हिज्रत (प्रस्थान) की, और उस के पश्चात् परीक्षा में डाले गये, फिर जिहाद किया, और सहन शील रहे, वास्तव में आप का पालनहार इस (परीक्षा) के पश्चात् बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ نَفۡسٍ تُجَادِلُ عَنۡ نَّـفۡسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿١١١﴾

111. जिस दिन प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव की चिन्ता होगी, और प्रत्येक प्राणी को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرۡيَةً كَانَتۡ اٰمِنَةً مُّطۡمَٮِٕنَّةً يَّاۡتِيۡهَا رِزۡقُهَا رَغَدًا مِّنۡ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتۡ بِاَنۡعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الۡجُـوۡعِ وَالۡخَـوۡفِ بِمَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ﴿١١٢﴾

112. अल्लाह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शान्त संतुष्ट थी, उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहुँच रही थी, तो उस ने अल्लाह के उपकारों के साथ कुफ़्र किया। तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा[2] दिया उस के बदले जो वह[3] कर रहे थे।

وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡهُمۡ فَكَذَّبُوۡهُ

113. और उन के पास एक[4] रसूल उन्हीं

1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी है जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये।

2 अर्थात उन पर भूख और भय की आपदायें छा गईं।

3 अर्थात उस बस्ती के निवासी। और इस बस्ती से अभिप्रेत मक्का है जिन पर उन के कुफ़्र के कारण अकाल पड़ा।

4 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के कुरैशी वंश से ही थे फिर भी

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾

में से आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। अतः उन्हें यातना ने पकड़ लिया, और वह अत्याचारी थे।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾

114. अतः उस में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल (वैध) स्वच्छ जीविका प्रदान की है। और अल्लाह का उपकार मानो यदि तुम उसी की इबादत (वंदना) करते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115. जो कुछ उस ने तुम पर हराम (अवैध) किया है वह मुर्दार तथा रक्त और सूअर का मांस है, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया गया[1] हो, फिर जो भूख से आतुर हो जाये, इस दशा में कि वह नियम न तोड़ रहा[2] हो, और न आवश्यक्ता से अधिक खाये, तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾ ۗ

116. और मत कहो -उस झूठ के कारण जो तुम्हारी ज़ुबानों पर आ जाये- कि यह हलाल (वैध) है, और यह हराम (अवैध) है ताकि अल्लाह पर मिथ्यारोप[3] करो। वास्तव में जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोप करते हैं

उन्हों ने आप की बात को नहीं माना।

1 अर्थात अल्लाह के सिवा अन्य के नाम से बलि दिया गया पशु।
हदीस में है कि जो अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम से बलि दे उस पर अल्लाह की धिक्कार है। (सहीह बुख़ारी-1978)

2 (देखियेः सूरह बक़रा, आयत-173, सूरह माइदा, आयत-3, तथा सूरह अन्आम, आयत-145)

3 क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

वह (कभी) सफल नहीं होते।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

117. (इस मिथ्यारोपण का) लाभ तो थोड़ा है और उन्हीं के लिये (परलोक में) दुखदायी यातना है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

118. और उन पर जो यहूदी हो गये, हम ने उसे हराम (अवैध) कर दिया जिस का वर्णन हम ने इस[1] से पहले आप से कर दिया है। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٩﴾

119. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन्हें जो अज्ञानता के कारण बुराई कर बेठे, फिर उस के पश्चात् क्षमायाचना कर ली, और अपना सुधार कर लिया, वास्तव में आप का पालनहार इस के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٠﴾

120. वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय[2] था, अल्लाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों (मुश्रिकों) में से नहीं था।

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٢١﴾

121. उस के उपकारों को मानता था, उस ने उसे चुन लिया, और उसे सीधी राह दिखा दी।

---

1 इस से संकेत सूरह अन्आम, आयत-26 की ओर है।

2 अर्थात वह अकेला सम्पूर्ण समुदाय था। क्यों कि उस के वंश से दो बड़ी उम्मतें बनीं: एक बनी इस्राईल, और दूसरी बनी इस्माईल जो बाद में अरब कहलाये। इस का एक दूसरा अर्थ मुख्या भी होता है।

وَآتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٢٢﴾

122. और हम ने उसे संसार में भलाई दी, और वास्तव में वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

123. फिर हम ने (हे नबी!) आप की ओर वह्यी की, कि एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

124. सब्त[1] (शनिवार का दिन) तो उन्हीं पर निर्धारित किया गया जिन्हों ने उस में विभेद किया। और वस्तुतः आप का पालनहार उन के बीच उस में निर्णय कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

125. (हे नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्वदर्शिता तथा सदुपदेश के साथ बुलायें। और उन से ऐसे अन्दाज़ में शास्त्रार्थ करें जो उत्तम हो। वास्तव में अल्लाह उसे अधिक जानता है, जो उस की राह से विचलित हो गया, और वही सुपथों को भी अधिक जानता है।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

126. और यदि तुम लोग बदला लो, तो उतना ही लो, जितना तुम्हें सताया गया हो। और यदि सहन कर जाओ

1 अर्थात सब्त का सम्मान जैसे इस्लाम में नहीं है इसी प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म में भी नहीं है। यह तो केवल उन के लिये निर्धारित किया गया जिन्हों ने विभेद कर के जुमुआ के दिन की जगह सब्त का दिन निर्धारित कर लिया। तो अल्लाह ने उन के लिये उसी का सम्मान अनिवार्य कर दिया कि इस में शिकार न करो। (देखियेः सूरह आराफ़, आयतः 163)

तो सहनशीलों के लिये यही उत्तम है।

127. और (हे नबी!) आप सहन करें, और आप का सहन करना अल्लाह ही की सहायता से है। और उन के (दुर्व्यवहार) पर शोक न करें, और न उन के षड्यंत्र से तनिक भी संकुचित हों।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

128. वास्तव में अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सदाचारी हैं, और जो उपकार करने वाले हैं।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾
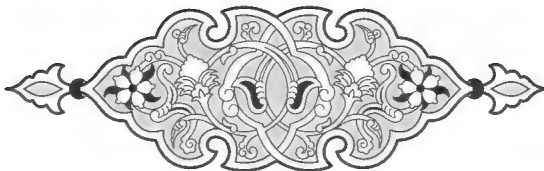
सूरह बनी इस्राईल - 17

सूरह बनी इस्राईल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस की आयत (2-3 में बनी इस्राईल से संबंधित कुछ शिक्षाप्रद बातें सुना कर सावधान किया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह (बनी इस्राईल) रखा गया है। और इस की प्रथम आयत में इस्राअ (मेअराज) का वर्णन हुआ है इसलिये इस का दूसरा नाम सूरह (इस्राअ) भी है।
- आयत 9 से 22 तक क़ुर्आन का आमंत्रण प्रस्तुत किया गया है। और आयत 39 तक उन शिक्षाओं का वर्णन है जो मनुष्य के कर्मों को सजाती हैं और अल्लाह से उस का संबंध दृढ़ करती हैं। और आयत 40 से 60 तक विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है।
- आयत 61 से 65 तक में शैतान इब्लीस के आदम (अलैहिस्सलाम) के सज्दे से इन्कार, और मनुष्य से बैर और उस को कुपथ करने के प्रयास का वर्णन किया गया है, जो आज भी लोगों को क़ुर्आन से रोक रहा है। और उस से सावधान किया गया है।
- आयत 66 से 72 तक तौहीद तथा परलोक पर विश्वास की बातें प्रस्तुत करते हुये आयत 77 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध की आँधियों में सत्य पर स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 78 से 82 तक में नमाज़ की ताकीद, हिज्रत की ओर संकेत, तथा सत्य के प्रभुत्व की सूचना और अत्याचारियों के लिये चेतावनी है।
- आयत 83 से 100 तक में मनुष्य के कुकर्म पर पकड़ की गई है। तथा विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर दिये गये है। फिर आयत 104 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के चमत्कारों की चर्चा और उस पर ईमान न लाने के कारण फ़िरऔन पर यातना के आ जाने का वर्णन है।
- आयत 105 से 111 तक यह निर्देश दिये गये हैं कि अल्लाह को कैसे पुकारा जाये, तथा उस की महिमा का वर्णन कैसे किया जाये।

मेअ्राज की घटनाः

- यह अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता है कि

हिज्रत से एक वर्ष पहले अल्लाह ने एक रात आप को मस्जिदे हराम (कॉबा) से मस्जिदे अक़्सा तक, और फिर वहाँ से सातवें आकाश तक अपनी कुछ निशानियाँ दिखाने के लिये यात्रा कराई। फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «बुराक़» (एक जानवर का नाम, जिस पर बेठ कर आप ने यह यात्रा की थी) पर सवार किया और पहले मस्जिदे अक़्सा (फ़िलस्तीन) ले गये वहाँ आप ने सब नबियों को नमाज़ पढ़ाई। फिर आकाश पर ले गये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक आकाश पर नबियों से मिलते हुये सातवें आकाश पर पहुँचे। स्वर्ग और नरक को देखा। इस के पश्चात् आप को ((सिद्रतुल मुन्तहा)) ले जाया गया। फिर ((बैतुल मामूर)) आप के सामने किया गया। उस के पश्चात् अल्लाह के समीप पहुँचाया गया। और अल्लाह ने आप को कुछ उपदेश दिये, और दिन-रात में पाँच समय की नमाज़ अनिवार्य की। (सहीह बुख़ारी-3207, मुस्लिम- 164) (और देखियेः सूरह नज्म)

- जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सवेरे अपनी जाति को इस यात्रा की सूचना दी तो उन्हों ने आप का उपहास किया और आप से कहा कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बताओ। इस पर अल्लाह ने उसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने कर दिया, और आप ने आँखों से देख कर उन को उस की सब निशानियाँ बता दीं। (देखियेः सहीह बुख़ारी-3437, मुस्लिम- 172)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जाते और आते हुये राह में उन के एक क़ाफ़िले से मिलने की भी चर्चा की और उस के मक्का आने का समय और उस ऊँट का चिन्ह भी बता दिया जो सब से आगे था और यह सब वैसे ही हुआ जैसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताया था। (सीरत इब्ने हिशाम-1|402-403)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ

1. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ क्षण में अपने भक्त[1] को मस्जिदे

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ إِلَى ٱلْمَسْجِدِ ٱلْأَقْصَا ٱلَّذِى بَٰرَكْنَا حَوْلَهُۥ لِنُرِيَهُۥ مِنْ ءَايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ①

हराम (मक्का) से मस्जिदे अक़्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिग हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन करायें। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَجَعَلْنَٰهُ هُدًى لِّبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ أَلَّا تَتَّخِذُوا۟ مِن دُونِى وَكِيلًا ②

2. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राईल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक[1] न बनाओ।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ③

3. हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अति कृतज्ञ[2] भक्त था।

وَقَضَيْنَآ إِلَىٰ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ فِى ٱلْكِتَٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى ٱلْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ④

4. और हम ने बनी इस्राईल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस[3] धरती में दो बार उपद्रव

इस आयत में उस सुप्रसिद्ध सत्य की चर्चा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से संबन्धित है। जिसे परिभाषिक रूप से "इस्राअ" कहा जाता है जिस का अर्थ हैः रात की यात्रा। इस का सविस्तार विवरण हदीसों में किया गया है।

भाष्यकारों के अनुसार हिज्रत के कुछ पहले अल्लाह ने आप को रात्रि के कुछ भाग में मक्का से मस्जिदे अक़्सा तक जो फ़िलस्तीन में है यात्रा कराई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मक्का के मिश्रणवादियों ने मुझे झुठलाया, तो मैं हिज्र में (जो काबा का एक भाग है) खड़ा हो गया। और अल्लाह ने बैतुम मक़्दिस को मेरे लिये खोल दिया। और मैं उन्हें उस की निशानियाँ देख कर बताने लगा। (सहीह बुख़ारी, हदीसः 4710)।

1 जिस पर निर्भर रहा जाये।

2 अतः हे सर्वमानव तुम भी अल्लाह के उपकार के आभारी बनो।

3 अर्थात् बैतुल मक़्दिस में।

करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।

5. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रबल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों में घुस गये, और इस वचन को पूरा होना[1] ही था।

فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ أُولَىٰهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ أُو۟لِى بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا۟ خِلَـٰلَ ٱلدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝٥

6. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व दिया, तथा धनों और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ ٱلْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَـٰكُم بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَـٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝٦

7. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद (अक्सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णतः नाश[2] कर दें।

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْـَٔاخِرَةِ لِيَسُـۥٓـُٔوا۟ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا۟ مَا عَلَوْا۟ تَتْبِيرًا ۝٧

8. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर[3] आयेंगे, और हम ने नरक को काफ़िरों

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَـٰفِرِينَ حَصِيرًا ۝٨

1 इस से अभिप्रेत बाबिल के राजा बुख़्तनस्सर का आक्रमण है जो लग भग छः सौ वर्ष पूर्व मसीह हुआ। इस्राईलियों को बंदी बना कर ईराक़ ले गया और बैतुल मुक़द्दस को तहस नहस कर दिया।

2 जब बनी इस्राईल पुनः पापाचारी बन गये, तो रोम के राजा क़ैसर ने लग भग सन् 70 ई॰ में बैतुल मक़्दिस पर आक्रमण कर के उन की दुर्गत बना दी। और उन की पुस्तक तौरात का नाश कर दिया और एक बड़ी संख्या को बंदी बना लिया। यह सब उन के कुकर्म के कारण हुआ।

3 अर्थात् संसारिक दण्ड देने के लिये।

के लिये कारावास बना दिया है।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾

9. वास्तव में यह कुर्आन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शुभसूचना देता है जो सदाचार करते हैं, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٠﴾

10. और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾

11. और मनुष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता[1] है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾

12. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह (जीविका) की खोज करो। और वर्षों तथा हिसाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज़ का सविस्तार वर्णन कर दिया।

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنْشُورًا ﴿١٣﴾

13. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।

اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾

14. अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।

1 अर्थात् स्वयं को और अपने घराने को शापने लगता है।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا
يَضِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ وَمَا كُنَّا
مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾

15. जिस ने सीधी राह अपनायी, उस ने अपने ही लिये सीधी राह अपनायी। और जो सीधी राह से विचलित हो गया उस का (दुष्परिणाम) उसी पर है। और कोई दूसरे का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा।[1] और हम यातना देने वाले नहीं हैं जब तक कि कोई रसूल न भेजें।[2]

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا
فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿١٦﴾

16. और जब हम किसी बस्ती का विनाश करना चाहते हैं तो उस के सम्पन्न लोगों को आदेश देते[3] हैं, फिर वह उस में उपद्रव करने लगते[4] हैं तो उस पर यातना की बात सिद्ध हो जाती है, और हम उस का पूर्णतः उन्मूलन कर देते हैं।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۗ وَكَفٰى
بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

17. और हम ने बहुत सी जातियों का नूह के पश्चात् विनाश किया है। और आप का पालनहार अपने दासों के पापों से सूचित होने-देखने को बहुत है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ
نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾

18. जो संसार ही चाहता हो हम उसे यहीं दे देते हैं, जो हम चाहते हैं, जिस के लिये चाहते हैं। फिर हम उस का परिणाम (परलोक में) नरक बना देते हैं, जिस में वह निन्दित-तिरस्कृत

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि जो सदाचार करता है, वह किसी पर उपकार नहीं करता। बल्कि उस का लाभ उसी को मिलना है। और जो दुराचार करता है, उस का दण्ड भी उसी को भोगना है।

2 ताकि वे यह बहाना न कर सकें कि हम ने सीधी राह को जाना ही नहीं था।

3 अर्थात् आज्ञापालन का।

4 अर्थात् हमारी आज्ञा का। आयत का भावार्थ यह है कि समाज के सम्पन्न लोगों का दुष्कर्म, अत्याचार और अवैज्ञा पूरी बस्ती के विनाश का कारण बन जाती है।

हो कर प्रवेश करेगा।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ﴿١٩﴾

19. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही हैं जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।

كُلًّا نُّمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾

20. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ) नहीं[1] है।

انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾

21. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है और निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।

لَّا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُولًا ﴿٢٢﴾

22. (हे मानव!) अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

23. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो, तथा माता - पिता के साथ उपकार करो, यदि तेरे पास दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुँच जाये अथवा दोनों, तो उन्हें उफ़ तक न कहो, और न झिड़को। और उन से सादर बात बोलो।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُل رَّبِّ

24. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका[2] दो, और प्रार्थना करोः

1 अर्थात् अल्लाह संसार में सभी को जीविका प्रदान करता है।

2 अर्थात् उन के साथ विनम्रता और दया का व्यवहार करो।

ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾

हे मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन-पालन किया है।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِن تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾

25. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान् है।

وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾

26. और समीपवर्तियों को उन का स्वत्व (हिस्सा) दो, तथा दरिद्र और यात्री को, और अपव्यय[1] न करो।

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

27. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई हैं और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾

28. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हों तो उन से सरल[2] बात बोलें।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

29. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बाँध[3] लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

30. वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दासों

---

1 अर्थात् अपरिमित और दुष्कर्म में ख़र्च न करो।

2 अर्थात् उन्हें सरलता से समझा दें कि अभी कुछ नहीं है। जैसे ही कुछ आया तुम्हें अवश्य दूँगा।

3 हाथ बाँधने और खोलने का अर्थ है, कृपण तथा अपव्यय करना। इस में व्यय और दान में संतुलन रखने की शिक्षा दी गयी है।

(वंदों) से अति सूचित[1]देखने वाला है।[2]

31. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप है।

وَلَا تَقْتُلُوٓا۟ أَوْلَٰدَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَٰقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْـًٔا كَبِيرًا ﴿٣١﴾

32. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्जा तथा बुरी रीति है।

وَلَا تَقْرَبُوا۟ ٱلزِّنَىٰٓ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ فَٰحِشَةً وَسَآءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾

33. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान[3] के अनुसार। और जो अत्यचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार[4] प्रदान किया है। अतः वह बध करने में अतिक्रमण[5] न करे, वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

وَلَا تَقْتُلُوا۟ ٱلنَّفْسَ ٱلَّتِى حَرَّمَ ٱللَّهُ إِلَّا بِٱلْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِۦ سُلْطَٰنًا فَلَا يُسْرِف فِّى ٱلْقَتْلِ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ مَنصُورًا ﴿٣٣﴾

34. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।

وَلَا تَقْرَبُوا۟ مَالَ ٱلْيَتِيمِ إِلَّا بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُۥ ۚ وَأَوْفُوا۟ بِٱلْعَهْدِ ۖ إِنَّ ٱلْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔولًا ﴿٣٤﴾

---

1 अर्थात वह सब की दशा और कौन किस के योग्य है देखता और जानता है।

2 हदीस में है कि शिर्क के बाद सब से बड़ा पाप अपनी संतान को खिलाने के भय से मार डालना है। (बुख़ारी, 4477, मुस्लिमः 86)

3 अर्थात प्रतिहत्या में अथवा विवाहित होते हुये व्यभिचार के कारण, अथवा इस्लाम से फिर जाने के कारण।

4 अधिकार का अर्थ यह है कि वह इस के आधार पर हत्-दण्ड की मांग कर सकता है, अथवा बध या अर्थ-दण्ड लेने या क्षमा कर देने का अधिकारी है।

5 अर्थात एक के बदले दो को या दूसरे की हत्या न करे।

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾

35. और पूरा नाप कर दो, जब नापो, और सही तराज़ू से तौलो। यह अधिक अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾

36. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय कान तथा आँख और दिल इन सब के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न किया जायेगा।[1]

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

37. और धरती में अकड़ कर न चलो, वास्तव में न तुम धरती को फाड़ सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों तक पहुँच सकोगे।

كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

38. यह सब बातें हैं। इन में बुरी बात आप के पालनहार को अप्रिय हैं।

ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ﴿٣٩﴾

39. यह तत्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन की वह़्यी (प्रकाशना) आप की ओर आप के पालनहार ने की है, और अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना लेना, अन्यथा नरक में निन्दित तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।

أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

40. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र प्रदान करने के लिये विशेष कर लिया है, और स्वयं ने फ़रिश्तों को पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम बहुत बड़ी बात कह रहे हो।[2]

---

1 अल्लाह, प्रलय के दिन इन को बोलने की शक्ति देगा। और वह उस के विरुद्ध साक्ष्य देंगे। (देखियेः सूरह, हा, मीम सजदा, आयतः 20-21)

2 इस आयत में उन अर्बों का खण्डन किया गया है जो फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि स्वयं पुत्रियों के जन्म से उदास हो जाते थे। और कभी ऐसा भी हुआ कि उन्हें जीवित गाड़ दिया जाता था। तो बताओ यह कहाँ का

41. और हम ने विविध प्रकार से इस क़ुर्आन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है, ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾

42. आप कह दें कि यदि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अल्लाह) की ओर अवश्य कोई राह[1] खोजते।

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

43. वह पवित्र और बहुत उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते हैं।

سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾

44. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज़ परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾

45. और जब आप क़ुर्आन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना[2] देते हैं।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ﴿٤٥﴾

न्याय है कि अपने लिये पुत्रियों को अप्रिय समझते हो और अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बना रखीं हो?

1 ताकि उस से संघर्ष कर के अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें।

2 अर्थात् परलोक पर ईमान न लाने का यही स्वभाविक परिणाम है कि क़ुर्आन को समझने की योग्यता खो जाती है।

46. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (क़ुर्आन) को न समझें, और उन के कानों में बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा क़ुर्आन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।

وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾

47. और हम उन के विचारों से भली भाँति अवगत हैं, जब वे कान लगा कर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अत्याचारी करते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण[1] करते हो।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾

48. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अतः वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾

49. और उन्हों ने कहाः क्या हम जब अस्थियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुनः जीवित कर दिये[2] जायेंगे?

وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾

50. आप कह दें कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾

51. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह देंः वही जिस ने प्रथम चरण

أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَن يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ

---

1 मक्का के काफ़िर छुप-छुप कर क़ुर्आन सुनते। फिर आपस में परामर्श करते कि इस का तोड़ क्या हो? और जब किसी पर संदेह हो जाता कि वह क़ुर्आन से प्रभावित हो गया है। तो उसे समझाते कि इस के चक्कर में क्या पड़े हो, इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये बहकी-बहकी बातें कर रहा है।

2 ऐसी बात वह परिहास अथवा इन्कार के कारण कहते थे।

में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सिर हिलायेंग[1], और कहेंगेः ऐसा कब होगा? आप कह दें कि संभवतः वह समीप ही है।

هُوَۗ قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ۝٥١

52. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करते हुये स्वीकार कर लोगे[2] और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٥٢

53. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता[3] है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۗ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝٥٣

54. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भाँति अवगत है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे, और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा[4] है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۗ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۗ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝٥٤

55. (हे नबी!) आप का पालनहार भली भाँति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नबियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को ज़बूर (पुस्तक) प्रदान की।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝٥٥

---

1 अर्थात् परिहास करते हुये आश्चर्य से सिर हिलायेंगे।

2 अर्थात अपनी क़ब्रों से प्रलय के दिन जीवित हो कर उपस्थित हो जाओगे।

3 अर्थात् कटु शब्दों द्वारा।

4 अर्थात् आप का दायित्व केवल उपदेश पहुँचा देना है, वह तो स्वयं अल्लाह के समीप होने की आशा लगाये हुये हैं, कि कैसे उस तक पहुँचा जाये तो भला वे पूज्य कैसे हो सकते हैं।

56. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अल्लाह) के सिवा (पूज्य) समझते हो। न वे तुम से दुःख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾

57. वास्तव में जिन को यह लोग[1] पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन[2] खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है? और उस की दया की आशा रखते हैं। और उस की यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾

58. और कोई (अत्याचारी) बस्ती नहीं है, परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं। यह (अल्लाह के) लेख में अंकित है।

وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

59. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि विगत लोगों ने उन्हें झुठला[3] दिया। और हम ने समूद को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्हों ने उस पर अत्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते हैं।

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾

60. और (हे नबी!) याद करो जब हम

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا

1 अर्थात् मुश्रिक जिन नबियों, महापुरुषों और फ़रिश्तों को पुकारते हैं।

2 साधन से अभिप्रेत सत्कर्म और सदाचार है।

3 अर्थात् चमत्कार की माँग करने पर चमत्कार इस लिये नहीं भेजा जाता कि उस के पश्चात् न मानने पर यातना का आना अनिवार्य हो जाता है, जैसा कि भाष्यकारों ने लिखा है।

الَّتِيٓ أَرَيْنَٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَٱلشَّجَرَةَ ٱلْمَلْعُونَةَ فِى ٱلْقُرْءَانِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَٰنًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾

ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया[1] उस को और उस वृक्ष को जिस पर कुर्आन में धिक्कार की गयी है, हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया[2] है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ قَالَ ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾

61. और (याद करो), जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। उस ने कहाः क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?

قَالَ أَرَءَيْتَكَ هَٰذَا ٱلَّذِى كَرَّمْتَ عَلَىَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُۥٓ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٢﴾

62. (तथा) उस ने कहाः तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझ पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा[3] कुछ के सिवा।

قَالَ ٱذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ

63. अल्लाह ने कहाः "चले जाओ", जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो

1 इस से संकेत "मेअराज" की ओर है। और यहाँ "रु,या" शब्द का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि आँखों से देखना है। और धिक्कारे हुये वृक्ष से अभिप्राय ज़क़्क़ूम (थोहड़) का वृक्ष है। (सहीह बुख़ारी, हदीस, 4716)

2 अर्थात काफ़िरों के लिये जिन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही रात में बैतुल मुक़द्दस पहुँच जायें फिर वहाँ से आकाश की सैर कर के वापिस मक्का भी आ जायें।

3 अर्थात् कुपथ कर दूँगा।

جَزَآؤُكُمۡ جَزَآءٗ مَّوۡفُورٗا ﴿٦٣﴾

निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार (बदला) है, भरपूर बदला।

وَٱسۡتَفۡزِزۡ مَنِ ٱسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُم بِصَوۡتِكَ وَأَجۡلِبۡ عَلَيۡهِم بِخَيۡلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِي ٱلۡأَمۡوَٰلِ وَٱلۡأَوۡلَٰدِ وَعِدۡهُمۡۚ وَمَا يَعِدُهُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾

64. तू उन में से जिस को हो सके अपनी ध्वनि[1] से बहका ले। और उन पर अपनी सवार और पैदल (सेना) चढ़ा[2] ले। और उन का (उन के) धनों और संतान में साझी बन[3] जा। तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें धोखे के सिवा (कोई) वचन नहीं देता।

إِنَّ عِبَادِي لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطَٰنٞۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلٗا ﴿٦٥﴾

65. वास्तव में जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कोई वश नहीं चल सकता। और आप के पालनहार का सहायक होना यह बहुत है।

رَّبُّكُمُ ٱلَّذِي يُزۡجِي لَكُمُ ٱلۡفُلۡكَ فِي ٱلۡبَحۡرِ لِتَبۡتَغُواْ مِن فَضۡلِهِۦٓۚ إِنَّهُۥ كَانَ بِكُمۡ رَحِيمٗا ﴿٦٦﴾

66. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता है, ताकि तुम उस की जीविका की खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

وَإِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فِي ٱلۡبَحۡرِ ضَلَّ مَن تَدۡعُونَ إِلَّآ إِيَّاهُۖ فَلَمَّا نَجَّىٰكُمۡ إِلَى ٱلۡبَرِّ أَعۡرَضۡتُمۡۚ وَكَانَ ٱلۡإِنسَٰنُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

67. और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो जाते (भूल जाते) हो।[4] और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुँचा देता है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है हि अति कृतघ्न।

---

1 अर्थात गाने और बाजे द्वारा।

2 अर्थात अपने जिन्न और मनुष्य सहायकों द्वारा उन्हें बहकाने का उपाय कर ले।

3 अर्थात अवैध धन अर्जित करने और व्यभिचार की प्रेरणा दे।

4 अर्थात ऐसी दशा में केवल अल्लाह याद आता है और उसी से सहायता माँगते हो किन्तु जब सागर से निकल जाते हो तो फिर उन्हीं देवी देवताओं की वंदना करने लगते हो।

68. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।

69. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे, फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़्र के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष[1] धरे।

70. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, और उन्हें थल और जल में सवार[2] किया, और उन्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीज़ों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।

71. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जयेगा।

72. और जो इस (संसार) में अन्धा[3] रह गया तो वह आख़िरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।

أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾

أَمْ أَمِنتُمْ أَن يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴿٧٠﴾

يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٢﴾

---

1 और हम से बदले की माँग कर सके।

2 अर्थात् सवारी के साधन दिये।

3 अर्थात् सत्य से अन्धा।

وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَفۡتِنُوۡنَكَ عَنِ الَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ لِتَفۡتَرِىَ عَلَيۡنَا غَيۡرَهٗۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوۡكَ خَلِيۡلًا ۝٧٣

73. और (हे नबी!) वह (काफ़िर) समीप था कि आप को उस वह्यी से फेर दें, जो हम ने आप की ओर भेजी है, ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड़ लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।

وَلَوۡلَاۤ اَنۡ ثَبَّتۡنٰكَ لَقَدۡ كِدتَّ تَرۡكَنُ اِلَيۡهِمۡ شَيۡـًٔـا قَلِيۡلًا ۝٧٤

74. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।

اِذًا لَّاَذَقۡنٰكَ ضِعۡفَ الۡحَيٰوةِ وَضِعۡفَ الۡمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيۡنَا نَصِيۡرًا ۝٧٥

75. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।

وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَسۡتَفِزُّوۡنَكَ مِنَ الۡاَرۡضِ لِيُخۡرِجُوۡكَ مِنۡهَا وَاِذًا لَّا يَلۡبَثُوۡنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۝٧٦

76. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से विचला दें, ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।

سُنَّةَ مَنۡ قَدۡ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنۡ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحۡوِيۡلًا ۝٧٧

77. यह[1] उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहले अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوۡكِ الشَّمۡسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيۡلِ وَقُرۡاٰنَ الۡفَجۡرِؕ اِنَّ قُرۡاٰنَ الۡفَجۡرِ كَانَ مَشۡهُوۡدًا ۝٧٨

78. आप नमाज़ की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे[2] तक, तथा प्रातः (फ़ज्र के समय) क़ुर्आन पढ़िये। वास्तव में प्रातः क़ुर्आन पढ़ना उपस्थिति का समय[3] है।

---

1 अर्थात् रसूल को निकालने पर यातना देने का हमारा नियम रहा है।

2 अर्थात् जुहर, अस्र और मग़्रिब तथा इशा की नमाज़।

3 अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ के समय रात और दिन के फ़रिश्ते एकत्र तथा उपस्थित

79. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर "तहज्जुद"[1] पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफ़्ल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मक़ामे महमूद)[2] प्रदान कर दे।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰٓ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ﴿٧٩﴾

80. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! मुझे प्रवेश[3] दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।

وَقُل رَّبِّ أَدْخِلْنِى مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِى مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَل لِّى مِن لَّدُنكَ سُلْطَٰنًا نَّصِيرًا ﴿٨٠﴾

81. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त-निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त- निरस्त होना ही है।[4]

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَٰطِلُ إِنَّ الْبَٰطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾

82. और हम कुर्आन में वह चीज़ उतार रहे हैं, जो आरोग्य तथा दया है ईमान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّٰلِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

83. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुख फेर लेता है और

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَٰنِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهِۦ

रहते हैं। (सहीह बुख़ारी-359, सहीह मुस्लिम-632)

1 तहज्जुद का अर्थ हैः रात के अन्तिम भाग में नमाज़ पढ़ना।

2 (मक़ामे महमूद) का अर्थ है प्रशंसा योग्य स्थान। और इस से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से आप प्रलय के दिन शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे।

3 अर्थात् मदीना में, मक्का से निकाल कर।

4 अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का (की विजय के दिन) उस में प्रवेश किया तो काबा के आस पास तीन सौ साठ मुर्तियाँ थीं। और आप के हाथ में एक छड़ी थी, जिस से उन को मार रहे थे। और आप यही आयत पढ़ते जा रहे थे। (सहीह बुख़ारी, 4720, मुस्लिम, 1781)

وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ﴿٨٣﴾

दूर हो जाता[1] है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाता है।

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ﴿٨٤﴾

84. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक सीधी डगर पर है।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٥﴾

85. (हे नबी!) लोग आप से रूह[2] के विषय में पूछते हैं, आप कह दें: रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٦﴾

86. और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ ले जायें जो आप की ओर हम ने वह्यी किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।

إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾

87. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है)। वास्तव में उस का प्रदान आप पर बहुत बड़ा है।

قُلْ لَئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

88. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन्न इस पर एकत्र हो जायें कि इस कुर्आन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

89. और हम ने लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी

1 अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से।

2 «रूह» का अर्थः आत्मा है जो हर प्राणी के जीवन का मूल है। किन्तु उस की वास्तविक्ता क्या है? यह कोई नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य के पास जो ज्ञान है वह बहुत कम है।

अधिक्तर लोगों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया है।

90. और उन्हों ने कहाः हम आप पर कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक कि आप हमारे लिये धरती से एक चश्मा प्रवाहित कर दें।

وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنبُوعًا ﴿٩٠﴾

91. अथवा आप के लिये खजूर अथवा अँगूर का कोई बाग़ हो, फिर उस के बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩١﴾

92. अथवा हम पर आकाश को जैसा आप का विचार है, खण्ड -खण्ड कर के गिरा दें, या अल्लाह और फ़रिश्तों को साक्षात हमारे सामने ला दें।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ﴿٩٢﴾

93. अथवा आप के लिये सोने का एक घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़ जायें, और हम आप के चढ़ने का भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ तक की हम पर एक पुस्तक उतार लायें जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो बस एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य[1] हूँ।

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَن نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرَؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٣﴾

94. और नहीं रोका लोगों को कि वह ईमान लायें, जब उन के पास

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ

1 अर्थात् मैं अपने पालनहार की वह्यी का अनुसरण करता हूँ। और यह सब चीज़ें अल्लाह के वस में हैं। यदि वह चाहे तो एक क्षण में सब कुछ कर सकता है किन्तु मैं तो तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ मुझे केवल रसूल बना कर भेजा गया है ताकि तुम्हें अल्लाह का संदेश सुनाऊँ। रहा चमत्कार तो वह अल्लाह के हाथ में है। जिसे चाहे दिखा सकता है। फिर क्या तुम चमत्कार देख कर ईमान लाओगे? यदि ऐसा होता तो तुम कभी के ईमान ला चुके होते क्योंकि कुर्आन से बड़ा क्या चमत्कार हो सकता है।

मार्गदर्शन[1] आ गया, परन्तु इस ने कि उन्हों ने कहाः क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?

إِلَّآ أَن قَالُوٓا۟ أَبَعَثَ ٱللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾

95. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फ़रिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फ़रिश्ता रसूल बना कर उतारते।

قُل لَّوْ كَانَ فِى ٱلْأَرْضِ مَلَٰٓئِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾

96. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य[2] बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।

قُلْ كَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدًۢا بَيْنِى وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ بِعِبَادِهِۦ خَبِيرًۢا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

97. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उस के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूँगे और बहरे बना कर। और उन का स्थान नरक है, जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।

وَمَن يَهْدِ ٱللَّهُ فَهُوَ ٱلْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِهِۦ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَّأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَٰهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾

98. यही उन का प्रतिकार (बदला) है, इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, और कहाः क्या जब हम अस्थियाँ और चूर-चूर हो जायेंगे तो नई उत्पत्ति में पुनः जीवित किये जायेंगे?[3]

ذَٰلِكَ جَزَآؤُهُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا وَقَالُوٓا۟ أَءِذَا كُنَّا عِظَٰمًا وَرُفَٰتًا أَءِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

---

1 अर्थात् रसूल तथा पुस्तकें संमार्ग दर्शाने के लिये।

2 अर्थात् मेरे रसूल होने का साक्षी अल्लाह है।

3 अर्थात् ऐसा होना संभव नहीं है कि जब हमारी हड्डियाँ सड़ गल जायें तो हम

99. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे?[1] तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾

100. आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होते अपने पालनहार की दया के कोषों के, तब तो तुम ख़र्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है।

قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दीं[2], अतः बनी इस्राईल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फ़िरऔन ने उस से कहाः हे मूसा! मैं समझता हूँ कि तुझ पर जादू कर दिया गया है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ فَاسْأَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾

102. उस (मूसा) ने उत्तर दियाः तूझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच-विचार करने के लिये उतारा है, और हे फ़िरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾

फिर उठाये जायें।

1 अर्थात् जिस ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति की उस के लिये मनुष्य को दोबारा उठाना अधिक सरल है, किन्तु वह समझते नहीं हैं।

2 वह नौ निशानियाँ निम्नलिखित थींः हाथ की चमक, लाठी, आकाल, तूफ़ान, टिड्डी, जूयें, मेंढक, खून, और सागर का दो भाग हो जाना।

فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِزَّهُم مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾

103. अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन[1] को धरती से[2] उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।

وَقُلْنَا مِن بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾

104. और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राईल से कहाः तुम इस धरती में बस जाओ। और जब आख़िरत के वचन का समय आयेगा, तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।

وَبِالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿١٠٥﴾

105. और हम ने सत्य के साथ ही इस (कुर्आन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बना कर भेजा है।

وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا ﴿١٠٦﴾

106. और इस कुर्आन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनायें, और हम ने इसे क्रमशः[3] उतारा है।

قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾

107. आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया[4] गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाता है, तो वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾

108. और कहते हैंः पवित्र है हमारा

---

1 अर्थात् बनी इस्राईल को।

2 अर्थात् मिस्र से।

3 अर्थात् तेईस वर्ष की अवधि में।

4 अर्थात् वह विद्वान जिन को कुर्आन से पहले की पुस्तकों का ज्ञान है।

पालनहार! निश्चय हमारे पालनहार का वचन पूरा हो के रहा।

109. और वह मुँह के बल रोते हुये गिर जाते हैं। और वह उन की विनय को अधिक कर देता है।

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ﴿١٠٩﴾

110. हे नबी! आप कह दें कि (अल्लाह) कह कर पुकारो, अथवा (रहमान) कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो, उस के सभी नाम शुभ[1] हैं। और (हे नबी!) नमाज़ में स्वर न तो ऊँचा करो, और न उसे नीचा करो, और इन दोनों के बीच की राह[2] अपनाओ।

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾

111. तथा कहो कि सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस के कोई संतान नहीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है। और न अपमान से बचाने के लिये उस का कोई समर्थक है। और आप उस की महिमा का वर्णन करें।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

---

1 अरब में "अल्लाह" शब्द प्रचलित था, मगर "रहमान" प्रचलित न था। इस लिये, वह इस नाम पर आपत्ति करते थे। यह आयत इसी का उत्तर है।

2 हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (आरंभिक युग में) मक्का में छुप कर रहते थे। और जब अपने साथियों को ऊँचे स्वर में नमाज़ पढ़ाते थे तो मुश्रिक उसे सुन कर क़ुर्आन को तथा जिस ने क़ुर्आन उतारा है, और जो उसे लाया है, सब को गालियाँ देते थे। अतः अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं०: 4722)

सूरह कहफ़ - 18

सूरह कहफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 110 आयतें हैं।

- इस में कह्फ (गुफा) वालों की कथा का वर्णन है, जिस से दूसरे जीवन का विश्वास दिलाया गया है।
- इस में नसारा (ईसाईयों) को चेतावनी दी गयी है जिन्हों ने अल्लाह का पुत्र होने की बात घड़ ली। और शिर्क में उलझ गये, जिस से तौहीद पर आस्था का कोई अर्थ नहीं रह गया।
- इस में दो व्यक्तियों की दशा का वर्णन किया गया है जिन में एक संसारिक सुख में मग्न था और दूसरा परलोक पर विश्वास रखता था। फिर जो संसारिक सुख में मग्न था, उस का दुष्परिणाम दिखाया गया है और संसारिक जीवन का एक उदाहरण दे कर बताया गया है कि परलोक में सदाचार ही काम आयेगा।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) की यात्रा का वर्णन करते हुये अल्लाह के ज्ञान के कुछ भेद उजागर किये गये हैं, ताकि मनुष्य यह समझे की संसार में जो कुछ होता है उस में कुछ भेद अवश्य होता है जिसे वह नहीं जान सकता।
- इस में (ज़ुल क़रनैन) की कथा का वर्णन कर के यह दिखाया गया है उस ने कैसे अल्लाह से डरते हुये और परलोक की जवाब देही (उत्तर दायित्व) का ध्यान रखते हुये अपने अधिकार का प्रयोग किया।
- अन्त में शिर्क और परलोक के इन्कार पर चेतावनी है।

हदीस में है कि जो सूरह कह्फ़ के आरंभ की दस आयतें याद कर ले तो वह दज्जाल के उपद्रव से बचा लिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 809)। दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति रात में सूरह कह्फ़ पढ़ रहा था और उस का घोड़ा उस के पास ही बंधा हुआ था कि एक बादल छा गया और समीप आता गया और घोड़ा बिदकने लगा। जब सवेरा हुआ तो उस ने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतायी। आप ने कहाः यह शान्ति थी जो कुर्आन के कारण उतरी थी। (बुख़ारीः 5011, मुस्लिमः 795)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी। और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ؕ۝١

2. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और ईमान वालों को जो सदाचार करते हों, शुभ सूचना सुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।

قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ۝٢

3. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।

مّٰكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ۙ۝٣

4. और उन को सावधान करे जिन्हों ने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।

وَّیُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ۝٤

5. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है, और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝٥

6. तो संभवतः आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे संताप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुर्आन) पर ईमान न लायें।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤی اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِیْثِ اَسَفًا ۝٦

7. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है?

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَی الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝٧

8. और निश्चय हम कर देने[1] वाले हैं, जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।

وَإِنَّا لَجٰعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝٨

9. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफा तथा शिला लेख वाले[2], हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?[3]

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ ءَايٰتِنَا عَجَبًا ۝٩

10. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली[4], और प्रार्थना कीः हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय के सुधार का।

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَآ ءَاتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝١٠

---

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि (रक़ीम) शब्द जिस का अर्थः शिला लेख किया गया है, एक बस्ती का नाम है।

3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति हमारी शक्ति का इस से भी बड़ा लक्षण है।

4 अर्थात् नवयुवकों ने अपने ईमान की रक्षा के लिये गुफा में शरण ली। जिस गुफा के ऊपर आगे चलकर उन के नामों का स्मारक शिला लेख लगा दिया गया था।
उल्लेखों से यह विद्वित होता है कि नवयुवक ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में से थे। और रोम के मुश्रिक राजा की प्रजा थे। जो एकेश्वर वादियों का शत्रु था। और उन्हें मुर्ति पूजा के लिये बाध्य करता था। इस लिये वे अपने ईमान की रक्षा के लिये जार्डन की गुफा में चले गये जो नये शोध के अनुसार जार्डन की राजधानी से 8 की० मी० दूर (रजीब) में अवशेषज्ञों को मिली है। जिस गुफा के ऊपर सात स्तंभों की मस्जिद के खंडर, और गुफा के भीतर आठ समाधियाँ तथा उत्तरी दीवार पर पुरानी युनानी लिपी में एक शिला लेख मिला है और उस पर किसी जीव का चित्र भी है। जो कुत्ते का चित्र बताया जाता है और यह (रजीब) ही (रक़ीम) का बदला हुआ रूप है। (देखियेः भाष्य दावतुल कुर्आन-2।983)

فَضَرَبْنَا عَلَىٰٓ ءَاذَانِهِمْ فِى ٱلْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾

11. तो हमने उन्हें गुफा में सुला दिया कई वर्षों तक।

ثُمَّ بَعَثْنَٰهُمْ لِنَعْلَمَ أَىُّ ٱلْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوٓا۟ أَمَدًا ﴿١٢﴾

12. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?

نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِٱلْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ ءَامَنُوا۟ بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾

13. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे हैं। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا۟ فَقَالُوا۟ رَبُّنَا رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَا۟ مِن دُونِهِۦٓ إِلَٰهًا ۖ لَّقَدْ قُلْنَآ إِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾

14. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहाः हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य से) दूर की बात होगी।

هَٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً ۖ لَّوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَٰنٍۭ بَيِّنٍ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

15. यह हमारी जाति है, जिस ने अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या बात बनाये?

وَإِذِ ٱعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ فَأْوُۥٓا۟ إِلَى ٱلْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن رَّحْمَتِهِۦ وَيُهَيِّئْ لَكُم مِّنْ أَمْرِكُم مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

16. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अल्लाह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से, तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के

साधनों का प्रबंध करेगा।

17. और तुम सूर्य को देखोगे, कि जब निकलता है, तो उन की गुफा से दायें झुक जाता है, और जब डूबता है, तो उन से बायें कतरा जाता है। और वह उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है, और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही सुपथ पाने वाला है। और जिसे कुपथ कर दे तो तुम कदापि उस के लिये कोई सहायक मार्ग दर्शक नहीं पाओगे।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزَاوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ
يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ
وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

18. और तुम[1] उन्हें समझोगे कि जाग रहे हैं जब कि वह सोये हुये हैं और हम उन्हें दायें तथा बायें पार्शव पर फिराते रहते हैं, और उन का कुत्ता गुफा के द्वार पर अपनी दोनों बाँहें फैलाये पड़ा है। यदि तुम झाँक कर देख लेते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से भय पूर्ण हो जाते।

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ
الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ
ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ
فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

19. और इसी प्रकार हम ने उन्हें जगा दिया ताकि वे आपस में प्रश्न करें। तो एक ने उन में से कहाः तुम कितने (समय) रहे हो? सब ने कहाः हम एक दिन रहे हैं अथवा एक दिन के कुछ (समय)। (फिर) सब ने कहाः अल्लाह अधिक जानता है कि तुम कितने (समय) रहे हो, तुम अपने में से किसी को अपना यह सिक्का दे कर नगर में भेजो, फिर देखे कि किस के पास अधिक स्वच्छ (पवित्र)

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ
مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ
يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا
أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ
فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ
أَحَدًا ﴿١٩﴾

1 इस में किसी को भी संबोधित माना जा सकता है, जो उन्हें उस दशा में देख सके।

भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरते। ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾

20. क्यों कि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

21. इसी प्रकार हम ने उन से अवगत करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है, और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह[1] नहीं। जब वे[2] आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहाः उन पर कोई निर्माण करा दो, अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्हों ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ

22. कुछ[3] कहेंगे कि वह तीन हैं, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच हैं, और छठा उन का कुत्ता है। यह अन्धेरे में तीर चलाते

1 जिस के आने पर सब को उन के कर्मों का फल दिया जायेगा।

2 अर्थात् जब पुराने सिक्के और भाषा के कारण उन का भेद खुल गया और वहाँ के लोगों को उन की कथा का ज्ञान हो गया तो फिर वे अपनी गुफा ही में मर गये। और उन के विषय में यह विवाद उत्पन्न हो गया।
यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस्लाम में समाधियों पर मस्जिद बनाना, और उस में नमाज़ पढ़ना तथा उस पर कोई निर्माण करना अवैध है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा। (सहीह बुख़ारी, 435, मुस्लिम, 531,32)

3 इन से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के अहले किताब हैं।

بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

हैं। और कहेंगे कि सात हैं, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पालनहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं जानता।[1] अतः आप उन के संबन्ध में कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के, और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें।[2]

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَاىْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

23. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।

إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللهُ ۖ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسٰٓى أَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

24. परन्तु यह कि अल्लाह[3] चाहे, तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जायें। और कहें: संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

25. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक[4] और।

قُلِ اللهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهٖ وَأَسْمِعْ ۖ مَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۖ وَّلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهٖٓ أَحَدًا ﴿٢٦﴾

26. आप कह दें कि अल्लाह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने

1 भावार्थ यह है कि उन की संख्या का सहीह ज्ञान तो अल्लाह ही को है किन्तु वास्तव में ध्यान देने की बात यह है कि इस से हमें क्या शिक्षा मिल रही है।

2 क्योंकि आप को उन के बारे में अल्लाह के बताने के कारण उन लोगों से अधिक ज्ञान है। और उन के पास कोई ज्ञान नहीं। इस लिये किसी से पूछने की आवश्यक्ता भी नहीं।

3 अर्थात् भविष्य में कुछ करने का निश्चय करें, तो "इन् शा अल्लाह" कहें। अर्थातः यदि अल्लाह ने चाहा तो।

4 अर्थात् सूर्य के वर्ष से तीन सौ वर्ष, और चाँद के वर्ष से नौ वर्ष अधिक गुफा में सोये रहे।

वाला और सुनने वाला! नहीं है उन का उस के सिवा कोई सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।

وَاتْلُ مَآ أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

27. और आप उसे सुना दें, जो आप की ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है, और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَن ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

28. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रातः- संध्या बंदगी करते हैं। वे उस की प्रसन्नता चाहते हैं और आप की आँखें संसारिक जीवन की शोभा के लिये[1] उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैज्ञा करना) है।

وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَاءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي

29. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ़्र करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की

---

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि यह आयत उस समय उतरी जब मुशरिक कुरैश के कुछ प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की, कि आप अपने निर्धन अनुयायियों के साथ न रहें। तो हम आप के पास आ कर आप की बातें सुनेंगे। इस लिये अल्लाह ने आप को आदेश दिया कि इन का आदर किया जाये, ऐसा नहीं होना चाहिये कि इन की उपेक्षा कर के उन धनवानों की बात मानी जाये जो अल्लाह की याद से निश्चेत हैं।

الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

प्राचीर[1] ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पेय है! और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

30. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी हैं।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

31. यही हैं जिन के लिये स्थायी स्वर्ग हैं, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे।[2] तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे, उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या ही अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है!

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

32. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग़ दिये अँगूरों के, और घेर दिया दोनों को खजूरों से, और दोनों के बीच खेती बना दी।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

33. दोनों बाग़ों ने अपने पूरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।

---

1 क़ुर्आन में «सुरादिक़» शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ प्राचीर, अर्थात् वह दीवार है जो नरक के चारों ओर बनाई गई है।

2 यह स्वर्ग वासियों का स्वर्ण कंगन है। किन्तु संसार में इस्लाम की शिक्षानुसार पुरुषों के लिये सोने का कंगन पहनना हराम है।

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

34. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहाः और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक[1] हूँ।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿٣٥﴾

35. और उस ने अपने बाग़ में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहाः मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।

وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

36. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी। और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुनः ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

37. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा थाः क्या तू ने उस के साथ कुफ़्र कर दिया, जिस ने तुझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

38. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार है, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।

وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾

39. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग़ में प्रवेश किया, तो कहा कि "जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।" यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ

1 अर्थात यदि किसी का धन संतान तथा बाग़ इत्यादि अच्छा लगे तो ((माशा अल्लाह ला कूव्वता इल्ला बिल्ला)) कहना चाहिये। ऐसा कहने से नज़र नहीं लगती। यह इस्लाम धर्म की शिक्षा है, जिस से आपस में द्वेष नहीं होता।

धन तथा संतान में,[1]

40. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग़ से अच्छा, और इस बाग़ पर आकाश से कोई आपदा भेज दे, और वह चिकनी भूमि बन जाये।

فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝٤٠

41. अथवा उस का जल भीतर उतर जाये, फिर तू उसे पा न सके।

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝٤١

42. (अन्ततः) उस के फलों को घेर[2] लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में ख़र्च किया था। और वह अपने छप्परों सहित गिरा हुआ था, और कहने लगाः क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का साझी न बनाता।

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝٤٢

43. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जत्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝٤٣

44. यहीं सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है, वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۗ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝٤٤

45. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर हो गई जिसे वायु

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝٤٥

---

1 अर्थात् मेरे सेवक और सहायक भी तुझ से अधिक हैं।

2 अर्थात् आपदा ने घेर लिया।

उड़ाये फिरती[1] है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।

ٱلْمَالُ وَٱلْبَنُونَ زِينَةُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَٱلْبَٰقِيَٰتُ ٱلصَّٰلِحَٰتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾

46. धन और पुत्र संसारिक जीवन की शोभा हैं। और शेष रह जाने वाले सत्कर्म ही अच्छे हैं आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में, तथा अच्छे हैं आशा रखने के लिये।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ ٱلْجِبَالَ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾

47. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे, तथा तुम धरती को खुला चटेल[2] देखोगे। और हम उन्हें एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।

وَعُرِضُوا۟ عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍۭ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

48. और सभी आप के पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी, बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।

وَوُضِعَ ٱلْكِتَٰبُ فَتَرَى ٱلْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَٰوَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا ٱلْكِتَٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصَىٰهَا ۚ وَوَجَدُوا۟ مَا عَمِلُوا۟ حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿٤٩﴾

49. और कर्म लेख[3] (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्हों

1 अर्थात् संसारिक जीवन और उस का सुख-सुविधा सब साम्यिक है।

2 अर्थात् न उस में कोई चिन्ह होगा तथा न छुपने का स्थान।

3 अर्थात् प्रत्येक का कर्म पत्र जो उस ने संसारिक जीवन में किया है।

ने किये हैं उन्हें वह सामने पायेंगे, और आप का पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِۦٓ ۗ أَفَتَتَّخِذُونَهُۥ وَذُرِّيَّتَهُۥٓ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِى وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّۢ ۚ بِئْسَ لِلظَّٰلِمِينَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

50. तथा (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहाः आदम को सजदा करो, तो सब ने सजदा किया इब्लीस के सिवा। वह जिन्नों में से था, अतः उस ने उल्लंघन किया अपने पालनहार की आज्ञा का, तो क्या तुम उस को और उस कि संतति को सहायक मित्र बनाते हो मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे शत्रु हैं? अत्याचारियों के लिये बुरा बदला है।

مَّآ أَشْهَدتُّهُمْ خَلْقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنفُسِهِمْ وَمَا كُنتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

51. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया आकाशो तथा धरती की उत्पत्ति के समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति के समय, और न मैं कुपथों को सहायक[1] बनाने वाला हूँ।

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَآءِىَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

52. जिस दिन वह (अल्लाह) कहेगा कि मेरे साझियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे। वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन का कोई उत्तर नहीं देंगे, और हम बना देंगे उन के बीच एक विनाशकारी खाई।

وَرَءَا الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوٓا أَنَّهُم مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

53. और अपराधी नरक को देखेंगे तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि वे उस में गिरने वाले हैं। और उस से फिरने का कोई स्थान नहीं पायेंगे।

1 भावार्थ यह है कि विश्व की उत्पत्ति के समय इन का अस्तित्व न था। यह तो बाद में उत्पन्न किये गये हैं। उन की उत्पत्ति में भी उन से कोई सहायता नहीं ली गई, तो फिर यह अल्लाह के बराबर कैसे हो गये?

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

54. और हम ने इस क़ुर्आन में प्रत्येक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगड़ालू है।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

55. और नहीं रोका लोगों को कि ईमान लायें जब उन के पास मार्ग दर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली जातियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

56. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बना कर। और जो काफ़िर हैं असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा[1] दिखायें। और उन्हों ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई, परिहास।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾

57. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये हैं कि उसे[2] समझ न पायें और उन के कानों में बोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी) कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

---

1 आर्थात् सत्य को दबा दें।

2 अर्थात् क़ुर्आन को।

58. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तूतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता। बल्कि उन के लिये एक निश्चित समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

59. तथा यह बस्तियाँ हैं। हम ने उन (के निवासियों) का विनाश कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहाः मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षों चलता[1] रहूँ।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

61. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

62. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن

1 मूसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का कारण यह बना था कि वह एक बार भाषण दे रहे थे। तो किसी ने पूछा कि इस संसार में सर्वाधिक ज्ञानी कौन है? मूसा ने कहाः मैं हूँ। यह बात अल्लाह को अप्रिय लगी। और मूसा से फ़रमाया कि दो सागरों के संगम के पास मेरा एक भक्त है जो तुम से अधिक ज्ञानी है। मूसा ने कहाः मैं उस से कैसे मिल सकता हूँ? अल्लाह ने फ़रमायाः एक मछली रख लो, और जिस स्थान पर वह खो जाये, तो वहीं वह मिलेगा। और वह अपने सेवक यूशअ बिन नून को लेकर निकल पड़े। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुख़ारीः 4725)।

سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

कि हमारा दिन का भोजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۡ وَمَآ اَنْسٰىنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

63. उस ने कहाः क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ, और उस ने अपनी राह सागर में अनोखे तरीक़े से बना ली।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

64. मूसा ने कहाः वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पद्चिन्हों को देखते हुये वापिस हुये।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

65. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त[1] को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

66. मूसा ने उस से कहाः क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

67. उस ने कहाः तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?

قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69. उस ने कहाः यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

1 इस से अभिप्रेतः आदरणीय ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हैं।

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

70. उस ने कहाः यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज़ के संबन्ध में प्रश्न न करना जब तक मैं स्वयं तुम से उस की चर्चा न करूँ।

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ﴿٧١﴾

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (ख़िज़्र) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहाः क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾

72. उस ने कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ सहन नहीं कर सकोगे?

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ﴿٧٣﴾

73. कहाः मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़ें, और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ﴿٧٤﴾

74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (खिज़्र) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहाः क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले[1] नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

75. उस ने कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?

قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي

76. मूसा ने कहाः यदि मैं आप से प्रश्न

---

1 अर्थात् उस ने किसी प्राणी को नहीं मारा कि उस के बदले में उसे मारा जाये।

करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखें। निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच[1] चुके।

قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ﴿٧٦﴾

77. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्हों ने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहती थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहाः यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾

78. उस ने कहाः यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविक्ता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सके।

قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾

79. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित[2] कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी), नाव का अपहरण कर लेता था।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾

80. और रहा बालक तो उस के माता-पिता ईमान वाले थे, अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुख न पहुँचाये।

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾

81. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों

فَأَرَدْنَا أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً

---

1 अर्थात् अब कोई प्रश्न करूँ तो आप के पास मुझे अपने साथ न रखने का उचित कारण होगा।

2 अर्थात् उस में छेद कर दूँ।

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ۝٨١

को उन का पालनहार, इस के बदले उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ۚ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٨٢

82. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी। और उस के भीतर उन का कोष था। और उन के माता-पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचें और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया[1] यह उस की वास्तविक्ता है जिसे तुम सहन नहीं कर सके।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۗ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝٨٣

83. और (हे नबी!) वे आप से ज़ुलक़र्नैन[2] के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देता हूँ।

---

1 यह सभी कार्य विशेष रूप से निर्दोष बालक का बध धार्मिक नियम से उचित न था। इस लिये मूसा (अलैहिस्सलाम) इस को सहन न कर सके। किन्तु ((ख़िज़्र)) को विशेष ज्ञान दिया गया था जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास नहीं था। इस प्रकार अल्लाह ने जता दिया कि हर ज्ञानी के ऊपर भी कोई ज्ञानी है।

2 यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है जिसे यहूदियों ने मक्का के मिश्रणवादियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया था।
ज़ुलक़र्नैन के आगामी आयतों में जो गुण-कर्म बताये गये हैं उन से विद्रित होता है कि वह एक सदाचारी विजेता राजा था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के शोध के अनुसार यह वही राजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रु भाषा में खोरिस तथा अरब में खुसरु के नाम से पुकारा जाता है। जिस का शासन काल 559 ई॰ पूर्व है। वह लिखते हैं कि 1838 ई॰ में साईरस की एक पत्थर की मुर्ति अस्तख़र के खण्डरों में मिली है। जिस में बाज़ पक्षी के भाँति उस के दो पँख तथा उस के सिर पर भेड़ के समान दो सींग हैं। इस में मीडिया और फारस के दो राज्यों की उपमा दो सींगों से दी गयी है। (देखियेः तर्जमानुल कुर्आन, भाग-3 पृष्ठ-436-438)

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُۥ فِى ٱلْأَرْضِ وَءَاتَيْنَٰهُ مِن كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

84. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

85. तो वह एक राह के पीछे लगा।

حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ ٱلشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِى عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَٰذَا ٱلْقَرْنَيْنِ إِمَّآ أَن تُعَذِّبَ وَإِمَّآ أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

86. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक[1] पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहाः हे ज़ुलक़र्नैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।

قَالَ أَمَّا مَن ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُۥ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِۦ فَيُعَذِّبُهُۥ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾

87. उस ने कहाः जो अत्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा[2] जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।

وَأَمَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُۥ جَزَآءً ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُۥ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

88. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उसी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

89. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर लगा।

حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ ٱلشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

90. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।

كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

91. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (ज़ुलक़र्नैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।

---

1 अर्थात् पश्चिम की अन्तिम सीमा तक।

2 अर्थात् निधन के पश्चात् प्रलय के दिन।

92. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

93. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किसी बात को समझे।[1]

حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ ٱلسَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

94. उन्हों ने कहाः हे ज़ुल क़र्नैन! वास्तव में याजूज तथा माजूज उपद्रवी हैं इस देश में। तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धन। इसलिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें?

قَالُوا۟ يَٰذَا ٱلْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰٓ أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

95. उस ने कहाः जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।

قَالَ مَا مَكَّنِّى فِيهِ رَبِّى خَيْرٌ فَأَعِينُونِى بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

96. मुझे लोहे की चादरें ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी, तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहाः मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा उँडेल दूँ।

ءَاتُونِى زُبَرَ ٱلْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ ٱلصَّدَفَيْنِ قَالَ ٱنفُخُوا۟ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَعَلَهُۥ نَارًا قَالَ ءَاتُونِىٓ أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

97. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकते थे।

فَمَا ٱسْطَٰعُوٓا۟ أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا ٱسْتَطَٰعُوا۟ لَهُۥ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

98. उस (ज़ुलक़र्नैन) ने कहाः यह मेरे पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन[2] आयेगा तो

قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّى ۖ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّى جَعَلَهُۥ دَكَّآءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّى حَقًّا ﴿٩٨﴾

1 अर्थात् अपनी भाषा के सिवा कोई भाषा नहीं समझती थी।

2 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का समय है। जैसा कि सहीह बुख़ारी हदीस

वह इसे खण्ड-खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

99. और हम छोड़ देंगे उस[1] दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

100. और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरों के समक्ष।

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

101. जिन की आँखे मेरी याद से पर्दे में थीं, और कोई बात सुन नहीं सकते थे।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

102. तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफ़िर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दासों को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफ़िरों के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾

103. आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बता दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त हैं?

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

104. वह हैं, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझते रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ

105. यही वह लोग हैं, जिन्हों ने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों

नं॰ 3346 आदि मे आता है कि क़्यामत आने के समीप याजूज-माजूज वह दीवार तोड़ कर निकलेंगे, और धरती में उपद्रव मचा देंगे।

1 इस आयत में उस प्रलय के आने के समय की दशा का चित्रण किया गया है जिसे ज़ुलक़र्नैन ने सत्य वचन कहा है।

فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾

तथा उस से मिलने को, अतः हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।[1]

ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

106. उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्हों ने कुफ़्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

107. निश्चय जो ईमान लाये और सदाचार किये, उन्हीं के आतिथ्य के लिये फ़िरदौस[2] के बाग़ होंगे।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

108. उस में वे सदावासी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

109. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जायें, इस से पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि उतनी ही स्याही और ले आयें।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

110. आप कह दें: मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिये कि सदाचार करे। और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (वंदना) में किसी को।

---

1 अर्थात् उन का हमारे यहाँ कोई भार न होगा। हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः क़्यामत के दिन एक भारी भरकम व्यक्ति आयेगा। मगर अल्लाह के सदन में उस का भार मच्छर के पँख के बराबर भी नहीं होगा। फिर आप ने इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰ 4729)

2 फ़िर्दौसः स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान का नाम है। (सहीह बुख़ारीः 7423)

सूरह मर्यम - 19

सूरह मर्यम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 98 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म की कथा का वर्णन किया गया है। इसी से इस का नाम मर्यम है। इस में सर्वप्रथम यह्या (अलैहिस्सलाम) के जन्म की चर्चा है, उस के पश्चात् ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म का वर्णन है। और ईसाईयों को उन के विभेद पर सावधान किया गया है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के तौहीद के प्रचार और उन के हिज्रत करने और मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा अन्य नबियों की चर्चा की गई है, और उन की शिक्षाओं के बिरोधियों के विनाश से सावधान किया गया है। और उन को मानने पर सफलता की शुभसूचना दी गई है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने और सुदृढ़ रहने का निर्देश दिया गया है। परलोक के इन्कारियों के संदेहों को दूर करते हुये ईमान और विश्वास के लिये कुछ स्थितियों का वर्णन किया गया है।
- जब मक्का से कुछ मुसलमान नबूवत के पाँचवें वर्ष हिज्रत कर के हब्शा पहुँचे और मक्का के काफ़िरों ने कुछ व्यक्तियों को वापिस लाने के लिये भेजा जिन्हों ने उन्हें धर्म बदल लेने का दोषी बताया तो वहाँ के ईसाई राजा नजाशी को जअफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसी सूरह की आरंभिक आयतें सुनाईं जिसे सुन कर वह रोने लगा, और कहाः यह और जो ईसा (अलैहिस्सलाम) लाये थे एक ही नूर (प्रकाश) की दो किरणें हैं। और भूमी से एक तिनका ले कर कहाः ईसा (अलैहिस्सलाम) इस से कुछ भी अधिक नहीं थे। फिर काफ़िरों के प्रतिनिधियों को निष्फल वापिस कर दिया। (सीरत इब्ने हिशाम-1। 334, 338)

हदीस में है कि पुरुषों में बहुत से पूर्ण हुये और स्त्रियों में मर्यम बिन्त इमरान और फ़िरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुयीं। (सहीह बुख़ारीः 3411, मुस्लिम, 2431)

दूसरी हदीस में है कि प्रत्येक शिशु जब जन्म लेता है तो शैतान उस के बाज़ू में अपनी दो उंगलियों से कचोके लगाता है, (तो वह चीख़ कर

रोता है), ईसा (अलैहिस्सलाम) के सिवा। शैतान जब उन्हें कचोके लगाने लगा तो पर्दे ही में कचोका लगा दिया। (सहीह बुख़ारी, 3286, मुस्लिम, 2431)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. काफ़, हा, या, ऐन, साद।

كٓهيعٓصٓ ①

2. यह आप के पालनहार की दया की चर्चा है, अपने भक्त ज़करिय्या पर।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُۥ زَكَرِيَّآ ②

3. जब कि उस ने अपने पालनहार से विनय की, गुप्त विनय।

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥ نِدَآءً خَفِيًّا ③

4. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयीं और सिर बुढ़ापे से सफ़ेद[1] हो गया है, तथा मेरे पालनहार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुझ से प्रार्थना कर के निष्फल हुआ हूँ।

قَالَ رَبِّ إِنِّى وَهَنَ ٱلْعَظْمُ مِنِّى وَٱشْتَعَلَ ٱلرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ④

5. और मुझे अपने भाई बंदों से भय[2] है, अपने (मरण) के पश्चात्, तथा मेरी पत्नी बाँझ है, अतः मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे।

وَإِنِّى خِفْتُ ٱلْمَوَٰلِىَ مِن وَرَآءِى وَكَانَتِ ٱمْرَأَتِى عَاقِرًا فَهَبْ لِى مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ⑤

6. वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याकूब के वंश का उत्तराधिकारी[3] हो और हे पालनहार! उसे प्रिय बना दे।

يَرِثُنِى وَيَرِثُ مِنْ ءَالِ يَعْقُوبَ ۖ وَٱجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥

1 अर्थात् पूरे बाल सफ़ेद हो गये।

2 अर्थात् दुराचार और बुरे व्यवहार का।

3 अर्थात् नबी हो। आदरणीय ज़करिय्या (अलैहिस्सलाम) याकूब (अलैहिस्सलाम) के वंश में थे।

7. हे ज़करिय्या! हम तुझे एक बालक की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिस का नाम यह्या होगा। हम ने नहीं बनाया है इस से पहले उस का कोई सम्नाम।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧

8. उस ने (आश्चर्य से) कहाः मेरे पालनहार! कहाँ से मेरे यहाँ कोई बालक होगा, जब कि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को जा पहुँचा हूँ।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨

9. उस ने कहाः ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार ने कहा है, यह मेरे लिये सरल है, इस से पहले मैं ने तेरी उत्पत्ति की है, जब कि तू कुछ नहीं था।

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝٩

10. उस (ज़करिय्या) ने कहाः मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण (चिन्ह) बना दे। उस ने कहाः तेरा लक्षण यह है कि तू बोल नहीं सकेगा, लोगों से निरंतर तीन रातें।[1]

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠

11. फिर वह मेहराब (चाप) से निकल कर अपनी जाति के पास आया। और उन्हें संकेत द्वारा आदेश दिया कि उस (अल्लाह) की पवित्रता का वर्णन करो, प्रातः तथा संध्या।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١١

12. हे यह्या![2] इस पुस्तक (तौरात) को थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही में ज्ञान (प्रबोध) प्रदान किया।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢

---

1 रात से अभिप्राय दिन तथा रात दोनों ही हैं। अर्थात जब बिना किसी रोग के लोगों से बात न कर सकोगे तो यह शुभ सूचना का लक्षण होगा।

2 अर्थात् जब यह्या का जन्म हो गया और कुछ बड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे तौरात का ज्ञान दिया।

وَّحَنَانًا مِّن لَّدُنَّا وَزَكَوٰةً ۖ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

13. तथा अपनी ओर से प्रेम भाव तथा पवित्रता, और वह बड़ा संयमी (सदाचारी) था।

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾

14. तथा अपनी माता-पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा अवज्ञाकारी नहीं था।

وَسَلَٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

15. उस पर शान्ति है, जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन मरेगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जायेगा।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ مَرْيَمَ إِذِ انتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾

16. तथा आप इस पुस्तक (कुर्आन) में मर्यम[1] की चर्चा करें, जब वह अपने परिजनों से अलग हो कर एक पूर्वी स्थान की ओर आयीं।

فَاتَّخَذَتْ مِن دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

17. फिर उन की ओर से पर्दा कर लिया, तो हम ने उस की ओर अपनी रूह (आत्मा)[2] को भेजा, तो उस ने उस के लिये एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَٰنِ مِنكَ إِن كُنتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

18. उस ने कहाः मैं शरण माँगती हूँ अत्यंत कृपाशील की तुझ से, यदि तुझे अल्लाह का कुछ भी भय हो।

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾

19. उस ने कहाः मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।

قَالَتْ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَٰمٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

20. वह बोलीः यह कैसे हो सकता है कि मेरे बालक हो, जब कि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श भी नहीं किया है, और

---

1 मर्यम अदरणीय इम्रान की पुत्री दावूद अलैहिस्सलाम के वंश से थी। उन के जन्म के विषय में सूरह आले इमरान देखिये।

2 इस से अभिप्रेत फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं।

न मैं व्यभिचारिणी हूँ?

21. फ़रिश्ते ने कहाः ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार का वचन है कि वह मेरे लिये अति सरल है, और ताकि हम उसे लोगों के लिये एक लक्षण (निशानी)[1] बनायें तथा अपनी विशेष दया से, और यह एक निश्चित बात है।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

22. फिर वह गर्भवती हो गई, तथा उस (गर्भ को ले कर) दूर स्थान पर चली गई।

فَحَمَلَتْهُ فَانتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

23. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने तक लायी, कहने लगीः क्या ही अच्छा होता, मैं इस से पहले ही मर जाती, और भूली बिसरी हो जाती।

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿٢٣﴾

24. तो उस के नीचे से पुकारा[2] कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे[3] एक स्रोत बहा दिया है।

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

25. और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को तुझ पर गिरायेगा वह ताजी पकी खजूरें।[4]

وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

26. अतः खा और पी तथा आँख ठण्डी कर। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह देः वास्तव में, मैं ने मनौती मान रखी है अत्यंत कृपाशील के

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۖ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنسِيًّا ﴿٢٦﴾

---

1 अर्थात् अपने सामर्थ्य की निशानी कि हम नर-नारि के योग के बिना भी स्त्री के गर्भ से शिशु की उत्पत्ति कर सकते हैं।

2 अर्थात् जिब्रील फ़रिश्ते ने घाटी के नीचे से आवाज़ दी।

3 अर्थात् मर्यम के चरणों के नीचे।

4 अल्लाह ने अस्वभाविक रूप से आदरणीय मर्यम के लिये, खाने-पीने की व्यवस्था कर दी।

लिये व्रत की। अतः मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।

27. फिर उस (शिशु ईसा) को ले कर अपनी जाति में आयी, सब ने कहाः हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा किया।

فَأَتَتْ بِهِۦ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُۥ ۖ قَالُوا۟ يَٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

28. हे हारून की बहन![1] तेरा पिता कोई बुरा व्यक्ति न था। और न तेरी माँ व्यभिचारिणी थी।

يَٰٓأُخْتَ هَٰرُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ ٱمْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

29. मर्यम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहाः हम कैसे उस से बात करें जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है?

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا۟ كَيْفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِى ٱلْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

30. वह (शिशु) बोल पड़ाः मैं अल्लाह का भक्त हूँ। उस ने मुझे पुस्तक (इंजील) प्रदान की है, तथा मुझे नबी बनाया है।[2]

قَالَ إِنِّى عَبْدُ ٱللَّهِ ءَاتَىٰنِىَ ٱلْكِتَٰبَ وَجَعَلَنِى نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

31. तथा मुझे शुभ बनाया है जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है, नमाज़ तथा ज़कात का जब तक जीवित रहूँ।

وَجَعَلَنِى مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنتُ وَأَوْصَٰنِى بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

32. तथा अपनी माँ का सेवक, और उस ने मुझे क्रूर तथा अभागा[3] नहीं बनाया है।

وَبَرًّۢا بِوَٰلِدَتِى وَلَمْ يَجْعَلْنِى جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾

33. तथा शान्ति है मुझ पर, जिस दिन मैं ने जन्म लिया तथा जिस दिन मरूँगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊँगा।

وَٱلسَّلَٰمُ عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدتُّ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾

---

1 अर्थात् हारून अलैहिस्सलाम के वंशज की पुत्री। अरबों के यहाँ किसी क़बीले का भाई होने का अर्थ उस क़बीले और वंशज का व्यक्ति लिया जाता था।

2 अर्थात् मुझे पुस्तक प्रदान करने और नबी बनाने का निर्णय कर दिया है।

3 इस में यह संकेत है कि माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करना क्रूरता तथा दुर्भाग्य है।

ذٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٣٤﴾

34. यह है ईसा मर्यम का सुत, यही सत्य बात है, जिस के विषय में लोग संदेह कर रहे हैं।

مَا كَانَ لِلّٰهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ ۖ سُبْحَانَهُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٣٥﴾

35. अल्लाह का यह काम नहीं कि अपने लिये कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है, तो उस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे कि "हो जा" और वह हो जाता है।

وَإِنَّ اللّٰهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٣٦﴾

36. और (ईसा ने कहा): वास्तव में अल्लाह मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (वंदना) करो, यही सुपथ (सीधी राह) है।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾

37. फिर सम्प्रदायो[1] ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उन के लिये जो काफ़िर हो गये एक बड़े दिन के आ जाने के कारण।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا ۖ لٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾

38. वे भली भाँति सुनेंगे और देखेंगे जिस दिन हमारे पास आयेंगे, परन्तु अत्याचारी आज खुले कुपथ में हैं।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي

39. और (हे नबी!) आप उन्हें संताप के दिन से सावधान कर दें, जब निर्णय[2]

---

1 अर्थात् अहले किताब के सम्प्रदायों ने ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविक्ता जानने के पश्चात् उन के विषय में विभेद किया। यहूदियों ने उसे जादूगर तथा वर्णसंकर कहा। और ईसाइयों के एक सम्प्रदाय ने कहा कि वह स्वयं अल्लाह है। दूसरे ने कहाः वह अल्लाह का पुत्र है। और उन के तीसरे कैथुलिक सम्प्रदाय ने कहा कि वह तीन में का तीसरा है। बड़े दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

2 अर्थात् प्रत्येक के कर्मानुसार उस के लिये नरक अथवा स्वर्ग का निर्णय कर दिया जायेगा। फिर मौत को एक भेड़ के रूप में बध कर दिया जायेगा। तथा घोषणा कर दी जायेगी कि हे स्वर्गीयो! तुम्हें सदा रहना है, और अब मौत नहीं है। और हे नारकियो! तुम्हें सदा नरक में रहना है, अब मौत नहीं है। (सहीह

غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٩

कर दिया जायेगा जब कि वे अचेत हैं तथा ईमान नहीं ला रहे हैं।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝٤٠

40. निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे धरती के तथा जो उस के ऊपर है और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत किये जायेंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِبْرٰهِيْمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝٤١

41. तथा आप चर्चा कर दें इस पुस्तक (कुर्आन) में इब्राहीम की। वास्तव में वह एक सत्यावादी नबी था।

إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ يٰٓأَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ۝٤٢

42. जब उस ने कहा अपने पिता सेः हे मेरे प्रिय पिता! क्यों आप उसे पूजते हैं, जो न सुनता है और न देखता है, और न आप के कुछ काम आता?

يٰٓأَبَتِ إِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝٤٣

43. हे मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आ गया है जो आप के पास नहीं आया, अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आप को सीधी राह दिखा दूँगा।

يٰٓأَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۖ إِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ۝٤٤

44. हे मेरे प्रिय पिता! शैतान की पूजा न करें, वास्तव में शैतान अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) का अवैज्ञाकारी है।

يٰٓأَبَتِ إِنِّيْٓ أَخَافُ أَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ۝٤٥

45. हे मेरे पिता! वास्तव में मुझे भय हो रहा है कि आप को अत्यंत कृपाशील की कोई यातना आ लगे तो आप शैतान के मित्र हो जायेंगे।[1]

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓإِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ۝٤٦

46. उस ने कहाः क्या तू हमारे पूज्यों से विमुख हो रहा है? हे इब्राहीम! यदि तू (इस से) नहीं रुका तो मैं तुझे

बुख़ारी, हदीस, नं॰-4730)

1 अर्थात् अब मैं आप को संबोधित नहीं करूँगा।

पत्थरों से मार दूँगा। और तू मुझ से विलग हो जा सदा के लिये।

47. (इब्राहीम) ने कहाः सलाम[1] है आप को। मैं क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा आप के लिये अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बड़ा करुणामय है।

قَالَ سَلَٰمٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيٓ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ بِى حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

48. तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा। और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَأَدْعُوا۟ رَبِّى عَسَىٰٓ أَلَّآ أَكُونَ بِدُعَآءِ رَبِّى شَقِيًّا ﴿٤٨﴾

49. फिर जब उन्हें छोड़ दिया तथा जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, तो हम ने उसे प्रदान कर दिया इस्हाक़ तथा याकूब, और हम ने प्रत्येक को नबी बना दिया।

فَلَمَّا ٱعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

50. तथा हम ने प्रदान की उन सब को अपनी दया में से, और हम ने बना दी उन की शुभ चर्चा सर्वोच्च।

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

51. और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें। वास्तव में वह चुना हुआ तथा रसूल एवं नबी था।

وَٱذْكُرْ فِى ٱلْكِتَٰبِ مُوسَىٰٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

52. और हम ने उसे पुकारा तूर पर्वत के दायें किनारे से, तथा उसे समीप कर लिया रहस्य की बात करते हुये।

وَنَٰدَيْنَٰهُ مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

53. और हम ने प्रदान किया उसे अपनी दया में से, उस के भाई हारून को

وَوَهَبْنَا لَهُۥ مِن رَّحْمَتِنَآ أَخَاهُ هَٰرُونَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

1 इस्हाक़, इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पुत्र तथा याकूब के पिता थे इन्हीं के वंश को बनी इस्राईल कहते हैं।

नबी बना कर।

54. तथा इस पुस्तक में इस्माईल[1] की चर्चा करो, वास्तव में वह वचन का पक्का, तथा रसूल -नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾

55. और आदेश देता था अपने परिवार को नमाज़ तथा ज़कात का और अपने पालनहार के यहाँ प्रिय था।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

56. तथा इस पुस्तक में इद्रीस की चर्चा करो, वास्तव में वह सत्यवादी नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾

57. तथा हम ने उसे उठाया उच्च स्थान पर।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

58. यही वह लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया नबियों में से आदम की संतति में से तथा उन में से जिन्हें हम ने (नाव पर) सवार किया नूह के साथ तथा इब्राहीम और इस्राईल के संतति में से, तथा उन में से जिन्हें हम ने मार्ग दर्शन दिया और चुन लिया, जब इन के समक्ष पढ़ी जाती थीं अत्यंत कृपाशील की आयतें तो वे गिर जाया करते थे सज्दा करते हुये तथा रोते हुये।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾

59. फिर इन के पश्चात् ऐसे कपूत पैदा हुये, जिन्हों ने गँवा दिया नमाज़ को तथा अनुसरण किया मनोकांक्षावों का, तो वह शीघ्र ही कुपथ (के

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

1 आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़े पुत्र थे, इन्हीं से अरबों का वंश चला और आप ही के वंश से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी बना कर भेजे गये हैं।

परिणाम) का सामना करेंगे।

60. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली, तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे। और उन पर तनिक अत्याचार नहीं किया जायेगा।

إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ﴿٦٠﴾

61. स्थायी बिन देखे स्वर्ग, जिन का परोक्षतः वचन अत्यंत कृपाशील ने अपने भक्तों को दिया है, वास्तव में उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ﴿٦١﴾

62. वे नहीं सुनेंगे, उस में कोई बकवास, सलाम के सिवा, तथा उन के लिये उस में जीविका होगी प्रातः और संध्या।

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

63. यही वह स्वर्ग है, जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे,अपने भक्तों में से उसे जो आज्ञाकारी हो।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَن كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

64. और हम[1] नहीं उतरते परन्तु आप के पालनहार के आदेश से, उसी का है जो हमारे आगे तथा पीछे है और जो इस के बीच है, और आप का पालनहार भूलने वाला नहीं है।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

65. आकाशों तथा धरती का पालनहार तथा जो उन दोनों के बीच है। अतः उसी की इबादत (वंदना) करें, तथा उस की इबादत पर स्थित रहें। क्या आप उस के समकक्ष किसी को जानते हैं?

رَّبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

1 हदीस के अनुसार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (फ़रिश्ते) जिब्रील से कहा कि क्या चीज़ आप को रोक रही है कि आप मुझ से और अधिक मिला करें, इसी पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰ 4731)

66. तथा मनुष्य कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर निकाला जाऊँगा जीवित हो कर?

وَيَقُولُ الْإِنسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

67. क्या मनुष्य याद नहीं रखता कि हम ही ने उसे इस से पूर्व उत्पन्न किया है जब कि वह कुछ (भी) न था?

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾

68. तो आप के पालनहार की शपथ! हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुँह के बल गिरे हुये।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

69. फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवैज्ञाकारी था।

ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾

70. फिर हम ही भली-भाँति जानते हैं कि कौन अधिक योग्य है उस में झोंक दिये जाने के।

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

71. और नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहाँ गुज़रने वाला[1] है, यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾

72. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे, तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुँह के बल गिरे हुये।

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

73. तथा जब उन के समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا

1 अर्थात् नरक से जिस पर एक पुल बनाया जायेगा। उस पर से सभी ईमान वालों और काफ़िरों को अवश्य गुज़रना होगा। यह और बात है कि ईमान वालों को इस से कोई हानि न पहुँचे। इस की व्याख्या सहीह हदीसों में वर्णित है।

لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾

ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किस की दशा अच्छी है, और किस की मजलिस (सभा) अधिक भव्य है?

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿٧٤﴾

74. जब कि हम ध्वस्त कर चुके हैं इन से पहले बहुत सी जातियों को जो इन में उत्तम थीं संसाधन तथा मान सम्मान में।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

75. (हे नबी!) आप कह दें कि जो कुपथ में ग्रस्त होता है, अत्यंत कृपाशील उसे अधिक अवसर देता है। यहाँ तक कि जब उसे देख लें जिस का वचन दिये जाते हैं, या तो यातना को अथवा प्रलय को, उस समय उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि किस की दशा बुरी और किस का जत्था अधिक निर्बल है।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ﴿٧٦﴾

76. और अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है। और शेष रह जाने वाले सदाचार ही उत्तम हैं आप के पालनहार के समीप कर्म-फल में, तथा उत्तम हैं परिणाम के फलस्वरूप।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾

77. (हे नबी!) क्या आप ने उसे देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा कहाः मैं अवश्य धन तथा संतान दिया जाऊँगा?

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾

78. क्या वह अवगत हो गया है परोक्ष से अथवा उस ने अत्यंत दयाशील से कोई वचन ले रखा है?

79. कदापि नहीं, हम लिख लेंगे जो वह कहता है, और हम अधिक करते जायेंगे उस की यातना को अत्यधिक।

كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾

80. और हम ले लेंगे जिस की वह बात कर रहा है, और वह हमारे पास अकेला[1] आयेगा।

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

81. तथा उन्हों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, ताकि वह उन के सहायक हों।

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾

82. ऐसा कदापि नहीं होगा, वे सब इन की पूजा (उपासना) का अस्वीकार कर[2] देंगे और उन के विरोधी हो जायेंगे।

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾

83. क्या आप ने नहीं देखा कि हम ने भेज दिया है शैतानों को काफ़िरों पर जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं?

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾

84. अतः शीघ्रता न करें उन पर[3], हम तो केवल उन के दिन गिन रहे हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

85. जिस दिन हम एकत्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

---

1 इन आयतों के अवतरित होने का कारण यह बताया गया है कि खब्बाब बिन अरत्त का आस बिन वायल (काफ़िर) पर कुछ ॠण था। जिसे माँगने के लिये गये तो उस ने कहाः मैं तुझे उस समय तक नहीं दूँगा जब तक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ़्र नहीं करेगा। उन्हों ने कहा कि यह काम तो तू मर कर पुनः जीवित हो जाये, तब भी नहीं करूँगा। उस ने कहाः क्या मैं मरने के पश्चात् पुनः जीवित कर दिया जाऊँगा? खब्बाब ने कहाः हाँ। आस ने कहाः वहाँ मुझे धन और संतान मिलेगी तो तुम्हारा ॠण चुका दूँगा। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰: 4732)

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 अर्थात् यातना के आने का। और इस के लिये केवल उन की आयु पूरी होने की देर है।

की ओर अतिथि बना कर।

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

86. तथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

87. वह (काफ़िर) अभिस्तावना का अधिकार नहीं रखेंगे, परन्तु जिस ने बना लिया हो अत्यंत कृपाशील के पास कोई वचन।[1]

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

88. तथा उन्हों ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने अपने लिये एक पुत्र।[2]

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾

89. वास्तव में तुम एक भारी बात घड़ लाये हो।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

90. समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़ें तथा धरती चिर जाये, और गिर जायें पर्वत कण-कण हो कर।

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

91. कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिये संतान।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

92. तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिये कि वह कोई संतान बनाये।

اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

93. प्रत्येक जो आकाशों तथा धरती में हैं आने वाले हैं अत्यंत कृपाशील की सेवा में दास बन कर।

1 अर्थात् अल्लाह की अनुमति से वही सिफ़ारिश करेगा जो ईमान लाया है।

2 अर्थात् ईसाइयों ने -जैसा कि इस सूरह के आरंभ में आया है- ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पुत्र बना लिया। और इस भ्रम में पड़ गये कि उन्होंने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित चुका दिया। इस आयत में इसी कुपथ का खण्डन किया जा रहा है।

94. उस ने उन को नियंत्रण में ले रखा है, तथा उन को पूर्णतः गिन रखा है।

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾

95. और प्रत्येक उस के समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला।[1]

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

96. निश्चय जो ईमान लाये हैं तथा सदाचार किये हैं, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में)[2] प्रेम।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

97. अतः (हे नबी!) हम ने सरल बना दिया है, इस (क़ुर्आन) को आप की भाषा में ताकि आप इस के द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ﴿٩٧﴾

98. तथा हम ने ध्वस्त कर दिया है, इन से पहले बहुत सी जातियों को, तो क्या आप देखते हैं, उन में से किसी को? अथवा सुनते हैं, उन की कोई ध्वनि?

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

---

1 अर्थात् उस दिन कोई किसी का सहायक न होगा। और न ही किसी को उस का धन-संतान लाभ देगा।

2 अर्थात् उन के ईमान और सदाचार के कारण, लोग उस से प्रेम करने लगेंगे।

सूरह ता-हा - 20

सूरह ता-हा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 135 आयतें हैं

- इस सूरह के आरंभ में यह दोनों अक्षर आये हैं इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में वह्यी और रिसालत का उद्देश्य बताया गया है। और जो नहीं मानते उन्हें चेतावनी दी गई है, और मूसा (अलैहिस्सलाम) को रिसालत देने और उन के विरोधियों का दुष्परिणाम बताया गया है। साथ ही प्रलय की दशा का भी वर्णन किया गया है ताकि नबूवत के विरोधी सावधान हों।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) की कथा का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि जब मनुष्य इस धरती पर आया तभी यह बात उजागर कर दी गई थी कि मनुष्य को सीधी राह दिखाने के लिये वह्यी तथा रिसालत का क्रम भी जारी किया जायेगा फिर जो सीधी राह अपनायेगा वही शैतान के कुपथ से सुरक्षित रहेगा।
- इस में अल्लाह की आयतों से विमुख होने का बुरा अन्त बताया गया है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से ईमान वालों को सहन और दृढ़ रहने के निर्देश दिये गये हैं। और दिलासा दी गई है कि अन्तिम तथा अच्छा परिणाम उन्हीं के लिये है।
- और अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. ता, हा।
2. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर क़ुर्आन इस लिये कि आप दुःखी हों।[1]

طٰهٰ ①

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ②

1 अर्थात् विरोधियों के ईमान न लाने पर।

3. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता[1] हो।

إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ۝

4. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।

تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَى ۝

5. जो अत्यंत कृपाशील अर्श पर स्थिर है।

الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ۝

6. उसी का[2] है, जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ۝

7. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को।

وَإِن تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝

8. वही अल्लाह है, नहीं है कोई वंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम हैं।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۝

9. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ۝

10. जब उस ने देखी एक अग्नि, फिर कहाः अपने परिवार से रुको, मैं ने एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ, अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।[3]

إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝

11. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गयाः हे मूसा!

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَا مُوسَىٰ ۝

1 अर्थात् ईमान न लाने तथा कुकर्मों के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् उसी के स्वामित्व में तथा उस के आधीन है।

3 यह उस समय की बात है, जब मूसा अपने परिवार के साथ मदयन नगर से मिस्र आ रहे थे और मार्ग भूल गये थे।

12. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपत्यका) "तुवा" में है।

إِنِّىٓ أَنَا۠ رَبُّكَ فَٱخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِٱلْوَادِ ٱلْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

13. और मैं ने तुझ को चुन[1] लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वह्यी की जा रही है।

وَأَنَا ٱخْتَرْتُكَ فَٱسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰٓ ﴿١٣﴾

14. निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (वंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज़ की स्थापना[2] कर।

إِنَّنِىٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ ﴿١٤﴾

15. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।

إِنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعَىٰ ﴿١٥﴾

16. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ فَتَرْدَىٰ ﴿١٦﴾

17. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿١٧﴾

18. उत्तर दियाः यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यक्तायें (भी) हैं।

قَالَ هِىَ عَصَاىَ أَتَوَكَّؤُا۟ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِى وَلِىَ فِيهَا مَـَٔارِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٨﴾

19. कहाः उसे फेंकिये, हे मूसा!

قَالَ أَلْقِهَا يَٰمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

1 अर्थात् नबी बना दिया।

2 इबादत में नमाज़ सम्मिलित है, फिर भी उस का महत्व दिखाने के लिये उस का विशेष आदेश दिया गया है।

فَأَلْقٰهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿٢٠﴾

20. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक सर्प थी, जो दौड़ रहा था।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولٰى ﴿٢١﴾

21. कहाः पकड़ ले इस को, और डर नहीं, हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرٰى ﴿٢٢﴾

22. और अपना हाथ लगा दे अपनी कांख (बग़ल) की ओर, वह निकलेगा चमकता हुआ बिना किसी रोग के, यह दूसरा चमत्कार है।

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾

23. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।

اذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى ﴿٢٤﴾

24. तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

25. मूसा ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

26. तथा सरल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾

27. और खोल दे, मेरी ज़ुबान की गाँठ।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

28. ताकि लोग मेरी बात समझें।

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾

29. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।

هٰرُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾

30. मेरे भाई हारून को।

اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾

31. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾

32. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾

33. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।

34. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करें।

وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ۝٣٤

35. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ۝٣٥

36. अल्लाह ने कहाः हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयीं।

قَالَ قَدْ أُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ۝٣٦

37. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और[1] (भी)।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرٰى ۝٣٧

38. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिस की वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है।

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلٰى أُمِّكَ مَا يُوْحٰى ۝٣٨

39. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक़) में, फिर उसे नदी में डाल दे, फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु[2], और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष[3] प्रेम ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी रक्षा में हो।

أَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ۝٣٩

40. जब चल रही थी तेरी बहन[4], फिर कह रही थीः क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस का लालन-पालन करे? फिर हम ने पुनः तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डी हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को, तो हम ने तुझे मुक्त कर

إِذْ تَمْشِيْٓ أُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ۚ فَرَجَعْنٰكَ إِلٰٓى أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ أَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ۝٤٠

1 यह उस समय की बात है जब मूसा का जन्म हुआ। उस समय फ़िरऔन का आदेश था कि बनी इस्राईल में जो भी शिशु जन्म ले, उसे बध कर दिया जाये।

2 इस से तात्पर्य मिस्र का राजा फ़िरऔन है।

3 अर्थात् तुम्हें सब का प्रिय अथवा फ़िरऔन का भी प्रिय बना दिया।

4 अर्थात् सन्दूक़ के पीछे नदी के किनारे।

दिया चिन्ता[1] से। और हम ने तेरी भली-भाँति परीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षों मद्यन के लोगों में, फिर तू (मद्यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ﴿٤١﴾

41. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।

اذْهَبْ أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ﴿٤٢﴾

42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।

اذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾

43. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, वास्तव में वह उल्लंघन कर गया है।

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَيِّنًا لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

44. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾

45. दोनों ने कहाः हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।

قَالَ لَا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

46. उस (अल्लाह) ने कहाः तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ।

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾

47. तुम उस के पास जाओ, और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अतः हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे, हम तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं, और शान्ति उस के लिये है,

1 अर्थात् एक फ़िरऔनी को मारा और वह मर गया, तो तुम मद्यन चले गये, इस का वर्णन सूरह क़सस में आयेगा।

जो मार्ग दर्शन का अनुसरण करे।

48. वास्तव में हमारी ओर वह्यी (प्रकाशना) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

49. उस ने कहाः हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾

50. मूसा ने कहाः हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्ग दर्शन[1]दिया।

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

51. उस ने कहाः फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग हैं?

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

52. मूसा ने कहाः उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है, मेरा पालनहार न तो चूकता है और न[2] भूलता है।

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

53. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये हैं, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकालीं।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ نَبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

54. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुतः इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَىٰ ﴿٥٤﴾

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने प्रत्येक जीव जन्तु के योग्य उस का रूप बनाया है। और उस के जीवन की आवश्यक्ता के अनुसार उसे खाने पीने तथा निवास की विधि समझा दी है।

2 अर्थात् उन्हों ने जैसा किया होगा, उन के आगे उन का परिणाम आयेगा।

55. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी से तुम सब को पुनः[1] निकालेंगे।

مِنْهَا خَلَقْنَٰكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾

56. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ, फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।

وَلَقَدْ أَرَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾

57. उस ने कहाः क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٥٧﴾

58. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अतः हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِۦ فَٱجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُۥ نَحْنُ وَلَآ أَنتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

59. मूसा ने कहाः तुम्हारा निर्धारित समय शोभा (उत्सव) का दिन[2] है, तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ ٱلزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ ٱلنَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

60. फिर फ़िरऔन लोट गया[3], और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُۥ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾

61. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहाः तुम्हारा विनाश हो! अल्लाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ ٱفْتَرَىٰ ﴿٦١﴾

---

1 अर्थात् प्रलय के दिन पुनः जीवित निकालेंगे।

2 इस से अभिप्राय उन का कोई वार्षिक उत्सव (मेले) का दिन था।

3 मूसा के सत्य को न मान कर, मुक़ाबले की तैयारी में व्यस्त हो गया।

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾

62. फिर[1] उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपके-चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

63. कुछ ने कहाः यह दोनों वास्तव में जादूगर हैं, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

64. अतः अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पंक्ति में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

65. उन्हों ने कहाः हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंकें?

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾

66. मूसा ने कहाः बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।

فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾

67. इस से मूसा अपने मन में डर गया।[2]

قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾

68. हम ने कहाः मत डर, तू ही ऊपर रहेगा।

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۗ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾

69. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्हों ने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।

---

1 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात सुन कर उन में मतभेद हो गया। कुछ ने कहा कि यह नबी की बात लग रही है। और कुछ ने कहा कि यह जादूगर है।

2 मूसा अलैहिस्सलाम को यह भय हुआ कि लोग जादूगरों के धोखे में न आ जायें।

70. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये, उन्हों ने कहा कि हम ईमान लाये हारून तथा मूसा के पालनहार पर।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾

71. फ़िरऔन बोलाः क्या तुम ने उस का विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत दिशा[1] से, और तुम्हें सूली दे दूँगा खजूर के तनों पर, तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा कि हम में से किस की यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿٧١﴾

72. उन्हों ने कहाः हम तुझे कभी उन खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी हैं, और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें पैदा किया है, तू जो करना चाहे कर ले, तू बस इसी संसारिक जीवन में आदेश दे सकता है।

قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾

73. हम तो अपने पालनहार पर ईमान लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस जादू पर तू ने हमें बाध्य किया, और अल्लाह सर्वोत्तम तथा अनन्त[2] है।

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿٧٣﴾

74. वास्तव में जो जायेगा अपने पालनहार के पास पापी बन कर तो उसी के लिये नरक है, जिस में न

إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾

1 अर्थात् दाहिना हाथ और बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ और दाहिना पैर।

2 और तेरा राज्य तथा जीवन तो सामयिक है।

वह मरेगा और न जीवित रहेगा।[1]

75. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَأُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ۝٧٥

76. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बहती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝٧٦

77. और हम ने मूसा की ओर वह्यी की, कि रातों-रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले[2], तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوسٰىٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَلَا تَخْشٰى ۝٧٧

78. फिर उन का पीछा किया फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِۦ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝٧٨

79. और कुपथ कर दिया फ़िरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُۥ وَمَا هَدٰى ۝٧٩

80. हे इस्राईल के पुत्रो! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और वचन दिया तुम्हें तूर पर्वत से दाहिनी[3] ओर का, तथा तुम पर उतारा "मन्न" तथा "सल्वा"।[4]

يٰبَنِيٓ إِسْرٰٓءِيلَ قَدْ أَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝٨٠

81. खाओ उन स्वच्छ चीज़ों में से जो

كُلُوا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ

---

1 अर्थात् उसे जीवन का कोई सुख नहीं मिलेगा।

2 इस का सविस्तार वर्णन सूरह शुअरा-26 में आ रहा है।

3 अर्थात् तुम पर तौरात उतारने के लिये।

4 मन्न तथा सल्वा के भाष्य के लिये देखियेः बक़रा, आयतः 57।

فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ﴿٨١﴾

जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप। तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा प्रकोप, तो निःसंदेह वह गिर गया।

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾

82. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ उस के लिये जिस ने क्षमा याचना की, तथा ईमान लाया और सदाचार किया फिर सुपथ पर रहा।

وَمَا أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٨٣﴾

83. और हे मूसा! क्या चीज़ तुम्हें ले आई अपनी जाति से पहले?[1]

قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾

84. उस ने कहाः वे मेरे पीछे आ ही रहे हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ गया, हे मेरे पालनहार! ताकि तू प्रसन्न हो जाये।

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

85. अल्लाह ने कहाः हम ने परीक्षा में डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने के) पश्चात्, और कुपथ कर दिया है उन को सामरी[2] ने।

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ﴿٨٦﴾

86. तो मूसा वापिस आया अपनी जाति की ओर अति क्रुद्ध-शोकातुर हो कर। उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे पालनहार ने एक अच्छा वचन?[3] तो क्या तुम्हें बहुत दिन लग[4] गये?

---

1 अर्थात् तुम पर्वत की दाहिनी ओर अपनी जाति से पहले क्यों आ गये और उन्हें पीछे क्यों छोड़ दिया?

2 सामरी बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का नाम है।

3 अर्थात् धर्म-पुस्तक तौरात देने का वचन।

4 अर्थात् वचन की अवधि दीर्घ प्रतीत होने लगी।

अथवा तुम ने चाहा कि उतर जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन[1] को भंग कर दिया।

قَالُوا مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَٰهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

87. उन्हों ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति[2] के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक[3] दिया, और ऐसे ही फेंक[4] दिया सामरी ने।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُۥ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَآ إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

88. फिर वह[5] निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज़) थी, तो सब ने कहाः यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य, (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

89. तो क्या वे नहीं देखते कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का?[6]

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَٰرُونُ مِن قَبْلُ يَٰقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِۦ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوٓا أَمْرِي ﴿٩٠﴾

90. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है

1 अर्थात् मेरे वापिस आने तक, अल्लाह की इबादत पर स्थिर रहने की जो प्रतिज्ञा की थी।

2 जाति से अभिप्रेत फ़िरऔन की जाति है, जिन के आभूषण उन्हों ने उधार ले रखे थे।

3 अर्थात् अपने पास रखना नहीं चाहा, और एक अग्नि कुण्ड में फेंक दिया।

4 अर्थात् जो कुछ उस के पास था।

5 अर्थात् सामरी ने आभुषणों को पिघला कर बछड़ा बना लिया।

6 फिर वह पूज्य कैसे हो सकता है?

इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।

قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩١﴾

91. उन्हों ने कहाः हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जाये।

قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ﴿٩٢﴾

92. मूसा ने कहाः हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾

93. कि मेरा अनुसरण न करे? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?

قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾

94. उस ने कहाः मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुआ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और[1] प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

95. (मूसा ने) पूछाः तेरा समाचार क्या है, हे सामरी?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ﴿٩٦﴾

96. उस ने कहाः मैं ने वह चीज़ देखी जिसे उन्हों ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रसूल के पदचिन्ह से, फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे[2] मेरे मन ने।

---

1 (देखियेः सूरह आराफ़, आयतः 142)

2 अधिकांश भाष्यकारों ने रसूल से अभिप्राय जिब्रील (फ़रिश्ता) लिया है। और अर्थ यह है कि सामरी ने यह बात बनाई कि जब उस ने फ़िरऔन और उस की सेना के डूबने के समय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को घोड़े पर सवार वहाँ देखा तो उन के घोड़े के पद्चिन्ह की मिट्टी रख ली। और जब सोने का बछड़ा

97. मूसा ने कहाः जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहता रहेः मुझे स्पर्श न करना।[1] तथा तेरे लिये एक और[2] वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर-चूर कर के।

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ أَنْ تَقُولَ لَا
مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ ۚ وَانْظُرْ إِلَىٰ
إِلٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ
لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

98. निःसंदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।

إِنَّمَا إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

99. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (क़ुर्आन)।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ
وَقَدْ آتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

100. जो उस से मुँह फेरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी[3] बोझ।

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

101. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।

خٰلِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

बना कर उस धूल को उस पर फेंक दिया तो उस के प्रभाव से उस में से एक प्रकार की आवाज़ निकलने लगी जो उन के कुपथ होने का कारण बनी।

1 अर्थात् मेरे समीप न आना और न मुझे छूना, मैं अछूत हूँ।

2 अर्थात् परलोक की यातना का।

3 अर्थात पापों का बोझ।

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝١٠٢

102. जिस दिन फूंक दिया जायेगा सूर[1] (नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर देंगे पापियों को उस दिन इस दशा में कि उन की आँखें (भय से) नीली होंगी।

يَتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۝١٠٣

103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۝١٠٤

104. हम भली-भाँति जानते हैं, जो कुछ वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन में से सब से चतुर कि तुम केवल एक ही दिन रहे[2] हो।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝١٠٥

105. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों के संबन्ध में? आप कह दें कि उड़ा देगा उन्हें मेरा पालनहार चूर-चूर कर के।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝١٠٦

106. फिर धरती को छोड़ देगा समतल मैदान बना कर।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝١٠٧

107. तुम नहीं देखोगे उस में कोई टेढ़ापन और न नीच-ऊँच।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۝١٠٨

108. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने वाले के, कोई उस से कतरायेगा नहीं, और धीमी हो जायेंगी आवाजें अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम नहीं सुनोगे कानाफूँसी की आवाज़ के सिवा।

---

1 «सूर» का अर्थ नरसिंघा है, जिस में अल्लाह के आदेश से एक फ़रिश्ता इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम फूकेगा, और प्रलय आ जायेगी। (मुस्नद अहमदः 2191) और पुनः फूकेगा तो सब जीवित हो कर हश्र के मैदान में आ जायेंगे।

2 अर्थात् उन्हें संसारिक जीवन क्षण दो क्षण प्रतीत होगा।

109. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफ़ारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यंत कृपाशील, और प्रसन्न हो उस के[1] लिये बात करने से।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

111. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद[2] लिया।

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

112. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं डरेगा अत्याचार से न अधिकार हनन से।

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

113. और इसी प्रकार हम ने इस अर्बी कुर्आन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

114. अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता[3] न करें कुर्आन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۗ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ ۖ وَقُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾

---

1 अर्थात् जिस के लिये सिफ़ारिश कर रहा है।

2 संसार में किसी पर अत्याचार, तथा अल्लाह के साथ शिर्क किया हो।

3 जब जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्यी (प्रकाशना) लाते, तो आप इस भय से कि कुछ भूल न जाये, उन के साथ साथ ही पढ़ने लगते। अल्लाह ने आप को ऐसा करने से रोक दिया। इस का वर्णन सूरह क़ियामा, आयतः 75 में आ रहा है।

जाये आप की ओर इस की वह़्यी (प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ١١٥

115. और हम ने आदेश दिया आदम को इस से पहले, तो वह भूल गया, और हम ने नहीं पाया उस में कोई दृढ़ संकल्प।[1]

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ ١١٦

116. तथा जब हम ने कहा फ़रिश्तों से कि सज्दा करो आदम को, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा, उस ने इन्कार कर दिया।

فَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ ٱلْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰٓ ١١٧

117. तब हम ने कहाः हे आदम! वास्तव में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी का, तो ऐसा न हो कि तुम दोनों को निकलवा दे स्वर्ग से और तू आपदा में पड़ जाये।

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ١١٨

118. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा रहता है और न नग्न रहता है।

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا۟ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ١١٩

119. और न प्यासा होता है और न तुझे धूप सताती है।

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ ٱلشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ ٱلْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ١٢٠

120. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहाः हे आदम! क्या मैं तुझे न बताऊँ शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा राज्य जो पतनशील न हो?

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ ٱلْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ

121. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से खा लिया, फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के लिये खुल गये। और दोनों चिपकाने

---

1 अर्थात् वह भूल से शैतान की बात में आ गया, उस ने जानबूझ कर हमारे आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

رَبَّهُۥ فَغَوَىٰ ۝١٢١

लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते। और आदम अवज्ञा कर गया अपने पालनहार की और कुपथ हो गया।

ثُمَّ ٱجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝١٢٢

122. फिर उस (अल्लाह) ने उसे चुन लिया और उसे क्षमा कर दिया और सुपथ दिखा दिया।

قَالَ ٱهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًۢا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَنِ ٱتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝١٢٣

123. कहाः तुम दोनों (आदम तथा शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन तो जो अनुपालन करेगा मेरे मार्गदर्शन का, वह कुपथ नहीं होगा और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِى فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ أَعْمَىٰ ۝١٢٤

124. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से, तो उसी का संसारिक जीवन संकीर्ण (तंग)[1] होगा, तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा कर के।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىٓ أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ۝١٢٥

125. वह कहेगाः मेरे पालनहार! मुझे अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार में) आँखों वाला था?

قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ ءَايَٰتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ ٱلْيَوْمَ تُنسَىٰ ۝١٢٦

126. अल्लाह कहेगाः इसी प्रकार तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें भुला दिया। अतः इसी प्रकार आज तू भुला दिया जायेगा।

وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنۢ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ۚ وَلَعَذَابُ ٱلْءَاخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَىٰ ۝١٢٧

127. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं उसे जो सीमा का उल्लंघन करे, और ईमान न लाये अपने पालनहार

---

1 अर्थात् वह संसार में धनी हो तब भी उसे संतोष नहीं होगा। और सदा चिन्तित और व्याकुल रहेगा।

की आयतों पर। और निश्चय आख़िरत की यातना अति कड़ी तथा अधिक स्थायी है।

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿١٢٨﴾

128. तो क्या उन्हें मार्ग दर्शन नहीं दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त कर दिया इन से पहले बहुत सी जातियों को, जो चल फिर-रही थीं अपनी बस्तियों में, निःसंदेह इस में निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

129. और यदि एक बात पहले से निश्चित न होती आप के पालनहार की ओर से, तो यातना आ चुकी होती, और एक निर्धारित समय न होता।[1]

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿١٣٠﴾

130. अतः आप सहन करें उन की बातों को तथा अपने पालनहार की पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले[2] तथा सूर्यास्त से[3] पहले, तथा रात्रि के क्षणों[4] में और दिन के किनारों[5] में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ

131. और कदापि न देखिये आप उस आनन्द की ओर जो हम ने उन[6] में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह का यह निर्णय है कि वह किसी जाति का उस के विरुद्ध तर्क तथा उस की निश्चित अवधि पूरी होने पर ही विनाश करता है, यदि यह बात न होती तो इन मक्का के मिश्रणवादियों पर यातना आ चुकी होती।

2 अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ में।

3 अर्थात् अस्र की नमाज़ में।

4 अर्थात् इशा की नमाज़ में।

5 अर्थात् ज़ुहर तथा मग़्रिब की नमाज़ में।

6 अर्थात् मिश्रणवादियों में से।

وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾

है, वह संसारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा लें, और आप के पालनहार का प्रदान[1] ही उत्तम तथा अति स्थायी है।

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَوٰةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾

132. और आप अपने परिवार को नमाज़ का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं मांगते, हम ही आप को जीविका प्रदान करते हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾

133. तथा उन्होंने कहाः क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाता? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (कुर्आन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾

134. और यदि हम ध्वस्त कर देते उन्हें किसी यातना से इस से[2] पहले, तो वे अवश्य कहते कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

135. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले है, और किस ने सीधी राह पाई है।

---

1 अर्थात् परलोक का प्रतिफल।

2 अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन के आने से पहले।

सूरह अम्बिया - 21

सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 112 आयतें हैं।

इस सूरह में अनेक नबियों की चर्चा के कारण इस का नाम «अम्बिया» है।

- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने अपनी जातियों को बराबर यह शिक्षा दी कि उन्हें अल्लाह के लिये अपने कर्मों का उत्तर देना है फिर भी वह संभलने के बजाये विरोध ही करते रहे और अल्लाह की सहायता सदा नबियों के साथ रही।
- यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने संसार को खेल के लिये नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य के बीच संघर्ष के लिये बनाया है।
- इस में तौहीद का वर्णन है जो सभी नबियों का संदेश था। और रिसालत से संबंधित संदेहों का जवाब किया गया है तथा रसूलों का उपहास करने वालों को चेतावनी दी गई है।
- नबियों की शिक्षाओं और उन पर अल्लाह के अनुग्रह और दया को दिखाया गया है।
- अन्त में विरोधियों को यातना की धमकी तथा ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है। और यह बताया गया है कि नबियों को भेजना संसार वासियों के लिये सर्वथा दया है, और उन का अपमान करना स्वयं अपने ही लिये हानिकारक है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ①

1. समीप आ गया है लोगों के हिसाब[1] का समय, जब कि वे अचेतना में मुँह फेरे हुये हैं।

1 अर्थात प्रलय का समय, फिर भी लोग उस से अचेत माया मोह में लिप्त हैं।

2. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा[1], परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।

مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٢﴾

3. निश्चेत हैं उन के दिल, और उन्हों ने चुपके-चुपके आपस में बातें कीं जो अत्याचारी हो गयेः यह (नबी) तो बस एक पुरुष है तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?[2]

لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٣﴾

4. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है। और वह सब सुनने जानने वाला है।

قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٤﴾

5. बल्कि उन्हों ने कह दिया कि यह[3] बिखरे स्वप्न हैं। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ﴿٥﴾

6. नहीं ईमान[4] लायी इन से पहले कोई बस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?

مَا آمَنَتْ قَبْلَهُم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا ۖ أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

7. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ

---

1 अर्थात कुर्आन की कोई आयत अवतरित होती है तो उस में चिन्तन और विचार नहीं करते।

2 अर्थात् यह कि वह तुम्हारे जैसा मनुष्य है, अतः इस का जो भी प्रभाव है वह जादू के कारण है।

3 आर्थात् कुर्आन की आयतें।

4 अर्थात् निशानियाँ देख कर भी ईमान नहीं लायी।

मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर वह़्यी भेजते रहे। फिर तुम ज्ञानियों[1] से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं[2] जानते हो।

فَسْـَٔلُوٓا أَهْلَ ٱلذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

8. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर[3] जो भोजन न करते हों। तथा न वे सदावासी थे।

وَمَا جَعَلْنَٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ ٱلطَّعَامَ وَمَا كَانُوا۟ خَٰلِدِينَ ﴿٨﴾

9. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उल्लंघनकारियों का।

ثُمَّ صَدَقْنَٰهُمُ ٱلْوَعْدَ فَأَنجَيْنَٰهُمْ وَمَن نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا ٱلْمُسْرِفِينَ ﴿٩﴾

10. निःसंदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (क़ुर्आन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

لَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ كِتَٰبًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

11. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।

وَكَمْ قَصَمْنَا مِن قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا ءَاخَرِينَ ﴿١١﴾

12. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।

فَلَمَّآ أَحَسُّوا۟ بَأْسَنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾

13. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख-सुविधा में थे, तथा अपने घरों की ओर, ताकि

لَا تَرْكُضُوا۟ وَٱرْجِعُوٓا۟ إِلَىٰ مَآ أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسَٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُونَ ﴿١٣﴾

1 अर्थात् आदि आकाशीय पुस्तकों के ज्ञानियों से।

2 देखियेः सूरह नह्ल, आयतः 43।

3 अर्थात् उन में मनुष्य की ही सब विशेषताऐं थीं।

तुम से पूछा[1] जाये।

14. उन्हों ने कहाः हाय हमारा विनाश! वास्तव में हम अत्याचारी थे।

قَالُوا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾

15. और फिर बराबर यही उन की पुकार रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾

16. और हम ने नहीं पैदा किया है आकाश और धरती को तथा जो कुछ दोनों के बीच है खेल के लिये।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾

17. यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे अपने पास ही से बना[2] लेते, यदि हमें यह करना होता।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾

18. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य पर, तो वह उस का सिर कुचल देता है, और वह अकस्मात समाप्त हो जाता है, और तुम्हारे लिये विनाश है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

19. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, और जो फ़रिश्ते उस के पास हैं वे उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

20. वे रात और दिन उस की पवित्रता का गान करते हैं, तथा आलस्य नहीं करते।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

1 अर्थात् यह कि यातना आने पर तुम्हारी क्या दशा हुयी?

2 अर्थात् इस विशाल विश्व के बनाने की आवश्यक्ता न थी। इस आयत में यह बताया जा रहा है कि इस विश्व को खेल नहीं बनाया गया है। यहाँ एक साधारण नियम काम कर रहा है। और वह सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का नियम है। अर्थात् यहाँ जो कुछ होता है वह सत्य की विजय और असत्य की पराजय के लिये होता है। और सत्य के आगे असत्य समाप्त हो कर रह जाता है।

21. क्या इन के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते हैं?

أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾

22. यदि होते उन दोनों[1] में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़[2] जाती। अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾

23. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी हैं।

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾

24. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (क़ुर्आन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा[3] है, बल्कि उन में से अधिक्तर सत्य का ज्ञान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख हैं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

25. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वह्यी (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

---

1 आकाश तथा धरती में।

2 क्योंकि दोनों अपनी अपनी शक्ति का प्रयोग करते और उन के आपस के संघर्ष के कारण इस विश्व की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती। अतः इस विश्व की व्यवस्था स्वयं बता रही है कि इस का स्वामी एक ही है। और वही अकेला पूज्य है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यह क़ुर्आन है और यह तौरात तथा इंजील हैं। इन में कोई प्रमाण दिखा दो कि अल्लाह के अन्य साझी और पूज्य हैं। बल्कि यह मिश्रणवादी निर्मूल बातें कर रहे हैं।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. और उन (मुश्रिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतति। वह पवित्र है! बल्कि वे (फ़रिश्ते)[1] आदरणीय भक्त हैं।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन से ओझल है। वह किसी की सिफ़ारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न[2] हो, तथा वह उस के भय से सहमे रहते हैं।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۗ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۗ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और क्या उन्हों ने विचार नहीं किया जो काफ़िर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये[3] थे, तो हम ने दोनों को अलग-अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?

وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا

31. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत

---

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादी जिन फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते हैं, वास्तव में वह उस के भक्त तथा दास हैं।

2 अर्थात् जो एकेश्वरवादी होंगे।

3 अर्थात् अपनी उत्पत्ति के आरंभ में।

فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝٣١

ताकि झुक न[1] जाये उन के साथ, और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े रास्ते ताकि लोग राह पायें।

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُونَ ۝٣٢

32. और हम ने बना दिया आकाश को सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के प्रतीकों (निशानियों) से मुँह फेरे हुये हैं।

وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ۝٣٣

33. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा चाँद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर रहे[2] हैं।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝٣٤

34. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है किसी मनुष्य के लिये आप से पहले नित्यता। तो यदि आप मर[3] जायें, तो क्या वह नित्य जीवी हैं?

كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَیْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَیْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝٣٥

35. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद चखना है, और हम तुम्हारी परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही ओर फिर आना है।

---

1 अर्थात् यह पर्वत न होते तो धरती सदा हिलती रहती।

2 कुर्आन अपनी शिक्षा में विश्व की व्यवस्था से एक के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ भी आयतः 30 से 33 तक एक अल्लाह के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

3 जब मनुष्य किसी का विरोधी बन जाता है तो उस के मरण की कामना करता है। यही दशा मक्का के काफ़िरों की भी थी। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरण की कामना कर रहे थे। फिर यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक जीव को मरना है। यह कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात तो यह है कि अल्लाह इस संसार में सब के कर्मों की परीक्षा कर रहा है। और फिर सब को अपने कर्मों का फल भी परलोक में मिलना है तो कौन इस परीक्षा में सफल होता है?

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

36. तथा जब देखते हैं आप को जो काफ़िर हो गये तो बना लेते हैं आप को उपहास, (वे कहते हैं) क्या यही है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया करता है? जब कि वे स्वयं रहमान (अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के[1] निवर्ती हैं।

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

37. मनुष्य जन्मजात व्यग्र (अधीर)है, मैं शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूँगा। अतः तुम जल्दी न करो।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

38. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी होगी यह[2] धमकी, यदि तुम लोग सच्चे हो?

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

39. यदि जान लें जो काफ़िर हो गये हैं उस समय को जब वह नहीं बचा सकेंगे अपने मुखों को अग्नि से और न अपनी पीठों को, और न उन की कोई सहायता की जायेगी (तो ऐसी बातें नहीं करेंगे)।

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

40. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित कर देगा, जिसे वह फेर नहीं सकेंगे और न उन्हें समय दिया जायेगा।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

41. और उपहास किया गया बहुत से रसूलों का आप से पहले, तो घेर लिया उन को जिन्हों ने उपहास किया उन में से उस चीज़ ने जिस[3]

---

1 अर्थात् अल्लाह को नहीं मानते।

2 अर्थात् हमारे न मानने पर यातना आने की धमकी।

3 अर्थात् यातना ने।

का उपहास कर रहे थे।

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा करेगा रात तथा दिन में अत्यंत कृपाशील[1] से? बल्कि वह अपने पालनहार की शिक्षा (कुर्आन) से विमुख हैं।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۗ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. क्या उन के पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन का साथ दिया जायेगा।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. बल्कि हम ने जीवन का लाभ पहुँचाया है उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि (सुखों में) उन की बड़ी आयु गुज़र[2] गई, तो क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को कम करते आ रहे हैं उस के किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो रहे हैं?

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो वह्यी ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर रहा हूँ। (परन्तु) बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सावधान किया जाता है।

وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये,

1 अर्थात् उस की यातना से।

2 अर्थ यह है कि वह मक्का के काफ़िर सुख-सुविधा मंद रहने के कारण अल्लाह से विमुख हो गये हैं, और सोचते हैं कि उन पर यातना नहीं आयेगी और वही विजयी होंगे। जब कि दशा यह है कि उन के अधिकार का क्षेत्र कम होता जा रहा है और इस्लाम बराबर फैलता जा रहा है। फिर भी वे इस भ्रम में हैं कि वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

हमारा विनाश! निश्चय ही हम अत्याचारी[1] थे।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۗ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. और हम रख देंगे न्याय का तराज़ू[2] प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी पर कुछ भी, तथा यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने वाले।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. और हम दे चुके हैं मूसा तथा हारून को विवेक तथा प्रकाश और शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों के लिये।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे, और वे प्रलय से भयभीत हों।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۗ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. और यह (कुर्आन) एक शुभ शिक्षा है जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम इस के इन्कारी हो?

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾

51. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम को उस की चेतना इस से पहले, और हम उस से भली भाँति अवगत थे।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. जब उस ने अपने बाप तथा अपनी जाति से कहाः यह प्रतिमायें (मुर्तियाँ) कैसी हैं जिन की पूजा में तुम लगे हुये हो?

---

1 अर्थात् अपने पापों को स्वीकार कर लेंगे।

2 अर्थात् कर्मों को तौलने और हिसाब करने के लिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्मानुसार बदला दिया जाये।

53. उन्हों ने कहाः हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते हुये।

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾

54. उस (इब्राहीम) ने कहाः निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।

قَالَ لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

55. उन्हों ने कहाः क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

56. उस ने कहाः बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।

قَالَ بَل رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَٰلِكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

57. तथा अल्लाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मुर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُم بَعْدَ أَن تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾

58. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड-खण्ड, उन के बड़े के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।

فَجَعَلَهُمْ جُذَاذًا إِلَّا كَبِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾

59. उन्हों ने कहाः किस ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोई अत्याचारी होगा!

قَالُوا مَن فَعَلَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾

60. लोगों ने कहाः हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٠﴾

61. लोगों ने कहाः उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾

62. उन्हों ने पूछाः क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?

قَالُوا أَأَنتَ فَعَلْتَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٢﴾

قَالَ بَلْ فَعَلَهُۥ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَسْـَٔلُوهُمْ
إِن كَانُوا۟ يَنطِقُونَ ﴿٦٣﴾

63. उस ने कहाः बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया[1] है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों?

فَرَجَعُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوٓا۟ إِنَّكُمْ أَنتُمُ
ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٦٤﴾

64. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये। और (अपने मन में) कहाः वास्तव में तुम्हीं अत्याचारी हो।

ثُمَّ نُكِسُوا۟ عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ
مَا هَٰٓؤُلَآءِ يَنطِقُونَ ﴿٦٥﴾

65. फिर वह औंधे कर दिये गये अपने सिरों के बल[2] (और बोले): तू जानता है कि यह बोलते नहीं हैं।

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكُمْ شَيْـًٔا
وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

66. इब्राहीम ने कहाः तो क्या तुम इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

67. तुफ़ (थू) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?

قَالُوا۟ حَرِّقُوهُ وَٱنصُرُوٓا۟ ءَالِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ
فَٰعِلِينَ ﴿٦٨﴾

68. उन्हों ने कहाः इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।

قُلْنَا يَٰنَارُ كُونِى بَرْدًا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٦٩﴾

69. हम ने कहाः हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।

وَأَرَادُوا۟ بِهِۦ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ ٱلْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾

70. और उन्हों ने उस के साथ बुराई चाही, तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।

---

1 यह बात इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन के पूज्यों की विवशता दिखाने के लिये कही।

2 अर्थात् सत्य को स्वीकार कर के उस से फिर गये।

وَنَجَّيْنَٰهُ وَلُوطًا إِلَى ٱلْأَرْضِ ٱلَّتِى بَٰرَكْنَا فِيهَا لِلْعَٰلَمِينَ ﴿٧١﴾

71. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तथा लूत[1] को उस भूमि[2] की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾

72. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इस्हाक़ और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक, और प्रत्येक को हम ने सत्कर्मी बनाया।

وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا عَٰبِدِينَ ﴿٧٣﴾

73. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते हैं। तथा हम ने वह्यी (प्रकाशना) की उन की ओर सत्कर्मों के करने तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने की, तथा वे हमारे ही उपासक थे।

وَلُوطًا ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَرْيَةِ ٱلَّتِى كَانَت تَّعْمَلُ ٱلْخَبَٰٓئِثَ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمَ سَوْءٍ فَٰسِقِينَ ﴿٧٤﴾

74. तथा लूत को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया, और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।

وَأَدْخَلْنَٰهُ فِى رَحْمَتِنَآ ۖ إِنَّهُۥ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾

75. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ فَنَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥ مِنَ ٱلْكَرْبِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

76. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नबियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली, फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीड़ा से।

---

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे।

2 इस से अभिप्राय सीरिया देश है। और अर्थ यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अग्नि से रक्षा करने के पश्चात् उन्हें सीरिया देश की ओर प्रस्थान कर जाने का आदेश दिया। और वह सीरिया चले गये।

وَنَصَرْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾

77. और उस की सहायता की उस जाति के मुक़ाबले में जिन्हों ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हम ने डुबो दिया उन सभी को।

وَدَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِى ٱلْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ ٱلْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَٰهِدِينَ ﴿٧٨﴾

78. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि में चर गईं उसे दूसरों की बकरियाँ, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।

فَفَهَّمْنَٰهَا سُلَيْمَٰنَ ۚ وَكُلًّا ءَاتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُۥدَ ٱلْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَٱلطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فَٰعِلِينَ ﴿٧٩﴾

79. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान[1] को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान, और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।

وَعَلَّمْنَٰهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُم مِّنۢ بَأْسِكُمْ ۖ فَهَلْ أَنتُمْ شَٰكِرُونَ ﴿٨٠﴾

80. तथा हम ने उस (दावूद) को सिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आक्रमण से, तो क्या तुम कृतज्ञ हो?

وَلِسُلَيْمَٰنَ ٱلرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِى بِأَمْرِهِۦٓ إِلَى

81. और सुलैमान के आधीन कर दिया

1 हदीस में वर्णित है कि दो नारियों के साथ शिशु थे। भेड़िया आया और एक को ले गया तो एक ने दूसरी से कहा कि तुम्हारे शिशु को ले गया है और निर्णय के लिये दावूद के पास गयीं। उन्हों ने बड़ी के लिये निर्णय कर दिया। फिर वह सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आयीं, उन्हों ने कहा, छुरी लाओ मैं तुम दोनों के लिये दो भाग कर दूँ। तो छोटी ने कहाः ऐसा न करें अल्लाह आप पर दया करे, यह उसी का शिशु है। यह सुन कर उन्हों ने छोटी के पक्ष में निर्णय कर दिया। (बुख़ारी, 3427, मुस्लिम,1720)

الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمِينَ ﴿٨١﴾

उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से[1] उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी हैं, और हम ही सर्वज्ञ हैं।

وَمِنَ الشَّيَاطِينِ مَن يَغُوصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ﴿٨٢﴾

82. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये डुबकी लगाते[2] तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक[3] थे।

وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٨٣﴾

83. तथा अय्यूब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है। और तू सब से अधिक दयावान् है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِن ضُرٍّ ۖ وَآتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَذِكْرَىٰ لِلْعَابِدِينَ ﴿٨٤﴾

84. तो हम ने उस की गुहार सुन ली[4] और दूर कर दिया जो दुःख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ, अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपासकों की।

وَإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّابِرِينَ ﴿٨٥﴾

85. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा ज़ुल किफ़्ल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।

---

1 अर्थात् वायु उन के सिंहासन को उन के राज्य में जहाँ चाहते क्षणों में पहुँचा देती थी।

2 अर्थात् मोतियाँ तथा जवाहिरात निकालने के लिये।

3 ताकि शैतान उन को कोई हानि न पहुँचाये।

4 आदरणीय अय्यूब अलैहिस्सलाम की अल्लाह ने उन के धन-धान्य तथा परिवार में परीक्षा ली। वह स्वयं रोगग्रस्त हो गये। परन्तु उन के धैर्य के कारण अल्लाह ने उन को फिर स्वस्थ कर दिया और धन-धान्य के साथ ही पहले से दो गुने पुत्र प्रदान किये।

وَاَدۡخَلۡنٰهُمۡ فِىۡ رَحۡمَتِنَا‌ ؕ اِنَّهُمۡ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ۝٨٦

86. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।

وَذَا النُّوۡنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنۡ لَّنۡ نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنۡتَ سُبۡحٰنَكَ ‌ۖ اِنِّىۡ كُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ‌ ۝٨٧

87. तथा ज़ुन्नून[1] को जब वह चला[2] गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अंधेरों में कि नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी[3] हूँ।

فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيۡنٰهُ مِنَ الۡغَمِّ‌ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـنْجِى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٨٨

88. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को।

وَزَكَرِيَّاۤ اِذۡ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرۡنِىۡ فَرۡدًا وَّاَنۡتَ خَيۡرُ الۡوٰرِثِيۡنَ‌ ۝٨٩

89. तथा ज़करिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार[4] को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।

فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ وَوَهَبۡنَا لَهٗ يَحۡيٰى وَاَصۡلَحۡنَا لَهٗ زَوۡجَهٗ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا يُسٰرِعُوۡنَ فِى الۡخَيۡرٰتِ

90. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस

1 ज़ुन्नून से अभिप्रेत यूनुस अलैहिस्सलाम हैं। नून का अर्थ अर्बी भाषा में मछली है। उन को "साहिबुल हूत" भी कहा गया है। अर्थात् मछली वाला। क्यों कि उन को अल्लाह के आदेश से एक मछली ने निगल लिया था। इस का कुछ वर्णन सूरह यूनुस में आ चुका है। और कुछ सूरह साफ़्फ़ात में आ रहा है।

2 अर्थात् अपनी जाति से क्रोधित हो कर आल्लाह के आदेश के बिना अपनी बस्ती से चले गये। इसी पर उन्हें पकड़ लिया गया।

3 सहीह हदीस में आता है कि जो भी मुसलमान इस शब्द के साथ किसी विषय में दुआ करेगा तो अल्लाह उस की दुआ को स्वीकार करेगा। (तिर्मिज़ी-3505)

4 आदरणीय ज़करिय्या ने एक पुत्र के लिये प्रार्थना की, जिस का वर्णन सूरह आले इमरान तथा सूरह ता-हा में आ चुका है।

وَيَدۡعُونَنَا رَغَبٗا وَرَهَبٗاۖ وَكَانُواْ لَنَا خَٰشِعِينَ ٩٠

की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़-धूप करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे।

وَٱلَّتِيٓ أَحۡصَنَتۡ فَرۡجَهَا فَنَفَخۡنَا فِيهَا مِن رُّوحِنَا وَجَعَلۡنَٰهَا وَٱبۡنَهَآ ءَايَةٗ لِّلۡعَٰلَمِينَ ٩١

91. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व[1] की, तो फूंक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार वासियों के लिये।

إِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمۡ أُمَّةٗ وَٰحِدَةٗ وَأَنَا۠ رَبُّكُمۡ فَٱعۡبُدُونِ ٩٢

92. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म[2] है, और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।

وَتَقَطَّعُوٓاْ أَمۡرَهُم بَيۡنَهُمۡۖ كُلٌّ إِلَيۡنَا رَٰجِعُونَ ٩٣

93. और खण्ड-खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।

فَمَن يَعۡمَلۡ مِنَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَلَا كُفۡرَانَ لِسَعۡيِهِۦ وَإِنَّا لَهُۥ كَٰتِبُونَ ٩٤

94. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।

وَحَرَٰمٌ عَلَىٰ قَرۡيَةٍ أَهۡلَكۡنَٰهَآ أَنَّهُمۡ لَا يَرۡجِعُونَ ٩٥

95. और असंभव है किसी भी बस्ती पर जिस का हम ने विनाश कर[3] दिया

---

1 इस से संकेत मर्यम तथा उस के पुत्र ईसा (अलैहिस्सलाम) की ओर है।

2 अर्थात सब नबियों का मूल धर्म एक है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मैं मर्यम के पुत्र ईसा से अधिक संबंध रखता हूँ। क्यों कि सब नबी भाई भाई हैं उन की मायें अलग अलग हैं, सब का धर्म एक है। (सहीह बुख़ारीः 3443)। और दूसरी हदीस में यह अधिक है किः मेरे और उस के बीच कोई और नबी नहीं है। (सहीह बुख़ारीः 3442)

3 अर्थात् उस के वासियों के दुराचार के कारण।

है कि वह फिर (संसार में) आ जाये।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज[1] और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾

97. और समीप आ जायेगा सत्य[2] वचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेंगी काफ़िरों की आँखें, (वे कहेंगे): "हाय हमारा विनाश"! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۗ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾

98. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मुर्तियों) को पूज रहे हो अल्लाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन हैं, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۤءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۗ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۤىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾

101. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भलाई का निर्णय हो चुका है, वही उस से दूर रखे जायेंगे।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीज़ों में सदा (मग्न) रहेंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰۤىِٕكَةُ ۗ

103. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फ़रिश्ते

1 याजूज तथा माजूज के विषय में देखिये सूरह कह्फ़, आयतः 93 से 100 तक का अनुवाद।

2 सत्य वचन से अभिप्राय प्रलय का वचन है।

هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝١٠٣

उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे): यही तुम्हारा वह दिन है जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा था।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝١٠٤

104. जिस दिन हम लपेट[1] देंगे आकाश को पंजिका के पन्नों को लपेट देने के समान, जैसे हम ने आरंभ किया था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार उसे[2] दुहरायेंगे, इस (वचन) को पूरा करना हम पर है, और हम पूरा कर के रहेंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝١٠٥

105. तथा हम ने लिख दिया है ज़बूर[3] में शिक्षा के पश्चात् कि धरती के उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।

إِنَّ فِي هٰذَا لَبَلَاغًا لِقَوْمٍ عَابِدِينَ ۝١٠٦

106. वस्तुतः इस (बात) में एक बड़ा उपदेश है उपासकों के लिये।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ ۝١٠٧

107. और (हे नबी!) हम ने आप को नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के लिये दया बना[4] कर।

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝١٠٨

108. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस यही वह्यी की जा रही है कि तुम सब का पूज्य बस एक ही पूज्य है, फिर क्या तुम उस के आज्ञाकारी[5] हो?

---

1 (देखियेः सूरह ज़ुमर, आयतः 67)

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भाषण दिया कि लोग अल्लाह के पास बिना जूते के, नग्न, तथा बिना ख़तने के एकत्र किये जायेंगे। फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सर्वप्रथम वस्त्र पहनाये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी, 3349)

3 ज़बूर वह पुस्तक है जो दावूद अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी।

4 अर्थात् जो आप पर ईमान लायेगा, वही लोक-परलोक में अल्लाह की दया का अधिकारी होगा।

5 अर्थात दया एकेश्वरवाद में है, मिश्रणवाद में नहीं।

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

109. फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया[1], और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾

110. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो।

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾

111. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह[2] तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तथा लाभ हो एक निर्धारित समय तक?

قَالَ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

112. उस (नबी) ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता माँगी जाये उन बातों पर जो तुम लोग बना रहे हो।

1 अर्थात् ईमान न लाने और मिश्रणवाद के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् यातना में विलम्ब।

सूरह हज्ज - 22

सूरह हज्ज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह में हज्ज की साधारण घोषणा की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह हज्ज है।
- आरंभिक आयतों में प्रलय के कड़े भूकम्प पर सावधान करते हुये इस बात से सूचित किया गया है कि शैतान के उकसाने से कितने ही लोग अल्लाह के बारे में निर्मूल बातों में उलझे रहते हैं जिस के कारण वह नरक की आग में जा गिरेंगे।
- दूसरे जीवन के प्रमाण और गुमराही की बातों के परिणाम बताये गये हैं।
- अल्लाह की असुद्ध वंदना को व्यर्थ बताते हुये शिर्क का खण्डन किया गया है।
- यह बताया गया है कि कॉबा एक अल्लाह की वंदना के लिये बनाया गया है। तथा हज्ज के कर्मों को बताया गया है। और मुसलमानों को अनुमति दी गई है कि जिहाद कर के कॉबा को मुक्त करायें।
- यातना की जल्दी मचाने पर अत्याचारी जातियों के विनाश की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की राह में हिज्रत करने पर शूभसूचना सुनाई गई है।
- अल्लाह के उपकारों का वर्णन तथा विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये शिर्क को निर्मूल बताया गया है।
- अन्त में मुसलमानों को अपने कर्तव्य का पालन करने और अल्लाह की राह में प्रयास करने और लोगों के सामने उस के धर्म की गवाही देने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हे मनुष्यो! अपने पालनहार से डरो, वास्तव में क़्यामत (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ①

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, सुध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीते शिशु की, और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ, तथा तुम देखोगे लोगों को मतवाले जब कि वे मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी[1] होगी।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ②

3. और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान के, तथा अनुसरण करते हैं प्रत्येक उद्धत शैतान का।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ③

4. जिस के भाग्य में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनायेगा वह उसे कुपथ कर देगा और उसे राह दिखायेगा नरक की यातना की ओर।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ④

5. हे लोगो! यदि तुम किसी संदेह में हो

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا

---

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह प्रलय के दिन कहेगाः हे आदम! वह कहेंगेः मैं उपस्थित हूँ। फिर पुकारा जायेगा कि अल्लाह आदेश देता है कि अपनी संतान में से नरक में भेजने के लिये निकालो। वह कहेंगे कितने? वह कहेगाः हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। तो उसी समय गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और शिशु के बाल सफेद हो जायेंगे। और तुम लोगों को मतवाले समझोगे। जब कि वे मतवाले नहीं होंगे किन्तु अल्लाह की यातना कड़ी होगी। यह बात लोगों को भारी लगी और उनके चेहरे बदल गये। तब आप ने कहाः याजूज और माजूज में से नो सौ निन्नानवे होंगे और तुम में से एक। (संक्षिप्त हदीस, बुख़ारीः 4741)

خَلَقْنَٰكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِى ٱلْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا۟ أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ ٱلْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ۝

पुनः जीवित होने के विषय में, तो (सोचो कि) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस के खण्ड से जो चित्रित तथा चीत्रविहीन होता है[1], ताकि हम उजागर कर[2] दें तुम्हारे लिये, और स्थिर रखते हैं गर्भाशयों में जब तक चाहें एक निर्धारित अवधि तक, फिर तुम्हें निकालते हैं शिशु बना कर, फिर ताकि तुम पहुँचो अपने यौवन को, और तुम में से कुछ (पहले ही) मर जाते हैं और तुम में से कुछ जीर्ण आयु की ओर फेर दिये जाते हैं ताकि उसे कुछ ज्ञान न रह जाये ज्ञान के पश्चात्,

1 अर्थातः यह वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी रक्त बन जाता है। फिर गोश्त का लोथड़ा बन जाता है। फिर उस से सहीह सलामत बच्चा बन जाता है। और ऐसे बच्चे में जान फूँक दी जाती है। और अपने समय पर उस की पैदाइश हो जाती है। और -अल्लाह की इच्छा से- कभी कुछ कारणों फलस्वरूप ऐसा भी होता है कि खून का वह लोथड़ा अपना सहीह रूप नहीं धार पाता। और उस में रूह भी नहीं फूँकी जाती। और वह अपने पैदाइश के समय से पहले ही गिर जाता है। सहीह हदीसों में भी माँ के पेट में बच्चे की पैदाइश की इन अवस्थाओं की चर्चा मिलती है। उदाहरण स्वरूप, एक हदीस में है कि वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी खून बन जाता है। फिर चालीस दिन के बाद लोथड़ा अथवा गोश्त की बोटी बन जाता है। फिर अल्लाह की ओर से एक फ़रिश्ता चार शब्द ले कर आता हैः वह संसार में क्या काम करेगा, उस की आयु कितनी होगी, उस को क्या और कितनी जीविका मिलेगी, और वह शुभ होगा अथवा अशुभ। फिर वह उस में जान डालता है। (देखियेः सहीह बुख़ारी, 3332)
अर्थातः चार महीने का बाद उस में जान डाली जाती है। और बच्चा एक सहीह रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार आज जिस को वेज्ञानिकों ने बहुत दोड़ धूप के बाद सिद्ध किया है उस को कुर्आन ने चौदह सौ साल पूर्व ही बता दिया था। यह इस बात का प्रमाण है कि यह किताब (कुर्आन) किसी मानव की बनाई हुई नहीं है, बल्कि अल्लाह की ओर से है।

2 अर्थात् अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य को।

तथा तुम देखते हो धरती को सूखी, फिर जब हम उस पर जल-वर्षा करते हैं, तो सहसा लहलहाने और उभरने लगी, तथा उगा देती है प्रत्येक प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ﴿٦﴾

6. यह इस लिये है कि अल्लाह ही सत्य है तथा वही जीवित करता है मुर्दों को, तथा वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾

7. यह इस कारण है कि क़्यामत (प्रलय) अवश्य आनी है जिस में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह ही उन्हें पुनः जीवित करेगा जो समाधियों (क़ब्रों) में हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ﴿٨﴾

8. तथा लोगों में वह (भी) है जो विवाद करता है अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान और मार्ग दर्शन एवं बिना किसी ज्योतिमय पुस्तक के।

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾

9. अपना पहलू फेर कर ताकि अल्लाह की राह[1] से कुपथ कर दे। उसी के लिये संसार में अपमान है और हम उसे प्रलय के दिन दहन की यातना चखायेंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۧ﴿١٠﴾

10. यह उन कर्मों का परिणाम है जिसे तेरे हाथों ने आगे भेजा है, और अल्लाह अत्याचारी नहीं है (अपने) भक्तों के लिये।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ

11. तथा लोगों में वह (भी) है जो इबादत (वंदना) करता है अल्लाह की एक

1 अर्थात अभिमान करते हुये।

اَصَابَهٗ خَيْرُ اِطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ
فِتْنَةُ اِنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۭ
ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

किनारे पर हो कर[1], फिर यदि उसे कोई लाभ पहुँचता है तो वह संतोष हो जाता है। और यदि उसे कोई परीक्षा आ लगे तो मुँह के बल फिर जाता है। वह क्षति में पड़ गया लोक तथा परलोक की, और यही खुली क्षति है।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ
ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾

12. वह पुकारता है अल्लाह के अतिरिक्त उसे जो न हानि पहुँचा सके उसे और न लाभ, यही दूर[2] का कुपथ है।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ
الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾

13. वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उस के लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾

14. निश्चय अल्लाह उन्हें प्रवेश देगा जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वास्तव में अल्लाह करता है जो चाहता है।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ
ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

15. जो सोचता है कि उस[3] की सहायता नहीं करेगा अल्लाह लोक तथा परलोक में, तो उसे चाहिये कि तान ले कोई रस्सी आकाश की ओर फिर फाँसी दे कर मर जाये। फिर देखे कि क्या दूर कर देती है उस का उपाय उस के रोष (क्रोध)[4] को?

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ

16. तथा इसी प्रकार हम ने इस (कुर्आन)

1 आर्थात् संदिग्ध हो कर।

2 अर्थात् कोई दुख होने पर अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारना।

3 अर्थात् अपने रसूल की।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह अपने नबी की सहायता अवश्य करेगा।

مَنْ يُّرِيْدُ۝١٦

को खुली आयतों में अवतरित किया है। और अल्लाह सुपथ दर्शा देता है जिसे चाहता है।

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِیْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕیْنَ وَالنَّصٰرٰی وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا ۖۗ اِنَّ اللّٰهَ یَفْصِلُ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ۝١٧

17. जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुये, और जो साबई तथा ईसाई हैं और जो मजूसी हैं तथा जिन्हों ने शिर्क किया है, अल्लाह निर्णय[1] कर देगा उन के बीच प्रलय के दिन। निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِیْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِیْرٌ حَقَّ عَلَیْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ یُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ۝١٨

18. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ही को सजदा[2] करते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा सूर्य और चाँद तथा तारे और पर्वत एवं वृक्ष और पशु तथा बहुत से मनुष्य, और बहुत से वह भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं है। निःसंदेह अल्लाह करता है जो चाहता है।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِیْ رَبِّهِمْ ؗ فَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِیَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ یُصَبُّ مِنْ

19. यह दो पक्ष हैं जिन्होंने विभेद किया[3] अपने पालनहार के विषय में, तो इन में से काफ़िरों के लिये ब्योंत दिये गये हैं

---

1 अर्थात् प्रत्येक को अपने कर्म की वास्तविक्ता का ज्ञान हो जायेगा।

2 इस आयत में यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है उस का कोई साझी नहीं। क्यों कि इस विश्व की सभी उत्पत्ति उसी के आगे झुक रही है और बहुत से मनुष्य भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी को सजदा कर रहे हैं। अतः तुम भी उस के अज्ञाकारी हो कर उसी के आगे झुको। क्यों कि उस की अवैज्ञा यातना को अनिवार्य कर देती है। और ऐसे व्यक्ति को अपमान के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।

3 अर्थात् संसार में कितने ही धर्म क्यों न हों वास्तव में दो ही पक्ष हैंः एक सत्धर्म का विरोधी और दूसरा सत्धर्म का अनुयायी, अर्थात् काफ़िर और मोमिन और प्रत्येक का परिणाम बताया जा रहा है।

फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल हमीम (19)

فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾

अग्नि के वस्त्र, उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾

20. जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उन की खालें।

وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾

21. और उन्हीं के लिये लोहे के आँकुश हैं।

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

22. जब भी उस (अग्नि) से निकलना चाहेंगे व्याकुल हो कर, तो उसी में फेर दिये जायेंगे, तथा (कहा जायेगा कि) दहन की यातना चखो।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾

23. निश्चय अल्लाह प्रवेश देगा उन्हें जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित होंगी, उन में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे तथा मोती, और उन का वस्त्र उस में रेशम का होगा।

وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

24. तथा उन्हें मार्ग दर्शा दिया गया पवित्र बात[1] का, और उन्हें दर्शा दिया गया प्रशंसित (अल्लाह) का[2] मार्ग।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾

25. जो काफ़िर हो गये[3] और रोकते हैं अल्लाह की राह से और उस मस्जिदे हराम से जिसे सब के लिये हम ने एक जैसा बना दिया है: उस के वासी हों अथवा प्रवासी। तथा जो उस में अत्याचार से अधर्म का

---

1 अर्थात् स्वर्ग का, जहाँ पवित्र बातें ही होंगी, वहाँ व्यर्थ पाप की बातें नहीं होंगी।

2 अर्थात् संसार में इस्लाम तथा कुर्आन का मार्ग।

3 इस आयत में मक्का के काफ़िरों को चेतावनी दी गई है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इस्लाम के विरोधी थे। और उन्होंने आप को तथा मुसलमानों को "हुदैबिया" के वर्ष मस्जिदे हराम से रोक दिया था।

विचार करेगा, हम उसे दुःखदायी यातना चखायेंगे।[1]

26. तथा वह समय याद करो जब हम ने निश्चित कर दिया इब्राहीम के लिये इस घर (काबा) का स्थान[2] (इस प्रतिबंध के साथ) कि साझी न बनाना मेरा किसी चीज़ को, तथा पवित्र रखना मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, रुकूअ (झुकना) और सज्दा करने वालों के लिये।

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾

27. और घोषणा कर दो लोगों में हज्ज की, वे आयेंगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली पतली स्वारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आयेंगी।

وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾

28. ताकि वह उपस्थित हों अपने लाभ प्राप्त करने के लिये, और ताकि अल्लाह का नाम[3] लें निश्चित[4] दिनों में उस पर जो उन्हें प्रदान किया है पालतू चौपायों में से। फिर उस में से स्वयं खाओ तथा भूखे निर्धन को खिलाओ।

لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾

29. फिर अपना मैल कुचैल दूर[5] करें

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ

1 यह मक्का की मुख्य विशेषताओं में से है कि वहाँ रहने वाला अगर कुफ़्र और शिर्क या किसी बिद्अत का विचार भी दिल में लाये तो उस के लिये घोर यातना है।

2 अर्थात् उस का निर्माण करने के लिये। क्यों कि नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान के कारण सब बह गया था इस लिये अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के लिये बैतुल्लाह का वास्तविक स्थान निर्धारित कर दिया। और उन्हों ने अपने पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के साथ उसे दोबारा स्थापित किया।

3 अर्थात् उसे वध करते समय अल्लाह का नाम लें।

4 निश्चित दिनों से अभिप्राय 10,11, 12 तथा 13 ज़िल हिज्जा के दिन हैं।

5 अर्थात् 10 ज़िल हिज्जा को बड़े ((जमरे)) को जिस को लोग शैतान कहते हैं

وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें, और परिक्रमा करें प्राचीन घर[1] की।

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿٣٠﴾

30. यह है (आदेश), और जो अल्लाह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे, तो यह उस के लिये अच्छा है उस के पालनहार के पास। और हलाल (वैध) कर दिये गये तुम्हारे लिये चौपाये उन के सिवा जिन का वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया[2] गया है, अतः मुर्तियों की गन्दगी से बचो, तथा झूठ बोलने से बचो।

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾

31. अल्लाह के लिये एकेश्वरवादी होते हुये उस का साझी न बनाते हुये। और जो साझी बनाता हो अल्लाह का तो मानो वह आकाश से गिर गया फिर उसे पक्षी उचक ले जाये अथवा वायु का झोंका किसी दूर स्थान पर फेंक[3] दे।

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾

32. यह (अल्लाह का आदेश है), और जो आदर करे अल्लाह के प्रतीकों (निशानों)[4] का, तो यह निःसन्देह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है।

कंकरियाँ मारने के पश्चात् एहराम उतार दें। और बाल नाखुन साफ़ कर के स्नान करें।

1 अर्थात् कॉबा का।

2 (देखिये सूरह माइदा, आयतः 3)

3 यह शिर्क के परिणाम का उदाहरण है कि मनुष्य शिर्क के कारण स्वाभाविक ऊँचाई से गिर जाता है। फिर उसे शैतान पक्षियों के समान उचक ले जाते हैं, और वह नीच बन जाता है। फिर उस में कभी ऊँचा विचार उत्पन्न नहीं होता, और वह मांसिक तथा नैतिक पतन की ओर ही झुका रहता है।

4 अर्थात् भक्ति के लिये उस के निश्चित किये हुये प्रतीकों की।

33. तुम्हारे लिये उन में बहुत से लाभ[1] हैं एक निर्धारित समय तक, फिर उन के वध करने का स्थान प्राचीन घर के पास है।

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾

34. तथा प्रत्येक समुदाय के लिये हम ने बलि की विधि निर्धारित की है, ताकि वह अल्लाह का नाम लें उस पर जो प्रदान किये हैं उन को पालतू चौपायों में से। अतः तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आज्ञाकारी रहो। और (हे नबी!) आप शुभ सूचना सुना दें विनीतों को।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ فَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾

35. जिन की दशा यह है कि जब अल्लाह की चर्चा की जाये तो उन के दिल डर जाते हैं तथा धैर्य रखते हैं उस विपदा पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ की स्थापना करने वाले हैं, तथा उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٥﴾

36. और ऊँटों को हम ने बनाया है तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों में, तुम्हारे लिये उन में भलाई है। अतः अल्लाह का नाम लो उन पर (बध करते समय) खड़े कर के। और जब धरती से लग जायें[2] उन के पहलू तो स्वयं खाओ उन में से और खिलाओ उस में से संतोषी तथा भिक्षु को, इसी प्रकार हम ने उसे वश

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُم مِّن شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافَّ ۖ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

---

1 अर्थात् कुर्बानी के पशु पर सवारी तथा उन के दूध और ऊन से लाभ प्राप्त करना उचित है।

2 अर्थात उस का प्राण पूरी तरह निकल जाये।

में कर दिया है तुम्हारे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

37. नहीं पहुँचते अल्लाह को उन के माँस न उन के रक्त, परन्तु उस को पहुँचता है तुम्हारा आज्ञा पालन। इसी प्रकार उस (अल्लाह) ने उन (पशुओं) को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की महिमा का वर्णन करो[1] उस मार्गदर्शन पर जो तुम्हें दिया है। और आप सत्कर्मियों को शुभ सूचना सुना दें।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

38. निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है उन की ओर से जो ईमान लाये हैं, वास्तव में अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न से प्रेम नहीं करता।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝

39. उन्हें अनुमति दे दी गई जिन से युद्ध किया जा रहा है क्यों कि उन पर अत्याचार किया गया है, और निश्चय अल्लाह उन की सहायता पर पूर्णतः सामर्थ्यवान है।[2]

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝

40. जिन को इन के घरों से अकारण निकाल दिया गया केवल इस बात पर कि वह कहते थे कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और यदि अल्लाह प्रतिरक्षा न कराता कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा तो ध्वस्त कर दिये

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

1 बध करते समय (बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर) कहो।

2 यह प्रथम आयत है जिस में जिहाद की अनुमति दी गयी है। और कारण यह बताया गया है कि मुसलमान शत्रु के अत्याचार से अपनी रक्षा करें। फिर आगे चल कर सूरह बक़रा, आयतः 190 से 193 और 216 तथा 226 में युद्ध का आदेश दिया गया है। जो (बद्र) के युद्ध से कुछ पहले दिया गया।

जाते आश्रम तथा गिरजे और यहूदियों के धर्म स्थल तथा मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम अधिक लिया जाता है। और अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ ۗ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

41. यह[1] वह लोग हैं कि यदि हम इन्हें धरती में अधिपत्य प्रदान कर दें, तो नमाज़ की स्थापना करेंगे और ज़कात देंगे, तथा भलाई का आदेश देंगे, और बुराई से रोकेंगे, और अल्लाह के अधिकार में है सब कर्मों का परिणाम।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾

42. और (हे नबी!) यदि वह आप को झुठलायें तो इन से पूर्व झुठला चुकी है नूह की जाति और (आद) तथा (समूद)।

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾

43. तथा इब्राहीम की जाति और लूत की (जाति)।

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۖ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾

44. तथा मद्यन वाले[2], और मूसा (भी) झुठलाये गये, तो मैं ने अवसर दिया काफ़िरों को, फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरा दण्ड कैसा रहा?

فَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ﴿٤٥﴾

45. तो कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया, जो अत्याचारी थीं, वह अपनी छतों के समेत गिरी हुई हैं और बेकार कुऐं तथा पक्के ऊँचे भवन।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ

46. तो क्या वह धरती में फिरे नहीं? तो उन के ऐसे दिल होते जिन से

---

1 अर्थात् उत्पीड़ित मुसलमान।

2 अर्थात् शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति।

यَعْقِلُونَ بِهَآ أَوْ ءَاذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِن تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

يَعْقِلُونَ بِهَآ أَوْ ءَاذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى ٱلْأَبْصَٰرُ وَلَٰكِن تَعْمَى ٱلْقُلُوبُ ٱلَّتِى فِى ٱلصُّدُورِ ﴿٤٦﴾

समझते, अथवा ऐसे कान होते जिन से सुनते, वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हो जातीं, परन्तु वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में[1] हैं।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِٱلْعَذَابِ وَلَن يُخْلِفَ ٱللَّهُ وَعْدَهُۥ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾

47. तथा वे आप से शीघ्र यातना की माँग कर रहे हैं, और अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा। और निश्चय आप के पालनहार के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना से हज़ार वर्ष के बराबर[2] है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَىَّ ٱلْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾

48. और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने अवसर दिया जब कि वह अत्याचारी थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) वापिस आना है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّمَآ أَنَا۠ لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٩﴾

49. (हे नबी!) आप कह दें कि हे लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ।

فَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾

50. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये, उन्हीं के लिये क्षमा और सम्मानित जीविका है।

وَٱلَّذِينَ سَعَوْا۟ فِىٓ ءَايَٰتِنَا مُعَٰجِزِينَ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَحِيمِ ﴿٥١﴾

51. और जिन्होंने प्रयास किया हमारी आयतों में विवश करने का, तो वही नारकी हैं।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِىٍّ إِلَّآ

52. और (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी रसूल और न किसी नबी

1 आयत का भावार्थ यह है कि दिल की सूझ-बूझ चली जाती है तो आँखें भी अन्धी हो जाती हैं और देखते हुये भी सत्य को नहीं देख सकतीं।

2 अर्थात् वह शीघ्र यातना नहीं देता, पहले अवसर देता है जैसा कि इस के पश्चात् की आयत में बताया जा रहा है।

إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَٰنُ فِي أُمْنِيَّتِهِۦ فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾

को किन्तु जब उस ने (पुस्तक) पढ़ी तो संशय डाल दिया शैतान ने उस के पढ़ने में। फिर निरस्त कर देता है अल्लाह शैतान के संशय को, फिर सुदृढ़ कर देता है अल्लाह अपनी आयतों को और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ[1] है।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّٰلِمِينَ لَفِي شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

53. यह इस लिये ताकि अल्लाह शैतानी संशय को उन के लिये परीक्षा बना दे जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है और जिन के दिल कड़े हैं। और वास्तव में अत्याचारी विरोध में बहुत दूर चले गये हैं।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِۦ فَتُخْبِتَ لَهُۥ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ ءَامَنُوا إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٤﴾

54. और इस लिये (भी) ताकि विश्वास हो जाये उन्हें जो ज्ञान दिये गये हैं कि यह (कुर्आन) सत्य है आप के पालनहार की ओर से, और इस पर ईमान लायें और इस के लिये झुक जायें उन के दिल, और निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लायें सुपथ की ओर।

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾

55. तथा जो काफ़िर हो गये तो वह सदा संदेह में रहेंगे इस (कुर्आन) से, यहाँ तक कि उन के पास सहसा प्रलय आ जाये, अथवा उन के पास बांझ[2] दिन की यातना आ जाये।

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ فِي جَنَّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

56. राज्य उस दिन अल्लाह ही का होगा, वही उन के बीच निर्णय करेगा, तो जो ईमान लाये और सदाचार किये

---

1 आयत का अर्थ यह है कि जब नबी धर्मपुस्तक की आयतें सुनाते हैं तो शैतान, लोगों को उस के अनुपालन से रोकने के लिये संशय उत्पन्न करता है।

2 बांझ दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है क्यों कि उस की रात नहीं होगी।

तो वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

57. और जो काफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झूठलाया, उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾

58. तथा जिन लोगों ने हिज्रत (प्रस्थान) की अल्लाह की राह में, फिर मारे गये अथवा मर गये तो उन्हें अल्लाह अवश्य उत्तम जीविका प्रदान करेगा। और वास्तव में अल्लाह ही सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾

59. वह उन्हें प्रवेश देगा ऐसे स्थान में जिस से वह प्रसन्न हो जायेंगे, और वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सहन्शील है।

لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

60. यह वास्तविक्ता है, और जिस ने बदला लिया वैसा ही जो उस के साथ किया गया फिर उस के साथ अत्याचार किया जाये, तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त क्षमाशील है।

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

61. यह इस लिये कि अल्लाह प्रवेश देता है रात्रि को दिन में, और प्रवेश देता है दिन को रात्रि में। और अल्लाह सब कुछ सुनने देखने वाला[1] है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾

62. यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है, और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य हैं, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान् है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

---

1 अर्थात् उस का नियम अन्धा नहीं है कि जिस के साथ अत्याचार किया जाये उस की सहायता न की जाये। रात्रि तथा दिन का परिवर्तन बता रहा है कि एक ही स्थिति सदा नहीं रहती।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾

63. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से जल बरसाता है तो भूमि हरी हो जाती है, वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾

64. उसी का है जो आकाशों में तथा जो धरती में है। और वास्तव में अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसित है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَن تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٥﴾

65. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया[1] है तुम्हारे, जो कुछ धरती में है, तथा नाव को (जो) चलती है सागर में उस के आदेश से, और रोकता है आकाश को धरती पर गिरने से परन्तु उस की अनुमति से? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अति करुणामय दयावान् है।

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾

66. तथा वही है जिस नें तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जीवित करेगा, वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

لِّكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ ۖ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ ۚ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

67. (हे नबी!) हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये (इबादत की) विधि निर्धारित कर दी थी, जिस का वह पालन करते रहे, अतः उन्हें आप से इस (इस्लाम के नियम) के संबंध में विवाद नहीं करना चाहिये। और आप अपने पालनहार की ओर लोगों को बुलायें, वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।[2]

---

1 अर्थात् तुम उन से लाभान्वित हो रहे हो।

2 अर्थात् जिस प्रकार प्रत्येक युग में लोगों के लिये धार्मिक नियम निर्धारित किये गये उसी प्रकार अब क़ुर्आन धर्म विधान तथा जीवन विधान है। इस लिये अब प्राचीन धर्मों के अनुयायियों को चाहिये कि इस पर ईमान लायें, न कि इस

وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

68. और यदि वह आप से विवाद करें, तो कह दें कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

69. अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा क़्यामत (प्रलय) के दिन जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

70. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो आकाश तथा धरती में है, यह सब एक किताब में (अंकित) है। वास्तव में यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾

71. और वह इबादत (वंदना) अल्लाह के अतिरिक्त उस की कर रहे हैं जिस का उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है, और न उन्हें उस का कोई ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होगा।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَٰلِكُمُ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

72. और जब उन को सुनायी जाती हैं हमारी खुली आयतें तो आप पहचान लेते हैं उन के चेहरों में जो काफ़िर हो गये बिगाड़ को। और लगता है कि वह आक्रमण कर देंगे उन पर जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। आप कह देंः क्या मैं तुम्हें इस से बुरी चीज़ बता दूँ? वह अग्नि है जिस का वचन अल्लाह ने काफ़िरों को दिया है, और वह बहुत ही बुरा आवास है।

विषय में आप से विवाद करें। और आप निश्चिन्त हो कर लोगों को इस्लाम की ओर बुलायें क्यों कि आप सत्धर्म पर हैं। और अब आप के बाद सारे पुराने धर्म निरस्त कर दिये गये हैं।

يَاأَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾

73. हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इसे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिये मिल जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। माँगने वाले निर्बल, और जिन से माँगा जाये वह दोनों ही निर्बल हैं।

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

74. उन्हों ने अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उस का आदर करना चाहिये! वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾

75. अल्लाह ही निर्वाचित करता है फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूलों को। वास्तव में वह सुनने तथा देखने[1] वाला है।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

76. वह जानता है जो उन के सामने है और जो कुछ उन से ओझल है, और उसी की ओर सब काम फेरे जाते हैं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۩ ﴿٧٧﴾

77. हे ईमान वालो! रुकूअ करो तथा सजदा करो, और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ

78. तथा अल्लाह के लिये जिहाद करो जैसे जिहाद करना[2] चाहिये। उसी

1 अर्थात् वही जानता है कि रसूल (संदेशवाहक) बनाये जाने के योग्य कौन है।

2 एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि कोई धन के लिये लड़ता है, कोई नाम के लिये और कोई वीरता दिखाने के लिये। तो कौन अल्लाह के लिये लड़ता है? आप ने फ़रमायाः जो अल्लाह का शब्द ऊँचा करने के लिये लड़ता है। (सहीह बुख़ारीः 123, 2810)

اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۭ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ڏ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ ھٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ عَلَي النَّاسِ ښ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۭ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

ने तुम्हें निर्वाचित किया है और नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई संकीर्णता (तंगी)। यह तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है इस (कुर्आन) से पहले तथा इस में भी। ताकि रसूल गवाह हों तुम पर, और तुम गवाह[1] बनो सब लोगों पर। अतः नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात दो, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़[2] लो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

1 व्याख्या के लिये देखिये सूरह बक़रा, आयतः 143।

2 अर्थात् उस की आज्ञा और धर्म विधान का पालन करो।

सूरह मुमिनून - 23

सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 118 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईमान वालों की सफलता तथा उन के गुणों को बताया गया है।
- और जिस आस्था पर सफलता निर्भर है उस के सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और संदेहों को दूर किया गया है।
- यह बताया गया है कि सब नबियों का धर्म एक था, लोगों ने विभेद कर के अनेक धर्म बना लिये।
- जो लोग अचेत हैं उन्हें सावधान करने के साथ साथ मौत तथा प्रलय के दिन उनकी दुर्दशा को बताया गया है।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मुसलमानों को अल्लाह की क्षमा तथा दया के लिये प्रार्थना की शिक्षा दी गयी है।
- हदीस में है कि जिस में तीन बातें हों उसे ईमान की मिठास मिल जाती हैः जिस को अल्लाह और उस के रसूल सब से अधिक प्रिय हों। और जो किसी से मात्र अल्लाह के लिये प्रेम करे। और जिसे यह अप्रिय हो कि इस के पश्चात् कुफ़्र में वापिस जाये जब कि अल्लाह ने उसे उस से निकाल दिया। जैसे की उसे यह अप्रिय हो कि उसे नरक में फेंक दिया जाये। (सहीह बुख़ारी, 21, मुस्लिम, 43)

बِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ‏ ①

1. सफल हो गये ईमान वाले।

الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ‏ ②

2. जो अपनी नमाज़ों में विनीत रहने वाले हैं।

3. और जो व्यर्थ[1] से विमुख रहने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝

4. तथा जो ज़कात देने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝

5. और जो अपने गुप्तांगो की रक्षा करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝

6. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝

7. फिर जो इस के अतिरिक्त चाहें, तो वही उल्लंघनकारी हैं।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝

8. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝

9. तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝

10. यही उत्तराधिकारी हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝

11. जो उत्तराधिकारी होंगे फ़िर्दौस[2] के, जिस में वे सदावासी होंगे।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ۗ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

12. और हम ने उत्पन्न किया हैं मनुष्य को मिट्टी के सार[3] से।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝

13. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान[4] में।

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝

14. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में, फिर हम ने उसे मांस का

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً

---

1 अर्थात् प्रत्येक व्यर्थ कार्य तथा कथन से। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान रखता हो वह अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे। (सहीह बुख़ारी, 6019, मुस्लिम, 48)

2 फ़िर्दौसः स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान।

3 अर्थात् वीर्य से।

4 अर्थात् गर्भाशय में।

فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ١٤

लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।

ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ١٥

15. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ١٦

16. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ١٧

17. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं[1] हैं।

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ١٨

18. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान हैं।

فَأَنشَأْنَا لَكُم بِهِ جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ١٩

19. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग़, तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल हैं, और उसी में से तुम खाते हो।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِن طُورِ سَيْنَاءَ تَنبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْآكِلِينَ ٢٠

20. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ٢١

21. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में[2] है।

---

1 अर्थात् उत्पत्ति की आवश्यक्ता तथा जीवन के संसाधन की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

2 अर्थात् दूध।

तथा तुम्हारे लिये उन में अन्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

22. तथा उन पर और नावों पर तुम सवार किये जाते हो।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

23. तथा हम ने भेजा नूह[1] को उस की जाति की ओर, उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वंदना) अल्लाह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

24. तो उन प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अल्लाह चाहता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे[2] सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

25. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है, तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾

26. नूह ने कहाः हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ

27. तो हम ने उस की ओर वह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी वह्यी के अनुसार, और जब हमारा

1 यहाँ यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ने जिस प्रकार तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये उसी प्रकार तुम्हारे आत्मिक मार्ग दर्शन की व्यवस्था की और रसूलों को भेजा जिन में नूह अलैहिस्सलाम प्रथम रसूल थे।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की बात अपने पूर्वजों के समय में सुनी ही नहीं।

فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक-एक जोड़े तथा अपने परिवार को, उस के सिवा जिस पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे संबोधित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये हैं, निश्चय वे डुबो दिये जायेंगे।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾

28. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी हैं नाव पर, तो कहः सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।

وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٢٩﴾

29. तथा कहः हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾

30. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा निःसंदेह हम परीक्षा लेने[1] वाले हैं।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٣١﴾

31. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾

32. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्हीं में से कि तुम इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तुम्हारा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾

33. और उस की जाति के प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये तथा आख़िरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हें सम्पन्न किया था संसारिक जीवन में:

---

1 अर्थात् रसूलों के द्वारा परीक्षा लेते रहे हैं।

यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और पीता है जो तुम पीते हो।

وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُونَ ٣٤

34. और यदि तुम ने मान लिया अपने जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम क्षतिग्रस्त हो।

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظٰمًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ٣٥

35. क्या वह तुम को वचन देता है कि जब तुम मर जाओगे और धूल तथा हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर जीवित निकाले जाओगे?

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ٣٦

36. बहुत दूर की बात है जिस का तुम्हे वचन दिया जा रहा है।

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ٣٧

37. जीवन तो बस संसारिक जीवन है, हम मरते-जीते हैं, और हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ٣٨

38. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस ने अल्लाह पर एक झूठ घड़ लिया है। और हम उस का विश्वास करने वाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ٣٩

39. नबी ने प्रार्थना कीः मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के झुठलाने पर मुझे।

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِينَ ٤٠

40. (अल्लाह ने) कहाः शीघ्र ही वह (अपने किये पर) पछतायेंगे।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَاءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ٤١

41. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों के लिये।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قُرُونًا ءَاخَرِينَ ٤٢

42. फिर हम ने पैदा किया उन के

पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

43. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने समय से और न पीछे।[1]

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۚ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

44. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के पास उस का रसूल आया, उन्हों ने उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे लगा[2] दिया उन के एक को दूसरे के और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾

45. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के भाई हारून को अपनी निशानियों तथा खुले तर्क के साथ।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

46. फ़िरऔन और उस के प्रमुखों की ओर तो उन्हों ने गर्व किया, तथा वे थे ही अभिमानी लोग।

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿٤٧﴾

47. उन्हों ने कहाः क्या हम ईमान लायें अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि उन दोनों की जाति हमारे आधीन है?

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾

48. तो उन्हों ने दोनों को झुठला दिया, तथा हो गये विनाशों में।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

49. और हम ने प्रदान की मूसा को पुस्तक[3], ताकि वह मार्ग दर्शन पा जायें।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ

50. और हम ने बना दिया मरयम के पुत्र

1 अर्थात् किसी जाति के विनाश का समय आ जाता है तो एक क्षण की भी देर-सवेर नहीं होती।

2 अर्थात् विनाश में।

3 अर्थात् तौरात।

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝٥٠

तथा उस की माँ को एक निशानी, तथा दोनों को शरण दी एक उच्च बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के स्थान की ओर।[1]

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝٥١

51. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ[2] चीज़ों में से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में, मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँति अवगत हूँ।

وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ۝٥٢

52. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है और मैं ही तुम सब का पालनहार हूँ, अतः मुझी से डरो।

فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٣

53. तो उन्हों ने खण्ड कर लिया अपने धर्म का आपस में कई खण्ड, प्रत्येक सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास[3] है मग्न है।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝٥٤

54. अतः (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें उन की अचेतना में कुछ समय तक।

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ۝٥٥

55. क्या वे समझते हैं कि हम जो सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा संतान से।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝٥٦

56. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये

---

1 इस से अभिप्राय बैतुल मक़्दिस है।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः अल्लाह स्वच्छ है और स्वच्छ ही को स्वीकार करता है। और ईमान वालों को वही आदेश दिया है जो रसूलों को दिया है। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (संक्षिप्त अनुवाद, मुस्लिमः 1015)

3 इन आयतों में कहा गया है कि सब रसूलों ने यही शिक्षा दी है कि स्वच्छ पवित्र चीज़ें खाओ और सदाचार करो। तुम्हारा पालनहार एक है और तुम सभी का धर्म एक है। परन्तु लोगों ने धर्म में विभेद कर के बहुत से सम्प्रदाय बना लिये, और अब प्रत्येक सम्प्रदाय अपने विश्वास तथा कर्म में मग्न है भले ही वह सत्य से दूर हो।

भलाईयों में? बल्कि वह समझते नहीं हैं।[1]

إِنَّ الَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾

57. वास्तव में जो अपने पालनहार के भय से डरने वाले हैं।

وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

58. और जो अपने पालनहार की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

59. और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾

60. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल काँपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

61. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

62. और हम बोझ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है, और उन पर अत्याचार नहीं किया[2] जायेगा।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾

63. बल्कि उन के दिल अचेत हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْأَرُونَ ﴿٦٤﴾

64. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।

لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾

65. आज विलाप न करो, निःसंदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।

---

1 अर्थात् यह कि हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।

2 अर्थात् प्रत्येक का कर्म लेख है जिस के अनुसार ही उसे बदला दिया जायेगा।

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती रहीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. क्या उन्हों ने इस कथन (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह[1] आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये, इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे[2] हैं?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिक्तर को सत्य अप्रिय है।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾

71. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त-व्यस्त हो जाये आकाश तथा धरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।

---

1 अर्थात् कुर्आन तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये। इस पर तो इन्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना और इसे स्वीकार करना चाहिये।

2 इस में चेतावनी है कि वह अपने रसूल की सत्यता - अमानत तथा उन के चरित्र और वंश से भली भाँति अवगत हैं।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ٧٣

73. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ٧٤

74. और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ٧٥

75. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुख उन के साथ है[1] तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ٧٦

76. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया, तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ٧٧

77. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के[2] द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे।[3]

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ٧٨

78. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल[4], (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ٧٩

79. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٨٠

80. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल, तो क्या तुम समझ नहीं रखते?

---

1 इस से अभिप्राय वह अकाल है जो मक्का के काफ़िरों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा के कारण आ पड़ा था। (देखिये, बुख़ारीः 4823)

2 कड़ी यातना से अभिप्राय परलोक की यातना है।

3 अर्थात् प्रत्येक भलाई से।

4 सत्य को सुनने-देखने और उस पर विचार कर के उसे स्वीकार करने के लिये।

81. बल्कि उन्हों ने वही बात कही जो अगलों ने कही।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾

82. उन्हों ने कहाः क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?

قَالُوا أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾

83. हम को तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है, यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَٰذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

84. (हे नबी!) उन से कहोः किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?

قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾

85. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहियेः फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾

86. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾

87. वे कहेंगः अल्लाह है। आप कहियेः फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾

88. आप उन से कहिये कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो?

قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

89. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहियेः फिर तुम पर कहाँ से जादू[1] हो जाता है?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

---

1 अर्थात् जब यह मानते हो कि सब अधिकार अल्लाह के हाथ में है और शरण भी

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٩٠

90. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है, और निश्चय यही मिथ्यावादी हैं।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٩١

91. अल्लाह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान, और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर, और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं!

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٩٢

92. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۝٩٣

93. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِى الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٩٤

94. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ۝٩٥

95. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ۗ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ۝٩٦

96. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुराई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝٩٧

97. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।

वही देता है तो फिर उस के साझी कहाँ से आ गये। और उन्हें कहाँ से अधिकार मिल गया?

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ٩٨

98. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आयें।

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَهُمُ ٱلْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ٱرْجِعُونِ ٩٩

99. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता हैः मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दे।[1]

لَعَلِّىٓ أَعْمَلُ صَٰلِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّآ ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۖ وَمِن وَرَآئِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ١٠٠

100. संभवतः मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ। कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा[2] है। और उन के पीछे एक आड़[3] है उन के पुनः जीवित किये जाने के दिन तक।

فَإِذَا نُفِخَ فِى ٱلصُّورِ فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَآءَلُونَ ١٠١

101. तो जब नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उस[4] दिन और न वे एक दूसरे को पूछेंगे।

فَمَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ١٠٢

102. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فِى جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ١٠٣

103. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्हों ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया, जो नरक में सदावासी होंगे।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ ٱلنَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَٰلِحُونَ ١٠٤

104. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।

---

1 यहाँ मरण के समय काफ़िर की दशा को बताया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात उस के कथन का कोई प्रभाव नहीं होगा।

3 आड़ जिस के लिये बर्ज़ख़ शब्द आया है, उस अवधि का नाम है जो मृत्यु तथा प्रलय के बीच होगी।

4 अर्थात् प्रलय के दिन उस दिन भय के कारण सब को अपनी चिन्ता होगी।

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ١٠٥

105. (उन से कहा जायेगा): क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाते नहीं थे?

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ١٠٦

106. वे कहेंगेः हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया[1], और वास्तव में हम कुपथ थे।

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ١٠٧

107. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो निश्चय हम अत्याचारी होंगे।

قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ١٠٨

108. वह (अल्लाह) कहेगाः इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ١٠٩

109. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ١١٠

110. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे।

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ١١١

111. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल हैं।

قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ١١٢

112. (अल्लाह) उन से कहेगाः तुम धरती में कितने वर्ष रहे?

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ١١٣

113. वे कहेंगेः हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लें।

---

1 अर्थात् अपने दुर्भाग्य के कारण हम ने तेरी आयतों को अस्वीकार कर दिया।

قٰلَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

114. वह कहेगाः तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम। क्या ही अच्छा होता कि तुम ने (पहले ही) जान लिया[1] होता।

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

115. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये[2] जाओगे?

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

116. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।

وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

117. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में काफ़िर सफल नहीं[3] होंगे।

وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

118. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर, और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान्) है।

---

1 आयत का भावार्थ है कि यदि तुम यह जानते कि परलोक का जीवन स्थायी है तथा संसार का आस्थायी तो आज तुम भी ईमान वालों के समान अल्लाह की आज्ञा का पालन कर के सफल हो जाते, और अवज्ञा तथा दूराचार न करते।

2 अर्थात् परलोक में।

3 अर्थात् परलोक में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी, और न मुक्ति ही मिलेगी।

सूरह नूर - 24

सूरह नूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 64 आयतें हैं।

- इस सूरह में व्यभिचार और उस का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है।
- मुनाफ़िक़ों को झूठे कलंक घड़ कर समाज में फैलाने पर चेतावनी दी गयी है।
- मान मर्यादा की रक्षा पर बल दिया गया है।
- अल्लाह की राह में चलने और उस के इन्कार पर लाभ और हानि का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को अधिकार प्रदान करने की शुभ सूचना दी गयी है।
- घरेलू आदाब बताये गये हैं।
- और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर करने पर बल दिया गया है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ①

1. यह एक सूरह है जिसे हम ने उतारा तथा अनिवार्य किया है। और उतारी हैं इस में बहुत सी खुली आयतें (निशानियाँ), ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

2. व्यभिचारिणी तथा[1] व्यभिचारी दोनों

1 व्यभिचार से संबंधित आरंभिक आदेश सूरह निसा, आयत 15 में आ चुका है। अब यहाँ निश्चित रूप से उस का दण्ड नियत कर दिया गया है। आयत में वर्णित सौ कोड़े दण्ड अविवाहित व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी के लिये हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अविवाहित व्यभिचारी को सौ कोड़े मारने का और एक वर्ष देश से निकाल देने का आदेश देते थे। (सहीह बुख़ारी, 6831)

مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾

में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और तुम्हें उन दोनों पर कोई तरस न आये अल्लाह के धर्म के विषय[1] में, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और चाहिये कि उन के दण्ड के समय उपस्थित रहे ईमान वालों का एक[2] गिरोह।

الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾

3. व्यभिचारी[3] नहीं विवाह करता परन्तु व्यभिचारिणी अथवा मिश्रणवादिनी से, और व्यभिचारिणी नहीं विवाह करती परन्तु व्यभिचारी अथवा मिश्रणवादी से और इसे हराम (अवैध) कर दिया गया है ईमान वालों पर।

किन्तु यदि दोनों में से कोई विवाहित है तो उस के लिये रज्म (पत्थरों से मार डालने) का दण्ड है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मुझ से (शिक्षा) ले लो, मुझ से (शिक्षा) ले लो। अल्लाह ने उन के लिये राह बना दी। अविवाहित के लिये सौ कोड़े और विवाहित के लिये रज्म है। (सहीह मुस्लिम, **1690**, अबूदाऊद, **4418**) इत्यादि।
आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने युग में रज्म का दण्ड दिया जिस के सहीह हदीसों में कई उदाहरण हैं। और ख़ुलफ़ाये राशिदीन के युग में भी यही दण्ड दिया गया। और इस पर मुस्लिम समुदाय का इज्मा (मतैक्य) है।
व्यभिचार ऐसा घोर पाप है जिस से परिवारिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। पति-पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह जाता। और यदि कोई शिशु जन्म ले तो उस के पालन पोषण की भीषण समस्या सामने आती है। इसी लिये इस्लाम ने इस का घोर दण्ड रखा है ताकि समाज और समाज वालों को शान्त और सुरक्षित रखा जाये।

1 अर्थात् दया भाव के कारण दण्ड देने से न रुक जाओ।

2 ताकि लोग दण्ड से शिक्षा लें।

3 आयत का अर्थ यह है कि साधारणतः कुकर्मी विवाह के लिये अपने ही जैसों की ओर आकर्षित होते हैं। अतः व्यभिचारिणी व्यभिचारी से ही विवाह करने में रुचि रखती हैं। इस में ईमान वालों को सतर्क किया गया है कि जिस प्रकार व्यभिचार महा पाप है उसी प्रकार व्यभिचारियों के साथ विवाह संबन्ध स्थापित करना भी निषेध है। कुछ भाष्यकारों ने यहाँ विवाह का अर्थ व्यभिचार लिया है।

4. तथा जो आरोप[1] लगायें व्यभिचार का सतवंती स्त्रियों को, फिर न लायें चार साक्षी तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और न स्वीकार करो उन का साक्ष्य कभी भी, और वह स्वयं अवैज्ञाकारी हैं।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ④

5. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली इस के पश्चात्, तथा अपना सुधार कर लिया, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी दयावान्[2] है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

6. और जो व्यभिचार का आरोप लगाये अपनी पत्नियों पर, और उन के साक्षी न हों[3] परन्तु वह स्वयं, तो चार साक्ष्य अल्लाह की शपथ लेकर देना है कि वास्तव में वह सच्चा है।[4]

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ ۙ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ⑥

7. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार है यदि वह झूठा हो।

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ⑦

---

1 इस में किसी पवित्र पुरुष या स्त्री पर व्यभिचार का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है। कि जो पुरुष अथवा स्त्री किसी पर कलंक लगाये, तो वह चार ऐसे साक्षी लाये जिन्होंने उन को व्यभिचार करते अपनी आँखों से देखा हो। और यदि वह प्रमाण स्वरूप चार साक्षी न लायें तो उस के तीन आदेश हैं:
(क) उसे अस्सी कोड़े लगाये जायें।
(ख) उस का साक्ष्य कभी स्वीकार न किया जाये।
(ग) वह अल्लाह तथा लोगों के समक्ष दूराचारी है।

2 सभी विद्वानों का मतैक्य है कि क्षमा याचना से उसे दण्ड (अस्सी कोड़े) से क्षमा नहीं मिलेगी। बल्कि क्षमा के पश्चात् वह भी अवैज्ञाकारी नहीं रह जायेगा, तथा उस का साक्ष्य स्वीकार किया जायेगा। अधिक्तर विद्वानों का यही विचार है।

3 अर्थात् चार साक्षी।

4 अर्थात आरोप लगाने में।

8. और स्त्री से दण्ड[1] इस प्रकार दूर होगा कि वह चार बार साक्ष्य दे अल्लाह की शपथ ले कर कि निःसंदेह वह (पति) मिथ्यावादियों में से है।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٨﴾

9. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह सच्चा[2] हो।

وَالْخٰمِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٩﴾

10. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती, और यह कि अल्लाह अति क्षमी तत्वज्ञ है (तो समस्या बढ़ जाती)।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

11. वास्तव[3] में जो कलंक घड़ लाये हैं

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُو بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ

1 अर्थात व्यभिचार का दण्ड।

2 शरीअत की परिभाषा में इसे "लिआन" कहा जाता है। यह लिआन न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष होना चाहिये। लिआन की माँग पुरुष की ओर से भी हो सकती है और स्त्री की ओर से भी। लिआन के पश्चात् दोनों सदा के लिये अलग हो जायेंगे। लिआन का अर्थ होता हैः धिक्कार। और इस में पति और पत्नी दोनों अपने को मिथ्यावादी होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते हैं। यदि पति अपनी पत्नि के गर्भ का इन्कार करे तब भी लिआन होता है। (बुख़ारीः 4746, 4747, 4748)

3 यहाँ से आयत 26 तक उस मिथ्यारोपण का वर्णन किया गया है जो मुनाफ़िक़ों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर बनी मुस्तलिक़ के युद्ध से वापसी के समय लगाया था। इस युद्ध से वापसी के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक स्थान पर पड़ाव किया। अभी कुछ रात रह गयी थी कि यात्रा की तय्यारी होने लगी। उस समय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) उस स्थान से दूर शौच के लिये गईं, और उन का हार टूट कर गिर गया। वह उस की खोज में रह गयीं। सेवकों ने उन की पालकी को सवारी पर यह समझ कर लाद दिया कि वह उस में होंगी। वह आईं तो वहीं लेट गयीं कि कोई अवश्य खोजने आयेगा। थोड़ी देर में सफ़्वान पुत्र मोअत्तल (रज़ियल्लाहु अन्हु) जो यात्रियों के पीछे उन की गिरी-पड़ी चीज़ों को संभालने का काम करते थे वहाँ आ गये। और इन्ना लिल्लाह पढ़ी, जिस से आप जाग गयीं। और उन को पह्चान लिया। क्यों कि उन्होंने पर्दे का आदेश आने से पहले उन्हें देखा था। उन्होंने आप

لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُمْ ۖ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾

तुम्हारे ही भीतर का एक गिरोह है, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा[1] है। उन में से प्रत्येक के लिये जितना भाग लिया उतना पाप है और जिस ने भार लिया उस के बड़े भाग[2] का तो उस के लिये बड़ी यातना है।

لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ﴿١٢﴾

12. क्यों जब उसे ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है?

لَّوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٣﴾

13. वे क्यों नहीं लाये इस पर चार साक्षी? (जब साक्षी नहीं लाये) तो निःसंदेह अल्लाह के समीप वही झूठे हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

14. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती लोक तथा परलोक में, तो जिन बातों में तुम पड़ गये उन के बदले तुम पर कड़ी यातना आ जाती।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

15. जब कि (बिना सोचे) तुम अपनी ज़ुबानों से इसे लेने लगे, और अपने मुखों से वह बात कहने लगे जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न था, तथा तुम इसे

को अपने ऊँट पर सवार किया और स्वयं पैदल चल कर यात्रियों से जा मिले। द्विधावादियों ने इस अवसर को उचित जाना, और उन के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा कि यह एकांत अकारण नहीं था। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को सफ़वान के साथ कलंकित कर दिया। और उस के षड्यंत्र में कुछ सच्चे मुसलमान भी आ गये। इस का पूरा विवरण हदीस में मिलेगा। (देखियेः सहीह बुख़ारी, 4750)

1 अर्थ यह है कि इस दुःख पर तुम्हें प्रतिफल मिलेगा।

2 इस से तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन उबय्य द्विधावादियों का मुखिया है।

सरल समझ रहे थे, जब कि अल्लाह के समीप वह बहुत बड़ी बात थी।

وَلَوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَآ أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَٰنَكَ هَٰذَا بُهْتَٰنٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

16. और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना, तो कह दिया कि हमारे लिये योग्य नहीं कि यह बात बोलें? हे अल्लाह! तू पवित्र है! यह तो बहुत बड़ा आरोप है।

يَعِظُكُمُ ٱللَّهُ أَن تَعُودُوا۟ لِمِثْلِهِۦٓ أَبَدًا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾

17. अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है कि पुनः कभी इस जैसी बात न कहना। यदि तुम ईमान वाले हो।

وَيُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

18. और अल्लाह उजागर कर रहा है तुम्हारे लिये आयतों (आदेशों)को। तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ ٱلْفَٰحِشَةُ فِى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

19. जो लोग चाहते हैं कि उन में अशलीलता[1] फैले जो ईमान लाये हैं, तो उन के लिये दुःखदायी यातना है लोक तथा परलोक में, तथा अल्लाह जानता[2]है और तुम नहीं जानते।

وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ وَأَنَّ ٱللَّهَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

20. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह तथा उस की दया न होती (तो तुम पर यातना आ जाती)। और वास्तव में अल्लाह अति करुणामय दयावान् है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّبِعُوا۟ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ فَإِنَّهُۥ يَأْمُرُ بِٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ مَا زَكَىٰ مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يُزَكِّى مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

21. हे ईमान वालो! शैतान के पद्चिन्हों पर न चलो, और जो उस के पद्चिन्हों पर चलेगा, तो वह अशलील कार्य तथा बुराई का ही आदेश देगा, और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया

---

1 अशलीलता, व्याभिचार और व्याभिचार के निर्मूल आरोप की चर्चा दोनों को कहा गया है।

2 उन के मिथ्यारोपण को।

न होती, तो तुम में से कोई पवित्र कभी नहीं होता। परन्तु अल्लाह पवित्र करता है जिसे चाहे, और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

22. और न शपथ लें[1] तुम में से धनी और सुखी कि नहीं देंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिज्रत कर गये अल्लाह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह अति क्षमी सहनशील है।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾

23. जो लोग आरोप लगाते हैं सतवन्ती भोली-भाली ईमान वाली स्त्रियों को, वह धिक्कार दिये गये लोक तथा परलोक में और उन्हीं के लिये बड़ी यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

24. जिस दिन साक्ष्य (गवाही) देंगी उन की जीभें तथा उन के हाथ और उन के पैर उन के कर्मों की।

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

25. उस दिन अल्लाह उन को उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वह जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है,

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

1 आदरणीय मिस्तह पुत्र उसासा (रज़ियल्लाहु अन्हु) निर्धन, और आदरणीय अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के समीपवर्ती थे। और वह उन की सहायता किया करते थे। वह भी आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विरुद्ध आक्षेप में लिप्त हो गये थे। अतः आदरणीय आइशा के निर्दोष होने के बारे में आयतें उतरने के पश्चात् आदरणीय अबूबक्र ने शपथ ली कि अब वह मिस्तह की कोई सहायता नहीं करेंगे। उसी पर यह आयत उतरी। और उन्हों ने कहाः निश्चय मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्षमा कर दे। और पुनः उन की सहायता करने लगे। (सहीह बुख़ारी, 4750)

(सच्च को) उजागर करने वाला।

26. अपवित्र स्त्रीयाँ अपवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये, और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के[1] लिये। वही निर्दोष हैं उन बातों से जो वह कहते हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

27. हे ईमान वालो![2] मत प्रवेश करो किसी घर में अपने घरों के सिवा यहाँ तक कि अनुमति ले लो, और उन के वासियों को सलाम कर[3] लो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है, ताकि तुम याद रखो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

28. और यदि उन में किसी को न पाओ तो उन में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाये, और यदि तुम से कहा जाये कि वापिस हो जाओ तो वापिस हो जाओ, यह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र है, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो भली-भाँति जानने वाला है।

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾

29. तुम पर कोई दोष नहीं है कि प्रवेश

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ

---

1 इस में यह संकेत है कि जिन पुरुषों तथा स्त्रियों ने आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर आरोप लगाया वह मन के मलीन तथा अपवित्र हैं।

2 सूरह के आरंभ में यह आदेश दिये गये थे कि समाज में कोई बुराई हो जाये तो उस का निवारण कैसे किया जाये? अब वह आदेश दिये जा रहे हैं जिन से समाज में बुराईयों को जन्म लेने ही से रोक दिया जाये।

3 हदीस में इस का नियम यह बताया गया है कि (द्वार पर दायें या बायें खड़े हो कर) सलाम करो। फिर कहो कि क्या भीतर आ जाऊँ? ऐसे तीन बार करो, और अनुमति न मिलने पर वापिस हो जाओ। (बुख़ारी, 6245, मुस्लिम, 2153)

فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

करो निर्जन घरों में जिन में तुम्हारा सामान हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम बोलते हो और जो मन में रखते हो।

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا
فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا
يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾

30. (हे नबी!) आप ईमान वालों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उन के लिये अधिक पवित्र है, वास्तव में अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ वह कर रहे हैं।

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ
فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ
وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ
أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي
إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ
أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ
وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن
زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

31. और ईमान वालियों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपनी शोभा[1] का प्रदर्शन न करें सिवाय उस के जो प्रकट हो जाये। तथा अपनी ओढ़नियाँ अपने वक्षस्थलों (सीनों) पर डाली रहें। और अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें, परन्तु अपने पतियों के लिये अथवा अपने पिताओं अथवा अपने ससुरों के लिये अथवा अपने पुत्रों[2] अथवा अपने पति के पुत्रों के लिये अथवा अपने भाईयों[3] अथवा भतीजो अथवा अपने भांजों के[4] लिये अथवा अपनी स्त्रियों[5] अथवा अपने

---

1 शोभा से तात्पर्य वस्त्र तथा आभूषण हैं।

2 पुत्रों में पौत्र तथा नाती परनाती सब सम्मिलित हैं, इस में सगे सौतीले का कोई अन्तर नहीं।

3 भाईयों में सगे और सौतीले तथा माँ जाये सब भाई आते हैं।

4 भतीजों और भांजों में उन के पुत्र तथा पौत्र और नाती सभी आते हैं।

5 अपनी स्त्रियों से अभिप्रेत मुस्लिम स्त्रियाँ हैं।

दास-दासियों अथवा ऐसे आधीन[1] पुरुषों के लिये जो किसी और प्रकार का प्रयोजन न रखते हों, अथवा उन बच्चों के लिये जो स्त्रियों की गुप्त बातें न जानते हों और अपने पैर (धरती पर) मारती हुयी न चलें कि उस का ज्ञान हो जाये जो शोभा उन्हों ने छुपा रखी है। और तुम सब मिल कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे ईमान वालो! ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾

32. तथा तुम विवाह कर दो [2] अपनों में से अविवाहित पुरुषों तथा स्त्रियों का, और अपने सदाचारी दासों और अपनी दासियों का, यदि वह निर्धन होंगे तो अल्लाह उन्हें धनी बना देगा अपने अनुग्रह से, और अल्लाह उदार सर्वज्ञ है।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾

33. और उन को पवित्र रहना चाहिये जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते, यहाँ तक कि उन को धनी कर दे अल्लाह अपने अनुग्रह से। तथा जो स्वाधीनता लेख की माँग करें तुम्हारे दास-दासियों में से, तो तुम उन को लिख दो, यदि तुम उन में कुछ भलाई जानो[3], और उन्हें अल्लाह के

---

1 अर्थात् जो आधीन होने के कारण घर की महिलाओं के साथ कोई अनुचित इच्छा का साहस न कर सकेंगे। कुछ ने इस का अर्थ नपुंसक लिया है। (इब्ने कसीर) इस में घर के भीतर उन पर शोभा के प्रदर्शन से रोका गया है जिन से विवाह हो सकता है

2 विवाह के विषय में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है: "जो मेरी सुन्नत से विमुख होगा" वह मुझ से नहीं है। (बुख़ारी-5063 तथा मुस्लिम, 1020)

3 इस्लाम ने दास-दासियों की स्वाधीनता के जो साधन बनाये हैं उन में यह भी है कि वह कुछ धनराशि देकर स्वाधीनता लेख की माँग करें, तो यदि उन में इस

उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें प्रदान किया है, तथा बाध्य न करो अपनी दासियों को व्यभिचार पर जब वे पवित्र रहना चाहती हैं[1] ताकि तुम संसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करो। और जो उन्हें बाध्य करेगा, तो अल्लाह उन के बाध्य किये जाने के पश्चात्[2] अति क्षमी दयावान् है।

34. तथा हम ने तुम्हारी ओर खुली आयतें उतारी हैं और उन का उदाहरण जो तुम से पहले गुज़र गये तथा आज्ञाकारियों के लिये शिक्षा।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

35. अल्लाह आकाशों तथा धरती का[3] प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप कांच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ

धनराशि को चुकाने की योग्यता हो तो आयत में बल दिया गया है कि उन को स्वाधीनता-लेख दे दो।

1 अज्ञानकाल में स्वामी, धन अर्जित करने के लिये अपनी दासियों को व्यभिचार के लिये बाध्य करते थे। इस्लाम ने इस व्यवसाय को वर्जित कर दिया। हदीस में आया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम ने कुत्ते के मूल्य तथा वैश्या और ज्योतिषी की कमाई से रोक दिया। (बुख़ारी, 2237, मुस्लिम, 1567)

2 अर्थात् दासी से बल पूर्वक व्यभिचार कराने का पाप स्वामी पर होगा, दासी पर नहीं।

3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की व्यवस्था करता और उन के वासियों को संमार्ग दर्शाता है। और अल्लाह की पुस्तक और उस का मार्ग दर्शन उस का प्रकाश है। यदि उस का प्रकाश न होता तो यह विश्व अन्धेरा होता। फिर कहा कि उस की ज्योति ईमान वालों के दिलों में ऐसे है जैसे किसी ताखा में अति प्रकाशमान दीप रखा हो, जो आगामी वर्णित गुणों से युक्त हो। पूर्वी तथा पश्चिमी न होने का अर्थ यह है कि उस पर पूरे दिन धूप पड़ती हो जिस के कारण उस का तेल अति शुद्ध तथा साफ़ हो।

وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

समान हो, वह ऐसे शुभ ज़ैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे। प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ﴿٣٦﴾

36. (यह प्रकाश) उन घरों[1] में है अल्लाह ने जिन्हें ऊँचा करने और उन में अपने नाम की चर्चा करने का आदेश दिया है, उस की महिमा का गान करते हैं जिन में प्रातः तथा संध्या।

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

37. ऐसे लोग जिन्हें अचेत नहीं करता व्यापार तथा सौदा अल्लाह के स्मरण तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने से। वह उस दिन[2] से डरते है जिस में दिल तथा आँखें उलट जायेंगी।

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सर्वोत्तम कर्मों का और उन्हें अधिक प्रदान करे अपने अनुग्रह से। और अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत जीविका देता है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ

39. तथा जो काफ़िर[3] हो गये उन के

---

1 इस से तात्पर्य मस्जिदें हैं।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 आयत का अर्थ यह है कि काफ़िरों के कर्म, अल्लाह पर ईमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष व्यर्थ हो जायेंगे।

الظَّمْاٰنُ مَآءً ۚ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۚ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٣٩

कर्म उस चमकते सुराब[1] के समान हैं जो किसी मैदान में हो, जिसे प्यासा पानी समझता हो। परन्तु जब उस के पास आये तो कुछ न पाये, और वहाँ अल्लाह को पाये जो उस का पूरा हिसाब चुका दे, और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۚ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۚ اِذَاۤ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۝٤٠

40. अथवा उन अन्धकारों के समान है जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग छायी हो जिस के ऊपर तरंग, उस के ऊपर बादल हो, अन्धकार पर अन्धकार हो, जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके। और अल्लाह जिसे प्रकाश न दे उस के लिये कोई प्रकाश[2] नहीं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۚ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤١

41. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा पँख फैलाये हुये पक्षी? प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया[3] है, और अल्लाह भली-भाँति जानने वाला है जो वे कर रहे हैं।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٤٢

42. अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। और अल्लाह ही की

1 कड़ी गर्मी के समय रेगिस्तान में जो चमकती हुई रेत पानी जैसी लगती है उसे सुराब कहते हैं।

2 अर्थात् काफ़िर, अविश्वास और कुकर्मों के अन्धकार में घिरा रहता है। और यह अन्धकार उसे मार्ग दर्शन की ओर नहीं आने देते।

3 अर्थात् तुम भी उस की पवित्रता का गान गाओ। और उस की आज्ञा का पालन करो।

ओर फिर कर[1] जाना है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ يُزْجِى سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُۥ ثُمَّ يَجْعَلُهُۥ رُكَامًا فَتَرَى ٱلْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَٰلِهِۦ وَيُنَزِّلُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِنۢ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ وَيَصْرِفُهُۥ عَن مَّن يَشَآءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِۦ يَذْهَبُ بِٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٣﴾

43. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उसे परस्पर मिला देता है, फिर उसे घंघोर मेघ बना देता है, फिर आप देखते हैं बूंद को उस के मध्य से निकलती हुयी, और वही पर्वतों जैसे बादल से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहे आपदा उतारता है और जिस से चाहे फेर देता है। उस की बिजली की चमक संभव होता है कि आँखों को उचक ले।

يُقَلِّبُ ٱللَّهُ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُو۟لِى ٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٤﴾

44. अल्लाह ही रात और दिन को बदलता[2]है। बेशक इस में बड़ी शिक्षा है समझ-बूझ वालों के लिये।

وَٱللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّن مَّآءٍ ۖ فَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ بَطْنِهِۦ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰٓ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾

45. अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं। और कुछ दो पैर पर, तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

لَّقَدْ أَنزَلْنَآ ءَايَٰتٍ مُّبَيِّنَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ يَهْدِى مَن يَشَآءُ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

46. हम ने खुली आयतें (कुर्आन) अवतरित कर दी है। और अल्लाह जिसे चाहता है सुपथ दिखा देता है।

وَيَقُولُونَ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَبِٱلرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ

47. और[3] वे कहते हैं कि हम अल्लाह

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 अर्थात् रात के पश्चात् दिन और दिन के पश्चात् रात होती है। इसी प्रकार कभी दिन बड़ा रात छोटी, और कभी रात बड़ी दिन छोटा होता है।

3 यहाँ से मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है, तथा

يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

तथा रसूल पर ईमान लाये, और हम आज्ञाकारी हो गये, फिर मुँह फेर लेता है उन में से एक गिरोह इस के पश्चात्। वास्तव में वे ईमान वाले हैं हीं नहीं।

وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर, ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का), तो अकस्मात् उन में से एक गिरोह मुँह फेर लेता है।

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. और यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो, तो आप के पास सिर झुकाये चले आते हैं।

اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. क्या उन के दिलों में रोग है अथवा द्विधा में पड़े हुये हैं, अथवा डर रहे हैं कि अल्लाह अत्याचार कर देगा उन पर और उस के रसूल? बल्कि वही अत्याचारी हैं।

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾

51. ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जायें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें, तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया, और वही सफल होने वाले हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें, और उस की (यातना से) डरें, तो वही सफल होने वाले हैं।

यह बताया जा रहा है कि ईमान के लिये अल्लाह के सभी आदेशों तथा नियमों का पालन आवश्यक है। और कुर्आन तथा सुन्नत के निर्णय का पालन करना ही ईमान है।

53. और इन (द्विधावादियों) ने बल पूर्वक शपथ ली कि यदि आप उन्हें आदेश दें तो अवश्य वह (घरों से) निकल पड़ेंगे। उन से कह दें: शपथ न लो। तुम्हारे आज्ञापालन की दशा जानी पहचानी है। वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ
لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

54. (हे नबी!) आप कह दें कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, और यदि वह विमुख हों, तो आप का कर्तव्य केवल वही है जिस का भार आप पर रखा गया है, और तुम्हारा वह है जिस का भार तुम पर रखा गया है। और रसूल का दायित्व केवल खुला आदेश पहुँचा देना है।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا
فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن
تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

55. अल्लाह ने वचन[1] दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे, तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसँद किया है, तथा उन (की दशा) को उन के भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा, वह मेरी इबादत (वंदना) करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें। और जो कुफ़्र करें इस के

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي
لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

---

1 इस आयत में अल्लाह ने जो वचन दिया है, वह उस समय पूरा हो गया जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों को जो काफ़िरों से डर रहे थे उन की धरती पर अधिकार दे दिया। और इस्लाम पूरे अरब का धर्म बन गया और यह वचन अब भी है, जो ईमान तथा सत्कर्म के साथ प्रतिबंधित है।

पश्चात् तो वही उल्लंघनकारी हैं।

56. तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाये।

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَآتُوا الزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

57. और (हे नबी!) कदापि आप न समझें कि जो काफ़िर हो गये, वे (अल्लाह को) धरती में विवश कर देने वाले हैं। और उन का स्थान नरक है और वह बुरा निवास स्थान है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾

58. हे ईमान वालो! तुम[1] से अनुमति लेना आवश्यक है तुम्हारे स्वामित्व के दास-दासियों को और जो तुम में से (अभी) युवा अवस्था को न पहुँचे हों तीन समयः फ़ज्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और जिस समय तुम अपने वस्त्र उतारते हो दोपहर में, तथा इशा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात्। यह तीन (एकान्त) पर्दे के समय हैं तुम्हारे लिये। (फिर) तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं है इन के पश्चात्, तुम अधिक्तर आने-जाने वाले हो एक दूसरे के पास। अल्लाह तुम्हारे लिये आदेशों का वर्णन कर रहा है। और अल्लाह सर्वज्ञ निपुण है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾

59. और जब तुम में से बच्चे युवा अवस्था को पहुँचें, तो वह भी वैसे ही अनुमति

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ

1 आयतः 27 में आदेश दिया गया है कि जब किसी दूसरे के यहाँ जाओ तो अनुमति ले कर घर में प्रवेश करो। और यहाँ पर आदेश दिया जा रहा है कि स्वयं अपने घर में एक-दूसरे के पास जाने के लिये भी अनुमति लेना तीन समय में आवश्यक है।

लें जैसे उन से पूर्व के (बड़े) अनुमति माँगते हैं, इसी प्रकार अल्लाह उजागर करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतों को, तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾

60. तथा जो बूढ़ी स्त्रियाँ विवाह की आशा न रखती हों, तो उन पर कोई दोष नहीं कि अपनी (पर्दे की) चादरें उतार कर रख दें, प्रतिबंध यह है कि अपनी शोभा का प्रदर्शन करने वाली न हों, और यदि सुरक्षित रहें[1] तो उन के लिये अच्छा है।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

61. अन्धे पर कोई दोष नहीं है और न लंगड़े पर कोई दोष[2] है, और न रोगी पर कोई दोष है और न स्वयं तुम पर कि खाओ अपने घरों[3] से अथवा अपने बापों के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपने भाईयों के घरों से अथवा अपनी बहनों के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा जिस की चाबियों के तुम स्वामी[4] हो, अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई दोष नहीं एक साथ खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम प्रवेश

لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُم مَّفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

---

1 अर्थात् पर्दे की चादर न उतारें।

2 इस्लाम से पहले विकलांगों के साथ खाने पीने को दोष समझा जाता था जिस का निवारण इस आयत में किया गया है।

3 अपने घरों से अभिप्राय अपने पुत्रों के घर हैं जो अपने ही होते हैं।

4 अर्थात् जो अपनी अनुपस्थिति में तुम्हें रक्षा के लिये अपने घरों की चाबियाँ दे जायें।

करो घरों में[1] तो अपनों को सलाम किया करो, एक आशीर्वाद है अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ जो शुभ पवित्र है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन करता है ताकि तुम समझ लो।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾

62. वास्तव में ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब आप के साथ किसी सामुहिक कार्य पर होते हैं तो जाते नहीं जब तक आप से अनुमति न लें, वास्तव में जो आप से अनुमति लेते हैं वही अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वह आप से अपने किसी कार्य के लिये अनुमति माँगें, तो आप उन में से जिसे चाहें अनुमति दें। और उन के लिये अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

63. और तुम मत बनाओ रसूल के पुकारने को परस्पर एक-दूसरे को पुकारने जैसा[2], अल्लाह तुम में से उन को जानता है जो सरक जाते हैं एक-दूसरे की आड़ ले कर। तो उन्हें सावधान रहना चाहिये जो आप के आदेश का विरोध करते हैं कि उन

1 अर्थात वह साधारण भोजन जो सब के लिये पकाया गया हो। इस में वह भोजन सम्मिलित नहीं जो किसी विशेष व्यक्ति के लिये तैयार किया गया हो।

2 अर्थात्: «हे मुहम्मद!» न कहो। बल्कि आप को हे अल्लाह के नबी! हे अल्लाह के रसूल! कह कर पुकारो। इस का यह अर्थ भी किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रार्थना को अपनी प्रार्थना के समान न समझो, क्यों कि आप की प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती है।

पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाये।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ۭ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٦٤

64. सावधान! अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है, वह जानता है जिस (दशा) पर तुम हो, और जिस दिन वे उस की ओर फेरे जायेंगे तो उन्हें बता[1] देगा जो उन्हों ने किया है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

1 अर्थात् प्रलय के दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल देगा।

सूरह फ़ुर्क़ान - 25

सूरह फ़ुर्क़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 77 आयतें हैं।

- इस सूरह में उस का परिचय कराते हुए जिस ने फ़ुर्क़ान उतारा है शिर्क का खण्डन तथा वह्यी और रिसालत से सम्बन्धित संदेहों को चेतावनी की शैली में दूर किया गया है।
- अल्लाह के एक होने की निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है।
- अल्लाह के भक्तों के गुण और मानव पर कुर्आन की शिक्षा का प्रभाव बताया गया है।
- अन्त में उन्हें चेतावनी दी गयी है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सावधान करने पर भी सत्य को नहीं मानते।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शुभ है वह (अल्लाह) जिस ने फ़ुर्क़ान[1] अवतरित किया अपने भक्त[2] पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۙ

2. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا

1 फ़ुर्क़ान का अर्थ वह पुस्तक है जिस के द्वारा सच्च और झूठ में विवेक किया जाये और इस से अभिप्राय कुर्आन है।

2 भक्त से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो पूरे मानव संसार के लिये नबी बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझ से पहले नबी अपनी विशेष जाति के लिये भेजे जाते थे, और मुझे सर्व साधारण लोगों की ओर नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी, 335, सहीह मुस्लिम, 521)

وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝٢

कोई संतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में, तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣

3. और उन्हों ने उस के अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं, और न वह अधिकार रखते हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, तथा न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनः[1] जीवित करने का।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ࣙافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَاۤءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝٤

4. तथा काफ़िरों ने कहाः यह[2] तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस[3] ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफ़िर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٥

5. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है, और वह पढ़ी जाती हैं उस के समक्ष प्रातः और संध्या।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٦

6. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा धरती का भेद जानता है। वास्तव में वह[4] अति क्षमाशील दयावान् है।

---

1 अर्थात् प्रलय के पश्चात्।

2 अर्थात् कुर्आन।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

4 इसी लिये क्षमा याचना का अवसर देता है।

7. तथा उन्हों ने कहाः यह कैसा रसूल है जो भोजन करता है तथा बाज़ारों में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फ़रिश्ता, तो वह उस के साथ सावधान करने वाला होता?

وَقَالُوا مَالِ هَٰذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ﴿٧﴾

8. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाता अथवा उस का कोई बाग़ होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहाः तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٨﴾

9. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? अतः वह कुपथ हो गये हैं, वह सुपथ पा ही नहीं सकते।

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾

10. शुभकारी है वह (अल्लाह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस[1] से उत्तम बहुत से बाग़ जिन में नहरें प्रवाहित हों, और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।

تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾

11. वास्तविक बात यह है कि उन्हों ने झुठला दिया है क़्यामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झुठलाये भड़कती हुई अग्नि।

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾

12. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾

13. और जब वह फेंक दिये जायेंगे

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا

1 अर्थात् उन के विचार से उत्तम।

هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾

उस के किसी संकीर्ण स्थान में बंधे हुये,(तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾

14. (उन से कहा जायेगा): आज एक विनाश को मत पुकारो, बहुत से विनाश को पुकारो।[1]

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾

15. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है, जो उन का प्रतिफल तथा आवास है?

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ﴿١٦﴾

16. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के पालनहार पर (यह) वचन (पूरा करना) अनिवार्य है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنْتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾

17. तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा उन को और जिस की वह इबादत (वंदना) करते थे अल्लाह के सिवाय, तो वह (अल्लाह) कहेगाः क्या तुम्हीं ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾

18. वे कहेंगेः तू पवित्र है! हमारे लिये यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई संरक्षक[2] बनायें, परन्तु तू ने सुखी बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल गये, और वह थे ही विनाश के योग्य।

---

1 अर्थात् आज तुम्हारे लिये विनाश ही विनाश है।

2 अर्थात् जब हम स्वयं दूसरे को अपना संरक्षक नहीं समझे, तो फिर अपने विषय में यह कैसे कह सकते हैं कि हमें अपना रक्षक बना लो?

19. उन्हों[1] ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार[2] करेगा तुम में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।

فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ
صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ
عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

20. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाज़ारों में (भी)चलते[3] फिरते थे। तथा हम ने बना दिया तुम में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन, तो क्या तुम धैर्य रखोगे? तथा आप का पालनहार सब कुछ देखने[4] वाला है।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ
لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً
أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

21. तथा उन्हों ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखतेः हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्हों ने अपने में बड़ा अभिमान कर लिया है तथा बड़ी अवैज्ञा[5] की है।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا
أُنزِلَ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا
فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

22. जिस दिन[6] वे फ़रिश्तों को देख लेंगे

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ

---

1 यह अल्लाह का कथन है, जिसे वह मिश्रणवादियों से कहेगा कि तुम्हारे पूज्यों ने स्वयं अपने पूज्य होने को नकार दिया।

2 अत्याचार से तात्पर्य शिर्क (मिश्रणवाद) है। (सूरह लुक्मान, आयतः13)

3 अर्थात् वे मानव पुरुष थे।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह चाहता तो पूरा संसार रसूलों का साथ देता। परन्तु वह लोगों की रसूलों द्वारा तथा रसूलों की लोगों के द्वारा परीक्षा लेना चाहता है कि लोग ईमान लाते हैं या नहीं और रसूल धैर्य रखते हैं या नहीं।

5 अर्थात ईमान लाने के लिये अपने समक्ष फ़रिश्तों के उतरने तथा अल्लाह को देखने की माँग कर के।

6 अर्थात मरने के समय। (देखियेः अन्फ़ाल-13) अथवा प्रलय के दिन।

وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٢٢﴾

उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी अपराधियों के लिये। तथा वह कहेंगेः[1] वंचित वंचित है।

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُورًا ﴿٢٣﴾

23. और उनके कर्मों [2] को हम ले कर धूल के समान उड़ा देंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿٢٤﴾

24. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنزِيلًا ﴿٢٥﴾

25. जिस दिन चिर जायेगा आकाश बादल के साथ[3] और फ़रिश्ते निरन्तर उतार दिये जायेंगे।

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ﴿٢٦﴾

26. उस दिन वास्तविक राज्य अति दयावान् का होगा, और काफ़िरों पर एक कड़ा दिन होगा।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾

27. उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हाथ चबायेगा, वह कहेगाः क्या ही अच्छा होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया होता।

يَا وَيْلَتَىٰ لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾

28. हाये मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक को मित्र न बनाया होता।

لَّقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾

29. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा (क़ुर्आन) से इस के पश्चात् कि मेरे पास आयी, और शैतान मनुष्य को (समय पर) धोखा देने वाला है।

---

1 अर्थात वह कहेंगे कि हमारे लिये सफलता तथा स्वर्ग निषेधित है।

2 अर्थात ईमान न होने के कारण उनके पुण्य के कार्य व्यर्थ कर दिये जायेंगे।

3 अर्थात आकाश चीरता हुआ बादल छा जायेगा और अल्लाह अपने फ़रिश्तों के साथ लोगों का हिसाब करने के लिये हश्र के मैदान में आ जायेगा। (देखिये सूरह, बक़रा, आयतः 210)

30. तथा रसूल [1] कहेगाः हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुर्आन को त्याग[2] दिया।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾

31. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

32. तथा काफ़िरों ने कहाः क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुर्आन पूरा एक ही बार?[3] इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमशः प्रस्तुत किया है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

33. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लायें तो हम आप के पास सत्य ला दें और उत्तम व्याख्या।

وَلَا يَأْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾

34. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे, उन्हीं का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ हैं।

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾

35. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾

36. फिर हम ने कहाः तुम दोनों उस

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۗ

---

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात इसे मिश्रणवादियों ने नहीं सुना और न माना।

3 अर्थात तौरात तथा इंजील के समान एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, आगामी आयतों में उस का कारण बताया जा रहा है कि कुर्आन 23 वर्ष में क्रमशः आवश्यक्तानुसार क्यों उतारा गया।

فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾

जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्ततः हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾

37. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षाप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने[1] तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾

38. तथा आद और समूद एवं कूवें वालों तथा बहुत से समुदायों को इस के बीच।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾

39. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये, तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर[2] दिया।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾

40. तथा यह [3] लोग उस बस्ती[4]पर आये गये हैं जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्हों ने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।

وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾

41. और (हे नबी!) जब वह आप को देखते हैं, तो आप को उपहास बना लेते हैं कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا

42. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ

1 अर्थात परलोक में नरक की यातना।

2 सत्य को स्वीकार न करने पर।

3 अर्थात मक्का के मुश्रिक।

4 अर्थात लूत जाति की बस्ती पर जिस का नाम "सदूम" था जिस पर पत्थरों की वर्षा हुई। फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं की।

عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

कर दिया होता यदि हम उन पर अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे कि कौन अधिक कुपथ है?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

43. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया है, तो क्या आप उस के संरक्षक[1] हो सकते हैं?

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

44. क्या आप सझते हैं कि उन में से अधिक्तर सुनते और समझते हैं? वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं।

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾

45. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के पालनहार ने कैसे छाया को फैला दिया और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर[2] बना देता फिर हम ने सूर्य को उस पर प्रमाण[3] बना दिया।

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾

46. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾

47. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे लिये वस्त्र[4] बनाया, तथा निद्रा को शान्ति, तथा दिन को जागने का समय।

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿٤٨﴾

48. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं को शुभ सूचना बनाकर अपनी दया (वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश

---

1 अर्थात उसे सुपथ दर्शा सकते हैं ?

2 अर्थात सदा छाया ही रहती।

3 अर्थात छाया सूर्य के साथ फैलती तथा सिमटती है। और यह अल्लाह के सामर्थ्य तथा उस के एकमात्र पूज्य होने का प्रमाण है।

4 अर्थात रात्रि का अंधेरा वस्त्र के समान सब को छुपा लेता है।

से स्वच्छ जल बरसाया।

لِّنُحْـِۧيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

49. ताकि जीवित कर दें उस के द्वारा निर्जीव नगर को तथा उसे पिलायें उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾

50. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिक्तर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ़्र ग्रहण कर लिया।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾

51. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचेत करने [1] वाला।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾

52. अतः आप काफ़िरों की बात न मानें और इस (क़ुर्आन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष)[2] करें।

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾

53. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को, यह मीठा रुचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा[3] एवं रोक।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾

54. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा ससुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अति सामर्थ्यवान है।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا

55. और वे लोग इबादत (वंदना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन

---

1 अर्थात रसूल। इस में यह संकेत है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे मनुष्य विश्व के लिये एक अन्तिम रसूल हैं।

2 अर्थात क़ुर्आन के प्रचार-प्रसार के लिये भरपूर प्रयास करें।

3 ताकि एक का पानी और स्वाद दूसरे में न मिले।

يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

को लाभ पहुँचा सकते और न हानि पहुँचा सकते हैं, और काफ़िर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

56. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने, सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

57. आप कह दें: मैं इस[1] पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾

58. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾

59. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान्, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ ﴿٦٠﴾

60. और जब उन से कहा जाता है कि रह्मान (अति दयावान्) को सज्दा करो, तो कहते हैं कि रह्मान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगें जिसे आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

61. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और

1 अर्थात कुर्आन पहुँचाने पर।

وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾

प्रकाशित चाँद को बनाया।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

62. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते-जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾

63. और अति दयावान् के भक्त वह हैं जो धरती पर नम्रता से चलते[1] हैं और अशिक्षित (अक्खड़) लोग उन से बात करते हैं तो सलाम करके अलग[2] हो जाते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾

64. और जो रात्रि व्यतीत करते हैं अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े [3] हो कर।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

65. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को, वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾

66. वास्तव में वह बुरा आवास और स्थान है।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

67. तथा जो व्यय (ख़र्च) करते समय अपव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ

68. और जो नहीं पुकारते हैं अल्लाह के साथ किसी दूसरे[4] पूज्य को और

---

1 अर्थात घमंड से अकड़ कर नहीं चलते।

2 अर्थात उन से उलझते नहीं।

3 अर्थात अल्लाह की इबादत करते हुये।

4 अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

न बध करते हैं उस प्राण को जिसे अल्लाह ने वर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

69. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित[1] हो कर रहेगा।

إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٧٠﴾

70. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और ईमान लाया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही हैं बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

وَمَن تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

71. और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

72. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और जब व्यर्थ के पास से गुज़रते हैं तो सज्जन बन कर गुज़र जाते हैं।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

73. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो[2] कर।

प्रश्न किया कि कौन सा पाप सब से बड़ा है? फ़रमायाः यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ जब कि उस ने तुम को पैदा किया है। मैं ने कहाः फिर कौन सा? फ़रमायाः अपनी संतान को इस भय से मार दो कि वह तुम्हारे साथ खायेगी। मैं ने कहाः फिर कौन सा? फ़रमायाः अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करना। यह आयत इसी पर उतरी। (देखियेः सहीह बुख़ारी, 4761)

1 इब्ने अब्बास ने कहाः जब यह आयत उतरी तो मक्का वासियों ने कहाः हम ने अल्लाह का साझी बनाया है और अवैध जान भी मारी है तथा व्यभिचार भी किया है। तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह बुख़ारी,4765)

2 अर्थात आयतों में सोच-विचार करते हैं।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

74. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानो से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे।

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾

75. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾

76. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

77. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न[1] हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

1 अर्थात उस से प्रार्थना तथा उस की इबादत न करो।

सूरह शुअरा - 26

सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 227 आयतें हैं

- इस में मक्का के मुर्ति पूजकों के आरोप का खण्डन किया गया है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शायर (कवि) कहते थे। और कवि और नबी के बीच अन्तर बताया गया है।
- इस में धर्म प्रचार के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता और विरोधियों के आप के साथ उपहास की चर्चा है।
- इस में मूसा अलैहिस्सलाम तथा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेश्वरवाद के उपदेश को प्रस्तुत किया गया है जो उन्होंने अपनी जाति को दिया था।
- इस में कई नबियों के धर्म प्रचार और उन के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- अनेक युग में नबियों के आने और उन के उपदेश में समानता का भी वर्णन है।
- कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. ता, सीन, मीम।
2. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।
3. संभवतः आप अपना प्राण[1] खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं?!

طٰسٓمّٓ ①

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ③

1 अर्थात उन के ईमान न लाने के शोक में।

4. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें।[1]

إِن نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ④

5. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ⑤

6. तो उन्हों ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑥

7. और क्या उन्हों ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई हैं बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑦

8. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण)[2] है। फिर उन में अधिक्तर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ⑧

9. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑨

10. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति[3] के पास।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑩

---

1 परन्तु ऐसा नहीं किया, क्यों कि दबाव का ईमान स्वीकार्य तथा मान्य नही होता।

2 अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य की।

3 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) दस वर्ष मद्यन में रह कर मिस्र वापिस आ रहे थे।

11. फ़िरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?	قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾
12. उस ने कहाः मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देंगे।	قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾
13. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी ज़ुबान, अतः वह्यी भेज दे हारून की ओर (भी)।	وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾
14. और उन का मुझ पर एक अपराध भी है। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।	وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾
15. अल्लाह ने कहाः कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने[1] वाले हैं।	قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾
16. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।	فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾
17. कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे।	أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾
18. (फ़िरऔन ने) कहाः क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्ष?	قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾
19. और तू कर गया वह कार्य[2] जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।	وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

1 अर्थात तुम दोनों की सहायता करते रहेंगे।

2 यह उस हत्या काण्ड की ओर संकेत है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) से नबी होने से पहले हो गया था। (देखियेः सूरह क़सस)

20. (मूसा ने) कहाः मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।

قَالَ فَعَلْتُهَآ إِذًا وَأَنَا۠ مِنَ ٱلضَّآلِّينَ ۝٢٠

21. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्वदर्शिता और मुझे बना दिया रसूलों में से।

فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِى رَبِّى حُكْمًا وَجَعَلَنِى مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝٢١

22. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दास बना लिया है इस्राईल के पुत्रों को।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَىَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۝٢٢

23. फ़िरऔन ने कहाः विश्व का पालनहार क्या है?

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٢٣

24. (मूसा ने) कहाः आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।

قَالَ رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَآ ۖ إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ۝٢٤

25. उस ने उन से कहा जो उस के आस पास थेः क्या तुम सुन नहीं रहे हो?

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُۥٓ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ۝٢٥

26. (मूसा ने) कहाः तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝٢٦

27. (फ़िरऔन ने) कहाः वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ ٱلَّذِىٓ أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝٢٧

28. (मूसा ने) कहाः वह, पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।

قَالَ رَبُّ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَآ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ۝٢٨

29. (फ़िरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अतिरिक्त, तो तुझे बंदियों में कर दूँगा।

قَالَ لَئِنِ ٱتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِى لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ ٱلْمَسْجُونِينَ ۝٢٩

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

30. (मूसा ने) कहाः क्या यद्यपि मैं ला दूँ तेरे पास एक खुली चीज़?

قَالَ فَأْتِ بِهِۦٓ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٣١﴾

31. उसने कहाः तू उसे ला दे यदि सच्चा है।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾

32. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष अजगर बन गयी।

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ﴿٣٣﴾

33. तथा अपना हाथ निकाला तो अकस्मात् वह उज्जवल था देखने वालों के लिये।

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُۥٓ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

34. उस ने अपने प्रमुखों से कहा जो उस के पास थेः वास्तव में यह तो बड़ा दक्ष जादूगर है।

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِۦ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾

35. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल[1] दे अपने जादू के बल से, तो अब तुम क्या आदेश देते हो?

قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَٱبْعَثْ فِى ٱلْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿٣٦﴾

36. सब ने कहाः अवसर (समय) दो मूसा और उसके भाई (के विषय) को, और भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾

37. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष जादूगर को लायें।

فَجُمِعَ ٱلسَّحَرَةُ لِمِيقَٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾

38. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक निश्चित दिन के समय के लिये।

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

39. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम एकत्र होने वाले [2] हो?

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ ٱلسَّحَرَةَ إِن كَانُوا۟ هُمُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿٤٠﴾

40. ताकि हम पीछे चलें जादूगरों के यदि वही प्रभुत्वशाली (विजयी)हो जायें।

---

1 अर्थात यह उग्रवाद कर के हमारे देश पर अधिकार कर ले।

2 अर्थात लोगों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस प्रतियोगिता में अवश्य उपस्थित हों।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَٰلِبِينَ ﴿٤١﴾

41. और जब जादूगर आये, तो फ़िरऔन से कहाः क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

42. उसने कहाः हाँ, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

43. मूसा ने उन से कहाः फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَٰلِبُونَ ﴿٤٤﴾

44. तो उन्हों ने फेंक दीं अपनी रस्सियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहाः फ़िरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होंगे।

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

45. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَٰجِدِينَ ﴿٤٦﴾

46. तो गिर गये सभी जादूगर[1] सज्दा करते हुये।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٤٧﴾

47. और सब ने कह दियाः हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ﴿٤٨﴾

48. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَٰفٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾

49. (फ़िरऔन ने) कहाः तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा, मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा[2] से काट दूँगा

---

1 क्यों कि उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) जादूगर नहीं, बल्कि वह सत्य के उपदेशक हैं।

2 अर्थात दायाँ हाथ और बायाँ पैर या बायाँ हाथ और दायाँ पैर।

तथा तुम सभी को फाँसी दे दूँगा।

قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ۝٥٠

50. सब ने कहाः कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝٥١

51. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन- हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ۝٥٢

52. और हम ने मूसा की ओर वह्यी की, कि रातों - रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝٥٣

53. तो फ़िरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने [1] वालों को।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۝٥٤

54. कि वह बहुत थोड़े लोग हैं।

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ۝٥٥

55. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ۝٥٦

56. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।

فَأَخْرَجْنَاهُم مِّن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝٥٧

57. अन्ततः हम ने निकाल दिया उन को बाग़ों तथा स्रोतों से।

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝٥٨

58. तथा कोषों और उत्तम निवास स्थानों से।

كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝٥٩

59. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।

---

1 जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के आदेशानुसार अपने साथियों को ले कर निकल गये तो फ़िरऔन ने उन का पीछा करने के लिये नगरों में हरकारे भेजे।

60. तो उन्हों ने उनका पीछा किया प्रातः होते ही।	فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠
61. और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहाः हम तो निश्चय ही पकड़ लिये[1] गये।	فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١
62. (मूसा ने) कहाः कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।	قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ ۝٦٢
63. तो हम ने मूसा को वह्यी की, कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान[2] हो गया।	فَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِیْمِ ۝٦٣
64. तथा हमने समीप कर दिया उसी स्थान के दूसरे गिरोह को।	وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِیْنَ ۝٦٤
65. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।	وَاَنْجَیْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ۝٦٥
66. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को।	ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِیْنَ ۝٦٦
67. वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिक्तर लोग ईमान वाले नहीं थे।	اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۝٦٧
68. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۝٦٨
69. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।	وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِیْمَ ۝٦٩
70. जब उस ने कहाः अपने बाप तथा	اِذْ قَالَ لِاَبِیْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٧٠

1 क्यों कि अब सामने सागर और पीछे फ़िरऔन की सेना थी।

2 अर्थात बीच से मार्ग बन गया और दोनों ओर पानी पर्वत के समान खड़ा हो गया।

अपनी जाति से कि तुम क्या पूज रहे हो?

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝٧١

71. उन्हों ने कहाः हम मुर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्हीं की सेवा में लगे रहते हैं।

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝٧٢

72. उसने काहः क्या वे तुम्हारी सुनती हैं जब पुकारते हो?

اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ۝٧٣

73. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती हैं?

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝٧٤

74. उन्हों ने कहाः बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।

قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝٧٥

75. उस ने कहाः क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ۝٧٦

76. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?

فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٧

77. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु हैं पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۝٧٨

78. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।

وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ۝٧٩

79. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝٨٠

80. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।

وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۝٨١

81. तथा वही मुझे मारेगा फिर[1] मुझे जीवित करेगा।

وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝٨٢

82. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षमा

1 अर्थात प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

رَبِّ هَبۡ لِي حُكۡمٗا وَأَلۡحِقۡنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ ٨٣

83. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे तत्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर सदाचारियों में।

وَٱجۡعَل لِّي لِسَانَ صِدۡقٖ فِي ٱلۡأٓخِرِينَ ٨٤

84. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर आगामी लोगों में।

وَٱجۡعَلۡنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ ٱلنَّعِيمِ ٨٥

85. और बना दे मुझ को सुख के स्वर्ग का उत्तराधिकारी।

وَٱغۡفِرۡ لِأَبِيٓ إِنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلضَّآلِّينَ ٨٦

86. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दे[1] वास्तव में वह कुपथों में है।

وَلَا تُخۡزِنِي يَوۡمَ يُبۡعَثُونَ ٨٧

87. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन सब जीवित किये [2] जायेंगे।

يَوۡمَ لَا يَنفَعُ مَالٞ وَلَا بَنُونَ ٨٨

88. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन और न संतान।

إِلَّا مَنۡ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلۡبٖ سَلِيمٖ ٨٩

89. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ दिल ले कर आयेगा।

وَأُزۡلِفَتِ ٱلۡجَنَّةُ لِلۡمُتَّقِينَ ٩٠

90. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग आज्ञाकारियों के लिये।

وَبُرِّزَتِ ٱلۡجَحِيمُ لِلۡغَاوِينَ ٩١

91. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों के लिये।

وَقِيلَ لَهُمۡ أَيۡنَ مَا كُنتُمۡ تَعۡبُدُونَ ٩٢

92. तथा कहा जायेगाः कहाँ हैं वह जिन्हें तुम पूज रहे थे?

---

1 (देखियेः सूरह तौबा, आयतः 114)

2 हदीस में वर्णित है कि प्रलय के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे। और कहेंगेः हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे वचन दिया था कि मुझे पुनः जीवित होने के दिन अपमानित नहीं करेगा। तो अल्लाह कहेगाः मैं ने स्वर्ग को काफ़िरों के लिये अवैध कर दिया है। (सहीह बुख़ारी, 4769)

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. अल्लाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

94. फिर उस में औंधे झोंक दिये जायेंगे वह और सभी कुपथ।

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. और इब्लीस की सेना सभी।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगेः

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾

97. अल्लाह की शपथ! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾

98. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे थे विश्व के पालनहार के।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. और हमें कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।

فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफ़ारशी) नहीं रह गया।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101. तथा न कोई प्रेमी मित्र।

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. तो यदि हमें पुनः संसार में जाना होता[1] तो हम ईमान वालों में हो जाते।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिक्तर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

104. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली[2] दयावान् है।

---

1 इस आयत में संकेत है कि संसार में एक ही जीवन कर्म के लिये मिलता है। और दूसरा जीवन प्रलोक में कर्मों के फल के लिये मिलेगा।

2 परन्तु लोग स्वयं अत्याचार कर के नरक के भागी बन रहे हैं ।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾

105. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾

106. जब उन से उन के भाई नूह ने कहाः क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾

107. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक [1] रसूल हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾

108. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

109. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾

110. अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾

111. उन्हों ने कहाः क्या हम तुझे मान लें, जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग[2] कर रहे हैं।

قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

112. (नूह ने) कहाः मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

113. उन का हिसाब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

114. और मैं धुतकारने वाला[3] नहीं हूँ ईमान वालों को।

---

1 अल्लाह का संदेश बिना कमी और अधिक्ता के तुम्हें पहुँचा रहा हूँ।

2 अर्थात धनी नहीं, निर्धन लोग कर रहे हैं।

3 अर्थात मैं हीन वर्ग के लोगों को जो ईमान लाये हैं अपने से दूर नहीं कर सकता जैसा कि तुम चाहते हो।

115. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ।

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾

116. उन्हों ने कहाः यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये में होगा।

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

117. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

118. अतः तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच, और मुक्त कर दे मुझ को तथा जो मेरे साथ हैं ईमान वालों में से।

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

119. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।

فَأَنجَيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

120. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾

121. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिक्तर ईमान लाने वाले नहीं।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

122. और निश्चय आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

123. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को।

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

124. जब कहा उन से उनके भाई हूद[1] नेः क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

125. वस्तुतः मैं तुम्हारे लिये एक न्यासिक (अमानतदार) रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

126. अतः अल्लाह से डरो और मेरा

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾

1 आद जाति के नबी हूद (अलैहिस्सलाम) को उन का भाई कहा गया है क्यों कि वह भी उन्हीं के समुदाय में से थे।

अनुपालन करो।

127. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٢٧﴾

128. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ ءَايَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

129. तथा बनाते हो बड़े-बड़े भवन जैसे कि तुम सदा रहोगे।

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾

130. और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर।

وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

131. तो अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾

132. तथा उस से भय रखो जिस ने तुम्हारी सहायता की है उस से जो तुम जानते हो।

وَٱتَّقُوا۟ ٱلَّذِىٓ أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾

133. उस ने सहायता की है तुम्हारी चौपायों तथा संतान से।

أَمَدَّكُم بِأَنْعَٰمٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾

134. तथा बाग़ों (उद्यानों) तथा जल स्रोतों से।

وَجَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾

135. मैं तुम पर डरता हूँ भीषण दिन की यातना से।

إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾

136. उन्हों ने कहाः नसीहत करो या न करो, हम पर सब समान है।

قَالُوا۟ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُن مِّنَ ٱلْوَٰعِظِينَ ﴿١٣٦﴾

137. यह बात तो बस प्राचीन लोगों की नीति[1] है।

إِنْ هَٰذَآ إِلَّا خُلُقُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾

138. और हम उन में से नहीं हैं जिन को

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿١٣٨﴾

---

1 अर्थात प्राचीन युग से होती चली आ रही है।

यातना दी जायेगी।

139. अन्ततः उन्हों ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगों में अधिक्तर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَٰهُمْ ۗ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

140. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

141. झुठला दिया समूद ने भी[1] रसूलों को।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

142. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह नेः क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

143. वास्तव में, मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।

إِنِّى لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

144. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।

فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾

145. तथा मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٤٥﴾

146. क्या तुम छोड़ दिये जाओगे उस में जो यहाँ हैं निश्चिन्त रह कर?

أَتُتْرَكُونَ فِى مَا هَٰهُنَآ ءَامِنِينَ ﴿١٤٦﴾

147. बाग़ों तथा स्रोतों में।

فِى جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾

148. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾

149. तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुये।

وَتَنْحِتُونَ مِنَ ٱلْجِبَالِ بُيُوتًا فَٰرِهِينَ ﴿١٤٩﴾

---

1 यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक रसूल का इन्कार सभी रसूलों का इन्कार है क्यों कि सब का उपदेश एक ही था।

150. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

151. और पालन न करो उल्लंघनकारियों के आदेश का।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾

152. जो उपद्रव करते हैं धरती में और सुधार नहीं करते।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾

153. उन्हों ने कहाः वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

154. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

155. कहाः यह ऊँटनी है[1] इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

156. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से, अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

157. तो उन्हों ने बध कर दिया उसे, अन्ततः पछताने वाले हो गये।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾

158. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुतः इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिक्तर ईमान लाने वाले।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

159. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾

160. झुठला दिया लूत की जाति ने (भी) रसूलों को।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾

---

1 अर्थात यह ऊँटनी चमत्कार है जो उन की माँग पर पत्थर से निकली थी।

161. जब कहा उन से उन के भाई लूत ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾

162. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

163. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾

164. और मैं तुम से प्रश्न नहीं करता इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले) का। मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

165. क्या तुम जाते[1] हो पुरुषों के पास संसार वासियों में से?

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

166. तथा छोड़ देते हो जिसे पैदा किया है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात अपनी पत्नियों को, बल्कि तुम एक जाति हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

167. उन्हों ने कहाः यदि तू नहीं रुका, हे लूत! तो अवश्य तेरा वहिष्कार कर दिया जायेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾

168. उस ने कहाः वास्तव में मैं तुम्हारे कर्तूत से बहुत अप्रसन्न हूँ।

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

169. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तथा मेरे परिवार को उस से जो वह कर रहे हैं।

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾

170. तो हम ने उसे बचा लिया तथा उस के सभी परिवार को।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

---

1 इस कुकर्म का आरंभ संसार में लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति से हुआ। और अब यह कुकर्म पूरे विश्व में विशेष रूप से यूरोपीय सभ्य देशों में व्यापक है। और समलैंगिक विवाह को यूरोप के बहुत से देशों में वैध मान लिया गया है। जिस के कारण कभी भी उन पर अल्लाह की यातना आ सकती है।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾

171. परन्तु एक बुढ़िया[1] को जो पीछे रह जाने वालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾

172. फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों का।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٣﴾

173. और वर्षा की उन पर एक घोर[2] वर्षा। तो बुरी हो गई डराये हुये लोगों की वर्षा।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾

174. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और उन में अधिक्तर ईमान लाने वाले नहीं थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾

175. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

كَذَّبَ أَصْحَابُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾

176. झुठला दिया ऐय्का[3] वालों ने रसूलों को।

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

177. जब कहा, उन से शुऐब नेः क्या तुम डरते नहीं हो?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾

178. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वासनीय रसूल हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾

179. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٠﴾

180. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर कोई पारिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस समस्त विश्व के पालनहार पर है।

---

1 इस से अभिप्रेत लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी है।

2 अर्थात पत्थरों की वर्षा। (देखियेः सूरह हूद, आयतः 82 -83)

3 ऐय्का का अर्थ झाड़ी है। यह मद्यन का क्षेत्र है जिस में शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया था।

181. तुम नाप-तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝١٨١

182. और तौलो सीधे तराज़ू से।

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝١٨٢

183. और मत कम दो लोगों को उन की चीज़ें, और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝١٨٣

184. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝١٨٤

185. उन्हों ने कहाः वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝١٨٥

186. और तू तो बस एक पुरुष[1] है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझते हैं।

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝١٨٦

187. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝١٨٧

188. उस ने कहाः मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝١٨٨

---

1 यहाँ यह बात विचारणीय है कि सभी विगत जातियों ने अपने रसूलों को उन के मानव होने के कारण नकार दिया। और जिस ने स्वीकार भी किया तो उस ने कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात अति कर के अपने रसूलों को प्रभु अथवा प्रभु का अंश बना कर उन्हीं को पूज्य बना लिया। तथा ऐकेश्वरवाद को कड़ा आधात पहुँचा कर मिश्रणवाद का द्वार खोल लिया और कुपथ हो गये। वर्तमान युग में भी इसी का प्रचलन है और इस का आधार अपने पूवर्जों की रीतियों को बनाया जाता है। इस्लाम इसी कुपथ का निवारण कर के ऐकेश्वरवाद की स्थापना के लिये आया है और वास्तव में यही सत्धर्म है।
हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मुझे वैसे न बढ़ा चढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मर्यम के पुत्र (ईसा) को बढ़ा चढ़ा दिया। वास्तव में मैं उस का दास हूँ। अतः मुझे अल्लाह का दास और उस का रसूल कहो। (देखियेः सहीह बुख़ारी, 3445)

189. तो उन्हों ने उसे झुठला दिया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें छाया के[1] दिन की यातना ने। वस्तुतः वह एक भीषण दिन की यातना थी।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾

190. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और नहीं थे उन में अधिक्तर ईमान लाने वाले।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾

191. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

192. तथा निःसंदेह यह (क़ुर्आन) पूरे विश्व के पालनहार का उतारा हुआ है।

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾

193. इसे ले कर रूहुल अमीन[2] उतरा।

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾

194. आप के दिल पर ताकि आप हो जायें सावधान करने वालों में।

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿١٩٤﴾

195. खुली अर्बी भाषा में।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿١٩٥﴾

196. तथा इस की चर्चा [3] अगले रसूलों की पुस्तको में (भी) है।

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾

197. क्या और उन के लिये यह निशानी नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वान[4]

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةً أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

1 अर्थात उनकी यातना के दिन उन पर बादल छा गया। फिर आग बरसने लगी और धरती कंपित हो गई। फिर एक कड़ी ध्वनी ने उन की जानें ले लीं। (इब्ने कसीर)

2 रूहुल अमीन से अभिप्राय आदरणीय फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं। जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह की ओर से वह्यी लेकर उतरते थे जिस के कारण आप रसूलों की और उन की जातियों की दशा से अवगत हुये। अतः यह आप के सत्य रसूल होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

3 अर्थात सभी आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन तथा आप पर पुस्तक क़ुर्आन के अवतरित होने की भविष्यवाणी की गई है। और सब नबियों ने इस की शुभ सूचना दी है।

4 बनी इस्राईल के विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि

इसे जानते हैं।

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِیْنَ ﴿١٩٨﴾

198. और यदि हम इसे उतार देते किसी अजमी[1] पर।

فَقَرَاَهٗ عَلَیْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِیْنَ ﴿١٩٩﴾

199. और वह इसे उन के समक्ष पढ़ता तो वह उस पर ईमान लाने वाले न होते[2]।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِیْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿٢٠٠﴾

200. इसी प्रकार हम ने घुसा दिया है इस (कुर्आन के इन्कार) को पापियों के दिलों में।

لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى یَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ﴿٢٠١﴾

201. वह नहीं ईमान लायेंगे उस पर जब तक देख न लेंगे दुख दायी यातना।

فَیَاْتِیَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

202. फिर उन पर सहसा आ जायेगी और वह समझ भी नहीं पायेंगे।

فَیَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

203. तो कहेंगेः क्या हमें अवसर दिया जायेगा?

اَفَبِعَذَابِنَا یَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

204. तो क्या वह हमारी यातना की जल्दी मचा रहे हैं?

اَفَرَءَیْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِیْنَ ﴿٢٠٥﴾

205. (हे नबी!) तो क्या आप ने विचार किया कि यदि हम लाभ पहुँचायें इन्हें वर्षों।

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾

206. फिर आ जाये उन पर जिस की उन्हें धमकी दी जा रही थी।

مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾

207. तो क्या काम आयेगा उनके जो

वसल्लम और कुर्आन पर ईमान लाये वह इस के सत्य होने का खुला प्रमाण हैं।

1 अर्थात ऐसे व्यक्ति पर जो अरब देश और जाति के अतिरिक्त किसी अन्य जाति का हो।

2 अर्थात अर्बी भाषा में न होता तो कहते कि यह हमारी समझ में नहीं आता। (देखियेः सूरह, हा,मीम,सज्दा, आयतः 44)

उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा?

208. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾

209. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।

ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٢٠٩﴾

210. तथा नहीं उतरे हैं (इस क़ुर्आन) को ले कर शैतान।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ﴿٢١٠﴾

211. और न योग्य है उन के लिये और न वह इस की शक्ति रखते हैं।

وَمَا يَنۢبَغِى لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾

212. वास्तव में वह तो (इस के) सुनने से भी दूर[1] कर दिये गये हैं।

إِنَّهُمْ عَنِ ٱلسَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾

213. अतः आप न पुकारें अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।

فَلَا تَدْعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ ٱلْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾

214. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती[2] सम्बन्धियों को।

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

---

1 अर्थात इस के अवतरित होने के समय शैतान आकाश की ओर जाते हैं तो उल्का उन्हें भस्म कर देते हैं।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप सफ़ा पर्वत पर चढ़े। और क़ुरैश के परिवारों को पुकारा। और जब सब एकत्र हो गये, और जो स्वयं नहीं आ सका तो उस ने किसी प्रतिनीधि को भेज दिया। और अबू लहब तथा क़ुरैश आ गये तो आप ने फ़रमायाः यदि मैं तुम से कहूँ कि उस वादी में एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? सब ने कहाः हाँ। हम ने आप को सदा ही सच्चा पाया है। आप ने कहाः मैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से सावधान कर रहा हूँ। इस पर अबू लहब ने कहाः तेरा पूरे दिन नाश हो! क्या हमें इसी के लिये एकत्र किया है? और इसी पर सूरह लहब उतरी। (सहीह बुख़ारी, 4770)

215. और झुका दें अपना बाहु[1] उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

216. और यदि वह आप की अवज्ञा करें तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

217. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

218. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज़ में) खड़े होते हैं।

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

219. और आप के फिरने को सजदा करने[2] वालों में।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾

220. निःसंदेह वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

221. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

222. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी[3] पर।

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

223. वह पहुँचा देते हैं सुनी-सुनाई बातों को और उन में अधिक्तर झूठे हैं।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

224. और कवियों का अनुसरण बहके हुये लोग करते हैं।

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾

225. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾

---

1 अर्थात उस के साथ विनम्रता का व्यवहार करें।

2 अर्थात प्रत्येक समय अकेले हों या लोगों के बीच हों।

3 हदीस में है कि फ़रिश्ते बादल में उतरते हैं, और आकाश के निर्णय की बात करते हैं, जिसे शैतान चोरी से सुन लेते हैं। और ज्योतिषियों को पहुँचा देते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिलाते हैं। (सहीह बुख़ारी, 3210)

वादी में फिरते[1] हैं।

226. और ऐसी बात कहते हैं जो करते नहीं।

وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۝

227. परन्तु वह (कवि) जो[2] ईमान लाये तथा सदाचार किये और अल्लाह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात् कि उन के ऊपर अत्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्हों ने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝

1 अर्थात कल्पना की उड़ान में रहते हैं।

2 इन से अभिप्रेत हस्सान बिन साबित आदि कवि हैं जो कुरैश के कवियों की भर्त्सना किया करते थे। (देखियेः सहीह बुख़ारी, 4124)

सूरह नम्ल - 27

सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 93 आयतें हैं।

- इस सूरह में बताया गया है कि कुर्आन को अल्लाह की किताब न मानने और शिर्क से न रुकने का सब से बड़ा कारण सत्य को नकारना है। जो मायामोह में मग्न रहते हैं उन पर कुर्आन की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं होता और वे नबियों के इतिहास से कोई शिक्षा नहीं लेते।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) को फ़िरऔन तथा उस की जाति की ओर भेजने और उन के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया उस का दुष्परिणाम बताया गया है।
- दावूद तथा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल राज्य की चर्चा कर के बताया गया है कि वह कैसे अल्लाह के आभारी भक्त बने रहे जिस के कारण (सबा) की रानी बिल्क़ीस इस्लाम लायी।
- इस में लूत तथा सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति के उपद्रव का दुष्परिणाम बताया गया है तथा एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- यह घोषणा भी की गई है कि कुर्आन ने मार्ग दर्शन की राह खोल दी है और भविष्य में भी इस के सत्य होने के लक्षण उजागर होते रहेंगे।

बِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝١

1. ता, सीन, मीम। यह कुर्आन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

2. मार्ग दर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣

3. जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ④

4. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहके जा रहे हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ⑤

5. यही हैं जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ⑥

6. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कुर्आन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ⑦

7. (याद करो) जब कहा,[1] मूसा ने अपने परिजनो मैं ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पास कोई सूचना लाऊँगा या लाऊँगा आग का कोई अँगार, ताकि तुम तापो।

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑧

8. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गयाः शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस-पास है, और पवित्र है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।

يَا مُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑨

9. हे मूसा यह मैं हूँ अल्लाह अति प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।

وَأَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَا مُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ⑩

10. और फेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रेंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي

11. उस के सिवा जिस ने अत्याचार

1 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मद्यन से आ रहे थे। रात्री के समय वह मार्ग भूल गये। और शीत से बचाव के लिये आग की अवश्यक्ता थी।

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑪

किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षमी दयावान् हूँ।

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ فِي تِسْعِ ءَايَٰتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِۦٓ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ⑫

12. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्जवल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फ़िरऔन तथा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लंघन कारियों में हैं।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ ءَايَٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا۟ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑬

13. फिर जब आयीं उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

وَجَحَدُوا۟ بِهَا وَٱسْتَيْقَنَتْهَآ أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۚ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ⑭

14. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ عِلْمًا ۖ وَقَالَا ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ⑮

15. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान[1], और दोनों ने कहाः प्रशंसा है उस अल्लाह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।

وَوَرِثَ سُلَيْمَٰنُ دَاوُۥدَ ۖ وَقَالَ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ عُلِّمْنَا مَنطِقَ ٱلطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ شَىْءٍ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ ٱلْفَضْلُ ٱلْمُبِينُ ⑯

16. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का, तथा उस ने कहाः हे लोगो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज़ से कुछ। वास्तव में

1 अर्थात विशेष ज्ञान जो नबूवत का ज्ञान है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया और इसी प्रकार अन्तिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस कुर्आन द्वारा प्रदान किया है।

यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।

17. तथा एकत्र कर दी गयीं सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिन्नों तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

18. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्यूंटियों की घाटी पर, तो एक च्यूंटी ने कहाः हे च्यूंटियो! प्रवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

19. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहाः हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर किया है। तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

20. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहाः क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हुदहुद को, या वह अनुपस्थितों में है?

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَاۤىِٕبِيْنَ ﴿٢٠﴾

21. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा, या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَأْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾

22. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकर) कहाः मैं ने ऐसी बात

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ

وَجِئْتُكَ مِن سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾

का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है,और मैं लाया हूँ आप के पास "सबा"[1] से एक विश्वासनीय सूचना।

إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِن كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

23. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु से तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।

وَجَدتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِن دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

24. मैं ने उसे तथा उस की जाति को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा, और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अतः वह सुपथ पर नहीं आते।

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾

25. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को[2] आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह जिस के अतिरिक्त कोई वंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।

قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

27. (सुलैमान ने) कहाः हम देखेंगे कि तू सत्य वादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।

اذْهَب بِّكِتَابِي هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ

28. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे

---

1 सबा यमन का एक नगर है।

2 अर्थात वर्षा तथा पौधों को।

فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

डाल दो उन की ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं?

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَؤُا إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ﴿٢٩﴾

29. उस ने कहाः हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्व पूर्ण पत्र डाला गया है।

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾

30. वह सुलैमान की ओर से है, और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।

أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣١﴾

31. कि तुम मुझ पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَؤُا أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣٢﴾

32. उस ने कहाः हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।

قَالُوا نَحْنُ أُولُو قُوَّةٍ وَأُولُو بَأْسٍ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾

33. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्ति शाली तथा बड़े योध्दा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۚ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾

34. उस ने कहाः राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उजाड़ देते हैं और उस के आदरणीय वासियों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾

35. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि क्या लेकर आते हैं दूत?

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَا آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا آتَاكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾

36. तो जब वह (दूत) आया सुलैमान के पास, तो कहाः क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है

जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्हीं अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।

37. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (बस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।

ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٣٧﴾

38. सुलैमान ने कहाः हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा[1] उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें आज्ञाकारी हो कर।

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

39. कहा एक अतिकाय ने जिन्नों में सेः मैं ला दूँगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हों अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हूँ।

قَالَ عِفْرِيتٌ مِنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

40. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान थाः मैं ला दूँगा उसे आप के पास इस से पहले कि आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहाः यह मेरे पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महान् है।

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۖ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾

---

1 जब सुलैमान ने उपहार वापिस कर दिया और धमकी दी तो रानी ने स्वयं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित होना उचित समझा। और अपने सेवकों के साथ फ़लस्तीन के लिये प्रस्थान किया, उस समय उन्हों ने राज्यसदस्यों से यह बात कही।

41. कहाः परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पह्चान जाती है या उन में से हो जाती है जो पह्चानते न हों।

قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

42. तो जब वह आई, तो कहा गयाः क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहाः वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَٰكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۚ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

43. और रोक रखा था उसे (ईमान से) उन (पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (वंदना) कर रही थी अल्लाह के सिवा। निश्चय वह काफ़िरों की जाति में से थी।

وَصَدَّهَا مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

44. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश कर। तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौद) समझी और खोल दीं[1] अपनी दोनों पिंडलियाँ, (सुलैमान ने) कहाः यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहाः मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण[2] पर और (अब) मैं इस्लाम लाई सुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

45. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को, कि तुम सब इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तो अकस्मात् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

46. उस ने कहाः हे मेरी जाति! क्यों तुम

قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

1 पानी से बचाव के लिये कपड़े पाईंचे ऊपर कर लिये।

2 अर्थात अन्य की पूजा-उपासना कर के।

शीघ्र चाहते हो बुराई[1] को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये?

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

47. उन्हों ने कहाः हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ हैं। (सालेह ने) कहाः तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास[2] है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَن مَّعَكَ ۚ قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ ۖ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾

48. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करते थे धरती में, और सुधार नहीं करते थे।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾

49. उन्हों ने कहाः आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के विनाश के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) हैं।

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾

50. और उन्हों ने एक षड्यंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾

51. तो देखो कैसा रहा उन के षड्यंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾

52. तो यह उन के घर हैं उजाड़ पड़े हुये

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

1 अर्थात ईमान लाने के बजाये इन्कार क्यों कर रहे हो?

2 अर्थात तुम पर जो अकाल पड़ा है वह अल्लाह की ओर से है जिसे तुम्हारे कुकर्मों के कारण अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और यह अशुभ मेरे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे कुफ़्र के कारण है। (फ़त्हुल क़दीर)

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾

उन के अत्याचार के कारण, निश्चय इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान लाये, और (अल्लाह से) डर रहे थे।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. तथा लूत को (भेजा), जब उस ने अपनी जाति से कहाः क्या तुम कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम[1] आँखें रखते हो?

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो काम वासना की पूर्ति के लिये? तुम लोग बड़े ना समझ हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. तो उस की जाति का उत्तर बस यह था कि उन्हों ने कहाः लूत के परिजनों को निकाल दो अपने नगर से, वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र बन रहे हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस के परिवार को, उस की पत्नी के सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया पीछे रह जाने वालों में।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾

58. और हम ने उन पर बहुत अधिक वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ ءٰۗللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. आप कह दें: सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, और सलाम है उस के उन भक्तों पर जिन को उस ने चुन

---

1 (देखियेः सूरह आराफ़, 84, और सूरह हूद, 82, 83)। इस्लाम में स्त्री से भी अस्वभाविक संभोग वर्जित है। (सुनन नसाई, हदीस नं॰ - 8985, और सुनन इब्ने माजा, हदीस नं॰ -1924)।

लिया। क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते हैं?

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنۢبِتُوا شَجَرَهَا ۗ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾

60. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और उतारा है तुम्हारे लिये आकाश से जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग़, तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।

أَمَّن جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوٰسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

61. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायीं, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोक। तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिक्तर ज्ञान नहीं रखते।

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

62. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

أَمَّن يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَن يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِۦ ۗ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ تَعٰلَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾

63. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अँधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

أَمَّن يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ وَمَن

64. या वह है जो आरंभ करता है

يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٤﴾

उत्पत्ति को, फिर उसे दुहरायेगा तथा जो तुम्हें जीविका देता है आकाश तथा धरती से, क्या कोई पुज्य है अल्लाह के साथ? आप कह दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे[1] हो।

قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

65. आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।

بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُم مِّنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾

66. बल्कि समाप्त हो गया है उन का ज्ञान आख़िरत (परलोक) के विषय में, बल्कि वे द्विधा में हैं, बल्कि वे उस से अंधे हैं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

67. और कहा काफ़िरों नेः क्या जब हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले[2] जायेंगे।

لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

68. हमें इस का वचन दिया जा चुका है तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले, यह तो बस अगलों की बनायी हुई कथायें हैं।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

69. (हे नबी!) आप कह दें कि चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा हुआ अपराधियो का परिणाम।

---

1 आयत नं॰ 60 से यहाँ तक का सारांश यह है कि जब अल्लाह ने ही पूरे विश्व की उत्पत्ति की है और सब की व्यवस्था वही कर रहा है, और उस का कोई साक्षी नहीं तो फिर यह मिथ्या पूज्य अल्लाह के साथ कहाँ से आ गये? यह तो ज्ञान और समझ में आने की बात नहीं और न इस का कोई प्रमाण है।

2 अर्थात प्रलय के दिन अपनी समाधियों से जीवित निकाले जायेंगे।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝٧٠

70. और आप शोक न करें उन पर और न किसी संकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहें हैं।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝٧١

71. तथा वह कहते हैंः कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?

قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝٧٢

72. आप कह देंः संभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝٧٣

73. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों[1] पर, परन्तु उन में से अधिक्तर कृतज्ञ नहीं होते।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝٧٤

74. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝٧٥

75. और कोई छुपी चीज़ नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में[2] है।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝٧٦

76. निःसंदेह यह क़ुर्आन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिक्तर बातों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝٧٧

77. और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ

78. निःसंदेह आप का पालनहार[3] निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश

---

1 अर्थात लोगों को अपने अनुग्रह से अवसर देता रहता है।

2 इस से तात्पर्य (लौहे महफ़ूज़) सुरक्षित पुस्तक है जिस में सब कुछ अंकित है।

3 अर्थात प्रलय के दिन। और सत्य तथा असत्य को अलग कर के उस का बदला देगा।

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝٧٨

से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝٧٩

79. अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर,वस्तुतः आप खुले सत्य पर हैं।

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝٨٠

80. वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को। और न सुना सकेंगे बहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर[1] कर।

وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝٨١

81. तथा आप अँधे को मार्ग दर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते हैं जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हो।

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝٨٢

82. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर[2],तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन[3] से कि लोग हमारी आयतों पर

---

1 अर्थात जिन की अंतरात्मा मर चुकी हो, और जिन की दुराग्रह ने सत्य और असत्य का अन्तर समझने की क्षमता खो दी हो।

2 अर्थात प्रलय होने का समय।

3 यह पशु वही है जो प्रलय के समीप होने का एक लक्षण है जैसा कि हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि प्रलय उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो, उन में से एक पशु का निकालना है। (देखियेः सहीह मुस्लिम हदीस नंः **2901**)
आप का दूसरा कथन यह है कि सर्व प्रथम जो लक्षण होगा वह सूर्य का पश्चिम से निकलना होगा तथा पूर्वान्ह से पहले पशु का निकलना इन में से जो भी पहले होगा शीघ्र ही दूसरा उस के पश्चात् होगा। (देखियेः सहीह मुस्लिम हदीस नंः **2941**)
और यह पशु मानव-भाषा में बात करेगा जो अल्लाह के सामर्थ्य का एक चिन्ह होगा।

विश्वास नहीं करते थे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

83. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को, फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

84. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगाः क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾

85. और सिध्द हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

86. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई ताकि वह शान्त रहें उस में, तथा दिन को दिखाने वाला।[1] वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴿٨٧﴾

87. और जिस दिन फूँका जायेगा[2] सूर (नरसिंघा) में, तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे विवश हो कर।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ

88. और तुम देखते हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) हैं, जब

1 जिस के प्रकाश में वह देखें और अपनी जीविका के लिये प्रयास करें।

2 अर्थात प्रलय के दिन।

السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾

कि वह (उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान, यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भली -भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَهُمْ مِنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ﴿٨٩﴾

89. जो भलाई[1] लायेगा,तो उस के लिये उस से उत्तम(प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾

90. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोंक दिये जायेंगे औंधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा): तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾

91. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार की इबादत (वंदना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी के अधिकार में है प्रत्येक चीज़, और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।

وَأَنْ أَتْلُوَ الْقُرْآنَ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾

92. तथा क़ुर्आन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

93. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं, वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें

---

1 अर्थात एक अल्लाह के प्रति आस्था तथा तदानुसार कर्म ले कर प्रलय के दिन आयेगा।

तुम पहचान[1] लोगे और तुम्हारा पालनहार उस से अचेत नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।

1 (देखिये सूरह हा, मीम सजदा, आयत- 53)

सूरह क़सस - 28

सूरह क़सस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

इस सूरह का नाम इस की आयत नं॰ 25 में आये हुये शब्द ((क़सस़)) से लिया गया है। जिस का अर्थः वाक्य क्रम का वर्णन करना है। इस सूरह में मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म, उन का अपने शत्रु के भवन में पालन-पोषण, फिर उन के मद्यन जाने और दस वर्ष के पश्चात् अपने परिजनों के साथ अपने देश वापिस आने और राह में नबूवत और चमत्कार मिलने और फ़िरऔन तथा उस की जाति के ईमान न लाने के कारण अपनी सेना के साथ डुबो दिये जाने का पूरा विवरण है। जिस से यह बताया गया है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है उस के संसाधन इस प्रकार बना देता है कि किसी को उस का ज्ञान भी नहीं होता। इसी प्रकार किसी को नबी बनाने के लिये आकाश और धरती में कोई एलान नहीं किया जाता। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे और कब नबी हो गये।

- इस में यह बताया गया है कि अल्लाह जिस से काम लेना चाहता है उसे किसी राज्य और सेना की सहायता की आवश्यक्ता नहीं होती और अन्ततः वही सफल होता है।
- इस में यह संकेत भी है कि सत्य के विरोधी चमत्कार की माँग तो करते हैं किन्तु वह चमत्कार देख कर भी ईमान नहीं लाते जैसा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की जाति ने किया और स्वयं अपना विनाश कर लिया
- यह पूरी सूरह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य नबी होने का प्रमाण भी है क्यों कि हज़ारों वर्ष पुरानी मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी स्थिति का विवरण इस प्रकार वही दे सकता है जिसे अल्लाह ने वह्यी द्वारा यह सब कुछ बताया हो। अन्यथा आप स्वयं निरक्षर थे और अरब में आप के पास ऐसे साधन भी नहीं थे जिस से आप यह सब कुछ जान सकें।
- इस में मक्का के काफ़िरों को कुछ ईसाईयों के क़ुर्आन पाक सुन कर ईमान लाने पर लज्जित किया गया है कि तुम ने अपने घर की बात नहीं मानी।

- और इस के अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा देते हुये सत्य पर स्थित रहने का निर्देश दिया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

طٰسٓمّٓ ①

1. ता, सीन, मीम।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

2. यह इस खुली पुस्तक की आयतें हैं।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ③

3. हम आप के समक्ष सुना रहें हैं मूसा तथा फ़िरऔन के कुछ समाचार सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ④

4. वास्तव में फ़िरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह को उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चय वह उपद्रवियों में से था।

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۙ⑤

5. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्हीं को[1] उत्तराधिकारी।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ⑥

6. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फ़िरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे[2] थे।

---

1 अर्थात मिस्र देश का राज्य उन्हीं को प्रदान कर दें।

2 अर्थात बनी इस्राईल के हाथों अपने राज्य के पतन से।

7. और हम ने वह़्यी[1] की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम वापस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّ مُوسَىٰٓ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِى ٱلْيَمِّ وَلَا تَخَافِى وَلَا تَحْزَنِىٓ ۖ إِنَّا رَآدُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝٧

8. तो ले लिया उसे फ़िरऔन के कर्मचारियों ने[2] ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुःख का कारण। वास्तव में फ़िरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थीं।

فَٱلْتَقَطَهُۥٓ ءَالُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَـٰمَـٰنَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا۟ خَـٰطِـِٔينَ ۝٨

9. और फ़िरऔन की पत्नी ने कहाः यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुँचाये या उसे हम पुत्र बना लें। और वह समझ नहीं रहे थे।

وَقَالَتِ ٱمْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّى وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰٓ أَن يَنفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهُۥ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٩

10. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल, समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते उस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَـٰرِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِى بِهِۦ لَوْلَآ أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝١٠

11. तथा (मूसा की माँ ने) कहाः उस की बहन से कि तू इस के पीछे-पीछे जा। तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِۦ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِۦ عَن جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝١١

12. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ ٱلْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ

1 जब मूसा का जन्म हुआ तो अल्लाह ने उन के माता के मन में यह बातें डाल दीं।

2 अर्थात उसे एक संदूक में रख कर सागर में डाल दिया जिसे फ़िरऔन की पत्नी ने निकाल कर उसे (मूसा को) अपना पुत्र बना लिया।

أَدُلُّكُمْ عَلَىٰٓ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُۥ لَكُمْ وَهُمْ لَهُۥ نَٰصِحُونَ ﴿١٢﴾

उस (मूसा) पर दाईयों को इस से[1] पूर्व। तो उस (की बहन) ने कहाः क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुभचिन्तक हों?

فَرَدَدْنَٰهُ إِلَىٰٓ أُمِّهِۦ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

13. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्लाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिक्तर लोग विश्वास नहीं रखते।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُۥ وَٱسْتَوَىٰٓ ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

14. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देते हैं सदाचारियों को।

وَدَخَلَ ٱلْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِن شِيعَتِهِۦ وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِۦ ۖ فَٱسْتَغَٰثَهُ ٱلَّذِى مِن شِيعَتِهِۦ عَلَى ٱلَّذِى مِنْ عَدُوِّهِۦ فَوَكَزَهُۥ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۖ إِنَّهُۥ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

15. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के वासियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लड़ते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दूसरा उस के शत्रु में[2] से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा और वह मर गया। मूसा ने कहाः यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।

قَالَ رَبِّ إِنِّى ظَلَمْتُ نَفْسِى فَٱغْفِرْ لِى فَغَفَرَ لَهُۥٓ ۚ

16. उस ने कहाः हे मेरे पालनहार! मैं ने

1 अर्थात उस की माता के पास आने से पूर्व।

2 अर्थात एक इस्राईली तथा दूसरा क़िब्ती फ़िरऔन की जाति से था।

إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ١٦

अपने ऊपर अत्याचार कर लिया, तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह क्षमाशील अति दयावान् है।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَنۡعَمۡتَ عَلَيَّ فَلَنۡ أَكُونَ ظَهِيرٗا لِّلۡمُجۡرِمِينَ ١٧

17. उस ने कहाः उस के कारण जो तू ने मुझ पर पुरस्कार किया है अब मैं कदापि अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।

فَأَصۡبَحَ فِي ٱلۡمَدِينَةِ خَآئِفٗا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا ٱلَّذِي ٱسۡتَنصَرَهُۥ بِٱلۡأَمۡسِ يَسۡتَصۡرِخُهُۥۚ قَالَ لَهُۥ مُوسَىٰٓ إِنَّكَ لَغَوِيّٞ مُّبِينٞ ١٨

18. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ समाचार लेने गया तो सहसा वही जिस ने उस से कल सहायता माँगी थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से कहाः वास्तव में तू ही खुला कुपथ है।

فَلَمَّآ أَنۡ أَرَادَ أَن يَبۡطِشَ بِٱلَّذِي هُوَ عَدُوّٞ لَّهُمَا قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ أَتُرِيدُ أَن تَقۡتُلَنِي كَمَا قَتَلۡتَ نَفۡسَۢا بِٱلۡأَمۡسِۖ إِن تُرِيدُ إِلَّآ أَن تَكُونَ جَبَّارٗا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا تُرِيدُ أَن تَكُونَ مِنَ ٱلۡمُصۡلِحِينَ ١٩

19. फिर जब पकड़ना चाहा उसे जो उन दोनों का शत्रु था, तो उस ने कहाः हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना चाहता है जैसे मार दिया एक व्यक्ति को कल? तू तो चाहता है कि बड़ा उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में और तू नहीं चाहता कि सुधार करने वालों में से हो।

وَجَآءَ رَجُلٞ مِّنۡ أَقۡصَا ٱلۡمَدِينَةِ يَسۡعَىٰ قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّ ٱلۡمَلَأَ يَأۡتَمِرُونَ بِكَ لِيَقۡتُلُوكَ فَٱخۡرُجۡ إِنِّي لَكَ مِنَ ٱلنَّٰصِحِينَ ٢٠

20. और आया एक पुरुष नगर के किनारे से दौड़ता हूआ, उस ने कहाः हे मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर रहे हैं तेरे विषय में कि तुझे बध कर दें, अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं तेरे शुभचिन्तकों में से हूँ।

فَخَرَجَ مِنۡهَا خَآئِفٗا يَتَرَقَّبُۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ ٱلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ٢١

21. तो वह निकल गया उस (नगर) से डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले अत्याचारी जाति से।

22. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहाः मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيٓ أَن يَهْدِيَنِي سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ﴿٢٢﴾

23. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों का एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था।तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुईं। उस ने कहाः तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहाः हम पानी नहीं पिलातीं जब तक चरवाहे चले न जायें, और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ ٱلنَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِن دُونِهِمُ ٱمْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتّٰى يُصْدِرَ ٱلرِّعَآءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾

24. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर, और कहने लगाः हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰىٓ إِلَى ٱلظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَآ أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

25. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहाः मेरे पिता[1] आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का पारिश्रमिक दें जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब(मूसा)उस के पास पहूँचा और पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहाः भय न कर। तू मुक्त हो गया अत्याचारी[2] जाति से।

فَجَآءَتْهُ إِحْدٰىهُمَا تَمْشِي عَلَى ٱسْتِحْيَآءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ ٱلْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظّٰلِمِينَ ﴿٢٥﴾

---

1 व्याख्या कारों ने लिखा है कि वह आदरणीय शुऐब (अलैहिस्सलाम) थे जो मद्यन के नबी थे। (देखियेः इब्ने कसीर)

2 अर्थात फ़िरऔनियों से।

26. कहा उन दोनों में से एक नेः हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।

قَالَتْ إِحْدَىٰهُمَا يَٰٓأَبَتِ ٱسْتَـْٔجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ
ٱسْتَـْٔجَرْتَ ٱلْقَوِىُّ ٱلْأَمِينُ ﴿٢٦﴾

27. उस ने कहाः मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से, इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर बोझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।

قَالَ إِنِّىٓ أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ٱبْنَتَىَّ هَٰتَيْنِ
عَلَىٰٓ أَن تَأْجُرَنِى ثَمَٰنِىَ حِجَجٍ ۖ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا
فَمِنْ عِندِكَ ۖ وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِىٓ
إِن شَآءَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾

28. मूसा ने कहाः यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।

قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِى وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا ٱلْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ
فَلَا عُدْوَٰنَ عَلَىَّ ۖ وَٱللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

29. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपने परिवार से कहाः रुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुम्हारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अंगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى ٱلْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِۦٓ ءَانَسَ
مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ ٱمْكُثُوٓا۟ إِنِّىٓ
ءَانَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىٓ ءَاتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ
مِّنَ ٱلنَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

30. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया वादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष सेः हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।

فَلَمَّآ أَتَىٰهَا نُودِىَ مِن شَٰطِئِ ٱلْوَادِ ٱلْأَيْمَنِ فِى
ٱلْبُقْعَةِ ٱلْمُبَٰرَكَةِ مِنَ ٱلشَّجَرَةِ أَن يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّىٓ
أَنَا ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٠﴾

31. और फेंक दो अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا

جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्जवल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फ़िरऔन तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जाति हैं।

قَالَ رَبِّ اِنِّىْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

33. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मै ने बध किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۡ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾

34. और मेरा भाई हारून मुझ से अधिक सुभाषी है, तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. उस ने कहाः हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।

فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَاۗىِٕنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्हों ने कह दिया कि यह तो केवल घड़ा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।

37. तथा मूसा ने कहाः मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्ग दर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होना है? वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِندِهِ وَمَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾

38. तथा फ़िरऔन ने कहाः हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! ईंटें पकवा कर मेरे लिये एक ऊँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَل لِّي صَرْحًا لَّعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٨﴾

39. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्हों ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

40. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में, तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

41. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाते हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जायेगी।

وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

42. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।

وَأَتْبَعْنَاهُمْ فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُم مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾

43. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِن بَعْدِ مَا

أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾

विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾

44. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में[1] जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों[2] में।

وَلَٰكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾

45. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मद्यन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतें और परन्तु हम ही रसूलों को भेजने[3] वाले हैं।

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾

46. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا

47. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तूतों के कारण, तो कहते कि

---

1 पश्चिमी दिशा से अभिप्राय तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ मूसा (अलैहिस्सलाम) को तौरात प्रदान की गई।

2 इन से अभिप्राय वह बनी ईस्राईल हैं जिन से धर्मविधान प्रदान करते समय उस का पालन करने का वचन लिया गया था।

3 भावार्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हज़ारो वर्ष पहले के जो समाचार इस समय सुना रहे हैं जैसे आँखों से देखे हों वह अल्लाह की ओर से वह्यी के कारण ही सुना रहे हैं जो आप के सच्चे नबी होने का प्रमाण है।

رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।[1]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظَاهَرَا ۟ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. फिर जब आ गया उन के पास सत्य हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उसे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्हों ने कुफ़्र (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्हों ने कहाः दो[2] जादूगर हैं दोनों एक -दूसरे के सहायक हैं। और कहाः हम किसी को नहीं मानते।

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. (हे नबी!) आप कह दें: तब तुम्हीं ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों[3] से, मैं चलूँगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾

50. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे हैं, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।

---

1 अर्थात आप को उन की ओर रसूल बना कर इस लिये भेजा है ताकि प्रलय के दिन उन को यह कहने का अवसर न मिले कि हमारे पास कोई रसूल नहीं आया ताकि हम ईमान लाते।

2 अर्थात मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम)। और भावार्थ यह है कि चमत्कारों की माँग, न मानने का एक बहाना है।

3 अर्थात कुर्आन और तौरात से।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

51. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी बात, (क़ुर्आन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक[1] इस (क़ुर्आन) से पहले वह[2] इस पर ईमान लाते हैं।

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

53. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैः हम इस (क़ुर्आन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इस के (उतारने के) पहले ही से मुस्लिम हैं।[3]

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा[4] अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करते हैं अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾

55. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैः हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।

اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

56. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें,[5] परन्तु अल्लाह

1 अर्थात तौरात तथा इंजील।

2 अर्थात उन में से जिन्हों ने अपनी मूल पुस्तक में परिवर्तन नहीं किया है।

3 अर्थात आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी हैं।

4 अपनी पुस्तक तथा क़ुर्आन दोनों पर ईमान लाने के कारण। (देखियेः सहीह बुख़ारी -97, मुस्लिम- 154)

5 हदीस में वर्णित है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के (काफ़िर)

يَهۡدِي مَن يَشَآءُۚ وَهُوَ أَعۡلَمُ بِٱلۡمُهۡتَدِينَ ۝٥٦

सुपथ दर्शाता है जिसे चाहे, और वह भली - भाँति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।

وَقَالُوٓاْ إِن نَّتَّبِعِ ٱلۡهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفۡ مِنۡ أَرۡضِنَآۚ أَوَلَمۡ نُمَكِّن لَّهُمۡ حَرَمًا ءَامِنٗا يُجۡبَىٰٓ إِلَيۡهِ ثَمَرَٰتُ كُلِّ شَيۡءٖ رِّزۡقٗا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُونَ ۝٥٧

57. तथा उन्हों ने कहाः यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उचक[1] लिये जायेंगे। क्या हम ने निवास स्थान नहीं बनाया है उन के लिये भयरहित ((हरम))[2] को उन के लिये, खिंचे चले आ रहे हैं जिस की ओर प्रत्येक प्रकार के फल जीविका स्वरूप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिक्तर लोग नहीं जानते।

وَكَمۡ أَهۡلَكۡنَا مِن قَرۡيَةِۭ بَطِرَتۡ مَعِيشَتَهَاۖ فَتِلۡكَ مَسَٰكِنُهُمۡ لَمۡ تُسۡكَن مِّنۢ بَعۡدِهِمۡ إِلَّا قَلِيلٗاۖ وَكُنَّا نَحۡنُ ٱلۡوَٰرِثِينَ ۝٥٨

58. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी बस्तियों का इतराने लगी जिन की जीविका। तो यह हैं उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोड़े और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهۡلِكَ ٱلۡقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبۡعَثَ فِيٓ أُمِّهَا رَسُولٗا يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِنَاۚ وَمَا كُنَّا مُهۡلِكِي ٱلۡقُرَىٰٓ إِلَّا وَأَهۡلُهَا ظَٰلِمُونَ ۝٥٩

59. और नहीं है आप का पालन- हार विनाश करने वाला बस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रसूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हामरी आयतें, और हम बस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब

चाचा अबू तालिब के निधन का समय हुआ, तो आप उन के पास गये। उस समय उन के पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबि उमय्या उपस्थित थे। आप ने कहाः चाचा ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) कह दें ताकि मैं क़्यामत के दिन अल्लाह से आप की क्षमा के लिये सिफ़ारिश कर सकूँ। परन्तु दोनों के कहने पर उन्हों ने अस्वीकार कर दिया और उन का अन्त कुफ़्र पर हुआ। इसी विषय में यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी हदीस नं॰,4772)

1 अर्थात हमारे विरोधी हम पर आक्रमण कर देंगे।

2 अर्थात मक्का नगर को।

उस के निवासी अत्याचारी हों।

60. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह संसारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

وَمَآ أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٠

61. तो क्या जिसे हम ने वचन दिया है एक अच्छा वचन और वह पाने वाला हो उसे, उस के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है संसारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा?[1]

أَفَمَن وَعَدْنَٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَٰقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَٰهُ مَتَٰعَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ مِنَ ٱلْمُحْضَرِينَ ٦١

62. और जिस दिन वह[2] उन्हें पुकारेगा, तो कहेगाः कहाँ हैं मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ٦٢

63. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बात[3]: हे हमारे पालनहार! यही हैं जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहके, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष, यह हमारी पूजा[4] नहीं कर रहे थे।

قَالَ ٱلَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَغْوَيْنَآ أَغْوَيْنَٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوٓا۟ إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ٦٣

64. तथा कहा जायेगाः पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे, तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!

وَقِيلَ ٱدْعُوا۟ شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَهُمْ وَرَأَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا۟ يَهْتَدُونَ ٦٤

---

1 अर्थात दण्ड और यातना का अधिकारी होगा।

2 अर्थात अल्लाह प्रलय के दिन पुकारेगा।

3 अर्थात दण्ड और यातना के अधिकारी होने की।

4 यह हमारे नहीं बल्कि अपने मन के पूजारी थे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَآ أَجَبْتُمُ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

65. और वह (अल्लाह) उस दिन उन को पुकारेगा, फिर कहेगाः तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ ٱلْأَنۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُونَ ﴿٦٦﴾

66. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक-दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे।

فَأَمَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَعَسَىٰٓ أَن يَكُونَ مِنَ ٱلْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

67. फिर जिस ने क्षमा माँग ली[1] तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकता है कि वह सफल होने वालों में से होगा।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ ٱلْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

68. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

69. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

وَهُوَ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ ٱلْحَمْدُ فِى ٱلْأُولَىٰ وَٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَلَهُ ٱلْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

70. तथा वही अल्लाह[2] है कोई वन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फेरे[3] जाओगे।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمُ ٱلَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَآءٍ

71. (हे नबी!) आप कहियेः तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क़्यामत के दिन तक, तो

---

1 अर्थात संसार में से।

2 अर्थात जो उत्पत्ति करता तथा सब अधिकार और ज्ञान रखता है।

3 अर्थात हिसाब और प्रतिफल के लिये।

أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾

कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾

72. आप कहियेः तुम बताओ, यदि अल्लाह कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क़्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखते नहीं[1] हो?

وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

73. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह(जीविका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾

74. और अल्लाह जिस दिन उन्हें पुकारेगा, तो कहेगाः कहाँ हैं वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?

وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

75. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगेः लाओ अपने[2] तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और उन से खो जायेंगी जो बातें वे घड़ रहे थे।

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوأُ

76. क़ारून[3] था मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया

1 अर्थात रात्रि तथा दिन के परिवर्तन को।

2 अर्थात शिर्क के प्रमाण।

3 यहाँ से धन के गर्व तथा उस के दुष्परिणाम का एक उदाहरण दिया जा रहा है कि क़ारून, मूसा (अलैहिस्सलाम) के युग का एक धनी व्यक्ति था।

بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

इतने कोष कि उस की कुंजियाँ भारी थीं एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति नेः मत इतरा, वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

77. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आख़िरत (परलोक) का घर, और मत भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अल्लाह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

78. उस ने कहाः मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह ने विनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक थे धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता[1] अपने पापों के सम्बंध में अपराधियों से।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾

79. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवनः क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन- धान्य) होता जो दिया गया है क़ारून को! वास्तव में वह बड़ा शौभाग्यशाली है।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ

80. तथा उन्हों ने कहा जिन को ज्ञान

1 अर्थात विनाश के समय।

दिया गयाः तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे, और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।

لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

81. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं अपनी सहायता कर सका।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾

82. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगेः क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दासों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का, तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते नहीं कि काफ़िर (कृतघ्न) सफल नहीं होते।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۗ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

83. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बड़ाई करना धरती में और न उपद्रव करना, और अच्छा परिणाम आज्ञा- कारियों[1] के लिये है।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

84. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

1 इस में संकेत है कि धरती में गर्व तथा उपद्रव का मूलाधार अल्लाह की अवैज्ञा है।

परन्तु वही जो वे करते रहे।

85. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुर्आन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की[1] ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कुपथ में है।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ مَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾

86. और आप आशा नहीं रखते थे कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक[2], परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफ़िरों के।

وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

87. और वह आप को न रोकें अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गईं आप की ओर, और बुलाते रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुश्रिकों में से।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾

88. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई वंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक वस्तु नाशवान है सिवाय उस के स्वरूप के। उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे[3] जाओगे।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

1 अर्थात आप जिस शहर मक्का से निकाले गये हैं उसे विजय कर लेंगे। और यह भविष्य वाणी सन् 8 हिज्री में पूरी हुई (सहीह बुख़ारीः 4773)

2 अर्थात कुर्आन पाक।

3 अर्थात प्रलय के दिन हिसाब तथा अपने कर्मों का फल पाने के लिये।

सूरह अन्कबूत - 29

सूरह अन्कबूत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 69 आयतें हैं।

- इस सूरह का यह नाम इस की आयत नं॰ (41) में आये हुये शब्द ((अन्कबूत)) से लिया गया है। जिस का अर्थ मकड़ी है। इस सूरह में, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बनाते हैं उन की उपमा मकड़ी से दी गई है। जिस का घर सब से अधिक निर्बल होता है। इसी प्रकार मुश्रिकों का भी कोई सहारा नहीं होगा।
- इस में उन लोगों को निर्देश दिये गये हैं जो ईमान लाने के कारण सताये जाते हैं और अनेक प्रकार की परीक्षाओं से जूझते हैं। और कई नबियों के उदाहरण दिये गये हैं जिन्हों ने अपनी जातियों के अत्याचार का सामना किया। और धैर्य के साथ सत्य तथा तौहीद पर स्थित रहे और अन्ततः सफल हुये।
- इस में मुश्रिकों के लिये सोच-विचार का आमंत्रण तथा विरोधियों के संदेहों का निवारण किया गया है। और तौहीद तथा परलोक की वास्तविक्ता की ओर ध्यान दिलाया गया है और उस के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं
- अन्तिम आयत में अल्लाह की राह में प्रयास करने पर उस की सहायता और उस के वचन के पूरा होने की ओर संकेत किया गया हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓمّٓ ①

1. अलिफ़, लाम, मीम।

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ②

2. क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह छोड़ दिये जायेंगे कि वह कहते हैं, हम ईमान लाये और उन की परीक्षा नहीं ली जायेगी?

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ۝٣

3. और हम ने परीक्षा ली है उन से पूर्व के लोगों की, तो अल्लाह अवश्य जानेगा[1] उन को जो सच्चे हैं, तथा अवश्य जानेगा झूठों को।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَن يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝٤

4. क्या समझ रखा है उन लोगों ने जो कुकर्म कर रहे हैं कि हम से अग्रसर[2] हो जायेंगे? क्या ही बुरा निर्णय कर रहे हैं!

مَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٥

5. जो आशा रखता हो अल्लाह से मिलने[3] की, तो अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ समय[4] अवश्य आने वाला है। और वह सब कुछ सुनने जानने[5] वाला है।

وَمَن جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝٦

6. और जो प्रयास करता है तो वह प्रयास करता है अपने ही भले के लिये, निश्चय अल्लाह निस्पृह है संसार वासियों से।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٧

7. तथा जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, हम अवश्य दूर कर देंगे उन से उन की बुराईयाँ, तथा उन्हें प्रतिफल देंगे उन के उत्तम कर्मों का।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِن

8. और हम ने निर्देश दिया मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ उपकार

1 अर्थात आपदाओं द्वारा परीक्षा ले कर जैसा कि उस का नियम है उन में विवेक कर देगा। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात हमें विवश कर देंगे और हमारे नियंत्रण में नहीं आयेंगे।

3 अर्थात प्रलय के दिन।

4 अर्थात प्रलय का दिन।

5 अर्थात प्रत्येक के कथन और कर्म को उस का प्रतिकार देने के लिये।

करने का[1], और यदि दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरे साथ उस चीज़ को जिस का तुम को ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात न मानो[2]मेरी ओर ही तुम्हें फिर कर आना है, फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा। उस कर्म से जो तुम करते रहे हो।

جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۗ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨

9. और जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हम उन्हें अवश्य सम्मिलित कर देंगे सदाचारियों में।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝٩

10. और लोगों में वे (भी) हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाये अल्लाह पर। फिर जब सताये गये अल्लाह के बारे में तो समझ लिया लोगों की परीक्षा को अल्लाह की यातना के समान। और यदि आ जाये कोई सहायता आप के पालनहार की ओर से, तो अवश्य कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। तो क्या अल्लाह भली-भाँति अवगत नहीं है उस से जो संसारवासियों के दिलों में है?

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۗ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۗ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠

11. और अल्लाह अवश्य जान लेगा उन को जो ईमान लाये हैं, तथा अवश्य जान लेगा द्विधावादियों[3] को।

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ۝١١

12. और कहा काफ़िरों ने उन से जो

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا

---

1 हदीस में है कि जब साद बिन अबी वक़्क़ास इस्लाम लाये तो उन की माँ ने दबाव डाला और शपथ ली कि जब तक इस्लाम न छोड़ दें वह न उन से बात करेगी और न खायेगी न पियेगी, इसी पर यह आयत उतरी (सहीह मुस्लिमः 1748)

2 इस्लाम का यह नियम है जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि ((किसी के आदेश का पालन अल्लाह की अवैज्ञा मैं नहीं है।)) (मुस्नद अहमद-1।66, सिलसिला सहीहा- अल्बानीः 179)

3 अर्थात जो लोगों के भय के कारण दिल से ईमान नहीं लाते।

سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۗ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾

ईमान लाये हैंः अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं हैं उन के पापों का कुछ भी,वास्तव में वह झूठे हैं।

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۗ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾

13. और वह अवश्य प्रभारी होंगे अपने बोझों के और कुछ[1] बोझों के अपने बोझों के साथ, और उन से अवश्य प्रश्न किया जायेगा प्रलय के दिन उस झूठ के बारे में जो घड़ते रहे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ۗ فَأَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

14. तथा हम[2] ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, तो वह रहा उन में हज़ार वर्ष किन्तु पचास[3] वर्ष, फिर उन्हें पकड़ लिया तूफ़ान ने, तथा वे अत्याचारी थे।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَا آيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

15. तो हम ने बचा लिया उस को और नाव वालों को, और बना दिया उसे एक निशानी (शिक्षा) विश्व वासियों के लिये।

وَإِبْرٰهِيْمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾

16. तथा इब्राहीम को जब उस ने अपनी जाति से कहाः इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा उस से डरो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

إِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ أَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ إِفْكًا ۗ إِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ

17. तुम तो अल्लाह के सिवा बस उन की वंदना कर रहे हो जो मूर्तियाँ हैं, तथा तुम झूठ घड़ रहे हो, वास्तव में जिन

1 अर्थात दूसरों को कुपथ करने के पापों का।

2 यहाँ से कुछ नबियों की चर्चा की जा रही है जिन्हों ने धैर्य से काम लिया।

3 अर्थात नूह (अलैहिस्सलाम) (950) वर्ष तक अपनी जाति में धर्म का प्रचार करते रहे।

مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾

को तुम पूज रहे हो अल्लाह के सिवा वे नहीं अधिकार रखते हैं तुम्हारे लिये जीविका देने का। अतः खोज करो अल्लाह के पास जीविका की तथा इबादत (वंदना) करो उस की और कृतज्ञ बनो उस के, उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

18. और यदि तुम झुठलाओ तो झुठलाया है बहुत से समुदायों ने तुम से पहले, और नहीं है रसूल[1] का दायित्व परन्तु खुला उपदेश पहुँचा देना।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

19. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है फिर उसे दुहरायेगा[2], निश्चय यह अल्लाह पर अति सरल है।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

20. (हे नबी!) कह दें कि चलो- फिरो धरती में फिर देखो कि उस ने कैसे उत्पत्ति का आरंभ किया है, फिर अल्लाह दूसरी बार भी उत्पन्न[3] करेगा, वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

21. वह यातना देगा जिसे चाहेगा तथा दया करेगा जिस पर चाहेगा, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ

22. तुम उसे विवश करने वाले नहीं हो, न धरती में न आकाश में, तथा नहीं है तुम्हारा उस के सिवा कोई

1 अर्थात अल्लाह का उपदेश मनवा देना रसूल का कर्तव्य नहीं है।

2 इस आयत में आख़िरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है।

3 अर्थात प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल देने के लिये।

وَلَا نَصِيرٍ ٢٢

संरक्षक और न सहायक।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٢٣

23. तथा जिन लोगों ने इन्कार किया अल्लाह की आयतों और उस से मिलने का, वही निराश हो गये हैं मेरी दया से और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٢٤

24. तो उस (इब्राहीम) की जाति का उत्तर बस यही था कि उन्हों ने कहाः इसे बध कर दो या इसे जला दो, तो अल्लाह ने उसे बचा लिया अग्नि से। वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो ईमान रखते हैं।

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ٢٥

25. और कहाः तुम ने तो अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच संसारिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे तथा धिक्कारोगे एक-दूसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा, और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक।

فَآمَنَ لَهُ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٢٦

26. तो मान लिया उस को लूत[1] ने, और इब्राहीम ने कहाः मैं हिज्रत कर रहा हूँ अपने पालनहार[2] की ओर। निश्चय वही प्रबल तथा गुणी है।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ

27. और हम ने प्रदान किया उसे इस्हाक़ तथा याकूब तथा हम ने रख दी उस की संतान में नबूवत तथा पुस्तक,

---

1 लूत (अलैहिस्सलाम) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के भतीजे थे। जो उन पर ईमान लाये।

2 अर्थात अल्लाह के आदेशानुसार शाम जा रहा हूँ।

فِي الدُّنْيَا ۚ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾

और हम ने प्रदान किया उसे उस का प्रतिफल संसार में, और निश्चय वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾

28. तथा लूत को (भेजा)। जब उस ने अपनी जाति से कहाः तुम तो वह निर्लज्जा कर रहे हो जो तुम से पहले नहीं किया है किसी ने संसार वासियों में से।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۙ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٩﴾

29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो, और डकैती करते हो तथा अपनी सभाओं में निर्लज्जा के कार्य करते हो? तो नहीं था उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कि उन्हों ने कहाः तू ला दे हमारे पास अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चों में से है।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

30. लूत ने कहाः मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उपद्रवी जाति पर।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظٰلِمِينَ ﴿٣١﴾

31. और जब आये हमारे भेजे हुये (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर, तो उन्हों ने कहाः हम विनाश करने वाले हैं इस बस्ती के वासियों का। वस्तुतः इस के वासी अत्याचारी हैं।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٣٢﴾

32. इब्राहीम ने कहाः उस में तो लूत है। उन्हों ने कहाः हम भली-भाँति जानने वाले हैं जो उस में है। हम अवश्य बचा लेंगे उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा, वह पीछे रह जाने वालों में थी।

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ

33. और जब आ गये हमारे भेजे हुये लूत

के पास तो उसे बुरा लगा और वह उदासीन हो गया[1] उन के आने पर। और उन्हों ने कहाः भय न कर और न उदासीन हो, हम तुझे बचा लेने वाले हैं तथा तेरे परिवार को, परन्तु तेरी पत्नी को,वह पीछे रह जाने वालों में है।

وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنَجُّوْكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

34. वास्तव में हम उतारने वाले हैं इस बस्ती के वासियों पर आकाश से यातना इस कारण कि वह उल्लंघन कर रहे हैं।

إِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

35. तथा हम ने छोड़ दी है उस में एक खुली निशानी उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾

36. तथा मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को (भेजा) तो उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तथा आशा रखो प्रलय के दिन[2] की और मत फिरो धरती में उपद्रव करते हुये।

وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

37. किन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया तो पकड़ लिया उन्हें भूकम्प ने और वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَكَذَّبُوْهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

38. तथा आद और समूद का (विनाश किया)। और उजागर हैं तुम्हारे लिये उन के घरों के कुछ अवशेष, और शोभनीय बना दिया शैतान ने उन के कर्मों को और रोक दिया उन्हें सुपथ

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾

1 क्योंकि लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी जाति की निर्लज्जा का ज्ञान था।

2 अर्थात संसारिक जीवन ही को सब कुछ न समझो, परलोक के अच्छे परिणाम की भी आशा रखो और सदाचार करो।

से, जब कि वह समझ- बूझ रखते थे।

39. और क़ारून तथा फ़िरऔन और हामान का, और लाये उन के पास मूसा खुली निशानियाँ, तो उन्हों ने अभिमान किया और वह हम से आगे[1] होने वाले न थे।

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَلَقَدْ جَاءَهُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۝٣٩

40. तो प्रत्येक को हम ने पकड़ लिया उस के पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरसाये[2] और उन में से कुछ को पकड़ा[3] कड़ी ध्वनि ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो[4] दिया। तथा नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنبِهِ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝٤٠

41. उन का उदाहरण जिन्होंने बना लिये अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक, मकड़ी जैसा है जिस ने एक घर बनाया, और वास्तव में घरों में सब से अधिक निर्बल घर[5] मकड़ी का है यदि वह जानते।

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝٤١

42. वास्तव में अल्लाह जानता है कि वे जिसे पुकारते हैं[6] अल्लाह को छोड़

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن

1 अर्थात हमारी पकड़ से नहीं बच सकते थे।

2 अर्थात लूत की जाति पर।

3 अर्थात सालेह और शुऐब (अलैहिमस्सलाम) की जाति को।

4 जैसे क़ारून को।

5 अर्थात नूह तथा मूसा(अलैहिमस्सलाम) की जातियों को।

6 जिस प्रकार मकड़ी का घर उस की रक्षा नहीं करता वैसे ही अल्लाह की यातना के समय इन जातियों के पूज्य उन की रक्षा नहीं कर सके।

شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾

कर वह कुछ नहीं हैं। और वही प्रबल गुणी (प्रवीण) है।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

43. और यह उदाहरण हम लोगों के लिये दे रहे हैं और इसे नहीं समझेंगे परन्तु ज्ञानी लोग (ही)।

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

44. उत्पत्ति की है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सत्य के साथ। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है ईमान लाने वालों के[1] लिये।

اتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٥﴾

45. आप उस पुस्तक को पढ़ें जो वह्यी (प्रकाशना) की गई है आप की ओर, तथा स्थापना करें नमाज़ की। वास्तव में नमाज़ रोकती है निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान् है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते[2] हो।

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلَٰهُنَا وَإِلَٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾

46. और तुम वाद-विवाद न करो अहले किताब[3] से परन्तु ऐसी विधि से जो सर्वोत्तम हो, उन के सिवा जिन्हों ने अत्याचार किया है उन में से। तथा तुम कहो कि हम ईमान लाये उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उतारा गया तुम्हारी ओर, तथा हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही[4] है। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।[5]

---

1 अर्थात इस विश्व की उत्पत्ति तथा व्यवस्था ही इस का प्रमाण है कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।

2 अर्थात जो भला- बुरा करते हो उस का प्रतिफल तुम्हें देगा।

3 अहले किताब से अभिप्रेत यहूदी तथा ईसाई हैं।

4 अर्थात उस का कोई साझी नहीं।

5 अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ और सभी आकाशीय पुस्तकों

وَكَذٰلِكَ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۚ فَالَّذِينَ ءَاتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُونَ بِهِۦ ۖ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَن يُؤْمِنُ بِهِۦ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِـَٔايٰتِنَآ إِلَّا الْكٰفِرُونَ ﴿٤٧﴾

47. और इसी प्रकार हम ने उतारी है आप की ओर यह पुस्तक, तो जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह इस (कुर्आन) पर ईमान लाते[1] हैं और इन में से (भी) कुछ[2] इस (कुर्आन) पर ईमान ला रहे हैं। और हमारी आयतों को काफ़िर ही नहीं मानते हैं।

وَمَا كُنتَ تَتْلُوا مِن قَبْلِهِۦ مِن كِتٰبٍ وَلَا تَخُطُّهُۥ بِيَمِينِكَ ۖ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

48. और आप इस से पूर्व न कोई पुस्तक पढ़ सकते थे और न अपने हाथ से लिख सकते थे। यदि ऐसा होता तो झूठे लोग संदेह[3] में पड़ सकते थे।

بَلْ هُوَ ءَايٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِى صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِـَٔايٰتِنَآ إِلَّا الظّٰلِمُونَ ﴿٤٩﴾

49. बल्कि यह खुली आयतें है जो उन के दिलों में सुरक्षित हैं जिन को ज्ञान दिया गया है। तथा हमारी आयतों (कुर्आन) का इन्कार[4] अत्याचारी ही करते हैं।

وَقَالُوا لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايٰتٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۖ قُلْ إِنَّمَا الْءَايٰتُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَآ أَنَا۠ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾

50. तथा (अत्याचारियों) ने कहाः क्यों नहीं उतारी गयीं आप पर निशानियाँ आप के पालनहार की ओर से? आप कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास[5] हैं। और मैं तो खुला सावधान करने वाला हूँ।

को कुर्आन सहित स्वीकार करो।

1 अर्थात अहले किताब में से जो अपनी पुस्तकों के सत्य अनुयायी हैं।

2 अर्थात मक्का वासियों में से।

3 अर्थात यह संदेह करते कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बातें आदि ग्रन्थों से सीख लीं या लिख ली हैं। आप तो निरक्षर थे लिखना-पढ़ना जानते ही नहीं थे तो फिर आप के नबी होने और कुर्आन के अल्लाह की ओर से अवतरित किये जाने में क्या संदेह हो सकता है।

4 अर्थात जो सत्य से आज्ञान हैं।

5 अर्थात उसे उतारना-न उतारना मेरे अधिकार में नहीं, मैं तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ٥١

51. क्या उन्हें पर्याप्त नहीं कि हम ने उतारी है आप पर यह पुस्तक (कुर्आन) जो पढ़ी जा रही है उन पर। वास्तव में इस में दया और शिक्षा है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ٥٢

52. आप कह दें: पर्याप्त है अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच साक्षी।[1] वह जानता है जो आकाशों तथा धरती में है। और जिन लोगों ने मान लिया है असत्य को और अल्लाह से कुफ़्र किया है वही विनाश होने वाले हैं।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ٥٣

53. और वे[2] आप से शीघ्र माँग कर रहे हैं यातना की। और यदि एक निर्धारित समय न होता तो आजाती उन के पास यातना, और अवश्य आयेगी उन के पास अचानक और उन्हें ज्ञान (भी) न होगा।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ٥٤

54. वे शीघ्र माँग[3] कर रहे हैं आप से यातना की। और निश्चय नरक घेरने वाली है काफ़िरों[4] को।

يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ٥٥

55. जिस दिन छा जायेगी उन पर यातना उन के ऊपर से तथा उन के पैरों के नीचे से। और अल्लाह कहेगाः चखो जो कुछ तुम कर रहे थे।

---

1 अर्थात मेरे नबी होने पर।

2 अर्थात मक्का के काफ़िर।

3 अर्थात संसार ही में उपहास स्वरूप यातना की माँग कर रहे हैं।

4 अर्थात परलोक में।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

56. हे मेरे भक्तों जो ईमान लाये हो! वास्तव में मेरी धरती विशाल है, अतः तुम मेरी ही इबादत (वंदना)[1] करो।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. प्रत्येक प्राणी मौत का स्वाद चखने वाला है फिर तुम हमारी ही ओर फेरे[2] जाओगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

58. तथा जो ईमान लाये, और सदा चार किये तो हम अवश्य उन्हें स्थान देंगे स्वर्ग के उच्च भवनों में, प्रवाहित होंगी जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में, तो क्या ही उत्तम है कर्म करने वालों का प्रतिफल।

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. जिन लोगों ने सहन किया तथा वह अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾

60. कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरते[3] अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुम को, और वह सब कुछ सुनने -जानने वाला है।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾

61. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की, और (किस ने) वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो

---

1 अर्थात किसी धरती में अल्लाह की इबादत न कर सको तो वहाँ से निकल जाओ जैसा कि आरंभिक युग मे मक्का के काफ़िरों ने अल्लाह की इबादत से रोक दिया तो मुसलमान हब्शा और फिर मदीना चले गये।

2 अर्थात अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

3 हदीस में है कि यदि तुम अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा करो तो तुम्हें पक्षी के समान जीविका देगा जो सवेरे भूखा जाते हैं और शाम को अघा कर आते हैं। (तिर्मिज़ी- 2344, यह हदीस हसन सहीह है।)

फिर वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

ٱللَّهُ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ لَهُۥٓ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ٦٢

62. अल्लाह ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से और नाप कर देता है उस के लिये। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَحْيَا بِهِ ٱلْأَرْضَ مِنۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ ۚ قُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ٦٣

63. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उतारा है आकाश से जल, फिर उस के द्वारा जीवित किया है धरती को उस के मरण के पश्चात्? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं। किन्तु उन में से अधिक्तर लोग समझते नहीं।[1]

وَمَا هَٰذِهِ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَآ إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ ٱلدَّارَ ٱلْءَاخِرَةَ لَهِىَ ٱلْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ٦٤

64. और नहीं है यह संसारिक[2] जीवन किन्तु मनोरंजन और खेल और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

فَإِذَا رَكِبُوا۟ فِى ٱلْفُلْكِ دَعَوُا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ فَلَمَّا نَجَّىٰهُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ٦٥

65. और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिये धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।

---

1 अर्थात जब उन्हें यह स्वीकार है कि रचयिता अल्लाह है और जीवन के साधन की व्यवस्था भी वही करता है तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की करनी चाहिये और उस की वंदना तथा उस के शुभगुणों में किसी को उस का साझी नही बनाना चाहिये। यह तो मूर्खता की बात है कि रचयिता तथा जीवन के साधनों की व्यवस्था तो अल्लाह करे और उस की वंदना में अन्य को साझी बनाया जाये।

2 अर्थात जिस संसारिक जीवन का संबंध अल्लाह से न हो तो उस का सुख साम्यिक है। वास्तविक तथा स्थायी जीवन तो परलोक का है अतः उस के लिये प्रयास करना चाहिये।

لِيَكۡفُرُواْ بِمَآ ءَاتَيۡنَٰهُمۡ وَلِيَتَمَتَّعُواْۖ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُونَ ۝٦٦

66. ताकि वह कुफ़्र करें उस के साथ जो हम ने उन्हें प्रदान किया है, और ताकि आनन्द लेते रहें, तो शीघ्र ही इन्हें ज्ञान हो जायेगा।

أَوَلَمۡ يَرَوۡاْ أَنَّا جَعَلۡنَا حَرَمًا ءَامِنٗا وَيُتَخَطَّفُ ٱلنَّاسُ مِنۡ حَوۡلِهِمۡۚ أَفَبِٱلۡبَٰطِلِ يُؤۡمِنُونَ وَبِنِعۡمَةِ ٱللَّهِ يَكۡفُرُونَ ۝٦٧

67. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने बना दिया है हरम (मक्का) को शान्ति स्थल, जब कि उचक लिये जाते हैं लोग उन के आस- पास से? तो क्या वह असत्य ही को मानते हैं और अल्लाह के पुरस्कार को नहीं मानते?

وَمَنۡ أَظۡلَمُ مِمَّنِ ٱفۡتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَوۡ كَذَّبَ بِٱلۡحَقِّ لَمَّا جَآءَهُۥٓۚ أَلَيۡسَ فِي جَهَنَّمَ مَثۡوٗى لِّلۡكَٰفِرِينَ ۝٦٨

68. तथा कौन अधिक अत्याचारी होगा उस से जो अल्लाह पर झूठ घड़े या झूठ कहे सच्च को जब उस के पास आ जाये, तो क्या नही होगा नरक में आवास काफ़िरों का?

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُواْ فِينَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَاۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَمَعَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ۝٦٩

69. तथा जिन्हों ने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा[1] देंगे उन को अपनी राह। और निश्चय अल्लाह सदाचारियों के साथ है।

---

1 अर्थात अपनी राह पर चलने की अधिक क्षमता प्रदान करेंगे।

सूरह रूम - 30

सूरह रूम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- इस सूरह में रूमियों के बारे में एक भविष्यवाणी की गई है इसी लिये इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में आख़िरत का विश्वास दिलाया गया है जो संसार की वास्तविक्ता पर विचार करने से पैदा होता है तथा इस से कि अल्लाह का प्रत्येक वचन पूरा होता है।
- इस में रूमियों की विजय की भविष्यवाणी की गई है और इस से विश्व के स्वामी तथा आख़िरत की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की निशानियों में सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है जो आकाशों तथा धरती में फैली हुई हैं और परलोक का विश्वास दिलाती हैं।
- तौहीद के सत्य तथा शिर्क के असत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं और यह बताया गया है कि तौहीद स्वाभाविक धर्म है। अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा पाप से बचने के निर्देश दिये गये हैं और इस पर उत्तम परिणाम की शुभ सूचना दी गई है।
- अन्त में फिर बात प्रलय तथा परलोक की ओर फिर गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. अलिफ़ लाम मीम।

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾

2. पराजित हो गये रूमी।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۙ ﴿٢﴾

3. समीप की धरती में, और वह अपने पराजित होने के पश्चात् जल्द ही विजयी हो जायेंगे।

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۙ ﴿٣﴾

4. कुछ वर्षों में, अल्लाह ही का अधिकार

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۗ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ

بَعۡدُ ۚ وَيَوۡمَئِذٖ يَفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ‏ ﴿٤﴾

है पहले (भी) और बाद में (भी)। और उस दिन प्रशन्न होंगे ईमान वाले।

بِنَصۡرِ اللّٰهِ ؕ يَنۡصُرُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۙ‏ ﴿٥﴾

5. अल्लाह की सहायता से, तथा वही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَعۡدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخۡلِفُ اللّٰهُ وَعۡدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ‏ ﴿٦﴾

6. यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन[1] के, और परन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।

يَعۡلَمُوۡنَ ظَاهِرًا مِّنَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۖۚ وَهُمۡ عَنِ الۡاٰخِرَةِ هُمۡ غٰفِلُوۡنَ‏ ﴿٧﴾

7. वह तो जानते हैं बस ऊपरी संसारिक जीवन को। तथा[2] वह परलोक से अचेत हैं।

اَوَلَمۡ يَتَفَكَّرُوۡا فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَـقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَاِنَّ كَثِيۡرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمۡ لَـكٰفِرُوۡنَ‏ ﴿٨﴾

8. क्या और उन्हों ने अपने में सोच-विचार नहीं किया कि नहीं उत्पन्न किया है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन[3] दोनों के बीच है परन्तु सत्यानुसार

---

1 इन आयतों के अन्दर दो भविष्य वाणियाँ की गई हैं। जो कुर्आन शरीफ़ तथा स्वंय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य होने का ऐतिहासिक प्रमाण हैं। यह वह युग था जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मक्का के कुरैश के बीच युद्ध आरंभ हो गया था। रूम के राजा क़ैसर को उस समय, ईरान के राजा (किस्रा) ने पराजित कर दिया था। जिस से मक्कावासी प्रसन्न थे। क्यों कि वह अग्नि के पुजारी थे। और रूमी ईसाई आकाशीय धर्म के अनुयायी थे। और कह रहे थे कि हम मिश्रणवादी भी इसी प्रकार मुसलमानों को पराजित कर देंगे जिस प्रकार रूमियों को ईरानियों ने पराजय किया। इसी पर यह दो भविष्य वाणी की गई कि रूमी कुछ वर्षों में फिर विजयी हो जायेंगे और यह भविष्य वाणी इस के साथ पूरी होगी कि मुसलमान भी उसी समय विजयी हो कर प्रसन्न हो रहे होंगे। और ऐसा ही हुआ कि 9 वर्ष के भीतर रूमियों ने ईरानियों को पराजित कर दिया।

2 अर्थात सुख-सुविधा और आनन्द को। और वह इस से अचेत हैं कि एक और जीवन भी है जिस में कर्मों के परिणाम सामने आयेंगे। बल्कि यही देखा जाता है कि कभी एक जाति उन्नति कर लेने के पश्चात् असफल हो जाती है।

3 विश्व की व्यवस्था बता रही है कि यह अकारण नहीं, बल्कि इस का कुछ अभिप्राय है।

और एक निश्चित अवधि के लिये? और बहुत से लोग अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।

9. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में, फिर देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पहले थे? वह इन से अधिक थे शक्ति में। उन्हों ने जोता-बोया धरती को और उसे आबाद किया, उस से अधिक जितना इन्हों ने आबाद किया, और आये उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ (प्रमाण) ले कर। तो नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता, और परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

10. फिर हो गया उन का बुरा अन्त जिन्हों ने बुराई की, इस लिये कि उन्हों ने झूठ कहा अल्लाह की आयतों को, और वह उन का उपहास कर रहे थे।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾

11. अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभकरता है फिर उसे दुहरायेगा, तथा उसी की ओर तुम फेरे[1] जाओगे।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

12. और जब स्थापित होगी प्रलय, तो निराश[2] हो जायेंगे अपराधी।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٢﴾

13. और नहीं होगा उन के साझियों में उन का अभिस्तावक (सिफ़ारशी) और वह अपने साझियों का इन्कार

وَلَمْ يَكُن لَّهُم مِّن شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ﴿١٣﴾

---

1 अर्थात प्रलय के दिन अपने संसारिक अच्छे बुरे कर्मों का प्रतिकार पाने के लिये।

2 अर्थात अपनी मुक्ति से और चकित हो कर रह जायेंगे।

करने वाले[1] होंगे।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और जिस दिन स्थापित होगी प्रलय, तो उस दिन सब अलग अलग हो जायेंगे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾

15. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये वही स्वर्ग में प्रसन्न किये जायेंगे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىِٕكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾

16. और जिन्होंने कुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों को और परलोक के मिलन को, तो वही यातना में उपस्थित किये हुये होंगे।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾

17. अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का वर्णन संध्या तथा सवेरे किया करो।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾

18. तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में तीसरे पहर तथा जब दोपहर हो।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾

19. वह निकालता है[2] जीवित से निर्जीव को, तथा निकालता है निर्जीव से जीव को, और जीवित कर देता है धरती को उस के मरण (सूखने) के पश्चात् और इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. और उस की (शक्ति) के लक्षणों में से यह (भी) है कि तुम्हें उत्पन्न किया मिट्टी से, फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।

---

1 क्यों कि यह देख लेंगे कि उन्हें सिफ़ारिश करने का कोई अधिकार नहीं होगा। (देखिये सूरह, अन्आम आयतः 23)

2 यहाँ से यह बताया जा रहा है कि प्रलय होकर परलोक में सब को पुनः जीवित किया जाना संभव है और उस का प्रमाण दिया जा रहा है। इसी के साथ यह भी बताया जा रहा है कि इस विश्व का स्वामी और व्यवस्थायक अल्लाह ही है, अतः पूज्य भी केवल वही है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. तथा उस की निशानियों (लक्षणों) में से यह (भी) है कि उतपन्न किया तुम्हारे लिये तुम्हीं में से जोड़े, ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उन के पास तथा उतपन्न कर दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया, वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगो के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

22. तथा उस की निशानियों मे से है आकाशों और धरती को पैदा करना, तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना। निश्चय इस में कई निशानियाँ है ज्ञानियों[1] के लिये।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۤؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. तथा उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात्री में तथा दिन में, और तुम्हारा खोज करना उस के अनुग्रह (जीविका) का। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. और उस की निशानियों में से (यह भी) है कि वह दिखाता है तुम्हें बिजली को भय तथा आशा बना कर और उतारता है आकाश से जल, फिर जीवित करता है उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्,

---

1 क़ुर्आन ने यह कह कर कि भाषाओं और वर्ग-वर्ण का भेद अल्लाह की रचना की निशानियाँ हैं, उस भेद-भाव को सदा के लिये समाप्त कर दिया जो पक्षताप, आपसी बैर और गर्व का आधार बनते हैं। और संसार की शान्ति का भेद करने का कारण होते हैं। (देखियेः सूरह हुजुरात, आयतः 13)
यदि आज भी इस्लाम की इस शिक्षा को अपना लिया जाये तो संसार शान्ति का गहवारा बन सकता है।

वस्तुतः इस में कई निशानियाँ है उन लोगों के लिये जो सोचते हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝٢٥

25. और उस की निशानियों में से है कि स्थापित हैं आकाश तथा धरती उस के आदेश से। फिर जब तुम्हें पुकारेगा एक बार धरती से तो सहसा तुम निकल पड़ोगे।

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝٢٦

26. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, सब उसी के आधीन हैं।

وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢٧

27. तथा वही है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर वह उसे दुहरायेगा। और वह अति सरल है उस पर। और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, और वही प्रभुत्व शाली तत्वज्ञ है।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاۗءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٨

28. उस ने एक उदाहरण दिया है स्वयं तुम्हाराः क्या तूम्हारे[1] दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका प्रदान की है हम ने तुम को, तो तुम उस में उस के बराबर हो, उन से डरते हो जैसे अपनों से डरते हो? इसी प्रकार हम वर्णन करते हैं आयतों का उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٢٩

29. बल्कि चले हैं अत्याचारी अपनी मनमानी पर बिना समझे, तो कौन राह दिखाये उसे जिस को अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और नहीं है उन

---

1 परलोक और एकेश्वरवाद के तर्कों का वर्णन करने के पश्चात् इस आयत में शुध्द एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि जब तुम स्वयं अपने दासो को अपनी जीविका में साझी नही बना सकते तो जिस अल्लाह ने सब को बनाया है उस की वंदना उपासना में दूसरों को कैसे साझी बनाते हो?

का कोई सहायक।

30. तो (हे नबी!) आप सीधा रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस[1] पर। बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को, यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिक्तर लोग नहीं[2] जानते।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

31. ध्यान कर के अल्लाह की ओर, और डरो उस से तथा स्थापना करो नमाज़ की, और न हो जाओ मुश्रिकों में से।

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾

32. उन में से जिन्हों ने अलग बना लिया अपना धर्म। और हो गये कई गिरोह, प्रत्येक गिरोह उसी में[3] जो उस के पास है मग्न है।

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾

33. और जब पहुँचता है मनुष्यों को कोई दुख तो वह पुकारते हैं अपने पालनहार को ध्यान लगा कर उस की ओर। फिर जब वह चखाता है उन को अपनी ओर से कोई दया, तो सहसा एक गिरोह उन में से अपने पालनहार के

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

---

1 एक हदीस में कुछ इस प्रकार आया है कि प्रत्येक शिशु प्राकृति (नेचर, अर्थात इस्लाम) पर जन्म लेता है। परन्तु उस के माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं। (देखियेः सहीह मुस्लिमः 2656) और यदि उस के माता पिता हिन्दु अथवा बुद्ध या और कुछ हैं तो वे अपने शिशु को अपने धर्म के रंग में रंग देते हैं।
आयत का भावार्थ यह है कि स्वभाविक धर्म इस्लाम और तौहीद को न बदलो बल्कि सहीह पालन पोषण द्वारा अपने शिशु को इसी स्वभाविक धर्म इस्लाम की शिक्षा दो।

2 इसी लिये वह इस्लाम और तौहीद को नहीं पहचानते।

3 वह समझता है कि मैं ही सत्य पर हूँ और उन्हें तथ्य की कोई चिन्ता नही।

साथ शिर्क करने लगता है।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

34. ताकि वह उस के कृतघ्न हो जायें जो हम ने प्रदान किया है उन को। तो तुम आनन्द ले लो, तुम को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

35. क्या हम ने उतारा है उन पर कोई प्रमाण जो वर्णन करता है उस का जिसे वह अल्लाह का साझी बना[1] रहे हैं।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

36. और जब हम चखाते हैं लोगों को कुछ दया तो वह उस पर इतराने लगते हैं। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के करतूतों के कारण तो वह सहसा निराश हो जाते हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

37. क्या उन्हों ने नही देखा कि अल्लाह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहता है और नाप कर देता है? निश्चय इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

38. तो दो समीपवर्तियों को उस का अधिकार तथा निर्धनों और यात्रियों को। यह उत्तम है उन लोगों के लिये जो चाहते हों अल्लाह की प्रसन्नता, और वही सफल होने वाले हैं।

وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ

39. और जो तुम व्याज देते हो ताकि अधिक हो जाये लोगो के धनों[2] में

1 यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात उन के पास इस का कोई प्रमाण नहीं है।

2 इस आयत में सामाजिक अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया गया है कि जब सब कुछ अल्लाह ही का दिया हुआ है तो तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता के लिये सब का अधिकार देना चाहिये। हदीस में है कि जो ब्याज खाता-खिलाता है और उसे लिखता तथा उस पर गवाही देता है उस पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

मिलकर तो वह अधिक नहीं होता अल्लाह के यहाँ। तथा तुम जो ज़कात देते हो चाहते हुये अल्लाह की प्रसन्नता तो वही लोग सफल होने वाले हैं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۗ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, फिर तुम्हें जीविका प्रदान की फिर तुम्हें मारेगा, फिर[1] जीवित करेगा, तो क्या तुम्हारे साझियों में से कोई है जो इस में से कुछ कर सके? वह पवित्र है और उच्च हैं उन के साझी बनाने से।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

41. फैल गया उपद्रव जल तथा[2] थल में लोगों के करतूतों के कारण, ताकि वह चखाये उन को उन का कुछ कर्म, संभवतः वह रुक जायें।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۗ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. आप कह दें चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा रहा उन का अन्त जो इन से पहले थे। उन में अधिक्तर मुश्रिक थे।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. अतः आप सीधा रखें अपना मुख सत्धर्म की दिशा में इस से पहले कि आ जाये वह दिन जिसे फिरना नहीं है अल्लाह की ओर से, उस दिन

ने धिक्कार किया है।

1 इस में फिर एकेश्वरवाद का वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया है।

2 आयत में बताया गया है कि इस विश्व में जो उपद्रव तथा अत्याचार हो रहा है यह सब शिर्क के कारण हो रहा है। जब लोगों ने एकेश्वरवाद को छोड़ कर शिर्क अपना लिया तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। क्यों कि न एक अल्लाह का भय रह गया और न उस के नियमों का पालन।

लोग अलग-अलग हो[1]जायेंगे।

44. जिस ने कुफ़्र किया तो उसी पर उस का कुफ़्र है और जिस ने सदाचार किया तो वे अपने ही लिये (सफलता का मार्ग) बना रहे हैं।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾

45. ताकि अल्लाह बदला दे उन को जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये अपने अनुग्रह से। निश्चय वह प्रेम नहीं करता काफ़िरों से।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾

46. और उस की निशानियों में से है कि भेजता है वायु को शुभसूचना देने के लिये और ताकि चखाये तुम्हें अपनी दया (वर्षा) में से, और ताकि नाव चलें उस के आदेश से, और ताकि तुम खोजो उस जीविका और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَن يُرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

47. और हम ने भेजा आप से पहले रसूलों को उन की जातियों की ओर। तो वह लाये उन के पास खुली निशानियाँ, अन्ततः हम ने बदला ले लिया उन से जिन्हों ने अपराध किया। और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता[2] करना।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَانتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

48. अल्लाह ही है जो वायुओं को भेजता है, फिर वह उसे फैलाता है आकाश में जैसे चाहता है, और उसे घंघोर बना देता है। तो तुम देखते हो बूंदों

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۖ فَإِذَا

---

1 अर्थात ईमान वाले और काफ़िर।

2 आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के अनुयायियों को सांत्वना दी जा रही है।

اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝٤٨

को निकलते उस के बीच से, फिर जब उसे पहुँचाता है जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से तो सहसा वह प्रफुल्ल हो जाते हैं।

وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ۝٤٩

49. यद्यपि वह थे इस से पहले कि उन पर उतारी जाये, अति निराश।

فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٥٠

50. तो देखो अल्लाह की दया के लक्षणों को, वह कैसे जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मुर्दों को तथा वह सब कुछ कर सकता है।

وَلَىِٕنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝٥١

51. और यदि हम भेज दें उग्र वायु फिर वह देख लें उस (खेती) को पीली तो इस के पश्चात् कुफ़्र करने लगते हैं।

فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٢

52. तो (हे नबी) आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों[1] को और नहीं सुना सकेंगे बहरों को पुकार जब वह भाग रहे हों पीठ फेर कर।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝٥٣

53. तथा नहीं हैं आप मार्ग दर्शाने वाले अँधों को उन के कुपथ से, आप सुना सकेंगे उन्हीं को जो ईमान लाते हैं हमारी आयतों पर फिर वही मुस्लिम हैं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝٥٤

54. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात् बल फिर कर दिया बल के पश्चात् निर्बल तथा बूढ़ा[2],वह उत्पन्न करता है

---

1 अर्थात जिन की अन्तरात्मा मर चुकी हो और सत्य सुनने के लिये तय्यार न हों।

2 अर्थात एक व्यक्ति जन्म से मरण तक अल्लाह के सामर्थ्य के आधीन रहता है फिर उस की वंदना में उस के आधीन होने और उस के पुनः पैदा

जो चाहता है और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है।

55. और जिस दिन व्याप्त होगी प्रलय तो शपथ लेंगे अपराधी कि वह नहीं रहे क्षणभर[1] के सिवा। और इसी प्रकार वह बहकते रहे।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

56. तथा कहेंगे जो ज्ञान दिये गये तथा ईमान, कि तुम रहे हो अल्लाह के लेख में प्रलय के दिन तक, तो अब यह प्रलय का दिन है। और परन्तु तुम विश्वास नहीं रखते थे।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

57. तो उस दिन नहीं काम देगा अत्याचारियों को उन का तर्क और न उन से क्षमायाचना कराई जायेगी।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

58. और हम ने वर्णन कर दिया है लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण का, और यदि आप ला दें उन के पास कोई निशानी तब भी अवश्य कह देंगे जो काफ़िर हो गये कि तुम तो केवल झूठ बनाते हो।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

59. इसी प्रकार मुहर लगा देता है अल्लाह उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते।

كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

60. तो आप सहन करें, वास्तव में अल्लाह का वचन सत्य है, और

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ

कर देने के सामर्थ्य को अस्वीकार क्यों करता है?

1 अर्थात संसार में।

الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝٦٠

कदापि वह आप[1] को हलका न समझें जो विश्वास नहीं रखते।

1 अन्तिम आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य तथा साहस रखने का आदेश दिया गया है। और अल्लाह ने जो विजय देने तथा सहायता करने का वचन दिया है उस के पूरा होने और निराश न होने के लिये कहा जा रहा है।

सूरह लुक़मान - 31

सूरह लुक़मान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 34 आयतें है।

- इस सूरह में लुक़मान को ज्ञान देने की बात है इस लिये इस का नाम सूरह लुक़मान है।
- इस में धर्म के विषय में विचार करने तथा अंध विश्वास से बचने तथा उन निशानियों से शिक्षा लेने के निर्देश दिये गये हैं जिन से जीवन सुधरता है।
- अल्लाह तथा धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बात करने पर सावधान किया गया है और कर्म सुधारने पर उत्तम परिणाम की शुभसूचना दी गई है।
- लुक़मान की उत्तम बातों का वर्णन किया गया है जो क़ुर्आन पाक की शिक्षाओं के अनुसार हैं।
- उन निशानियों को बताया गया है जिन से तौहीद तथा आख़िरत की राह खुलती है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के दिन से डराया गया है और बताया गया है कि वह सब कुछ जानता है ताकि उस की आख़िरत के बारे में सूचना का विश्वास हो जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम।

الٓمٓ ۝١

2. यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।

تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱلۡكِتَٰبِ ٱلۡحَكِيمِ ۝٢

3. मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये।

هُدٗى وَرَحۡمَةٗ لِّلۡمُحۡسِنِينَ ۝٣

4. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं तथा ज़कात देते है और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।

ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤۡتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُم بِٱلۡأٓخِرَةِ هُمۡ يُوقِنُونَ ۝٤

أُولَٰٓئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥

5. वही लोग
अपने पालनहार के शुपथों पर हैं।
तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا
أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ٦

6. तथा लोगों में वह (भी) है जो
ख़रीदता है खेल की[1] बात ताकि
कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम)
से बिना किसी ज्ञान के और उसे
उपहास बनाये। यही है जिन के लिये
अपमानकारी यातना है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ
يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ٧

7. और जब पढ़ी जायें उस के समक्ष
हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता
है घमंड करते हुये। जैसे उस के
दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे
शुभसूचना सुना दें दुखदायी यातना की।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
النَّعِيمِ ٨

8. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार
किये तो उन्हीं के लिये सुख के बाग़ हैं।

خَالِدِينَ فِيهَا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٩

9. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह
का सत्य वचन है, और वही
प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَأَلْقَىٰ فِي
الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ
دَابَّةٍ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن
كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ١٠

10. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों
को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम
देख रहे हो, और बना दिये धरती
में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें
लेकर, और फैला दिये उन में हर
प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा
आकाश से जल, फिर हम ने उगाये
उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।

1 इस से अभिप्राय गाना-बजाना तथा संगीत और प्रत्येक वह साधन हैं जो सदाचार से अचेत कर दें। इस में क़िस्से, कहानियाँ, काम संबंधी साहित्य सब सम्मिलित हैं।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١١﴾

11. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्हों ने जो उस के अतिरिक्त हैं? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में हैं?

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾

12. और हमने लुक़मान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह निःस्वार्थ सराहनीय है।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾

13. तथा (याद करो) जब लुक़मान ने कहा अपने पुत्र से जब वह समझा रहा था उसेः हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण वाद) बड़ा घोर अत्याचार[1] है।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾

14. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता-पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता नें दुःख पर दुःख झेल कर, और उस का दूध छुड़ाया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता-पिता के, और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।

وَاِنْ جٰهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

15. और यदि वह दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न[2] मानो उन दोनों की

1 हदीस में है कि घोर पापों में सेः अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप के साथ बुरा व्यवहार, जान मारना तथा झूठी शपथ लेना है। (सहीह बुख़ारीः हदीस नंः 6675)

2 हदीस में है कि पाप में किसी की बात नहीं माननी है पुण्य में माननी है। (सहीह बुख़ारीः 7257)

فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

बात। और उन के साथ रहो संसार[1] में सुचारू रूप से, तथा राह चलो उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा उस से जो तुम कर रहे थे।

يَا بُنَيَّ إِنَّهَا إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُن فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَاوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾

16. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो किसी पत्थर के भीतर या आकाशों में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित करेगा[2] अल्लाह। वास्तव में वह सब महीन बातों से सूचित है।

يَا بُنَيَّ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنكَرِ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٧﴾

17. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज़ की और आदेश दे भलाई का तथा रोक बुराई से और सहन कर उस (दुःख) पर जो तुझे पहुँचे, वास्तव में यह बड़े साहस की बात है।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

18. और मत बल दे अपने माथे पर[3] लोगों के लिये तथा मत चल धरती में अकड़ कर। निःसंदेह अल्लाह प्रेम नहीं करता[4] किसी अहंकारी गर्व करने वाले से।

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِن صَوْتِكَ

19. और संतुलन रख अपनी चाल[5] में तथा धीमी रख अपनी आवाज़,

---

1 अर्थात माता-पिता यदि मिश्रणवादी और काफ़िर हों तब भी उन की संसार में सहायता करो।

2 प्रलय के दिन उस का प्रतिफल देने के लिये।

3 अर्थात गर्व से।

4 सहीह हदीस में कहा गया है कि, वह स्वर्ग में नही जायेगा जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार हो। (मुस्नद अहमदः 1|412)

5 (देखियेः सूरह फ़ुर्क़ान, आयत नंः 63)

إِنَّ أَنكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ﴿١٩﴾

वास्तव में सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٢٠﴾

20. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया[1] है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा? और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय[2] में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٢١﴾

21. और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (क़ुर्आन) का जिसे उतारा है अल्लाह ने, तो कहते हैंः बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बुला रहा हो नरक की यातना की[3] ओर?

وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾

22. और समर्पित कर देगा स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अल्लाह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।

وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾

23. तथा जो काफ़िर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ़्र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर हम सूचित कर देंगे उन को उन के कर्मों से। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी

---

1 अर्थात तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।

2 अर्थात उस के अस्तित्व और उस के अकेले पूज्य होने के विषय में।

3 अर्थात क्या वह सत्य और असत्य में अन्तर किये बिना असत्य ही का पालन करेंगे, और न समझ से काम लेंगे, न धर्म पुस्तक को मानेंगे?

है दिलों के भेदों का।

24. हम उन्हें लाभ पहुँचायेंगे बहुत[1], थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें घोर यातना की ओर।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾

25. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये[2] है, बल्कि उन में अधिक्तर ज्ञान नहीं रखते।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

26. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों ताथ धरती में है, वास्तव में अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾

27. और यदि जो भी धरती में वृक्ष हैं सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव में अल्लाह प्रभाव शाली गुणी है।

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

28. और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः जीवित करना केवल एक प्राण के समान[3] है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

مَّا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾

29. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह मिला[4] देता है रात्री को दिन में और

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ

1 अर्थात संसारिक जीवन का लाभ।

2 कि उन्हों ने सत्य को स्वीकार कर लिया।

3 अर्थात प्रलय के दिन अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से सब को एक प्राणी के पैदा करने तथा जीवित करने के समान पुनः जीवित कर देगा।

4 क़ुर्आन ने एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने तथा मिश्रणवाद का खण्डन करने के

فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِىٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

मिला देता है दिन को[1] रात्री में, तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँती अवगत है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾

30. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾

31. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۗ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

32. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है थल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहने वाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ

33. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से तथा भय करो उस दिन का जिस

लिये फिर इस का वर्णन किया है कि जब विश्व का रचयिता तथा विधाता अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है, फिर भी यह विश्वव्यायी कुपथ है कि लोग अल्लाह के सिवा अन्य कि पूजा करते तथा सूर्य और चाँद को सज्दा करते है, निर्धारित समय से अभिप्राय प्रलय है।

1 तो कभी दिन बड़ा होता है तो कभी रात्री।

وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी संतान के और न कोई पुत्र काम आने वाला होगा अपने पिता के कुछ[1] भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें कदापि धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवंचक (शैतान)।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

34. निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय[2] का ज्ञान,और वही उतारता हे वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं

---

1 अर्थात परलोक की यातना संसारिक दण्ड के सामान नहीं होगी कि कोई किसी की सहायता से दण्ड मुक्त हो जाये।

2 अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन लोगों के बीच बेठे हुये थे कि एक व्यक्ति आया, और प्रश्न किया कि अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है? आप ने कहाः ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर तथा उस के फरिश्तों, उस के सब रसूलों और उस से मिलने और फिर दौबारा जीवित किये जाने पर ईमान लाओ।
उस ने कहाः इस्लाम क्या है? आप ने कहाः इस्लाम यह है कि केवल अल्लाह की इबादत करो और किसी वस्तु को उस का साझी न बनाओ, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रमज़ान के रोज़े रखो।
उस ने कहाः इह्सान क्या है? आप ने कहाः इह्सान यह है कि अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। यदि यह न हो सके तो यह ख़्याल रखो कि वह तुम्हें देख रहा है।
उस ने कहाः प्रलय कब होगी? आप ने कहाः मैं प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता। परन्तु मैं तुम्हें उस की कुछ निशानियाँ बताऊँगाः जब स्त्री अपने स्वामिनी को जन्म देगी और जब नंगे निः वस्त्र लोग मुखिया हो जायेंगे। पाँच बातों में जिन को अल्लाह ही जानता है। और आप ने यही आयत पढ़ी। फिर वह व्यक्ति चला गया। आप ने कहाः उसे बुलाओ, तो वह नहीं मिला। आप ने फ़रमायाः वह जिब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये थे। (सहीह बुख़ारी 4777)

जानता कोई प्राणी कि किस धरती में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला सब से सूचित है।
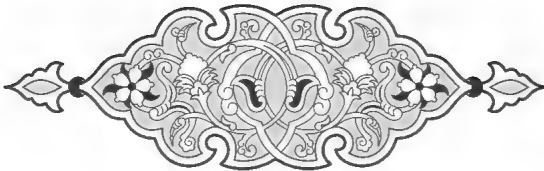
सूरह सज्दा - 32

सूरह सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं॰ 15 में ईमान वालों का यह गुण बताया गया है कि उन्हें अल्लाह की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में तौहीद तथा आख़िरत की बातों को ऐसे वर्णन किया गया है कि संदेह दूर हो कर दिल को विश्वास हो जाये। और बताया गया है कि यह पुस्तक (क़ुर्आन) लोगों को सावधान करने के लिये उतारी गई है। तौहीद के साथ ही मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा भी की गई है।
- इस में आख़िरत का विषय तथा ईमान वालों की कुछ विशेषतायें तथा उन का शुभ परिणाम बताया गया है और झुठलाने वालों का दुष्परिणाम भी दिखाया गया है।
- यह बताया गया है कि नबी का आना कोई अनोखी बात नहीं है। इस से पहले भी मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा दूसरे नबी आते रहे। और विनाशित जातियों के परिणाम पर विचार करने को कहा गया है।
- अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का जवाब देते हुये उन्हें सावधान किया गया है। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस सूरह को जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ में पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारीः 891)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الٓمّٓ ۝١

1. अलिफ़ लाम मीम।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢

2. इस पुस्तक का उतारना जिस में कोई संदेह नही पूरे संसार के पालनहार की ओर से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ

3. क्या वे कहते हैं कि इसे इस ने घड़

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝٣

लिया है? बल्कि यह सत्य है आप के पालनहार कि ओर से ताकि आप सावधान करें उन लोगों को जिन[1] के पास नहीं आया है कोई सावधान करने वाला आप से पहले। संभव है वह सीधी राह पर आ जायें।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤

4. अल्लाह वही है जिस ने पैदा किया आकाशों तथा धरती को और जो दोनों के मध्य है छः दिनों में। फिर स्थित हो गया अर्श पर। नहीं है उस के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और न कोई अभिस्तावक (सिफ़ारशी) तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٥

5. वह उपाय करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में जिस का माप एक हज़ार वर्ष है तुम्हारी गणना से।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦

6. वही है ज्ञानी छुपे तथा खुले का अति प्रभुत्वशाली दयावान्।

الَّذِيْۤ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝٧

7. जिस ने सुन्दर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की, और आरंभ की मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से।

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٨

8. फिर बनाया उस का वंश एक तुच्छजल के निचोड़ (वीर्य) से।

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩

9. फिर बराबर किया उस को और फूंक दिया उस में अपनी आत्मा (प्राण)। तथा बनाये तुम्हारे लिये कान और आँख तथा दिल। तुम कम

1 इस से अभिप्राय मक्का वासी हैं।

ही कृतज्ञ होते हो।

10. तथा उन्हों ने कहाः क्या जब हम खो जायेंगे धरती में तो क्या हम नई उत्पत्ति में होंगे? बल्कि वह अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।

وَقَالُوٓا۟ أَءِذَا ضَلَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ أَءِنَّا لَفِى خَلْقٍ جَدِيدٍۭ ۚ بَلْ هُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كَٰفِرُونَ ﴿١٠﴾

11. आप कह दें कि तुम्हारा प्राण निकाल लेगा मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर अपने पालनहार की ओर फेर दिये जाओगे।[1]

۞ قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ ٱلْمَوْتِ ٱلَّذِى وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

12. और यदि आप देखते जब अपराधी अपने सिर झुकाये होंगे अपने पालनहार के समक्ष (वह कह रहे होंगे): हे हमारे पालनहार! हम ने देख लिया और सुन लिया, अतः हमें फेर दे (संसार में) हम सदाचार करेंगे। हमें पुरा विश्वास हो गया।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَٱرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٢﴾

13. और यदि हम चाहते तो प्रदान कर देते प्रत्येक प्राणी को उस का मार्गदर्शन। परन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि मैं अवश्य भरूँगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।

وَلَوْ شِئْنَا لَءَاتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَىٰهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ مِنِّى لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾

14. तो चखो अपने भूल जाने के कारण अपने इस दिन के मिलने को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया[2] है। चखो सदा की यातना उस के बदले जो तुम कर रहे थे।

فَذُوقُوا۟ بِمَا نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَآ إِنَّا نَسِينَٰكُمْ ۖ وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

---

1 अर्थात नई उत्पत्ति पर आश्चर्य करने से पहले इस पर विचार करो कि मरण तो आत्मा के शरीर से विलग हो जाने का नाम है जो दूसरे स्थान पर चली जाती है। और परलोक में उसे नया जन्म दे दिया जायेगा फिर उसे अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग अथवा नरक में पहुँचा दिया जायेगा।

2 अर्थात आज तुम पर मेरी कोई दया नहीं होगी।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۩ ﴿١٥﴾

15. हमारी आयतों पर बस वही ईमान लाते हैं जिन को जब समझाया जाये उन से तो गिर जाते हैं सज्दा करते हुये और पवित्रता का गान करते है अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ और अभिमान नहीं करते।[1]

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿١٦﴾

16. अलग रहते हैं उन के पार्शव (पहलू) बिस्तरों से, वह प्रार्थना करते रहते हैं अपने पालनहार से भय तथा आशा रखते हुये, तथा उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है दान करते रहते हैं।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

17. तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे जो छुपा रखा है हम ने उन के लिये आँखों की ठंडक[2] उस के प्रतिफल में जो वह कर रहे थे।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

18. फिर क्या जो ईमान वाला हो उस के समान है जो अवज्ञाकारी हो? वह सब समान नही हो सकेंगे।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

19. जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये स्थायी स्वर्ग हैं, अतिथि सत्कार के लिये उस के बदले जो वह करते रहे।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

20. और जो अवज्ञा कर गये, उन का आवास नरक है। जब जब वह निकलना चाहेंगे उस में से तो फेर दिये जायेंगे उस में, तथा कहा

---

1 यहाँ सज्दा तिलावत करना चाहिये।

2 हदीस में है कि अल्लाह ने कहा है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज़ें तैयार की हैं जिन्हें न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के दिल में उन का विचार आया। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारीः 4780)

जायेगा उन से कि चखो उस अग्नि की यातना जिसे तुम झुठला रहे थे।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

21. और हम अवश्य चखायेंगे उन को संसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वह फिर[1] आयें।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

22. और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा, फिर विमुख हो जाये उन से? वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

23. तथा हम ने मूसा को प्रदान की (तौरात) तो आप न हों किसी संदेह में उस[2] से मिलने में। तथा बनाया हम ने उसे (तौरात को) मार्गदर्शन इस्राईल की संतान के लिये।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

24. तथा हम ने उन में से अग्रणी बनाये जो मार्गदर्शन देते रहे हमारे आदेश द्वारा जब उन्हों ने सहन किया तथा हमारी आयतों पर विश्वास[3] करते रहे।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

25. वस्तुतः आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस में वह विभेद करते रहे।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ

26. तो क्या मार्गदर्शन नहीं कराया उन्हें

---

1 अर्थात ईमान लायें और अपने कुकर्म से क्षमा याचना कर लें।

2 इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मेराज की रात्रि में मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिलने की ओर संकेत है। जिस में मूसा (अलैहिस्सलाम) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह से पचास नमाज़ों को पाँच कराने का प्रामर्श दिया। (सहीह बुख़ारीः 3207, मुस्लिमः 164)

3 अर्थ यह है कि आप भी धैर्य तथा पूरे विश्वास के साथ लोगों को सुपथ दर्शायें।

ٱلْقُرُونِ يَمْشُونَ فِى مَسَٰكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

कि हम ने ध्वस्त कर दिया इस से पूर्व बहुत से युग के लोगों को जो चल-फिर रहे थे अपने घरों में। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ (शिक्षायें) हैं, तो क्या वह सुनते नहीं हैं?

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّا نَسُوقُ ٱلْمَآءَ إِلَى ٱلْأَرْضِ ٱلْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِۦ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَٰمُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

27. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम बहा ले जाते हैं जल को सूखी भूमि की ओर फिर उपजाते हैं उस के द्वारा खेतियाँ, खाते हैं जिस में से उन के चौपाये तथा वह स्वयं। तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٢٨﴾

28. तथा कहते हैं कि कब होगा वह निर्णय यदि तुम सच्चे हो?

قُلْ يَوْمَ ٱلْفَتْحِ لَا يَنفَعُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِيمَٰنُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

29. आप कह दें: निर्णय के दिन लाभ नहीं देगा काफ़िरों को उन का ईमान लाना[1] और न उन्हें अवसर दिया जायेगा।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَٱنتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

30. अतः आप विमुख हो जायें उन से तथा प्रतीक्षा करें, यह भी प्रतीक्षा करने वाले हैं।

1 इन आयतों में मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि इतिहास से शिक्षा ग्रहण करो, जिस जाति ने भी अल्लाह के रसूलों का विरोध किया उस को संसार से निरस्त कर दिया गया। तुम निर्णय की मांग करते हो तो जब निर्णय का दिन आ जायेगा तो तुम्हारे संभाले नहीं संभलेगी और उस समय का ईमान कोई लाभ नहीं देगा।

सूरह अहज़ाब - 33

सूरह अहज़ाब के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 73 आयतें हैं।

- इस सूरह में अहज़ाब (जत्था या सेनाओं) की चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के धोखे में न आने तथा केवल अल्लाह पर भरोसा करने पर बल दिया गया है। फिर जाहिलिय्यत के मुंह बोले पुत्र की परम्परा का सुधार करने के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों का पद बताया गया है।
- अहज़ाब के युद्ध में अल्लाह की सहायता तथा मुनाफ़िक़ों की दुर्गत बताई गई है।
- इस में मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विवाह का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को, अल्लाह को याद करने का निर्देश देते हुये उस पर दया तथा बड़े प्रतिफल की शुभ सूचना दी गई है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा को उजागर किया गया है।
- तलाक़ और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों के विषय में कुछ विशेष आदेश दिये गये हैं।
- पर्दे का आदेश दिया गया है, तथा प्रलय की चर्चा की गई है।
- अन्त में मुसलमानों का दायित्व याद दिलाते हुये मुनाफ़िक़ों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हे नबी! अल्लाह से डरो, और

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ①

काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों की आज्ञापालन न करो। वास्तव में अल्लाह हिक्मत वाला सब कुछ जानने[1] वाला है।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ②

2. तथा पालन करो उस का जो वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। निश्चय अल्लाह जो तुम कर रहे हो उस से सूचित है।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ③

3. और आप भरोसा करें अल्लाह पर, तथा अल्लाह पर्याप्त है रक्षा करने वाला।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ④

4. और नहीं रखे हैं अल्लाह ने किसी के दो दिल उस के भीतर और नहीं बनाया है तुम्हारी पत्नियों को जिन से तुम ज़िहार[2] करते हो उन में से तुम्हारी मातायें तथा नहीं बनाया है तुम्हारे मुँह बोले पुत्रों को तुम्हारा पुत्र। यह तुम्हारी मौखिक बातें हैं। और अल्लाह सच्च कहता है तथा वही सुपथ दिखाता है।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ

5. उन्हें पुकारो उन के बापों से संबन्धित कर के, यह अधिक न्याय

---

1 अतः उसी की आज्ञा तथा प्रकाशना का अनुसरण और पालन करो।

2 इस आयत का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं होते वैसे ही उस की पत्नी ज़िहार कर लेने से उस की माता तथा उस का मुंह बोला पुत्र उस का पुत्र नहीं हो जाता।
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने नबी होने से पहले अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद बिन हारिसा को अपना पुत्र बनाया था और उन को हारिसा पुत्र मुहम्मद कहा जाता था जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4782)
ज़िहार का विवरण सूरह मुजादला में आ रहा है।

تَعْلَمُوٓا آبَآءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِى الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَآ أَخْطَأْتُم بِهِ وَلَٰكِن مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥﴾

की बात है अल्लाह के समीप। और यदि तुम नहीं जानते उन के बापों को तो वह तुम्हारे धर्म बन्धु तथा मित्र हैं। और तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं है उस में जो तुम से चूक हुई है, परन्तु (उस में है) जिस का निश्चय तुम्हारे दिल करें। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

النَّبِىُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِى كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّآ أَن تَفْعَلُوٓا إِلَىٰٓ أَوْلِيَآئِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِى الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٦﴾

6. नबी[1] अधिक समीप (प्रिय) है ईमान वालों से उन के प्राणों से, और आप की पत्नियाँ[2] उन की मातायें हैं। और समीपवर्ती संबन्धी एक दूसरे से अधिक समीप[3] हैं, अल्लाह के लेख में ईमान वालों और मुहाजिरों से। परन्तु यह कि करते रहो अपने मित्रों के साथ भलाई, और यह पुस्तक में लिखा हुआ है।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٧﴾

7. तथा (याद करो) जब हम ने नबियों से उन का वचन[4] लिया तथा आप से और नूह तथा इब्राहीम और मूसा तथा मरयम के पुत्र ईसा से, और हम ने लिया उन से दृढ़ वचन।

---

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मैं मुसलमानों का अधिक समीपवर्ति हूँ। यह आयत पढ़ो, तो जो माल छोड़ जाये वह उस के वारिस का है और जो क़र्ज़ तथा निर्बल संतान छोड़ जाये तो मैं उस का रक्षक हूँ। (सहीह बुख़ारीः 4781)

2 अर्थात उन का सम्मान माताओं के बराबर है और आप के पश्चात् उन से विवाह निषेधित है।

3 अर्थात धर्म विधानानुसार उत्तराधिकार समीपवर्ती संबंधियों का है, इस्लाम के आरंभिक युग में हिज्रत तथा ईमान के आधार पर एक दूसरे के उत्तराधिकारी होते थे जिसे मीरास की आयत द्वारा निरस्त कर दिया गया।

4 अर्थात अपना उपदेश पहुँचाने का।

8. ताकि वह प्रश्न[1] करे सच्चों से उन के सच्च के संबंध में तथा तय्यार की है काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना।

لِّيَسْـَٔلَ ٱلصَّٰدِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَٰفِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٨﴾

9. हे ईमान वालो! याद करो अल्लाह के पुरस्कार को अपने ऊपर जब आ गईं तुम्हारे पास जत्थे, तो भेजी हम ने उन पर आँधी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा, और अल्लाह जो तुम कर रहे थे उसे देख रहा था।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٩﴾

10. जब वह तुम्हारे पास आ गये तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे नीचे से और जब पत्थरा गईं आँखें, तथा आने लगे दिल मुँह[2] को तथा तुम विचारने लगे अल्लाह के संबंध में विभिन्न विचार।

إِذْ جَآءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ ٱلْأَبْصَٰرُ وَبَلَغَتِ ٱلْقُلُوبُ ٱلْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِٱللَّهِ ٱلظُّنُونَا۠ ﴿١٠﴾

11. यहीं परीक्षा ली गई ईमान वालों की और वह झंझोड़ दिये गये पूर्ण रूप से।

هُنَالِكَ ٱبْتُلِىَ ٱلْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا۟ زِلْزَالًا شَدِيدًا ﴿١١﴾

12. और जब कहने लगे मुश्रिक और जिन के दिलों में कुछ रोग था कि अल्लाह तथा उस के रसूल ने नहीं वचन दिया हमें परन्तु धोखे का।

وَإِذْ يَقُولُ ٱلْمُنَٰفِقُونَ وَٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥٓ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢﴾

13. और जब कहा उन के एक गिरोह नेः हे यस्रिब[3] वालो! कोई स्थान नहीं

وَإِذْ قَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يَٰٓأَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ

---

1 अर्थात प्रलय के दिन (देखियेः सूरह आराफ़, आयतः 6)

2 इन आयतों में अहज़ाब के युद्ध की चर्चा की गई है। जिस का दूसरा नाम (ख़न्दक़ का युद्ध) भी है। क्यों कि इस में ख़न्दक़ (खाई) खोद कर मदीना की रक्षा की गई। सन् 5 हिज्री में मक्का के काफ़िरों ने अपने पूरे सहयोगी क़बीलों के साथ एक भारी सेना लेकर मदीना को घेर लिया और नीचे वादी और ऊपर पर्वतों से आक्रमण कर दिया। उस समय अल्लाह ने ईमान वालों की रक्षा आँधी तथा फ़रिश्तों की सेना भेज कर की। और शत्रु पराजित हो कर भागे। और फिर कभी मदीना पर आक्रमण करने का साहस न कर सकें।

3 यह मदीने का प्राचीन नाम है।

है तुम्हारे लिये, अतः लौट[1] चलो। तथा अनुमति माँगने लगा उन में से एक गिरोह नबी से, कहने लगाः हमारे घर ख़ाली हैं, जब कि वह ख़ाली न थे। वह तो बस निश्चय कर रहे थे भाग जाने का।

لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ⑬

14. और यदि प्रवेश कर जातीं उन पर मदीने के चारों ओर से (सेनायें) फिर उन से माँग की जाती उपद्रव[2] की तो अवश्य उपद्रव कर देते। और उस में तनिक भी देर नहीं करते।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ⑭

15. जब कि उन्हों ने वचन दिया था अल्लाह को इस से पूर्व कि पीछा नहीं दिखायेंगे और अल्लाह के वचन का प्रश्न अवश्य किया जायेगा।

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ⑮

16. आप कह देंः कदापि लाभ नहीं पहुँचायेगा तुम्हें भागना यदि तुम भाग जाओ मरण से या मारे जाने से। और तब तुम थोड़ा ही[3] लाभ प्राप्त कर सकोगे।

قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ⑯

17. आप पूछिये कि वह कौन है जो तुम्हें बचा सके अल्लाह से यदि वह तुम्हारे साथ बुराई चाहे अथवा तुम्हारे साथ भलाई चाहे? और वह अपने लिये नहीं पायेंगे अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न कोई सहायक।

قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ⑰

18. जानता है अल्लाह जो रोकने वाले हैं तुम

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ

1 अर्थात रणक्षेत्र से अपने घरों को।

2 अर्थात इस्लाम से फिर जाने तथा शिर्क करने की।

3 अर्थात अपनी सीमित आयु तक जो परलोक की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।

هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٨﴾

में से तथा कहने वाले हैं अपने भाईयों से कि हमारे पास चले आओ, तथा नहीं आते हैं युद्ध में परन्तु कभी कभी।

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾

19. वह बड़े कंजूस हैं तुम पर। फिर जब आजाये भय का[1] समय, तो आप उन्हें देखेंगे कि आप की ओर तक रहे हैं फिर रही हैं उन की आँखें, उस के समान जो मरणासन्न दशा में हो, और जब दूर हो जाये भय तो वह मिलेंगे तुम से तेज़ ज़ुबानों[2] से बड़े लोभी हो कर धन के। वह ईमान नहीं लाये हैं। अतः व्यर्थ कर दिये अल्लाह ने उन के सभी कर्म, तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُم مَّا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾

20. वह समझते हैं कि जत्थे नहीं[3] गये और यदि आ जायें सेनायें तो वह चाहेंगे कि वह गाँव में हों, गाँव वालों के बीच तथा पूछते रहें तुम्हारे समाचार, और यदि तुम में होते भी तो वह युद्ध में कम ही भाग लेते।

لَّقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿٢١﴾

21. तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम[4] आदर्श है, उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) की, तथा याद करे अल्लाह को अत्यधिक।

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا

22. और जब ईमान वालों ने सेनायें देखीं तो कहाः यही है जिस का वचन दिया

1 अर्थात युद्ध का समय।

2 अर्थात मर्म भेदी बातें करेंगे, और विजय में प्राप्त धन के लोभ में बातें बनायेंगे।

3 अर्थात ये मुनाफ़िक़ इतने कायर हैं कि अब भी उन्हें सेनाओं का भय है।

4 अर्थात आप के सहन, साहस तथा वीरता में।

وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

था हमें अल्लाह और उस के रसूल ने। और सच्च कहा अल्लाह तथा उस के रसूल ने और इस ने नहीं अधिक किया परन्तु (उन के) ईमान तथा स्वीकार को।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

23. ईमान वालों में कुछ वह भी हैं जिन्होंने सच्च कर दिखाया अल्लाह से किये हुये अपने वचन को। तो उन में कुछ ने अपना वचन[1] पूरा कर दिया, और उन में से कुछ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन्होंने तनिक भी परिर्वतन नहीं किया।

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

24. ताकि अल्लाह प्रतिफल प्रदान करे सच्चों को उन के सच्च का। तथा यातना दे मुनाफ़िक़ों को अथवा उन को क्षमा कर दे। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील और दयावान् है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۗ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾

25. तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ। वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई। और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में। और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾

26. और उतार दिया अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने सहायता की उन (सेनाओं) की उन के दुर्गों से। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय।[2]

---

1 अर्थात युद्ध में शहीद कर दिये गये।

2 इस आयत में बनी क़ुरैज़ा के युद्ध की ओर संकेत है। इस यहुदी क़बीले की नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ संधि थी। फिर भी उन्होंने संधि भँग कर के ख़न्दक़ के युद्ध में क़ुरैशे मक्का का साथ दिया। अतः युद्ध समाप्त होते

उन के एक गिरोह को तुम बध कर रहे थे तथा बंदी बना रहे थे एक दूसरे गिरोह को।

27. और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी, तथा उन के घरों और धनों को, और ऐसी धरती को जिस पर तुम ने पग नहीं रखे थे। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَئُوهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢٧﴾

28. हे नबी! आप अपनी पत्नियों से कह दें कि यदि तुम चाहती हो संसारिक जीवन तथा उस की शोभा तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दूँ तथा विदा कर दूँ अच्छाई के साथ।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٢٨﴾

29. और यदि तुम चाहती हो अल्लाह और उस के रसूल तथा आख़िरत के घर को तो अल्लाह ने तय्यार कर रखा है तुम में से सदाचारिणियों के लिये भारी प्रतिफल[1]

وَإِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

ही आप ने उन से युद्ध की घोषणा कर दी। और उनकी घेरा बंदी कर ली गई। पच्चीस दिन के बाद उन्होंने सअद बिन मुआज़ को अपना मध्यस्थ मान लिया। और उन के निर्णय के अनुसार उन के लड़ाकुओ को बध कर दिया गया। और बच्चों, बूढ़ों तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार मदीना से इस आतंकवादी क़बीले को सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया।

1 इस आयत में अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ये आदेश दिया है कि आप की पत्नियाँ जो आप से अपने ख़र्च अधिक करने की माँग कर रहीं हैं, तो आप उन्हें अपने साथ रहने या न रहने का अधिकार दे दें। और जब आप ने उन्हें अधिकार दिया तो सब ने आप के साथ रहने का निर्णय किया। इस को इस्लामी विधान में (तख़्यीर) कहा जाता है। अर्थात पत्नि को तलाक़ लेने का अधिकार दे देना।
हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी पत्नी आईशा से पहले कहा कि मैं तुम्हें एक बात बता रहा हूँ। तुम अपने माता-पिता से परामर्श किये बिना जल्दी न करना। फिर आप ने यह आयत

30. हे नबी की पत्नियो! जो तुम में से खुला दुराचार करेगी उस के लिये दुगनी कर दी जायेगी यातना और यह अल्लाह पर अति सरल है।

يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ
مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

31. तथा जो मानेंगे तुम में से अल्लाह तथा उस के रसूल की बात और सदाचार करेंगी हम उन्हें प्रदान करेंगे उन का प्रतिफल दोहरा। और हम ने तय्यार की है उन के लिये उत्तम जीविका।[1]

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ
صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا
رِزْقًا كَرِيْمًا ۝

32. हे नबी की पत्नियो! तुम नहीं हो अन्य स्त्रियों के समान। यदि तुम अल्लाह से डरती हो तो कोमल भाव से बात न करो, कि लोभ करने लगे वह जिस के दिल में रोग हो और सभ्य बात बोलो।

يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَاۗءِ اِنِ
اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ
فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝

33. और रहो अपने घरों में, और सौन्दर्य का प्रदर्शन न करो प्रथम अज्ञान युग के प्रदर्शन के समान। तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा आज्ञा पालन करो अल्लाह और उस के रसूल की। अल्लाह चाहता है कि मलिनता को दूर कर दे तुम से, हे नबी के घर वालियो! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ
الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ
وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ
عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيْرًا ۝

34. तथा याद रखो उसे जो पढ़ी जाती

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ

सुनाई। तो आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहाः मैं इस के बारे में भी अपने माता-पिता से परामर्श करूँगी? मैं अल्लाह तथा उस के रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हूँ। और फिर आप की दूसरी पत्नियों ने भी ऐसा ही किया (देखियेः सहीह बुख़ारीः 4786)

1 स्वर्ग में।

اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿٣٤﴾

हैं तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें तथा हिक्मत।[1] वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्व सूचित है।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللّٰهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٣٥﴾

35. निःसंदेह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ तथा ईमान वाली स्त्रियाँ तथा आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, तथा सच्चे पुरुष तथा सच्ची स्त्रियाँ तथा सहनशील पुरुष और सहनशील स्त्रियाँ तथा विनीत पुरुष और विनीत स्त्रियाँ तथा दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ तथा रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ तथा अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष तथा रक्षा करने वाली स्त्रियाँ, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ, तय्यार कर रखा है अल्लाह ने इन्हीं के लिये क्षमा तथा महान् प्रतिफल।[2]

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَن يَعْصِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ﴿٣٦﴾

36. तथा किसी ईमान वाले पुरुष और किसी ईमान वाली स्त्री के लिये योग्य नहीं है कि जब निर्णय कर दे अल्लाह तथा उस के रसूल किसी बात का तो उन के लिये अधिकार रह जाये अपने

1 यहाँ हिक्मत से अभिप्राय हदीस है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन, कर्म तथा वह काम है जो आप के सामने किया गया हो और आप ने उसे स्वीकार किया हो। वैसे तो अल्लाह की आयत भी हिक्मत हैं किन्तु जब दोनों का वर्णन एक साथ हो तो आयत का अर्थ अल्लाह की पुस्तक और हिक्मत का अर्थ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस होता है।

2 इस आयत में मुसलमान पुरुष तथा स्त्री को समान अधिकार दिये गये हैं। विशेष रूप से अल्लाह की वंदना में तथा दोनों का प्रतिफल भी एक बताया गया है जो इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से एक है।

विषय में। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह खुले कुपथ में[1] पड़ गया।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ
أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي
نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ
أَحَقُّ أَن تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا
زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِيٓ
أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝٣٧

37. तथा (हे नबी!) आप वह समय याद करें जब आप उस से कह रहे थे उपकार किया अल्लाह ने जिस पर तथा आप ने उपकार किया जिस पर, रोक ले अपनी पत्नी को तथा अल्लाह से डर, और आप छुपा रहे थे अपने मन में जिसे अल्लाह उजागर करने वाला[2] था, तथा डर रहे थे तुम लोगों से, जब कि अल्लाह अधिक योग्य था कि उस से डरते, तो जब ज़ैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से अपनी अवश्यक्ता तो हम ने विवाह दिया उस को आप से, ताकि ईमान वालों पर कोई दोष न रहे अपने मुँह बोले पुत्रों की पत्नियों के विषय[3] में

1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी किन्तु जो इन्कार करे। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप ने कहाः जिस ने मेरी बात मानी वह स्वर्ग में जायेगा और जिस ने नहीं मानी तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुख़ारीः 2780)

2 हदीस में है कि यह आयत ज़ैनब बिन्ते जह़श तथा (उस के पति) ज़ैद बिन ह़ारिसा के बारे में उतरी। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰: 4787)
ज़ैद बिन हारिसा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दास थे। आप ने उन्हें मुक्त कर के अपना पुत्र बना लिया। और ज़ैनब से विवाह दिया। परन्तु दोनों में निभाव न हो सका। और ज़ैद ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी। और जब मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ दिया गया तो इसे पूर्णतः खण्डित करने के लिये आप को ज़ैनब से आकाशीय आदेश द्वारा विवाह दिया गया। इस आयत में उसी की ओर संकेत है। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात उन से विवाह करने में जब वह उन्हें तलाक़ दे दें। क्योंकि जाहिली समय में मुँह बोले पुत्र की पत्नी से विवाह वैसे ही निषेध था जैसे सगे पुत्र की पत्नी से। अल्लाह ने इस नियम को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

जब वह पूरी कर लें उन से अपनी आवश्यक्ता। तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

38. नहीं है नबी पर कोई तंगी उस में जिस का आदेश दिया है अल्लाह ने उन के लिये।[1] अल्लाह का यही नियम रहा है उन नबियों में जो हुये हैं आप से पहले। तथा अल्लाह का निश्चित किया आदेश पूरा होना ही है।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾

39. जो पहुँचाते हैं अल्लाह के आदेश तथा उस से डरते हैं, वह नहीं डरते हैं किसी से उस के सिवा। और पर्याप्त है अल्लाह हिसाब लेने के लिये।

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। किन्तु वह[2] अल्लाह के रसूल और सब नबियों में अन्तिम[3] हैं। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَٰكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

का विवाह अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से कराया। ताकि मुसलमानों को इस से शिक्षा मिले कि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है।

1 अर्थात अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से उस के तलाक़ देने के पश्चात् विवाह करने में।

2 अर्थात आप ज़ैद के पिता नहीं हैं। उस के वास्विक पिता हारिसा हैं।

3 अर्थात अब आप के पश्चात् प्रलय तक कोई नबी नहीं आयेगा। आप ही संसार के अन्तिम रसूल हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मेरी मिसाल तथा नबियों का उदाहरण ऐसा है जैसे किसी ने एक सुन्दर भवन बनाया। और एक ईंट की जगह छोड़ दी। तो उसे देख कर लोग आश्चर्य करने लगे कि इस में एक ईंट की जगह के सिवा कोई कमी नहीं थी। तो मैं वह ईंट हूँ। मैं ने उस ईंट की जगह भर दी। और भवन पूरा हो गया। और मेरे द्वारा नबियों की कड़ी का अन्त कर दिया गया। (सहीह बुख़ारी, हदीस नंः **3535**, सहीह मुस्लिम- **2286**)

41. हे ईमान वालो! याद करते रहो अल्लाह को अत्यधिक।[1]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾

42. तथा पवित्रता बयान करते रहो उस की प्रातः तथा संध्या।

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾

43. वही है जो दया कर रहा है तुम पर तथा प्रार्थना कर रहे हैं (तुम्हारे लिये) उस के फ़रिश्ते। ताकि वह निकाल दे तुम को अंधेरों से प्रकाश[2] की ओर। तथा ईमान वालों पर अत्यंत दयावान् है।

هُوَ ٱلَّذِى يُصَلِّى عَلَيْكُمْ وَمَلَٰٓئِكَتُهُۥ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ ۚ وَكَانَ بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾

44. उन का स्वागत् जिस दिन उस से मिलेंगे सलाम से होगा। और उस ने तय्यार कर रखा है उन के लिये सम्मानित प्रतिफल।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُۥ سَلَٰمٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾

45. हे नबी! हम ने भेजा है आप को साक्षी[3] तथा शुभसूचक[4] और सचेत कर्ता[5] बना कर।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾

46. तथा बुलाने वाला बना कर अल्लाह की ओर उस की अनुमति से, तथा प्रकाशित प्रदीप बना कर।[6]

وَدَاعِيًا إِلَى ٱللَّهِ بِإِذْنِهِۦ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿٤٦﴾

---

1 अपने मुखों, कर्मों तथा दिलों से नमाज़ों के पश्चात् तथा अन्य समय में। हदीस में है कि जो अल्लाह को याद करता हो और जो याद न करता हो दोनों में वही अन्तर है जो जीवित तथा मरे हुये में है। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰: **6407**, मुस्लिमः **779**)

2 अर्थात अज्ञानता तथा कुपथ से, इस्लाम के प्रकाश की ओर।

3 अर्थात लोगों को अल्लाह का उपदेश पहुँचाने का साक्षी। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः **143**, तथा सूरह निसा, आयतः **41**)

4 अल्लाह की दया तथा स्वर्ग का, आज्ञाकारियों के लिये।

5 अल्लाह की यातना तथा नरक से, अवैज्ञाकारियों के लिये।

6 इस आयत में यह संकेत है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दिव्य प्रदीप

47. तथा आप शुभसूचना सुना दें ईमान वालों को कि उन के लिये अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾

48. तथा न बात मानें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की, तथा न चिन्ता करें उन के दुख पहुँचाने की और भरोसा करें अल्लाह पर। तथा पर्याप्त है अल्लाह काम बनाने के लिये।

وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾

49. हे ईमान वालो! जब तुम विवाह करो ईमान वालियों से फिर तलाक़ दो उन्हें इस से पूर्व कि हाथ लगाओ उन को तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कोई इद्दत[1] जिस की तुम गणना करो। तो तुम उन्हें कुछ लाभ पहुँचाओ, और उन्हें विदा करो भलाई के साथ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۖ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾

50. हे नबी! हम ने हलाल (वैध) कर दिया है आप के लिये आप की पत्नियों को जिन्हें चुका दिया हो आप ने उन का महर (विवाह उपहार), तथा जो आप के स्वामित्व में हों उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने आप[2] को, तथा आप के चाचा की पुत्रियों और आप की फूफी की पुत्रियों तथा आप के मामा की पुत्रियों

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالَاتِكَ اللَّاتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً مُّؤْمِنَةً إِن وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَن يَسْتَنكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا

के समान पूरे मानव विश्व को सत्य के प्रकाश से जो एकेश्वरवाद तथा एक अल्लाह की इबादत (वंदना) है प्रकाशित करने के लिये आये हैं। और यही आप की विशेषता है कि आप किसी जाति या देश अथवा वर्ण-वर्ग के लिये नहीं आयें हैं। और अब प्रलय तक सत्य का प्रकाश आप ही के अनुसरण से प्राप्त हो सकता है।

1 अर्थात तलाक़ के पश्चात् की निर्धारित अवधि जिस के भीतर दूसरे से विवाह करने की अनुमति नहीं है।

2 अर्थात वह दासियाँ जो युद्ध में आप के हाथ आई हों।

يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٠﴾

तथा मौसी की पुत्रियों को, जिन्होंने हिज्रत की है आप के साथ, तथा किसी भी ईमान वाली नारी को यदि वह स्वयं को दान कर दे नबी के लिये, यदि नबी चाहें कि उस से विवाह कर लें। यह विशेष है आप के लिये अन्य ईमान वालों को छोड़ कर। हमें ज्ञान है उस का जो हम ने अनिवार्य किया है उन पर उन की पत्नियों तथा उन के स्वामित्व में आयी दासियों के संबंध[1] में। ताकि तुम पर कोई संकीर्णता (तंगी) न हो। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

تُرْجِي مَن تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَن تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾

51. (आप को अधिकार है कि) जिसे आप चाहें अलग रखें अपनी पत्नियों में से, और अपने साथ रखें जिसे चाहें। और जिसे आप चाहें बुला लें उन में से जिसे अलग किया है। आप पर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अधिक आशा है कि उन की आँखें शीतल हों, और वह उदासीन न हों तथा प्रसन्न रहें उस से जो आप उन सब को दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों[2] में है। और अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील[3] है।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِن بَعْدُ وَلَا أَن تَبَدَّلَ

52. (हे नबी!) नहीं हलाल (वैध) हैं आप के लिये पत्नियाँ इस के पश्चात्, और

1 अर्थात यह कि चार पत्नियों से अधिक न रखो तथा महर (विवाह उपहार) और विवाह के समय दो साक्षी बनाना और दासियों के लिये चार का प्रतिबंध न होना एवं सब का भरण- पोषण और सब के साथ अच्छा व्यवहार करना इत्यादि।

2 अर्थात किसी एक पत्नी में रुची।

3 इसीलिये तुरंत यातना नहीं देता।

بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ﴿٥٢﴾

न यह कि आप बदलें उन को दूसरी पत्नियों[1] से यद्यपि आप को भाये उन का सौन्दर्य। परन्तु जो दासी आप के स्वामित्व में आ जाये। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَن يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَن تَنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِن بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾

53. हे ईमान वालो! मत प्रवेश करो नबी के घरों में परन्तु यह कि अनुमति दी जाये तुम को भोज के लिये। परन्तु भोजन पकने की प्रतिक्षा न करते रहो। किन्तु जब तुम बुलाये जाओ तो प्रवेश करो, फिर जब भोजन कर लो तो निकल जाओ। लीन न रहो बातों में। वास्तव में इस से नबी को दुःख होता है, अतः वह तुम से लजाते हैं। और अल्लाह नहीं लजाता है सत्य[2] से तथा जब तुम नबी की पत्नियों से कुछ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो, यह अधिक पवित्रता का कारण है तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिये। और तुम्हारे लिये उचित नहीं है कि नबी को दुःख दो, न यह कि विवाह करो उन की पत्नियों से आप के पश्चात् कभी भी। वास्तव में यह अल्लाह के समीप महा (पाप) है।

إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ

54. यदि तुम कुछ बोलो अथवा उसे मन

1 अर्थात उन में से किसी को छोड़ कर उस के स्थान पर किसी दूसरी स्त्री से विवाह करें।

2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ सभ्य व्यवहार करने की शिक्षा दी जा रही है। हुआ यह कि जब आप ने ज़ैनब से विवाह किया तो भोजन बनवाया और कुछ लोगों को आमंत्रित किया। कुछ लोग भोजन कर के वहीं बातें करने लगे जिस से आप को दुःख पहुँचा। इसी पर यह आयत उतरी। फिर पर्दे का आदेश दे दिया गया। (सहीह बुख़ारी नंः 4792)

شَيۡءٍ عَلِيمٗا ٥٤

में रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अत्यंत ज्ञानी है।

لَّا جُنَاحَ عَلَيۡهِنَّ فِيٓ ءَابَآئِهِنَّ وَلَآ أَبۡنَآئِهِنَّ وَلَآ إِخۡوَٰنِهِنَّ وَلَآ أَبۡنَآءِ إِخۡوَٰنِهِنَّ وَلَآ أَبۡنَآءِ أَخَوَٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتۡ أَيۡمَٰنُهُنَّۗ وَٱتَّقِينَ ٱللَّهَۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ شَهِيدًا ٥٥

55. कोई दोष नहीं है उन (स्त्रियों) पर अपने पिताओं, न अपने पुत्रों एवं भाईयों और न भतीजों तथा न अपनी (मेल-जोल की) स्त्रियों और न अपने स्वामित्व (दासी तथा दास) के सामने होने में, यदि वह अल्लाह से डरती रहें। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦

56. अल्लाह तथा उस के फ़रिश्ते दरूद[1] भेजते हैं नबी पर। हे ईमान वालो! उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُؤۡذُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَعَنَهُمُ ٱللَّهُ فِي ٱلدُّنۡيَا وَٱلۡأٓخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمۡ عَذَابٗا مُّهِينٗا ٥٧

57. जो लोग दुःख देते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल को तो अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है लोक तथा परलोक में। और तय्यार की है उन के लिये अपमानकारी यातना।

وَٱلَّذِينَ يُؤۡذُونَ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِ بِغَيۡرِ مَا ٱكۡتَسَبُواْ فَقَدِ ٱحۡتَمَلُواْ بُهۡتَٰنٗا وَإِثۡمٗا مُّبِينٗا ٥٨

58. और जो दुःख देते हैं ईमान वालों तथा ईमान वालियों को बिना किसी दोष के जो उन्हों ने किया हो, तो उन्हों ने

---

1 अल्लाह के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि फ़रिश्तों के समक्ष आप की प्रशंसा करता है। तथा आप पर अपनी दया भेजता है।
और फ़रिश्तों के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि वह आप के लिये अल्लाह से दया की प्रार्थना करते हैं। हदीस में आता है कि आप से प्रश्न किया गया कि हम सलाम तो जानते हैं पर आप पर दरूद कैसे भेजें? तो आप ने फ़रमायाः यह कहोः ((अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैता अला आलि इब्राहीम, इन्नका हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्ता अला आलि इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद।)) (सहीह बुख़ारीः 4797)
दूसरी हदीस में है किः जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार दया भेजता है। (सहीह मुस्लिमः 408)

लाद लिया आरोप तथा खुले पाप को।

يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ذٰلِكَ أَدْنٰى أَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾

59. हे नबी! कह दो अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों एवं ईमान वालों की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। यह अधिक समीप है कि वह पहचान ली जायें। फिर उन्हें दुःख न दिया[1] जाये। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَا إِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾

60. यदि न रुके मुनाफ़िक़[2] तथा जिन के दिलों में रोग है और मदीना में अफ़्वाह फैलाने वाले तो हम आप को भड़का देंगे उन पर। फिर वह आप के साथ नहीं रह सकेंगे उस में परन्तु कुछ ही दिन।

مَّلْعُوْنِيْنَ أَيْنَمَا ثُقِفُوْا أُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾

61. धिक्कारे हुये। वे जहाँ पाये जायें पकड़ लिये जायेंगे तथा जान से मार दिये जायेंगे।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

62. यही अल्लाह का नियम रहा है उन में जो इन से पूर्व रहे। तथा आप कदापि नहीं पायेंगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ

63. प्रश्न करते हैं आप से लोग[3] प्रलय

---

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों तथा पुत्रियों और साधारण मुस्लिम महिलाओं को यह आदेश दिया गया है कि घर से निकलें तो पर्दे के साथ निकलें। जिस का लाभ यह है कि इस से एक सम्मानित तथा सभ्य महिला की असभ्य तथा कुकर्मी महिला से पहचान होगी और कोई उस से छेड़ छाड़ का साहस नहीं करेगा।

2 मुश्रिक (द्विधावादी) मुसलमानों को हताश करने के लिये कभी मुसलमानों की पराजय और कभी किसी भारी सेना के आक्रमण की अफ़्वाह मदीना में फैला दिया करते थे। जिस के दुष्परिणाम से उन्हें सावधान किया गया है।

3 यह प्रश्न उपहास स्वरूप किया करते थे। इसलिये उस की दशा का चित्रण

اللهِ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾

के विषय में। तो आप कह दें कि उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। संभव है कि प्रलय समीप हो।

إِنَّ اللهَ لَعَنَ الْكٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾

64. अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफ़िरों को। और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अग्नि।

خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾

65. वे सदावासी होंगे उस में। नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يٰلَيْتَنَا أَطَعْنَا اللهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾

66. जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में, वे कहेंगेः हमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ﴿٦٧﴾

67. तथा कहेंगेः हमारे पालनहार! हम ने कहा माना अपने प्रमुखों एवं बड़ों का। तो उन्होंने हमें कुपथ कर दिया सुपथ से।

رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾

68. हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे। तथा उन्हें धिक्कार दे बड़ी धिक्कार।

يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسٰى فَبَرَّأَهُ اللهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾

69. हे ईमान वालो! न हो जाओ उन के समान जिन्होंने ने मूसा को दुःख दिया, तो अल्लाह ने निर्दोष कर दिया[1] उसे उन की बनाई बातों से। और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित।

किया गया है।

1 हदीस में आया है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) बड़े लज्जशील थे। प्रत्येक समय वस्त्र धारण किये रहते थे। जिस से लोग समझने लगे कि संभवतः उन में कुछ रोग है। परन्तु अल्लाह ने एक बार उन्हें नग्न अवस्था में लोगों को दिखा दिया और संदेह दूर हो गया। (सहीह बुख़ारीः 3404, मुस्लिमः 155)

70. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सहीह और सीधी बात बोलो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَقُولُوا۟ قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٧٠﴾

71. वह सुधार देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्मों को, तथा क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और जो अनुपालन करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल का तो उस ने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧١﴾

72. हम ने प्रस्तुत किया अमानत[1] को आकाशों तथा धरती एवं पर्वतों पर तो उन सब ने इन्कार कर दिया उन का भार उठाने से। तथा डर गये उस से। किन्तु उस का भार ले लिया मनुष्य ने। वास्तव में वह बड़ा अत्याचारी[2] अज्ञान है।

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا ٱلْإِنسَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

73. (यह अमानत का भार इस लिये लिया है) ताकि अल्लाह दण्ड दे मुनाफ़िक़ पुरुष तथा मुनाफ़िक़ स्त्रियों को, और मुश्रिक पुरुष तथा स्त्रियों को। तथा क्षमा कर दे अल्लाह ईमान वालों तथा ईमान वालियों को और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

لِّيُعَذِّبَ ٱللَّهُ ٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱلْمُنَٰفِقَٰتِ وَٱلْمُشْرِكِينَ وَٱلْمُشْرِكَٰتِ وَيَتُوبَ ٱللَّهُ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًۢا ﴿٧٣﴾

---

1 अमानत से अभिप्रायः धार्मिक नियम हैं जिन के पालन का दायित्व तथा भार अल्लाह ने मनुष्य पर रखा है। और उस में उन का पालन करने की योग्यता रखी है जो योग्यता आकाशों तथा धरती और पर्वतों को नहीं दी है।

2 अर्थात इस अमानत का भार ले कर भी अपने दायित्व को पूरा न कर के स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करता है।

सूरह सबा - 34

सूरह सबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस में सबा जाति के चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में संदेहों को दूर करते हुये अल्लाह का परिचय ऐसे कराया गया है जिस से तौहीद तथा आख़िरत के प्रति विश्वास हो जाता है।
- इस में दावूद तथा सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) पर अल्लाह के पुरस्कारों और उन पर उन के आभारी होने का वर्णन तथा सबा जाति की कृतघ्नता और उस के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- शिर्क का खण्डन तथा विरोधियों का जवाब देते हुये परलोक के कुछ तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।
- सूरह के अन्त में सोच-विचार कर के निर्णय करने का सुझाव दिया गया है। और इस बात पर सावधान किया गया है कि समय निकल जाने पर पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है आख़िरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

2. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो[1] निकलता है उस से, तथा जो उतरता है

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ

1 जैसे वर्षा, कोष और निधि आदि।

وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝٢

आकाश[1] से और चढ़ता है उस में।[2] तथा वह अति दयावान् क्षमी है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝٣

3. तथा कहा काफ़िरों ने कि हम पर प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! वह तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता उस से कण बराबर (भी) आकाशों तथा धरती में, न उस से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी किन्तु वह खुली पुस्तक में (अंकित) है।[3]

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝٤

4. ताकि[4] वह बदला दे उन को जो ईमान लाये तथा सुकर्म किये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ۝٥

5. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों में विवश[5] करने का तो यही है जिन के लिये यातना है अति घोर दुखदायी।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝٦

6. तथा (साक्षात) देख[6] लेंगे जिन को उस का ज्ञान दिया गया है जो अवतरित किया गया है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। वही सत्य है, तथा सुपथ दर्शाता है, अति प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।

---

1 जैसे वर्षा, ओला, फ़रिश्ते और आकाशीय पुस्तकें आदि।

2 जैसे फ़रिश्ते तथा कर्म।

3 अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में।

4 यह प्रलय के होने का कारण है।

5 अर्थात हमारी आयतों से रोकते हैं और समझते हैं कि हम उन को पकड़ने से विवश होंगे।

6 अर्थात प्रलय के दिन कि कुर्आन ने जो सूचना दी है वह साक्षात सत्य है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٧﴾

7. तथा काफ़िरों ने कहाः क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बतायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः चूर-चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उतपत्ति में होगे?

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾

8. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (ईमान) नहीं रखते आख़िरत (परलोक) पर, वह यातना[1] तथा दूर के कुपथ में हैं।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ﴿٩﴾

9. क्या उन्हों ने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾

10. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह।[2] हे पर्वतो! सरुचि महिमा गान करो[3] उस के साथ, तथा हे पक्षियो! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

11. कि बनाओ भरपूर कवचें तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रहा हूँ।

---

1 अर्थात इस का दूष्परिणाम नरक की यातना है।

2 अर्थात उन को नबी बनाया और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया।

3 अल्लाह के इस आदेश अनुसार पर्वत तथा पक्षी उन के लिये अल्लाह की महिमा गान के समय उन की ध्वनी को दुहराते थे।

12. तथा (हम ने वश में कर दिया) सुलैमान[1] के लिये वायु को। उस का प्रातः चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का[2] होता था। तथा हम ने बहा दिये उस के लिये तांबे के स्रोत। तथा कुछ जिन्न कार्यरत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे[3] उसे भड़कती अग्नि की यातना।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ۗ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۗ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾

13. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (तालाबों) के समान तथा भारी देगें जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनो! कर्म करो कृतज्ञ हो कर, और मेरे भक्तों में थोड़े ही कृतज्ञ होते हैं।

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۗ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۗ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

14. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिन्नों को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नहीं किया जो उस की छड़ी खा रहा था।[4] फिर जब वह गिर गया तो जिन्नों पर यह

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम) के पुत्र तथा नबी थे।

2 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अपने राज्य के अधिकारियों के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते। और उन के आदेश से वायु उसे इतनी तीब्र गति से उड़ा ले जाती कि आधे दिन में एक महीने की यात्रा पूरी कर लेते। इस प्रकार प्रातः संध्या मिला कर दो महीने की यात्रा पूरी हो जाती। (देखियेः इब्ने कसीर)

3 अर्थात नरक की यातना।

4 जिस के सहारे वह खड़े थे तथा घुन के खाने पर उन का शव धरती पर गिर पड़ा।

बात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी[1] यातना में नहीं पड़े रहते।

15. सबा[2] की जाति के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी[3] थीः बाग़ थे दायें और बायें। खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ﴿١٥﴾

16. परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढ़। तथा बदल दिया हम ने उन के दो बाग़ों को दो कड़वे फलों के बाग़ों और झाऊ तथा कुछ बैरी से।

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُم بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿١٦﴾

17. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।

ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿١٧﴾

18. और हम ने बना दी थीं उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता[4] प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान[5] (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ﴿١٨﴾

---

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के युग में यह भ्रम था कि जिन्नों को परोक्ष का ज्ञान होता है। जिसे अल्लाह ने माननीय सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के निधन द्वारा तोड़ दिया कि अल्लाह के सिवा किसी को परोक्ष का ज्ञान नहीं है। (इब्ने कसीर)

2 यह जाति यमन में निवास करती थी।

3 अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य की।

4 अर्थात सबा तथा शाम (सीरिया) के बीच है।

5 अर्थात एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की सुविधा रखी थी।

समय शान्त[1] हो कर।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑲

19. तो उन्होंने कहाः हे हमारे पालनहार! दूरी[2] कर दे हमारी यात्राओं के बीच। तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अंततः हम ने उन्हें कहानियाँ[3] बना दिया, और तित्तर बित्तर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑳

20. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन।[4] तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ㉑

21. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान लें कि कौन ईमान रखता है आख़िरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।[5]

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي

22. आप कह देंः उन (पूज्यों) को पुकारो[6] जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखते कण

1 शत्रु तथा भूख-प्यास से निर्भय हो कर।

2 हमारी यात्रा के बीच कोई बस्ती न हो।

3 उन की कथायें रह गईं, और उन का अस्तित्व नहीं रह गया।

4 अर्थात यह अनुमान कि वह आदम के पुत्रों को कुपथ करेगा। (देखिये सूरह आराफ़, आयतः 16, तथा सूरह साद, आयतः 82)

5 ताकि उन का प्रतिकार बदला दे।

6 इस में संकेत उन की ओर है जो फ़रिश्तों को पूजते तथा उन्हें अपना सिफ़ारशी मानते थे।

الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾

बराबर भी आकाशों में न धरती में। तथा नहीं है उन का उन दोनों में कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह का उन में से कोई सहायक।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾

23. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्तावना (सिफ़ारिश) अल्लाह के पास परन्तु जिस के लिये अनुमति देगा।[1] यहाँ[2] तक कि जब दूर कर दिया जाता है उद्वेग उन के दिलों से तो वह (फ़रिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च महान् है।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

24. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें आकाशों[3] तथा धरती से? आप कह दें कि अल्लाह। तथा हम अथवा तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले कुपथ में हैं।

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया जायेगा हमारे अपराधों के विषय में, और न हम से प्रश्न किया जायेगा तुम्हारे कर्मों के[4] संबंध में।

---

1 (देखिये सूरह बक़रा, आयतः 255, तथा सूरह अम्बिया, आयतः 28)

2 अर्थात जब अल्लाह आकाशों में कोई निर्णय करता है तो फ़रिश्ते भय से काँपने और अपने पंखों को फड़फड़ाने लगते हैं। फिर जब उन की उद्विग्नता दूर हो जाती है तो प्रश्न करते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या आदेश दिया है? तो वे कहते हैं कि उस ने सत्य कहा है। और वह अति उच्च महान् है। (संक्षिप्त अनुवाद हदीस, सहीह बुख़ारी नं॰: 4800)

3 आकाशों की वर्षा तथा धरती की उपज से।

4 क्यों कि हम तुम्हारे शिर्क से विरक्त हैं।

26. आप कह दें कि एकत्रित[1] कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ। तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾

27. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अल्लाह के साथ साझी[2] बना कर? ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अल्लाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

28. तथा नहीं भेजा है हम ने आप[3] को

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ

1 अर्थात प्रलय के दिन।

2 अर्थात पूजा-आराधना में।

3 इस आयत में अल्लाह ने जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विश्वव्यापी रसूल तथा सर्व मनुष्य जाति के पथ प्रदर्शक होने की घोषणा की है। जिसे सूरह आराफ़, आयत नं॰: 158, तथा सूरह फ़ुर्क़ान आयत नं॰: 1, में भी वर्णित किया गया है। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे पाँच ऐसी चीज़ दी गई हैं जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गईं। और वे ये हैं:

1- एक महीने की दूरी तक शत्रुओं के दिलों में मेरी धाक द्वारा मेरी सहायता की गई है।

2- पूरी धर्ती मेरे लिये मस्जिद तथा पवित्र बना दी गई है।

3- युद्ध में प्राप्त धन मेरे लिये वैध कर दिया गया है जो पहले किसी नबी के लिये वैध नहीं किया गया।

4- मुझे सिफ़ारिश का अधिकार दिया गया है।

5- मुझ से पहले के नबी मात्र अपने समुदाय के लिये भेजा जाता था परन्तु मुझे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी: 335)

आयत का भावार्थ यह है कि आप के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप के लाये धर्म विधान क़ुर्आन का अनुपालन करना पूरे मानव विश्व पर अनिवार्य है। और यही सत्धर्म तथा मुक्ति-मार्ग है। जिसे अधिक्तर लोग नहीं जानते।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: उस की शपथ जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं! इस उम्मत का कोई यहूदी और ईसाई मुझे सुनेगा और मौत से पहले मेरे धर्म पर ईमान नहीं लायेगा तो वह नरक में जायेगा। (सहीह मुस्लिम: 153)

أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला बनाकर। किन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

29. तथा वह कहते[1] हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً
وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾

30. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित[2] है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ
وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ
مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

31. तथा काफ़िरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस क़ुर्आन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक हैं। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर। जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थेः यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान लाने वालों[3] में होते।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ
صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ ۖ بَلْ كُنْتُمْ
مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

32. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये थे उन से जो निर्बल समझे जा रहे थेः क्या हम ने तुम्हें रोका सुपथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ

33. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगेः बल्कि

---

1 अर्थात उपहास करते हैं।

2 प्रलय का दिन।

3 तुम्हीं ने हमें सत्य से रोक दिया।

مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَآ أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُۥٓ أَندَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَٰلَ فِىٓ أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

रात-दिन के षड्यंत्र[1] ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कुफ़्र करें अल्लाह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और हम तौक़ डाल देंगे उन के गलों में जो काफ़िर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे।

وَمَآ أَرْسَلْنَا فِى قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَآ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ﴿٣٤﴾

34. और नहीं भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों नेः हम जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।[2]

وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَٰلًا وَأَوْلَٰدًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾

35. तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

36. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।

وَمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُكُم بِالَّتِى تُقَرِّبُكُمْ

37. और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं हैं कि तुम्हें हमारे कुछ

---

1 अर्थात तुम्हारे षड्यंत्र ने हमें रोका था।

2 नबियों के उपदेश का विरोध सब से पहले सम्पन्न वर्ग ने किया है। क्योंकि वे यह समझते हैं कि यदि सत्य सफल हो गया तो समाज पर उन का अधिकार समाप्त हो जायेगा। वे इस आधार पर भी नबियों का विरोध करते रहे कि हम ही अल्लाह के प्रिय हैं। यदि वह हम से प्रसन्न न होता तो हमें धन-धान्य क्यों प्रदान करता। अतः हम परलोक की यातना में ग्रस्त नहीं होंगे। क़ुर्आन ने अनेक आयतों में उन के इस भ्रम का खण्डन किया है।

عِنْدَنَا زُلْفَىٰٓ إِلَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَأُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ ٱلضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا۟ وَهُمْ فِى ٱلْغُرُفَٰتِ ءَامِنُونَ ﴿٣٧﴾

समीप[1] कर दे। परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही हैं जिन के लिये दोहरा प्रतिफल है। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहने वाले हैं।

وَٱلَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا مُعَٰجِزِينَ أُو۟لَٰٓئِكَ فِى ٱلْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾

38. तथा जो प्रयास करते हैं हमारी आयतों में विवश करने के लिये[2] तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।

قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ لَهُۥ ۚ وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن شَىْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُۥ ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ﴿٣٩﴾

39. आप कह देंः मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से। और तंग करता है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾

40. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फ़रिश्तों सेः क्या यही तुम्हारी इबादत (वंदना) कर रहे थे।

قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

41. वह कहेंगेः तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यह। बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्नों[3] की। इन में अधिक्तर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।

فَٱلْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّتِى كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

42. तो आज तुम[4] में से कोई एक-दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की

1 अर्थात हमारा प्रिय बना दे।

2 अर्थात हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिये।

3 अरब के कुछ मुश्रिक लोग, फ़रिश्तों को पूज्य समझते थे। अतः उन से यह प्रश्न किया जायेगा।

4 अर्थात मिथ्या पूज्य तथा उन के पुजारी।

यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।

43. और जब सुनाई जाती हैं उन के समक्ष हमारी खुली आयतें तो कहते हैं: यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पूज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा काफ़िरों ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا
إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاؤُكُمْ ۖ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرًى ۚ
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ
إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٤٣﴾

44. जब कि हम ने नहीं प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।[1]

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٤﴾

45. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नहीं पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रसूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?[2]

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ
مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

46. आप कह दें कि मैं बस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम अल्लाह के लिये दो-दो तथा अकेले-अकेले खड़े हो जाओ। फिर

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۖ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ
مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُمْ
مِنْ جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ

---

1 तो इन्हें कैसे ज्ञान हो गया कि यह कुर्आन खुला जादू है? क्यों कि यह एतिहासिक सत्य है कि आप से पहले मक्का में कोई नबी नहीं आया। इसलिये कुर्आन के प्रभाव को स्वीकार करना चाहिये न कि उस पर जादू होने का आरोप लगा दिया जाये।

2 अर्थात आद और समूद ने। अतः मेरे इन्कार के दुष्परिणाम अर्थात उन के विनाश से इन्हें शिक्षा लेनी चाहिये। जो धन-बल तथा शक्ति में इन से अधिक थे।

عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

सोचो। तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं है।[1] वह तो बस सचेत करने वाले हैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

47. आप कह दें: मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे[2] ही लिये है। मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾

48. आप कह दें कि मेरा पालनहार वह्यी करता है सत्य की। वह परोक्षों का अति ज्ञानी है।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾

49. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकता है और न (उसे) पुनः ला सकता है।

قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

50. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वह्यी के कारण जिसे मेरी ओर मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾

51. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये[3] होंगे तो उन के खो जाने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।

وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن

52. और कहेंगेः हम उस[4] पर ईमान

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दशा के बारे में।

2 कि तुम संमार्ग अपनाकर आगामी प्रलय की यातना से सुरक्षित हो जाओ।

3 प्रलय की यातना देख कर।

4 अर्थात अल्लाह तथा उस के रसूल पर।

مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥١﴾

लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है उन के (ईमान) इतने दूर स्थान[1] से?

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

53. जब कि उन्होंने कुफ़्र कर दिया पहले उस के साथ। और तीर मारते रहे बिन देखे दूर[2] से।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

54. और रोक बना दी जायेगी उन के तथा उस के बीच जिस की वे कामना करेंगे जैसे किया गया इन के जैसों के साथ इस से पहले। वास्तव में वे संदेह में पड़े थे।

---

1 ईमान लाने का स्थान तो संसार था। परन्तु संसार में उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

2 अर्थात अपने अनुमान से असत्य बातें करते रहे।

सूरह फ़ातिर - 35

सूरह फ़ातिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह में फ़ातिर शब्द आया है जिस का अर्थः उत्पत्तिकार है। इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में अल्लाह के उत्पत्ति तथा पालन-पोषण करने के शुभगुणों को उजागर करके लोगों को एकेश्वरवाद तथा परलोक और रिसालत पर ईमान लाने को कहा गया है। इस की आरंभिक आयतों में ही पूरी सूरह का सारांश आ गया है।
- इस में तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा परलोक का सविस्तार वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया गया है। और रिसालत पर ईमान न लाने का दुष्परिणाम बताया गया है।
- इस में बताया गया है कि अल्लाह की निशानियों की पहचान तथा धार्मिक ग्रन्थों द्वारा जो ज्ञान मिलता है वह मार्गदर्शन की राह खोल कर सफल बनाता है। और इस पहचान और ज्ञान से विमुख होने का परिणाम विनाश है।
- अन्त में मुश्रिकों को चेतावनी दी गई है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ جَاعِلِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُو۟لِىٓ أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَٰثَ وَرُبَٰعَ يَزِيدُ فِى ٱلْخَلْقِ مَا يَشَآءُ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ①

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का, (और) बनाने वाला[1] है संदेशवाहक फ़रिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार -चार परों वाला। वह अधिक करता है उत्पत्ति में जो चाहता है, निःसंदेह अल्लाह जो

1 अर्थात फ़रिश्तों के द्वारा नबियों तक अपनी प्रकाशना तथा संदेश पहुँचाता है।

चाहे कर सकता है।

2. जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया[1] तो उसे कोई रोकने वाला नहीं। तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उस का उस के पश्चात्। तथा वही प्रभावशाली चतुर है।

مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾

3. हे मनुष्यो! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को, क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के सिवा जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती से? नहीं है कोई वंदनीय परन्तु वही। फिर तुम कहाँ फिरे जार हे हो।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٣﴾

4. और यदि वह आप को झुठलाते हैं, तो झुठलाये जा चुके हैं बहुत से रसूल आप से पहले। और अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे सब विषय।[2]

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤﴾

5. हे लोगो! निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से अति प्रवंचक (शैतान)।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿٥﴾

6. वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे अपना शत्रु ही समझो। वह बुलाता है अपने गिरोह को इसी लिये ताकि वह नारकियों में हो जायें।

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٦﴾

7. जो काफ़िर हो गये उन्हीं के लिये

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا

1 अर्थात स्वास्थ्य, धन, ज्ञान आदि प्रदान करे।

2 अर्थात अन्ततः सभी विषयों का निर्णय हमें ही करना है तो यह कहाँ जायेंगे? अतः आप धैर्य से काम लें।

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾

कड़ी यातना है। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तो उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖؗ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾

8. तथा क्या शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का कुकर्म, और वह उसे अच्छा समझता हो? तो अल्लाह की कुपथ करता है जिसे चाहे और सुपथ दिखाता है जिसे चाहे। अतः न खोयें आप अपना प्राण इन[1] पर संताप के कारण। वास्तव में अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾

9. तथा अल्लाह वही है जो वायु को भेजता है। जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम हाँक देते हैं उसे निर्जीव नगर की ओर। फिर जीवित कर देते हैं उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्। इसी प्रकार फिर जीना (भी)[2] होगा।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾

10. जो सम्मान चाहता हो तो अल्लाह ही के लिये है सब सम्मान। और उसी की ओर चढ़ते हैं पवित्र वाक्य।[3] तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता[4] है, तथा जो दाव घात में

---

1 अर्थात इन के ईमान न लाने पर संताप न करें।

2 अर्थात जिस प्रकार वर्षा से सूखी धरती हरी हो जाती है इसी प्रकार प्रलय के दिन तुम्हें भी जीवित कर दिया जायेगा।

3 पवित्र वाक्य से अभिप्राय ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। जो तौहीद का शब्द है। तथा चढ़ने का अर्थ हैः अल्लाह के यहाँ स्वीकार होना।

4 आयत का भावार्थ यह है कि सम्मान अल्लाह की वंदना से मिलता है अन्य की पूजा से नहीं। और तौहीद के साथ सत्कर्म का होना भी अनिवार्य है। और जब

लगे रहते हैं बुराईयों की, तो उन्हीं के लिये कड़ी यातना है और उन्हीं के षड्यंत्र नाश हो जायेंगे।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۗ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۗ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۗ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

11. अल्लाह ने उत्पन्न किया तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बनाये तुम को जोड़े। और नहीं गर्भ धारण करती कोई नारी और न जन्म देती परन्तु उस के ज्ञान से। और नहीं आयु दिया जाता कोई अधिक और न कम की जाती है उस की आयु परन्तु वह एक लेख में[1] है। वास्तव में यह अल्लाह पर अति सरल है।

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۗ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾

12. तथा बराबर नहीं होते दो सागर, यह मधुर प्यास बुझाने वाला है, रुचिकर है जिस का पीना। और वह (दूसरा) खारी कड़वा है, तथा प्रत्येक में से तुम खाते हो ताज़ा माँस, तथा निकालते हो आभूषण जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो नाव को उस में पानी फाड़ती हुई, ताकि तुम खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की। और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾

13. वह प्रवेश करता है रात को दिन में, तथा प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चन्द्रा को, प्रत्येक चलते रहेंगे एक निश्चित समय तक। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य है। तथा जिन को तुम पुकारते हो

ऐसा होगा तो उसे अल्लाह स्वीकार कर लेगा।

1 अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की पूरी दशा उस के भाग्य लेख में पहले ही से अंकित है।

उस के सिवा वह स्वामी नहीं हैं एक तिनके के भी।

إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

14. यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह नहीं सुनते तुम्हारी पुकार को। और यदि सुन भी लें तो नहीं उत्तर दे सकते तुम्हें। और प्रलय के दिन वह नकार देंगे तुम्हारे शिर्क (साझी बनाने) को। और आप को कोई सूचना नहीं देगा सर्वसूचित जैसी।[1]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

15. हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के। तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है।

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

16. यदि वह चाहे तो तुम्हें ध्वस्त कर दे, और नई[2] उत्पत्ति ला दे।

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

17. और यह नहीं है अल्लाह पर कुछ कठिन।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ

18. तथा नहीं लादेगा कोई लादने वाला दूसरे का बोझ अपने ऊपर।[3] और यदि पुकारेगा कोई बोझल उसे लादने के लिये तो वह नहीं लादेगा उस में से कुछ, चाहे वह उस का समीपवर्ती

1 इस आयत में प्रलय के दिन उन के पूज्य की दशा का वर्णन किया गया है। कि यह प्रलय के दिन उन के शिर्क को अस्वीकार कर देंगे। और अपने पुजारियों से विरक्त होने की घोषणा कर देंगे। जिस से विद्धित हुआ कि अल्लाह का कोई साझी नहीं। और जिन को मुश्रिकों ने साझी बना रखा है वह सब धोखा है।

2 भावार्थ यह है कि मनुष्य को प्रत्येक क्षण अपने अस्तित्व तथा स्थायित्व के लिये अल्लाह की आवश्यक्ता है। और अल्लाह ने निर्लोभ होने के साथ ही उस के जीवन के संसाधन की व्यवस्था कर दी है। अतः यह न सोचो कि तुम्हारा विनाश हो गया तो उस की महिमा में कोई अन्तर आ जायेगा। वह चाहे तो तुम्हें एक क्षण में ध्वस्त कर के दूसरी उत्पत्ति ले आये क्योंकि वह एक शब्द ((कुन्)) (जिस का अनुवाद हैः हो जा) से जो चाहे पैदा कर दे।

3 अर्थात पापों का बोझ। अर्थ यह है कि प्रलय के दिन कोई किसी की सहायता नहीं करेगा।

فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِۦ ۚ وَإِلَى ٱللَّهِ ٱلْمَصِيرُ

ही क्यों न हों। आप तो बस उन्हीं को सचेत कर रहे हैं जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे। तथा जो स्थापना करते हैं नमाज़ की। तथा जो पवित्र हुआ तो वह पवित्र होगा अपने ही लाभ के लिये। और अल्लाह ही की ओर (सब को) जाना है।

وَمَا يَسْتَوِى ٱلْأَعْمَىٰ وَٱلْبَصِيرُ

19. तथा समान नहीं हो सकता अँधा तथा आँख वाला।

وَلَا ٱلظُّلُمَٰتُ وَلَا ٱلنُّورُ

20. और न अंधकार तथा प्रकाश।

وَلَا ٱلظِّلُّ وَلَا ٱلْحَرُورُ

21. और न छाया तथा न धूप।

وَمَا يَسْتَوِى ٱلْأَحْيَآءُ وَلَا ٱلْأَمْوَٰتُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَآءُ ۖ وَمَآ أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِى ٱلْقُبُورِ

22. तथा समान नहीं हो सकते जीवित तथा निर्जीव।[1] वास्तव में अल्लाह ही सुनाता है जिसे चाहता है। और आप नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हों।

إِنْ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ

23. आप तो बस सचेत कर्ता हैं।

إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ

24. वास्तव में हम ने आप को सत्य के साथ शुभसूचक तथा सचेतकर्ता बना कर भेजा है। और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَبِٱلزُّبُرِ وَبِٱلْكِتَٰبِ ٱلْمُنِيرِ

25. और यदि ये आप को झुठलायें तो इन से पूर्व लोगों ने भी झुठलाया है, जिन के पास हमारे रसूल खुले प्रमाण तथा ग्रंथ और प्रकाशित पुस्तकें लाये।

ثُمَّ أَخَذْتُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ

26. फिर मैं ने पकड़ लिया उन्हें जो काफ़िर हो गये। तो कैसा रहा मेरा इन्कार।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ أَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً

27. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने

1 अर्थात जो कुफ़्र के कारण अपनी ज्ञान शक्ति खो चुके हों।

فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾

उतारा आकाश से जल, फिर हम ने निकाल दिये उस के द्वारा बहुत से फल विभिन्न रंगों के। तथा पर्वतों के विभिन्न भाग हैं श्वेत तथा लाल विभिन्न रंगों के तथा गहरे काले।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

28. तथा मनुष्य एवं जीवों तथा पशुओं में भी विभिन्न रंगों के हैं इसी प्रकार। वास्तव में डरते हैं अल्लाह से उस के भक्तों में से वही जो ज्ञानी[1] हों। निःसंदेह अल्लाह अति प्रभुत्वशाली क्षमी है।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾

29. वास्तव में जो पढ़ते हैं अल्लाह की पुस्तक (क़ुर्आन), तथा उन्होंने स्थापना की नमाज़ की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खुले तथा छुपे तो वही आशा रखते हैं ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकर नहीं होगा।

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

30. ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल। तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से। वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है।

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

31. तथा जो हम ने प्रकाशना की है आप की ओर यह पुस्तक। वही सर्वथा सच्च है, और सच्च बताती है अपने पूर्व की पुस्तकों को। वास्तव में अल्लाह अपने भक्तों से सूचित

1 अर्थात अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनात्मक गुणों को जान सकते हैं जिन को क़ुर्आन तथा हदीसों का ज्ञान हो। और उन्हें जितना ही अल्लाह का आत्मिक ज्ञान होता है उतना ही वह अल्लाह से डरते हैं। मानो जो अल्लाह से नहीं डरते वह ज्ञानशुन्य होते हैं। (इब्ने कसीर)

भली-भाँति देखने वाला है।[1]

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِۦ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرَٰتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

32. फिर हम ने उत्तरधिकारी बनाया इस पुस्तक का उन को जिन्हें हम ने चुन लिया अपने भक्तों में[2] से। तो उन में कुछ अत्याचारी हैं अपने ही लिये तथा उन में से कुछ मध्यवर्ती हैं और कुछ अग्रसर हैं भलाईयों में अल्लाह की अनुमति से, तथा यही महान् अनुग्रह है।

جَنَّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾

33. सदावास के स्वर्ग हैं, वे प्रवेश करेंगे उन में और पहनाये जायेंगे उन में सोने के कंगन तथा मोती। और उन के वस्त्र उस में रेशम के होंगे।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِىٓ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

34. तथा वे कहेंगेः सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने दूर कर दिया हम से शोक। वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है।

الَّذِىٓ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِۦ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾

35. जिस ने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नहीं छूयेगी उस में हमें कोई आपदा और न छूयेगी उस में कोई थकान।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾

36. तथा जो काफ़िर हैं उन्हीं के लिये नरक की अग्नि है। न तो उन की मौत ही आयेगी कि वह मर जायें, और न हलकी की जायेगी उन से उस की कुछ यातना। इसी प्रकार हम बदला देते हैं प्रत्येक नाशुक्रे को।

1 कि कौन उस के अनुग्रह के योग्य है। इसी कारण उस ने नबियों को सब पर प्रधानता दी है। तथा नबियों को भी एक-दूसरे पर प्रधानता दी है। (देखियेः इब्ने कसीर)

2 इस आयत में क़ुर्आन के अनुयायियों की तीन श्रेणियाँ बताई गई हैं। और तीनों ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगीः अग्रगामी बिना हिसाब के। मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात्। तथा अत्याचारी दण्ड भुगतने के पश्चात् शिफ़ाअत द्वारा। (फ़तहुल क़दीर)

37. और वह उस में चिल्लायेंगेः हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उस के अतिरिक्त जो कर रहे थे। क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी जिस में शिक्षा ग्रहण कर ले जो शिक्षा ग्रहण करे। तथा आया तुम्हारे पास सचेतकर्ता (नबी)? अतः तुम चखो। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं है।

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَٰلِحًا غَيْرَ ٱلَّذِى كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ ٱلنَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا۟ فَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾

38. वास्तव में अल्लाह ही ज्ञानी है आकाशों तथा धरती के भेद का। वास्तव में वही भली-भाँति जानने वाला है सीनों की बातों का।

إِنَّ ٱللَّهَ عَٰلِمُ غَيْبِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

39. वही है जिस ने तुम्हें एक दूसरे के पश्चात् बसाया है धरती में तो जो कुफ़्र करेगा तो उस के लिये है उस का कुफ़्र, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ़्र उन के पालनहार के यहाँ परन्तु क्रोध ही, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ़्र परन्तु क्षति ही।

هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُۥ ۖ وَلَا يَزِيدُ ٱلْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ ٱلْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

40. (हे नबी[1]!) उन से कहोः क्या तुम ने देखा है अपने साझियों को जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के अतिरिक्त? मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कितना भाग बनाया है धरती में से? या उन का आकाशों में कुछ साझा है? या हम ने प्रदान की है उन्हें कोई पुस्तक, तो यह उस के खुले प्रमाणों पर हैं? बल्कि (बात यह है कि) अत्याचारी एक-दूसरे को केवल धोखे

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَرُونِى مَاذَا خَلَقُوا۟ مِنَ ٱلْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ أَمْ ءَاتَيْنَٰهُمْ كِتَٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَعِدُ ٱلظَّٰلِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

1 यहाँ से अन्तिम सूरह तक शिर्क (मिश्रणवाद) का खण्डन किया जा रहा है।

का वचन दे रहे हैं।

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

41. अल्लाह ही रोकता[1] है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से। और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात्। वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدٰى مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾

42. और उन काफ़िरों ने शपथ ली थी अल्लाह की पक्की शपथ! कि यदि आ गया उन के पास कोई सचेतकर्ता (नबी) तो वह अवश्य हो जायेंगे सर्वाधिक संमार्ग पर समुदायों में से किसी एक से। फिर जब आ गये उन के पास एक रसूल[2] तो उन की दूरी ही अधिक हुई।

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهٖ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿٤٣﴾

43. अभिमान के कारण धरती में तथा बुरे षड्यंत्र के कारण। और नहीं घेरता है बुरा षड्यंत्र परन्तु अपने करने वाले ही को। तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं पूर्व के लोगों की नीति की?[3] तो नहीं पायेंगे आप अल्लाह के नियम में कोई अन्तर।[4]

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ

44. और क्या वह नहीं चले-फिरे धरती में, तो देख लेते कि कैसा रहा उन का दुष्परिणाम जो इन से पूर्व रहे जब कि वह इन से कड़े थे बल में?

---

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात में नमाज़ के लिये जागते तो आकाश की ओर देखते और यह पूरी आयत पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारीः 7452)

2 मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

3 अर्थात यातना की।

4 अर्थात प्रत्येक युग और स्थान के लिये अल्लाह का नियम एक ही रहा है।

شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾

तथा अल्लाह ऐसा नहीं, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

45. और यदि पकड़ने लगता अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के कारण, तो नहीं छोड़ता धरती के ऊपर कोई जीव। किन्तु अवसर दे रहा है उन्हें एक निश्चित अवधि तक, फिर जब आजायेगा उन का निश्चित समय तो निश्चय अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा[1] है।

1 अर्थात उस दिन उन के कर्मों का बदला चुका देगा।

सूरह यासीन - 36

सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 83 आयतें हैं।

- सूरह के प्रथम दो शब्दों से इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में रसूल के सत्य होने पर क़ुर्आन की गवाही से यह बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचेत लोगों को जगाने के लिये भेजा गया है। और इस में उस का एक उदाहरण दिया गया है।
- तौहीद की निशानियाँ बता कर विरोधियों का खण्डन किया गया है। और इस प्रकार सावधान किया गया है जिस से लगता है कि प्रलय आ गई है।
- रिसालत, तौहीद तथा दूसरे जीवन के संबंध में विरोधियों की अपत्तियों का जवाब दिया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يٰسٓ ①

1. या सीन।

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ②

2. शपथ है सुदृढ़ क़ुर्आन की!

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ③

3. वस्तुतः आप रसूलों में से हैं।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ④

4. सुपथ पर हैं।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ⑤

5. (यह क़ुर्आन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ⑥

6. ताकि आप सावधान करें उस जाति[1] को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज। इसलिये वह अचेत हैं।

1 मक्का वासियों को जिन के पास इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के पश्चात् कोई नबी नहीं आया।

7. सिद्ध हो चुका है वचन[1] उन में से अधिक्तर लोगों पर। अतः वह ईमान नहीं लायेंगे।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٧

8. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक़ उन के गलों में, जो हड्डियों तक[2] हैं। इसलिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۝٨

9. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ और उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो[3] वह देख नहीं रहे हैं।

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝٩

10. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝١٠

11. आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (कुर्आन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखे। तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।

إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝١١

12. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दों को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद् चिन्हों[4] को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ۝١٢

1 अर्थात अल्लाह का यह वचन कि: ((मैं जिन्नों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूँगा।)) (देखियेः सूरहः सज्दा, आयतः 13)

2 इस से अभिप्राय उन का कुफ़्र पर दुराग्रह तथा ईमान न लाना है।

3 अर्थात सत्य की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और न उस से लाभान्वित हो रहे हैं।

4 अर्थात पुण्य अथवा पाप करने के लिये आते-जाते जो उन के पदचिन्ह धरती पर बने हैं उन्हें भी लिख रखा है। इसी में उन के अच्छे-बुरे वह कर्म भी आते हैं जो उन्होंने किये है। और जिन का अनुसरण उन के पश्चात् किया जा रहा है।

13. तथा आप उन को[1] एक उदाहरण दीजिये नगर वासियों का। जब आये उस में कई रसूल।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا أَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾

14. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्हों ने झुठला दिया उन दोनों को। फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहाः हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا إِنَّآ إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾

15. उन्होंने कहाः तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे[2] समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।

قَالُوْا مَآ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ أَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾

16. उन रसूलों ने कहाः हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾

17. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुला उपदेश पहुँचा देने के सिवा।

وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾

18. उन्होंने कहाः हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं। यदि तुम रुके नहीं तो हम तुम्हें अवश्य पथराव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।

قَالُوْٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿١٨﴾

19. उन्होंने कहाः तुम्हारा अशुभ तुम्हारे

قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۚ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ

1 अर्थात अपने आमंत्रण के विरोधियों को।

2 प्राचीन युग से मुश्रिकों तथा कुपथों ने अल्लाह के रसूलों को इसी कारण नहीं माना कि एक मनुष्य पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? यह तो खाता-पीता तथा बाज़ारों में चलता-फिरता है। (देखियेः सूरह फुर्क़ान, आयतः 7-20, सूरह अम्बिया, आयतः 3,7,8, सूरह मूमिनून, आयतः 24-33-34, सूरह इब्राहीम, आयतः 10-11, सूरह इस्रा, आयतः 94-95, और सूरह तग़ाबुन, आयतः 6)

بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ⑲

साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि तुम उल्लंघन कारी जाति हो।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ⑳

20. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! अनुसरण करो रसूलों का।

اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ㉑

21. अनुसरण करो उन का जो तुम से नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला) तथा वह सुपथ पर हैं।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ㉒

22. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (वंदना) न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।[1]

أَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ ㉓

23. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़ कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफ़ारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।

إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ㉔

24. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ।

إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ㉕

25. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अतः मेरी सुनो।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ㉖

26. (उस से) कहा गयाः तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहाः काश मेरी जाति जानती!

1 अर्थात मैं तो उसी की वंदना करता हूँ। और करता रहूँगा। और उसी की वंदना करनी भी चाहिये। क्योंकि वही वंदना किये जाने के योग्य है। उस के अतिरिक्त कोई वंदना के योग्य हो ही नहीं सकता।

27. जिस कारण क्षमा[1] कर दिया मुझ को मेरे पालनहार ने और मुझे सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾

28. तथा हम ने नहीं उतारी उस की जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना[2] आकाश से। और न हमें उतारने की आवश्यक्ता थी।

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِن بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ﴿٢٨﴾

29. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी। फिर सहसा सब के सब बुझ गये।[3]

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ﴿٢٩﴾

30. हाये संताप है[4] भक्तों पर! नहीं आया उन के पास रसूल परन्तु वे उस का उपहास करते रहे।

يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٠﴾

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले विनाश कर दिया बहुत से समुदायों का। वे उन की ओर दौबारा फिर कर नहीं आयेंगे।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

32. तथा सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित किये[5] जायेंगे।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾

33. तथा उन[6] के लिये एक निशानी है निर्जीव (सूखी) धरती। जिसे हम

وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا

1 अर्थात एकेश्वरवाद तथा अल्लाह की आज्ञा के पालन पर धैर्य के कारण।

2 अर्थात यातना देने के लिये सेनायें नहीं उतारते ।

3 अर्थात एक चीख़ ने उन को बुझी हुई राख के समान कर दिया। इस से ज्ञात होता है कि मनुष्य कितना निर्बल है।

4 अर्थात प्रलय के दिन रसूलों का उपहास भक्तों के लिये संताप का कारण होगा।

5 प्रलय के दिन हिसाब तथा प्रतिकार के लिये।

6 यहाँ से एकेश्वरवाद तथा आख़िरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मक्का के काफ़िरों के बीच विवाद का कारण था।

مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ۝٣٣

ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अन्न, तो तुम उसी में से खाते हो।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَّأَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝٣٤

34. तथा पैदा कर दिये उस में बाग़ खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهٖ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝٣٥

35. ताकि वह खायें उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हाथों ने। तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?

سُبْحٰنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝٣٦

36. पवित्र है वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती, तथा स्वयं उन कि अपनी जाति के। और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।

وَآيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُّظْلِمُونَ ۝٣٧

37. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि। खींच लेते हैं हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरों में हो जाते हैं।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝٣٨

38. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝٣٩

39. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये हैं गंतव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुरानी खजूर की सूखी शाखा के समान।

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝٤٠

40. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती है दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۙ﴿٤١﴾

41. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज़ जिस पर वह सवार होते हैं।

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

44. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. और[1] जब उन से कहा जाता है कि डरो उस (यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मुँह फेर लेते हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَاۤءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾

47. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफ़िर हो गये उन से जो ईमान लाये हैं: क्या हम उसे

---

1 आयत नं॰ 33 से यहाँ तक एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाणों, जिन्हें सभी लोग देखते तथा सुनते हैं, और जो सभी इस विश्व की व्यवस्था तथा जीवन के संसाधनों से संबंधित हैं, उन का वर्णन करने के पश्चात् अब मिश्रणवादियों तथा काफ़िरों कि दशा और उन के अचरण का वर्णन किया जा रहा है।

खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे तो खिला सकता है? तुम तो खुले कुपथ में हो।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

48. और वे कहते हैं कि कब यह (प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

49. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कड़ी ध्वनि[1] की जो उन्हें पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे होंगे।

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

50. तो न वह कोई वसिय्यत कर सकेंगे, और न अपने परिजनों में वापिस आ सकेंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾

51. तथा फूँका[2] जायेगा सूर (नरसिंघा) में, तो वह सहसा समाधियों से अपने पालनहार की ओर भागते हुये चलने लगेंगे।

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

52. वह कहेंगेः हाय हमारा विनाश! किस ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह से? यह वह है जिस का वचन दिया था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च कहा था रसूलों ने।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

53. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि। फिर सहसा वह सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

---

1 इस से अभिप्राय प्रथम सूर है जिस में फूँकते ही अल्लाह के सिवा सब बिलय हो जायेंगे।

2 इस से अभिप्राय दूसरी बार सूर फूँकना है जिस से सभी जीवित हो कर अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

54. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछ। और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।

إِنَّ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ ٱلْيَوْمَ فِى شُغُلٍ فَٰكِهُونَ ﴿٥٥﴾

55. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये हैं।

هُمْ وَأَزْوَٰجُهُمْ فِى ظِلَٰلٍ عَلَى ٱلْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔونَ ﴿٥٦﴾

56. वे तथा उन की पत्नियाँ सायों में हैं, मस्नदों पर तकिये लगाये हुये।

لَهُمْ فِيهَا فَٰكِهَةٌ وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾

57. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।

سَلَٰمٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾

58. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।

وَٱمْتَٰزُوا۟ ٱلْيَوْمَ أَيُّهَا ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾

59. तथा तुम अलग[1]हो जाओ आज, हे अपराधियो!

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾

60. हे आदम की संतान! क्या मैं ने तुम से बल दे कर नहीं[2] कहा था कि इबादत (वंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

وَأَنِ ٱعْبُدُونِى هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

61. तथा इबादत (वंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا۟ تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

62. तथा वह कुपथ कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

هَٰذِهِۦ جَهَنَّمُ ٱلَّتِى كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

63. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें

1 अर्थात ईमान वालों से।

2 भाष्य के लिये देखियेः सूरह, आराफ़, आयतः 172।

दिया जा रहा था।

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾

64. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾

65. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।[1]

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾

66. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दोड़ते संमार्ग की ओर, परन्तु कहाँ से देखते?

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

67. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।

وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

68. तथा जिसे हम अधिक आयु देते हैं, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा[2] की ओर फेर देते हैं। तो क्या वह समझते नहीं हैं?

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ﴿٦٩﴾

69. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य[3] और न यह उन के लिये योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुर्आन है।

لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾

70. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित

1 यह उस समय होगा जब मिश्रणवादी शपथ लेंगे कि वह मिश्रण (शिर्क) नहीं करते थे। देखियेः सूरह अन्आम, आयतः 23।

2 अर्थात वह शिशु की तरह निर्बल तथा निर्बोध हो जाता है।

3 मक्का के मुर्तिपूजक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संबंध में कई प्रकार की बातें कहते थे जिन में यह बात भी थी कि आप कवि हैं। अल्लाह ने इस आयत में इसी का खण्डन किया है।

हो[1] तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफ़िरों पर।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ﴿٧١﴾

71. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये है उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपाये। तो वह उन के स्वामी हैं?

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾

72. तथा हम ने वश में कर दिया उन्हें उन के, तो उन में से कुछ उन की सवारी हैं। तथा उन में से कुछ को वे खाते हैं।

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

73. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय हैं। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ﴿٧٤﴾

74. और उन्होंने बना लिया अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, कि संभवतः वे उन की सहायता करेंगे।

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾

75. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना हैं, (यातना) में[2] उपस्थित।

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾

76. अतः आप को उदासीन न करे उन की बात। वस्तुतः हम जानते हैं जो वह मन में रखते हैं तथा जो बोलते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾

77. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगड़ालू है।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ

78. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति

---

1 जीवित होने का अर्थ अन्तरात्मा का जीवित होना और सत्य को समझने के योग्य होना है।

2 अर्थात वह अपने पूज्यों सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे।

وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾

को भूल गया। उस ने कहाः कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी?

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

79. आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया है प्रथम बार। और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली-भाँति जानने वाला है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾

80. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग[1] सुलगाते हो।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾

81. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

82. उस का आदेश जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना हैः हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

83. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे[2] जाओगे।

---

1 भावार्थ यह है कि जो अल्लाह जल से हरे बृक्ष पैदा करता है फिर उसे सुखा देता है जिस से तुम आग सुलगाते हो, तो क्या वह इसी प्रकार तुम्हारे मरने गलने के पश्चात् फिर तुम्हें जीवित नहीं कर सकता?

2 प्रलय के दिन अपने कर्मों का प्रतिकार प्राप्त करने के लिये।

सूरह साफ़्फ़ात - 37

सूरह साफ़्फ़ात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 182 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वस्‍ साफ़्फ़ात)) से हुआ है जिस का अर्थ हैः पंक्तिवद्ध फ़रिश्तों की शपथ! इस लिये इस का नाम सूरह साफ़्फ़ात है।
- इस में आयत 1 से 10 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने पर फ़रिश्तों की गवाही प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि शैतान, फ़रिश्तों की उच्च सभा तक जाने से रोक दिये गये हैं। फिर दूसरे जीवन की दशा का वर्णन करके उन के दुष्परिणाम को बताया गया है जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजते हैं तथा अल्लाह के पूजारियों का उत्तम परिणाम बताया गया है।
- आयत 75 से 148 तक अनेक नबियों की चर्चा है जिन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करते हुये अनेक प्रकार के दुःख सहे। तथा अल्लाह ने उन्हें उन के प्रयासों का उत्तम प्रतिफल प्रदान किया।
- आयत 149 से 166 तक फ़रिश्तों के बारे में मुश्‌रिकों के ग़लत विचारों का खण्डन करते हुये फ़रिश्तों ही द्वारा यह बताया गया है कि वास्तव में वह क्या हैं?
- फिर सूरह की अन्तिम आयतों में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा अल्लाह की सेना अर्थात रसूल के अनुयायियों को अल्लाह की सहायता तथा विजय की शुभ सूचना दी गई है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ

1. शपथ है पंक्तिवद्ध(फ़रिश्तों) की!

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ

2. फिर झिड़कियाँ देने वालों की!

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ

3. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों[1] की!

1 यह तीनों गुण फ़रिश्तों के हैं जो आकाशों में अल्लाह की इबादत के लिये

4. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।	إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝٤
5. आकाशों तथा धरती का पालनहार, तथा जो कुछ उन के मध्य है, और सूर्योदय होने के स्थानों का रब।	رَّبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥
6. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप) के आकाश को तारों की शोभा से।	إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝٦
7. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक उध्दत शैतान से।	وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝٧
8. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च सभा तक फ़रिश्तों की बात, तथा मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।	لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝٨
9. रौंदने के लिये, तथा उन के लिये स्थायी यातना है।	دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝٩
10. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा करती है उस का दहकती ज्वाला।[1]	إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠
11. तो आप इन (काफ़िरों) से प्रश्न करें कि क्या उन को पैदा करना अधिक कठिन है या जिन[2] को हम ने पैदा किया है? हम ने उन को [3]पैदा किया है लेसदार मिट्टी से।	فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ لَّازِبٍ ۝١١
12. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन	بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝١٢

पंक्तिवद्ध रहते तथा बादलों को हाँकते और अल्लाह के स्मरण जैसे क़ुर्आन तथा नमाज़ पढ़ने और उस की पवित्रता का गान करने इत्यादि में लगे रहते हैं।

1 फिर यदि उस से बचा रह जाये तो आकाश की बात अपने नीचे के शैतानों तक पहुँचाता है और वह उसे काहिनों तथा ज्योतिषियों को बताते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिला कर लोगों को बताते हैं। (सहीह बुख़ारीः 6213, सहीह मुस्लिमः 2228)

2 अर्थात फ़रिश्तों तथा आकाशों को?

3 उन के पिता आदम (अलैहिस्सलाम) को।

के अस्वीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ﴿١٣﴾

13. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ﴿١٤﴾

14. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।

وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾

15. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू है।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿١٦﴾

16. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुनः जीवित किये जायेंगे?

أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾

17. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٨﴾

18. आप कह दें कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿١٩﴾

19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢٠﴾

20. तथा कहेंगेः हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾

21. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾

22. (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (वंदना) कर रहे थे।

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾

23. अल्लाह के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।

وَقِفُوهُمْ ۖ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾

24. और उन्हें रोक[1] लो। उन से प्रश्न किया जाये।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٥﴾

25. क्या हो गया है तुम्हें कि एक- दूसरे की सहायता नहीं करते?

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾

26. बल्कि वह उस दिन सिर झुकाये खड़े होंगे।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾

27. और एक-दूसरे के सम्मुख हो कर परस्पर प्रश्न करेंगेः[2]

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

28. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दायें[3] से।

قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

29. वह[4] कहेंगेः बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾

30. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार,[5] बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾

31. तो सिद्ध हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।

فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾

32. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

33. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।

---

1 नरक में झोंकने से पहले।

2 अर्थात एक - दूसरे को धिक्कारेंगे।

3 इस से अभिप्राय यह है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात यह विश्वास दिलाते थे कि यही मिश्रणवाद मूल तथा सत्धर्म है।

4 इस से अभिप्राय उन के प्रमुख लोग हैं।

5 देखियेः सूरह इब्राहीम, आयतः 22।

34. हम इसी प्रकार किया करते हैं अपराधियों के साथ।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

35. यह वह हैं कि जब कहा जाता था उन से कि कोई पूज्य (वंदनीय) नहीं अल्लाह के अतिरिक्त तो वह अभिमान करते थे।

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾

36. तथा कह रहे थेः क्या हम त्याग देने वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त कवि के कारण?

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ ﴿٣٦﴾

37. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा पुष्टि की है सब रसूलों की।

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

38. निश्चय तुम दुःखदायी यातना चखने वाले हो।

إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾

39. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला) दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

40. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

41. यही हैं जिन के लिये विदित जीविका है।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ﴿٤١﴾

42. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही आदरणीय होंगे।

فَوَاكِهُ ۖ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

43. सुख के स्वर्गों में।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

44. आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख असीन होंगे।

عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾

45. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित पेय के।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿٤٥﴾

46. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।

بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ﴿٤٦﴾

47. नहीं होगी उस में शारिरिक पीड़ा और न वह उस से बहकेंगे।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿٤٧﴾

وعندهم قاصرات الطرف عين ﴿٤٨﴾

48. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति) बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होंगी।

كأنهن بيض مكنون ﴿٤٩﴾

49. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होंगी।[1]

فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ﴿٥٠﴾

50. वह एक - दूसरे से सम्मुख हो कर प्रश्न करेंगे।

قال قائل منهم إني كان لي قرين ﴿٥١﴾

51. तो कहेगा एक कहने वाला उन में से: मेरा एक साथी था।

يقول أإنك لمن المصدقين ﴿٥٢﴾

52. जो कहता था कि क्या तुम (प्रलय का) विश्वास करने वालों में से हो?

أإذا متنا وكنا ترابا وعظاما أإنا لمدينون ﴿٥٣﴾

53. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमें (कर्मों का) प्रतिफल दिया जायेगा।

قال هل أنتم مطلعون ﴿٥٤﴾

54. वह कहेगाः क्या तुम झाँक कर देखने वाले हो?

فاطلع فرآه في سواء الجحيم ﴿٥٥﴾

55. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक के बीच।

قال تالله إن كدت لتردين ﴿٥٦﴾

56. उस से कहेगाः अल्लाह की शपथ! तुम तो मेरा विनाश कर देने के समीप थे।

ولولا نعمة ربي لكنت من المحضرين ﴿٥٧﴾

57. और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों में होता।

أفما نحن بميتين ﴿٥٨﴾

58. फिर वह कहेगाः क्या (यह सहीह नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?

إلا موتتنا الأولى وما نحن بمعذبين ﴿٥٩﴾

59. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न हम को यातना दी जायेगी।

1 अर्थात जिस प्रकार पक्षी के पँखों के नीचे छुपे हुये अन्डे सुरक्षित होते हैं वैसे ही वह नारियाँ सुरक्षित, सुन्दर रंग और रूप की होंगी।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾

60. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।

لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿٦١﴾

61. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।

أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿٦٢﴾

62. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष?

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾

63. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾

64. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ﴿٦٥﴾

65. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।

فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٦٦﴾

66. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से। फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾

67. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खौलता गरम पानी है।

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾

68. फिर उन्हें प्रत्यागत होना है नरक की ओर।

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾

69. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।

فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾

70. फिर वह उन्हीं के पद्चिन्हों पर[1] दौड़े चले जा रहे हैं।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾

71. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिक्तर।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنذِرِينَ ﴿٧٢﴾

72. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत

---

1 इस में नरक में जाने का जो सब से बड़ा कारण बताया गया है वह है नबी को न मानना, और अपने पूर्वजों के पंथ पर ही चलते रहना।

(सावधान) करने वाले।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٣﴾

73. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?[1]

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٧٤﴾

74. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿٧٥﴾

75. तथा हमें पुकारा नूह ने। तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

76. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा से।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿٧٧﴾

77. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष[2] रह जाने वालों में।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٧٨﴾

78. तथा शेष रखा हम ने उस की सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।

سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿٧٩﴾

79. सलाम (सुरक्षा)[3] है नूह के लिये समस्त विश्ववासियों में।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٠﴾

80. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨١﴾

81. वास्तव में वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٨٢﴾

82. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को।

وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ﴿٨٣﴾

83. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾

84. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।

---

1 अतः उन के दुष्परिणाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

2 उस की जाति के जलमग्न हो जाने के पश्चात्।

3 अर्थात उस की बुरी चर्चा से।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾

85. जब कहा उस ने अपने पिता तथा अपनी जाती सेः तुम किस की इबादत (वंदना) कर रहे हो?

أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾

86. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

87. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾

88. फिर उस ने देखा तारों की[1] ओर।

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

89. तथा उन से कहाः मैं रोगी हूँ।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

90. तो उसे छोड़ कर चले गये।

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

91. फिर वह जा पहूँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रसाद) क्यों नहीं खाते?

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾

92. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

93. फिर पिल पड़ा उन पर मारते हुये दायें हाथ से।

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾

94. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾

95. इब्राहीम ने कहाः क्या तुम इबादत (वंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

96. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾

97. उन्होंने कहाः इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾

98. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा,

---

1 यह सोचते हुये कि इन के उत्सव में न जाने के लिये क्या बहाना करूँ।

तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

وَقَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾

99. तथा उस ने कहाः मैं जाने वाला हूँ अपने पालन हार की[1] ओर। वह मुझे सुपथ दर्शायेगा।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101. तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक सहनशील पुत्र की।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْۤ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. फिर जब वह पहुँचा उस के साथ चलने-फिरने की आयु को, तो इब्राहीम ने कहाः हे मेरे प्रिय पुत्र! मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि तेरा क्या विचार है? उस ने कहाः हे पिता! पालन करें जिस का अदेश आप को दिया जा रहा है। आप पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि अल्लाह की इच्छा हुई।

فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾

103. अन्ततः जब दोनों ने स्वयं को अर्पित कर दिया, और उस (पिता) ने उसे गिरा दिया माथे के बल।

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾

104. तब हम ने उसे आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

105. तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न। इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾

106. वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

107. और हम ने उस के मुक्ति- प्रतिदान

1 अर्थात ऐसे स्थान की ओर जहाँ अपने पालनहार की इबादत कर सकूँ।

के रूप में प्रदान कर दी एक महान्[1] बलि।

108. तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ चर्चा पिछलों में।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝١٠٨

109. सलाम है इब्राहीम पर।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝١٠٩

110. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١١٠

111. निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١١

112. तथा हम ने उसे शुभसूचना दी इसहाक नबी की, जो सदा- चारियों में[2] होगा।

وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٢

113. तथा हम ने बरकत (विभूति) अवतरित की उस पर तथा इसहाक पर। और उन दोनों की संतति में से कोई सदाचारी है और कोई अपने लिये खुला अत्याचारी।

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۗ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ۝١١٣

114. तथा हम ने उपकार किया मूसा और हारून पर।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١١٤

115. तथा मुक्त किया दोनों को और उन

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝١١٥

1 यह महान् बलि एक मेंढा था। जिसे जिब्रील (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्वर्ग से भेजा गया। जो आप के प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के स्थान पर बलि दिया गया। फिर इस विधि को प्रलय तक के लिये अल्लाह के समिप्य का एक साधन तथा ईदुल अज़्हा (बक़रईद) का प्रियवर कर्म बना दिया गया। जिसे संसार के सभी मुसलमान ईदुल अज़्हा में करते हैं।

2 इस आयत से विदित होता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस बलि के पश्चात् दूसरे पुत्र आदरणीय इस्हाक की शुभ सूचना दी गई। इस से ज्ञान हुआ कि बलि इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की दी गई थी। और दोनों की आयु में लग-भग चौदह वर्ष का अन्तर है।

कि जाति को घोर व्यग्रता से।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٦

116. तथा हम ने सहायता की उन की तो वही प्रभावशाली हो गये।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ۝١١٧

117. तथा हम ने प्रदान की दोनों को प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝١١٨

118. और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी डगर।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝١١٩

119. तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा पिछलों में।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١٢٠

120. सलाम है मूसा तथा हारून पर।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٢١

121. हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٢٢

122. वस्तुतः वह दोनों हमारे ईमान वाले भक्तों में थे।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٢٣

123. तथा निश्चय इल्यास नबियों में से था।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٢٤

124. जब कहा उस ने अपनी जाति सेः क्या तुम डरते नहीं हो?

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ۝١٢٥

125. क्या तुम बअ्ल (नामक मुर्ति) को पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٢٦

126. अल्लाह ही तुम्हारा पालनहार है, तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का पालनहार है।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝١٢٧

127. अन्ततः उन्होंने झुठला दिया उस को। तो निश्चय वही (नरक में) उपस्थित होंगे।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾

128. किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾

129. तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।

سَلَامٌ عَلَىٰ إِلْ يَاسِينَ ﴿١٣٠﴾

130. सलाम है इल्यासीन[1] पर।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾

131. वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

132. वस्तुतः वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।

وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾

133. तथा निश्चय लूत नबियों में से था।

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾

134. जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٥﴾

135. एक बुढ़िया[2] के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾

136. फिर हम ने अन्यों को तहस नहस कर दिया।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾

137. तथा तुम[3] गुज़रते हो उन (की निर्जन बस्तियों) पर प्रातः के समय।

وَبِاللَّيْلِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾

138. तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾

139. तथा निश्चय यूनुस नबियों में से था।

---

1 इल्यासीनः इल्यास ही का एक उच्चारण है। उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों में इलया भी कहा गया है।

2 यह लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी थी।

3 मक्का वासियों को संबोधित किया गया है।

140. जब वह भाग[1] गया भरी नाव की ओर।	إذ أبق إلى الفلك المشحون ﴿١٤٠﴾
141. फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुओं में से।	فساهم فكان من المدحضين ﴿١٤١﴾
142. तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दित था।	فالتقمه الحوت وهو مليم ﴿١٤٢﴾
143. तो यदि न होता अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।	فلولا أنه كان من المسبحين ﴿١٤٣﴾
144. तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुनः जीवित किये[2] जायेंगे।	للبث في بطنه إلى يوم يبعثون ﴿١٤٤﴾
145. तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी[3] था।	فنبذناه بالعراء وهو سقيم ﴿١٤٥﴾
146. और उगा दिया उस[4] पर लताओं का एक वृक्ष।	وأنبتنا عليه شجرة من يقطين ﴿١٤٦﴾
147. तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लाख बल्कि अधिक की ओर।	وأرسلناه إلى مائة ألف أو يزيدون ﴿١٤٧﴾
148. तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख - सुविधा प्रदान की एक समय[5] तक।	فآمنوا فمتعناهم إلى حين ﴿١٤٨﴾

---

1 अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर से नगर वासियों को यातना के आने की सूचना देकर निकल गये। और नाव पर सवार हो गये। नाव सागर की लहरों में घिर गई। इसलिये बोझ कम करने के लिये नाम निकाला गया। तो यूनुस (अलैहिस्सलाम) का नाम निकला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया।

2 अर्थात प्रलय के दिन तक। (देखियेः सूरह अम्बिया, आयतः 87)

3 अर्थात निर्बल नवजात शिशु के समान।

4 रक्षा के लिये।

5 देखियेः सूरह यूनुस।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾

149. तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र?

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾

150. अथवा क्या हम ने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित[1] थे?

أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾

151. सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहें हैं।

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾

152. कि अल्लाह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी हैं।

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

153. क्या अल्लाह ने प्राथमिक्ता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾

154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

155. तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُبِينٌ ﴿١٥٦﴾

156. अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?

فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾

157. तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो?

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

158. और उन्होंने बना दिया अल्लाह तथा जिन्नों के मध्य वंश-संबंध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अल्लाह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये[2] जायेंगे।

---

1 इस में मक्का के मिश्रणवादियों का खण्डन किया जा रहा है जो फ़रिश्तों को देवियाँ तथा अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि वह स्वयं पुत्रियों के जन्म को अप्रिय मानते थे।

2 अर्थात यातना के लिये। तो यदि वे उस के संबंधी होते तो उन्हें यातना क्यों देता?

سُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝١٥٩

159. अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे हैं।

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلۡمُخۡلَصِينَ ۝١٦٠

160. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।[1]

فَإِنَّكُمۡ وَمَا تَعۡبُدُونَ ۝١٦١

161. तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्य।

مَآ أَنتُمۡ عَلَيۡهِ بِفَٰتِنِينَ ۝١٦٢

162. तुम सब किसी एक को भी कुपथ नहीं कर सकते।

إِلَّا مَنۡ هُوَ صَالِ ٱلۡجَحِيمِ ۝١٦٣

163. उस के सिवा जो नरक में झोंका जाने वाला है।

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٞ مَّعۡلُومٞ ۝١٦٤

164. और नहीं है हम (फ़रिश्तों) में से कोई परन्तु उस का एक नियमित स्थान है।

وَإِنَّا لَنَحۡنُ ٱلصَّآفُّونَ ۝١٦٥

165. तथा हम ही (आज्ञापालन के लिये) पंक्तिवद्ध हैं।

وَإِنَّا لَنَحۡنُ ٱلۡمُسَبِّحُونَ ۝١٦٦

166. और हम ही तस्बीह (पवित्रता गान) करने वाले हैं।

وَإِن كَانُواْ لَيَقُولُونَ ۝١٦٧

167. तथा वह (मुशरिक) तो कहा करते थे किः

لَوۡ أَنَّ عِندَنَا ذِكۡرٗا مِّنَ ٱلۡأَوَّلِينَ ۝١٦٨

168. यदि हमारे पास कोई स्मृति (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में आई०००

لَكُنَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلۡمُخۡلَصِينَ ۝١٦٩

169. तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध भक्तों में से हो जाते।

فَكَفَرُواْ بِهِۦۖ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُونَ ۝١٧٠

170. (फिर जब आ गयी) तो उन्होंने कुर्आन के साथ कुफ़्र कर दिया अतः शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

وَلَقَدۡ سَبَقَتۡ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا ٱلۡمُرۡسَلِينَ ۝١٧١

171. और पहले ही हमारा वचन हो चुका

1 वह अल्लाह को ऐसे दुर्गुणों से युक्त नहीं करते।

है अपने भेजे हुये भक्तों के लिये।

172. कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾

173. तथा वास्तव में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।

وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾

174. तो आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾

175. तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।

وَّأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

176. तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र माँग कर रहे हैं।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

177. तो जब वह उतर आयेगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुओं का सवेरा।

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾

178. और आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾

179. तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।

وَّأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

180. पवित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे हैं।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾

181. तथा सलाम है रसूलों पर।

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾

182. तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

सूरह साद - 38

सूरह साद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

- इस में पहले अच्छर (साद) आया है जिस के कारण इस का नाम ((सूरह साद)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में क़ुर्आन के शिक्षाप्रद पुस्तक होने की चर्चा करते हुये यह चेतावनी दी गई है कि जो इसे नहीं मानेंगे वह अपने आप को बुरे परिणाम तक पहुँचायेंगे।
- आयत 12 से 16 तक उन जातियों का बुरा अन्त बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 17 से 24 तक नबियों के, अल्लाह की ओर ध्यानमग्न होने की चर्चा की गई है। फिर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और न करने दोनों का परलोक में अलग-अलग परिणाम बताया गया है।
- आयत 65 से 85 तक में बताया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सावधान करने के लिये आये हैं। और आप के विरोध करने का वही फल होगा जो इब्लीस के अभिमान का हुआ।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा क़ुर्आन के सत्य होने तथा क़ुर्आन की बताई हुयी बातों के अवश्य पूरी होने की ओर संकेत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

1. साद। शपथ है शिक्षा प्रद क़ुर्आन की!

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِ ①

2. बल्कि जो काफ़िर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त हैं।

بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ②

3. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे। और नहीं होता वह बचने का समय।

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ فَنَادَوۡا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ③

4. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने[1] वाला! और कह दिया काफ़िरों ने कि यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

وَعَجِبُوٓا أَن جَآءَهُم مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ ٱلْكَٰفِرُونَ هَٰذَا سَٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾

5. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।

أَجَعَلَ ٱلْـَٔالِهَةَ إِلَٰهًا وَٰحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾

6. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य[2] है।

وَٱنطَلَقَ ٱلْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ ٱمْشُوا وَٱصْبِرُوا عَلَىٰٓ ءَالِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَىْءٌ يُرَادُ ﴿٦﴾

7. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मन- घड़त बात है।

مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِى ٱلْمِلَّةِ ٱلْءَاخِرَةِ ۖ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا ٱخْتِلَٰقٌ ﴿٧﴾

8. क्या उसी पर उतारी गई है यह शिक्षा (क़ुर्आन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में हैं मेरी शिक्षा से। बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।

أَءُنزِلَ عَلَيْهِ ٱلذِّكْرُ مِنۢ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِى شَكٍّ مِّن ذِكْرِى ۖ بَل لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ﴿٨﴾

9. अथवा उन के पास हैं आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष।[3]

أَمْ عِندَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ ٱلْعَزِيزِ ٱلْوَهَّابِ ﴿٩﴾

10. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें

أَمْ لَهُم مُّلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِى ٱلْأَسْبَٰبِ ﴿١٠﴾

---

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात एकेश्वरवाद की यह बात सत्य नहीं है और ऐसी बात अपने किसी स्वार्थ के लिये की जा रही है।

3 कि वह जिसे चाहें नबी बनायें?

चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में) रस्सियाँ तान[1] कर।

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ⑪

11. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित सेनाओं[2] में से।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ⑫

12. झुठलाया इन से पहले नूह तथा आद और शक्तिवान फ़िरऔन की जाति ने।

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْئَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ⑬

13. तथा समूद और लूत की जाति एवं बन के वासियों[3] ने। यही सेनायें हैं।

إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ⑭

14. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो मेरी यातना सिद्ध हो गई।

وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ⑮

15. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के लिये कुछ भी देर नहीं होगी।

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ⑯

16. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे पालनहार! शीघ्र प्रदान कर दे हमारे लिये हमारी (यातना का) भाग हिसाब के दिन से पहले।[4]

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ⑰

17. आप सहन करें उस पर जो वे कह रहे हैं। तथा याद करें हमारे भक्त दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था निश्चय वह ध्यान मग्न था।

---

1 और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना के अवतरण को रोक दें।

2 अर्थात इन मक्का वासियों के पराजित होने में देर नहीं होगी।

3 इस से अभिप्राय शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जाति है। (देखियेः सूरह, शुअरा आयतः 176)

4 अर्थात वह उपहास स्वरूप कहते हैं कि प्रलय से पहले ही संसार में हमें यातना मिल जाये। अर्थ यह है कि हमें कोई यातना नहीं दी जायेगी।

18. हम ने वशवर्ती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रातः।

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

19. तथा पक्षियों को एकत्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान मगन रहते थे।

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾

20. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

21. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फांद कर मेहराब (वंदना स्थल) में आ गये?

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾

22. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहाः डरिये नहीं। हम दो पक्ष हैं अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दें हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमें दर्शा दें सीधी राह।

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

23. यह मेरा भाई है उस के पास निन्नावे भेड़ हैं। और मेरे एक भेड़ है। तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

24. दावूद ने कहाः उस ने तुम पर अवश्य अत्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) माँग कर के अपनी भेड़ों में। तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ

وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩

ईमान लाये तथा सदाचार किये। और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भाँप लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली। और गिर गया सज्दे में तथा ध्यान मग्न हो गया।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾

25. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वह। तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾

26. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में। अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुसरण न कर आकांक्षा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसंदेह जो कुपथ हो जायेंगे अल्लाह की राह [1]से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿۲۷﴾

27. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफ़िर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफ़िर हो गये अग्नि से।

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿۲۸﴾

28. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के समान जो उपद्रवी हैं धरती में? या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान?[2]

1 अल्लाह की राह से अभिप्राय उस का धर्म विधान है।

2 यह प्रश्न नकारात्मक है और अर्थ यह कि दोनों का परिणाम समान नहीं होगा।

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

29. यह (कुर्आन) एक शुभ पुस्तक है। जिसे हम ने अवतरित किया है आप की ओर, ताकि लोग विचार करें उस की आयतों पर। और ताकि शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

30. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति ध्यान मग्न था।

اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

31. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष संध्या के समय सधे हुये वेग गामी घोड़े।

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

32. तो कहाः मैं ने प्राथमिक्ता दी इन घोड़ों के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण पर। यहाँ तक कि वह ओझल हो गये।

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

33. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों तथा गर्दनों पर।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰي كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾

34. और हम ने परीक्षा[1] ली सुलैमान कि तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर एक धड़। फिर वह ध्यान मग्न हो गया।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

35. उस ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! मुझ को क्षमा कर दे। तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित

1 हदीस से भाष्यकारों ने लिखा है कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों जिन की संख्या 70 अथवा 90 थी, से संभोग करूँगा। जिन से योध्दा घुड़ सवार पैदा होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे। तथा उन्होंने यह नहीं कहाः यदि अल्लाह ने चाहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि केवल एक ही पत्नी गर्भवती हुई। और उस ने भी अधूरे शिशु को जन्म दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः वह ((यदि अल्लाह ने चाहा)) कह देते तो सब योद्धा पैदा होते। (सहीह बुख़ारी, हदीसः 6639, सहीह मुस्लिम, हदीसः 1656)

न हो किसी के लिये मेरे पश्चात्। वास्तव में तू ही अति प्रदाता है।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾

36. तो हम ने वश में कर दिया उस के लिये वायु को जो चल रही थी धीमी गति से उस के आदेश से वह जहाँ चाहता।

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾

37. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के निर्माता, तथा ग़ोता ख़ोर को।

وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

38. तथा दूसरों को बंधे हुये बेड़ियों में।

هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

39. यह हमारा प्रदान है। तो उपकार करो अथवा रोक लो, कोई हिसाब नहीं।

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾

40. और वास्तव में उस के लिये हमारे पास सामिप्य तथा उत्तम स्थान है।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾

41. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब को। जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि शैतान ने मुझ को पहुँचाया[1] है दुख, तथा यातना।

ارْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

42. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है शीतल स्नान तथा पीने का जल।

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

43. और हम ने प्रदान किया उसे उस का परिवार तथा उनके साथ और उन के समान। अपनी दया से, और मतिमानों की शिक्षा के लिये।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهِ وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا

44. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़, तथा उस से मार और

1 अर्थात मेरे दुख तथा यातना के कारण मुझे शैतान उकसा रहा है तथा वह मुझे तेरी दया से निराश करना चाहता है।

وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝۴۴

अपनी शपथ भंग न कर। वास्तव[1] में हम ने उसे पाया धौर्य वान। निश्चय वह बड़ा ध्यान मग्न था।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝۴۵

45. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम तथा इस्हाक एवं याकूब को, जो कर्म शक्ति तथा ज्ञानचक्षू[2] वाले थे।

اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝۴۶

46. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी विशेषता परलोक (आख़िरत) की याद के साथ।

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝۴۷

47. वास्तव में वह हमारे यहाँ उत्तम निर्वाचितों में से थे।

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝۴۸

48. तथा आप चर्चा करें इस्माईल तथा यसअ एवं जुलकिफ़्ल की। और यह सभी निर्वाचितों में से थे।

هٰذَا ذِكْرٌ ۭ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝۴۹

49. यह (कुर्आन) एक शिक्षा है तथा निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम स्थान हैं।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝۵۰

50. स्थायी स्वर्ग खुले हुये हैं उन के लिये (उन के) द्वार।

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝۵۱

51. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मागेंगे उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝۵۲

52. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने वाली समायु पत्नियाँ होंगी।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝۵۳

53. यह है जिस का वचन दिया जा रहा था तुम्हें हिसाब के दिन।

---

1 अय्यूब (अलैहिस्सलाम) की पत्नी से कुछ चूक हो गई जिस पर उन्होंने उसे सौ कोड़े मारने की शपथ ली थी।

2 अर्थात आज्ञा पालन में शक्तिवान तथा धर्म का बोध रखते थे।

54. यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है।

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُۥ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

55. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये निश्चय बुरा स्थान है।

هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّٰغِينَ لَشَرَّ مَـَٔابٍ ﴿٥٥﴾

56. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही बुरा आवास है!

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

57. यह है। तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।

هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾

58. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।

وَءَاخَرُ مِن شَكْلِهِۦٓ أَزْوَٰجٌ ﴿٥٨﴾

59. यह[1] एक और जत्था है जो घुसा आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत् नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक में प्रवेश करने वाले हैं।

هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا۟ ٱلنَّارِ ﴿٥٩﴾

60. वह उत्तर देंगेः बल्कि तुम। तुम्हारा कोई स्वागत् नहीं। तुम्हीं आगे लाये हो इस (यातना) को हमारे। तो यह बुरा निवास है।

قَالُوا۟ بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ ٱلْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

61. (फिर) वह कहेंगेः हमारे पालनहार! जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को दुगनी यातना दे नरक में।

قَالُوا۟ رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى ٱلنَّارِ ﴿٦١﴾

62. तथा (नारकी) कहेंगेः हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर[2] रहे थे?

وَقَالُوا۟ مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ ٱلْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

---

1 यह बात काफ़िरों के प्रमुख जो पहले से नरक में होंगे अपने उन अनुयायियों से कहेंगे जो संसार में उन के अनुयायी बने रहे उस समय जब उन के अनुयायियों का गिरोह नरक में आने लगेगा।

2 इस से उन का संकेत उन निर्धन-निर्बल मुसलमानों की ओर होगा जिन्हें वह

63. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही हैं उन से हमारी आँखें?

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

64. निश्चय सत्य है नारकियों का आपस में झगड़ना।

إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

65. हे नबी! आप कह दें: मैं तो मात्र सचेत करने वाला[1] हूँ। तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

66. वह आकाशों तथा धरती का और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभाव शाली क्षमी है।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

67. आप कह दें कि यह[2] बहुत बड़ी सूचना है।

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾

68. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।

أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾

69. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फ़रिश्ते) जब वाद- विवाद कर रहे थे।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

70. मेरी ओर तो मात्र इस लिये वह़्यी (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।

إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٠﴾

71. जब कि कहा आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से: मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿٧١﴾

संसार में उपद्रवी कह रहे थे।

1 क़ुर्आन ने इसे बहुत सी आयतों में दुहराया है कि नबियों का कर्तव्य मात्र सत्य को पहुँचाना है। किसी को बल पूर्वक सत्य को मनवाना नहीं है।

2 परलोक की यातना तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) की जो बातें तुम्हें बता रहा हूँ।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سٰجِدِينَ ﴿٧٢﴾

72. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये सजदा करते हुये।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾

73. तो सजदा किया सभी फ़रिश्तों ने एक साथ।

إِلَّآ إِبْلِيسَ ۭ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿٧٤﴾

74. इब्लीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफ़िरों में से।

قَالَ يٰٓإِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿٧٥﴾

75. अल्लाह ने कहाः हे इब्लीस! किस चिज़ ने तुझे रोक दिया सजदा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ﴿٧٦﴾

76. उस ने कहाः मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी से।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٧﴾

77. अल्लाह ने कहाः तू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।

وَّإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيٓ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٨﴾

78. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी है प्रलय के दिन तक।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيٓ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾

79. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पुनः जीवित किये जायेंगे।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٨٠﴾

80. अल्लाह ने कहाः तुझे अवसर दे दिया गया।

إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

81. निर्धारित समय के दिन तक।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

82. उस ने कहाः तो तेरे प्रताप की

शपथ! मैं आवश्य कुपथ कर के रहूँगा सब को।

83. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝٨٣

84. अल्लाह ने कहाः तो यह सत्य है और मैं सत्य ही कहा करता हूँः

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ۝٨٤

85. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे उन सब से।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۝٨٥

86. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग करता हूँ तुम से इस पर किसी पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۝٨٦

87. नहीं है यह (क़ुर्आन) परन्तु एक शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝٨٧

88. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा उस के समाचार (तथ्य) का एक समय के पश्चात्।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝٨٨

सूरह जुमर - 39

सूरह जुमर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 75 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 71 तथा 73 में (जुमर) शब्द आया है। जिस का अर्थ हैः समूह तथा गिरोह। और इसी से सूरह का नाम लिया गया है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन की मूल शिक्षा को प्रमाणों (दलीलों) के साथ प्रस्तुत किया गया है कि आज्ञा पालन (वंदना) मात्र अल्लाह ही के लिये है। फिर आगे आयत 20 तक दोनों गिरोहः जो धर्म का पालन करते और केवल अल्लाह की वंदना (इबादत) करते हैं तथा जो दूसरों की पूजा करते हैं उन के मध्य अन्तर बताया गया है। फिर आयत 35 तक कुर्आन को मानने वालों की विशेषतायें और उन का प्रतिफल बताया गया है और विरोधियों को बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 36 से 52 तक ऐसे समझाया गया है कि (तौहीद) उभर कर सामने आ जाये। और ईमान लाने की भावना पैदा हो जाये। फिर आयत 63 तक अल्लाह को मानने की प्रेरणा दी गई है।
- अन्तिम आयतों में यह बताया गया है कि एक अल्लाह की वंदना ही सच्च है। फिर प्रलय की कुछ दशाओं की झलक दिखा कर (नेकों) सदाचारियों और बुरों के अलग-अलग स्थानों की ओर जाने, और उन के अन्तिम परिणाम को बताया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

1. इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्वज्ञ की ओर से है।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ②

2. हम ने आप की ओर यह पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अतः इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध

करते हुये उस के लिये धर्म को।

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ⦿

3. सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिये (योग्य) है। तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिये करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह[1] से। वास्तव में अल्लाह ही निर्णय करेगा उन के बीच जिस में वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी कृतघ्न हो।

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⦿

4. यदि अल्लाह चाहता कि अपने लिये संतान बनाये तो चुन लेता उस में से जिसे पैदा करता है जिसे चाहता। वह पवित्र है! वही अल्लाह अकेला सब पर प्रभावशाली है।

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ⦿

5. उस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को सत्य के आधार पर। वह लपेट देता है रात्रि को दिन पर तथा दिन को रात्रि पर तथा वशवर्ती किया है सूर्य और चन्द्रमा को। प्रत्येक चल रहा है अपनी निर्धारित अवधि के लिये। सावधान! वही अत्यंत प्रभावशाली क्षमी है।

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا

6. उस ने तुम को पैदा किया एक प्राण

---

1 मक्का के काफ़िर यह मानते थे कि अल्लाह ही वास्तविक पूज्य है। परन्तु वह यह समझते थे कि उस का दरबार बहुत ऊँचा है इसलिये वह इन पूज्यों को माध्यम बनाते थे। ताकि इन के द्वारा उन की प्रार्थनायें अल्लाह तक पहुँच जायें। यही बात साधारणतः मुश्रिक कहते आये हैं। इन तीन आयतों में उन के इसी कुविचार का खण्डन किया गया है। फिर उन में कुछ ऐसे थे जो समझते थे कि अल्लाह के संतान है। कुछ, फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते, और कुछ, नबियों (ईसा) को अल्लाह का पुत्र कहते थे। यहाँ इसी का खण्डन किया गया है।

وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٦﴾

से फिर बनाया उसी से उस का जोड़ा। तथा अवतरित किये तुम्हारे लिये पशुओं में से आठ जोड़े। वह पैदा करता है तुम को तुम्हारी माताओं के गर्भाशयों में एक रूप में, एक रूप के पश्चात् तीन अँधेरों में, यही अल्लाह है तुम्हारा पालनहार, उसी का राज्य है। कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं उस के सिवा। तो तुम कहाँ फिराये जा रहे हो?

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۗ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾

7. यदि तुम कृतघ्न बनो तो अल्लाह निस्पृह है तुम से। और वह प्रसन्न नहीं होता अपने भक्तों की कृतघ्नता से और यदि कृतज्ञता करो तो वह प्रसन्न हो जायेगा तुम से। और नहीं बोझ उठायेगा कोई उठाने वाला दूसरों का बोझ। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारा फिरना है। तो वह तुम्हें सूचित कर देगा तुम्हारे कर्मों से। वास्तव में वह भली-भाँति जानने वाला है दिलों के भेदों को।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿٨﴾

8. तथा जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो पुकारता है अपने पालनहार को ध्यानमग्न हो कर उस की ओर। फिर जब हम उसे प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से तो भूल जाता है जिस के लिये वह पुकार रहा था इस से पूर्व। तथा बना लेता है अल्लाह का साझी ताकि कुपथ करे उस की डगर से। आप कह दें कि आनन्द ले लो अपने कुफ़्र का थोड़ा

सा। वास्तव में तू नारकियों में से है।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾

9. तो क्या जो आज्ञाकारी रहा हो रात्रि के क्षणों में सजदा करते हुये, तथा खड़ा रह कर, (और) डर रहा हो परलोक से, तथा आशा रखता हो अल्लाह की दया की, आप कहें कि क्या समान हो जायेंगे जो ज्ञान रखते हों तथा जो ज्ञान नहीं रखते? वास्तव में शिक्षा ग्रहण करते हैं मतिमान लोग ही।

قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

10. आप कह दें उन भक्तों से जो ईमान लाये तथा डरे अपने पालन हार से कि उन्हीं के लिये जिन्होंने सदाचार किये इस संसार में बड़ी भलाई है। तथा अल्लाह की धरती विस्तृत है। और धैर्यवान ही अपना पूरा प्रतिफल अगणित दिये जायेंगे।

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿١١﴾

11. आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि इबादत (वंदना) करूँ अल्लाह की शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को।

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٢﴾

12. तथा मुझे आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ।

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣﴾

13. आप कह दें: मैं डरता हूँ यदि मैं अवैज्ञा करूँ अपने पालनहार की, एक बड़े दिन की यातना से।

قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ﴿١٤﴾

14. आप कह दें: अल्लाह ही की इबादत (वंदना) मैं कर रहा हूँ शुद्ध कर के उस के लिये अपने धर्म को।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ

15. अतः तुम इबादत (वंदना) करो जिस की चाहो उस के सिवा। आप कह दें: वास्तव में क्षतिग्रस्त वही हैं जिन्होंने

क्षतिग्रस्त कर लिया स्वयं को तथा
अपने परिवार को प्रलय के दिन।
सावधान! यही खुली क्षति है।

أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١٥﴾

16. उन्हीं के लिये छत्र होंगे अग्नि के, उन के ऊपर से तथा उन के नीचे से छत्र होंगे। यही है डरा रहा है अल्लाह जिस से अपने भक्तों को। हे मेरे भक्तो! मुझी से डरो।

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ
ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ﴿١٦﴾

17. जो बचे रहे तागूत (असुर)[1] की पूजा से तथा ध्यान मग्न हो गये अल्लाह की ओर तो उन्हीं के लिये शुभसूचना है। अतः आप शुभ सूचना सुना दें मेरे भक्तों को।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا
وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾

18. जो ध्यान से सुनते हैं इस बात को फिर अनुसरण करते हैं इस सर्वोत्तम बात का तो वही हैं जिन्हें सुपथ दर्शन दिया है अल्लाह ने, तथा वही मतिमान हैं।

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾

19. तो क्या जिस पर यातना की बात सिद्ध हो गई, क्या आप निकाल सकेंगे उसे जो नरक में है?

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنتَ تُنقِذُ
مَن فِي النَّارِ ﴿١٩﴾

20. किन्तु जो अपने पालनहार से डरे उन्हीं के लिये उच्च भवन हैं। जिन के ऊपर निर्मित भवन हैं। प्रवाहित हैं जिन में नहरें, यह अल्लाह का वचन है। और अल्लाह वचन भंग नहीं करता।

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّن فَوْقِهَا غُرَفٌ
مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَعْدَ اللَّهِ لَا يُخْلِفُ
اللَّهُ الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾

21. क्या तुम ने नहीं देखा[2] कि अल्लाह ने

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ

---

1 अल्लाह के अतिरिक्त मिथ्या पूज्यों से।

2 इस आयत में अल्लाह के एक नियम की ओर संकेत है जो सब में समान रूप से प्रचलित है। अर्थात वर्षा से खेती का उगना और अनेक स्थितियों से गुज़र कर नाश हो जाना। इसे मतिमानों के लिये शिक्षा कहा गया है। क्योंकि मनुष्य की

فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾

उतारा आकाश से जल? फिर प्रवाहित कर दिये उस के स्रोत धरती में। फिर निकालता है उस से खेतियाँ विभिन्न रंगों की। फिर सूख जाती हैं, तो तुम देखते हो उन्हें पीली, फिर उसे चूर-चूर कर देता है। निश्चय इस में बड़ी शिक्षा है मतिमानों के लिये।

أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾

22. तो क्या खोल दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से। तो विनाश है जिन के दिल कड़े हो गये अल्लाह के स्मरण से वही खुले कुपथ में हैं।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

23. अल्लाह ही है जिस ने सर्वोत्तम हदीस (कुर्आन) को अवतरित किया है। ऐसी पुस्तक जिस की आयतें मिलती जुलती बार-बार दुहराई जाने वाली हैं। जिसे (सुन कर) खड़े हो जाते हैं उन के रूँगटे जो डरते हैं अपने पालनहार से। फिर कोमल हो जाते हैं उन के अंग तथा दिल अल्लाह के स्मरण कि ओर। यही है अल्लाह का मार्गदर्शन जिस के द्वारा वह संमार्ग पर लगा देता जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ दर्शक नहीं है।

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

24. तो क्या जो अपनी रक्षा करेगा अपने मुख[1] से बुरी यातना से प्रलय के

भी यही दशा होती है। वह शिशु जन्म लेता है फिर युवक और बूढ़ा हो जाता है। और अन्ततः संसार से चला जाता है।

1 इस लियेकि उस के हाथ पीछे बंधे होंगे। वह अच्छा है या जो स्वर्ग के सुख में

दिन? तथा कहा जायेगा अत्याचारियों सेः चखो जो तुम कर रहे थे।

وَقِيلَ لِلظّٰلِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾

25. झुठला दिया उन्होंने जो इन से पूर्व थे। तो आ गई यातना उन के पास जहाँ से उन्हें अनुमान (भी) न था।

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾

26. तो चखा दिया अल्लाह ने उन को अपमान संसारिक जीवन में। और आख़िरत (परलोक) की यातना निश्चय अत्यधिक बड़ी है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

فَأَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

27. और हम ने मनुष्य के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण दिये हैं ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

28. अर्बी भाषा में कुर्आन जिस में कोई टेढ़ापन नहीं है, ताकि वह अल्लाह से डरें।

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

29. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है एक व्यक्ति का जिस में बहुत से परस्पर विरोधी साझी हैं। तथा एक व्यक्ति पूरा एक व्यक्ति का (दास) है। तो क्या दशा में दोनों समान हो जायेंगे?[1] सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, बल्कि उन में से अधिक्तर नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

30. (हे नबी!) निश्चय आप को मरना है तथा उन्हें भी मरना है।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

होगा वह अच्छा है?

1 इस आयत में मिश्रणवादी और एकेश्वरवादी की दशा का वर्णन किया गया है कि मिश्रणवादी अनेक पूज्यों को प्रसन्न करने में व्याकुल रहता है। तथा एकेश्वरवादी शान्त हो कर केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और एक ही को प्रसन्न करता है।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

31. फिर तुम सभी[1] प्रलय के दिन अल्लाह के समक्ष झगड़ोगे।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَآءَهٗ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾

32. तो उस से बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बोले तथा सच्च को झुठलाये जब उस के पास आ गया? तो क्या नरक में नहीं है ऐसे काफ़िरों का स्थान?

وَالَّذِي جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

33. तथा जो सत्य लाये[2] और जिस ने उसे सच्च माना तो वही (यातना से) सुरक्षित रहने वाले हैं।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

34. उन्हीं के लिये है जो वह चाहेंगे उन के पालनहार के यहाँ। और यही सदाचारियों का प्रतिफल है।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

35. ताकि अल्लाह क्षमा कर दे जो कुकर्म उन्होंने किये हैं। तथा उन्हें प्रदान करे उन का प्रतिफल उन के उत्तम कर्मों के बदले जो वे कर रहे थे।

أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهٖ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

36. क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराते हैं आप को उन से जो उस के सिवा हैं। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

37. और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला। क्या नहीं है अल्लाह प्रभुत्वशाली

---

1 और वहाँ तुम्हारे झगड़े का निर्णय और सब का अन्त सामने आ जायेगा। इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मौत को सिद्ध किया गया है। जिस प्रकार (सूरह आले इमरान, आयतः 144, में आप की मौत का प्रमाण बताया गया है।

2 इस से अभिप्राय अन्तिम नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

बदला लेने वाला?

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ
كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ
مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ
عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

38. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कहिये कि तुम बताओ जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो: यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या यह उस की हानि को दूर कर सकता है? अथवा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या वह रोक सकता है उस की दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है अल्लाह। और उसी पर भरोसा करते हैं भरोसा करने वाले।

قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

39. आप कह दें कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम काम करो अपने स्थान पर, मैं भी काम कर रहा हूँ। तो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ
مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

40. कि किस के पास आती है ऐसी यातना जो उसे अपमानित कर दे। तथा उतरती है किस के ऊपर स्थायी यातना?

إِنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ
اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ
عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾

41. वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिये सत्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिये है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर। तथा आप उन पर संरक्षक नहीं हैं।

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ

42. अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उन के मरण के समय, तथा जिस के

تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

मरण का समय नहीं आया उस की निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया हो मरण का। तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन के लिये जो मनन-चिन्तन[1] करते हों।

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

43. क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफ़ारशी)? आप कह दें: क्या (यह सिफ़ारिश करेंगे) यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समझ रखते हों?

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

44. आप कह दें कि अनुशंसा (सिफ़ारिश) तो सब अल्लाह के अधिकार में है। उसी के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। फिर उसी की ओर तुम फिराये जाओगे।

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾

45. तथा जब वर्णन किया जाता है अकेले अल्लाह का तो संकीर्ण होने लगते हैं उन के दिल जो ईमान नहीं रखते आख़िरत[2] पर। तथा जब वर्णन किया जाता है उन का जो उस के सिवा हैं तो वह सहसा प्रसन्न हो जाते हैं।

---

1 इस आयत में बताया जा रहा है कि मरण तथा जीवन अल्लाह के नियंत्रण में है। निद्रा में प्राणों को खींचने का अर्थ है उन की संवेदन शक्ति को समाप्त कर देना। अतः कोई इस निद्रा की दशा पर विचार करे तो यह समझ सकता है कि अल्लाह मुर्दों को भी जीवित कर सकता है।

2 इस में मुश्रिकों की दशा का वर्णन किया जा रहा है कि वह अल्लाह की महिमा और प्रेम को स्वीकार तो करते हैं फिर भी जब अकेले अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया जाता है तो प्रसन्न नहीं होते जब तक दूसरे पीरों-फ़क़ीरों तथा देवताओं के चमत्कार की चर्चा न की जाये।

46. (हे नबी!) आप कहें: हे अल्लाह आकाशों तथा धरती के पैदा करने वाले, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के ज्ञानी! तू ही निर्णय करेगा अपने भक्तों के बीच, जिस बात में वह झगड़ रहे थे।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

47. और यदि उन का जिन्होंने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में है सब हो जाये तथा उस के समान उस के साथ और आ जाये तो वह उसे दण्ड में दे देंगे[1] घोर यातना के बदले प्रलय के दिन। तथा खुल जायेगी उन के लिये अल्लाह की ओर से वह बात जिसे वह समझ नहीं रहे थे।

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

48. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के करतूतों की बुराईयाँ। और उन्हें घेर लेगा जिस का वह उपहास कर रहे थे।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾

49. और जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो हमें पुकारता है। फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से, तो कहता है: यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण। बल्कि यह एक परीक्षा है। किन्तु लोगों में से अधिक्तर (इसे) नहीं जानते।

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ۗ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾

50. यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पूर्व थे। तो नहीं काम आया उन के जो कुछ वह कमा रहे थे।

قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾

51. फिर आ पड़े उन पर उन के सब कुकर्म, और जो अत्याचार किये

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۗ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

---

1 परन्तु वह सब स्वीकार्य नहीं होगा। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 48, तथा सूरह आले इमरान, आयतः 91)

مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾

हैं इन में से आ पड़ेंगे उन पर (भी) उन के कुकर्म। तथा वह (हमें) विवश करने वाले नहीं हैं।

اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. क्या उन्हें ज्ञान नहीं कि अल्लाह फैलाता है जीविका जिस के लिये चाहता है, तथा नाप कर देता है (जिस के लिये चाहता है)? निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾

53. आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश[1] न हो अल्लाह की दया से। वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को। निश्चय वह अति क्षमी दयावान् है।

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की ओर, और आज्ञाकारी हो जाओ उस के इस से पूर्व कि तुम पर यातना आ जाये, फिर तुम्हारी सहायता न की जाये।

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. तथा पालन करो उस सर्वोत्तम (कुर्आन) का जो अवतरित किया गया है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से इस से पूर्व कि आ पड़े तुम पर यातना और तुम्हें ज्ञान न हो।

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ

56. (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ मुश्रिक आये जिन्होंने बहुत जानें मारीं और बहुत व्यभिचार किये थे। और कहाः वास्तव में आप जो कुछ कह रहे हैं वह बहुत अच्छा है। तो आप बतायें कि हम ने जो कुकर्म किये हैं उन के लिये कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है? उसी पर फ़ुर्क़ान की आयत 68 और यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4810)

हाय संताप! इस बात पर कि मैं ने आलस्य किया अल्लाह के पक्ष में, तथा मैं उपहास करने वालों में रह गया।

جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝٥٦

57. अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे सुपथ दिखाता तो मैं डरने वालों में से हो जाता।

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٥٧

58. अथवा कहे जब देख ले यातना को, कि यदि मुझे (संसार में) फिर कर जाने का अवसर हो जाये तो मैं अवश्य सदाचारियों में से हो जाऊँगा।

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨

59. हाँ, आईं तुम्हारे पास मेरी निशानियाँ तो तुम ने उन्हें झुठला दिया और अभिमान किया तथा तुम थे ही काफ़िरों में से।

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٩

60. और प्रलय के दिन आप उन्हें देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोले कि उन के मुख काले होंगे। तो क्या नरक में नहीं है अभिमानियों का स्थान?

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٦٠

61. तथा बचा लेगा अल्लाह जो आज्ञाकारी रहे उन को उन की सफलता के साथ। नहीं लगेगा उन को कोई दुःख और न वह उदासीन होंगे।

وَيُنَجِّى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦١

62. अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝٦٢

63. उसी के अधिकार में हैं आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ[1] तथा जिन्होंने

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

1 अर्थात सब का विधाता तथा स्वामी वही है। वही सब की व्यवस्था करता है। और सब उसी के आधीन तथा अधिकार में है।

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

नकार दिया अल्लाह की आयतों को वही क्षति में हैं।

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝

64. आप कह दें: तो क्या अल्लाह से अन्य की तुम मुझे इबादत (वंदना) करने का आदेश देते हो, हे अज्ञानो?

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

65. तथा वह्यी की गई है आप की ओर तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म। तथा आप हो जायेंगे[1] क्षति ग्रस्तों में से।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝

66. बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

67. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया जैसे उस का सम्मान करना चाहिये था। और धरती पूरी उस की एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन। तथा आकाश लपेटे हुये होंगे उस के हाथ[2]

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि यदि मान लिया जाये कि आप के जीवन का अन्त शिर्क पर हुआ, और क्षमा याचना नहीं की तो आप के भी कर्म नष्ट हो जायेंगे। हालाँकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सभी नबी शिर्क से पाक थे। इसलिये कि उन का संदेश ही एकेश्वरवाद और शिर्क का खंडन है। फिर भी इस में संबोधित नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया। और यह साधारण नियम बताया गया कि शिर्क के साथ अल्लाह के हाँ कोई कर्म स्वीकार्य नहीं। तथा ऐसे सभी कर्म निष्फल होंगे जो एकेश्वरवाद की आस्था पर आधारित न हों। चाहे वह नबी हो या उस का अनुयायी हो।

2 हदीस में आता है कि एक यहूदी विद्वान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हम अल्लाह के विषय में (अपनी धर्म पुस्तकों में) यह पाते है कि प्रलय के दिन आकाशों को एक उँगली, तथा भूमि को एक उँगली पर और पेड़ों को एक उँगली, जल तथा तरी को एक उँगली पर और समस्त उत्पत्ति को एक उँगली पर रख लेगा, तथा कहेगा: ((मैं ही राजा हूँ।)) यह सुन

में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

68. तथा सूर (नरसिंघा) फूँका[1] जायेगा तो निश्चेत हो कर गिर जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहे, फिर उसे पुनः फूँका जायेगा तो सहसा सब खड़े देख रहे होंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرٰى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿٦٨﴾

69. तथा जगमगाने लगेगी धरती अपने पालनहार की ज्योती से। और परस्तुत किये जायेंगे कर्म लेख तथा लाया जायेगा नबियों और साक्षियों को। तथा निर्णय किया जायेगा उन के बीच सत्य (न्याय) के साथ, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِيءَ بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

70. तथा पूरा-पूरा दिया जायेगा प्रत्येक जीव को उस का कर्मफल तथा वह भली-भाँति जानने वाला है उस को जो वह कर रहे हैं।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾

71. तथा हाँके जायेंगे जो काफ़िर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वह उस के पास

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتّٰى إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

कर आप हँस पड़े। और इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुख़ारी, हदीसः 4812, 6519, 7382, 7413)

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः दूसरी फूँक के पश्चात् सब से पहले मैं सिर उठाऊँगा। तो मूसा अर्श पकड़े हुये खड़े होंगे। मुझे ज्ञान नहीं कि वह ऐसे ही रह गये थे, या फूँकने के पश्चात् मुझ से पहले उठ चुके होंगे। (सहीह बुख़ारीः 4813)
दूसरी हदीस में है कि दोनों फूँकों के बीच चालीस की अवधि होगी। और मनुष्य की दुमची की हड्डी के सिवा सब सड़ जायेगा। और उसी से उस को फिर बनाया जायेगा। (सहीह बुख़ारीः 4814)

أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

आयेंगे तो खोल दिये जायेंगे उस के द्वार। तथा उन से कहेंगे उस के रक्षक (फ़रिश्ते): क्या नहीं आये तुम्हारे पास रसूल तुम में से जो तुम्हें सुनाते तुम्हारे पालनहार की आयतें तथा सचेत करते तुम्हें इस दिन का सामना करने से? वह कहेंगे: क्यों नहीं। परन्तु सिद्ध हो गया यातना का शब्द काफ़िरों पर।

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾

72. कहा जायेगा कि प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो बुरा है घमंडियों का निवास स्थान।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾

73. तथा भेज दिये जायेंगे जो लोग डरते रहे अपने पालनहार से स्वर्ग की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे उस के पास तथा खोल दिये जायेंगे उस के द्वार और कहेंगे उन से उस के रक्षकः सलाम है तुम पर, तुम प्रसन्न रहो। तुम प्रवेश कर जाओ उस में सदावासी हो कर।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٧٤﴾

74. तथा वह कहेंगे: सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जिस ने सच्च कर दिया हम से अपना वचन। तथा हमें उत्तराधिकारी बना दिया इस धरती का हम रहें स्वर्ग में जहाँ चाहें। क्या ही अच्छा है कार्य कर्तावों[1] का प्रतिफल।

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ

75. तथा आप देखेंगे फ़रिश्तों को घेरे हुये अर्श (सिंहासन) के चतुर्दिक वह पवित्रतागान कर रहे होंगे अपने

1 अर्थात एकेश्वरवादी सदाचारियों का।

وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा निर्णय कर दिया जायेगा लोगों के बीच सत्य के साथ। तथा कह दिया जायेगा कि सब प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये हैं।[1]

1 अर्थात जब ईमान वाले स्वर्ग में और मुश्रिक नरक में चले जायेंगे तो उस समय का चित्र यह होगा कि अल्लाह के अर्श को फ़रिश्ते हर ओर से घेरे हुये उस की पवित्रता तथा प्रशंसा का गान कर रहे होंगे।

सूरह मुमिन - 40

सूरह मुमिन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 85 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं॰ 28 में एक मूमिन व्यक्ति की कथा का वर्णन किया गया है जिस ने फ़िरऔन के दरबार में मूसा (अलैहिस्सलाम) का खुल कर साथ दिया था। इसलिये इस का नाम सूरह मुमिन रखा गया है।
- इस सूरह का दूसरा नाम (सूरह ग़ाफ़िर) भी है। क्योंकि इस की आयत नं॰ 3 में (ग़ाफ़िरुज्जम्ब) अर्थातः (पाप क्षमा करने वाला) का शब्द आया है।
- इस की आरंभिक आयतों में उस अल्लाह के गुण बताये गये हैं जिस ने क़ुर्आन उतारा है। फिर आयत 4 से 6 तक उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है जो अल्लाह की आयतों में विवाद खड़ा करते हैं।
- आयत 7 से 9 तक ईमान वालों को यह शुभसूचना सुनाई गई है कि फ़रिश्ते उन की क्षमा के लिये दुआ करते हैं। इस के पश्चात् काफ़िरों और मुश्रिकों को सावधान किया गया है। और उन्हें शिक्षा दी गई है।
- आयत 23 से 46 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के विरुद्ध फ़िरऔन के विवाद और एक मूमिन के मूसा (अलैहिस्सलाम) का भरपूर साथ देने तथा फ़िरऔन के परिणाम को विस्तार के साथ बताया गया है। फिर उन को सावधान किया गया जो अंधे हो कर बड़े बनने वालों के पीछे चलते हैं और ईमान वालों को साहस दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के धर्म में विवाद करने वालों को सावधान करते हुये कुफ़्र तथा शिर्क के बुरे परिणाम से सचेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हा, मीम।

حٰمٓ ۚ ①

2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह की ओर से है जो सब चीज़ों और गुणों

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ ②

को जानने वाला है।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ٣

3. पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना का स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला, समाई वाला जिस के सिवा कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं। उसी की ओर (सब को) जाना है।

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ٤

4. नहीं झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में उन के सिवा जो काफ़िर हो गये। अतः धोखे में न डाल दे आप को उन की यातायात देशों में।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ ۖ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ٥

5. झुठलाया इन से पूर्व नूह की जाति ने तथा बहुत से समुदायों ने उन के पश्चात्, तथा विचार किया प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बंदी बना लेने का। तथा विवाद किया असत्य के सहारे, ताकि असत्य बना दें सत्य को। तो हम ने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही हमारी यातना?

وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ٦

6. और इसी प्रकार सिद्ध हो गई आप के पालनहार की बात उन पर जो काफ़िर हो गये कि वही नारकी हैं।

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ٧

7. वह (फ़रिश्ते) जो अपने ऊपर उठाये हुये हैं अर्श (सिंहासन) को तथा जो उस के आस पास हैं वह पवित्रतागान करते रहते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा उस पर ईमान रखते हैं और क्षमा याचना करते रहते हैं उन के लिये जो ईमान लाये हैं।[1] हे

---

1 यहाँ फ़रिश्तों के दो गिरोह का वर्णन किया गया है। एक वह जो अर्श को उठाये हुया है। और दूसरा वह जो अर्श के चारों ओर घूम कर अल्लाह की प्रशंसा का गान और ईमान वालों के लिये क्षमायाचना कर रहा है।

हमारे पालनहार! तू ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को(अपनी) दया तथा ज्ञान से। अतः क्षमा कर दे उन को जो क्षमा माँगें, तथा चलें तेरे मार्ग पर तथा बचा ले उन्हें नरक की यातना से।

8. हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश कर दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का तू ने उन को वचन दिया है। तथा जो सदाचारी हैं उन के पूर्वजों तथा पत्नियों और उन की संतानों में से। निश्चय तू सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।

9. तथा उन्हें सुरक्षित रख दुष्कर्मों से, तथा तू ने जिसे बचा दिया दुष्कर्मों से उस दिन, तो दया कर दी उस पर। और यही बड़ी सफलता है।

10. जिन लोगों ने कुफ़्र किया है उन्हें (प्रलय के दिन) पुकारा जायेगा कि अल्लाह का क्रोध तुम पर उस से अधिक था जितना तुम्हें (आज) अपने ऊपर क्रोध आ रहा है जब तुम (संसार में) ईमान की ओर बुलाये[1] जा रहे थे।

11. वे कहेंगेः हे हमारे पालनहार! तू ने हमें दो बार मारा।[2] तथा जीवित

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ٱلَّتِي وَعَدتَّهُمْ وَمَن صَلَحَ مِنْ ءَابَآئِهِمْ وَأَزْوَٰجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٨﴾

وَقِهِمُ ٱلسَّيِّـَٔاتِ ۚ وَمَن تَقِ ٱلسَّيِّـَٔاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُۥ ۚ وَذٰلِكَ هُوَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٩﴾

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ ٱللَّهِ أَكْبَرُ مِن مَّقْتِكُمْ أَنفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى ٱلْإِيمٰنِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾

قَالُوا۟ رَبَّنَآ أَمَتَّنَا ٱثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا ٱثْنَتَيْنِ

---

1 आयत का अर्थ यह है कि जब काफ़िर लोग प्रलय के दिन यातना देखेंगे तो अपने ऊपर क्रोधित होंगे। उस समय उन से पुकार कर यह कहा जायेगा कि जब संसार में तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था फिर भी तुम कुफ़्र करते थे तो अल्लाह को इस से अधिक क्रोध होता था जितना आज तुम्हें अपने ऊपर हो रहा है।

2 देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 28।

فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ⑪

(भी) दो बार किया। अतः हम ने मान लिया अपने पापों को। तो क्या (यातना से) निकलने की कोई राह (उपाय) है?

ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۖ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ⑫

12. (यह यातना) इस कारण है कि जब तुम्हें (संसार में) बुलाया गया अकेले अल्लाह की ओर तो तुम ने कुफ़्र कर दिया। और यदि शिर्क किया जाता उस के साथ तो तुम मान लेते थे। तो आदेश देने का अधिकार अल्लाह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान् है।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ⑬

13. वही दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ तथा उतारता है तुम्हारे लिये आकाश से जीविका। और शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु वही जो (उस की ओर) ध्यान करता है।

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ⑭

14. तो तुम पुकारो अल्लाह को शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ⑮

15. वह उच्च श्रेणियों वाला अर्श का स्वामी है। वह उतारता है अपने अदेश से रूह[1] (वह्यी) को जिस पर चाहता है अपने भक्तों में से। ताकि वह सचेत करे मिलने के दिन से।

يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ⑯

16. जिस दिन सब लोग (जीवित हो कर) निकल पड़ेंगे। नहीं छुपी होगी अल्लाह पर उन की कोई चीज़। किस का राज्य है आज?[2]अकेले

---

1 यहाँ वह्यी को रूह कहा गया है क्यों कि जिस प्रकार रूह (आत्मा) मनुष्य के जीवन का कारण होती है वैसे ही प्रकाशना भी अन्तरात्मा को जीवित करती है।

2 अर्थात प्रलय के दिन। (सहीह बुख़ारीः 4812)

प्रभुत्वशाली अल्लाह का।

17. आज प्रतिकार दिया जायेगा प्रत्येक प्राणी को उस के करतूत का। कोई अत्याचार नहीं है आज। वास्तव में अल्लाह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है।

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

18. तथा आप सावधान कर दें उन को आगामी समीप दिन से जब दिल मुँह को आ रहे होंगे। लोग शोक से भरे होंगे। नहीं होगा अत्याचारियों का कोई मित्र न कोई सिफ़ारशी जिस की बात मानी जाये।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ ﴿١٨﴾

19. वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने छुपाते हैं।

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

20. अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ। तथा जिन को वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते। निश्चय अल्लाह ही भली-भाँति सुनने-देखने वाला है।

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾

21. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पूर्व थे? वह इन से अधिक थे बल में तथा अधिक चिन्ह छोड़ गये धरती में। तो पकड़ लिया अल्लाह ने उन को उन के पापों के कारण, और नहीं था उन के लिये अल्लाह से कोई बचाने वाला।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾

22. यह इस कारण हुआ कि उन के पास लाते थे हमारे रसूल खुली निशानियाँ, तो उन्होंने कुफ़्र किया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें अल्लाह ने। वस्तुतः वह अति

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

शक्तिशाली घोर यातना देने वाला है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾

23. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों और हर प्रकार के प्रामाण के साथ।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾

24. फ़िरऔन और (उस के मंत्री) हामान तथा क़ारून के पास। तो उन्हों ने कहाः यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾

25. तो जब वह उन के पास सत्य लाया हमारी ओर से तो सब ने कहाः बध कर दो उन के पुत्रों को जो ईमान लाये हैं उस के साथ, तथा जीवित रहने दो उन की स्त्रियों को। और काफ़िरों का षड्यंत्र निष्फल (व्यर्थ) ही हुआ।[1]

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

26. और कहा फ़िरऔन ने (अपने प्रमुखों से): मुझे छोड़ो, मैं बध कर दूँ मूसा को। और उसे चाहिये कि पुकारे अपने पालनहार को। वास्तव में मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारे धर्म को[2] अथवा पैदा कर देगा इस धरती (मिस्र) में उपद्रव।

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

27. तथा मूसा ने कहाः मैं ने शरण ली है अपने पालनहार तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर।

1 अर्थात फ़िरऔन और उस की जाति का। जब मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन की जाति बनी इस्राईल को कोई हानि नहीं हुई। इस से उन की शक्ति बढ़ती ही गई यहाँ तक कि वह पवित्र स्थान के स्वामी बन गये।

2 अर्थात शिर्क तथा देवी-देवता की पूजा से रोक कर एक अल्लाह की इबादत में लगा देगा। जो उपद्रव तथा अशान्ति का कारण बन जायेगा और देश हमारे हाथ से निकल जायेगा।

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ
وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَاِنْ يَّكُ
كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ
بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

28. तथा कहा एक ईमान वाले व्यक्ति ने फ़िरऔन के घराने के, जो छुपा रहा था अपना ईमानः क्या तुम बध कर दोगे एक व्यक्ति को कि वह कह रहा हैः मेरा पालनहार अल्लाह है? जब कि वह तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियाँ तुम्हारे पालनहार की ओर से? और यदि वह झूठा हो तो उसी के ऊपर है उन का झूठ। और यदि सच्चा हो तो आ पड़ेगा वह कुछ जिसकी तुम्हें धमकी दे रहा है। वास्तव में अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता उसे जो उल्लंघनकारी बहुत झूठा हो।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِى الْاَرْضِ
فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَأْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۗ قَالَ
فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ
اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

29. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारा राज्य है आज, तुम प्रभावशाली हो धरती में, तो कौन हमारी रक्षा करेगा अल्लाह की यातना से यदि वह हम पर आ जाये? फ़िरऔन ने कहाः मैं तुम सब को वही समझा रहा हूँ जिसे मैं उचित समझता हूँ और तुम्हें सीधी ही राह दिखा रहा हूँ।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

30. तथा उस ने कहा जो ईमान लायाः हे मेरी जाति! मैं तुम पर डरता हूँ (अगले) समुदायों के दिन जैसे (दिन[1]) से।

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

31. नूह की जाति की जैसी दशा से, तथा आद और समूद की एवं जो उन के पश्चात् हुये। तथा अल्लाह नहीं चाहता कोई अत्याचार भक्तों के लिये।

---

1 अर्थात उन की यातना के दिन जैसे दिन से।

32. तथा हे मेरी जाति! मैं डर रहा हूँ तुम पर एक - दूसरे को पुकारने के दिन[1] से।

وَيٰقَوْمِ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

33. जिस दिन तुम पीछे फिर कर भागोगे, नहीं होगा तुम्हें अल्लाह से कोई बचाने वाला। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ प्रदर्शक नहीं।

يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

34. तथा आये यूसुफ़ तुम्हारे पास इस से पूर्व खुले प्रमाणों के साथ, तो तुम बराबर संदेह में रहे उस से जो तुम्हारे पास लाये। यहाँ तक कि जब वह मर गये तो तुम ने कहा कि कदापि नहीं भेजेगा अल्लाह उन के पश्चात् कोई रसूल।[2] इसी प्रकार अल्लाह कुपथ कर देता है। उसे जो उल्लंघनकारी डाँवाडोल हो।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۖ حَتّٰىٓ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُولًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ﴿٣٤﴾

35. जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उन के पास आया हो। तो यह बड़े क्रोध की बात है अल्लाह के समीप तथा उन के समीप जो ईमान लाये हैं। इसी प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक अहंकारी अत्याचारी के दिल पर।

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِيٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ اٰمَنُوا ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾

36. तथा कहा फ़िरऔन ने कि हे हामान! मेरे लिये बना दो एक उच्च भवन, संभवतः मैं उन मार्गों तक पहुँच सकूँ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِي صَرْحًا لَّعَلِّيٓ أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ﴿٣٦﴾

---

1 अर्थात प्रलय के दिन से जब भय के कारण एक-दूसरे को पुकारेंगे।

2 अर्थात तुम्हारा आचरण ही प्रत्येक नबी का विरोध रहा है। इसीलिये तुम समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा।

أَسْبَابَ السَّمَاوَاتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ﴿٣٧﴾

37. आकाश के मार्गों तक ताकि मैं देखूँ मूसा के पूज्य (उपास्य) को। और निश्चय मैं उसे झूठा समझ रहा हूँ। और इसी प्रकार शोभनीय बना दिया गया फ़िरऔन के लिये उस का दुष्कर्म तथा रोक दिया गया संमार्ग से। और फ़िरऔन का षड्यंत्र विनाश ही में रहा।

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

38. तथा उस ने कहा जो ईमान लायाः हे मेरी जाति! मेरी बात मानो, मैं तुम्हें सीधी राह बता रहा हूँ।

يَا قَوْمِ إِنَّمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

39. हे मेरी जाति! यह संसारिक जीवन कुछ साम्यिक लाभ है। तथा वास्तव में प्रलोक ही स्थायी निवास है।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

40. जिस ने दुष्कर्म किया तो उस को उसी के समान प्रतिकार दिया जायेगा। तथा जो सुकर्म करेगा नर अथवा नारी में से और वह ईमान वाला (एकेश्वरवादी) हो तो वही प्रवेश करेंगे स्वर्ग में। जीविका दिये जायेंगे उस में अगणित।

وَيَا قَوْمِ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجَاةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

41. तथा हे मेरी जाति! क्या बात है कि मैं बुला रहा हूँ तुम्हें मुक्ति की ओर तथा तुम बुला रहे हो मुझे नरक की ओर।

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

42. तुम मुझे बुला रहे हो ताकि मैं कुफ़्र करूँ अल्लाह के साथ और साझी बनाऊँ उस का उसे जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। तथा मैं बुला रहा हूँ तुम्हें प्रभावशाली अति क्षमी की ओर।

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي

43. निश्चित है कि तुम जिस की ओर

मुझे बुला[1] रहे हो वह पुकारने योग्य नहीं है न लोक में न परलोक में। तथा हमें जाना है अल्लाह ही की ओर, तथा वास्तव में अतिक्रमी ही नारकी हैं।

الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

44. तो तुम याद करोगे जो मैं कह रहा हूँ, तथा मैं समर्पित करता हूँ अपना मामला अल्लाह को। वास्तव में अल्लाह देख रहा है भक्तों को।

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

45. तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षड्यंत्र की बुराईयों से। और घेर लिया फ़िरऔनियों को बुरी यातना ने।

فَوَقَاهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

46. वे[2] प्रस्तुत किये जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या। तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यह आदेश होगा) कि डाल दो फ़िरऔनियों को कड़ी यातना में।

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

47. तथा जब वह झगड़ेंगे अग्नि में, तो कहेंगे निर्बल उन से जो बड़े बन कर रहेः हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम दूर करोगे हम से अग्नि का कुछ भाग?

وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

48. वे कहेंगे जो बड़े बन कर रहेः हम सब इसी में हैं। अल्लाह निर्णय कर

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ

1 क्योंकि लोक तथा परलोक में कोई सहायता नहीं कर सकते। (देखियेः सूरह फ़ातिर, आयतः 140, तथा सूरह अहक़ाफ़, आयतः 5)

2 हदीस में है कि जब तुम में से कोई मरता है तो (क़ब्र में) उस पर प्रातः संध्या उस का स्थान प्रस्तुत किया जाता है। (अर्थात स्वर्गी है तो स्वर्ग और नारकी है तो नरक)। और कहा जाता है कि यही प्रलय के दिन तेरा स्थान होगा। (सहीह बुख़ारीः 1379, मुस्लिमः 2866)

चुका है भक्तों (बंदों) के बीच।

قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

49. तथा कहेंगे जो अग्नि में हैं नरक के रक्षकों सेः अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हम से हल्की कर दे किसी दिन कुछ यातना।

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا
رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

50. वह कहेंगेः क्या नहीं आये तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण ले कर? वे कहेंगे क्यों नहीं। वह कहेंगे तो तुम ही प्रार्थना करो। और काफ़िरों की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ
قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ وَمَا دُعَاءُ
الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٥٠﴾

51. निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लायें, संसारिक जीवन में, तथा जिस दिन[1] साक्षी खड़े होंगे।

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

52. जिस दिन नहीं लाभ पहुँचायेगी अत्याचारियों को उन की क्षमा याचना। तथा उन्हीं के लिये धिक्कार और उन्हीं के लिये बुरा घर है।

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ ۖ
وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

53. तथा हम ने प्रदान किया मूसा को मार्ग दर्शन और हम ने उत्तराधिकारी बनाया ईस्राईल की संतान को पुस्तक (तौरात) का।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

54. जो मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी समझ वालों के लिये।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

55. तो (हे नबी!) आप धैर्य रखें। वास्तव में अल्लाह का वचन[2] सत्य है। तथा

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ

---

1 अर्थात प्रलय के दिन, जब अम्बिया और फ़रिश्ते गवाही देंगे।

2 नबियों की सहायता करने का।

لِذَنۡۢبِكَ وَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ بِٱلۡعَشِيِّ وَٱلۡإِبۡكَٰرِ ﴿٥٥﴾

क्षमा माँगें अपने पाप[1] की। तथा पवित्रता का वर्णन करते रहें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ संध्या और प्रातः।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِيٓ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ بِغَيۡرِ سُلۡطَٰنٍ أَتَىٰهُمۡ إِن فِي صُدُورِهِمۡ إِلَّا كِبۡرٞ مَّا هُم بِبَٰلِغِيهِۚ فَٱسۡتَعِذۡ بِٱللَّهِۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

56. वास्तव में जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के जो आया[2] हो उन के पास, तो उन के दिलों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वह पहुँचने वाले नहीं हैं। अतः आप अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

لَخَلۡقُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ أَكۡبَرُ مِنۡ خَلۡقِ ٱلنَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعۡلَمُونَ ﴿٥٧﴾

57. निश्चय आकाशों तथा धरती को पैदा करना अधिक बड़ा है मनुष्य को पैदा करने से। परन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।[3]

وَمَا يَسۡتَوِي ٱلۡأَعۡمَىٰ وَٱلۡبَصِيرُ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَلَا ٱلۡمُسِيٓءُۚ قَلِيلٗا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

58. तथा समान नहीं होता अंधा तथा आँख वाला। और न जो ईमान लाये और सत्कर्म किये हैं और दुष्कर्मी। तुम (बहुत) कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

إِنَّ ٱلسَّاعَةَ لَأٓتِيَةٞ لَّا رَيۡبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يُؤۡمِنُونَ ﴿٥٩﴾

59. निश्चय प्रलय आनी ही है। जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिक्तर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡۚ

60. तथा कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि

---

1 अर्थात भूल-चूक की। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः मैं दिन में 70 बार क्षमा माँगता हूँ। और 70 बार से अधिक तौबा करता हूँ। (सहीह बुख़ारीः 6307)
जब कि अल्लाह ने आप को निर्दोष (मासूम) बनाया है।

2 अर्थात बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो अल्लाह की ओर से आया हो। उन के सब प्रमाण वे हैं जो उन्होंने अपने पूर्वजों से सीखे हैं। जिन की कोई वास्तविक्ता नहीं है।

3 और मनुष्य के पुनः जीवित किये जाने का इन्कार करते हैं।

मुझी से प्रार्थना[1] करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादत (वंदना-प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर।

إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾

61. अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई ताकि तुम विश्राम करो उस में, तथा दिन को प्रकाशमान बनाया।[2] वस्तुतः अल्लाह बड़ा उपकारी है लोगों के लिये। किन्तु अधिक्तर लोग कृतज्ञ नहीं होते।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

62. यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, प्रत्येक वस्तु का रचयिता, उत्पत्तिकार। नहीं है कोई (सच्चा) वंदनीय उस के सिवा, फिर तुम कहाँ बहके जाते हो?

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾

63. इसी प्रकार बहका दिये जाते हैं वह जो अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾

64. अल्लाह ही है जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को निवास स्थान तथा आकाश को छत, और तुम्हारा रूप बनाया तो सुन्दर रूप बनाया। तथा तुम्हें जीविका प्रदान की स्वच्छ चीज़ों से। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, तो शुभ है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾

65. वह जीवित है, कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं है उस के सिवा। अतः विशेष रूप

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ

1 हदीस में है कि प्रार्थना ही वंदना है। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यही आयत पढ़ी। (तिर्मिज़ीः 2969) इस हदीस की सनद हसन है।

2 ताकि तुम जीविका प्राप्त करने के लिये दौड़ धूप करो।

لَهُ الدِّيْنَ ۚ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾

से उस की इबादत करते हुये उसी को पुकारो। सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिये हैं।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ ۫ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. आप कह दें: निश्चय मुझे रोक दिया गया है कि इबादत करूँ उन की जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब आ गये मेरे पास खुले प्रमाण। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के पालनहार का आज्ञाकारी रहूँ।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर वीर्य से, फिर बंधे रक्त से, फिर तुम्हें निकालता है (गर्भाशयों से) शिशु बना कर। फिर बड़ा करता है ताकि तुम अपनी पूरी शक्ति को पहुँचो। फिर बूढ़े हो जाओ तथा तुम में कुछ इस से पहले ही मर जाते हैं और यह इसलिये होता है ताकि तुम अपनी निश्चित आयु को पहुँच जाओ, तथा ताकि तुम समझो।[1]

هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾

68. वही है जो तुम्हें जीवन देता तथा मारता है फिर जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो कहता है: ((हो जा)) तो वह हो जाता है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. क्या आप ने नहीं देखा कि जो झगड़ते[2] हैं अल्लाह की आयतों में, वह कहाँ बहकाये जा रहे हैं?

1 अर्थात तुम यह समझो कि जो अल्लाह तुम्हें अस्तित्व में लाता है तथा गर्भ से ले कर आयु पूरी होने तक तुम्हारा पालन-पोषण करता है तुम स्वयं अपने जीवन और मरण के विषय में कोई अधिकार नहीं रखते तो फिर तुम्हें वंदना भी उसी एक की करनी चाहिये। यही समझ-बूझ का निर्णय है।

2 अर्थात अल्लाह की आयतों का विरोध करते हैं।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. जिन्हों ने झुठला दिया पुस्तक को और उसे जिस के साथ हम ने भेजा अपने रसूलों को, तो शीघ्र ही वह जान लेंगे।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

71. जब तौक़ होंगे उन के गलों में तथा बेड़ियाँ, वह खींचे जायेंगे।

فِي الْحَمِيْمِ ڏ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. खौलते पानी में फिर अग्नि में झोंक दिये जायेंगे।

ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. फिर कहा जायेगा उन सेः कहाँ हैं वह जिन्हें तुम साझी बना रहे थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَـيْـــًٔا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

74. अल्लाह के सिवा? वह कहेंगे कि वह खो गये हम से, बल्कि हम नहीं पुकारते थे इस से पूर्व किसी चीज़ को, इसी प्रकार अल्लाह कुपथ कर देता है काफ़िरों को।

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. यह यातना इसलिये है कि तुम धरती में अवैध इतराते थे, तथा इस कारण कि तुम अकड़ते थे।

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾

76. प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो बुरा स्थान है अभिमानियों का।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

77. तो आप धैर्य रखें निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। फिर यदि आप को दिखा दें उस (यातना) में से जिस का उन्हें वचन दे रहे हैं, या आप का निधन कर दें तो वह हमारी ओर ही फेरे जायेंगे।[1]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ

78. तथा (हे नबी!) हम भेज चुके हैं बहुत से रसूलों को आप से पूर्व जिन

1 अर्थात प्रलय के दिन। फिर वह अपनी यातना देख लेंगे।

में से कुछ का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा कुछ का वर्णन आप से नहीं किया है तथा किसी रसूल के (वश[1]) में यह नहीं था कि वह कोई आयत (चमत्कार) ला दे परन्तु अल्लाह की अनुमति से। फिर जब आ जायेगा अल्लाह का आदेश तो निर्णय कर दिया जायेगा सत्य के साथ और क्षति में पड़ जायेंगे वहाँ झूठे लोग।

قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

79. अल्लाह ही है जिस ने बनाये तुम्हारे लिये चौपाये ताकि सवारी करो कुछ पर और कुछ को खाओ।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾

80. तथा तुम्हारे लिये उन में बहुत लाभ हैं और ताकि तुम उन पर पहुँचो उस आवश्यक्ता को जो तुम्हारे[2] दिलों में है तथा उन पर और नावों पर तुम्हें सवार किया जाता है।

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾

81. तथा वह दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ। तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे?

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ﴿٨١﴾

82. तो क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो उन से पूर्व थे? वह उन से अधिक कड़े थे शक्ति में और धरती में अधिक चिन्ह[3] छोड़ गये। तो नहीं आया उन के काम जो वे कर रहे थे।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

---

1 मक्का के काफ़िर लोग, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह माँग कर रहे थे कि आप अपने सत्य रसूल होने के प्रमाण में कोई चमत्कार दिखायें। जिस के अनेक उत्तर आगामी आयतों में दिये जा रहे हैं।

2 अर्थात दूर की यात्रा करो।

3 अर्थात निर्माण तथा भवन इत्यादि।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرِحُوا۟ بِمَا عِندَهُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٨٣﴾

83. जब आये उन के पास हमारे रसूल निशानियाँ लेकर तो वे इतराने लगे उस ज्ञान पर[1] जो उन के पास था। और घेर लिया उन को उस ने जिस का वे उपहास कर रहे थे।

فَلَمَّا رَأَوْا۟ بَأْسَنَا قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَحْدَهُۥ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِۦ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾

84. तो जब उन्होंने देखा हमारी यातना को तो कहने लगेः हम ईमान लाये अकेले अल्लाह पर तथा नकार दिया उसे जिसे उस का साझी बना रहे थे।

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَٰنُهُمْ لَمَّا رَأَوْا۟ بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِى قَدْ خَلَتْ فِى عِبَادِهِۦ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ ٱلْكَٰفِرُونَ ﴿٨٥﴾

85. तो ऐसा नहीं हुआ कि उन्हें लाभ पहुँचाता उन का ईमान जब उन्होंने देख लिया हमारी यातना को। यही अल्लाह का नियम है जो उसके भक्तों में चला आ रहा है। और क्षति में पड़ गये यहीं काफ़िर।

1 अर्थात सत्यविरोधी ज्ञान।

सूरह हा मीम सज्दा - 41

सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम (ह़ा, मीम सज्दा) है। क्योंकि इस का आरंभ अक्षरः (ह़ा, मीम) से हुआ है। और आयत 37 में केवल अल्लाह ही को सज्दा करने का आदेश दिया गया है। और इस सूरह की तीसरी आयत में (फ़ुस़्स़िलत) का शब्द आया है। इसलिये इस का दूसरा नाम (फ़ुस़्स़िलत) भी है।
- इस के आरंभ में क़ुर्आन के पहचानने पर बल देते हुये सोच-विचार की दावत, तथा वह़्यी और रिसालत को झुठलाने पर यातना की चेतावनी दी गई है। फिर अल्लाह के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 36 तक उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है जो अपने धर्म पर स्थित हैं। और उन्हें विरोधियों को क्षमा कर देने के निर्देश दिये गये हैं। फिर आयत 40 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने तथा मुर्दों को जीवित करने का सामर्थ्य रखने की निशानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।
- आयत 41 से 46 तक क़ुर्आन के साथ उस के विरोधियों के व्यवहार तथा उस के दुष्परिणाम को बताया गया है। फिर 51 तक शिर्क करने और प्रलय के इन्कार पर पकड़ की गयी है।
- अन्त में क़ुर्आन के विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये यह भविष्यवाणी की गई है कि जल्द ही क़ुर्आन के सच्च होने की निशानियाँ विश्व में सामने आ जायेंगी।

भाष्यकारों ने लिखा है कि जब मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी तो क़ुरैश के प्रमुखों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक व्यक्ति उत्बा पुत्र रबीआ को भेजा। उस ने आकर आप से कहा कि यदि आप इस नये आमंत्रण से धन चाहते हैं तो हम आप के लिये धन एकत्र कर देंगे। और यदि प्रमुख और बड़ा बनना चाहते हैं तो हम तुम्हें अपना प्रमुख बना लेंगे। और यदि किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हों तो हम उस की भी व्यवस्था कर देंगे। और यदि आप पर भूत-प्रेत का प्रभाव हो तो हम उस का उपचार करा देंगे। उत्बा की यह बातें सुन कर आप (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) ने यही सूरह उसे सुनायी जिस से प्रभावित हो कर वापिस आया। और कहा कि जो बात वह पेश करता है वह जादू-ज्योतिष और काव्य-कविता नहीं है। यह बातें सुन कर कुरैश के प्रमुखों ने कहा कि तू भी उस के जादू के प्रभाव में आ गया। उस ने कहाः मैं ने अपना विचार बता दिया अब तुम्हारे मन में जो भी आये वह करो। (सीरते इब्ने हिशाम- 1। 313, 314)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

حٰمٓ ①

1. हा, मीम।

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ②

2. अवतरित है अत्यंत कृपाशील दयावान् की ओर से।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ③

3. (यह ऐसी) पुस्तक है सविस्तार वर्णित की गई हैं जिस की आयतें। कुर्आन अर्बी (भाषा में) है उन के लिये जो ज्ञान रखते हों।[1]

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ④

4. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला है। फिर भी मुँह फेर लिया है उन में से अधिक्तर ने, और सुन नहीं रहे हैं।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ⑤

5. तथा उन्होंने कहाः[2] हमारे दिल आवरण (पर्दे) में हैं उस से आप हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा हमारे कानों में बोझ है तथा हमारे और आप के बीच एक आड़ है। तो आप अपना काम करें और हम

1 अर्बी भाषा तथा शैली का।

2 अर्थात मक्का के मुशरिकों ने कहा कि यह एकेश्वरवाद की बात हमें समझ में नहीं आती। इसलिये आप हमें हमारे धर्म पर ही रहने दें।

अपना काम कर रहे हैं।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ﴿٦﴾

6. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर वह़्यी की जा रही है कि तुम्हारा वंदनीय (पूज्य) केवल एक ही है। अतः सीधे हो जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और विनाश है मुश्रिकों के लिये।

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٧﴾

7. जो ज़कात नहीं देते तथा आख़िरत को (भी) नहीं मानते।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٨﴾

8. निःसंदेह जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है।

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾

9. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में, और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿١٠﴾

10. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में। और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार[1] दिनों में समान रूप[2] से प्रश्न करने वालों के लिये।

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾

11. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ

12. तथा बना दिया उन को सात आकाश

1 अर्थात धरती को पैदा करने और फैलाने के कुल चार दिन हुये।

2 अर्थात धरती के सभी जीवों के आहार के संसाधन की व्यवस्था कर दी। और यह बात बता दी ताकि कोई प्रश्न करे तो उसे इस का ज्ञान करा दिया जाये।

سَمَآءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا ٱلسَّمَآءَ ٱلدُّنْيَا بِمَصَٰبِيحَ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ ٱلْعَزِيزِ ٱلْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

दो दिन में। तथा वह्यी कर दिया प्रत्येक आकाश में उस का आदेश। तथा हम ने सुसज्जित किया समीप (संसार) के आकाश को दीपों (तारों) से तथा सुरक्षा के[1] लिये। यह अति प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।

فَإِنْ أَعْرَضُوا۟ فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَٰعِقَةً مِّثْلَ صَٰعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾

13. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

إِذْ جَآءَتْهُمُ ٱلرُّسُلُ مِنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ قَالُوا۟ لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَٰٓئِكَةً فَإِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ﴿١٤﴾

14. जब आये उन के पास उन के रसूल उन के आगे तथा उन के पीछे[2] से कि न इबादत (वंदना) करो अल्लाह के सिवा की। तो उन्होंने कहाः यदि हमारा पालनहार चाहता तो किसी फ़रिश्ते को उतार देता।[3] अतः तुम जिस बात के साथ भेजे गये हो हम उसे नहीं मानते।

فَأَمَّا عَادٌ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَقَالُوا۟ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِى خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾

15. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध। तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِىٓ أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ

16. अन्ततः हम ने भेज दी उन पर प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में।

---

1 अर्थात शैतानों से रक्षा के लिये। (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात, आयतः 7 से 10 तक)।

2 अर्थात प्रत्येक प्रकार से समझाते रहे।

3 वे मनुष्य को रसूल मानने के लिये तय्यार नहीं थे। (जिस प्रकार कुछ लोग जो रसूल को मानते हैं पर वे उन्हें मनुष्य मानने को तय्यार नहीं हैं)। (देखियेः सूरह अन्आम, आयतः 9-10, सूरह मुमिनून, आयतः 24)

ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आख़िरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।

لِنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٦﴾

17. और रही समूद तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा। अन्ततः पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَأَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾

18. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ اٰمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾

19. और जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिये जायेंगे।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَآءُ اللّٰهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

20. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखें और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।

حَتّٰىٓ إِذَا مَا جَآءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصٰرُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

21. और वे कहेंगे अपनी खालों सेः क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर देंगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम बार और उसी की ओर तुम सब फेरे जा रहे हो।

وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوٓا أَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيٓ أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا كُنتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَن يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِن ظَنَنتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

22. तथा तुम (पाप करते समय[1] छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिक्तर बातों को जो तुम करते हो।

وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنتُم بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾

23. इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम विनाशों में हो गये।

فَإِن يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۖ وَإِن يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُم مِّنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾

24. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगें तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُم مَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾

25. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुष्कर्मों को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अल्लाह (की यातना) का वचन उन समुदायों में जो गुज़र गये इन से पूर्व जिन्नों तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾

26. तथा काफ़िरों ने कहा[2] कि इस कुर्आन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समय। सम्भवतः तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।

---

1 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि ख़ाना कॉबा के पास एक घर में दो कुरैशी तथा एक सक़फ़ी अथवा दो सक़फ़ी और एक कुरैशी थे। तो एक ने दूसरे से कहा कि तुम समझते हो कि अल्लाह हमारी बातें सुन रहा है? किसी ने कहाः यदि कुछ सुनता है तो सब कुछ सुनता है। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4816, 4817, 7521)

2 मक्का के काफ़िरों ने जब देखा कि लोग कुर्आन सुन कर प्रभावित हो रहे हैं तो उन्होंने यह योजना बनायी।

27. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफ़िर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफ़ल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

28. यह अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों को नकार रहे हैं।

ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

29. तथा वह कहेंगे जो काफ़िर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कुपथ किया हैं जिन्नों तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रोंद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾

30. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थित रह[1] गये तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं[2] कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

31. हम तुम्हारे सहायक हैं संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज़ है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾

32. अतिथि-सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।

نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾

---

1 अर्थात प्रत्येक दशा में आज्ञा पालन तथा एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे।

2 उन के मरण के समय।

33. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

34. और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।[1]

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

35. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।

وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

36. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

37. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (वंदना) करते हो।[2]

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तथा आप के माध्यम से सर्वसाधारण मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि बुराई का बदला अच्छाई से तथा अपकार का बदला उपकार से दें। जिस का प्रभाव यह होगा कि अपना शत्रु भी हार्दिक मित्र बन जायेगा।

2 अर्थात सच्चा वंदनीय (पूज्य) अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। यह सूर्य, चन्द्रमा और अन्य आकाशीय ग्रहें अल्लाह के बनाये हुये हैं। और उसी के आधीन हैं। इसलिये इन को सज्दा करना व्यर्थ है। और जो ऐसा करता है वह अल्लाह के साथ उस की बनाई हुई चीज़ को उस का साझी बनाता है जो शिर्क और

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٨﴾

38. तथा यदि वह अभिमान करें तो जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के पास हैं वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में, और वह थकते नहीं हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

39. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते हैं धरती को सहमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दों को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾

40. जो टेढ़ निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय हो कर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।[1]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

41. निश्चय जिन्होंने कुफ़्र कर दिया इस शिक्षा (क़ुर्आन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच्च यह है कि यह एक अति सम्मानित पुस्तक है।

अक्षम्य पाप तथा अन्याय है। सज्दा करना इबादत है। जो अल्लाह ही के लिये विशेष है। इसीलिये कहा है कि यदि अल्लाह ही की इबादत करते हो तो सज्दा भी उसी के लिये करो। उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसे सज्दा करना उचित हो। क्योंकि सब अल्लाह के बनाये हुये हैं सूर्य हो या कोई मनुष्य। सज्दा आदर के लिये हो या इबादत (वंदना) के लिये। अल्लाह के सिवा किसी को भी सज्दा करना अवैध तथा शिर्क है जिस का परिणाम सदैव के लिये नर्क है। आयत 38 पूरी कर के सज्दा करें।

1 अर्थात तुम्हारे मनमानी करने का कुफल तुम्हें अवश्य देगा।

42. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे से और न इस के पीछे से। उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित (अल्लाह) की ओर से।

لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

43. आप से वही कहा जा रहा है जो आप से पूर्व रसूलों से कहा गया।[1] वास्तव में आप का पालनहार क्षमा करने (तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।

مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

44. और यदि हम इसे बनाते अर्बी (के अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल दी गईं उस की आयतें? यह क्या कि (पुस्तक) ग़ैर अर्बी और (नबी) अर्बी? आप कह दें कि वह उन के लिये जो ईमान लाये मार्गदर्शन तथा आरोग्यकर है। और जो ईमान न लायें उन के कानों में बोझ है और वह उन पर अँधापन है। और वही पुकारे जा रहे हैं दूर स्थान से।[2]

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾

45. तथा हम प्रदान कर चुके हैं मूसा को पुस्तक (तौरात)। तो उस में भी विभेद किया गया, और यदि एक बात पहले ही से निर्धारित न होती[3] आप के पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर दिया जाता उन के बीच। निःसंदेह वह उस के विषय में संदेह में डाँवाडोल हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾

1 अर्थात उनको जादूगर झूठा तथा कवि इत्यादि कहा गया। (देखियेः सूरह, ज़ारियात आयतः 52, 53)

2 अर्थात क़ुआन से प्रभावित होने के लिये ईमान आवश्यक है इस के बिना इस का कोई प्रभाव नहीं होता।

3 अर्थात प्रलय के दिन निर्णय करने की। तो संसार ही में निर्णय कर दिया जाता और उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाता। (देखियेः सूरह फ़ातिर, आयतः 45)

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

46. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है भक्तों पर।[1]

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

47. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाभों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है, परन्तु उस के ज्ञान से। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहाँ हैं मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾

48. और खो जायेंगे[2] उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्व। तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।

لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾

49. नहीं थकता मनुष्य भलाई (सुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुख) तो (हताश) निराश[3] हो जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ

50. और यदि हम उसे[4] चखा दें अपनी

1 अर्थात किसी को बिना पाप के यातना नहीं देता।

2 अर्थात सब ग़ैब की बातें अल्लाह ही जानता है। इसलिये इस की चिन्ता न करो कि प्रलय कब आयेगी। अपने परिणाम की चिन्ता करो।

3 यह साधारण लोगों की दशा है। अन्यथा मुसलमान निराश नहीं होता।

4 आयत का भावार्थ यह है कि काफ़िर की यह दशा होती है। उसे अल्लाह के यहाँ जाने का विश्वास नहीं होता। फिर यदि प्रलय का होना मान लें तो भी इसी

لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ
فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم
مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾

दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय होनी है। और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफ़िरों को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾

51. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दुःख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم
بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

52. आप कह दें: भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (क़ुर्आन) अल्लाह की ओर से हो फिर तुम कुफ़्र कर जाओ उस के साथ, तो कौन उस से अधिक कुपथ होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ
يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾

53. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।[1] और क्या

कुविचार में मग्न रहता है कि यदि अल्लाह ने मुझे संसार में सुख-सुविधा दी है तो वहाँ भी अवश्य देगा। और यह नहीं समझता कि यहाँ उसे जो कुछ दिया गया है वह परीक्षा के लिये दिया गया है। और प्रलय के दिन कर्मों के आधार पर प्रतिकार दिया जायेगा।

1 क़ुर्आन, और निशानियों से अभिप्राय वह विजय है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के पश्चात् मुसलमानों को प्राप्त होंगी। जिन से उन्हें

यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?

54. सावधान! वही संदेह में हैं अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

أَلَآ إِنَّهُمْ فِى مِرْيَةٍ مِّن لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَآ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيطٌۢ ﴿٥٤﴾

विश्वास हो जायेगा कि कुर्आन ही सत्य है। इस आयत का एक दूसरा भावार्थ यह भी लिया गया है कि अल्लाह इस विश्व में तथा स्वयं तुम्हारे भीतर ऐसी निशानियाँ दिखायेगा। और यह निशानियां निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा सामने आ रही हैं। और प्रलय तक आती रहेंगी जिन से कुर्आन पाक का सत्य होना सिद्ध होता रहेगा।

सूरह शूरा - 42

सूरह शूरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 53 आयतें हैं।

- इस की आयत 38 में ईमान वालों को आपस में प्रामर्श करने का नियम बताया गया है। इसलिये इस का नाम ((सूरह शूरा)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में उन बातों को बताया गया है जिन से वह्यी को समझने में सहायता मिलती है। फिर आयत 20 तक बताया गया है कि यह वही धर्म है जिस की वह्यी सभी नबियों की ओर की गई थी। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह निर्देश दिया गया है कि इस पर स्थित रह कर इस धर्म की ओर आमंत्रण दें। और जो लोग विवाद में उलझे हुये हैं उन के पास सत्य का कोई प्रमाण नहीं है।
- आयत 21 से 35 तक उन की पकड़ की गई है जो मनमानी धर्म बना कर उस पर चलते हैं। और सत्धर्म पर ईमान लाने तथा सदाचार करने पर शुभसूचना दी गई है और विरोधियों के कुछ संदेहों को दूर किया गया है,
- आयत 36 से 40 तक सत्धर्म के अनुयायियों के वह गुण बताये गये हैं जो संघर्ष की घड़ी में उन्हें सफल बनायेंगे। फिर विरोधियों को सावधान करते हुये अपने पालनहार की पुकार को स्वीकार कर लेने का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में सूरह के आरंभिक विषय अर्थात वह्यी को और अधिक उजागर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीम।
2. ऐन, सीन, क़ाफ़।

حمٓ ①

عٓسٓقٓ ②

3. इसी प्रकार (अल्लाह) ने प्रकाशना[1] भेजी है आप, तथा उन (रसूलों) की ओर जो आप से पूर्व हुये हैं। अल्लाह सब से प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

كَذَٰلِكَ يُوحِيٓ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ ٱللَّهُ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ٣

4. उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है और वह बड़ा उच्च- महान् है।

لَهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ٤

5. समीप है कि आकाश फट[2]पड़ें अपने ऊपर से, जब कि फ़रिश्ते पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ, तथा क्षमायाचना करते हैं उन के लिये जो धरती में हैं। सुनो! वास्तव में अल्लाह ही अत्यंत क्षमा करने तथा दया करने वाला है।

تَكَادُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِن فَوۡقِهِنَّۚ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَيَسۡتَغۡفِرُونَ لِمَن فِي ٱلۡأَرۡضِۗ أَلَآ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ٥

6. तथा जिन लोगों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा संरक्षक, अल्लाह ही उन पर निरीक्षक (निगराँ) है और आप उन के उत्तर दायी[3] नहीं हैं।

وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ أَوۡلِيَآءَ ٱللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيۡهِمۡ وَمَآ أَنتَ عَلَيۡهِم بِوَكِيلٖ ٦

7. तथा इसी प्रकार हम ने वह्यी (प्रकाशना) की है आप की ओर अर्बी कुर्आन की। ताकि आप सावधान कर दें मक्का[4] वासियों को, और जो उस

وَكَذَٰلِكَ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ قُرۡءَانًا عَرَبِيّٗا لِّتُنذِرَ أُمَّ ٱلۡقُرَىٰ وَمَنۡ حَوۡلَهَا وَتُنذِرَ يَوۡمَ ٱلۡجَمۡعِ لَا رَيۡبَ فِيهِۚ فَرِيقٞ فِي ٱلۡجَنَّةِ وَفَرِيقٞ فِي ٱلسَّعِيرِ ٧

---

1 आरंभ में यह बताया जा रहा है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कोई नई बात नहीं कर रहे हैं और न यह वह्यी (प्रकाशना) का विषय ही इस संसार के इतिहास में प्रथम बार सामने आया है। इस से पूर्व भी पहले अम्बिया पर प्रकाशना आ चुकी है और वह एकेश्वरवाद का संदेश सुनाते रहे हैं।

2 अल्लाह की महिमा तथा प्रताप के भय से।

3 आप का दायित्व मात्र सावधान कर देना है।

4 आयत में मक्का को उम्मुल कुरा कहा गया है। जो मक्का का एक नाम है जिस का शाब्दिक अर्थः (वस्तियों की माँ) है। बताया जाता है कि मक्का अरब की मूल

के आस-पास हैं। तथा सावधान कर दें एकत्र होने के दिन[1] से जिस दिन के होने में कोई संशय नहीं। एक पक्ष स्वर्ग में तथा एक पक्ष नरक में होगा।

8. और यदि अल्लाह चाहता तो सभी को एक समुदाय[2] बना देता। परन्तु वह प्रवेश कराता है जिसे चाहे अपनी दया में। तथा अत्याचारियों का कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ⑧

9. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा संरक्षक? तो अल्लाह ही संरक्षक है और जीवित करेगा मुर्दों को। और वही जो चाहे कर सकता है।[3]

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⑨

10. और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उस का निर्णय अल्लाह ही को करना है।[4] वही अल्लाह मेरा पालनहार है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है तथा उसी की ओर ध्यान मगन होता हूँ।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ⑩

बस्ती है और उस के आस-पास से अभिप्राय पूरा भूमण्डल है। आधुनिक भूगोल शास्त्र के अनुसार मक्का पूरे भूमण्डल का केन्द्र है। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं कि कुर्आन इसी तथ्य की ओर संकेत कर रहा हो। सारांश यह है कि इस आयत में इस्लाम के विश्वव्यापी धर्म होने की ओर संकेत किया गया है।

1 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है जिस दिन कर्मों के प्रतिकार स्वरूप एक पक्ष स्वर्ग में और एक पक्ष नरक में जायेगा।

2 अर्थात एक ही सत्धर्म पर कर देता। किन्तु उस ने प्रत्येक को अपनी इच्छा से सत्य या असत्य को अपनाने की स्वाधीनता दे रखी है। और दोनों का परिणाम बता दिया है।

3 अतः उसी को संरक्षक बनाओ और उसी की आज्ञा का पालन करो।

4 अतः उस का निर्णय अल्लाह की पुस्तक कुर्आन से तथा उस के रसूल की सुन्नत से लो।

11. वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उस ने बनाये हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जोड़े। वह फैला रहा है तुम को इस प्रकार। उस की कोई प्रतिमा[1] नहीं। और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾

12. उसी के[2] अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ। वह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहे तथा नाप कर देता है। वास्तव में वही प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

13. उस ने नियत[3] किया है तुम्हारे लिये वही धर्म जिस का आदेश दिया था नूह को, और जिसे वह़्यी किया है आप की ओर, तथा जिस का आदेश दिया था इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को। कि इस धर्म की स्थापना करो और इस में भेद भाव न करो। यही बात अप्रिय लगी है मुश्रिकों

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۚ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾

---

1 अर्थात उस के अस्तिव तथा गुण और कर्म में कोई उस के समान नहीं है। भावार्थ यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु में उस का गुण कर्म मानना या उसे उस का अंश मानना असत्य तथा अधर्म है।

2 आयत नं॰ 9 से 12 तक जिन तथ्यों की चर्चा है उन में एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और सत्य से विमुख होने वालों को चेतावनी दी गई है।

3 इस आयत में पाँच नबियों का नाम ले कर बताया गया है कि सब को एक ही धर्म दे कर भेजा गया है। जिस का अर्थ यह है कि इस मानव संसार में अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक जो भी नबी आये सभी की मूल शिक्षा एक रही है। कि एक अल्लाह को मानो और उसी एक की वंदना करो। तथा वैध - अवैध के विषय में अल्लाह ही के आदेशों का पालन करो। और अपने सभी धार्मिक तथा सामाजिक और राजनैतिक विवादों का निर्णय उसी के धर्मविधान के आधार पर करो (देखियेः सूरह निसा, आयतः 163- 164)

को जिस की ओर आप बुला रहे हैं। अल्लाह ही चुनता है इस के लिये जिसे चाहे, और सीधी राह उसी को दिखाता है जो उसी की ओर ध्यान मग्न हो।

14. और उन्होंने[1] इस के पश्चात् ही विभेद किया जब उन के पास ज्ञान आ गया आपस के विरोध के कारण, तथा यदि एक बात पहले से निश्चित[2] न होती आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य निर्णय कर दिया गया होता उन के बीच। और जो पुस्तक के उत्तराधिकारी बनाये[3] गये उन के पश्चात् उस की ओर से संदेह में उलझे हुये हैं।

وَمَا تَفَرَّقُوٓا إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ
بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰٓ
أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا
الْكِتَٰبَ مِنۢ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٤﴾

15. तो आप लोगों को इसी (धर्म) की ओर बुलाते रहें तथा जैसे आप को आदेश दिया गया है उस पर स्थित रहें। और उन की इच्छाओं पर न चलें। तथा कह दें कि मैं ईमान लाया उन सभी पुस्तकों पर जो अल्लाह ने उतारी[4] हैं। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। हमारे लिये हमारे कर्म हैं तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। हमारे और

فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَآءَهُمْ ۖ وَقُلْ ءَامَنتُ بِمَآ أَنزَلَ اللَّهُ مِن
كِتَٰبٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا
وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَٰلُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

1 अर्थात मुश्रिकों ने।

2 अर्थात प्रलय के दिन निर्णय करने की।

3 अर्थात यहूदी तथा ईसाई भी सत्य में विभेद तथा संदेह कर रहे हैं।

4 अर्थात सभी आकाशीय पुस्तकों पर जो नबियों पर उतारी गई हैं।

तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हमें एकत्र करेगा तथा उसी की ओर सब को जाना है।[1]

16. तथा जो लोग झगड़ते हैं अल्लाह (के धर्म के बारे) में जब कि उसे[2] मान लिया गया है। उन का विवाद (कुतर्क) असत्य है अल्लाह के समीप, तथा उन्हीं पर क्रोध है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ١٦

17. अल्लाह ही ने उतारी हैं सब पुस्तकें सत्य के साथ तथा तराज़ू[3] को। और आप को क्या पता शायद प्रलय का समय समीप हो।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ١٧

18. शीघ्र माँग कर रहे हैं उस (प्रलय) की जो ईमान नहीं रखते उस पर। और जो ईमान लाये हैं वह उस से डर रहे हैं तथा विश्वास रखते हैं कि वह सच्च है। सुनो! निश्चय जो विवाद कर रहे हैं प्रलय के विषय में वह कुपथ में बहुत दूर चले गये हैं।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ١٨

19. अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर। वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे। तथा वह बड़ा प्रबल प्रभावशाली है।

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ١٩

20. जो आख़िरत (परलोक) की खेती[4]

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي

---

1 अर्थात प्रलय के दिन। फिर वह हमारे बीच निर्णय कर देगा।

2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), और इस्लाम धर्म को।

3 तराज़ू से अभिप्रायः न्याय का आदेश है। जो कुर्आन द्वारा दिया गया है। (देखियेः सूरह हदीद, आयतः 25)

4 अर्थात जो अपने संसारिक सत्कर्म का प्रतिफल परलोक में चाहता है तो उसे

حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝٢٠

चाहता हो तो हम उस के लिये उस की खेती बढ़ा देते हैं। और जो संसार की खेती चाहता हो तो हम उसे उस में से कुछ दे देते हैं। और उस के लिये परलोक में कोई भाग नहीं।

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢١

21. क्या इन (मुश्रिकों) के कुछ ऐसे साझी[1] हैं जिन्होंने उन के लिये कोई ऐसा धार्मिक नियम बना दिया है जिस की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बात निश्चित न होती तो (अभी) इन के बीच निर्णय कर दिया जाता। तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये ही दुख़दायी यातना है।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝٢٢

22. तुम अत्याचारियों को डरते हुये देखोगे उन दुष्कर्मों के कारण जो उन्होंने किये हैं और वह उन पर आ कर रहेगा। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये वे स्वर्ग के बागों में होंगे। वह जिस की इच्छा करेंगे उन के पालनहार के यहाँ मिलेगा। यही बड़ी दया है।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۗ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝٢٣

23. यही वह (दया) है जिस की शुभसूचना देता है अल्लाह अपने भक्तों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। आप कह दें कि मैं नहीं माँगता हूँ इस पर तुम से कोई बदला उस

उस का प्रतिफल परलोक में दस गुना से सात सौ गुना तक मिलेगा। और जो संसारिक फल का अभिलाषी हो तो जो उस के भाग्य में हो उसे उतना ही मिलेगा और परलोक में कुछ नहीं मिलेगा। (इब्ने कसीर)

1 इस से अभिप्राय उन के वह प्रमुख हैं जो वैध-अवैध का नियम बनाते थे। इस में यह संकेत है कि धार्मिक जीवन विधान बनाने का अधिकार केवल अल्लाह को है। उस के सिवा दूसरों के बनाये हुये धार्मिक जीवन विधान को मानना और उस का पालन करना शिर्क है।

प्रेम के सिवा जो संबन्धियों[1] में (होता) है। तथा जो व्यक्ति कोई पुण्य करेगा हम उस के पुण्य को अधिक कर देंगे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला गुणग्राही है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَإِن يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٤﴾

24. क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है? तो यदि अल्लाह चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे।[2] और अल्लाह मिटा देता है झूठ को और सच्च को अपने आदेशों द्वारा सच्च कर दिखाता है। वह सीनों (दिलों) के भेदों का जानने वाला है।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾

25. वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा। तथा क्षमा करता है दोषों[3] को और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾

26. और उन की प्रार्थना स्वीकार करता है जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उन्हें अधिक प्रदान करता है अपनी दया से। और काफ़िरों ही के लिये कड़ी यातना है।

---

1 भावार्थ यह है कि हे मक्का वासियो! यदि तुम सत्धर्म पर ईमान नहीं लाते हो तो मुझे इस का प्रचार तो करने दो। मुझ पर अत्याचार न करो। तुम सभी मेरे संबन्धी हो इसलिये मेरे साथ प्रेम का व्यवहार करो। (सहीह बुख़ारीः 4818)

2 अर्थ यह है कि हे नबी! इन्होंने आप को अपने जैसा समझ लिया है जो अपने स्वार्थ के झूठ का सहारा लेते हैं। किन्तु अल्लाह ने आप के दिल पर मुहर नहीं लगाई है जैसे इन के दिलों पर लगा रखी है।

3 तौबा का अर्थ हैः अपने पाप पर लज्जित होना फिर उसे न करने का संकल्प लेना। हदीस में है कि जब बंदा अपना पाप स्वीकार कर लेता है। और फिर तौबा करता है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। (सहीह बुख़ारीः 4141, सहीह मुस्लिमः 2770)

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾

27. और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह[1] कर देते धरती में। परन्तु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है। वास्तव में वह अपने भक्तों से भली- भाँति सूचित है। (तथा) उन्हें देख रहा है।

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾

28. तथा वही है जो वर्षा करता है इस के पश्चात् की लोग निराश हो जायें। तथा फैला[2] देता है अपनी दया। और वही संरक्षक सराहनीय है।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِن دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

29. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती की उत्पत्ति, तथा जो फैलाये हैं उन दोनों में जीव। और वह उन्हें एकत्र करने पर जब चाहे[3] सामर्थ्य रखने वाला है।

وَمَا أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

30. और जो भी दुख तुम को पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्तूत से पहुँचता है। तथा वह क्षमा कर देता है तुम्हारे बहुत से पापों को।[4]

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾

31. और तुम विवश करने वाले नहीं हो धरती में, और न तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक है।

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾

32. तथा उस के (सामर्थ्य) की निशानियों

---

1 अर्थात यदि अल्लाह सभी को सम्पन्न बना देता तो धरती में अवज्ञा और अत्याचार होने लगता और कोई किसी के आधीन न रहता।

2 इस आयत में वर्षा को अल्लाह की दया कहा गया है। क्योंकि इस से धरती में उपज होती है जो अल्लाह के अधिकार में है। इसे नक्षत्रों का प्रभाव मानना शिर्क है।

3 अर्थात प्रलय के दिन।

4 देखियेः सूरह फ़ातिर, आयतः 45।

में से हैं चलती हुई नाव सागरों में पर्वतों के समान।

إِن يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾

33. यदि वह चाहे तो रोक दे वायु को और वह खड़ी रह जायें उस के ऊपर। निश्चय इस में बड़ी निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान[1] कृतज्ञ के लिये।

أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَن كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾

34. अथवा विनाश[2] कर दे उन (नावों) का उन के कर्तूतों के बदले। और वह क्षमा करता है बहुत कुछ।

وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٣٥﴾

35. तथा वह जानता है उन को जो झगड़ते हैं हमारी आयतों में। उन्हीं के लिये कोई भागने का स्थान नहीं है।

فَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾

36. तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह संसारिक जीवन का संसाधन है तथा जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और स्थाायी[3] है उन के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿٣٧﴾

37. तथा जो बचते हैं बड़े पापों तथा निर्लज्जा के कर्मों से। और जब क्रोध आ जाये तो क्षमा कर देते हैं।

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾

38. तथा जिन्होंने अपने पालनहार के आदेश को मान लिया तथा स्थापना की नमाज़ की और उन के प्रत्येक कार्य आपस के विचार-विमर्श से होते

1 अर्थात जो अल्लाह की आज्ञापालन पर स्थित रहे।

2 उन के सवारों को उन के पापों के कारण डुबो दे।

3 अर्थ यह है कि संसारिक साम्यिक सुख को परलोक के स्थाई जीवन तथा सुख पर प्राथमिक्ता न दो ।

हैं।[1] और जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝٣٩

39. और यदि उन पर अत्याचार किया जाये तो वह बराबरी का बदला लेते हैं।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠

40. और बुराई का प्रतिकार (बदला) बुराई है उसी जैसी।[2] फिर जो क्षमा कर दे तथा सुधार कर ले तो उस का प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में वह प्रेम नहीं करता है अत्याचारियों से।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝٤١

41. तथा जो बदला लें अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात् तो उन पर कोई दोष नहीं है।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤٢

42. दोष केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं। और नाहक़ ज़मीन में उपद्रव करते हैं। उन्हीं के लिये दर्दनाक यातना है।

---

1 इस आयत में ईमान वालों का एक उत्तम गुण बताया गया है कि वह अपने प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य परस्पर प्रामर्श से करते हैं। सूरह आले इमरान आयतः 159 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया है कि आप मुसलमानों से परामर्श करें। तो आप सभी महत्वपूर्ण कार्यों में उन से परामश करते थे। यही नीति तत्पश्चात् आदरणीय ख़लीफ़ा उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने भी अपनाई। जब आप घायल हो गये और जीवन की आशा न रही तो आप ने छः व्यक्तियों को नियुक्त कर दिया कि वह आपस के परामर्श से शासन के लिये किसी एक को निर्वाचित कर लें। और उन्होंने आदरणीय उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को शासक निर्वाचित कर लिया। इस्लाम पहला धर्म है जिस ने परामर्शिक व्यवस्था की नींव डाली। किन्तु यह परामर्श केवल देश का शासन चलाने के विषयों तक सीमित है। फिर भी जिन विषयों में कुर्आन तथा हदीस की शिक्षायें मौजूद हों उन में किसी परामर्श की आवश्यक्ता नहीं है।

2 इस आयत में बुराई का बदला लेने की अनुमति दी गई है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं, बल्कि न्याय है फिर भी बुराई के समरूप होने के कारण उसे बुराई ही कहा गया है।

43. और जो सहन करे तथा क्षमा कर दे तो यह निश्चय बड़े साहस[1] का कार्य है।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝٤٣

44. तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो उस का कोई रक्षक नहीं है उस के पश्चात्। तथा आप देखेंगे अत्याचारियों को जब वह देखेंगे यातना को, वह कह रहे होंगेः क्या वापसी की कोई राह है?[2]

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَلِيٍّ مِنْ بَعْدِهِ ۗ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِنْ سَبِيلٍ ۝٤٤

45. तथा आप उन्हें देखेंगे कि वह प्रस्तुत किये जा रहे हैं नरक पर सिर झुकाये अपमान के कारण। वे देख रहे होंगे कन्खियों से। तथा कहेंगे जो ईमान लाये कि वास्तव में घाटे में वही हैं जिन्होंने घाटे में डाल दिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सुनो! अत्याचारी ही स्थाई यातना में होंगे।

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَاشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُقِيمٍ ۝٤٥

46. तथा नहीं होंगे उन के कोई सहायक जो अल्लाह के मुक़ाबले में उन की सहायता करें। और जिसे कुपथ कर दे अल्लाह, तो उस के लिये कोई मार्ग नही

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۝٤٦

47. मान लो अपने पालनहार की बात इस से पूर्व कि आ जाये वह दिन जिसे टलना नहीं है अल्लाह की ओर से। नहीं होगा तुम्हारे लिये कोई शरण का स्थान उस दिन और न

اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَكِيرٍ ۝٤٧

1 इस आयत में क्षमा करने की प्रेरणा दी गई है कि यदि कोई अत्याचार कर दे तो उसे सहन करना और क्षमा कर देना और सामर्थ्य रखते हुये उस से बदला न लेना ही बड़ी सुशीलता तथा साहस की बात है जिस की बड़ी प्रधानता है।

2 ताकि संसार में जा कर ईमान लायें और सदाचार करें तथा परलोक की यातना से बच जायें।

छिप कर अन जान बन जाने का।

48. फिर भी यदि वह विमुख हों तो (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा है आप को उन पर रक्षक बना कर। आप का दायित्व केवल संदेश पहुँचा देना है। और वास्तव में जब हम चखा देते हैं मनुष्य को अपनी दया तो वह इतराने लगता है उस पर। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुःख उन के कर्तूत के कारण तो मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ ۗ وَإِنَّآ إِذَآ أَذَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾

49. अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहे पुत्रियाँ प्रदान करता है तथा जिसे चाहे पुत्र प्रदान करता है।

لِّلَّهِ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَآءُ إِنَٰثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَآءُ ٱلذُّكُورَ ﴿٤٩﴾

50. अथवा उन्हें पुत्र और[1] पुत्रियाँ मिला कर देता है। और जिसे चाहे बाँझ बना देता है। वास्तव में वह सब कुछ जानने वाला (तथा) सामर्थ्य रखने वाला है।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَٰثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَآءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُۥ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

51. और नहीं संभव है किसी मनुष्य के लिये कि बात करे अल्लाह उस से परन्तु वह्यी[2] द्वारा, अथवा पर्दे के

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ ٱللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَآئِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِىَ بِإِذْنِهِۦ مَا يَشَآءُ ۚ

1 इस आयत में संकेत है कि पुत्र-पुत्री माँगने के लिये किसी पीर, फ़क़ीर के मज़ार पर जाना उन को अल्लाह की शक्ति में साझी बनाना है। जो शिर्क है। और शिर्क ऐसा पाप है जिस के लिये बिना तौबा के कोई क्षमा नहीं।

2 वह्यी का अर्थः संकेत करना या गुप्त रूप से बात करना है। अर्थात अल्लाह अपने अपने रसूलों को अपना आदेश और निर्देश इस प्रकार देता है जिसे कोई दूसरा व्यक्ति सुन नहीं सकता। जिस के तीन रूप होते हैं:
- प्रथमः रसूल के दिल में सीधे अपना ज्ञान भर दे।
- दूसराः पर्दे के पीछे से बात करे। किन्तु वह दिखाई न दे।
- तीसराः फ़रिश्ते द्वारा अपनी बात रसूल तक गुप्त रूप से पहुँचा दे।
इन में पहले और तीसरे रूप में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास

إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾

पीछे से अथवा भेज दे कोई रसूल (फ़रिश्ता) जो वह्यी करे उस की अनुमति से जो कुछ वह चाहता हो। वास्तव में वह सब से ऊँचा (तथा) सभी गुण जानने वाला है।

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَٰكِن جَعَلْنَاهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾

52. और इसी प्रकार हम ने वह्यी (प्रकाशना) की है आप की ओर अपने आदेश की रूह (क़ुर्आन)। आप नहीं जानते थे कि पुस्तक क्या है तथा और ईमान[1] क्या है। परन्तु हम ने इसे बना दिया एक ज्योति। हम मार्ग दिखाते हैं इस के द्वारा जिसे चाहते हैं अपने भक्तों में से। और वस्तुतः आप सीधी राह[2] दिखा रहे हैं।

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

53. अल्लाह की राह जिस के अधिकार में है जो कुछ आकाशों में तथा जो कुछ धरती में है। सावधान! अल्लाह ही की ओर फिरते हैं सभी कार्य।

वह्यी उतरती थी। (सहीह बुख़ारीः 2)

1 मक्का वासियों को यह आश्चर्य था कि मनुष्य अल्लाह का नबी कैसे हो सकता है? इस पर क़ुर्आन बता रहा है कि आप नबी होने से पहले न तो किसी आकाशीय पुस्तक से अवगत थे। और न कभी ईमान की बात ही आप के विचार में आई। और यह दोनों बातें ऐसी थीं जिन का मक्कावासी भी इन्कार नहीं कर सकते थे। और यही आप का अज्ञान होना आप के सत्य नबी होने का प्रमाण है। जिसे क़ुर्आन की अनेक आयतों में वर्णित किया गया है।

2 सीधी राह से अभिप्राय सत्धर्म इस्लाम है।

सूरह ज़ुख़्रुफ़ - 43

सूरह ज़ुख़्रुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 89 आयतें हैं।

- इस की आयत 35 में ((ज़ुख़्रुफ़)) शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। जिस का अर्थ हैः सोना-शोभा।
- इस की आरंभिक आयतें कुर्आन के लाभ और उस की बड़ाई को उजागर करती है। फिर उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से अल्लाह के अकेले पूज्य होने का विश्वास होता है। फिर आयत 15 से 25 तक फ़रिश्तों को अल्लाह का साझी बनाने को अनुचित बताया गया है। फिर आयत 26 से 33 तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुर्तियों से विरक्त होने के एलान को प्रस्तुत किया गया है। और बताया गया है कि मक्कावासी जो उन्हीं के वंश से हैं वे शिर्क तथा मुर्तियों की पूजा के पक्षपाती हो गये हैं। और अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस लिये विरोधी बन गये हैं कि आप एक अल्लाह के पूज्य होने का आमंत्रण दे रहे हैं।
- आयत 34 से 45 तक तनिक संसारिक लाभ के लिये परलोक तथा वह्यी और रिसालत के इन्कार कर देने के परिणाम को बताया गया है। और फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कुछ दशाओं का वर्णन किया गया है। जिस से यह बात सामने आती है कि वह भी तौहीद का प्रचार करते थे और उन के विरोधियों ने अपना परिणाम देख लिया।
- अन्तिम आयतों में विरोधियों के लिये चेतावनी तथा सदाचारियों के लिये शुभसूचना के साथ अपराधियों को उन के दुष्परिणाम से सावधान, और कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीम।

حٰمٓ ①

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝

2. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक की!

إِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

3. इसे हम ने बनाया है अर्बी कुर्आन ताकि वह इसे समझ सकें।

وَإِنَّهٗ فِيْٓ أُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝

4. तथा वह मूल पुस्तक[1] में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝

5. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِيْنَ ۝

6. तथा हम ने भेजे हैं बहुत से नबी (गुज़री हुयी) जातियों में।

وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

7. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।

فَأَهْلَكْنَآ أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْأَوَّلِيْنَ ۝

8. तो हम ने विनाश कर दिया इन से[2] अधिक शक्तिवानों का तथा गुज़र चुका है अगलों का उदाहरण।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝

9. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगेः उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।

---

1 मूल पुस्तक से अभिप्राय लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है। जिस से सभी आकाशीय पुस्तकें अलग कर के अवतरित की गई हैं। सूरह वाक़िआ में इसी को ((किताबे मक्नून)) कहा गया है। सूरह बुरूज में इसे ((लौहे महफ़ूज़)) कहा गया है। सूरह शुअरा में कहा गया कि यह अगले लोगों की पुस्तको में है। सूरह ऑला में कहा गया है कि यह विषय पहली पुस्तकों में भी अंकित है। सारांश यह है कि कुर्आन के इन्कार करने का कोई कारण नहीं। तथा कुर्आन का इन्कार सभी पहली पुस्तकों का इन्कार करने के बराबर है।

2 अर्थात मक्कावासियों से।

10. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना। और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।[1]

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑩

11. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में। फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को। इसी प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ⑪

12. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े, तथा बनाईं तुम्हारे लिये नवकायें तथा पशु जिन पर तुम सवार होते हो।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ⑫

13. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह[2] कहोः पवित्र है वह जिस ने वश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे वश में नहीं कर सकते थे।

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ⑬

14. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ⑭

15. और बना लिया उन्होंने[3] उस के भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ⑮

---

1 एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये।

2 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऊँट पर सवार होते तो तीन बारः अल्लाहु अक्बर कहते फिर यही आयत ((मुन्क़लिबून)) तक पढ़ते। और कुछ और प्रार्थना के शब्द कहते थे जो दुआओं की पुस्तकों में मिलेंगे। (सहीह मुस्लिम हदीस नः: 1342)

3 जैसे मक्का के मुशरिक लोग फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ मानते थे। और ईसाईयों ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र माना। और किसी ने आत्मा को प्रमात्मा तथा अवतारों को प्रभु बना दिया। और फिर उन्हें पूजने लगे।

أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾

16. क्या अल्लाह ने उस में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली हैं तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

17. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उस (के जन्म लेने) की जिस का उस ने उदाहरण दिया है अत्यंत कृपाशील के लिये तो उस का मुख काला[1] हो जाता है। और शोक से भर जाता है।

أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾

18. क्या (अल्लाह के लिये) वह है जिस का पालन-पोषण अभूषण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती?

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾

19. और उन्होंने बना दिया फ़रिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त हैं पुत्रियाँ। क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

20. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहता तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुक्के चला रहे हैं।

---

1 इस्लाम से पूर्व यही दशा थी। कि यदि किसी के हाँ बच्ची जन्म लेती तो लज्जा के मारे उस का मुख काला हो जाता। और कुछ अरब के क़बीले उसे जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। किन्तु इस्लाम ने उस को सम्मान दिया। तथा उस की रक्षा की। और उस के पालनपोषण को पुण्य कर्म घोषित किया। हदीस में है कि जो पुत्रियों के कारण दुःख झेले और उन के साथ उपकार करे तो उस के लिये वे नरक से पर्दा बनेंगी। (सहीह बुख़ारीः 5995, सहीह मुस्लिमः 2629) आज भी कुछ पापी लोग गर्भ में बच्ची का पता लगते ही गर्भपात करा देते हैं। जिसको इस्लाम बहुत बड़ा अत्याचार समझता है।

21. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये हैं?[1]

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ٢١

22. बल्कि यह कहते हैं कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पद्चिन्हों पर चल रहे हैं।

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ٢٢

23. तथा (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों नेः हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पद्चिन्हों पर चल रहे हैं।[2]

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ٢٣

24. नबी ने कहाः क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहाः हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं हैं।

قٰلَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ٢٤

25. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ٢٥

26. तथा याद करो, जब कहा इबराहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति सेः निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ٢٦

---

1 अर्थात कुर्आन से पहले की किसी ईश- पुस्तक में अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना की शिक्षा दी ही नहीं गई है कि वह कोई पुस्तक ला सकें।

2 आयत का भावार्थ यह है कि प्रत्येक युग के काफ़िर अपने पूर्वजों के अनुसरण के कारण अपने शिर्क और अँधविश्वास पर स्थित रहे।

27. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा।

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾

28. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को[1] अपनी संतान में ताकि वह (शिर्क से) बचते रहें।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

29. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (क़ुर्आन) और एक खुला रसूल।[2]

بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٢٩﴾

30. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾

31. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा[3] गया यह क़ुर्आन दो बस्तियों में से किसी बड़े व्यक्ति पर?

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾

32. क्या वही बाँटते[4] हैं आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُم بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾

---

1 आयत 26 से 28 तक का भावार्थ यह है कि यदि तुम्हें अपने पूर्वजों ही का अनुगमन करना है तो अपने पूर्वज इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अनुगमन करो। जो शिर्क से विरक्त तथा एकेश्वरवादी थे। और अपनी संतान में एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा छोड़ गये ताकि लोग शिर्क से बचते रहें।

2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

3 मक्का के काफ़िरों ने कहा कि यदि अल्लाह को रसूल ही भेजना था तो मक्का और ताइफ़ के नगरों में से किसी प्रधान व्यक्ति पर क़ुर्आन उतार देता। अब्दुल्लाह का अनाथ-निर्धन पुत्र मुहम्मद तो कदापि इस के योग्य नहीं है।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जैसे संसारिक धन-धान्य में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ बनाई हैं उसी प्रकार नबूवत और रिसालत, जो उस की दया हैं, उन को भी जिस के लिये चाहा प्रदान किया है।

को दूसरे पर कई श्रेणियाँ। ताकि एक-दूसरे से सेवा कार्य लें, तथा आप के पालनहार की दया[1] उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे हैं।

وَلَوْلَآ أَن يَكُونَ ٱلنَّاسُ أُمَّةً وَٰحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِٱلرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

33. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ़्र करते हैं अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की तथा सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं।

وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَٰبًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔونَ ﴿٣٤﴾

34. तथा उन के घरों के द्वार, और तख़्त जिन पर वह तकिये लगाये[2] रहते हैं।

وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ وَٱلْءَاخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

35. तथा बना देते शोभा। नहीं हैं यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामान। तथा आख़िरत[3] (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ ٱلرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُۥ شَيْطَٰنًا فَهُوَ لَهُۥ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

36. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अँधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

37. और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से। तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَنَا قَالَ يَٰلَيْتَ بَيْنِى وَبَيْنَكَ بُعْدَ

38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे

---

1 अर्थात परलोक में स्वर्ग सदाचारी भक्तों को मिलेगी।

2 अर्थात सब मायामोह में पड़ जाते।

3 भावार्थ यह है कि संसारिक धन-धान्य का अल्लाह के हाँ कोई महत्व नहीं है।

الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. (उन से कहा जायेगा): और तुम्हें कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज, जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया है। वास्तव में तुम सब यातना में साझी रहोगे।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾

40. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे बहरों को या सीधी राह दिखा देंगे अँधों को तथा जो खुले कुपथ[1] में हों?

فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

41. फिर यदि हम आप को (संसार से) ले जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. अथवा आप को दिखा दें जिस (यातना) का हम ने उन को वचन दिया है तो निश्चय हम उन पर सामर्थ्य रखने वाले हैं।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾

43. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े रहें उसे जो हम आप की ओर वह़्यी कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. निश्चय यह (क़ुर्आन) आप के लिये तथा आप की जाति के लिये एक शिक्षा[2] है। और जल्द ही तुम से प्रश्न[3] किया जायेगा।

---

1 अर्थ यह है कि जो सच्च को न सुने तथा दिल का अँधा हो तो आप के सीधी राह दिखाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

2 इस का पालन करने के संबन्ध में।

3 पहले नबियों से पूछने का अर्थ उन की पुस्तकों तथा शिक्षाओं में यह बात

وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनायें हैं अत्यंत कृपाशील के अतिरिक्त वंदनीय जिन की वंदना की जाये?

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उस ने कहाः वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۡ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. तथा हम उन को एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में ताकि वह (ठट्ठा) से रुक जायें।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. और उन्होंने कहाः हे जादूगर! प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उस वचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾

51. तथा पुकारा फ़िरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहाः हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो बह

देखनी है।

रही हैं मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।

أَمْ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا ٱلَّذِى هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

52. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुल कर बोल भी नहीं सकता?

فَلَوْلَآ أُلْقِىَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَآءَ مَعَهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

53. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फ़रिश्ते उस के साथ पंक्ति बाँधे हुये?[1]

فَٱسْتَخَفَّ قَوْمَهُۥ فَأَطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿٥٤﴾

54. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।

فَلَمَّآ ءَاسَفُونَا ٱنتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾

55. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।

فَجَعَلْنَٰهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْءَاخِرِينَ ﴿٥٦﴾

56. और बना दिया हम ने उन को गया गुज़रा और एक उदाहरण पश्चात के लोगों के लिये।

وَلَمَّا ضُرِبَ ٱبْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

57. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का[2] उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न हो कर शोर मचाने लगी।

وَقَالُوٓا۟ ءَأَٰلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًۢا

58. तथा मुश्रिकों ने कहा कि हमारे

---

1 अर्थात यदि मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह का रसूल होता तो उस के पास राज्य, और हाथों में सोने के कंगन तथा उस की रक्षा के लिये फ़रिश्तों को उस के साथ रहना चाहिये था। जैसे मेरे पास राज्य, हाथों में सोने के कंगन तथा सुरक्षा के लिये सेना है।

2 आयत नं॰ 45 में कहा गया है कि पहले नबियों की शिक्षा पढ़ कर देखो कि क्या किसी ने यह आदेश दिया है कि अल्लाह अत्यंत कृपाशील के सिवा दूसरों की इबादत की जाये? इस पर मुश्रिकों ने कहा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की इबादत क्यों की जाती है? क्या हमारे पूज्य उन से कम हैं?

بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝٥٨

देवता अच्छे हैं या वे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये। बल्कि वह हैं ही बड़े झगड़ालू लोग।

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۝٥٩

59. नहीं है वह[1] (ईसा) परन्तु एक भक्त (दास) जिस पर हम ने उपकार किया। तथा उसे इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنكُم مَّلَٰٓئِكَةً فِى ٱلْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝٦٠

60. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फ़रिश्ते धरती में, जो एक-दूसरे का स्थान लेते।

وَإِنَّهُۥ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَٱتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝٦١

61. तथा वास्तव में वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण[2] हैं प्रलय का। अतः कदापि संदेह न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝٦٢

62. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

وَلَمَّا جَآءَ عِيسَىٰ بِٱلْبَيِّنَٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِٱلْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم بَعْضَ ٱلَّذِى تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝٦٣

63. और जब आ गया ईसा खुली निशानियाँ ले कर तो कहाः मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान। और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।

---

1 इस आयत में बताया जा रहा है कि यह मुश्रिक, ईसा (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण पर बड़ा शोर मचा रहे हैं। और उसे कुतर्क स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। जब कि वह पूज्य नहीं, अल्लाह के दास हैं। जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया और इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बना दिया।

2 हदीस शरीफ़ में है आया है कि प्रलय की बड़ी दस निशानियों में से ईसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से उतरना भी एक निशानी है। (सहीह मुस्लिमः 2901)

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः उसी की वंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾

65. फिर विभेद कर लिया गिरोहों[1] ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दुःखदायी दिन की यातना से।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِن بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٦٥﴾

66. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो?

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾

67. सभी मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।

الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾

68. हे मेरे भक्तो! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदासीन होगे।

يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

69. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾

70. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾

71. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की थालें तथा प्याले। और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोगे।

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾

---

1 इस्राईली समुदायों में कुछ ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र, किसी ने प्रभु तथा किसी ने उसे तीन का तीसरा (तीन खुदाओं में से एक) कहा। केवल एक ही समुदाय ने उन्हें अल्लाह का भक्त तथा नबी माना।

72. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हो अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

73. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाते रहोगे।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

74. निःसंदेह अपराधी नरक की यातना में सदावासी होंगे।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾

75. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾

76. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर, परन्तु वही अत्याचारी थे।

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

77. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक![1] हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार। वह कहेगाः तुम्हें इसी दशा में रहना है।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ ﴿٧٧﴾

78. (अल्लाह कहेगा)ः हम तुम्हारे पास सत्य[2] लाये किन्तु तुम में से अधिक्तर को सत्य अप्रिय था।

لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾

79. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है?[3] तो हम भी निर्णय कर देंगे।[4]

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾

80. क्या वह समझते हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा प्रामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि हमारे फ़रिश्ते उन के पास ही

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

---

1 मालिकः नरक के अधिकारी फ़रिश्ते का नाम है।

2 अर्थात नबियों द्वारा।

3 अर्थात सत्य के इन्कार का।

4 अर्थात उन्हें यातना देने का।

लिख रहे हैं।

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾

81. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अल्लाह)की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

82. पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं!

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

83. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह वाद-विवाद तथा खेल-कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

84. वही है जो आकाश में वंदनीय और धरती में वंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला है।

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

85. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनों के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

86. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त सिफ़ारिश का। हाँ (सिफ़ारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य[1] की गवाही

---

1 सत्य से अभिप्राय धर्म-सूत्र ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। अर्थात जो इसे जान बूझ कर स्वीकार करते हों तो शफ़ाअत उन्हीं के लिये होगी। उन काफ़िरों के लिये नहीं जो मुर्तियों को पुकारते हैं। अथवा इस से अभिप्राय यह है कि सिफ़ारिश का अधिकार उन को मिलेगा जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया है। जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फ़रिश्तों को, न कि झूठे उपास्यों को जिन को मुश्रिक अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

दें, और (उसे) जानते भी हों।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝٨٧

87. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?[1]

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ۝٨٨

88. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार! यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٨٩

89. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम[2] है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

1 अर्थात अल्लाह की उपासना से।

2 अर्थात उन से न उलझें।

सूरह दुख़ान - 44

सूरह दुख़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 59 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 में आकाश से दुख़ान (धुवें) के निकलने की चर्चा है इसलिये इस का नाम सूरह दुख़ान है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन का महत्व बताया गया है। फिर आयत 7-8 में कुर्आन उतारने वाले का परिचय कराया गया है।
- आयत 9 से 33 तक फ़िरऔन की जाति के विनाश और बनी इस्राईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि रसूल के विरोधियों का दुष्परिणाम कैसा हुआ। और उन के अनुयायी किस प्रकार सफल हुये।
- आयत 34 से 57 तक दूसरे जीवन के इन्कार तथा उस का विश्वास कर के जीवन व्यतीत करने का अलग-अलग फल बताया गया है जो प्रलय के दिन सामने आयेगा।
- अन्तिम आयतों में उन को सावधान किया गया है जो कुर्आन का आदर नहीं करते। अर्थात इस सूरह के आरंभिक विषय ही में इस का अन्त भी किया गया है।
- हदीस में है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने अल्लाह से दुआ की, कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के अकाल के समान इन पर भी सात वर्ष का अकाल भेज दे। और फिर उन पर ऐसा अकाल आया कि प्रत्येक चीज़ का नाश कर दिया गया। और वह मुर्दार खाने पर बाध्य हो गये। और यह दशा हो गयी कि जब वह आकाश की ओर देखते तो भूक के कारण धूवाँ जैसा दिखाई देता था। (देखियेः सहीह बुख़ारीः 4823, 4824)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾

1. हा, मीम।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ ﴿٢﴾

2. शपथ है इस खुली पुस्तक की!

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾

3. हम ने ही उतारा है इस[1] को एक शुभ रात्री में। वास्तव में हम सावधान करने वाले हैं।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ ﴿٤﴾

4. उसी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۚ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۚ ﴿٥﴾

5. यह (आदेश) हमारे पास से है। हम ही भेजने वाले हैं रसूलों को।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ ﴿٦﴾

6. आप के पालनहार की दया से, वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾

7. जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

8. नहीं है कोई वंदनीय परन्तु वही जो जीवन देता तथा मारता है। तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे गुज़रे हुये पूर्वजों का पालनहार।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾

9. बल्कि वह (मुश्रिक) संदेह में खेल रहे हैं।

---

1 शुभ रात्री से अभिप्राय (लैलतुल क़द्र) है यह रमज़ान के महीने के अन्तिम दशक की एक विषम रात्री होती है। यहाँ आगे बताया जा रहा है कि इसी रात्री में पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है। इस शुभ रात की विशेषता तथा प्रधानता के लिये सूरह क़द्र देखिये। इसी शुभ रात्रि में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कुर्आन उतरने का आरंभ हुआ। फिर 23 वर्षों तक आवश्यक्तानुसार विभिन्न समय में उतरता रहा। (देखियेः सूरह बक़रा, आयत नं॰: 185)

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ⑩

10. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुवाँ[1] लायेगा।

يَغْشَى النَّاسَ هَٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑪

11. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुख़दायी यातना है।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ⑫

12. (वे कहेंगे): हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।

أَنَّىٰ لَهُمُ الذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ⑬

13. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (सत्य को) उजागर करने वाले।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ⑭

14. फिर भी वह आप से मुँह फेर गये तथा कह दिया कि एक सिखाया हुआ पागल है।

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ⑮

15. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिति पर आ जाने वाले हो।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ⑯

16. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़[2] में ले लेंगे। तो हम

1 इस प्रत्यक्ष धुंवे तथा दुख़दायी यातना की व्याख्या सहीह हदीस में यह आयी है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने यह शाप दिया कि हे अल्लाह! उन पर सात वर्ष का आकाल भेज दे। और जब आकाल आया तो भूक के कारण उन्हें धुवाँ जैसा दिखायी देने लगा। तब उन्होंने आप से कहा कि आप अल्लाह से प्रार्थना कर दें। वह हम से आकाल दूर कर देगा तो हम ईमान ले आयेंगे। और जब आकाल दूर हुआ तो फिर अपनी स्थिति पर आ गये। फिर अल्लाह ने बद्र के युद्ध के दिन उन से बदला लिया। (सहीह बुख़ारीः 4821, तथा सहीह मुस्लिमः 2798)

2 यह कड़ी पकड़ का दिन बद्र के युद्ध का दिन है। जिस में उन के बड़े बड़े सत्तर प्रमुख मारे गये तथा इतनी ही संख्या में बंदी बनाये गये। और उन की दूसरी पकड़ क़यामत के दिन होगी जो इस से भी बड़ी और गंभीर होगी।

निश्चय बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾

17. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व फ़िरऔन की जाति की। तथा उन के पास एक आदरणीय रसूल आया।

أَنْ أَدُّوٓا إِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾

18. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।

وَأَن لَّا تَعْلُوا عَلَى اللّٰهِ ۖ إِنِّيٓ ءَاتِيكُم بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾

19. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ।

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَن تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾

20. तथा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।

وَإِن لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾

21. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो तो मुझ से परे हो जाओ।

فَدَعَا رَبَّهُۥٓ أَنَّ هَٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾

22. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने पालनहार को, कि वास्तव में यह लोग अपराधी हैं।

فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾

23. (हम ने आदेश दिया) कि निकल जा रातो-रात मेरे भक्तों को लेकर। निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾

24. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने वाली सेना हैं।

كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾

25. वह छोड़ गये बहुत से बाग़ तथा जल स्रोत।

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾

26. तथा खेतियाँ और सुखदायी स्थान।

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَٰكِهِينَ ﴿٢٧﴾

27. तथा सुख के साधन जिन में वह

आनन्द ले रहे थे।

كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾

28. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तरधिकारी बना दिया दूसरे[1] लोगों को।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾

29. तो नहीं रोया उन पर आकाश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय) दिया गया।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾

30. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।

مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

31. फ़िरऔन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उल्लंघनकारियों में से था।

وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

32. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।

وَآتَيْنَاهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾

33. तथा हम ने उन्हें प्रदान कीं ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾

34. वास्तव में यह[2] कहते हैं कि

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾

35. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾

36. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ

37. यह अच्छे हैं अथवा तुब्बअ की जाति[3], तथा जो उन से पूर्व रहे हैं?

---

1 अर्थात बनी इस्राईल (यॉकूब अलैहिस्सलाम की संतान) को।

2 अर्थात मक्का के मुश्‌रिक कहते हैं कि संसारिक जीवन ही अन्तिम जीवन है। इस के पश्चात् परलोक का जीवन नहीं है।

3 तुब्बअ की जाति से अभिप्राय यमन की जाति सबा है। जिस के विनाश का वर्णन सूरह सबा में किया गया है। तुब्बअ हिम्यर जाति के शासकों की उपाधि थी जिसे उन की अवैज्ञा के कारण ध्वस्त कर दिया गया। (देखियेः सूरह सबा की

हम ने उन का विनाश कर दिया। निश्चय वह अपराधी थे।

أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

38. तथा हम ने आकाशों और धरती को एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है खेल नहीं बनाया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾

39. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु अधिक्तर लोग इसे नहीं जानते हैं।

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

40. निःसंदेह निर्णय[1] का दिन उन सब का निश्चित समय है।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

41. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के कुछ काम नहीं आयेगा और न उन की सहायता की जायेगी।

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٤١﴾

42. परन्तु जिस पर अल्लाह की दया हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा प्रभावशाली दयावान है।

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

43. निःसंदेह ज़क़्क़ूम (थोहड़) का वृक्ष।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾

44. पापियों का भोजन है।

طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾

45. पिघले हुये ताँबे जैसा, जो खौलेगा पेटों में।

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾

46. गर्म पानी के खौलने के समान।

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾

47. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो, तथा धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾

48. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾

आयत- 15, से 19, तक।)

1 अर्थात आकाशों तथा धरती की रचना लोगों की परीक्षा के लिये की गई है। और परीक्षा फल के लिये प्रलय का समय निर्धारित कर दिया गया है।

अत्यंत गर्म जल की यातना।[1]

49. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।

ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾

50. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह कर रहे थे।

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

51. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾

52. बाग़ों तथा जल स्रोतों में।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

53. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।

يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

54. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से।[2]

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾

55. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

56. वह उस स्वर्ग में मौत[3] नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

57. आप के पालनहार की दया से, वही

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

---

1 हदीस में है कि इस से जो कुछ उस के भीतर होगा पिघल कर दोनों पाँव के बीच से निकल जायेगा, फिर उसे अपनी पहली दशा पर कर दिया जायेगा। (तिर्मिज़ीः 2582, इस हदीस की सनद हसन है।)

2 हूरः अर्थात गोरी और बड़े बड़े नैनों वाली स्त्रियों।

3 हदीस में है कि जब स्वर्गी स्वर्ग में और नारकी नरक में चले जायेंगे तो मौत को स्वर्ग और नरक के बीच ला कर बध कर दिया जायेगा। और एलान कर दिया जायेगा कि अब मौत नहीं होगी। जिस से स्वर्गी प्रसन्न पर प्रसन्न हो जायेंगे और नारकियों को शोक पर शोक हो जायेगा। (सहीह बुख़ारीः 6548, सहीह मुस्लिमः 2850)

बड़ी सफलता है।

58. तो हम ने सरल कर दिया इस (कुर्आन) को आप की भाषा में ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

59. अतः आप प्रतीक्षा करें[1] वह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात परिणाम की।

सूरह जासियह - 45

सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 37 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 28 में प्रलय के दिन प्रत्येक समुदाय के जासियह अर्थात घुटनों के बल गिरे हुये होने की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम सूरह जासियह है।
- इस की आरंभिक आयतों में तौहीद की निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। जिस की ओर कुर्आन बुला रहा है।
- इस की आयत 7 से 15 तक में अल्लाह की आयतें न सुनने पर परलोक में बुरे परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि वे विरोधियों को क्षमा कर दें।
- आयत 16 से 20 तक में बनी इस्राईल को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने धर्म का परस्कार पा कर उस में विभेद कर लिया। और अब जो धर्म विधान उतारा जा रहा है उस का पालन करें।
- आयत 21 से 35 में परलोक के प्रतिफल के बारे में कुछ संदेहों का निवारण किया गया है।
- इस की अंतिम आयतों में अल्लाह की प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीम।

حٰمٓ ①

2. इस पुस्तक[1] का उतरना अल्लाह, सब चीज़ों और गुणों को जानने वाले की ओर से है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

1 इस सूरह में भी तौहीद तथा परलोक के संबन्ध में मुश्रिकों के संदेह को दूर किया गया तथा उन की दुराग्रह की निन्दा की गई है।

3. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ईमान लाने वालों के लिये।

إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾

4. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला[1] दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾

5. तथा रात और दिन के आने- जाने में, तथा अल्लाह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवित किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात् तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ-बूझ रखते हों।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ أَنزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِن رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٥﴾

6. यह अल्लाह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहें हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अल्लाह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे?

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

7. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये!

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾

8. जो अल्लाह की उन आयतों को जो उस के सामने पढ़ी जायें सुने, फिर भी वह अकड़ता हुआ (कुफ़्र पर) अड़ा रहे, जैसे कि उन को सुना ही

يَسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾

1 तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकरण में क़ुर्आन ने प्रत्येक स्थान पर आकाश तथा धरती में अल्लाह के सामर्थ्य की फैली हुई निशानियों को प्रस्तुत किया है। और यह बताया है कि जैसे उस ने वर्षा द्वारा मनुष्य के आर्थिक जीवन की व्यवस्था की है वैसे ही रसूलों तथा पुस्तकों द्वारा उस के आत्मिक जीवन की भी व्यवस्था कर दी है जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यह विश्व की व्यवस्था स्वयं ऐसी खुली पुस्तक है जिस के पश्चात् ईमान लाने के लिये किसी और प्रमाण की आवश्यक्ता नहीं है।

न हो! तो आप उसे दुःखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ ءَايَٰتِنَا شَيْـًٔا ٱتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾

9. और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहास बना ले। यही हैं जिन के लिये अपमानकारी यातना है।

مِّن وَرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِى عَنْهُم مَّا كَسَبُوا۟ شَيْـًٔا وَلَا مَا ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوْلِيَآءَ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾

10. तथा उन के आगे नरक है। और नहीं काम आयेगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बनाया है। और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

هَٰذَا هُدًى ۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ﴿١١﴾

11. यह (कुर्आन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने कुफ़्र किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्हीं के लिये यातना है दुःखदायी यातना।

ٱللَّهُ ٱلَّذِى سَخَّرَ لَكُمُ ٱلْبَحْرَ لِتَجْرِىَ ٱلْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

12. अल्लाह ही ने वश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चलें उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

13. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच-विचार करें।

قُل لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يَغْفِرُوا۟ لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ ٱللَّهِ لِيَجْزِىَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

14. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर[1] दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अल्लाह के

1 अर्थात उन की ओर से जो दुःख पहुँचता है।

दिनों[1] की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।

15. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे[2] जाओगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ أَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

16. तथा हम ने प्रदान की इस्राईल की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नबूवत (दूतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीज़ों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उन के युग के) संसारवासियों पर।

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ وَٱلنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلْنَٰهُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٦﴾

17. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश। तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान[3] आ जाने के पश्चात् आपस के द्वेष के कारण। निःसंदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।

وَءَاتَيْنَٰهُم بَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْأَمْرِ ۖ فَمَا ٱخْتَلَفُوٓا۟ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِى بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾

18. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इस का, तथा न चलें उन की आकांक्षाओं पर जो ज्ञान नहीं रखते।

ثُمَّ جَعَلْنَٰكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ ٱلْأَمْرِ فَٱتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَ ٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾

19. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह

إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا۟ عَنكَ مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا ۚ وَإِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ

1 अल्लाह के दिनों से अभिप्राय वे दिन हैं जिन में अल्लाह ने अपराधियों को यातनायें दी हैं। (देखियेः सूरह इब्राहीम, आयतः 5)

2 अर्थात प्रलय के दिन। जिस अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है उसी के पास जाना भी है।

3 अर्थात वैध तथा अवैध, और सत्योसत्य का ज्ञान आ जाने के पश्चात्।

بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ⑲

अत्याचारी एक-दूसरे के मित्र हैं। और अल्लाह आज्ञाकारियों का साथी है।

هَٰذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ⑳

20. यह (कुर्आन) सूझ की बातें हैं सब मनुष्यों के लिये। तथा मार्ग दर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास करें।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَن نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ㉑

21. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म किया है कि हम कर देंगे उन को उन के समान जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हैं कि उन का जीवन तथा मरण समान[1] हो जाये? वह बुरा निर्णय कर रहे हैं।

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ㉒

22. तथा पैदा किया है अल्लाह ने आकाशों एवं धरती को न्याय के साथ और ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी को उस के कर्म का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَن يَهْدِيهِ مِن بَعْدِ اللَّهِ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ㉓

23. क्या आप ने उसे देखा जिस ने बना लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को। तथा कुपथ कर दिया अल्लाह ने उसे जानते हुये, और मुहर लगा दी उस के कान तथा दिल पर, और बना दिया उस की आँख पर आवरण (पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह दिखायेगा उसे अल्लाह के पश्चात्? तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ㉔

24. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही संसारिक जीवन है। हम यहीं मरते और जीते हैं। और हमारा विनाश युग (काल) ही करता है। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की

1 अर्थात दोनों के परिणाम में अवश्य अन्तर होगा।

बात[1] कर रहे हैं।

25. और जब पढ़ कर सुनाई जाती हैं उन्हें हमारी खुली आयतें तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

26. आप कह दें: अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिक्तर लोग (इस तथ्य को) नहीं[2] जानते।

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

27. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾

28. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म-पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लोगों को तुम्हारे कर्मों का।

وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

29. यह हमारा कर्म-पत्र है जो बोल रहा है तुम पर सहीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।

هَٰذَا كِتَابُنَا يَنطِقُ عَلَيْكُم بِالْحَقِّ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾

30. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ

---

1 हदीस में है कि अल्लाह फ़रमाता है कि मनुष्य मुझे बुरा कहता है। वह युग को बुरा कहता है जब कि युग मैं हूँ। रात और दिन मेरे हाथ में है। (सहीह बुख़ारीः 6181) हदीस का अर्थ यह है कि युग को बुरा कहना अल्लाह को बुरा कहना है। क्योंकि युग में जो होता है उसे अल्लाह ही करता है।

2 आयत का अर्थ यह है कि जीवन और मौत देना अल्लाह के हाथ में है। वही जीवन देता है तथा मारता है। और उस ने संसार में मरने के बाद प्रलय के दिन फिर जीवित करने का समय रखा है। ताकि उन के कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे।

رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾

किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٣١﴾

31. परन्तु जिन्होंने कुफ़ किया (उन से कहा जायेगा): क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थीं? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे?।

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ﴿٣٢﴾

32. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहते थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखते हैं तथा हम विश्वास करने वाले नहीं हैं।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٣﴾

33. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुष्कर्मों की बुराईयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٤﴾

34. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे[1] जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।

ذَٰلِكُمْ بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا

35. यह (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयतों को उपहास, तथा धोखे में रखा तुम्हें

1 जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगाः क्या मैं ने तुम्हें पत्नी नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें सम्मान नहीं दिया था? क्या मैं ने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे आधीन नहीं किये थे? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा। वह कहेगाः हाँ ये सहीह है, हे मेरे पालनहार! फिर अल्लाह उस से प्रश्न करेगाः क्या तुम्हें मुझ से मिलने का विश्वास था? वह कहेगाः "नहीं।" अल्लाह फ़रमायेगाः (तो आज मैं तुझे नरक में डाल कर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा। (सहीह मुस्लिमः 2968)

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾

संसारिक जीवन ने। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।[1]

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾

37. और उसी की महिमा[2] है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

---

1 अर्थात अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना। यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उस से निकलने की संभावना नहीं। तथा न इस बात की आशा है कि किसी प्रकार तुम्हें तौबा तथा क्षमा याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये। और तुम क्षमा माँग कर अल्लाह को मना लो।

2 अर्थात महिमा और बड़ाई अल्लाह के लिये विशेष है। जैसा कि एक हदीस कुद्सी में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि महिमा मेरी चादर है तथा बड़ाई मेरा तहबंद है। और जो भी इन दोनों में से किसी एक को मुझ से खींचेगा तो मैं उसे नरक में फेंक दूँगा। (सहीह मुस्लिमः 2620)

सूरह अह्क़ाफ़ - 46

सूरह अह्क़ाफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 35 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 21 में आद जाति की बस्ती ((अह्क़ाफ़)) की चर्चा की गई है जो यमन के समीप एक रेतीला क्षेत्र है। इसी कारण इस का नाम सूरह अह्क़ाफ़ है।
- इस की आयत 21 से 28 तक में क़ुर्आन के अल्लाह की बाणी होने का दावा प्रस्तुत करते हुये शिर्क के अनुचित होने को उजागर किया गया है। और नबूवत से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है। इसी के साथ ईमान वालों को दिलासा तथा शुभसूचना दी गई है। और काफ़िरों के बूरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- इस में ((आद)) जाति के परिणाम से शिक्षा प्राप्त करने को कहा गया है।
- आयत 29 से 32 तक जिन्नों के क़ुर्आन पाक सुनने, तथा उस पर ईमान लाने का वर्णन है।
- इस में मरने के पश्चात् जीवन से संबंधित संदेह को दूर किया गया है। और नरक की यातना से सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने का निर्देश दिया गया है। क्योंकि आप से पूर्व जो नबी आये थे उन को भी विभिन्न प्रकार से सताया गया था परन्तु उन्होंने धैर्य धारण किया।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

حٰمٓ ۝١

1. हा, मीम।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢

2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا

3. हम ने नहीं उत्पन्न किया है आकाशों

بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُعْرِضُونَ ③

तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चित अवधि तक के लिये। तथा जो काफ़िर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुये हैं।

قُلْ أَرَءَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ ۖ ائْتُونِي بِكِتَابٍ مِّن قَبْلِ هَٰذَا أَوْ أَثَارَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ④

4. आप कहें कि भला देखो कि जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साझा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक[1] प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ[2]ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ⑤

5. तथा उस से अधिक बहका हुआ कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चेत (अन्जान) हों?

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ⑥

6. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इबादत का इन्कार कर[3] देंगे।

1 अर्थात यदि तुम्हें मेरी शिक्षा का सत्य होना स्वीकार नहीं तो किसी धर्म की आकाशीय पुस्तक ही से सिद्ध कर के दिखा दो कि सत्य की शिक्षा कुछ और है। और यह भी न हो सके तो किसी ज्ञान पर आधारित कथन और रिवायत ही से सिद्ध कर दो कि यह शिक्षा पूर्व के नबियों ने नहीं दी है। अर्थ यह है कि जब आकाशों और धरती की रचना अल्लाह ही ने की है तो उस के साथ दूसरों को पूज्य क्यों बनाते हो?

2 अर्थात इस से पहले वाली आकाशीय पुस्तकों का।

3 इस विषय की चर्चा कुर्आन की अनेक आयतों में आई है। जैसे सूरह यूनुस, आयतः

7. और जब पढ़ कर सुनाई गईं उन को हमारी खुली आयतें तो काफ़िरों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑦

8. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे[1] स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का कोई अधिकार नहीं रखते।[2] वही अधिक ज्ञानी है उन बातों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच। और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

9. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ, और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा[3] और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ⑨

10. आप कह देंः तुम बताओ यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इस्राईल की

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑩

290, सूरह मर्यम, आयतः 81, 82, सूरह अन्कबूत, आयतः 25, आदि।

1 अर्थात कुर्आन को।

2 अर्थात अल्लाह की यातना से मेरी कोई रक्षा नहीं कर सकता। (देखियेः सूरह अहक़ाफ़, आयतः 44, 47)

3 अर्थात संसार में। अन्यथा यह निश्चित है कि परलोक में ईमान वाले के लिये स्वर्ग तथा काफ़िर के लिये नरक है। किन्तु किसी निश्चित व्यक्ति के परिणाम का ज्ञान किसी को नहीं।

संतान में से इसी जैसी बात[1] पर, फिर वह ईमान लाया तथा तुम घमंड कर गये? तो वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता अत्याचारी जाति को।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾

11. और काफिरों ने कहा, उन से जो ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता तो वह पहले नहीं आते हम से उस की ओर। और जब नहीं पाया मार्ग दर्शन उन्हों ने इस (कुर्आन) से तो अब यही कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।

وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾

12. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक मार्गदर्शक तथा दया बन कर आ चुकी। और यह पुस्तक (कुर्आन) सच्च[3] बताने वाली है अर्बी भाषा में।[4] ताकि वह सावधान कर दे अत्याचारियों को और शुभसूचना हो सदाचारियों के लिये।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ

13. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर

---

1 जैसे इस्राईली विद्वान अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने इसी कुर्आन जैसी बात के तौरात में होने की गवाही दी कि तौरात में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने का वर्णन है। और वे आप पर ईमान भी लाये। (सहीह बुख़ारीः 3813, सहीह मुस्लिमः 2484)

2 अर्थात अत्याचारियों को उन के अत्याचार के कारण ही कुपथ में रहने देता है। ज़बरदस्ती किसी को सीधी राह पर नहीं चलाता।

3 अपने पूर्व की आकाशीय पुस्तकों को।

4 अर्थात इस की कोई मूल शिक्षा ऐसी नहीं जो मूसा की पुस्तक में न हो। किन्तु यह अर्बी भाषा में है। इसलिये कि इस से प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे। फिर सारे लोग। इसीलिये कुर्आन का अनुवाद प्राचीन काल ही से दूसरी भाषाओं में किया जा रहा है। ताकि जो अर्बी नहीं समझते वह भी उस से शिक्षा ग्रहण करें।

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾

स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा उन पर, और न वह[1] उदासीन होंगे।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

14. यही स्वर्गीय हैं जो सदावासी होंगे उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले) में जो वे करते रहे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

15. और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को अपने माता पिता के साथ उपकार करने का। उसे गर्भ में रखा है उस की माँ ने दुःख झेल कर। तथा जन्म दिया उस को दुःख झेल कर। तथा उस के गर्भ में रखने तथा दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने रही।[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस वर्ष का हुआ, तो कहने लगाः हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तूने प्रदान किया है मुझ को तथा मेरे माता-पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा

1 (देखियेः सूरह, हा, मीम सजदा, आयतः 31)
हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहाः हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतायें कि फिर किसी से कुछ पूछना न पड़े। आप ने फ़रमायाः कहो कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया फिर उसी पर स्थित हो जाओ। (सहीह मुस्लिमः 38)

2 इस आयत तथा कुर्आन की अन्य आयतों में भी माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया गया है। तथा उन के लिये प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है। देखियेः सूरह बनी इस्राईल, आयतः 170। हदीसों में भी इस विषय पर अति बल दिया गया है। आदरणीय अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने आप से पूछा कि मेरे सदव्यवहार का अधिक योग्य कौन है? आप ने फरमायाः तेरी माँ। उस ने कहाः फिर कौन है? आप ने कहाः तेरी माँ। उस ने कहाः फिर कौन है? आप ने कहाः तेरी माँ। तथा चौथी बार आप ने कहाः तेरे पिता। (सहीह बुख़ारीः 5971, तथा सहीह मुस्लिमः 2548)

सुधार दे मेरे लिये मेरी संतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

16. वही हैं स्वीकार कर लेंगे हम जिन से उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में हैं उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

17. तथा जिस ने कहा अपने माता-पिता सेः धिक है तुम दोनों पर! क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला[1] जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये[2] इस से पूर्व? और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अल्लाह कीः तेरा विनाश हो! तू ईमान ला! निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।[3]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

18. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुज़र चुके इन से पूर्व जिन्न तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ

19. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ हैं उन के

---

1 अर्थात मौत के पश्चात् प्रलय के दिन पुनः जीवित कर के समाधि से निकाला जाऊँगा। इस आयत में बुरी संतान का व्यवहार बताया गया है।

2 और कोई फिर जीवित हो कर नहीं आया।

3 इस आयत में मुसलमान माता-पिता का विवाद एक काफ़िर पुत्र के साथ हो रहा है जिस का वर्णन उदाहरण के लिये इस आयत में किया गया है। और इस प्रकार का वाद-विवाद किसी भी मुसलमान तथा काफ़िर में हो सकता है। जैसा कि आज अनैक पशिचमि आदि देशों में हो रहा है।

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝١٩

कर्मानुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۖ أَذْهَبْتُمْ
طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ
فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ
تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۝٢٠

20. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफ़िर हो गये अग्नि के। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। तो आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनुचित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ ۖ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ
خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٢١

21. तथा याद करो आद के भाई (हूद[1]) को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अहक़ाफ़[2] में जब कि गुज़र चुके सावधान करने वाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात्, कि इबादत (वंदना) न करो अल्लाह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝٢٢

22. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।

1 इस में मक्का के प्रमुखो को जिन्हें अपने धन तथा बल पर बड़ा गर्व था अरब क्षेत्र की एक प्राचीन जाति की कथा सुनाने को कहा जा रहा है जो बड़ी सम्पन्न तथा शक्तिशाली थी।

2 अहक़ाफ़ः अर्थातः ऊँचा रेत का टीला है। यह जाति उसी क्षेत्र में निवास करती थी जिसे ((रुब्अल ख़ाली)) (अर्थात अरब टापू का चौथाई भाग जो केवल मरुस्थल है) कहा जाता है। यह क्षेत्र ओमान से यमन तक फैला हुआ था। जहाँ आज कोई आबादी नहीं है। इसी जाति को प्रथम आद भी कहा गया है।

قَالَ إِنَّمَا ٱلْعِلْمُ عِندَ ٱللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَلَٰكِنِّىٓ أَرَىٰكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ٢٣

23. हूद ने कहाः उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहे हो।

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا۟ هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا ٱسْتَعْجَلْتُم بِهِۦ ۖ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ٢٤

24. फिर जब उन्होंने देखा एक बादल आते हुये अपनी वादियों की ओर तो कहाः यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यह आँधी है जिस में दुःखदायी यातना है।[1]

تُدَمِّرُ كُلَّ شَىْءٍۭ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا۟ لَا يُرَىٰٓ إِلَّا مَسَٰكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْقَوْمَ ٱلْمُجْرِمِينَ ٢٥

25. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं अपराधि लोगों को।

وَلَقَدْ مَكَّنَّٰهُمْ فِيمَآ إِن مَّكَّنَّٰكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَٰرًا وَأَفْـِٔدَةً فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ أَبْصَٰرُهُمْ وَلَآ أَفْـِٔدَتُهُم مِّن شَىْءٍ إِذْ كَانُوا۟ يَجْحَدُونَ

26. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन[2] को नहीं दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल, तो नहीं काम आये उन के कान और उन की आँखें तथा न उन

1 हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बादल या आँधी देखते तो व्याकुल हो जाते। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहाः अल्लाह के रसूल! लोग बादल देख कर वर्षा की आशा में प्रसन्न होते हैं और आप क्यों व्याकुल हो जाते हैं? आप ने कहाः आईशा! मुझे भय रहता है कि इस में कोई यातना न हो? एक जाति को आँधी से यातना दी गई। और एक जाति ने यातना देखी तो कहाः यह बादल हम पर वर्षा करेगा। (सहीह बुख़ारीः 4829, तथा सहीह मुस्लिमः 899)

2 अर्थात मक्का के काफ़िरों को।

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾

के दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का वह उपहास कर रहे थे।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दीं ताकि वह वापिस आ जायें।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अतिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से, और यह[1] उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिन्नों के एक[2] गिरोह को ताकि वह कुर्आन सुनें। तो जब वह

1 अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त को पूज्य बनाना।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने कुछ अनुयायियों (सहाबा) के साथ उकाज़ के बाज़ार की ओर जा रहे थे। इन दिनों शैतानों को आकाश की सूचनायें मिलनी बंद हो गई थीं। तथा उन पर आकाश से अंगारे फेंके जा रहे थे। तो वे इस खोज में पूर्व तथा पश्चिम की दिशाओं में निकले कि इस का क्या कारण है? कुछ शैतान तिहामा (हिजाज़) की ओर भी आये और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गये। उस समय आप ((नख़्ला)) में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो उस की ओर कान लगा दिये। फिर कहा कि यही वह चीज़ है जिस के कारण हम को आकाश की सूचना मिलनी बंद हो गई है। और अपनी जाति से जा कर यह बात कही। तथा अल्लाह ने यह आयत अपने नबी पर उतारी। (सहीह बुख़ारीः 4921)
इन आयतों में संकेत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जैसे मनुष्यों के नबी थे वैसे ही जिन्नों के भी नबी थे। और सभी नबी मनुष्यों में आये। (देखियेः सूरह नह्ल,आयतः 43, सूरह फ़ुर्क़ान, आयतः 20)

उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप रहो। और जब पढ़ लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।

قَالُوا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

30. उन्होंने कहाः हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मूसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾

31. हे हमारी जाति! मान लो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दुखदायी यातना से।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۗ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

32. तथा जो मानेगा नहीं अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं हैं वह विवश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक। यही लोग खुले कुपथ में हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ۗ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अल्लाह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दों को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۗ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۗ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफ़िर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा): क्या यह सच्च नहीं है? वे कहेंगेः क्यों नहीं? हमारे

पालनहार की शपथ! वह कहेगाः तब चखो यातना उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

35. तो (हे नबी!) आप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे हैं परन्तु दिन के कुछ[1] क्षण। बात पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश होगा जो अवैज्ञाकारी हैं।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात प्रलय की भीषणता के आगे संसारिक सुख क्षणभर प्रतीत होगा। हदीस में है कि नारकियों में से प्रलय के दिन संसार के सब से सुखी व्यक्ति को ला कर नरक में एक बार डाल कर कहा जायेगाः क्या कभी तुम ने सुख देखा है? वह कहेगाः मेरे पालनहार! (कभी) नहीं (देखा।)
(सहीह मुस्लिम शरीफ़ः 2807)

सूरह मुहम्मद - 47

सूरह मुहम्मद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 38 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 27 में नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम आया है। जिस के कारण इस का नाम सूरह मुहम्मद है। इस का एक दूसरा नाम ((क़िताल)) भी है जो इस की आयत 20 से लिया गया है।
- इस में बताया गया है कि काफ़िरों तथा ईमान वालों की कार्य प्रणाली विभिन्न है। इसलिये उन के साथ अल्लाह का व्यवहार भी अलग-अलग होगा। वह काफ़िरों के कर्म असफल कर देगा। और ईमान वालों की दशा सुधार देगा।
- इस में आयत 4 से 15 तक ईमान वालों को युद्ध के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। और परलोक के उत्तम फल की शुभसूचना दी गयी है।
- आयत 16 से 32 तक मुनाफ़िक़ों कि दशा बतायी गयी है जो जिहाद के डर से काफ़िरों से मिल कर षड्यंत्र रचते थे।
- इस की आयत 33 से 38 तक साधारण मुसलमानों को जिहाद करने तथा अल्लाह की राह में दान करने की प्रेरणा दी गयी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. जिन लोगों ने कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा अल्लाह की राह से रोका, (अल्लाह ने) व्यर्थ (निष्फल) कर दिया उन के कर्मों को।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝١

2. तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उस (क़ुर्आन) पर ईमान लाये जो उतारा गया है मुहम्मद पर, और वह सच्च है उन के पालनहार

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢

की ओर से, तो दूर कर दिया उन से उन के पापों को तथा सुधार दिया उन की दशा को।

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾

3. यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ़्र किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है अल्लाह लोगों को उन की सहीह दशायें।[1]

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۤ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڗ ذٰلِكَ ڔ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

4. तो जब (युद्ध में) भिड़ जाओ काफ़िरों से तो गर्दनें उड़ाओ, यहाँ तक की जब कुचल दो उन को तो उन्हें दृढ़ता से बाँधो। फिर उस के बाद या तो उपकार कर के छोड़ दो या अर्थदण्ड ले कर। यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार रख दे।[2] यह आदेश है। और यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं उन से बदला ले लेता। किन्तु (यह आदेश इस लिये दिया) ताकि तुम्हारी एक-दूसरे द्वारा परीक्षा ले। और जो मार दिये गये अल्लाह की राह में तो वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा उन के कर्मों को।

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾

5. वह उन्हें मार्गदर्शन देगा तथा सुधार देगा उन की दशा।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾

6. और प्रवेश करायेगा उन्हें स्वर्ग में

1 यह सूरह बद्र के युद्ध से पहले उतरी। जिस में मक्का के काफ़िरों के आक्रमण से अपने धर्म और प्राण तथा मान-मर्यादा की रक्षा के लिये युद्ध करने की प्रेरणा तथा साहस और आवश्यक निर्देश दिये गये हैं।

2 इस्लाम से पहले युद्ध के बंदियों को दास बना लिया जाता था किन्तु इस्लाम उन्हें उपकार कर के या अर्थ दण्ड ले कर मुक्त करने का आदेश देता है। इस आयत में यह संकेत है कि इस्लाम जिहाद की अनुमति दूसरों के आक्रमण से रक्षा के लिये देता है।

जिस की पहचान दे चुका है उन को।

7. हे ईमान वालो! यदि तुम सहायता करोगे अल्लाह (के धर्म) की तो वह सहायता करेगा तुम्हारी। तथा दृढ़ (स्थिर) कर देगा तुम्हारे पैरों को।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تَنصُرُوا۟ ٱللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ⑦

8. और जो काफ़िर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَٰلَهُمْ ⑧

9. यह इसलिये कि उन्होंने बुरा माना उसे जो अल्लाह ने उतारा और उस ने उन के कर्म व्यर्थ कर[1] दिये।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا۟ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَٰلَهُمْ ⑨

10. तो क्या वह चले- फिरे नहीं धरती में कि देखते उन लोगों का परिणाम जो इन से पहले गुज़रे? विनाश कर दिया अल्लाह ने उन का तथा काफ़िरों के लिये इसी के समान (यातनायें) है।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَيَنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَٰفِرِينَ أَمْثَٰلُهَا ⑩

11. यह इसलिये कि अल्लाह संरक्षक (सहायक) है उन का जो ईमान लाये और काफ़िरों का कोई संरक्षक (सहायक)[2] नहीं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ مَوْلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَأَنَّ ٱلْكَٰفِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ⑪

12. निःसंदेह अल्लाह प्रवेश देगा उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें बहती होंगी। तथा जो काफ़िर हो गये वह आनन्द लेते तथा खाते हैं जैसे[3] पशु

إِنَّ ٱللَّهَ يُدْخِلُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ ۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ ٱلْأَنْعَٰمُ وَٱلنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ⑫

---

1 इस में इस ओर संकेत है कि बिना ईमान के अल्लाह के हाँ कोई सत्कर्म मान्य नहीं है।

2 उहुद के युद्ध में जब काफ़िरों ने कहा कि हमारे पास उज़्ज़ा (देवी) है, और तुम्हारे पास उज़्ज़ा नहीं। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा। उन का उत्तर इसी आयत से दो। (सहीह बुख़ारीः 4043)

3 अर्थात परलोक से निश्चिन्त संसारिक जीवन ही को सब कुछ समझते हैं।

खाते हैं। और अग्नि उन का आवास (स्थान) हैं।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾

13. तथा बहुत सी बस्तियों को जो अधिक शक्तिशाली थीं आप की बस्ती से, जिस ने आप को निकाल दिया, हम ने ध्वस्त कर दिया, तो कोई सहायक न हुआ उन का।

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُم ﴿١٤﴾

14. तो क्या जो अपने पालनहार के खुले प्रमाण पर हो वह उस के समान हो सकता है शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का दुष्कर्म तथा चलता हो अपनी मनमानी पर?

مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

15. उस स्वर्ग की विशेषता जिस का वचन दिया गया है आज्ञाकारियों को, उस में नहरें हैं निर्मल जल की, तथा नहरें हैं दूध की, नहीं बदलेगा जिस का स्वाद, तथा नहरें हैं मदिरा की पीने वालों के स्वाद के लिये, तथा नहरें हैं मधु की स्वच्छ। तथा उन्हीं के लिये उन में प्रत्येक प्रकार के फल हैं, तथा उन के पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या यह) उस के समान होंगे जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड-खण्ड कर देगा उन की आँतों को?

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾

16. तथा उन में से कुछ वह हैं जो कान धरते हैं आप की ओर यहाँ तक कि जब निकलते हैं आप के पास से तो कहते हैं उन से जिन को ज्ञान दिया गया है कि अभी क्या[1] कहा है? यही

1 यह कुछ मुनाफ़िकों की दशा का वर्णन है जिन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व

वह हैं कि मुहर लगा दी है अल्लाह ने उन के दिलों पर और वही चल रहे हैं अपनी मनोकांक्षाओं पर।

17. और जो सीधी राह पर हैं अल्लाह ने अधिक कर दिया है उन को मार्ग दर्शन में। और प्रदान किया है उन को उन का सदाचार।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ۝١٧

18. तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रलय ही की, कि आ जाये उन के पास सहसा? तो आ चुके हैं उस के लक्षण।[1] फिर कहाँ होगा उन के शिक्षा लेने का समय, जब वह (क़्यामत) आ जायेगी उन के पास?

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ۝١٨

19. तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई वंदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा[2] माँगिये अपने पाप के लिये, तथा ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिये। और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को।

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۝١٩

सल्लम) की बातें समझ में नहीं आती थीं। क्योंकि वे आप की बातें दिल लगा कर नहीं सुनते थे। तथा आप की बातों का इस प्रकार उपहास करते थे।

1 आयत में कहा गया है कि प्रलय के लक्षण आ चुके हैं। और उन में सब से बड़ा लक्षण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आगमन है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि आप ने फ़रमायाः ((मेरा आगमन तथा प्रलय इन दो ऊंगलियों के समान है।)) (सहीह बुख़ारीः 4936) अर्थात बहुत समीप है। जिस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार दो ऊंगलियों के बीच कोई तीसरी ऊंगली नहीं इसी प्रकार मेरे और प्रलय के बीच कोई नबी नहीं। मेरे आगमन के पश्चात् अब प्रलय ही आयेगी।

2 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः मैं दिन में सत्तर बार से अधिक अल्लाह से क्षमा माँगता तथा तौबा करता हूँ। (बुख़ारीः 6307)
और फ़रमाया कि लोगो! अल्लाह से क्षमा माँगो। मैं दिन में सौ बार क्षमा माँगता हूँ। (सहीह मुस्लिमः 2702)

20. तथा जो ईमान लाये उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारी जाती कोई सूरह (जिस में युद्ध का आदेश हो)? तो जब एक दृढ़ सूरह उतार दी गई तथा उस में वर्णन कर दिया गया युद्ध का तो आप ने उन्हें देख लिया जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है कि वह आप की ओर उस के समान देख रहे हैं जो मौत के समय अचेत पड़ा हुआ हो। तो उन के लिये उत्तम है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ۝٢٠

21. आज्ञा पालन तथा उचित बात बोलना। तो जब (युद्ध का) आदेश निर्धारित हो गया तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो उन के लिये उत्तम है।

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝٢١

22. फिर यदि तुम विमुख[1] हो गये तो दूर नहीं कि तुम उपद्रव करोगे धरती में तथा तोड़ोगे अपने रिश्तों (संबंधों) को।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۝٢٢

23. यही हैं जिन को अपनी दया से दूर कर दिया है अल्लाह ने, और उन्हें बहरा, तथा उन की आँखें अंधी कर दी हैं।[2]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ۝٢٣

24. तो क्या लोग सोच-विचार नहीं करते या उन के दिलों पर ताले लगे हुये हैं?

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ۝٢٤

25. वास्तव में जो फिर गये पीछे इस के

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

1 अर्थात अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करने से। इस आयत में संकेत है कि धरती में उपद्रव, तथा रक्तपात का कारण अल्लाह तथा उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा से विमुख होने का परिणाम है। हदीस में है कि जो रिश्ते (संबंध) को जोड़ेगा तो अल्लाह उस को (अपनी दया से) जोड़ेगा। और जो तोड़ेगा तो उसे (अपनी दया से) दूर कर देगा। (सहीह बुखारीः 4820)

2 अतः वे न तो सत्य को देख सकते हैं और न ही सुन सकते हैं।

الْهُدَى الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

पश्चात् कि उजागर हो गया उन के लिये मार्ग दर्शन तो शैतान ने सुन्दर बना दिया (पापों को) उन के लिये, तथा उन को बड़ी आशा दिलाई है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

26. यह इस कारण हुआ कि उन्होंने कहा उन से जिन्होंने बुरा माना उस (कुर्आन) को जिसे उतारा अल्लाह ने कि हम तुम्हारी बात मानेंगे कुछ कार्य में। तथा अल्लाह जानता है उन की गुप्त बातों को।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

27. तो कैसी दुर्गत होगी उन की जब प्राण निकाल रहे होंगे फ़रिश्ते मारते हुये उन के मुखों तथा उन की पीठों पर।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

28. यह इसलिये कि वे चले उस राह पर जिस ने अप्रसन्न कर दिया अल्लाह को, तथा बुरा माना उस की प्रसन्नता को तो उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।[1]

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

29. क्या समझ रखा है उन्होंने जिन के दिलों में रोग है कि नहीं खोलेगा अल्लाह उन के द्वेषों को?[2]

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

30. और (हे नबी!) यदि हम चाहें तो दिखा दें आप को उन्हें, तो पहचान लेंगे आप उन को उन के मुख से। और आप अवश्य पहचान लेंगे उन को[3] (उन की) बात के ढंग से। तथा

---

1 आयत में उन के दुष्परिणाम की ओर संकेत है जो इस्लाम के साथ उस के विरोधी नियमों और विधानों को मानते हैं। और युद्ध के समय काफ़िरों का साथ देते हैं।

2 अर्थात जो द्वैष और बैर इस्लाम और मुसलामनों से रखते हैं उसे अल्लाह उजागर अवश्य कर के रहेगा।

3 अर्थात उन के बात करने की रीति से।

अल्लाह जानता है उन के कर्मों को।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

31. और हम अवश्य परीक्षा लेंगे तुम्हारी, ताकि जाँच लें तुम में से मुजाहिदों तथा धैर्यवानों को तथा जाँच लें तुम्हारी दशाओं को।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

32. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और रोका अल्लाह की राह (धर्म) से तथा विरोध किया रसूल का इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उनके लिये मार्गदर्शन, वह कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह को कुछ। तथा वह व्यर्थ कर देगा उन के कर्मों को।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾

33. हे लोगो जो ईमान लाये हो! आज्ञा मानो अल्लाह की, तथा आज्ञा मानो[1] रसूल की तथा व्यर्थ न करो अपने कर्मों को।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

34. जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा रोका अल्लाह की राह से, फिर वे मर गये कुफ़्र की स्थिति में तो कदापि क्षमा नहीं करेगा अल्लाह उन को।

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ

35. अतः तुम निर्बल न बनो और न (शत्रु को) संधि की ओर[2] पुकारो।

---

1 इस आयत में कहा गया है कि जिस प्रकार कुर्आन को मानना अनिवार्य है उसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत (हदीसों) का पालन करना भी अनिवार्य है। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी उस के सिवा जिस ने इन्कार किया। कहा गया कि कौन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः जिस ने मेरी आज्ञाकारी की तो वह स्वर्ग में जायेगा। और जिस ने मेरी आज्ञाकारी नहीं की तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुख़ारीः 7280)

2 आयत का अर्थ यह नहीं कि इस्लाम संधि का विरोधी है। इस का अर्थ यह है कि ऐसी दशा में शत्रु से संधि न करो कि वह तुम्हें निर्बल समझने लगे। बल्कि

وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

तथा तुम्हीं उच्च रहने वाले हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा तुम्हारे कर्मों को।

إِنَّمَا الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾

36. यह संसारिक जीवन तो एक खेल कूद है और यदि तुम ईमान लाओ तथा अल्लाह से डरते रहो तो वह प्रदान करेगा तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल। और नहीं माँग करेगा तुम से तुम्हारे धनों की।

إِن يَسْـَٔلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

37. और यदि वह तुम से माँगे और तुम्हारा पूरा धन माँगे तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह खोल[1] देगा तुम्हारे द्वेषों को।

هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا أَمْثَٰلَكُم ﴿٣٨﴾

38. सुनो! तुम लोग हो जिन को बुलाया जा रहा है ताकि दान करो अल्लाह की राह में, तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं। और जो कंजूसी करता[2] है तो वह अपने आप ही से कंजूसी करता है। और अल्लाह धनी है तथा तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला देगा, फिर वे नहीं होंगे तुम्हारे जैसे।[3]

अपनी शक्ति का लोहा मनवाने के पश्चात् संधि करो। ताकि वह तुम्हें निर्बल समझ कर जैसे चाहें संधि के लिये बाध्य न कर लें।

1 अर्थात तुम्हारा पूरा धन माँगे तो यह स्वभाविक है कि तुम कंजूसी कर के दोषी बन जाओगे। इसलिये इस्लाम ने केवल ज़कात अनिवार्य की है। जो कुल धन का ढाई प्रतिशत् है।

2 अर्थात कंजूसी कर के अपने ही को हानि पहुँचाता है।

3 तो कंजूस नहीं होंगे। (देखियेः सूरह माइदा, आयतः 54)

सूरह फ़त्ह - 48

सूरह फ़त्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 29 आयतें हैं।

- फ़त्ह का अर्थः विजय है। और इस की प्रथम आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विजय की शुभसूचना दी गई है। इसलिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में विजय की शुभसूचना देते हुये आप तथा आप के साथियों के लिये उन पुरस्कारों की चर्चा की गई है जो इस विजय के द्वारा प्राप्त हुये। साथ ही मुनाफ़िक़ों तथा मुश्रिकों को चेतावनी दी गई कि उन के बुरे दिन आ गये हैं।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हाथ पर बैअत (वचन) को अल्लाह के हाथ पर वचन कह कर आप के पद को बताया गया है। तथा इस में मुनाफ़िक़ों को जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ नहीं निकले और अपने धन-परिवार की चिन्ता में रह गये चेतावनी दी गई है। और जो विवश थे उन्हें निर्दोष क़रार दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को जो रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान देने को तय्यार हो गये अल्लाह की प्रसन्नता की शुभसूचना दी गई है। और बताया गया है कि उन का भविष्य उज्जवल होगा तथा उन की सहायता होगी।
- इस में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मस्जिदे हराम में प्रवेश का जो सपना देखा है वह सच्चा है। और वह पूरा होगा। आप को ऐसे साथी मिल गये हैं जिन का चित्र तौरात और इंजील में देखा जा सकता है।
- यह सूरह ज़ी क़ादा के महीने, सन् 6 हिज्री में हुदैबिया से वापसी के समय हुदैबिया तथा मदीना के बीच उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4833)। और दो वर्ष बाद मक्का विजय हो गया। और अल्लाह ने आप के स्वप्न को सच्च कर दिया।

हुदैबिय्या की संधिः

मदीना हिज्रत के पश्चात् मक्का के मुश्रिकों ने मस्जिदे हराम (कॉबा) पर अधिकार कर लिया। और मुसलमानों को हज्ज तथा उमरा करने से रोक दिया।

अब तक मुसलमानों और काफ़िरों के बीच तीन युद्ध हो चुके थे कि सन् 6 हिज्री में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह सपना देखा कि आप मस्जिदे हराम में प्रवेश कर गये हैं। इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमरे का एलान कर दिया। और अपने चौदह सौ साथियों के साथ 1 ज़ीक़ादा सन् 6 हिज्री को मक्का की ओर चल दिये। मदीना से 6 मील जा कर ज़ुल हुलैफ़ा में एहराम बाँधा। और कुर्बानी के पशु साथ लिये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से 22 कि॰मी॰ दूर हुदैबिय्या तक पहुँच गये तो उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को मक्का भेजा कि हम उमरा के लिये आये हैं। मक्का वासियों ने उन का आदर किया। किन्तु इस के लिये तय्यार नहीं हुये कि नबी अपने साथियों के साथ मक्का में प्रवेश करें। इस विवाद के कारण उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) की वापसी में कुछ देर हो गई। जिस से ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि अब बलपूर्वक ही मक्का में प्रवेश करना पड़ेगा। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से जिहाद के लिये बैअत (वचन) ली। इस एतिहासिक बचन को ((बैअत रिज़्वान)) के नाम से याद किया जाता है। जब मक्का वासियों को इस की सूचना मिली तो वह संधि के लिये तय्यार हो गये। और संधि के लिये कुछ प्रतिनिधि भेजे। और निम्नलिखित बातों पर संधि हुईः

1- मुसलमान आगामी वर्ष आ कर उमरा करेंगे।

2- वह अपने साथ केवल तलवार लायेंगे जो नियाम में होगी।

3- वह केवल तीन दिन मक्का में रहेंगे।

4- मुसलमान और उन के बीच दस वर्ष युद्ध विराम रहेगा।

5- मक्का का कोई व्यक्ति मदीना जाये तो उसे वापिस करना होगा। किन्तु यदि कोई मुसलमान काफ़िर बन कर मक्का आये तो वे उसे वापिस नहीं करेंगे।

6- हरम के आस पास के क़बीले जिस पक्ष के साथ चाहें हो जायें। और उन पर वही दायित्व होगा जो उन के पक्ष पर होगा।

7- यदि इन क़बीलों में किसी ने दूसरे पक्ष के किसी क़बीले के साथ अत्याचार किया तो इसे संधि भंग माना जायेगा। यह संधि मुसलमानों ने बहुत दब कर की थी। मगर इस से उन्हें दो बड़े लाभ प्राप्त हुयेः

क- मस्जिदे हराम में प्रवेश की राह खुल गई।

ख- इस्लाम और मुसलमानों पर आक्रमण की स्थिति समाप्त हो गई। जिस से इस्लाम के प्रचार-प्रसार की बाधा दूर हो गई। और इस्लाम तेज़ी से फैलने लगा। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का वासियों के संधि भंग कर देने के कारण सन् 10 हिज्री में मक्का विजय किया तो उस समय आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों की संख्या दस हज़ार थी। और मक्का की विजय के साथ ही पूरे मक्का वासी तथा आस-पास के क़बीले मुसलमान हो गये। इस प्रकार धीरे धीरे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग ही में सारे अरब, मुसलमान हो गये। इसीलिये क़ुर्आन ने हुदैबिय्या कि संधि को फ़त्हे मुबीन (खुली विजय) कहा है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾

1. हे नबी! हम ने विजय[1] प्रदान कर दी आप को खुली विजय।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢﴾

2. ताकि क्षमा कर दे[2] अल्लाह आप के लिये आप के अगले तथा पिछले दोषों को तथा पूरा करे अपना पुरस्कार आप के ऊपर और दिखाये आप को सीधी राह।

1 हदीस में है कि इस से अभिप्राय हुदैबिया की संधि है। (बुख़ारीः 4834)

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात्री में इतनी नमाज़ पढ़ा करते थे कि आप के पाँव सूज जाते थे। तो आप से कहा गया कि आप ऐसा क्यों करते हैं? अल्लाह ने तो आप के बिगत तथा भविष्य के पाप क्षमा कर दिये हैं? तो आप ने फ़रमाया। तो क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ। (सहीह बुख़ारीः 4837)

3. तथा अल्लाह आप की सहायता करे भरपूर सहायता।

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ۝٣

4. वही है जिस ने उतारी शान्ति ईमान वालों के दिलों में ताकि अधिक हो जाये उन का ईमान अपने ईमान के साथ। तथा अल्लाह ही की हैं आकाशों तथा धरती की सेनायें, तथा अल्लाह सब कुछ और सब गुणों को जानने वाला है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٤

5. ताकि वह प्रवेश कराये ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में बह रही हैं जिन में नहरें। और वे सदैव रहेंगे उन में। और ताकि दूर कर दे उन से उन की बुराईयों को। और अल्लाह के यहाँ यही बहुत बड़ी सफलता है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٥

6. तथा यातना दे मुनाफ़िक़ पुरुषों तथा स्त्रियों और मुश्रिक पुरुषों तथा स्त्रियों को जो बुरा विचार रखने वाले हैं अल्लाह के संबन्ध में। उन्हीं पर बुरी आपदा आ पड़ी। तथा अल्लाह का प्रकोप हुआ उन पर, और उस ने धिक्कार दिया उन को। तथा तय्यार कर दी उन के लिये नरक, और वह बुरा जाने का स्थान है।

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّاۤنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ عَلَيْهِمْ دَاۤىِٕرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَسَاۤءَتْ مَصِيْرًا ۝٦

7. तथा अल्लाह ही की हैं आकाशों तथा धरती की सेनायें और अल्लाह प्रबल तथा सब गुणों को जानने वाला है।[1]

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٧

8. (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने एवं सावधान करने वाला बना कर।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٨

1 इसलिये वह जिस को चाहे, और जब चाहे, हिलाक और नष्ट कर सकता है।

9. ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर। और सहायता करो आप की, तथा आदर करो आप का, और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रातः तथा संध्या।

لِتُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهٖ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَّاَصِيلًا ⑨

10. (हे नबी!) जो बैअत कर रहे हैं आप से, वह वास्तव में बैअत[1] कर रहे हैं अल्लाह से। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जिस ने वचन तोड़ा तो वह अपने ऊपर ही वचन तोड़ेगा। तथा जिस ने पूरा किया जो वचन अल्लाह से किया है तो वह उसे बड़ा प्रतिफल (बदला) प्रदान करेगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ⑩

11. (हे नबी!) वह[2] शीघ्र ही आप से कहेंगे, जो पीछे छोड़ दिये गये बद्दुओं में से कि हम लगे रह गये अपने धनों तथा परिवार में। अतः आप क्षमा की प्रार्थना कर दें हमारे लिये। वह अपने मुखों से ऐसी बात कहेंगे जो उन के दिलों में नहीं है। आप उन से कहिये कि कौन है जो अधिकार रखता हो तुम्हारे लिये अल्लाह के सामने किसी चीज़ का यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ⑪

1 बैअत का अर्थ है हाथ पर हाथ मार कर वचन देना। यह बैअत नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के लिये हुदैबिया में अपने चौदह सौ साथियों से एक वृक्ष के नीचे ली थी। जो इस्लामी इतिहास में «बैअते रिज़वान» के नाम से प्रसिद्ध है। रही वह बैअत जो पीर अपने मुरीदों से लेते हैं तो उस का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

2 आयत 11,12 में मदीना के आस-पास के मुनाफ़िक़ों की दशा बतायी गयी है जो नबी के साथ उमरा के लिये मक्का नहीं गये। उन्होंने इस डर से कि मुसलमान सब के सब मार दिये जायेंगे, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नहीं दिया।

पहुँचाना चाहे या कोई लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अल्लाह सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ
أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ
السَّوْءِ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾

12. बल्कि तुम ने सोचा था कि कदापि वापिस नहीं आयेंगे रसूल, और न ईमान वाले अपने परिजनों की ओर कभी भी। और भली लगी यह बात तुम्हारे दिलों को, और तुम ने बुरी सोच सोची। और थे ही तुम विनाश होने वाले लोग।

وَمَنْ لَمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾

13. और जो ईमान नहीं लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, तो हम ने तय्यार कर रखी है काफ़िरों के लिये दहकती अग्नि।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٤﴾

14. अल्लाह के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह क्षमा कर दे जिसे चाहे और यातना दे जिसे चाहे। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ
لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَنْ
يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا
كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ

15. वह लोग जो पीछे छोड़ दिये गये कहेंगे, जब तुम चलोगे ग़नीमतों की ओर ताकि उन्हें प्राप्त करो कि हमें (भी) अपने साथ [1]चलने दो। वह चाहते हैं कि बदल दें अल्लाह के

1 हुदैबिया से वापिस आकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ख़ैबर पर आक्रमण किया जहाँ के यहूदियों ने संधि भंग कर के अहज़ाब के युद्ध में मक्का के काफ़िरों का साथ दिया था। तो जो बद्दु हुदैबिया में नहीं गये वह अब ख़ैबर के युद्ध में इसलिये आप के साथ जाने के लिये तय्यार हो गये कि वहाँ ग़नीमत का धन मिलने की आशा थी। अतः आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह कहा गया कि उन्हें बता दें कि यह पहले ही से अल्लाह का आदेश है कि तुम हमारे साथ नहीं जा सकते। ख़ैबर मदीने से डेढ़ सौ कि॰मी॰ दूर मदीने के उत्तर पूर्वी दिशा में है। यह युद्ध मुहर्रम सन् 7 हिज्री में हुआ।

بَلْ تَحْسُدُونَنَا بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ⑮

आदेश को। आप कह दें कि कदापि हमारे साथ न चल। इसी प्रकार कहा है अल्लाह ने इस से पहले। फिर वह कहेंगे कि बल्कि तुम द्वेष (जलन) रखते हो हम से। बल्कि वह कम ही बात समझते हैं।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑯

16. आप कह दें पीछे छोड़ दिये गये बद्दुओं से कि शीघ्र तुम बुलाये जाओगे एक अति योद्धा जाति (से युद्ध) की ओर।[1] जिन से तुम युद्ध करोगे अथवा वह इस्लाम ले आयें। तो यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो प्रदान करेगा अल्लाह तुम्हें उत्तम बदला तथा यदि तुम विमुख हो गये जैसे इस से पूर्व (मक्का जाने से) विमुख हो गये तो तुम्हें यातना देगा दुःखदायी यातना।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ⑰

17. नहीं है अंधे पर कोई दोष[2] और न लंगड़े पर कोई दोष और न रोगी पर कोई दोष। तथा जो आज्ञा का पालन करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, तथा जो मुख फेरेगा तो वह यातना देगा उसे दुःखदायी यातना।

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ

18. अल्लाह प्रसन्न हो गया ईमान वालों से जब वह आप (नबी) से बैअत कर रहे थे वृक्ष के नीचे। उस ने जान लिया

---

1 इस से अभिप्राय हुनैन का युद्ध है जो सन् 8 हिज्री में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। जिस में पहले पराजय, फिर विजय हुई। और बहुत सा ग़नीमत का धन प्राप्त हुआ, फिर वह भी इस्लाम ले आये।

2 अर्थात जिहाद में भाग न लेने पर।

عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾

जो कुछ उन के दिलों में था इसलिये उतार दी शान्ति उन पर, तथा उन्हें बदले में दी समीप की विजय।[1]

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾

19. तथा बहुत से ग़नीमत के धन (परिहार) जिन को वह प्राप्त करेंगे, और अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَٰذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿٢٠﴾

20. अल्लाह ने वचन दिया है तुम्हें बहुत से परिहार (ग़नीमतों) का जिसे तुम प्राप्त करोगे। तो शीघ्र प्रदान कर दी तुम्हें यह (ख़ैबर की ग़नीमत)। तथा रोक दिया लोगों के हाथों को तुम से ताकि[2] वह एक निशानी बन जाये ईमान वालों के लिये, और तुम्हें सीधी राह चलाये।

وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢١﴾

21. और दूसरी ग़नीमतें भी जिन को तुम प्राप्त नहीं कर सके हो, अल्लाह ने उन को नियन्त्रण में कर रखा है, तथा अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾

22. और यदि तुम से युद्ध करते जो काफ़िर[3] हैं तो अवश्य पीछा दिखा देते, फिर नहीं पाते कोई संरक्षक और न कोई सहायक।

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾

23. यह अल्लाह का नियम है उन में जो चला आ रहा है पहले से। और तुम कदापि नहीं पाओगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

24. तथा वही है जिस ने रोक दिया उन

1 इस से अभिप्राय ख़ैबर की विजय है।

2 अर्थात ख़ैबर की विजय और मक्का की विजय के समय शत्रुओं के हाथों को रोक दिया ताकि यह विश्वास हो जाये कि अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक तथा सहायक है।

3 अर्थात मक्का में प्रवेश के समय युद्ध हो जाता।

بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٤﴾

के हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी[1] में, इस के पश्चात् कि तुम्हें विजय प्रदान कर की उन पर। तथा अल्लाह देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٥﴾

25. यह वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और रोक दिया तुम्हें मस्जिदे हराम से। तथा बलि के पशु को उन के स्थान तक पहुँचने से रोक दिया। और यदि यह भय न होता कि तुम कुछ मुसलमान पुरुषों तथा कुछ मुसलमान स्त्रियों को जिन्हें तुम नहीं जानते थे रौंद दोगे जिस से तुम पर दोष आ जायेगा[2] (तो युद्ध से न रोका जाता।) ताकि प्रवेश कराये अल्लाह जिसे चाहे अपनी दया में। यदि वह (मुसलमान) अलग होते तो हम अवश्य यातना देते उन को जो काफ़िर हो गये उन में से दुखदायी यातना।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٦﴾

26. जब काफ़िरों ने अपने दिलों में पक्षपात को स्थान दे दिया जो वास्तव में जाहिलाना पक्षपात है तो अल्लाह ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर शान्ति उतार दी, तथा उन को पाबन्द रखा सदाचार की बात का,

---

1 जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हुदैबिया में थे तो काफ़िरों ने 80 सशस्त्र युवकों को भेजा कि वह आप तथा आप के साथियों के विरुद्ध काररवाही कर के सब को समाप्त कर दें। परन्तु वह सभी पकड़ लिये गये। और आप ने सब को क्षमा कर दिया। तो यह आयत इसी अवसर पर उतरी। (सहीह मुस्लिमः 1808)

2 अर्थात यदि हुदैबिया के अवसर पर संधि न होती और युद्ध हो जाता तो अनजाने में मक्का में कई मुसलमान भी मारे जाते जो अपना ईमान छुपाये हुये थे। और हिज्रत नहीं कर सके थे। फिर तुम पर दोष आ जाता कि तुम एक ओर इस्लाम का संदेश देते हो, तथा दूसरी ओर स्वयं मुसलमानों को मार रहे हो।

तथा वह[1] उस के अधिक योग्य और पात्र थे। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

27. निश्चय अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा सपना दिखाया सच्च के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जिदे हराम में यदि अल्लाह ने चाहा निर्भय हो कर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाते हुये तुम को किसी प्रकार का भय नहीं होगा[2], वह जानता है जिस को तुम नहीं जानते। इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिदे हराम में प्रवेश) से पहले एक समीप (जल्दी) की[3] विजय।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهُ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

28. वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म के साथ, ताकि उसे प्रभुत्व प्रदान कर दे प्रत्येक धर्म पर। तथा पर्याप्त है (इस

1 सदाचार की बात से अभिप्राय (ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) है। हुदैबिया का संधिलेख जब लिखा गया और आप ने पहले ((बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम)) लिखवाई तो कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहाः हम रहमान रहीम नहीं जानते। इसलिये ((बिस्मिका अल्लाहुम्मा)) लिखा जाये। और जब आप ने लिखवाया कि यह संधिपत्र है जिस पर ((मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह)) ने संधि की है तो उन्होंने कहाः ((मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह)) लिखा जाये। यदि हम आप को अल्लाह का रसूल ही मानते तो अल्लाह के घर से नहीं रोकते। आप ने उन की सब बातें मान लीं। और मुसलमानों ने भी सब कुछ सहन कर लिया। और अल्लाह ने उन के दिलों को शान्त रखा और संधि हो गई।

2 अर्थात ((उमरा)) करते हुये जिस में सिर के बाल मुंडाये या कटाये जाते हैं। इसी प्रकार ((हज्ज)) में भी मुंडाये या कटाये जाते हैं।

3 इस से अभिप्राय ख़ैबर की विजय है जो हुदैबिया से वापसी के पश्चात् कुछ दिनों के बाद हुई। और दूसरे वर्ष संधि के अनुसार आप ने अपने अनुयायियों के साथ उमरा किया और आप का सपना अल्लाह ने साकार कर दिया।

पर) अल्लाह का गवाह होना।

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

29. मुहम्मद [1] अल्लाह के रसूल हैं, तथा जो लोग आप के साथ हैं वह काफ़िरों के लिये कड़े, और आपस में दयालु हैं। तुम देखोगे उन्हें रुकूअ-सज्दा करते हुये वह खोज कर रहे होंगे अल्लाह की दया तथा प्रसन्नता की। उन के लक्षण उन के चेहरों पर सज्दों के चिन्ह होंगे। यह उन की विशेषता तौरात में है। तथा उन के गुण इंजील में उस खेती के समान बताये गये हैं जिस ने निकाला अपना अंकुर, फिर उसे बल दिया, फिर वह कड़ा हो गया फिर वह (खेती) खड़ी हो गई अपने तने पर। प्रसन्न करने लगी किसानों को, ताकि काफ़िर उन से जलें। वचन दे रखा है अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन में से क्षमा तथा बड़े प्रतिफल का।

---

1 इस अन्तिम आयत में सहाबा (नबी के साथियों) के गुणों का वर्णन करते हुये यह सूचना दी गई है कि इस्लाम क्रमशः प्रगतिशील हो कर प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा। तथा ऐसा ही हुआ कि इस्लाम जो आरंभ में खेती के अंकुर के समान था क्रमशः उन्नति कर के एक दृढ़ प्रभुत्वशाली धर्म बन गया। और काफ़िर अपने द्वेष की अग्नि में जल-भुन कर ही रह गये।
हदीस में है कि ईमान वाले आपस के प्रेम तथा दया और करुणा में एक शरीर के समान हैं। यदि उस के एक अंग को दुःख हो तो पूरा शरीर ताप और अनिद्रा में ग्रस्त हो जाता है। (सहीह बुख़ारीः 6011, सहीह मुस्लिमः 2596)

सूरह हुजुरात - 49

सूरह हुजुरात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस की आयत 4 में हुजरों के बाहर से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पुकारने पर पकड़ की गई है इस लिये इस का नाम सूरह हुजुरात है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में इस बात पर बल दिया गया है कि अपनी बात प्रस्तुत करने में अल्लाह के रसूल से आगे न बढ़ो। और आप के मान-मर्यादा का ध्यान रखो। तथा ऐसी बात न बोलो जो इस्लामी भाई चारे के लिये हानिकारक हो, और न्याय की नीति अपनाओ।
- इस की आयत 11 से 12 में उन नैतिक बुराईयों से बचने का निर्देश दिया गया है जो आपस में घृणा उत्पन्न करती तथा उपद्रव का कारण बनती हैं।
- इस की आयत 13 में वर्ग-वर्ण और जातिवाद के गर्व का खण्डन करते हुये यह बताया गया है कि सभी जातियाँ और क़बीले एक ही नर-नारी की संतान हैं। इसलिये वर्ण-वर्ग और जाति पर गर्व का कोई आधार नहीं। किसी की प्रधानता का कारण केवल अल्लाह की आज्ञा का पालन है।
- इस की अन्तिम आयतों में उन की पकड़ की गई है जो मुख से तो इस्लाम को मानते हैं किन्तु ईमान उन के दिलों में नहीं उतरा है। और उन्हें बताया गया है कि सच्चा ईमान वह है जिस में निफ़ाक़ न हो तथा सच्चा ईमान उस का है जो अल्लाह की राह में धन और प्राण के साथ जिहाद (संघर्ष) करता हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हे लोगो! जो ईमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल[1] से।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ

1 अर्थात दीन धर्म तथा अन्य दूसरे मामलात के बारे में प्रमुख न बनो। अनुयायी बन कर रहो। और स्वयं किसी बात का निर्णय न करो।

وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ①

और डरो अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ②

2. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और न आप से ऊँची आवाज़ में बात करो जैसे एक दूसरे से ऊँची आवाज़ में बात करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें और तुम्हें पता (भी) न हो।

إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ③

3. निःसंदेह जो धीमी रखते हैं अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल के सामने, वही लोग हैं जाँच लिया है अल्लाह ने जिन के दिलों को सदाचार के लिये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ

4. वास्तव में जो आप को पुकारते[1] हैं कमरों के पीछे से उन में से

---

1 हदीस में है कि बनी तमीम के कुछ सवार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये तो आदरणीय अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि क़ाक़ाअ बिन उमर को इन का प्रमुख बनाया जाये। और आदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहाः बल्कि अक़रअ बिन हाबिस को बनाया जाये। तो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहाः तुम केवल मेरा विरोध करना चाहते हो। उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहाः यह बात नहीं है। और दोनों में विवाद होने लगा और उन के स्वर ऊँचे हो गये। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4847)
इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा तथा आप का आदर-सम्मान करने की शिक्षा और आदेश दिये गये हैं। एक हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साबित बिन क़ैस (रज़ियल्लाहु अनहु) को नहीं पाया तो एक व्यक्ति से पता लगाने को कहा। वह उन के घर गये तो वह सिर झुकाये बैठे थे। पूछने पर कहाः बूरा हो गया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ऊँची आवाज़ से बोलता था, जिस के कारण मेरे सारे कर्म व्यर्थ हो गये। आप ने यह सुन कर कहाः उसे बता दो कि वह नारकी नहीं वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुख़ारी शरीफ़ः 4846)

لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾

अधिकतर निर्बोध हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

5. और यदि वह सहन[1] करते यहाँ तक कि आप निकल कर आते उन की ओर तो यह उत्तम होता उन के लिये। तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ﴿٦﴾

6. हे ईमान वालो! यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी[2] कोई सूचना लाये तो भली-भाँति उस का अनुसंधान (छान बीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम हानि पहुँचा दो किसी समुदाय को आज्ञानता के कारण, फिर अपने किये पर पछताओ।

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ

7. तथा जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। यदि वह तुम्हारी बात मानते रहे बहुत से विषय में तो तुम आपदा में पड़ जाओगे। परन्तु

---

1 हदीस में है कि अक़रअ बिन हाबिस (रज़ियल्लाहु अन्हु) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये और कहाः हे मुहम्मद! बाहर निकलिये। उसी पर यह आयत उतरी। (मुस्नद अहमदः 3।588, 6।394)

2 इस में इस्लाम का यह नियम बताया गया है कि बिना छान बीन के किसी की ऐसी बात न मानी जाये जिस का सम्बंध दीन अथवा किसी बहुत गंभीर समस्या से हो। अथवा उस के कारण कोई बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो सकती हो। और जैसा कि आप जानते हैं अब यह नियम संसार के कोने कोने में फैल गया है। सारे न्यायालयों में इसी के अनुसार न्याय किया जाता है। और जो इस के विरुद्ध निर्णय करता है उस की कड़ी आलोचना की जाती है। तथा अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात् यह नियम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस पाक के लिये भी है। कि यह छान बीन किये बग़ैर कि वह सहीह है या नहीं उस पर अमल नहीं किया जाना चाहिये। और इस चीज़ को इस्लाम के विद्वानों ने पूरा कर दिया है कि अल्लाह के रसूल की वे हदीसें कौन सी हैं जो सहीह हैं तथा वह कौन सी हदीसें हैं जो सहीह नहीं हैं। और यह विशेषता केवल इस्लाम की है। संसार का कोई धर्म यह विशेषता नहीं रखता।

وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ⑦

अल्लाह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ़्र तथा उल्लंघन और अवज्ञा को, और यही लोग संमार्ग पर हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑧

8. अल्लाह की दया तथा उपकार से, और अल्लाह सब कुछ तथा सब गुणों को जानने वाला है।

وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِن فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ⑨

9. और यदि ईमान वालों के दो गिरोह लड़[1] पड़े तो संधि करा दो उन के बीच। फिर दोनों में से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो उस से लड़ो जो अत्याचार कर रहा है यहाँ तक कि फिर जाये अल्लाह के आदेश की ओर। फिर यदि वह फिर[2] आये तो उन के बीच संधि करा दो न्याय के साथ। तथा न्याय करो, वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय करने वालों से।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ⑩

10. वास्तव में सब ईमान वाले भाई भाई हैं। अतः संधि (मेल) करा दो अपने दो भाईयों के बीच तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن

11. हे लोगो जो ईमान लाये हो![3] हँसी

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः मेरे पश्चात् काफ़िरों के समान हो कर एक दूसरे की गर्दन न मारना। (सहीह बुख़ारीः 121, सहीह मुस्लिमः 65)

2 अर्थात किताब और सुन्नत के अनुसार अपना झगड़ा चुकाने के लिये तय्यार हो जाये।

3 आयत 11 तथा 12 में उन सामाजिक बुराईयों से रोका गया है जो भाईचारे को खंडित करती हैं। जैसे किसी मुसलमान पर व्यंग करना, उस की हँसी उड़ाना,

يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾

न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की। हो सकता है वह उन से अच्छी हो। और न नारी अन्य नारियों की। हो सकता है कि वह उन से अच्छी हों। तथा आक्षेप न लगाओ एक-दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो। बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात्। और जो क्षमा न माँगे तो वही लोग अत्याचारी हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

12. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचो अधिकांश गुमानों से। वास्तव में कुछ गुमान पाप है। और किसी का भेद न लो। और न एक-दूसरे की ग़ीबत[1] करो। क्या चाहेगा तुम में से कोई अपने मरे भाई का मांस खाना? अतः तुम्हें इस से घृणा होगी। तथा अल्लाह से डरते रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमावान् दयावान् है।

उसे बुरे नाम से पुकारना, उस के बारे में बुरा गुमान रखना, किसी के भेद की खोज करना आदि। इसी प्रकार ग़ीबत करना। जिस का अर्थ यह है कि किसी की अनुपस्थिति में उस की निन्दा की जाये। यह वह सामाजिक बुराईयाँ हैं जिन से क़ुर्आन तथा हदीसों में रोका गया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने हज्जतुल वदाअ के भाषण में फ़रमायाः मुसलमानों! तुम्हारे प्राण, तुम्हारे धन तथा तुम्हारी मर्यादा एक दूसरे के लिये उसी प्रकार आदर्णीय हैं जिस प्रकार यह महीना तथा यह दिन आदर्णीय है। (सहीह बुख़ारीः 1741, सहीह मुस्लिमः 1679) दूसरी हदीस में है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। वह न उस पर अत्याचार करे और न किसी को अत्याचार करने दे। और न उसे नीच समझे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने सीने की ओर संकेत कर के कहाः अल्लाह का डर यहाँ होता है। (सहीह मुस्लिमः 2564)

1 हदीस में है कि तुम्हारा अपने भाई की चर्चा ऐसी बात से करना जो उसे बुरी लगे वह ग़ीबत कहलाती है। पूछा गया कि यदि उस में वह बुराई हो तो फिर? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः यही तो ग़ीबत है। यदि न हो तो फिर वह आरोप है। (सहीह मुस्लिमः 2589)

13. हे मनुष्यो![1] हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर-नारी से। तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقۡنَٰكُم مِّن ذَكَرٖ وَأُنثَىٰ وَجَعَلۡنَٰكُمۡ شُعُوبٗا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓاْۚ إِنَّ أَكۡرَمَكُمۡ عِندَ ٱللَّهِ أَتۡقَىٰكُمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٞ ١٣

---

1 इस आयत में सभी मनुष्यों को संबोधित कर के यह बताया गया है कि सब जातियों और क़बीलों के मूल माँ-बाप एक ही हैं। इसलिये वर्ग-वर्ण तथा जाति और देश पर गर्व और भेद-भाव करना उचित नहीं। जिस से आपस में घृणा पैदा होती है। इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था में कोई भेद-भाव नहीं है। और न ऊँच नीच का कोई विचार है, और न जात-पात का, तथा न कोई छूवा-छूत है। नमाज़ में सब एक साथ खड़े होते हैं। विवाह में भी कोई वर्ग-वर्ण और जाति का भेद-भाव नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने क़ुरैशी जाति की स्त्री ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) का विवाह अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से किया था। और जब उन्होंने उसे तलाक़ दे दी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़ैनब से विवाह कर लिया। इसलिये कोई अपने को सय्यद कहते हुये अपनी पुत्री का विवाह किसी व्यक्ति से इसलिये न करे कि वह सय्यद नहीं है तो यह जाहिली युग का विचार समझा जायेगा। जिस से इस्लाम का कोई सम्बंध नहीं है। बल्कि इस्लाम ने इस का खण्डन किया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में अफ़्रीक़ा के एक आदमी बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) तथा रोम के एक आदमी सुहैब (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिना रंग और देश के भेद-भाव के एक साथ रहते थे।
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः अल्लाह ने मुझे उपदेश भेजा है कि आपस में झुक कर रहो। और कोई किसी पर गर्व न करे। और न कोई किसी पर अत्याचार करे। (सहीह मुस्लिमः 2865)
आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः लोग अपने मरे हुये बापों पर गर्व न करें। अन्यथा वे उस कीड़े से हीन हो जायेंगे जो अपने नाक से गन्दगी ढकेलता है। अल्लाह ने जाहिलिय्यत का पक्षपात और बापों पर गर्व को दूर कर दिया। अब या तो सदाचारी ईमान वाला है या कुकर्मी अभागा। सभी आदम की संतान हैं। (सुनन अबू दाऊदः 5116। इस हदीस की सनद हसन है।)
यदि आज भी इस्लाम की इस व्यवस्था और विचार को मान लिया जाये तो पूरे विश्व में शान्ति तथा मानवता का राज्य हो जायेगा।

सब से सूचित है।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ۖ قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا وَلَٰكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾

14. कहा कुछ बद्दुओं (देहातियों) ने कि हम ईमान लाये। आप कह दें कि तुम ईमान नहीं लाये। परन्तु कहो कि हम इस्लाम लाये। और ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। तथा यदि तुम आज्ञा का पालन करते रहे अल्लाह तथा उस के रसूल की, तो नहीं कम करेगा वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों में से कुछ। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान्[1] है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾

15. वास्तव में ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, फिर संदेह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं।

قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾

16. आप कह दें कि क्या तुम अवगत करा रहे हो अल्लाह को अपने धर्म से? जब कि अल्लाह जानता है जो कुछ (भी) आकाशों तथा धरती में है तथा वह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

17. वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये हैं। आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का। बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो।

---

1 आयत का भावार्थ यह है कि मुख से इस्लाम को स्वीकार कर लेने से मुसलमान तो हो जाता है किन्तु जब तक ईमान दिल में न उतरे वह अल्लाह के समीप ईमान वाला नहीं होता। और ईमान ही आज्ञा पालन की प्रेरणा देता है जिस का प्रतिफल मिलेगा।

18. निःसंदेह अल्लाह ही जानता है आकाशों तथा धरती के ग़ैब (छुपी बात) को, तथा अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝١٨
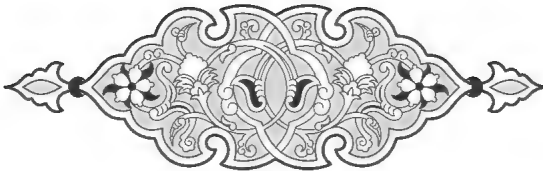
सूरह क़ाफ़ - 50

सूरह क़ाफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ, अक्षर (क़ाफ़) से हुआ है। जो इस का यह नाम रखने का कारण है।
- इस में क़ुर्आन की महिमा का वर्णन करते हुये मौत के पश्चात् जीवन से संबन्धित संदेहो को दूर किया गया है। और आकाश तथा धरती के उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से मौत के पश्चात् जीवन का विश्वास होता है।
- इस में उन जातियों के परिणाम द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने उन रसूलों को झुठलाया जो दूसरे जीवन की सूचना दे रहे थे।
- इस में कर्मों के अभिलेख तथा नरक और स्वर्ग का ऐसा चित्र दिखाया गया है जिस से लगता है कि यह सब सामने हो रहा है।
- आयत 36 और 38 में शिक्षा दी गई है, और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपने स्थान पर स्थित रह कर क़ुर्आन द्वारा शिक्षा देते रहने के निर्देश दिये गये हैं।

हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक जुमुआ को मिम्बर पर यह सूरह पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिमः 873)

इसी प्रकार आप इसे दोनो ईद की नमाज़, और फ़ज्र की नमाज़ में भी पढ़ते थे। (मुस्लिमः 878, 458)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ①

1. क़ाफ़। शपथ है आदरणीय क़ुर्आन की!

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ

2. बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास एक सवधान करने

هٰذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝٢

वाला उन्हीं में से। तो कहा काफ़िरों ने यह तो बड़े आश्चर्य[1] की बात है।

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ۝٣

3. क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात[2] (असंभव) है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِندَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ۝٤

4. हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती उन का अंश, तथा हमारे पास एक सुरक्षित पुस्तक है।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ ۝٥

5. बल्कि उन्होंने झुठला दिया सत्य को जब आ गया उन के पास। इसलिये उलझन में पड़े हुये हैं।

أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝٦

6. क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की ओर अपने ऊपर कि कैसा बनाया है हम ने उसे और सजाया है उस को और नहीं है उस में कोई दराड़?

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝٧

7. तथा हम ने धरती को फैलाया, और डाल दिये उस में पर्वत। तथा उपजायीं उस में प्रत्येक प्रकार की सुन्दर वनस्पतियाँ।

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝٨

8. आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न भक्त के लिये।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۝٩

9. तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ जल, फिर उगाये उस के द्वारा बाग़ तथा अन्न जो काटे जायें।

---

1 कि हमारे जैसा एक मनुष्य रसूल कैसे हो गया?

2 सुरक्षित पुस्तक से अभिप्राय ((लौहे महफ़ूज़)) है। जिस में जो कुछ उन के जीवन-मरण की दशायें हैं वह पहले ही से लिखी हुई हैं। और जब अल्लाह का आदेश होगा तो उन्हें फिर बनाकर तय्यार कर दिया जायेगा।

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۝١٠

10. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝١١

11. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝١٢

12. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूवें के वासियों एवं समूद ने।

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝١٣

13. तथा आद और फ़िरऔन एवं लूत के भाईयों ने।

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝١٤

14. तथा ऐका के वासियों ने, और तुब्बअ[1] की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया[2] रसूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٥

15. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝١٦

16. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी[3] से।

---

1 देखियेः सूरह दुख़ान, आयतः 37।

2 इन आयतों में इन जातियों के विनाश की चर्चा कर के कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को न मानने के परिणाम से सावधान किया गया है।

3 अर्थात हम उस के बारे में उस से अधिक जानते हैं।

17. जब कि[1] (उस के) दायें-बायें बैठे दो फ़रिश्ते लिख रहे हैं।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾

18. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾

19. आ पहुँची मौत की अचेतना (बे होशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾

20. और फूँक दिया गया सूर (नरसिंघा) में। यही यातना के वचन का दिन है।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾

21. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हाँकने[2] वाला और एक गवाह होगा।

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾

22. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾

23. तथा कहा उस के साथी[3] नेः यह है जो मेरे पास तय्यार है।

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾

24. दोनों (फ़रिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफ़िर (सत्य के) विरोधी को।

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾

25. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी,

مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُرِيبٍ ﴿٢٥﴾

---

1 अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के दायें तथा बायें दो फ़रिश्ते नियुक्त हैं जो उस की बातों तथा कर्मों को लिखते रहते हैं। जो दायें है वह पुण्य को लिखता है। और जो बायें है वह पाप को लिखता है।

2 यह दो फ़रिश्ते होंगे एक उसे हिसाब के लिये हाँक कर लायेगा, और दूसरा उस का कर्म-पत्र प्रस्तुत करेगा।

3 साथी से अभिप्राय वह फ़रिश्ता है जो संसार में उस का कर्म लिख रहा था। वह उस का कर्म-पत्र उपस्थित कर देगा।

संदेह करने वाले को।

26. जिस ने बना लिये अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य, तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾

27. उस के साथी (शैतान) ने कहाः हे हमारे पालनहार! मैं ने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾

28. अल्लाह ने कहाः झगड़ा न करो मेरे पास। मैं ने तो पहले ही (संसार में) तुम्हारी ओर चेतावनी भेज दी थी।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾

29. नहीं बदली जाती बात मेरे पास[1], और न मैं तनिक भी अत्याचारी हूँ भक्तों के लिये।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾

30. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई? और वह कहेगी क्या कुछ और है?[2]

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾

31. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

32. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था, प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक[3] के लिये।

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾

33. जो डरा अत्यंत कृपाशील से बिन देखे तथा ले कर आया ध्यान मग्न दिल।

مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾

34. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾

---

1 अर्थात मेरे नियम अनुसार कर्मों का प्रतिकार दिया गया है।

2 अल्लाह ने कहा है कि वह नरक को अवश्य भर देगा। (देखियेः सूरह सज्दा, आयतः 13)। और जब वह कहेगी कि क्या कुछ और है? तो अल्लाह उस में अपना पैर रख देगा। और वह बस-बस कहने लगेगी। (बुख़ारीः 4848)

3 अर्थात जो अल्लाह के आदेशों का पालन करता था।

साथ। यह सदैव रहने का दिन है।

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝٣٥

35. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ۝٣٦

36. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके?[2]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝٣٧

37. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिल हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित[3] हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝٣٨

38. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई।

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝٣٩

39. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले।[4]

---

1 अधिक से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है। (देखियेः सूरह यूनुस, आयतः 26, की व्याख्या मेंः सहीह मुस्लिमः 181)

2 जब उन पर यातना आ गई।

3 अर्थात ध्यान से सुनता हो।

4 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चाँद की ओर देखा। और कहाः तुम अल्लाह को ऐसे ही देखोगे। उस के देखने में तुम्हें कोई बाधा न होगी। इसलिये यदि यह हो सके कि सूर्य निकलने तथा डूबने से पहले की नमाज़ों से पीछे न रहो तो यह अवश्य करो। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारीः 554, सहीह मुस्लिमः 633)
यह दोनों फ़ज्र और अस्र की नमाजें हैं। हदीस में है कि प्रत्येक नमाज़ के पश्चात्

40. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाज़ों) के पश्चात् (भी)।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝

41. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला[1] पुकारेगा समीप स्थान से।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

42. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज़ सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝

43. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝

44. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ते हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝

45. तथा हम भली-भाँति जानते हैं उसे जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें क़ुर्आन द्वारा उसे जो डरता हो मेरी यातना से।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ۝

अल्लाह की तस्बीह और हम्द तथा तक्बीर 33, 33 बार करो। (सहीह बुख़ारीः 843, सहीह मुस्लिमः 595)

1 इस से अभिप्राय प्रलय के दिन सूर में फूँकने वाला फ़रिश्ता है।

सूरह ज़ारियात - 51

सूरह ज़ारियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- ज़ारियात का अर्थ है ऐसी वायु जो धूल उड़ाती हो। इस की आयत 1 से 6 तक में तूफ़ानी तथा वर्षा करने वाली हवाओं और संसार की रचना तथा व्यवस्था में जो मनुष्य को सचेत कर देती है, उन के द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि कर्मों का प्रतिफल मिलना आवश्यक है। तथा इसी प्रकार कर्मफल के इन्कार और उपहास के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 15 से 19 तक में अल्लाह से डरने तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। और उस का उत्तम फल बताया गया है।
- आयत 20 से 23 तक में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो आकाश तथा धरती में और स्वयं मनुष्य में हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की यातना का नियम इस संसार में भी काफ़िरों पर लागू होता रहा है।
- अन्त में आयत 47 से 60 तक अल्लाह की शक्ति तथा महिमा का वर्णन करते हुये उस की ओर लपकने और उस की वंदना करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शपथ है (बादलों को) बिखेरने वालियों की! — وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ①
2. फिर (बादलों का) बोझ लादने वालियों की! — فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ②
3. फिर धीमी गति से चलने वालियों की! — فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ③

4. फिर (अल्लाह का) आदेश बाँटने वाले (फ़रिश्तों की)!

فَالْمُقَسِّمٰتِ أَمْرًا ۝٤

5. निश्चय जिस (प्रलय) से तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।[1]

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝٥

6. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۝٦

7. शपथ है रास्तों वाले आकाश की!

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝٧

8. वास्तव में तुम विभिन्न[2] बातों में हो।

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨

9. उस से वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।

يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ۝٩

10. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।

قُتِلَ الْخَرّٰصُونَ ۝١٠

11. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝١١

12. वह प्रश्न[3] करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है?

يَسْـَٔلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۝١٢

13. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۝١٣

14. (उन से कहा जायेगा): स्वाद चखो अपने उपद्रव का। यही वह है जिस की तुम शीघ्र माँग कर रहे थे।

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝١٤

15. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ۝١٥

---

1 इन आयतों में हवाओं की शपथ ली गई है कि हवा (वायु) तथा वर्षा की यह व्यवस्था गवाह है कि प्रलय तथा परलोक का वचन सत्य तथा न्याय का होना आवश्यक है।

2 अर्थात कुर्आन तथा प्रलय के विषय में विभिन्न बातें कर रहे हैं।

3 अर्थात उपहास स्वरूप प्रश्न करते हैं।

آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ ﴿١٦﴾

16. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने। वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٧﴾

17. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।[1]

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾

18. तथा भोरों[2] में क्षमा माँगते थे।

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿١٩﴾

19. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले[3] का भाग था।

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ﴿٢٠﴾

20. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिये।

وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

21. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

22. और आकाश में तुम्हारी जीविका[4] है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है।

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ﴿٢٣﴾

23. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।[5]

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾

24. (हे नबी!) क्या आई आप के पास

---

1 अर्थात अपना अधिक समय अल्लाह के स्मरण में लगाते थे। जैसे तहज्जुद की नमाज़ और तस्बीह आदि।

2 हदीस में है कि अल्लाह प्रत्येक रात में जब तिहाई रात रह जाये तो संसार के आकाश की ओर उतरता है। और कहता है: है कोई जो मुझे पुकारे तो मैं उस की पुकार सुनूँ? है कोई जो माँगे, तो मैं उसे दूँ? है कोई जो मुझ से क्षमा माँगे, तो मैं उसे क्षमा करूँ। (बुख़ारीः 1145, मुस्लिमः 758)

3 अर्थात जो निर्धन होते हुये भी नहीं माँगता था इसलिये उसे नहीं मिलता था।

4 अर्थात आकाश की वर्षा तुम्हारी जीविका का साधन बनती है। तथा स्वर्ग और नरक आकाशों में हैं।

5 अर्थात अपने बोलने का विश्वास है।

इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की सूचना?

25. जब वे आये उस के पास तो सलाम किया। इब्राहीम ने (भी) सलाम किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٢٥﴾

26. फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया। और एक मोटा (भुना हुआ) बछड़ा लाया।

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

27. फिर रख दिया उन के पास, उस ने कहाः तुम क्यों नहीं खाते हो?

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

28. फिर अपने दिल में उन से कुछ डरा, उन्होंने कहाः डरो नहीं। और उसे शुभसूचना दी एक ज्ञानी पुत्र की।

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

29. तो सामने आई उस की पत्नी, और उस ने मार लिया (आश्चर्य से) अपने मुँह पर हाथ। तथा कहाः मैं बाँझ बुढ़िया हूँ।

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

30. उन्होंने कहाः इसी प्रकार तेरे पालनहार ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।

قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

31. उस (इब्राहीम) ने कहाः तो तुम्हारा क्या अभियान है, हे भेजे हुये (फ़रिश्तो!)?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

32. उन्होंने कहाः वास्तव में हम भेजे गये हैं एक अपराधी जाति की ओर।

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

33. ताकि हम बरसायें उन पर पत्थर की कंकरी।

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾

مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾

34. नामांकित[1] तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।

فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

35. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾

36. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर[2] पाया।

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾

37. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दुःखदायी यातना से।

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

38. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फ़िरऔन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।

فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾

39. तो वह विमुख हो गया अपने बल-बूते के कारण, और कह दिया की जादूगर अथवा पागल है।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾

40. अन्ततः हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित हो कर रह गया।

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾

41. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर बाँझ[3] आँधी।

مَا تَذَرُ مِن شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾

42. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुज़रती परन्तु उसे बना देती थी जीर्ण चूर-चूर हड्डी के समान।

---

1 अर्थात प्रत्येक पत्थर पर पापी का नाम है।

2 जो आदर्णीय लूत (अलैहिस्सलाम) का घर था।

3 अर्थात अशुभ। (देखियेः सूरह हाक़्क़ा. आयतः 7)

43. तथा समूद में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित् समय तक।	وَفِىۡ ثَمُوۡدَ اِذۡ قِيۡلَ لَهُمۡ تَمَتَّعُوۡا حَتّٰى حِيۡنٍ ﴿۴۳﴾
44. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो सहसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने, और वह देखते रह गये।	فَعَتَوۡا عَنۡ اَمۡرِ رَبِّهِمۡ فَاَخَذَتۡهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمۡ يَنۡظُرُوۡنَ ﴿۴۴﴾
45. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।	فَمَا اسۡتَطَاعُوۡا مِنۡ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوۡا مُنۡتَصِرِيۡنَ ﴿۴۵﴾
46. तथा नूह[1] की जाति को इस से पहले (याद करो)। वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जाति थे।	وَقَوۡمَ نُوۡحٍ مِّنۡ قَبۡلُ‌ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا قَوۡمًا فٰسِقِيۡنَ ﴿۴۶﴾
47. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों[2] से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।	وَالسَّمَآءَ بَنَيۡنٰهَا بِاَيۡٮدٍ وَّاِنَّا لَمُوۡسِعُوۡنَ ﴿۴۷﴾
48. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या[3] ही अच्छे बिछाने वाले हैं।	وَالۡاَرۡضَ فَرَشۡنٰهَا فَنِعۡمَ الۡمٰهِدُوۡنَ ﴿۴۸﴾
49. तथा प्रत्येक वस्तु का हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।	وَمِنۡ كُلِّ شَىۡءٍ خَلَقۡنَا زَوۡجَيۡنِ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۴۹﴾
50. तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव	فَفِرُّوۡۤا اِلَى اللّٰهِ‌ؕ اِنِّىۡ لَـكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ‌ۚ ﴿۵۰﴾

1 आयत 31 से 46 तक नबियों तथा विगत जातियों के परिणाम की ओर निरंतर संकेत कर के सावधान किया गया है कि अल्लाह के बदले का नियम बराबर काम कर रहा है।

2 अर्थात अपनी शक्ति से।

3 आयत का भावार्थ यह है कि जब सब जिन्नों तथा मनुष्यों को अल्लाह ने अपनी वंदना के लिये उत्पन्न किया है तो अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी जिन्न या मनुष्य अथवा फ़रिश्ते और देवी देवता की वंदना अवैध और शिर्क है। जिस के लिये क्षमा नहीं है। (देखियेः सूरह निसा, आयतः 48,116)। और जो व्यक्ति शिर्क कर लेता है तो उस के लिये स्वर्ग निषेध है। (देखियेः सूरह माइदा, आयतः 72)

में मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ।

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

51. और मत बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य। वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝

52. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्हों ने कहा कि जादूगर या पागल है।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝

53. क्या वह एक दूसरे को वसिय्यत[1] कर चुके हैं इस की? बल्कि वे उल्लंघनकारी लोग हैं।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝

54. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

55. और आप शिक्षा देते रहें। इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ۝

56. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें।

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ۝

57. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ۝

58. अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान् है।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ

59. तो इन अत्याचारियों के पाप हैं इन

1 वसिय्यत का अर्थ हैः मरणसन्न आदेश। अर्थ यह कि क्या वे रसूलों के इन्कार का अपने मरण के समय आदेश देते आ रहे हैं कि यह भी अपने पूर्व के लोगों के समान रसूल का इन्कार कर रहे हैं?

فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾

के साथियों के पापों के समान अतः वह उतावले न बनें।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

60. अन्ततः विनाश है काफ़िरों के लिये उन के उस दिन[1] से जिस से वह डराये जा रहे हैं।

1 अर्थात प्रलय के दिन।

सूरह तूर - 52

सूरह तूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 49 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में तूर (पर्वत) की शपथ लेने के कारण इस का नाम सूरह तूर है।
- इस में प्रतिफल के दिन को न मानने पर चेतावनी है कि अल्लाह की यातना उन पर अवश्य आ कर रहेगी। और इस पर विश्वास करने के साक्ष्य प्रस्तुत किये गये हैं तथा यातना का चित्र भी।
- अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा अपने कर्तव्य को समझते हुये जीवन यापन करने पर अल्लाह के पुरस्कारों से सम्मानित किये जाने का चित्रण भी किया गया है।
- विरोधियों के आगे ऐसे प्रश्न रख दिये गये हैं जिन से संदेह स्वयं दूर हो जाते हैं।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने तथा अल्लाह की प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है तूर[1] (पर्वत) की! — وَالطُّورِ ۝١
2. और लिखी हुई पुस्तक[2] की! — وَكِتَٰبٍ مَّسْطُورٍ ۝٢
3. जो झिल्ली के खुले पन्नों में लिखी हुई है। — فِى رَقٍّ مَّنشُورٍ ۝٣

1 यह उस पर्वत का नाम है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह से वार्तालाप की थी।

2 इस से अभिप्राय कुर्आन है।

4. तथा बैतुल मअमूर (आबाद[1] घर) की!

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۝٤

5. तथा ऊँची छत (आकाश) की!

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٥

6. और भड़काये हूये सागर[2] की!

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٦

7. वस्तुतः आप के पालनहार की यातना हो कर रहेगी।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧

8. नहीं है उसे कोई रोकने वाला।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٨

9. जिस दिन आकाश डगमगायेगा।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝٩

10. तथा पर्वत चलेंगे।

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠

11. तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

12. जो विवाद में खेल रहे हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٢

13. जिस दिन वे धक्का दिये जायेंगे नरक की अग्नि की ओर।

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣

14. (उन से कहा जायेगा): यही वह नरक है जिसे तुम झुठला रहे थे।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٤

15. तो क्या यह जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝١٥

16. इस में प्रवेश कर जाओ फिर सहन करो या सहन न करो तुम पर समान है। तुम उसी का बदला दिये जा रहे हो जो तुम कर रहे थे।

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٦

17. निश्चय, आज्ञाकारी बाग़ों तथा

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۝١٧

1 यह आकाश में एक घर है जिस की फ़रिश्ते सदेव परिक्रमा करते रहते हैं। कुछ व्याख्या कारों ने इस का अर्थः कॉबा लिया है। जो उपासकों से प्रत्येक समय आबाद रहता है। क्योंकि मअमूर का अर्थः ((आबाद)) है।

2 (देखियेः सूरह तक्वीर, आयतः 6)

सुखों में होंगे।

فَٰكِهِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَىٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ ٱلْجَحِيمِ ﴿١٨﴾

18. प्रसन्न हो कर उस से जो प्रदान किया होगा उन को उन के पालनहार ने, तथा बचा लेगा उन को उन का पालनहार नरक की यातना से।

كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

19. (उन से कहा जायेगा): खाओ और पीओ मनमानी उस के बदले में जो तुम कर रहे थे।

مُتَّكِـِٔينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَٰهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾

20. तकिये लगाये हुये होंगे तख़्तों पर बराबर बिछे हुये तथा हम विवाह देंगे उन को बड़ी आँखों वाली स्त्रियों से।

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَىْءٍ ۚ كُلُّ ٱمْرِئٍۭ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾

21. और जो लोग ईमान लाये और अनुसरण किया उन का उन की संतान ने ईमान के साथ तो हम मिला देंगे उन की संतान को उन के साथ तथा नहीं कम करेंगे उन के कर्मों में से कुछ, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का बंधक[1] है।

وَأَمْدَدْنَٰهُم بِفَٰكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾

22. तथा हम अधिक देंगे उन को मेवे तथा मांस जिस की वह रुचि रखेंगे।

يَتَنَٰزَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾

23. वे एक-दूसरे से उस में लेते रहेंगे मदिरा के प्याले जिस में न कोई व्यर्थ बात होगी, न कोई पाप की बात।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

24. और फिरते रहेंगे उन की सेवा में (सुन्दर) बालक जैसे वह छुपाये हुये मोती हों।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَآءَلُونَ ﴿٢٥﴾

25. और वह (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक-दूसरे के प्रश्न करते हुये।

---

1 अर्थात जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

26. वह कहेंगेः इस से पूर्व[1] हम अपने परिजनों में डरते थे।

قَالُوٓا۟ إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِىٓ أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

27. तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।

فَمَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَىٰنَا عَذَابَ ٱلسَّمُومِ ﴿٢٧﴾

28. इस से पूर्व[2] हम वंदना किया करते थे उस की। निश्चय वह अति परोपकारी दयावान् है।

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْبَرُّ ٱلرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

29. तो आप शिक्षा देते रहें। क्योंकि आप के पालनहार के अनुग्रह से न आप काहिन (ज्योतिषी) हैं, और न पागल।[3]

فَذَكِّرْ فَمَآ أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

30. क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उस के साथ कालचक्र की?[4]

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِۦ رَيْبَ ٱلْمَنُونِ ﴿٣٠﴾

31. आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करते रहो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

قُلْ تَرَبَّصُوا۟ فَإِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

32. क्या उन्हें सिखाती हैं उन की समझ यह बातें, अथवा वह उल्लंघनकारी लोग हैं?

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَٰمُهُم بِهَٰذَآ ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

33. क्या वह कहते हैं कि इस (नबी) ने इस (कुर्आन) को स्वयं बना लिया है? वास्तव में वह ईमान नहीं लाना चाहते।

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُۥ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

---

1 अर्थात संसार में अल्लाह की यातना से।

2 अर्थात संसार में।

3 जैसा कि वह आप पर यह आरोप लगा कर हताश करना चाहते हैं।

4 अर्थात कुरैश इस प्रतीक्षा में हैं कि संभवतः आप को मौत आ जाये तो हमें चैन मिल जाये।

34. तो वे ला दें इस (क़ुर्आन) के समान कोई एक बात यदि वह सच्चे हैं।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

35. क्या वह पैदा हो गये हैं बिना[1] किसी के पैदा किये, अथवा वह स्वयं पैदा करने वाले हैं?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

36. या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की? वास्तव में वह विश्वास ही नहीं रखते।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾

37. अथवा उन के पास आप के पालनहार के कोषागार हैं या वही (उस के) अधिकारी हैं?

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾

38. अथवा उन के पास कोई सीढ़ी है जिसे लगा कर सुनते[2] हैं? तो उन का सुनने वाला कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत करे।

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

39. क्या अल्लाह के लिये पुत्रियाँ हों तुम्हारे लिये पुत्र हों।

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

40. या आप माँग कर रहे हैं उन से किसी पारिश्रमिक[3] की तो वे उस के बोझ से दबे जा रहे हैं?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾

41. अथवा उन के पास परोक्ष (का ज्ञान) है जिसे वे लिख[4] रहे हैं?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

1 ज़ुबैर बिन मुत्इम कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मग़्रिब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ रहे थे। जब इन आयतों पर पहुँचे तो मेरे दिल की दशा यह हुई कि वह उड़ जायेगा। (सहीह बुख़ारीः 4854)

2 अर्थात आकाश की बातें। और जब उन के पास आकाश की बातें जानने का कोई साधन नहीं तो यह लोग, अल्लाह, फ़रिश्ते और धर्म की बातें किस आधार पर करते हैं?

3 अर्थात सत्धर्म के प्रचार पर।

4 इसीलिये इस वह्यी (क़ुर्आन) को नहीं मानते हैं।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

42. या वे चाहते हैं कोई चाल चलना? तो जो काफ़िर हो गये वे उस चाल में ग्रस्त होंगे।

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

43. अथवा उन का कोई और उपास्य (पूज्य) है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पवित्र है उन के शिर्क से।

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

44. यदि वे देख लें कोई खण्ड आकाश से गिरता हुआ तो कहेंगे कि तह पर तह बादल है।[1]

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

45. अतः आप छोड़ दें उन को यहाँ तक कि मिल जायें अपने उस दिन से जिस में[2] इन्हें अपनी सुध नहीं होगी।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

46. उस दिन नहीं काम आयेगी उन के उन की चाल कुछ, और न उन की सहायता की जायेगी।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

47. तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये एक यातना है इस के अतिरिक्त[3] (भी)। परन्तु उन में से अधिक्तर ज्ञान नहीं रखते हैं।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

48. और (हे नबी!) आप सहन करें अपने पालनहार का आदेश आने तक। वास्तव में आप हमारी रक्षा में हैं। तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ जब जागते हों।[4]

---

1 अर्थात तब भी अपने कुफ़्र से नहीं रुकेंगे जब तक कि उन पर यातना न आ जाये।

2 अर्थात प्रलय के दिन से।

3 इस से संकेत संसारिक यातनाओं की ओर है। (देखियेः सूरह सज्दा आयतः 21)

4 इस में संकेत है आधी रात्री के बाद की नमाज़ (तहज्जुद) की ओर।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

49. तथा रात्री में (भी) उस की पवित्रता का वर्णन करें और तारों के डूबने के[1] पश्चात् (भी)।

---

1 रात्री में तथा तारों के डूबने के समय से संकेत मग़्रिब तथा इशा और फ़ज्र की नमाज़ की ओर है जिन में यह सब नमाज़े भी आती हैं।

सूरह नज्म - 53

सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 62 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ नज्म (तारे) की शपथ से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह नज्म है।
- इस में वह्यी तथा रिसालत से सम्बंधित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। जिन से ईमान तथा विश्वास पैदा होता है। और ज्योतिष के आरोप का खण्डन होता है।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्बंधित संदेहों को दूर किया गया है। जो वह्यी के बारे में किये जाते थे। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ आकाशों में देखा उसे प्रस्तुत किया गया है।
- वह्यी (प्रकाशना) को छोड़ कर मनमानी तथा शिर्क करने और प्रतिफल के इन्कार पर पकड़ की गई है। जिन से इन विचारों का व्यर्थ होना उजागर होता है।
- सदाचारियों को क्षमा और पुरस्कार की शुभ सूचना दी गई है। और इन्कारियों को सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सावधान कर्ता होने का वर्णन है। तथा प्रलय के दिन से सावधान करने के साथ ही अल्लाह ही को सजदा करने तथा उसी की वंदना करने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे!
2. नहीं कुपथ हुया है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुया है।
3. और वह नहीं बोलते अपनी इच्छा से।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ①

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ②

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ③

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ﴿٤﴾

4. वह तो बस वह्यी (प्रकाशना) है। जो (उन की ओर) की जाती है।

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ﴿٥﴾

5. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने।[1]

ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ﴿٦﴾

6. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा खड़ा हो गया।

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ﴿٧﴾

7. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे पर था।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ﴿٨﴾

8. फिर समीप हुआ, और फिर लटक गया।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ﴿٩﴾

9. फिर हो गया दो कमान के बराबर अथवा उस से भी समीप।

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ﴿١٠﴾

10. फिर उस ने वह्यी की उस (अल्लाह) के भक्त[2] की ओर जो भी वह्यी की।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ﴿١١﴾

11. नहीं झुठलाया उन के दिल ने जो कुछ उन्होंने देखा।

أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ﴿١٢﴾

12. तो क्या तुम उन से झगड़ते हो उस पर जिसे वह (आँखों से) देखतें हैं?

وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ﴿١٣﴾

13. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और भी उतरते देखा।

---

1 इस से अभिप्राय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं जो वह्यी लाते थे।

2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर। इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिब्रील (फ़रिश्ते) को उन के वास्तविक रूप में दो बार देखने का वर्णन है। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहाः जो कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अल्लाह को देखा है तो वह झूठा है। और जो कहे कि आप कल (भविष्य) की बात जानते थे तो वह झूठा है। तथा जो कहे कि आप ने धर्म की कुछ बातें छुपा लीं तो वह झूठा है। किन्तु आप ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को उन के रूप में दो बार देखा। (बुख़ारीः 4855) इब्ने मस्ऊद ने कहा कि आप ने जिब्रील को देखा जिन के छः सौ पँख थे। (बुख़ारीः 4856)

14. सिद्रतुल मुन्तहा[1] के पास।

عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ ﴿١٤﴾

15. जिस के पास जन्नतुल[2] मावा है।

عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ﴿١٥﴾

16. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।[3]

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ﴿١٦﴾

17. न तो निगाह चुँधियाई और न सीमा से आगे हुई।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ﴿١٧﴾

18. निश्चय आप ने अपने पालनहार की बड़ी निशानिया देखीं।[4]

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ﴿١٨﴾

19. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख लिया लात्त तथा उज़्ज़ा को।

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ﴿١٩﴾

20. तथा एक तीसरे मनात को?[5]

وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٢٠﴾

21. क्या तुम्हारे लिये पुत्र हैं और उस अल्लाह के लिये पुत्रियाँ?

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ﴿٢١﴾

22. यह तो बड़ा भोंडा विभाजन है।

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ﴿٢٢﴾

23. वास्तव में यह कुछ केवल नाम हैं जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। नहीं उतारा है अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान[6]

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُم

---

1 सिद्रतुल मुन्तहा यह छठें या सातवें आकाश पर बैरी का एक वृक्ष है। जिस तक धरती की चीज़ पहुँचती हैं। तथा ऊपर की चीज़ उतरती हैं। (सहीह मुस्लिमः 173)

2 यह आठ स्वर्गों में से एक का नाम है।

3 हदीस में है कि वह सोने के पतिंगे थे। (सहीह मुस्लिमः 173)

4 इस में मेअराज की रात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आकाशों में अल्लाह की निशानियाँ देखने का वर्णन है।

5 लात्त उज़्ज़ा और मनात यह तीनों मक्का के मुश्रिकों की देवियों के नाम हैं। और अर्थ यह है कि क्या इन की भी कोई वास्तविक्ता है?

6 मुश्रिक अपनी मुर्तियों को अल्लाह की पुत्रियाँ कह कर उन की पूजा करते थे। जिस का यहाँ खण्डन किया जा रहा है।

مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَىٰ ٢٣

पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।

أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ٢٤

24. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे?

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ٢٥

25. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आख़िरत (प्रलोक) तथा संसार।

وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِن بَعْدِ أَن يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ٢٦

26. और आकाशों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चात् कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।[1]

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنثَىٰ ٢٧

27. वास्तव में जो ईमान नहीं लाते परलोक पर, वे नाम देते हैं फ़रिश्तों को स्त्रियों के नाम।

وَمَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ٢٨

28. उन्हें इस का कोई ज्ञान। नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुतः गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।

فَأَعْرِضْ عَن مَّن تَوَلَّىٰ عَن ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ٢٩

29. अतः आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुँह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُم مِّنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ٣٠

30. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो

---

1 अरब के मुश्रिक यह समझते थे कि यदि हम फ़रिश्तों की पूजा करेंगे तो वह अल्लाह से सिफ़ारिश कर के हमें यातना से मुक्त करा देंगे। इसी का खण्डन यहाँ किया जा रहा है।

गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۝٣١

31. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝٣٢

32. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्जा[1] से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उस ने पैदा किया तुम को धरती[2] से तथा जब तुम भ्रूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अतः अपने में पवित्र न बनो। वही भली- भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ۝٣٣

33. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ۝٣٤

34. और तनिक दान किया फिर रुक गया।

اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝٣٥

35. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है

---

1 निर्लज्जा से अभिप्रायः निर्लज्जा पर आधारित कुकर्म हैं। जैसे बाल-मैथुन, व्यभिचार, नारियों का अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन और पर्दे का त्याग, मिश्रित शिक्षा, मिश्रित सभायें, सौन्दर्य की प्रतियोगिता आदि। जिसे आधुनिक युग में सभ्यता का नाम दिया जाता है। और मुस्लिम समाज भी इस से प्रभावित हो रहा है। हदीस में है कि सात विनाशकारी कर्मों से बचोः 1- अल्लाह का साझी बनाने से। 2- जादू करना। 3- अकारण जान मारना। 4- मदिरा पीना। 5- अनाथ का धन खाना। 6- युद्ध के दिन भागना। 7- तथा भोली भाली पवित्र स्त्री को कलंक लगाना। (सहीह बुख़ारीः 2766, मुस्लिमः 89)

2 अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

कि वह (सब कुछ) देख[1] रहा है?

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

36. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है?

وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾

37. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾

38. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾

39. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾

40. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾

41. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾

42. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾

43. तथा वही है जिस ने (संसार में) हँसाया तथा रुलाया।

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾

44. तथा उसी ने मारा और जिवाया।

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾

45. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न कियेः नर और नारी।

مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾

46. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾

47. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार[2] उत्पन्न करना है।

---

1 इस आयत में जो परम्परागत धर्म को मोक्ष का साधन समझता है उस से कहा जा रहा है कि क्या वह जानता है कि प्रलय के दिन इतने ही से सफल हो जायेगा? जब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वह्यी के आधार पर जो प्रस्तुत कर रहे हैं वही सत्य है। और अल्लाह की वह्यी ही परोक्ष के ज्ञान का साधन है।

2 अर्थात प्रलय के दिन प्रतिफल प्रदान करने के लिये।

48. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ

49. और वही शेअ्रा[1] का स्वामी है।

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ

50. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम[2] आद को।

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ

51. तथा समूद को। किसी को शेष नहीं रखा।

وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ

52. तथा नूह की जाति को इस से पहले, वस्तुतः वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ

53. तथा औंधी की हुई बस्ती[3] को उस ने गिरा दिया।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ

54. फिर उस पर छा दिया जो छा[4] दिया।

فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ

55. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ

56. यह[5] सचेतकर्ता हैं प्रथम सचेतकर्ताओं में से।

هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ

57. समीप आ लगी समीप आने वाली।

أَزِفَتِ الْآزِفَةُ

58. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।

لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ

1 शेअ्रा एक तारे का नाम है। जिस की पूजा कुछ अरब के लोग किया करते थे। (इब्ने कसीर)। अर्थ यह है कि यह तारा पूज्य नहीं, वास्तविक पूज्य उस का स्वामी अल्लाह है।

2 यह हूद (अलैहिस्सलाम) की जाति थे।

3 अर्थात सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

4 अर्थात लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति की बस्तियों को।

5 अर्थात पत्थरों की वर्षा कर के उन की बस्ती को ढाँक दिया।

59. तो क्या तुम इस[1] क़ुर्आन पर आश्चर्य करते हो?

60. तथा हँसते हो, और रोते नहीं।

61. तथा विमुख हो रहे हो।

62. अतः सजदा करो अल्लाह के लिये तथा उसी की वंदना[2] करो।

أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾

وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ﴿٦٢﴾

---

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी एक रसूल हैं प्रथम रसूलों के समान।

2 हदीस में है कि जब सज्दे की प्रथम सूरहः «नज्म» उतरी तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो आप के पास थे सब ने सज्दा किया एक व्यक्ति के सिवा। उस ने कुछ धूल ली, और उस पर सज्दा किया। तो मैं ने इस के पश्चात् देखा कि वह काफ़िर रहते हुये मारा गया। और वह उमय्या बिन ख़लफ़ है। (सहीह बुख़ारीः 4863)

सूरह क़मर - 54

सूरह क़मर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 55 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़मर (चाँद) के दो भाग हो जाने का वर्णन है। इसलिये इसे सूरह कमर कहा जाता है।
- इस में काफ़िरों को झंझोड़ा गया है कि जब प्रलय का लक्षण उजागर हो गया है, और वह एतिहासिक बातें भी आ गई हैं जिन में शिक्षा है तो फिर वह कैसे अपने कुफ़्र पर अड़े हुये हैं? यह काफ़िर उसी समय सचेत होंगे जब प्रलय आ जायेगी।
- उन जातियों का कुछ परिणाम बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। और संसार ही में यातना की भागी बन गईं। और मक्का के काफ़िरों को प्रलय की आपदा से सावधान किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. समीप आ गई[1] प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद।
2. और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं। और कहते हैं: यह तो जादू है जो होता रहा है।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ①

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ②

1 आप (सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मक्का वासियों ने माँग की, कि आप कोई चमत्कार दिखायें। अतः आप ने चाँद को दो भाग होते उन्हें दिखा दिया। (बुख़ारीः 4867)
आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं कि रसूल (सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में चाँद दो खण्ड हो गयाः एक खण्ड पर्वत के ऊपर और दूसरा उस के नीचे। और आप ने कहाः तुम सभी गवाह रहो। (सहीह बुख़ारीः 4864)

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرٌّ ۝٣

3. और उन्होंने झुठलाया और अनुसरण किया अपनी आकांक्षाओं का। और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝٤

4. और निश्चय आ चुके हैं उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥

5. यह (क़ुर्आन) पूर्णतः तत्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आईं उन के चेतावनियाँ।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُكُرٍ ۝٦

6. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज़ की[1] ओर।

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ۝٧

7. झुकी होंगी उन की आँख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिड्डी दल हों बिखरे हुये।

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨

8. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफ़िर कहेंगेः यह तो बड़ा भीषण दिन है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝٩

9. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

10. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अतः मेरा बदला ले ले।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۝١١

11. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

12. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती

---

1 अर्थात प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।

13. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख़्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।

وَحَمَلْنَٰهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَٰحٍ وَدُسُرٍ ﴿١٣﴾

14. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़्र किया गया था।

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾

15. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَد تَّرَكْنَٰهَآ ءَايَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾

16. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿١٦﴾

17. और हम ने सरल कर दिया है क़ुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾

18. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿١٨﴾

19. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आँधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾

20. जो उखाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।

تَنزِعُ ٱلنَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

21. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

22. और हम ने सरल बना दिया है क़ुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

23. झुठला दिया समूद[1] ने चेतावनियों को।

فَقَالُوٓا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُۥٓ إِنَّآ إِذًا لَّفِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

24. और कहाः क्या अपने ही में से एक मनुष्य का हम अनुसरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़े कुपथ तथा पागलपन में हैं।

أَءُلْقِىَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾

25. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾

26. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

27. वास्तव में हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उन की परीक्षा के लिये। अतः (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

28. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन[2] उपस्थित होगा।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

29. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

30. फिर कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا

31. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी,

---

1 यह सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी। उन्होंने उन से चमत्कार की माँग की तो अल्लाह ने पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दी। फिर भी वह ईमान नहीं लाये। क्योंकि उन के विचार से अल्लाह का रसूल कोई मनुष्य नहीं फ़रिश्ता होना चाहिये था। जैसा की मक्का के मुश्रिकों का विचार था।

2 अर्थात एक दिन जल स्रोत का पानी ऊँटनी पियेगी और एक दिन तुम सब।

كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

तो वे हो गये बाड़ा बनाने वाले की रौंदी हुई बाढ़ के समान (चूर-चूर)।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

32. और हम ने सरल कर दिया है क़ुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

33. झुठला दिया लूत की जाति ने चेतावनियों को।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾

34. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर लूत के परिजनों के सिवा, हम ने उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।

نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾

35. अपने विषेश अनुग्रह से। इसी प्रकार हम बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।

وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

36. और निःसंदेह (लूत) ने सावधान किया उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने संदेह किया चेतावनियों के विषय में।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

37. और बहलाना चाहा उस (लूत) को उस के अतिथियों[1] से तो हम ने अंधी कर दी उन की आँखें। कि चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों (का परिणाम)।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾

38. और उन पर आ पहुँची प्रातः भोर ही में स्थायी यातना।

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾

39. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

40. और हम ने सरल कर दिया है क़ुर्आन को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

---

1 अर्थात उन्होंने अपने दुराचार के लिये फ़रिश्तों को जो सुन्दर युवकों के रूप में आये थे, उन को लूत (अलैहिस्सलाम) से अपने सुपुर्द करने की माँग की।

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾

41. तथा फ़िरऔनियों के पास भी चेतावनियाँ आईं।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

42. उन्होंने झुठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾

43. (हे मक्का वासियों!) क्या तुम्हारे काफ़िर उत्तम हैं उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

44. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

45. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा[1] देंगे।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

46. बल्कि प्रलय उन के वचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

47. वस्तुतः यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

48. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।

اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

49. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

50. और हमारा आदेश बस एक ही बार

1 इस में मक्का के काफ़िरों की पराजय की भविष्यवाणी है जो बद्र के युद्ध में पूरी हुई। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बद्र के दिन एक ख़ेमे में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे। फिर यही आयत पढ़ते हुये निकले। (सहीह बुख़ारीः 4875)

होता है आँख झपकने के समान।[1]

51. और हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे जैसे बहुत से समुदायों को।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَآ أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾

52. जो कुछ उन्होंने किया है कर्मपत्र में है।[2]

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

53. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात अंकित है।

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾

54. वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरों में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

55. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान स्वामी के पास।

فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

---

1 अर्थात प्रलय होने में देर नहीं होगी। अल्लाह का आदेश होते ही तत्क्षण प्रलय आ जायेगी।

2 जिसे उन फ़रिश्तों ने जो दायें तथा बायें रहते हैं लिख रखा है।

सूरह रहमान - 55

सूरह रहमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ अल्लाह के शुभ नाम ((रहमान)) से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह रहमान है।
- इस की आरंभिक आयतों में रहमान (अत्यंत कृपाशील) की सब से बड़ी दया का वर्णन हुआ है कि उस ने मनुष्य को कुर्आन का ज्ञान प्रदान किया और उसे बात करने की शक्ति दी जो उस का विशेष गुण है।
- फिर आयत 12 तक धरती तथा आकाश की विचित्र चीज़ों का वर्णन कर के यह प्रश्न किया गया है कि तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों तथा गुणों को नकारोगे?
- इस की आयत 13 से 30 तक जिन्नों तथा मनुष्यों की उत्पत्ति, दो पूर्व तथा पश्चिमों की दूरी, दो सागरों का संगम तथा इस प्रकार की अन्य विचित्र निशानियों और अल्लाह की दया की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- आयत 31 से 45 तक मनुष्यों तथा जिन्नों को उन के पापों पर कड़ी चेतावनी दी गई है कि वह दिन आ ही रहा है जब तुम्हारे किये का दुःखदायी दण्ड तुम्हें मिलेगा।
- अन्त में उन का शुभ परिणाम बताया गया है जो अल्लाह से डरते रहे। और फिर स्वर्ग के सुखों की एक झलक दिखायी गई है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾

1. अत्यंत कृपाशील ने।

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾

2. शिक्षा दी कुर्आन की।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾

3. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾

4. सिखाया उसे साफ़ साफ़ बोलना।

5. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (नियमित) हिसाब से हैं।

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥

6. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते हैं।

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦

7. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू।[1]

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧

8. ताकि तुम उल्लंघन न करो तराजू (न्याय) में।

اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝٨

9. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ और कम न तौलो।

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩

10. धरती को उस ने (रहने योग्य) बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये।

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠

11. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।

فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١

12. और भूसे वाले अन्न तथा सुगंधित (पुष्प) फूल हैं।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝١٢

13. तो (हे मनुष्य तथा जिन्न!) तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٣

14. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝١٤

15. तथा उत्पन्न किया जिन्नों को अग्नि की ज्वाला से।

وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝١٥

16. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٦

---

1 (देखियेः सूरह हदीद, आयतः 25) अर्थ यह है कि धरती में न्याय का नियम बनाया और उस के पालन का आदेश दिया।

17. वह दोनों सूर्योदय[1] के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है। | رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

18. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٨﴾

19. उस ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है। | مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾

20. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते। | بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

21. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢١﴾

22. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा। | يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

23. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٣﴾

24. तथा उसी के अधिकार में हैं जहाज़ खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे। | وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

25. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٥﴾

26. प्रत्येक जो धरती पर हैं नाशवान हैं। | كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

27. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)। | وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

1 गर्मी तथा जाड़े में सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों का। इस से अभिप्राय पूर्व तथा पश्चिम की दिशा नहीं है।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٨﴾

28. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَسْأَلُهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

29. उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٠﴾

30. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾

31. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, हे (धरती के) दोनों बोझ[2] (जिन्नो और मनुष्यो!)[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٢﴾

32. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا ۚ لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾

33. हे जिन्न तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो। और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति[4] के।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾

34. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾

35. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धूवाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी सहायता नहीं कर सकोगे।

---

1 अर्थात वह अपनी उत्पत्ति की आवश्यक्तायें पूरी करता, प्रार्थनायें सुनता, सहायता करता, रोगी को निरोग करता, अपनी दया प्रदान करता, तथा अपमान-सम्मान और विजय-प्राजय देता और अगणित कार्य करता है।

2 इस वाक्य का अर्थ मुहावरे में धमकी देना और सावधान करना है।

3 इस में प्रलय के दिन की ओर संकेत है जब सब मनुष्यों और जिन्नों के कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ से बच निकलना तुम्हारे बस में नहीं है।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٣٦

36. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ٣٧

37. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल चमड़े के समान।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٣٨

38. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ ٣٩

39. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य से न जिन्न से।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٤٠

40. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ٤١

41. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने मुखों से, तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٤٢

42. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ٤٣

43. यही वह नरक है जिसे झूठ कह रहे थे अपराधी।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ٤٤

44. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा खौलते पानी के बीच।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٤٥

45. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ٤٦

46. और उस के लिये जो डरा अपने पालनहार के समक्ष खड़े होने से दो बाग़ हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٤٧

47. तो तुम अपने पालनहार के

किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

ذَوَاتَآ أَفْنَانٍ ۝٤٨

48. दो बाग़ हरी भरी शाखाओं वाले।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٤٩

49. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝٥٠

50. उन दोनों में दो जल स्रोत बहते होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٥١

51. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?

فِيهِمَا مِن كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۝٥٢

52. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٥٣

53. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝٥٤

54. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये हुये होंगे जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे। और दोनों बाग़ों (की शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٥٥

55. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝٥٦

56. उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी जिन को हाथ नहीं लगाया होगा किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٥٧

57. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۝٥٨

58. जैसे वह हीरे और मूँगे हों।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٥٩

59. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝٦٠

60. उपकार का बदला उपकार ही है।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٦١

61. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ٦٢

62. तथा उन दोनों के सिवा[1] दो बाग़ होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٦٣

63. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

مُدْهَامَّتَانِ ٦٤

64. दोनों हरे-भरे होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٦٥

65. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ٦٦

66. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे उबलते हुये।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٦٧

67. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ٦٨

68. उन में फल तथा खजूर और अनार होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٦٩

69. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ٧٠

70. उन में सुचरिता सुन्दरियाँ होंगी।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٧١

71. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ٧٢

72. गोरियाँ सुरक्षित होंगी ख़ेमों में।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٧٣

73. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

---

1 हदीस में है कि दो स्वर्ग चाँदी की हैं। जिन के वर्तन तथा सब कुछ चाँदी के हैं। और दो स्वर्ग सोने की, जिन के बर्तन तथा सब कुछ सोने का है। और स्वर्ग वासियों तथा अल्लाह के दर्शन के बीच अल्लाह के मुख पर महिमा के पर्दे के सिवा कुछ नहीं होगा। (सहीह बुख़ारीः 4878)

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾

74. नहीं हाथ लगाया होगा[1] उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٥﴾

75. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

76. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे ग़लीचों तथा सुन्दर बिस्तरों पर।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٧﴾

77. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

78. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

---

1 हदीस में है कि यदि स्वर्ग की कोई सुन्दरी संसार वासियों की ओर झाँक दे, तो दोनों के बीच उजाला हो जाये। और सुगंध से भर जायें। (सहीह बुख़ारी शरीफ़: 2796)

सूरह वाक़िआ - 56

सूरह वाक़िआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 96 आयत हैं।

- वाक़िआ प्रलय का एक नाम है। जो इस सूरह की प्रथम आयत में आया है। जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में प्रलय का भ्यावः चित्रण है जिस में लोगों को तीन भागों में कर दिया जायेगा। फिर प्रत्येक के परिणाम को बताया गया है। और उन तथ्यों का वर्णन किया गया है जिन से प्रतिफल के प्रति विश्वास होता है।
- सूरह के अन्त में क़ुर्आन से विमुख होने पर झंझोंड़ा गया है कि क़ुर्आन जो प्रलय तथा प्रतिफल की बातें बता रहा है वह सर्वथा अल्लाह का संदेश है। उस में शैतान का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
- अन्त में मौत के समय की विवशता का वर्णन करते हुये अन्तिम परिणाम से सावधान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. जब होने वाली हो जायेगी।
2. उस का होना कोई झूठ नहीं है।
3. नीचा-ऊँचा करने[1] वाली।
4. जब धरती तेज़ी से डोलने लगेगी।
5. और चूर-चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ①

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ②

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ③

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ④

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑤

1 इस से अभिप्राय प्रलय है। जो सत्य के विरोधियों को नीचा कर के नरक तक पहुँचायेगी। तथा आज्ञाकारियों को स्वर्ग के ऊँचे स्थान तक पहुँचायेगी। आरंभिक आयतों में प्रलय के होने की चर्चा, फिर उस दिन लोगों के तीन भागों में विभाजित होने का वर्णन किया गया है।

6. फिर हो जायेंगे विखरी हुई धूल।
فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًّا ﴿٦﴾

7. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।
وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾

8. तो दायें वाले, तो क्या हैं दायें वाले![1]
فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾

9. और बायें वाले, तो क्या हैं बायें वाले!
وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿٩﴾

10. और अग्रगामी तो अग्रगामी ही हैं।
وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ﴿١٠﴾

11. वही समीप किये[2] हुये हैं।
أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾

12. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾

13. बहुत से अगले लोगों में से।
ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

14. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।
وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾

15. स्वर्ण से बुने हुये तख़्तों पर।
عَلَىٰ سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾

16. तकिये लगाये उन पर एक- दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।
مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ﴿١٦﴾

17. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾

18. प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।
بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿١٨﴾

19. न तो सिर चकरायेगा उन से न वह निर्बोध होंगी।
لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾

20. तथा जो फल वह चाहेंगे।
وَفَاكِهَةٍ مِمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾

21. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾

22. और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾

23. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾

---

1 दायें वालों से अभिप्राय वह हैं जिन का कर्मपत्र दायें हाथ में दिया जायेगा। तथा बायें वाले वह दुराचारी होंगे जिन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।

2 अर्थात अल्लाह के प्रियवर और उस के समीप होंगे।

24. उस के बदले जो वह (संसार में) करते रहे।	جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا يَعۡمَلُونَ ﴿٢٤﴾
25. नहीं सुनेंगे उन में व्यर्थ बात और न पाप की बात।	لَا يَسۡمَعُونَ فِيهَا لَغۡوًا وَلَا تَأۡثِيمًا ﴿٢٥﴾
26. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी होगी।	إِلَّا قِيلًا سَلَٰمًا سَلَٰمًا ﴿٢٦﴾
27. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य शाली) हैं दायें वाले!	وَأَصۡحَٰبُ ٱلۡيَمِينِ مَآ أَصۡحَٰبُ ٱلۡيَمِينِ ﴿٢٧﴾
28. बिन काँटे की बैरी में होंगे।	فِي سِدۡرٖ مَّخۡضُودٖ ﴿٢٨﴾
29. तथा तह पर तह केलों में।	وَطَلۡحٖ مَّنضُودٖ ﴿٢٩﴾
30. फैली हुई छाया[1] में।	وَظِلّٖ مَّمۡدُودٖ ﴿٣٠﴾
31. और प्रवाहित जल में।	وَمَآءٖ مَّسۡكُوبٖ ﴿٣١﴾
32. तथा बहुत से फलों में।	وَفَٰكِهَةٖ كَثِيرَةٖ ﴿٣٢﴾
33. जो न समाप्त होंगे, न रोके जायेंगे।	لَّا مَقۡطُوعَةٖ وَلَا مَمۡنُوعَةٖ ﴿٣٣﴾
34. और ऊँचे बिस्तर पर।	وَفُرُشٖ مَّرۡفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾
35. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों को एक विशेष रूप से।	إِنَّآ أَنشَأۡنَٰهُنَّ إِنشَآءٗ ﴿٣٥﴾
36. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ।	فَجَعَلۡنَٰهُنَّ أَبۡكَارًا ﴿٣٦﴾
37. प्रेमिकायें समायु।	عُرُبًا أَتۡرَابٗا ﴿٣٧﴾
38. दाहिने वालों के लिये।	لِّأَصۡحَٰبِ ٱلۡيَمِينِ ﴿٣٨﴾
39. बहुत से अगलों में से होंगे।	ثُلَّةٞ مِّنَ ٱلۡأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾
40. तथा बहुत से पिछलों में से।	وَثُلَّةٞ مِّنَ ٱلۡأٓخِرِينَ ﴿٤٠﴾

1 हदीस में है कि स्वर्ग में एक वृक्ष है जिस की छाया में सवार सौ वर्ष चलेगा फिर भी वह समाप्त नहीं होगी। (सहीह बुख़ारीः 4881)

41. और बायें वाले, क्या हैं बायें वाले!

وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ۬ مَآ أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾

42. वह गर्म वायु तथा खौलते जल में (होंगे)।

فِي سَمُومٍ وَّحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾

43. तथा काले धूवें की छाया में।

وَّظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾

44. जो न शीतल होगा और न सुखद।

لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾

45. वास्तव में वह इस से पहले (संसार में) सम्पन्न (सुखी) थे।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾

46. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।

وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾

47. तथा कहा करते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पूनः जीवित होंगे?

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۙ۬ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾

48. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?

أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾

49. आप कह दें कि निःसंदेह सब अगले तथा पिछले।

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾

50. अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।

لَمَجْمُوعُونَ ۙ۬ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾

51. फिर तुम, हे कुपथो! झुठलाने वालो!।

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ﴿٥١﴾

52. अवश्य खाने वाले हो जक़्कूम (थोहड़) के बृक्ष से।[1]

لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ﴿٥٢﴾

53. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।

فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾

54. तथा पीने वाले हो उस पर से खौलता जल।

فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾

1 (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात, आयतः 62)

55. फिर पीने वाले हो प्यासे[1] ऊँट के समान।

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۝٥٥

56. यही उन का अतिथि-सत्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝٥٦

57. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝٥٧

58. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝٥٨

59. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝٥٩

60. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम विवश होने वाले नहीं हैं।

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٦٠

61. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦١

62. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते?

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٦٢

63. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝٦٣

64. क्या तुम उसे उगाते हो या हम उसे उगाने वाले हैं?

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝٦٤

65. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।

لَوْ نَشَاۤءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝٦٥

1 आयत में प्यासे ऊँटों के लिये ((हीम)) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह ऊँट में एक विशेष रोग होता है जिस से उस की प्यास नहीं जाती।

66. वस्तुतः हम दण्डित कर दिये गये।

إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾

67. बल्कि हम (जीविका से) वंचित कर दिये गये।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

68. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।

أَفَرَءَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾

69. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।

ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾

70. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते?

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

71. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हो।

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾

72. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं?

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾

73. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾

74. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

75. मैं शपथ लेता हूँ सितारों के स्थानों की!

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾

76. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾

77. वास्तव में यह आदरणीय[1] क़ुर्आन है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾

78. सुरक्षित[2] पुस्तक में है।

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾

1 तारों की शपथ का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आकाश के तारों की एक दृढ़ व्यवस्था है उसी प्रकार यह क़ुर्आन भी अति ऊँचा तथा सुदृढ़ है।

2 इस से अभिप्रायः ((लौहे महफ़ूज़)) है।

لَّا يَمَسُّهُۥٓ إِلَّا ٱلْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾

79. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं।[1]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٠﴾

80. अवतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।

أَفَبِهَٰذَا ٱلْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾

81. फिर क्या तुम इस वाणी (क़ुर्आन) की अपेक्षा करते हो?

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾

82. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ ٱلْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾

83. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं।

وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾

84. और तुम उस समय देखते रहते हो।

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾

85. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परन्तु तुम नहीं देख सकते।

فَلَوْلَآ إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾

86. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।

تَرْجِعُونَهَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٨٧﴾

87. तो उस (प्राण) को फेर क्यों नहीं लाते, यदि तुम सच्चे हो?

فَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾

88. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾

89. तो उस के लिये सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरी स्वर्ग है।

وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ﴿٩٠﴾

90. और यदि वह दायें वालों में से है।

فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ﴿٩١﴾

91. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।[2]

وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُكَذِّبِينَ ٱلضَّآلِّينَ ﴿٩٢﴾

92. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथों में से।

---

1 पवित्र लोगों से अभिप्रायः फ़रिश्ते हैं। (देखियेः सूरह अबस, आयतः 15,16)

2 अर्थात उस का स्वागत सलाम से होगा।

93. तो अतिथि सत्कार है खौलते पानी से।

94. तथा नरक में प्रवेश।

95. वास्तव में यही निश्चय सत्य है।

96. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٩٣﴾

وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ﴿٩٤﴾

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٩٥﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٩٦﴾
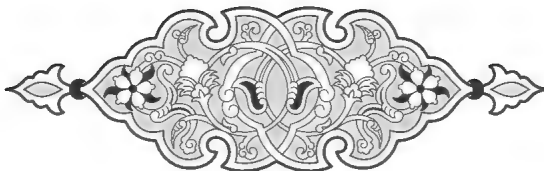
सूरह हदीद - 57

सूरह हदीद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 29 आयत हैं।

- इस सूरह की आयत 25 में हदीद शब्द आया है। जिस का अर्थः ((लोहा)) है इस लिये इस का नाम सूरह हदीद पड़ा है।
- इस में अल्लाह की पवित्रता तथा उस के गुणों का वर्णन किया गया है। और शुद्ध मन से ईमान लाने तथा उस की माँगों को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है कि प्रलय के दिन के लिये ज्योति होगी। जिस से मुनाफ़िक़ वंचित रहेंगे और उन की यातना की दशा को दिखाया गया है।
- आयत 16 से 24 तक में बताया गया है कि ईमान क्या चाहता है? और संसार का अपेक्षा परलोक को लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी गई है।
- आयत 25 से 27 तक न्याय की स्थापना के लिये बल प्रयोग को आवश्यक क़रार देते हुये जिहाद की प्रेरणा दी गई है। और रुहबानिय्यत (सन्यास) का खण्डन किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारी ईमान वालों को प्रकाश तथा बड़ी दया प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करता है जो भी आकाशों तथा धरती में है और वह प्रबल गुणी है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ②

2. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जीवन देता है तथा मारता है और वह जो चाहे कर सकता है।

3. वही प्रथम तथा वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है। और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾

4. उसी ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को छः दिनों में फिर स्थित हो गया अर्श (सिंहासन) पर। वह जानता है जो प्रवेश करता है धरती में तथा जो निकलता है उस से। और जो उतरता है आकाश से तथा चढ़ता है उस में। और वह तुम्हारे साथ[1] है जहाँ भी तुम रहो, और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾

5. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य और उसी की ओर फेरे जाते हैं सब मामले (निर्णय के लिये)।

لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾

6. वह प्रवेश करता है रात्रि को दिन में और प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वह सीनों के भेदों से पूर्णतः अवगत है।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾

7. तुम सभी ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को। तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफल है।

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾

8. और तुम्हें क्या हो गया है कि ईमान

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا

1 अर्थात अपने सामर्थ्य तथा ज्ञान द्वारा। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह सदा से है। और सदा रहेगा। प्रत्येक चीज़ का अस्तित्व उस के अस्तित्व के पश्चात् है। वही नित्य है, विश्व की प्रत्येक वस्तु उस के होने को बता रही है फिर भी वह ऐसा गुप्त है कि दिखाई नहीं देता।

بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑧

नहीं लाते अल्लाह पर जब कि रसूल[1] तुम्हें पुकार रहा है ताकि तुम ईमान लाओ अपने पालनहार पर, जब कि अल्लाह ले चुका है तुम से वचन,[2] यदि तुम ईमान वाले हो।

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ⑨

9. वही है जो उतार रहा है अपने भक्त पर खुली आयतें ताकि वह तुम्हें निकाले अंधेरों से प्रकाश की ओर। तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अवश्य करुणामय दयावान् है।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑩

10. और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार। नहीं बराबर हो सकते तुम में से वे जिन्होंने दान किया (मक्का) की विजय से पहले तथा धर्मयुद्ध किया। वही लोग पद में अधिक ऊँचे हैं उन से जिन्होंने दान किया उस के पश्चात्[3] तथा धर्मयुद्ध किया। तथा प्रत्येक को अल्लाह ने वचन दिया है भलाई का, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से पूर्णतः सूचित है।

---

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 (देखियेः सूरह आराफ़, आयतः 172)। इब्ने कसीर ने इस से अभिप्राय वह वचन लिया है जिस का वर्णन (सूरह माइदा, आयतः 7) में है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा सहाबा से लिया गया कि वह आप की बातें सुनेंगे तथा सुख-दुख में अनुपालन करेंगे। और प्रिय और अप्रिय में सच्च बोलेंगे। तथा किसी की निन्दा से नहीं डरेंगे। (बुख़ारीः 7199, मुस्लिमः 1709)

3 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में धन दान करना है।

11. कौन है जो ऋण[1] दे अल्लाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑪

12. जिस दिन तुम देखोगे ईमान वालों तथा ईमान वालियों को, कि दौड़ रहा[2] होगा उन का प्रकाश उन के आगे तथा उन के दायें। तुम्हें शुभसूचना है ऐसे स्वर्गों की बहती हैं जिन में नहरें, जिन में तुम सदावासी होगे, वही बड़ी सफलता है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمٰنِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑫

13. जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ पुरुष तथा मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ उन से जो ईमान लाये कि हमारी प्रतीक्षा करो हम प्राप्त कर लें तुम्हारे प्रकाश में से कुछ। उन से कहा जायेगाः तुम अपने पीछे वापिस जाओ, और प्रकाश की खोज करो।[3] फिर बना दी जायेगी उन के बीच एक दीवार जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया होगी तथा उस के बाहर यातना होगी।

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظٰهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ⑬

14. वह उन को पुकारेंगेः क्या हम (संसार में) तुम्हारे साथ नहीं थे? (वह कहेंगे)ः परन्तु तुम ने उपद्रव में डाल लिया अपने आप को, और

يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتّٰى جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ⑭

1 हदीस में है कि कोई उहुद (पर्वत) बराबर भी सोना दान करे तो मेरे सहाबा के चौथाई अथवा आधा किलो के बराबर भी नहीं होगा। (सहीह बुख़ारीः 3673, सहीह मुस्लिमः 2541)

2 यह प्रलय के दिन होगा जब वह अपने ईमान के प्रकाश में स्वर्ग तक पहुँचेंगे।

3 अर्थात संसार में जा कर ईमान तथा सदाचार के प्रकाश की खोज करो किन्तु यह असंभव होगा।

प्रतीक्षा में[1] रहे तथा संदेह किया और धोखे में रखा तुम्हें तुम्हारी मिथ्या कामनाओं ने। यहाँ तक की आ पहुँचा अल्लाह का आदेश। और धोखे ही में रखा तुम्हें बड़े वंचक (शैतान) ने।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوَاكُمُ النَّارُ ۖ هِيَ مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑮

15. तो आज तुम से कोई अर्थ-दण्ड नहीं लिया जायेगा और न काफ़िरों से। तुम्हारा आवास नरक है, वही तुम्हारे योग्य है, और वह बुरा निवास है।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ⑯

16. क्या समय नहीं आया ईमान वालों के लिये कि झुक जायें उन के दिल अल्लाह के स्मरण (याद) के लिये, तथा जो उतरा है सत्य, और न हो जायें उन के समान जिन को प्रदान की गईं पुस्तकें इस से पुर्व, फिर लम्बी अवधि व्यतीत हो गई उन पर, तो कठोर हो गये उन के दिल।[2] तथा उन में अधिक्तर अवैज्ञाकारी हैं।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ⑰

17. जान लो कि अल्लाह ही जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात, हम ने उजागर कर दी हैं तुम्हारे लिये निशानियाँ ताकि तुम समझो।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑱

18. वस्तुतः दान करने वाले पुरुष तथा दान करने वाली स्त्रियाँ तथा जिन्होंने ऋण दिया है अल्लाह को अच्छा ऋण,[3] उसे बढ़ाया जायेगा उन

---

1 कि मुसलमानों पर कोई आपदा आये।

2 (देखियेः सूरह माइदा, आयतः 13)

3 हदीस में है कि जो पवित्र कमाई से एक खजूर के बराबर भी दान करता है

के लिये, और उन्हीं के लिये अच्छा प्रतिदान है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾

19. तथा जो ईमान लाये अल्लाह और उस के रसूलों[1] पर वही सिद्दीक़ तथा शहीद[2] हैं अपने पालनहार के समीप। उन्हीं के लिये उन का प्रतिफल तथा उन की दिव्य ज्योति है। और जो काफ़िर हो गये और झुठलाया हमारी आयतों को तो वही नारकीय हैं।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

20. जान लो कि संसारिक जीवन एक खेल तथा मनोरंजन और शोभा[3] एवं आपस में गर्व तथा एक- दूसरे से बढ़ जाने का प्रयास है धनों तथा संतान में। उस वर्षा के समान भा गई किसानों को जिस की उपज, फिर वह पक गई तो तुम उसे देखने लगे पीली, फिर वह हो जाती है चूर-चूर। और परलोक में कड़ी यातना है, तथा अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता है। और संसारिक जीवन तो बस धोखे का संसाधन है।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ

21. एक-दूसरे से आगे बढ़ो अपने

तो अल्लाह उसे पोसता है जैसे कोई घोड़ा के बच्चे को पोसता है यहाँ तक कि पर्वत के समान हो जाता है। (सहीह बुख़ारीः 1014)

1 अर्थात बिना अन्तर और भेद-भाव किये सभी रसूलों पर ईमान लाये।

2 सिददीक़ का अर्थ हैः बड़ा सच्चा। और शहीद का अर्थ गवाह है। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 143, और सूरह हज्ज, आयतः 78)।
शहीद का अर्थ अल्लाह की राह में मारा गया व्यक्ति भी है।

3 इस में संसारिक जीवन की शोभा की उपमा वर्षा की उपज की शोभा से दी गई है। जो कुछ ही दिन रहती है फिर चूर-चूर हो जाती है।

पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिस का विस्तार आकाश तथा धरती के विस्तार के[1] समान है। जो तैयार की गई है उन के लिये जो ईमान लायें अल्लाह और उस के रसूलों पर। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह प्रदान करता है उसे जिस को चाहता है और अल्लाह बड़ा उदार (दयाशील) है।

السَّمَآءِ وَالْأَرْضِۙ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِۦۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢١﴾

22. नहीं पहुँचती कोई आपदा धरती में और न तुम्हारे प्राणों में परन्तु वह एक पुस्तक में लिखी है इस से पूर्व कि हम उसे उत्पन्न करें।[2], और यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِيٓ أَنفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَآۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾

23. ताकि तुम शोक न करो उस पर जो तुम से खो जाये। और न इतराओ उस पर जो तुम्हें प्रदान किया है। और अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी इतराने गर्व करने वाले से।

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَآ آتَاكُمْۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾

24. जो कंजूसी करते हैं और आदेश देते हैं लोगों को कंजूसी करने का। तथा जो विमुख होगा तो निश्चय अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾

25. निःसंदेह हम ने भेजा है अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ, तथा उतारी है उन के साथ पुस्तक, तथा तुला

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَٰبَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِۖ

1 (देखियेः सूरह आले इमरान, आयतः 133)

2 अर्थात इस विश्व और मनुष्य के अस्तित्व से पूर्व ही अल्लाह ने अपने ज्ञान अनुसार ((लौहे महफ़ूज़)) (सुरक्षित पुस्तक) में लिख रखा है। हदीस में है कि अल्लाह ने पूरी उत्पत्ति का भाग्य आकाशों तथा धरती की रचना से पचास हज़ार वर्ष पहले लिख दिया। जब कि उस का अर्श पानी पर था। (सहीह मुस्लिमः 2653)

وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

(न्याय का नियम), ताकि लोग स्थित रहें न्याय पर। तथा हम ने उतारा लोहा जिस में बड़ा बल[1] है तथा लोगों के लिये बहुत से लाभ। और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस की सहायता करता है तथा उस के रसूलों की बिना देखे। वस्तुतः अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ ۖ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٦﴾

26. हम ने (रसूल बना कर) भेजा नूह को तथा इब्राहीम को और रख दी उन की संतति में नबूवत (दुतत्व) तथा पुस्तक। तो उन में से कुछ ने मार्गदर्शन अपनाया और उन में से बहुत से अवैज्ञाकारी हैं।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٧﴾

27. फिर हम ने निरन्तर उन के पश्चात् अपने रसूल भेजे और उन के पश्चात् भेजा मर्यम के पुत्र ईसा को तथा प्रदान की उसे इंजील, और कर दिया उस का अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथा दया, और संसार [2] त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हम ने नहीं अनिवार्य किया उसे उन के ऊपर। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिये (उन्होंने

---

1 उस से अस्त्र-शस्त्र बनाये जाते हैं।

2 संसार त्याग अर्थात सन्यास के विषय में यह बताया गया है कि अल्लाह ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया। उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिये स्वयं इसे अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया। फिर भी इसे निभा नहीं सके। इस में यह संकेत है कि योग तथा सन्यास का धर्म में कभी कोई आदेश नहीं दिया गया है। इस्लाम में भी शरीअत के स्थान पर तरीक़त बना कर नई बातें बनाई गईं। और सत्धर्म का रूप बदल दिया गया। हदीस में है कि कोई हमारे धर्म में नई बात निकाले जो उस में नहीं है तो वह मान्य नहीं। (सहीह बुख़ारीः 2697, सहीह मुस्लिमः 1718)

ऐसा किया) तो उन्होंने नहीं किया उस का पूर्ण पालन। फिर (भी) हम ने प्रदान किया उन को जो ईमान लाये उन में से उन का बदला। और उन में से अधिक्तर अवैज्ञाकारी हैं।

28. हे लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा[1] प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिस के साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَءَامِنُوا۟ بِرَسُولِهِۦ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِۦ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِۦ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٨﴾

29. ताकि ज्ञान हो जाये (इन बातों से) अहले[2] किताब को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखते अल्लाह के अनुग्रह पर। और यह कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّن فَضْلِ ٱللَّهِ ۙ وَأَنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

---

1 हदीस में है कि तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन को दोहरा प्रतिफल मिलेगा। इन में एक, अहले किताब में से वह व्यक्ति है जो अपने नबी पर ईमान लाया था फिर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी ईमान लाया। (सहीह बुख़ारीः 97, 2544, सहीह मुस्लिमः 154)

2 अहले किताब से अभिप्रायः यहूदी तथा ईसाई हैं।

सूरह मुजादला - 58

सूरह मुजादला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 22 आयतें हैं।

- मुजादला का अर्थ हैः झगड़ा और तकरार। इस के आरंभ में एक नारी की तकरार का वर्णन है। इसलिये इस का नाम सूरह मुजादला है।
- इस में ज़िहार के विषय में धार्मिक नियमों को बताया गया है। साथ ही इन नियमों का इन्कार करने पर कड़े दण्ड की चेतावनी दी गई है।
- आयत 7 से 11 तक मुनाफ़िक़ो के षड्यंत्र और उपद्रव की चर्चा करते हुये ईमान वालों के सामाजिक नियमों के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 12 और 13 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ काना फूसी के सम्बंध में एक विशेष आदेश दिया गया है।
- अन्त में द्विधावादियों (मुनाफ़िक़ों) की पकड़ करते हुये सच्चे ईमान वालों के लक्षण बताये गये हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ

1. (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में। तथा गुहार रही थी अल्लाह को। और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों की वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۤىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ

2. जो ज़िहार[1] करते हैं तुम में से

---

1 ज़िहार का अर्थ हैः पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के समान है। इस्लाम से पूर्व अरब समाज में यह कुरीति थी कि पति अपनी पत्नी से यह कह देता तो पत्नी को तलाक़ हो जाती थी। और सदा के लिये पति से बिलग हो जाती थी। और इस का नाम ((ज़िहार)) था। इस्लाम में

إِنْ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا الَّائِي وَلَدْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٢﴾

अपनी पत्नियों से तो वे उन की माँ नहीं हैं। उन की माँ तो वे हैं जिन्होंने उन को जन्म दिया है। और वह बोलते हैं अप्रिय तथा झूठी बात। और वास्तव में अल्लाह माफ़ करने वाला क्षमाशील है।

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِن نِّسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۚ ذَٰلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾

3. और जो ज़िहार कर लेते हैं अपनी पत्नियों से, फिर वापिस लेना चाहते हों अपनी बात तो (उस का दण्ड) एक दास मुक्त करना है, इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगायें।[1] इसी की तुम्हें शिक्षा दी जा रही है। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।

فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾

4. फिर जो (दास) न पाये तो दो महीने निरन्तर रोज़ा (ब्रत) रखना है इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगाये। फिर जो सकत न रखे तो साठ निर्धनों को भोजन कराना है। यह आदेश इस लिये है ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और यह अल्लाह की सीमायें हैं। तथा काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ

5. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह

एक स्त्री जिस का नाम ((ख़ौला)) (रज़ियल्लाहु अन्हा) है उस से उस के पतिः औस पुत्र सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ज़िहार कर लिया। ख़ौला (रज़ियल्लाहु अन्हा) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आई। और आप से इस विषय में झगड़ने लगी। उस पर यह आयतें उतरीं। (सहीह अबुदाऊद- 2214)। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहाः मैं उस की बात नहीं सुन सकी। और अल्लाह ने सुन ली। (इब्ने माजाः 156, यह हदीस सहीह है।)

1 हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है। अर्थात संभोग से पहले प्रायश्चित चुका दे।

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

तथा उस के रसूल का, वे अपमानित कर दिये जायेंगे जैसे अपमानित कर दिये गये जो इन से पूर्व हुये। और हम ने उतार दी हैं खुली आयतें और काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝

6. जिस दिन जीवित करेगा उन सब को अल्लाह तो उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से। गिन रखा है उसे अल्लाह ने और वह भूल गये हैं उसे। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

7. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है? नहीं होती किसी तीन की काना फूसी परन्तु वह उन का चौथा होता है। और न पाँच की परन्तु वह उन का छठा होता है। और न इस से कम की और न इस से अधिक की परन्तु वह उन के साथ होता[1] है, वे जहाँ भी हों। फिर वह उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से प्रलय के दिन। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۖ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۗ

8. क्या आप ने नहीं देखा उन्हें जो रोके गये हैं काना फूसी[2] से? फिर (भी) वही करते हैं जिस से रोके गये हैं। तथा काना फूसी करते हैं पाप और अत्याचार, तथा रसूल की अवैज्ञा

---

1 अर्थात जानता और सुनता है।

2 इन से अभिप्राय मुनाफ़िक़ हैं। क्योंकि उन की काना फूसी बुराई के लिये होती थी। (देखियेः सूरह निसा, आयतः 114)

حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

की। और जब वे आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे (शब्द से) सलाम करते हैं जिस से आप पर सलाम नहीं भेजा अल्लाह ने। तथा कहते हैं अपने मनों में: क्यों अल्लाह हमें यातना नहीं देता उस पर जो हम कहते[1] हैं? पर्याप्त है उन को नरक जिस में वह प्रवेश करेंगे, तो बुरा है उन का ठिकाना।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

9. हे लोगो जो ईमान लाये हो! जब तुम काना फूसी करो तो काना फूसी न करो पाप तथा अत्याचार एवं रसूल की अवैज्ञा की। और काना फूसी करो पुण्य तथा सदाचार की। और डरते रहो अल्लाह से जिस की ओर ही तुम एकत्र किये जाओगे।

إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

10. वास्तव में काना फूसी शैतानी काम है ताकि वह उदासीन हों[2] जो ईमान लाये। जब कि नहीं है वह हानिकर उन को कुछ, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और अल्लाह ही पर

---

1 मुनाफ़िक़ और यहूदी जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में आते तो (अस्सलामु अलैकुम) (अनुवादः आप पर सलाम और शान्ति हो।) की जगह (अस्सामु अलैकुम) (अनुवादः आप पर मौत आये।) कहते थे। और अपने मन में यह सोचते थे कि यदि आप अल्लाह के सत्य रसूल होते तो हमारे इस दुराचार के कारण हम पर यातना आ जाती। और जब कोई यातना नहीं आई तो आप अल्लाह के रसूल नहीं हो सकते। हदीस में है कि यहूदी तुम को सलाम करें तो वह ((अस्सामु अलैका)) कहते हैं, तो तुम ((व अलैका)) कहो। अर्थातः और तुम पर भी। (सहीह बुख़ारीः **6257**, सहीह मुस्लिमः **2164**)

2 हदीस में है कि जब तुम तीन एक साथ रहो तो दो आपस में काना फूसी न करें। क्योंकि इस से तीसरे को दुख होता है। (सहीह बुख़ारीः **6290**, सहीह मुस्लिमः **2184**)

चाहिये कि भरोसा करें ईमान वाले।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا۟ فِى
ٱلْمَجَٰلِسِ فَٱفْسَحُوا۟ يَفْسَحِ ٱللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ
ٱنشُزُوا۟ فَٱنشُزُوا۟ يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟
مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ
وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

11. हे ईमान वालो! जब तुम से कहा जाये कि विस्तार कर दो अपनी सभावों में तो विस्तार[1] कर दो, विस्तार कर देगा अल्लाह तुम्हारे लिये। तथा जब कहा जाये कि सुकड़ जाओ तो सुकड़ जाओ। ऊँचा[2] कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियाँ। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति अवगत है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَٰجَيْتُمُ ٱلرَّسُولَ فَقَدِّمُوا۟
بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ
فَإِن لَّمْ تَجِدُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

12. हे ईमान वालो! जब तुम अकेले बात करो रसूल से तो बात करने से पहले कुछ दान करो।[3] यह तुम्हारे लिये उत्तम तथा अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम (दान के लिये कुछ) न पाओ तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

ءَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا۟ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ
صَدَقَٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا۟ وَتَابَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا۟
ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ ۚ
وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

13. क्या तुम (इस आदेश से) डर गये कि एकान्त में बात करने से पहले कुछ दान कर दो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया तो स्थापना करो नमाज़ की तथा ज़कात दो और आज्ञा पालन करो अल्लाह तथा उस के रसूल की। और अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

---

1 भावार्थ यह है कि कोई आये तो उसे भी खिसक कर और आपस में सुकड़ कर जगह दो।

2 हदीस में है कि जो अल्लाह के लिये झुकता और अच्छा व्यवहार चयन करता है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। (सहीह मुस्लिमः 2588)

3 प्रत्येक मुसलमान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एकान्त में बात करना चाहता था। जिस से आप को परेशानी होती थी। इसलिये यह आदेश दिया गया।

14. क्या आप ने उन्हें देखा[1] जिन्होंने मित्र बना लिया उस समुदाय को जिस पर क्रोधित हो गया अल्लाह? न वह तुम्हारे हैं और न उन के। और वह शपथ लेते हैं झूठी बात पर जान बूझ कर।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِم مَّا هُم مِّنكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ⑭

15. तय्यार की है अल्लाह ने उन के लिये कड़ी यातना, वास्तव में वह बुरा है जो वे कर रहे हैं।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑮

16. उन्होंने बना लिया अपनी शपथों को एक ढाल। फिर रोक दिया (लोगों को) अल्लाह की राह से, तो उन्हीं के लिये अपमान कारी यातना है।

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑯

17. कदापि नहीं काम आयेंगे उन के धन और न उन की संतान अल्लाह के समक्ष कुछ। वही नारकी हैं, वह उस में सदावासी होंगे।

لَّن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑰

18. जिस दिन खड़ा करेगा उन को अल्लाह तो वह शपथ लेंगे अल्लाह के समक्ष जैसे वह शपथ ले रहे हैं तुम्हारे समक्ष। और वह समझ रहे हैं कि वह कुछ (तर्क)[2] पर हैं। सुन लो! वास्तव में वही झूठे हैं।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ⑱

19. छा[3] गया है उन पर शैतान और भुला दी है उन को अल्लाह की याद। यही शैतान की सेना है। सुन लो! शैतान की सेना ही क्षतिग्रस्त होने वाली है।

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑲

1 इस से संकेत मुनाफ़िक़ों की ओर है जिन्होंने यहूदियों को अपना मित्र बना रखा था।

2 अर्थात उन्हें अपनी शपथ का कुछ लाभ मिल जायेगा जैसे संसार में मिलता रहा।

3 अर्थात उन को अपने नियंत्रण में ले रखा है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾

20. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल का, वही अपमानितों में से हैं।

كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾

21. लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा[1] तथा मेरे रसूल। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

22. आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त- दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वह उन के पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उन के भाई अथवा उन के परिजन[2] हों। वही हैं लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया है जिन को अपनी ओर से रूह (आत्मा) द्वारा। तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे जिन में। प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वह प्रसन्न हो गये उस से। वह अल्लाह का समूह है। सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है।

---

1 (देखियेः सूरह मुमिन, आयतः 51- 52)

2 इस आयत में इस बात का वर्णन किया गया है कि ईमान, और काफ़िर जो इस्लाम और मुसलमानों के जानी दुश्मन हों उन से सच्ची मैत्री करना एकत्र नहीं हो सकते। अतः जो इस्लाम और इस्लाम के विरोधियों से एक साथ सच्चे सम्बंध रखते हों तो उन का ईमान सत्य नहीं है।

सूरह हश्र - 59

सूरह हश्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 24 आयतें हैं।

- इस सूरह की दूसरी आयत में हश्र का शब्द आया है। जिस का अर्थः एकत्र होना है। और इसी से यह नाम लिया गया है।
- इस में अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों को मदीना के यहूदी क़बीले के अपमानकारी परिणाम से चेतावनी दी गयी है।
- आरंभ में बताया गया है कि आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ अल्लाह की पवित्रता का गान करती है। फिर यहूदी क़बीले बनी नज़ीर के, अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करने का परिणाम बताया गया है। और ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 11 से 17 तक में उन मुनाफ़िक़ों की पकड़ की गई है जो यहूदियों से मिल कर इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे।
- अन्त में प्रभावी शिक्षा तथा अल्लाह से डरने की बातों का वर्णन किया गया है। तथा आज्ञा पालन और अवैज्ञा का अन्तर बताया गया है।
- इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहाः कि यह सूरह बनी नज़ीर के बारे में उतरी। इसे सूरह बनी नज़ीर कहो। (सहीह बुख़ारीः 4883)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

1. अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ

2. वही है जिस ने अहले किताब में से काफिरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे, और

حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِأَيْدِيْهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يَاُولِي الْأَبْصَارِ ۝

उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्ग[1] अल्लाह से। तो आ गया उन के पास अल्लाह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों[2] से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

وَلَوْلَآ أَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝

3. और यदि अल्लाह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आख़िरत (परलोक) में नरक की यातना है।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

4. यह इसलिये कि उन्होंने विरोध किया अल्लाह तथा उस के रसूल का, और जो विरोध करेगा अल्लाह का तो निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

---

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना पहुँचे तो वहाँ यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थेः बनी नज़ीर, बनी क़ुरैज़ा तथा बनी क़ैनुक़ाअ। आप ने उन सभी से संधि कर ली। परन्तु वह इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। और एक समय जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बनी नज़ीर के पास गये तो उन्होंने ऊपर से एक पत्थर फेंक कर आप को मार डालने की योजना बनाई। जिस से वह्यी द्वारा अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। उन के इस संधि भंग तथा षड्यंत्र के कारण आप ने उन पर आक्रमण किया। वह कुछ दिन अपने दुर्गों में बंद रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाल को स्वीकार किया। और यह मदीना से यहूद का प्रथम देश निकाला था। यहाँ से वह ख़ैबर पहुँचे और अदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में उन्हें फिर देश निकाला दिया गया। और वह वहाँ से शाम चले गये जो हश्र का मैदान होगा।

2 जब वे अपने घरों से जाने लगे तो घरों को तोड़-तोड़ कर जो कुछ साथ ले जा सकते थे ले गये। और शेष सामान मुसलमानों ने निकाला।

5. (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा[1] कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ। और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।

مَا قَطَعْتُم مِّن لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَآئِمَةً عَلَىٰٓ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ ٱللَّهِ وَلِيُخْزِيَ ٱلْفَٰسِقِينَ ۝٥

6. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नहीं दौड़ाये तुम ने उस के लिये घोड़े और न ऊँट। परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَمَآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُۥ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝٦

7. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस बस्ती वालों[2] से, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रह[3] जाये

مَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْ أَهْلِ ٱلْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِ كَىْ لَا يَكُونَ دُولَةًۢ بَيْنَ ٱلْأَغْنِيَآءِ مِنكُمْ ۚ وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ۝٧

---

1 बनी नज़ीर के घिराव के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशानुसार उन के खजूरों के कुछ वृक्ष जला दिये और काट दिये गये और कुछ छोड़ दिये गये। ताकि शत्रु की आड़ को समाप्त किया जाये। इस आयत में उसी का वर्णन किया गया है। (सहीह बुख़ारीः 4884)

2 अर्थात यहूदी क़बीला बनी नज़ीर से जो धन बिना युद्ध के प्राप्त हुआ उस का नियम बताया गया है कि वह पूरा धन इस्लामी बैतुल माल का होगा उसे मुजाहिदों में विभाजित नहीं किया जायेगा। हदीस में है कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये विशेष था जिस से आप अपनी पत्नियों को ख़र्च देते थे। फिर जो बच जाता तो उसे अल्लाह की राह में शस्त्र और सवारी में लगा देते थे। (बुख़ारीः 4885)
इस को फ़ेय का माल कहते हैं जो ग़नीमत के माल से अलग है।

3 इस में इस्लाम की अर्थ व्यवस्था के मूल नियम का वर्णन किया गया है। पूँजी पति व्यवस्था में धन का प्रवाह सदा धनवानों की ओर होता है। और निर्धन दरिद्रता की चक्की में पिसता रहता है। कम्युनिज़्म में धन का प्रवाह सदा शासक

तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ। तथा अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝

8. उन निर्धन मुहाजिरों के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अल्लाह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की, यही सच्चे हैं।

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِن قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

9. तथा उन लोगों[1] के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरों के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिज्रत कर के आ गये उन के यहाँ। और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यक्ता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्रथामिक्ता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे[2] हों। और जो

वर्ग की ओर होता है। जब कि इस्लाम में धन का प्रवाह निर्धन वर्ग की ओर होता है।

1 इस से अभिप्राय मदीना के निवासीः अन्सार हैं। जो मुहाजिरीन के मदीना में आने से पहले ईमान लाये थे। इस का यह अर्थ नहीं है कि वह मुहाजिरीन से पहले ईमान लाये थे।

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास एक अतिथि आया और कहाः हे अल्लाह के रसूल! मैं भूखा हूँ। आप ने अपनी पत्नियों के पास भेजा तो वहाँ कुछ नहीं था। एक अन्सारी उसे घर ले गये। घर पहुँचे तो पत्नि ने कहाः घर में केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर प्रामर्श किया कि बच्चों को बहला कर सुला दिया जाये। तथा पत्नि से कहा कि जब अतिथि खाने लगे तो

बचा लिये गये अपने मन की तंगी से, तो वही सफल होने वाले हैं।

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠﴾

10. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करूणामय दयावान् है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِن قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾

11. क्या आप ने उन्हें[1] नहीं देखा जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अहले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं।

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن قُوتِلُوا

12. यदि वे निकाले गये तो यह उन के

तुम दीप बुझा देना। उस ने ऐसा ही किया। सब भूखे सो गये और अतिथि को खिला दिया। जब वह अन्सारी भोर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने कहाः अमुल पुरुष (अबू तल्हा) और अमुल स्त्री (उम्मे सुलैम) से अल्लाह प्रसन्न हो गया। और उस ने यह आयत उतारी है। (सहीह बुख़ारीः 4889)

1 इस से अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबेय्य मुनाफ़िक़ और उस के साथी हैं। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यहूद को उन के वचन भंग तथा षड्यंत्र के कारण दस दिन के भीतर निकल जाने की चेतावनी दी, तो उस ने उन से कहा कि तुम अड़ जाओ। मेरे बीस हज़ार शस्त्र युवक तुम्हारे साथ मिल कर युद्ध करेंगे। और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे। परन्तु यह सब मैखिक बातें थीं।

لَا يَنْصُرُونَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾

साथ नहीं निकालेंगे। और यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर (कहीं से) कोई सहायता नहीं पायेंगे।

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾

13. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अल्लाह (के भय) से। यह इसलिये कि वे समझ-बूझ नहीं रखते।

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ ۚ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

14. वह नहीं युद्ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद बस्तियों में हों, अथवा किसी दीवार की आड़ से। उन का युद्ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं जब कि उन के दिलों में अलग अलग हैं। यह इसलिये कि वह निर्बोध होते हैं।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ۖ ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾

15. उन के समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके[1] हैं अपने किये का स्वाद। और इन के लिये दुखदायी यातना है।

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

16. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ़्र कर, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त (अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार से।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

17. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफल।

---

1 इस में संकेत बद्र में मक्का के काफ़िरों तथा कैनुक़ाअ क़बीले की पराजय की ओर है।

18. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो, और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये। तथा डरते रहो अल्लाह से, निश्चय अल्लाह सूचित है उस से जो तुम करते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

19. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अल्लाह को तो भुला दिया (अल्लाह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी हैं।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾

20. नहीं बराबर हो सकते नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं।

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

21. यदि हम अवतरित करते इस कुर्आन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण-कण होता जा रहा है अल्लाह के भय[1] से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच-विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील दयावान् है।

لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

22. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾

23. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं है[2] कोई सच्चा वंदनीय। वह

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ

1 इस में कुर्आन का प्रभाव बताया गया है कि यदि अल्लाह पर्वत को ज्ञान और समझ-बूझ दे कर उस पर उतारता तो उस के भय से दब जाता और फट पड़ता। किन्तु मनुष्य की यह दशा है कि कुर्आन सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 74)

2 इन आयतों में अल्लाह के शुभनामों और गुणों का वर्णन कर के बताया गया है

الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾

सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला, बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस से जिसे वे (उस का) साझी बनाते हैं।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

24. वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी के लिये शुभनाम हैं, उस की पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है, और वह प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

कि वह अल्लाह कैसा है जिस ने यह क़ुर्आन उतारा है। इस आयत में अल्लाह के ग्यारह शुभनामों का वर्णन है। हदीस में है कि अल्लाह के निंनावे नाम हैं, जो उन्हें गिनेगा तो वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुख़ारीः 7392, सहीह मुस्लिमः 2677)

सूरह मुम्तहिना - 60

सूरह मुम्तहिना के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 13 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 से यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 7 तक में इस्लाम के विरोधियों से मैत्री रखने पर कड़ी चेतावनी दी गई है। और अपने स्वार्थ के लिये उन्हें भेद की बातें पहुँचाने से रोका गया है। तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उन के साथियों के, काफ़िर जाति से विरक्त होने के एलान को आदर्श के लिये प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 8 और 9 में बताया गया है कि जो काफ़िर युद्ध नहीं करते तो उन के साथ न्याय तथा अच्छा व्यवहार करो।
- आयत 10 से 12 तक मक्का से हिज्रत कर के आई हुई तथा उन नारियों के बारे में जो मुसलमानों के विवाह में थीं और उन के हिज्रत कर जाने पर मक्का ही में रह गईं थीं निर्देश दिये गये गये हैं।
- अन्त में उन्हीं बातों पर बल दिया गया है जिन से सूरह का आरंभ हुआ है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللهِ رَبِّكُمْ

1. हे लोगो जो ईमान लाये हो! मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री[1] का, जब कि उन्हों

1 मक्का वासियों ने जब हुदैबिया की संधि का उल्लंघन किया, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का पर आक्रमण करने के लिये गुप्त रूप से मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उसी बीच आप की इस योजना से सूचित करने के लिये हातिब बिन अबी बलतआ ने एक पत्र एक नारी के माध्यम से मक्का वासियों को भेज दिया। जिस की सूचना नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को

إِنْ كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنتُمْ وَمَن يَفْعَلْهُ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

ने कुफ़्र किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है। वह देश निकाला देते हैं रसूल को तथा तुम को इस कारण कि तुम ईमान लाये हो अल्लाह अपने पालनहार पर? यदि तुम निकले हो जिहाद के लिये मेरी राह में और मेरी प्रसन्नता की खोज के लिये तो गुप्त रूप से उन को मैत्री का संदेश भेजते हो? जब कि मैं भली- भाँति जानता हूँ उसे जो तुम छुपाते हो और जो खुल कर करते हो? तथा जो करेगा ऐसा, तो निश्चय वह कुपथ हो गया सीधी राह से।

إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ②

2. और यदि वश में पा जायें तुम को तो तुम्हारे शत्रु बन जायें तथा तुम्हें अपने हाथों और ज़ुबानों से दुख पहुँचायें। और चाहने लगेंगे कि तुम (फिर) काफ़िर हो जाओ।

لَن تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ③

3. तुम्हें लाभ नहीं देंगे तुम्हारे सम्बन्धी और न तुम्हारी संतान प्रलय के दिन। वह (अल्लाह) अलगाव कर देगा

वह्यी द्वारा दे दी गई। आप ने आदरणीय अली, मिक़्दाद तथा ज़ुबैर से कहा कि जाओ, रौज़ा ख़ाख़ (एक स्थान का नाम।) में एक स्त्री मिलेगी जो मक्का जा रही होगी। उस के पास एक पत्र है वह ले आओ। यह लोग वह पत्र लाये। तब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः हे हातिब! यह क्या है? उन्होंने कहाः यह काम मैं ने कुफ़्र तथा अपने धर्म से फिर जाने के कारण नहीं किया है। बल्कि इस का कारण यह है कि अन्य मुहाजिरीन के मक्का में सम्बन्धी हैं जो उन के परिवार तथा धनों की रक्षा करते हैं। पर मेरा वहाँ कोई सम्बन्धी नहीं है। इसलिये मैं ने चाहा कि उन्हें सूचित कर दूँ। ताकि वे मेरे आभारी रहें। और मेरे समीपवर्तियों की रक्षा करें। आप ने उन की सच्चाई के कारण उन्हें कुछ नहीं कहा। फिर भी अल्लाह ने चेतवनी के रूप में यह आयतें उतारीं ताकि भविष्य में कोई मुसलमान काफ़िरों से ऐसा मैत्री सम्बन्ध न रखे। (सहीह बुख़ारीः 4890)

तुम्हारे बीच। और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

4. तुम्हारे लिये इब्राहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है। जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहाः निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। हम ने तुम से कुफ़्र किया। खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये। जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर, परन्तु इब्राहीम का (यह) कथन अपने पिता से कि मैं अवश्य तेरे लिये क्षमा की प्रार्थना[1] करूँगा। और मैं नहीं अधिकार रखता हूँ अल्लाह के समक्ष कुछ। हे हमारे पालनहार! हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيٓ إِبْرَٰهِيمَ وَٱلَّذِينَ مَعَهُۥٓ إِذْ قَالُوا۟ لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءَٰٓؤُا۟ مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ٱلْعَدَٰوَةُ وَٱلْبَغْضَآءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَحْدَهُۥٓ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَٰهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ ۖ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ④

5. हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा[2] (का साधन) काफ़िरों के लिये और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे पालनहार! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَٱغْفِرْ لَنَا رَبَّنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ⑤

6. निःसंदेह तुम्हारे लिये उन में एक

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ

1 इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जो प्रार्थनायें अपने पिता के लिये कीं उन के लिये देखियेः सूरह इब्राहीम, आयतः 41, तथा सूरह शुअरा, आयतः 86। फिर जब आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को यह ज्ञान हो गया कि उन का पिता अल्लाह का शत्रु है तो आप उस से विरक्त हो गये। (देखियेः सूरह तौबा, आयतः 114)

2 इस आयत में मक्का की विजय और अधिकांश मुश्रिकों के ईमान लाने की भविष्यवाणी है जो कुछ ही सप्ताह के पश्चात् पूरी हुई। और पूरा मक्का ईमान ले आया।

يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦

अच्छा आदर्श है उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) की। और जो विमुख हो तो निश्चय अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۗ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧

7. कुछ दूर नहीं कि अल्लाह बना दे तुम्हारे बीच तथा उन के बीच जिन से तुम बैर रखते हो प्रेम।[1] और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨

8. अल्लाह तुम को नहीं रोकता उन से जिन्होंने तुम से युद्ध न किया हो धर्म के विषय में, और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे देश से, इस से कि तुम उन से अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उन से। वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय[2] कारियों से।

اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قَاتَلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۤىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

9. तुम्हें अल्लाह बस उन से रोकता है जिन्होंने युद्ध किया हो तुम से धर्म के विषय में तथा बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे घरों से, और सहायता की हो तुम्हारा बहिष्कार कराने में, कि तुम मैत्री रखो उन से। और जो मैत्री करेंगे उन से तो वही अत्याचारी हैं।

---

1 अर्थातः उन को मुसलमान कर के तुम्हारा दीनी भाई बना दे। और फिर ऐसा ही हुआ कि मक्का की विजय के बाद लोग तेज़ी के साथ मुसलमान होना आरंभ हो गये। और जो पुरानी दुश्मनी थी वह प्रेम में बदल गई।

2 इस आयत में सभी मनुष्यों के साथ अच्छे व्यवहार तथा न्याय करने की मूल शिक्षा दी गई है। उन के सिवा जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध करते हों और मुसलमानों से बैर रखते हों।

10. हे ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियाँ हिज्रत कर के आयें तो उन की परीक्षा ले लिया करो। अल्लाह अधिक जानता है उन के ईमान को, फिर यदि तुम्हें यह ज्ञान हो जाये कि वह ईमान वालियाँ हैं तो उन्हें वापिस न करो[1] काफ़िरों की ओर। न वे औरततें हलाल (वैध) हैं उन के लिये और न वे काफ़िर हलाल (वैध) हैं उन औरतों के लिये।[2] और चुका दो उन काफ़िरों को जो उन्होंने ख़र्च किया हो। तथा तुम पर कोई दोष नहीं है कि विवाह कर लो उन से जब दे दो उन को उन का महर (स्त्री उपहार)। तथा न रखो काफ़िर स्त्रियों को अपने विवाह में, तथा माँग लो जो तुम ने ख़र्च किया हो। और चाहिये कि वह काफ़िर माँग लें जो उन्होंने ख़र्च किया हो। यह अल्लाह का आदेश है, वह निर्णय कर रहा है तुम्हारे बीच, तथा अल्लाह सब जानने वाला गुणी है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا جَآءَكُمُ ٱلْمُؤْمِنَٰتُ مُهَٰجِرَٰتٍ فَٱمْتَحِنُوهُنَّ ۖ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَٰنِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى ٱلْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَءَاتُوهُم مَّآ أَنفَقُوا۟ ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَآ ءَاتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا۟ بِعِصَمِ ٱلْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوا۟ مَآ أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوا۟ مَآ أَنفَقُوا۟ ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ ٱللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝١٠

11. और यदि तुम्हारे हाथ से निकल जाये तुम्हारी कोई पत्नी काफ़िरों की ओर

وَإِن فَاتَكُمْ شَىْءٌ مِّنْ أَزْوَٰجِكُمْ إِلَى ٱلْكُفَّارِ

1 इस आयत में यह आदेश दिया जा रहा है कि जो स्त्री ईमान ला कर मदीना हिज्रत कर के आ जाये उसे काफ़िरों को वापिस न करो। यदि वह काफ़िर की पत्नी रही है तो उस के पती को जो स्त्री उपहार (महर) उस ने दिया हो उसे दे दो। और उन से विवाह कर लो। और अपने विवाह का महर भी उस स्त्री को दो। ऐसे ही जो काफ़िर स्त्री किसी मुसलमान के विवाह में हो अब उस का विवाह उस के साथ अवैध है। इसलिये वह मक्का जा कर किसी काफ़िर से विवाह करे तो उस के पती से जो स्त्री उपहार तुम ने उसे दिया है माँग लो।

2 अर्थात अब मुसलमान स्त्री का विवाह काफ़िर के साथ, तथा काफ़िर स्त्री का मुसलमान के साथ अवैध (हराम) कर दिया गया है।

فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

और तुम को बदले[1] का अवसर मिल जाये तो चुका दो उन को जिन की पत्नियाँ चली गई हैं उस के बराबर जो उन्होंने ख़र्च किया है। तथा डरते रहो उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

12. हे नबी! जब आयें आप के पास ईमान वालयाँ ताकि[2] वचन दें आप को इस पर कि वह साझी नहीं बनायेंगी अल्लाह का किसी को और न चोरी करेंगी और व्यभिचार करेंगी और न बध करेंगी अपनी संतान को और न कोई ऐसा आरोप (कलंक) लगायेंगी जिसे उन्होंने घड़ लिया हो आपने हाथों तथा पैरों के आगे और नहीं अवैज्ञा करेंगी आप की किसी भले काम में तो आप वचन ले लिया करें उन से तथा क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

13. हे ईमान वालो! तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ क्रोधित हो गया है अल्लाह जिन पर। वह निराश हो चुके

1 भावार्थ यह है कि मुसलमान हो कर जो स्त्री आ गई है उस का महर जो उस के काफ़िर पति को देना है वह उसे न दे कर उस के बराबर उस मुसलमान को दे दो जिस की काफ़िर पत्नी उस के हाथ से निकल गई है।

2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस आयत द्वारा उन की परीक्षा लेते और जो मान लेती उस से कहते कि जाओ मैं ने तुम से वचन ले लिया। और आप ने (अपनी पत्नियों के इलावा) कभी किसी नारी के हाथ को हाथ नहीं लगाया। (सहीह बुख़ारीः 4891, 93, 94, 95)

हैं आख़िरत[1] (परलोक) से उसी प्रकार
जैसे काफ़िर समाधियों में पड़े हुये
लोगों (के जीवित होने) से निराश हैं।

1 आख़िरत से निराश होने का अर्थ उस का इन्कार है जैसे उन्हें मरने के पश्चात् जीवन का इन्कार है।

सूरह सफ़्फ़ - 61

सूरह सफ़्फ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 14 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 4 में ((सफ़्फ़)) शब्द आया है जिस का अर्थ पंक्ति है। उसी से यह नाम लिया गया है। और प्रथम आयत में आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ के अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता का गुण गान करने) की चर्चा की गई है। फिर मुसलमानों पर जो अपनी बात के अनुसार कर्म नहीं करते और वचन भंग करते हैं उन की निन्दा है। तथा उन की सराहना है जो मिल कर अल्लाह की राह में संघर्ष करते और अपना वचन पूरा करते हैं।
- आयत 5 और 6 में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि यहूदियों की नीति पर न चलें जिन्हों ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को दुःख दिया। और कुरीति अपनाई जिस से उन के दिल टेढ़े हो गये। फिर उन्होंने अपने सभी रसूलों का इन्कार किया जो खुली निशानियाँ लाये।
- इस में इस्लाम के विरोधियों को सावधान करते हुये बताया गया है कि अल्लाह अपना प्रकाश पूरा करेगा और उस का धर्म सभी धर्मों पर प्रभुत्वशाली होगा। काफ़िरों और मुश्रिकों को कितना ही बुरा क्यों न लगे।
- मुसलमानों को ईमान की माँग पूरी करने तथा जिहाद करने का आदेश देते हुये परलोक में उस के प्रतिफल, तथा संसार में सहायता और विजय की शुभ सूचना दी गई है।
- ईसा (अलैहिस्सलाम) के साथियों का उदाहरण दे कर अल्लाह के धर्म की सहायता करने का आमंत्रण दिया गया है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ①

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करती है जो वस्तु आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢

2. हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं।

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٣

3. अत्यंत अप्रिय है अल्लाह को तुम्हारी वह बात कहना जिसे तुम (स्वयं) करते नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤

4. निःसंदेह अल्लाह प्रेम करता है उन से जो युद्ध करते हैं उस की राह में पंक्तिबंद हो कर जैसे कि वह सीसा पिलायी दीवार हों।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۚ فَلَمَّا زَاغُوْا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

5. तथा याद करो जब कहा मूसा ने अपनी जाति सेः हे मेरे समुदाय! तुम क्यों दुःख देते हो मुझ को जब कि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी ओर? फिर जब वह टेढ़े ही रह गये तो टेढ़े कर दिये अल्लाह ने उन के दिल। और अल्लाह संमार्ग नहीं दिखाता उल्लंघनकारियों को।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦

6. तथा याद करो जब कहा, मरयम के पुत्र ईसा नेः हे इस्राईल की संतान! मैं तुम्हारी ओर रसूल हूँ, और पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पूर्व आयी है। तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो आयेगा मेरे पश्चात्, जिस का नाम अहमद है। फिर जब वह आ गये उन के पास खुले प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧

7. और उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो झूठ घड़े अल्लाह पर जब कि वह बुलाया जा रहा हो इस्लाम

की ओर। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारी जाति को।

8. वह चाहते हैं कि बुझा दें अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों से। तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।

يُرِيدُونَ لِيُطْفِـُٔوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝٨

9. वही है जिस ने भेजा है अपने रसूल को संमार्ग तथा सत्धर्म के साथ ताकि प्रभावित कर दे उसे प्रत्येक धर्म पर चाहे बुरा लगे मुश्रिकों को।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝٩

10. हे ईमान वालो! क्या मैं बता दूँ तुम्हें ऐसा व्यापार जो बचा ले तुम को दुःखदायी यातना से?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝١٠

11. तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से यही तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝١١

12. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और प्रवेश देगा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें तथा स्वच्छ घरों में स्थायी स्वर्गों में। यही बड़ी सफलता है।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝١٢

13. और एक अन्य (प्रदान) जिस से तुम प्रेम करते हो। वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है। तथा शुभसूचना सुना दो ईमान वालों को।

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝١٣

14. हे ईमान वालो! तुम बन जाओ अल्लाह (के धर्म) के सहायक जैसे मर्यम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَتْ طَائِفَةٌ مِنْ بَنِي

إِسْرَآءِيلَ وَكَفَرَت طَّآئِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ⑭

अल्लाह (के धर्म के प्रचार में)? तो हवारियों ने कहाः हम हैं अल्लाह के (धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया ईस्राईलियों का एक समूह और कुफ़्र किया दूसरे समूह ने। तो हम ने समर्थन दिया उन को जो ईमान लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही विजयी रहे।
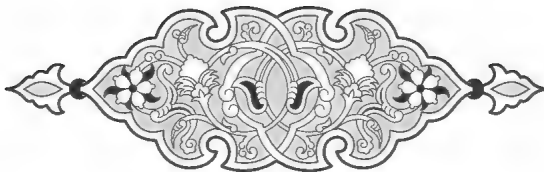
सूरह जुमुआ - 62

सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की आयत 9 में जुमुआ का महत्व बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह जुमुआ है।
- इस की आरंभिक आयत में अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) और उस के गुणों का वर्णन है।
- इस में अल्लाह के अनुग्रह को बताया गया है कि उस ने उम्मियों (अर्बों) में एक रसूल भेजा है और यहूदियों के कुकर्म और निर्मूल दावों पर पकड़ की गई है।
- मुसलमानों को जुमुआ की नमाज़ का पालन करने पर बल दिया गया है।
- हदीस में है कि उत्तम दिन जिस में सूर्य निकलता है जुमुआ का दिन है। उसी में आदम (अलैहिस्सलाम) पैदा किये गये। उसी दिन स्वर्ग में रखे गये। और उसी दिन स्वर्ग से निकाले गये। तथा प्रलय भी इसी दिन आयेगी। (सहीह मुस्लिमः 854) एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः लोग जुमुआ छोड़ने से रुक जायें अन्यथा अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा। (सहीह मुस्लिमः 856)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ की नमाज़ में यह सूरह और सूरह मुनाफ़िक़ून पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिमः 877)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

1. अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं वह सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) है।

2. वही है जिस ने निरक्षरों[1] में एक रसूल भेजा उन्हीं में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुर्आन) तथा तत्वदर्शिता (सुन्नत[2]) की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾

3. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं[3] मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣﴾

4. यह[4] अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤﴾

5. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ

---

1 अनभिज्ञों से अभिप्रायः अरब हैं। अर्थात जो अहले किताब नहीं हैं। भावार्थ यह है कि पहले रसूल इस्राईल की संतति में आते रहे। और अब अन्तिम रसूल इस्माईल की संतति में आया है। जो अल्लाह की पुस्तक कुर्आन पढ़ कर सुनाते हैं। यह केवल अर्बों के नबी नहीं पूरे मनुष्य जाति के नबी हैं।

2 सुन्नत जिस के लिये हिक्मत शब्द आया है उस से अभिप्राय साधारण परिभाषा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस, अर्थात आप का कथन और कर्म इत्यादि है।

3 अर्थात आप अरब के सिवा प्रलय तक के लिये पूरे मानव संसार के लिये भी रसूल बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया गया कि वह कौन हैं? तो आप ने अपना हाथ सल्मान फारसी के ऊपर रख दिया। और कहाः यदि ईमान सुरय्या (आकाश के कुछ तारों का नाम) के पास भी हो तो कुछ लोग उस को वहाँ से भी प्राप्त कर लेंगे। (सहीह बुख़ारीः 4897)

4 अर्थात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अरबों तथा पूरे मानव संसार के लिये रसूल बनाना।

الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑤

नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊपर पुस्तकें[1] लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की आयतों को। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑥

6. आप कह दें कि हे यहूदियों! यदि तुम समझते हो कि तुम्हीं अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे[2] हो?

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑦

7. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली-भाँति अवगत है अत्याचारियों से।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑧

8. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ

9. हे ईमान वालो! जब अज़ान दी जाये नमाज़ के लिये जुमुआ के दिन तो

---

1 अर्थात जैसे गधे को अपने ऊपर लादी हुई पुस्तकों का ज्ञान नहीं होता कि उन में क्या लिखा है वैसे ही यह यहूदी तौरात के आदेशानुसार कर्म न कर के गधे के समान हो गये हैं।

2 यहूदियों का दावा था कि वही अल्लाह के प्रियवर हैं। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 111, तथा सूरह माइदा, आयतः 18) इसलिये कहा जा रहा है कि स्वर्ग में पहुँचने के लिये मौत की कामना करो।

3 अर्थात तुम्हारे दुष्कर्मों के परिणाम से।

الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ⑨

दौड़[1] जाओ अल्लाह की याद की ओर तथा त्याग दो क्रय-विक्रय।[2] यह उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَوٰةُ فَانتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِن فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ⑩

10. फिर जब नमाज़ हो जाये तो फैल जाओ धरती में। तथा खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ⑪

11. और जब वह देख लेते हैं कोई व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर दौड़ पड़ते हैं।[3] तथा आप को छोड़ देते हैं खड़े। आप कह दें कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम है खेल तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

---

1 अर्थ यह है कि जुमुआ की अज़ान हो जाये तो अपने सारे कारोबार बंद कर के जुमुआ का खुत्बा सुनने, और जुमुआ की नमाज़ पढ़ने के लिये चल पड़ो।

2 इस से अभिप्राय संसारिक कारोबार है।

3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ का खुत्बा (भाषण) दे रहे थे कि एक कारवाँ ग़ल्ला लेकर आ गया। और सब लोग उस की ओर दौड़ पड़े। बारह व्यक्ति ही आप के साथ रह गये। उसी पर अल्लाह ने यह आयत उतारी (सहीह बुख़ारीः **4899**)

सूरह मुनाफ़िक़ून - 63

सूरह मुनाफ़िक़ून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफ़िक़ों के उस दुर्व्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत 9 से 11 तक में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफ़ाक़ (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफ़िक़ के लक्षण तीन हैं: जब वह बात करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में ख़्यानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुख़ारी: 33, सहीह मुस्लिम: 59)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे। (सहीह बुख़ारी: 34, तथा सहीह मुस्लिम: 58)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝١

1. जब आते हैं आप के पास मुनाफ़िक़ तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है कि

मुनाफ़िक़ निश्चय झूठे[1] हैं।

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٢

2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ٣

3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ़्र कर गये तो मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ٤

4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लगें उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई[2] हुईं। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध[3] समझते हैं। वही शत्रु हैं, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं!

---

1 आदरणीय ज़ैद पुत्र अर्क़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफ़िक़ों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आस-पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहे थे।) को अवश्य निकाल देंगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बता दी। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियों ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थातः ज़ैद पुत्र अर्क़म) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अल्लाह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि हे ज़ैद! अल्लाह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया है। (सहीह बुख़ारीः **4900**)

2 जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बोध होती हैं।

3 अर्थात प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहता है कि उन के अपराध खुल न जायें।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ⑤

6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑥

7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत ख़र्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (ख़ज़ाने)। परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ⑦

8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल[1] देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑧

9. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑨

---

1 सम्मानितः मुनाफ़िक़ो के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य ने स्वयं को, तथा अपमानितः रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहा था।

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَآ أَخَّرْتَنِيٓ إِلٰىٓ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٠﴾

10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का[1] समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का। ताकि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا إِذَا جَآءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللّٰهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١١﴾

11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली-भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

1 हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन है। (सहीह बुख़ारीः 6442)

सूरह तग़ाबुन - 64

सूरह तग़ाबुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की आयत 9 में ((तग़ाबुन)) शब्द से लिया गया है। इस में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के साथ हुई है। तथा नबूवत और परलोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और ईमान तथा इन्कार दोनों का अन्त बताया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूँह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत 14 से 18 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हें कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परलोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ②

2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफ़िर हैं, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो

उसे देख रहा है।[1]

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।[2]

يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और जानता है जो तुम मन में रखते हो और जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

اَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑤

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंने कुफ़्र किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।[3]

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑥

6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहाः क्या कोई मनुष्य हमें मार्ग दर्शन[4] देगा? अतः उन्होंने कुफ़्र किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

---

1 देखने का अर्थ कर्मों के अनुसार बदला देना है।

2 अर्थात प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल पाने के लिये।

3 अर्थात परलोक में नरक की यातना है।

4 अर्थात रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मुर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य ले कर आये तो उसे न माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

7. समझ रखा है काफ़िरों ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾

8. अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल[1] पर। तथा उस नूर (ज्योति[2]) पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٨﴾

9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह क्षति (हानि) के खुल जाने[3] का दिन होगा। और जो ईमान लाया अल्लाह पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती होंगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾

10. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी हैं जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٠﴾

---

1 इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

2 ज्योति से अभिप्राय अन्तिम ईश-वाणी कुर्आन है।

3 अर्थात काफ़िरों के लिये, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।

مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾

11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान[1] लाये तो वह मार्ग दर्शन देता[2] है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ ﴿١٢﴾

12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई वंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّ مِنْ أَزْوَٰجِكُمْ وَأَوْلَٰدِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَٱحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِن تَعْفُوا۟ وَتَصْفَحُوا۟ وَتَغْفِرُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾

14. हे लोगो जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु[3] हैं। अतः उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से काम लो तथा सुधार करो और क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

إِنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَٱللَّهُ عِندَهُۥٓ

15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा हैं।

---

1 अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।

2 हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दुःख हो तो सहन करता है। और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिमः 2999)

3 अर्थात जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों, फिर भी उन का सुधार करने और क्षमा करने का निर्देश दिया गया है।

أَجْرٌ عَظِيمٌ ⑮

तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल[1] (बदला) है।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنفِقُوا خَيْرًا لِّأَنفُسِكُمْ ۗ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑯

16. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं।

إِن تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ⑰

17. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण[2] दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।

عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑱

18. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

---

1 भावार्थ यह है कि धन और संतान के मोह में अल्लाह की अवैज्ञा न करो।

2 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में दान करना है।

सूरह तलाक़ - 65

सूरह तलाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस सूरह में तलाक़ के नियम और आदेश बताये गये हैं। और मुसलमानों को चेतावनी दी गई है कि अल्लाह के आदेशों से मुँह न फेरें। और अवैज्ञाकारी जातियों के परिणाम को याद रखें। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक नियमों का पालन करें।

- «इद्दत» उस निश्चित अवधि का नाम है जिस के भीतर स्त्री के लिये तलाक़ या पति की मौत के पश्चात् दूसरे से विवाह करना अवैध और वर्जित होता है। तलाक़ के मूल नियम सूरह बक़रा तथा सूरह अह्ज़ाब में वर्णित हुये हैं। इस आयत में तलाक़ देने का समय बताया गया है कि तलाक़ ऐसे समय में दी जाये जब इद्दत का आरंभ हो सके। अर्थात मासिक धर्म की स्थिति में तलाक़ न दी जाये। और मासिक धर्म से पवित्र होने पर संभोग न किया गया हो तब तलाक़ दी जाये। «इद्दत के समय» से अभिप्राय यहाँ यही है। फिर यदि «तलाक़ रजई» दी हो तो निर्धारित अवधि पूरी होने तक वह अपने पति के घर ही में रहेगी। परन्तु यदि व्यभिचार कर जाये तो उसे घर से निकाला जा सकता है। नई बात उत्पन्न करने का अर्थ यह है कि अवधि के भीतर पति अपनी पत्नी को वापिस कर ले जिसे «रज्अत» करना कहा जाता है। और यह बात «रजई तलाक़» में ही होती है। अर्थात जब एक या दो तलाक़ ही दी हों। इस में यह संकेत भी है कि यदि पति तीन तलाक़ दे चुका हो जिस के पश्चात् पति को रज्अत का अधिकार नहीं होता तो पत्नी को भी उस के घर में रहने का अधिकार नहीं रह जाता। और न पति पर इस अवधि में उस के खाने-कपड़े का भार होता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ إِذَا طَلَّقۡتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ

1. हे नबी! जब तुम लोग तलाक़ दो अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक़

दो उन की «इद्दत» के लिये, और गणना करो «इद्दत» की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से, और न वह स्वयं निकलें परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जायें। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और जो उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अत्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात।

وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ①

2. फिर जब पहुँचने लगें अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रोक लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार।[1] और गवाह (साक्षी) बनालो[2] अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के[3] लिये। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर। और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ②

3. और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③

1 अर्थात तलाक़ तथा रज्अत पर।

2 यदि एक या दो तलाक़ दी हो। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 229)

3 अर्थात निष्पक्ष हो कर।

के रहेगा।[1] अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।

4. तथा जो निराश[2] हो जाती हैं मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जाये। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सरल कर देगा।

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝

5. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर, अतः जो अल्लाह से डरेगा[3] वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝

6. और उन को (निर्धारित अवधि में)

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ

1 अर्थात जो दुःख तथा सुख भाग्य में अल्लाह ने लिखा है वह अपने समय में अवश्य पूरा होगा।

2 निश्चित अवधि से अभिप्राय वह अवधि है जिस के भीतर कोई स्त्री तलाक़ पाने के पश्चात् दूसरा विवाह नहीं कर सकती। और यह अवधि उस स्त्री के लिये जिसे दीर्घायु अथवा अल्पायु होने के कारण मासिक धर्म न आये तीन मास तथा गर्भवती के लिये प्रसव है। और मासिक धर्म आने की स्थिति में तीन मासिक धर्म पूरा होना है।
हदीस में है कि सुबैआ असलमिय्या (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पति मारे गये तो वह गर्भवती थी। फिर चालीस दिन बाद उस ने शिशु जन्म दिया। और जब उस की मंगनी हुई तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे विवाह दिया। (सहीह बुख़ारीः 4909)
पति की मौत पर चार महीना दस दिन की अवधि उस के लिये है जो गर्भवती न हो। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 226)

3 अर्थात उस के आदेश का पालन करेगा।

وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَٰتِ حَمْلٍ
فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ
فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ﴿٦﴾

रखो जहाँ तुम रहते हो अपनी शक्ति अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर ख़र्च करो यहाँ तक की प्रसव हो जाये। फिर यदि दूध पिलायें तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार-विमर्श कर लो आपस में उचित रूप[1] से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ
فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿٧﴾

7. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) ख़र्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिस पर उस की जीविका तो चाहिये कि ख़र्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا
حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾

8. कितनी बस्तियाँ[2] थीं जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिसाब ले लिया उन का कड़ा हिसाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾

9. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य-परिणाम विनाश ही रहा।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي

10. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन

1 अर्थात परिश्रामिक के विषय में।

2 यहाँ से अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान किया जा रहा है।

الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾

के लिये भीषण यातना। अतः अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।

رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ﴿١١﴾

11. (अर्थात) एक रसूल[1] जो पढ़ कर सुनाते हैं तुम को अल्लाह की खुली आयतें ताकि वह निकाले उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्गों में प्रवाहित हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾

12. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्हीं के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है। और यह की अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

---

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को। अंधकारों से अभिप्रायः कुफ़्र, तथा प्रकाश से अभिप्रायः ईमान है।

सूरह तह़रीम - 66

सूरह तह़रीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- इस की आयत 6 से 8 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चिन्त न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।
- आयत 9 में काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।
- आयत 10 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है। और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते हैं उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता[1] चाहते हैं? तथा अल्लाह

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۖ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अस्र की नमाज़ के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ देर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थीं। आप की पत्नी आईशा तथा

अति क्षमी दयावान् है।

2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने[1] का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक[2] बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहाः किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहाः मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

4. यदि तुम[3] दोनों (हे नबी की पत्नियो!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की

اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝

हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आयें तो जिस के पास जायें वह यह कहे कि आप के मुँह से मग़ाफ़ीर (एक दुर्गंधित फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली कि अब मधु नहीं पीऊँगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारीः 4912) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हराम करने अथवा हराम को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

1 अर्थात प्रयाश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रयाश्चित (कफ़्फ़ारा) के लिये देखियेः माइदा, आयतः 81।

2 अर्थात मधु न पीने की बात।

3 दोनों से अभिप्रायः आदरणीय आईशा तथा आदरणीय हफ़्सा हैं।

सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिब्रील और सदाचारी ईमान वाले और फ़रिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।

5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।

عَسٰی رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓىِٕحٰتٍ ثَیِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا۝

6. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ[1] अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फ़रिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓىِٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا یَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَیَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ۝

7. हे काफ़िरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْیَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के आगे

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ

1 अर्थात तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनों को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें। और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ के लिये (यदि ज़रूरत पड़े तो) मारो। (तिर्मिज़ी- 407)
पत्थर से अभिप्राय वह मुर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था।

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَاۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

सच्ची[1]तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें। जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश[2] दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगेः हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩

9. हे नबी! आप जिहाद करें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर कड़ाई करें।[3] उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

10. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफ़िर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थीं दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात[4] किया उन से।

---

1 सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ लिया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा माँग ले।

2 देखियेः सूरह हदीद, आयतः 12)।

3 अर्थात जो काफ़िर इस्लाम के प्रचार से रोकते हैं, और जो मुनाफ़िक़ उपद्रव फैलाते हैं उन से कड़ा संघर्ष करें।

4 विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बंध नहीं काम नहीं आयेंगे।

तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِندَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِن فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّٰلِمِينَ ﴿١١﴾

11. तथा उदाहरण[1] दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो ईमान लाये फ़िरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फ़िरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَٰنَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِ وَكَانَتْ مِنَ الْقَٰنِتِينَ ﴿١٢﴾

12. तथा मरयम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मरयम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।

1 हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मरयम और फ़िरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुईं। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो सरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुख़ारीः 3411, सहीह मुस्लिमः 2431)

सूरह मुल्क - 67

सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में अल्लाह के मुल्क (राज्य) की चर्चा की गई है। जिस से यह नाम लिया गया है।
- इस में मरण तथा जीवन का उद्देश्य बताते हुये आकाश तथा धरती की व्यवस्था पर विचार करने का आमंत्रण दिया गया है जिस से विश्व विधाता का ज्ञान होता है। और यह बात भी उजागर होती है कि मनुष्य का यह जीवन परीक्षा का जीवन है। और इस कुर्आन की बताई हुई बातों के इन्कार का दुष्परिणाम बताया गया है।
- आयत 13,14 में उन का शुभपरिणाम बताया गया है जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं। जो प्रत्येक खुली और छुपी बात को जानता है और उस से कोई बात छुपी नहीं रह सकती।
- अन्त में मनुष्य को सोच-विचार का आमंत्रण देते हुये उसे अचेतना से चौंकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोल कर इस विश्व को देखे तो कुर्आन का सच्च उजागर हो जायेगा। और वह अपने जीवन के लक्ष्य को समझ जायेगा। हदीस में है कि कुर्आन में तीस आयतों की एक सूरह है जिस ने एक व्यक्ति के लिये सिफ़ारिश की यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया गया। (सुनन अबू दाऊदः 1400, हाकिम 1|565)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١

2. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ

أَحۡسَنُ عَمَلٗاۚ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡغَفُورُ ۝٢

ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।[1]

ٱلَّذِي خَلَقَ سَبۡعَ سَمَٰوَٰتٖ طِبَاقٗاۖ مَّا تَرَىٰ فِي خَلۡقِ ٱلرَّحۡمَٰنِ مِن تَفَٰوُتٖۖ فَٱرۡجِعِ ٱلۡبَصَرَ هَلۡ تَرَىٰ مِن فُطُورٖ ۝٣

3. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?

ثُمَّ ٱرۡجِعِ ٱلۡبَصَرَ كَرَّتَيۡنِ يَنقَلِبۡ إِلَيۡكَ ٱلۡبَصَرُ خَاسِئٗا وَهُوَ حَسِيرٞ ۝٤

4. फिर बार-बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह थक-हार कर।

وَلَقَدۡ زَيَّنَّا ٱلسَّمَآءَ ٱلدُّنۡيَا بِمَصَٰبِيحَ وَجَعَلۡنَٰهَا رُجُومٗا لِّلشَّيَٰطِينِۖ وَأَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ عَذَابَ ٱلسَّعِيرِ ۝٥

5. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (ग्रहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों[2] को, और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।

وَلِلَّذِينَ كَفَرُواْ بِرَبِّهِمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمَصِيرُ ۝٦

6. और जिन्होंने कुफ़्र किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।

إِذَآ أُلۡقُواْ فِيهَا سَمِعُواْ لَهَا شَهِيقٗا وَهِيَ تَفُورُ ۝٧

7. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ ٱلۡغَيۡظِۖ كُلَّمَآ أُلۡقِيَ فِيهَا فَوۡجٞ سَأَلَهُمۡ خَزَنَتُهَآ أَلَمۡ يَأۡتِكُمۡ نَذِيرٞ ۝٨

8. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोष (क्रोध) से, जब-जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरीः क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)?

---

1 इस में आज्ञा पालन की प्रेरणा तथा अवैज्ञा पर चेतावनी है।

2 जो चोरी से आकाश की बातें सुनते हैं। (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात आयतः 7,10)

9. वह कहेंगेः हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾

10. तथा वह कहेंगेः यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿١٠﴾

11. ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी[1] है नरक वासियों के लिये।

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿١١﴾

12. निःसंदेह जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।[2]

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾

13. तुम चुपके बोलो अपनी बात अथवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली-भाँति जानता है सीनों के भेदों को।

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾

14. क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक[3] सर्व सूचित है?

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾

15. वही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾

---

1 अर्थात अल्लाह की दया से।

2 हदीस में है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज़ तय्यार की है जिसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने सोचा। (सहीह बुख़ारीः 3244, सहीह मुस्लिमः 2824)

3 बारीक बातों को जानने वाला।

16. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे।

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾

17. अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?

اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾

18. झुठला चुके हैं इन[1] से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾

19. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पँख फैलाते तथा सिकोड़ते। उन को अत्यंत कृपाशील ही थामता है। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۗ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾

20. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुक़ाबले में? काफ़िर तो बस धोखे ही में हैं।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۗ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِىْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾

21. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये हैं अवैज्ञा तथा घृणा में।[2]

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِىْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾

22. तो क्या जो चल रहा हो औंधा हो कर अपने मुँह के बल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर?[3]

اَفَمَنْ يَّمْشِىْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِىْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

1 अर्थात मक्का वासियों से पहले आद, समूद आदि जातियों ने। तो लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति पर पत्थरों की वर्षा हुई।

2 अर्थात सत्य से घृणा में।

3 इस में काफ़िर तथा ईमानधारी का उदाहरण है। और दोनों के जीवन- लक्ष्य को बताया गया है कि काफ़िर सदा मायामोह में रहते हैं।

23. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये हैं तुम्हारे कान तथा आँख और दिल। बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

24. आप कह दें: उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित[1] किये जाओगे।

قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

25. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

26. आप कह दें: उस का ज्ञान बस अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾

27. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो बिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफ़िर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْۤـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾

28. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफ़िरों को दुःखदायी[2] यातना से?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

29. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है। हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

---

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों के लेख-जोखा तथा प्रतिकार के लिये।

2 अर्थात तुम हमारा बुरा तो चाहते हो परन्तु अपनी चिन्ता नहीं करते।

30. आप कह दें: भला देखो यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَآءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾
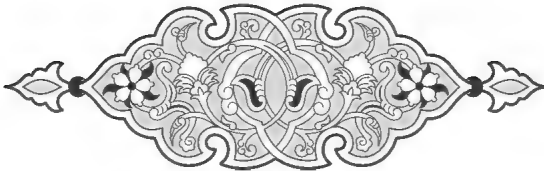
सूरह क़लम - 68

सूरह क़लम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में क़लम शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग़ के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अल्लाह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग़ के फल खो दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अल्लाह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत 48 से 50 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफ़िरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. नून। और शपथ है लेखनी (क़लम) की तथा उस[1] की जिसे वह लिखते हैं।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝١

1 अर्थात क़ुर्आन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखको से लिखवाते थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक क़लम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों

2. नहीं हैं आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।	مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۝٢
3. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त।	وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۝٣
4. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।	وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝٤
5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफ़िर भी) देख लेंगे।	فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۝٥
6. कि पागल कौन है।	بِاَيِّىكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٦
7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं।	اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٧
8. तो आप बात न मानें झुठलाने वालों की।	فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٨
9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो[1] जायें।	وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩
10. और बात न मानें[2] आप किसी अधिक	وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠

को क़ुर्आन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही हैं। और उन के मार्ग दर्शन के लिये क़ुर्आन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ क़ुर्आन पर ईमान लाना अनिवार्य है।

1 जब काफ़िर, इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच देने के पश्चात्, कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।

2 इन आयतों में किसी विशेष काफ़िर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफ़िरों के

शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।

11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾

12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾

13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन संकर) है।

عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾

14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।

أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾

15. जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी आयतें तो कहता हैः यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾

16. शीघ्र ही हम दाग़ लगा देंगे उस के सूंड[1] पर।

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾

17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला[2] है जिस प्रकार बाग़ वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।

إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾

18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾

प्रमुखों के नैतिक पतन तथा कुविचारों और दुराचारों को बताया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे। तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है?

1 अर्थात नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग़ लगाने का अर्थ अपमानित करना है।

2 अर्थात मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

चाहा) नहीं कहा।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ١٩

19. तो फिर गया उस (बाग़) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ٢٠

20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ٢١

21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते हीः

أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ٢٢

22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।

فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ٢٣

23. फिर वह चल दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हूये।

أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ٢٤

24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग़) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन।[1]

وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ٢٥

25. और प्रातः ही पहुँच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ٢٦

26. फिर जब उसे देखा तो कहाः निश्चय हम राह भूल गये।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ٢٧

27. बल्कि हम वंचित हो[2] गये।

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ٢٨

28. तो उन में से बिचले भाई ने कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?

قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ٢٩

29. वह कहने लगेः पवित्र है हमारा

---

1 ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

2 पहले तो सोचा कि राह भूल गये हैं। किन्तु फिर देखा कि बाग़ तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

पालनहार! वास्तव में हम ही अत्याचारी थे।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾

30. फिर सम्मुख हो गया एक-दूसरे की निन्दा करते हुये।

قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾

31. कहने लगे हाय अफ़सोस! हम ही विद्रोही थे।

عَسَىٰ رَبُّنَا أَن يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ﴿٣٢﴾

32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग़)। हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि रखते हैं।

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

33. ऐसे ही यातना होती है और आख़िरत (परलोक) की यातना इस से भी बड़ी है। काश वह जानते!

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾

34. निःसंदेह सदाचारियों के लिये उन के पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं।

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾

35. क्या हम आज्ञाकारियों[1] को पापियों के समान कर देंगे?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾

36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾

37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस में तुम पढ़ते हो?

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾

38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾

39. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?

1 मक्का के प्रमुख कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक सुख-सुविधा प्राप्त होंगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है। अभिप्राय यह है कि अल्लाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं है।

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ۚ ﴿٤٠﴾

40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾

41. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें[1] यदि वह सच्चे हैं।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۙ ﴿٤٢﴾

42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे।[2]

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۗ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿٤٤﴾

44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (कुर्आन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे[3] इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۗ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾

45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।[4] वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।

اَمْ تَسْئَلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۚ ﴿٤٦﴾

46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक[5] की, तो वह बोझ से

---

1 ताकि वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

2 हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख़्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा। (बुख़ारीः 4919)

3 अर्थात उन के बुरे परिणाम की ओर।

4 अर्थात संसारिक सुख-सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

5 अर्थात धर्म के प्रचार पर।

दबे जा रहे हैं?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ٤٧

47. या उन के पास ग़ैब का ज्ञान है जिसे वह लिख[1] रहे हैं?

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ٤٨

48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान।[2] जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।

لَّوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ٤٩

49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ٥٠

50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।

وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ٥١

51. और ऐसा लगता है कि जो काफ़िर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों क़ुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ٥٢

52. जब कि यह (क़ुर्आन) तो बस एक[3] शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

---

1 या लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में है इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करते और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?

2 इस से अभिप्राय यूनुस (अलैहिस्सलाम) हैं जिन को मछली ने निगल लिया था। (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात, आयतः 139)

3 इस में यह बताया गया है कि क़ुर्आन केवल अरबों के लिये नहीं, संसार के सभी देशों और जातियों की शिक्षा के लिये उतरा है।

सूरह हाक़्क़ा - 69

सूरह हाक़्क़ा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस का प्रथम शब्द ((अल हाक़्क़ा)) है जिस से यह नाम लिया गया है। और इस का अर्थ हैः वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।
- आयत 4 से 12 तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 13 से 18 तक प्रलय का भ्यावः दृश्य दिखाया गया है।
- आयत 19 से 37 तक सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफ़िरों को संबोधित कर के उन पर क़ुर्आन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. जिस का होना सच्च है।
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?
3. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलत)को।
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये

اَلْحَاۗقَّةُ ۝۱

مَا الْحَاۗقَّةُ ۝۲

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحَاۗقَّةُ ۝۳

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ۝۴

فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝۵

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝۶

गये एक तेज़ शीतल आँधी से।

7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने।[1]

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝٧

8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝٨

9. और किया यही पाप फ़िरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औंधी कर दी गईं।

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝٩

10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝١٠

11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव[2] में।

اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ۝١١

12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝١٢

13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣

14. और उठाया जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे[3] एक ही बार में।

وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝١٤

15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١٥

---

1 उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।

2 इस में नूह (अलैहिससलाम) के तूफ़ान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दया सब पर हूई है।

3 देखियेः सूरह ताहा, आयतः 20, आयतः 103, 108।

16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

17. और फ़रिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फ़रिश्ते।

وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۗ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾

18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगाः यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।

اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾

21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

24. (उन से कहा जायेगा): खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

25. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगाः हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता!

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?!

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾

27. काश मेरी मौत ही निर्णायक[1] होती!

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ ﴿٢٧﴾

28. नहीं काम आया मेरा धन।

مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۚ ﴿٢٨﴾

29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।[2]

هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ ﴿٢٩﴾

30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उस के गले में तौक़ डाल दो।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ ﴿٣٠﴾

31. फिर नरक में उसे झोंक दो।

ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ ﴿٣١﴾

32. फिर उसे एक जंजीर, जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है में जकड़ दो।

ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۗ ﴿٣٢﴾

33. वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर।

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ ﴿٣٣﴾

34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को भोजन कराने की।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۗ ﴿٣٤﴾

35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई मित्र।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۙ ﴿٣٥﴾

36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।

وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ ﴿٣٦﴾

37. जिसे पापी ही खायेंगे।

لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ۠ ﴿٣٧﴾

38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम देखते हो।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ ﴿٣٨﴾

39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۙ ﴿٣٩﴾

40. निःसंदेह यह (कुर्आन) अदरणीय रसूल का कथन[3] है।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۙ ﴿٤٠﴾

---

1 अर्थात उस के पश्चात् मैं फिर जीवित न किया जाता।

2 इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तर्क दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

3 यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा सूरह तक्वीर आयत 19 में फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिससलाम) जो वह्यी

41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है। तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।

وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ۝٤١

42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۗ۝٤٢

43. सर्वलोक के पालनहार का उतारा हुआ है।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٣

44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई बात बनाई[1] होती।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۙ۝٤٤

45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का सीधा हाथ।

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۙ۝٤٥

46. फिर अवश्य काट देते उस के गले की रग।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۖ۝٤٦

47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ۝٤٧

48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों के लिये।

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٨

49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ۝٤٩

50. और निश्चय यह पछतावे का कारण होगा काफ़िरों[2] के लिये।

وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠

लाते थे वह अभिप्राय हैं। यहाँ कुर्आन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुर्आन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयतः 43 में आ रहा है।

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से वह्यी (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है। यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।

2 अर्थात जो कुर्आन को नहीं मानते वह अन्ततः पछतायेंगे।

51. वस्तुतः यह विश्वासनीय सत्य है।

52. अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महिमावान पालनहार के नाम की।

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾
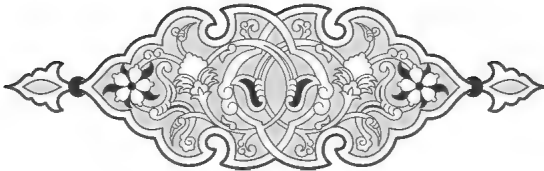
सूरह मआरिज - 70

सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 44 आयतें हैं।

- इस की आयत 3 में ((ज़िल मआरिज)) का शब्द आया है। उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ हैः ऊँचाईयों वाला।
- इस में क़्यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी। फिर प्रलय की दशा को बताया गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत 19 से 25 तक मनुष्य की साधारण कमज़ोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और क़ुर्आन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ①

1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने[1] वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।

لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ②

2. काफ़िरों पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।

مِنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ③

3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।

1 कहा जाता है कि नज़्र पुत्र हारिस अथवा अबू जह्ल ने यह माँग की थी, कि ((हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे))। (देखियेः सूरह अन्फ़ाल, आयतः 32)

4. चढ़ते हैं फ़रिश्ते तथा रूह[1] जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हज़ार वर्ष है।

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ﴿٤﴾

5. अतः (हे नबी!) आप सहन[2] करें अच्छे प्रकार से।

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾

6. वह समझते हैं उस को दूर।

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ﴿٦﴾

7. और हम देख रहे है उसे समीप।

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۗ﴿٧﴾

8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धात के समान।

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ﴿٨﴾

9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा-रंग धुने हुये ऊन के समान।[3]

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ﴿٩﴾

10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚۖ﴿١٠﴾

11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۗ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۭ بِبَنِيْهِ ۙ﴿١١﴾

12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ﴿١٢﴾

13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۙ﴿١٣﴾

14. और जो धरती में है सभी[4]को फिर

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ﴿١٤﴾

1 रूह से अभिप्राय फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है।

2 अर्थात संसार में सत्य को स्वीकार करने से।

3 देखियेः सूरह क़ारिआ।

4 हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी, उस से अल्लाह कहेगाः क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगे? वह कहेगाः हाँ। अल्लाह कहेगाः तुम आदम की पीठ में थे, तो मैं ने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किसी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार

वह उसे यातना से बचा दे।

15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)। वह अग्नि की ज्वाला होगी। — كَلَّآ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾

16. खाल उधेड़ने वाली। — نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾

17. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा दिखाया[1] तथा मुँह फेरा। — تَدْعُوا۟ مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾

18. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौंत कर रखा। — وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰٓ ﴿١٨﴾

19. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल का पैदा किया गया है। — إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾

20. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न हो जाता है। — إِذَا مَسَّهُ ٱلشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾

21. और जब उसे धन मिलता है तो कंजूसी करने लगता है। — وَإِذَا مَسَّهُ ٱلْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾

22. सिवाय उनके जो नमाज़ी हैं। — إِلَّا ٱلْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾

23. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन[2] करते हैं। — ٱلَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَآئِمُونَ ﴿٢٣﴾

24. और जिन के धनों में निश्चित भाग है। — وَٱلَّذِينَ فِىٓ أَمْوَٰلِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾

25. याचक (माँगने वाला), तथा वंचित[3] का। — لِّلسَّآئِلِ وَٱلْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾

26. तथा जो सत्य मानते हैं प्रतिकार (प्रलय) के दिन को। — وَٱلَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٢٦﴾

किया और शिर्क किया। (सहीह बुख़ारीः **6557**, सहीह मुस्लिमः **2805**)

1 अर्थात सत्य से।

2 अर्थात बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हों।

3 अर्थात जो न माँगने के कारण वंचित रह जाता है।

وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

29. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों[1] के तो वही निन्दित नहीं हैं।

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।

وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

34. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

36. तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को, कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

37. दायें तथा बायें से समूहों में हो[2] कर।

---

1 इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना-पति ने ग़नीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्यभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात् ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

2 अर्थात जब आप कुर्आन सुनाते हैं तो उस का उपहास करने के समूहों में हो

38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۝٣٨

39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे[1] जानते हैं।

كَلَّا ۗ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٩

40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वों (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝٤٠

41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٤١

42. अतः आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝٤٢

43. जिस दिन वह निकलेंगे क़ब्रों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों।[2]

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝٤٣

44. झुकी होंगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा[3] रहा था।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٤٤

कर आ जाते हैं। और इन का दावा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

1 अर्थात हीन जल (वीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अल्लाह और उस के रसूल को नहीं मानते।

2 या उन के थानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ते थे।

3 अर्थात रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्यम से।

सूरह नूह - 71

सूरह नूह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के उपदेश का पूरा वर्णन है जिस से इस का नाम सूरह नूह है। और इस में उन की कथा का वर्णन ऐसे किया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोधी चौंक जायें।
- इस में अल्लाह से नूह (अलैहिस्सलाम) की गुहार को प्रस्तुत किया गया है। और आयत 25 में उस यातना की चर्चा है जो उन की जाति पर आई थी।
- अन्त में नूह (अलैहिस्सलाम) की उस प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने इस यातना के समय की थी जो उन की जाति पर आई।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

1. निःसंदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पास दुःखदायी यातना।

قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ②

2. उस ने कहाः हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ③

3. कि इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।

يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ④

4. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अवसर देगा तुम्हें निर्धारित समय[1] तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ

1 अर्थात तुम्हारी निश्चित आयु तक।

जायेगा तो उस में देर न होगी। काश तुम जानते।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝٥

5. नूह ने कहाः मेरे पालनहार! मैं ने बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर) रात और दिन।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِيَ إِلَّا فِرَارًا ۝٦

6. तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही को अधिक किया।

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧

7. और मैं ने जब-जब उन्हें बुलाया तो उन्होंने दे लीं अपनी ऊँगलियाँ अपने कानों में, तथा ओढ़ लिये अपने कपड़े,[1] तथा अड़े रह गये और बड़ा घमंड किया।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨

8. फिर मैं ने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩

9. फिर मैं ने उन से खुल कर कहा और उन से धीरे-धीरे (भी) कहा।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠

10. मैं ने कहाः क्षमा माँगो अपने पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील है।

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝١١

11. वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर धाराप्रवाह वर्षा।

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝١٢

12. तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन और बना देगा तुम्हारे लिये बाग़ तथा नहरें।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝١٣

13. क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते हो अल्लाह की महिमा से?

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝١٤

14. जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें

---

1 ताकि मेरी बात न सुन सकें।

विभिन्न प्रकार[1] से।

15. क्या तुम ने नहीं देखा कि कैसे पैदा किये हैं अल्लाह ने सात आकाश ऊपर-तले?

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

16. और बनाया है चन्द्रमा को उन में प्रकाश, और बनाया है सूर्य को प्रदीप।

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

17. और अल्लाह ही ने उगाया है तुम्हें धरती[2] से अद्भुत रूप से।

وَاللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾

18. फिर वह वापिस ले जायेगा तुम्हें उस में और निकालेगा तुम को उस से।

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

19. और अल्लाह ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾

20. ताकि तुम चलो उस की खुली राहों में।

لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

21. नूह ने निवेदन कियाः मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी अवैज्ञा की, और अनुसरण किया उस का[3] जिस के धन और संतान ने उस की क्षति ही को बढ़ाया।

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾

22. और उन्होंने बड़ी चाल चली।

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

23. और उन्होंने कहाः तुम कदापि न छोड़ना अपने पूज्यों को, और कदापि न छोड़ना वद्द को, न सुवाअ को और न यगूस को और यऊक़ को तथा न नस्र[4] को।

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾

---

1 अर्थात वीर्य से, फिर रक्त से, फिर माँस और हड्डियों से।

2 अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

3 अर्थात अपने प्रमुखों का।

4 यह सभी नूह (अलैहिस्सलाम) की जाति के बुतों के नाम हैं। यह पाँच सदाचारी व्यक्ति थे जिन के मरने के पश्चात् शैतान ने उन्हें समझाया कि इन की मुर्तियाँ

24. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर दे तू (भी) अत्याचारियों के कुपथ[1] (कुमार्ग) को।

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾

25. वह अपने पापों के कारण डुबो[2] दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।

مِمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾

26. तथा कहा नूह नेः मेरे पालनहार! न छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई घराना।

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

27. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो वह कुपथ करेंगे तेरे भक्तों को, और नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्मी बड़े काफ़िर को।

إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

28. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता-पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश ही को अधिक कर।

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

बना लो। जिस से तुम्हें इबादत की प्रेरणा मिलेगी। फिर कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात् समझाया कि यही पूज्य हैं। और उन की पूजा अरब तक फैल गई।

1 नूह (अलैहिस्सलाम) ने 950 वर्ष तक उन्हें समझाया। (देखियेः सूरह अन्कबूत, आयतः 14) और जब नहीं माने तो यह निवेदन किया।

2 इस का संकेत नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान की ओर है। (देखियेः सूरह हूद, आयतः 40, 44)

सूरह जिन्न - 72

सूरह जिन्न के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में जिन्नों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुर्आन सुना और उस के सच्च होने की गवाही दी। फिर मक्का के मुश्रिकों को सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قُلۡ اُوۡحِىَ اِلَىَّ اَنَّهُ اسۡتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الۡجِنِّ فَقَالُوۡۤا اِنَّا سَمِعۡنَا قُرۡاٰنًا عَجَبًا ۙ‏ ①

1. (हे नबी!) कहोः मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना[1]) की गई है कि ध्यान से सुना जिन्नों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुर्आन।

يَّهۡدِىۡۤ اِلَى الرُّشۡدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ‌ ؕ وَلَنۡ نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ‏ ②

2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ‏ ③

3. तथा निःसंदेह महान् है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

---

1 सूरह अहक़ाफ़ आयतः 29, में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह में यह बताया गया है कि जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो आप ने न जिन्नों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्यी (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ﴿٤﴾

4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿٥﴾

5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिन्न नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ
مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾

6. और वास्तविक्ता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण माँगते थे जिन्नों में से कुछ लोगों की तो उन्हों ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ﴿٧﴾

7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ
حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ﴿٨﴾

8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن
يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾

9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ
أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾

10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا
طَرَائِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾

11. और हम में से कुछ सदाचारी हैं और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿١٢﴾

13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर ईमान ला आये, अब जो भी ईमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۗ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾

14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۗ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۤىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾

15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۤءً غَدَقًا ﴿١٦﴾

17. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۗ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

18. और यह कि मस्जिदें[1] अल्लाह के लिये हैं। अतः मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا

---

1 मस्जिद का अर्थ सज्दा करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादत तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

भक्त[1] उसे पुकारता हुआ तो समीप था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने पालनहार को पुकारता हूँ। और साझी नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न सीधी राह पर लगा देने का।

قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं बचा सकेगा अल्लाह से कोई।[2] और न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई शरणागार (बचने का स्थान)।

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ﴿٢٣﴾

23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का आदेश तथा उस का उपदेश। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य सदावासी होगा।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि किस के सहायक निर्बल और किस की संख्या कम है।

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ﴿٢٥﴾

25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा

1 अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर कुर्आन तथा इस्लाम की राह से रोकना चाहते हैं।

2 अर्थात यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहे।

पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

26. वह ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝٢٦

27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वह्यी के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।[1]

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝٢٧

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश।[2] और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝٢٨

---

1 अर्थात ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वह्यी अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फ़रिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना ग़ैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरे ग़ैब का ज्ञानी मानते हैं। और आप को गुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं। और तौहीद को आधात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।

2 अर्थात वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज़ को गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिक्ता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहिये।

सूरह मुज़्ज़म्मिल - 73

सूरह मुज़्ज़म्मिल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «अल मुज़्ज़म्मिल» (चादर ओढ़ने वाला) कह कर संबोधित किया गया है। जो इस सूरह का यह नाम रखे जाने का कारण है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात्री में नमाज़ पढ़ने का निर्देश दिया गया है। और इस का लाभ बताया गया है। और विरोधियों की बातों को सहन करने और उन के परिणाम को बताया गया है।
- मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि जैसे फ़िरऔन की ओर हम ने रसूल भेजा वैसे ही तुम्हारी ओर रसूल भेजा है। तो उस का जो दुष्परिणाम हुआ उस से शिक्षा लो अन्यथा कुफ़्र कर के परलोक की यातना से कैसे बच सकोगे?
- और इस सूरह के अन्त में, रात्री में नमाज़ का जो आदेश दिया गया था, उसे सरल कर दिया गया। इसी प्रकार लस में फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के पालन तथा ज़कात देने के आदेश दिये गये हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ①

1. हे चादर ओढ़ने वाले!

قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ②

2. खड़े रहो (नमाज़ में) रात्री के समय परन्तु कुछ[1] समय।

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात में इतनी नमाज़ पढ़ते थे कि आप के पैर सूज जाते थे। आप से कहा गयाः ऐसा क्यों करते हैं? जब कि अल्लाह ने आप के पहले और पिछले गुनाह क्षमा कर दिये हैं? आप ने कहाः क्या मैं उस का कृतज्ञ भक्त न बनूँ? (बुख़ारीः 1130, मुस्लिमः 2819)

نِّصۡفَهُۥٓ أَوِ ٱنقُصۡ مِنۡهُ قَلِيلًا ﴿٣﴾	3. (अर्थात) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।
أَوۡ زِدۡ عَلَيۡهِ وَرَتِّلِ ٱلۡقُرۡءَانَ تَرۡتِيلًا ﴿٤﴾	4. या उस से कुछ अधिक, और पढ़ो कुर्आन रुक-रुक कर।
إِنَّا سَنُلۡقِي عَلَيۡكَ قَوۡلًا ثَقِيلًا ﴿٥﴾	5. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (कुर्आन)।
إِنَّ نَاشِئَةَ ٱلَّيۡلِ هِيَ أَشَدُّ وَطۡـٔٗا وَأَقۡوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾	6. वास्तव में रात में जो इबादत होती है वह अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में। तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।
إِنَّ لَكَ فِي ٱلنَّهَارِ سَبۡحٗا طَوِيلٗا ﴿٧﴾	7. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।
وَٱذۡكُرِ ٱسۡمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلۡ إِلَيۡهِ تَبۡتِيلٗا ﴿٨﴾	8. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।
رَّبُّ ٱلۡمَشۡرِقِ وَٱلۡمَغۡرِبِ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱتَّخِذۡهُ وَكِيلٗا ﴿٩﴾	9. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (वंदनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करता धरता बना लें।
وَٱصۡبِرۡ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَٱهۡجُرۡهُمۡ هَجۡرٗا جَمِيلٗا ﴿١٠﴾	10. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं।[1] और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।
وَذَرۡنِي وَٱلۡمُكَذِّبِينَ أُوْلِي ٱلنَّعۡمَةِ وَمَهِّلۡهُمۡ قَلِيلًا ﴿١١﴾	11. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।
إِنَّ لَدَيۡنَآ أَنكَالٗا وَجَحِيمٗا ﴿١٢﴾	12. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है।
وَطَعَامٗا ذَا غُصَّةٖ وَعَذَابًا أَلِيمٗا ﴿١٣﴾	13. और भोजन जो गले में फंस जाये

1 अर्थात आप के तथा सत्धर्म के विरुद्ध।

और दुखदायी यातना है।

14. जिस दिन काँपेगी धरती और पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत भुरभुरी रेत के ढेर।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾

15. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल[1] तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फ़िरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

16. तो अवैज्ञा की फ़िरऔन ने उस रसूल की और हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾

17. तो कैसे बचोगे यदि कुफ़्र किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾

18. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾

19. वास्तव में यह (आयतें) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।[2]

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

20. निःसंदेह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) दो तिहाई रात्री के लग-भग, तथा आधी रात और तिहाई रात, तथा एक समूह उन लोगों का जो आप के साथ हैं और

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गवाह होने के अर्थ के लिये। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 143, तथा सूरह हज्ज, आयतः 78) इस में चेतावनी है कि यदि तुम ने अवैज्ञा की तो तुम्हारी दशा भी फ़िरऔन जैसी होगी।

2 अर्थात इन आयतों का पालन कर के अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त कर लें।

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۗ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

अल्लाह ही हिसाब रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अतः उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ो जितना सरल हो क़ुर्आन में से।[1] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अल्लाह के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अल्लाह की राह में, अतः पढ़ो जितना सरल हो उस में से। तथा स्थापना करो नमाज़ की, और ज़कात देते रहो, और ऋण दो अल्लाह को अच्छा ऋण।[2] तथा जो भी आगे भेजोगे भलाई में से तो उसे अल्लाह के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा। और क्षमा माँगते रहो अल्लाह से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।

---

1 क़ुर्आन पढ़ने से अभिप्राय तहज्जुद की नमाज़ है। और अर्थ यह है कि रात्री में जितनी नमाज़ हो सके पढ़ लो। हदीस में है कि भक्त अल्लाह के सब से समीप अन्तिम रात्री में होता है। तो तुम यदि हो सके कि उस समय अल्लाह को याद करो तो याद करो। (तिर्मिज़ीः 3579, यह हदीस सहीह है।)

2 अच्छे ऋण से अभिप्राय अपने उचित साधन से अर्जित किये हुये धन को अल्लाह की प्रसन्नता के लिये उस के मार्ग में ख़र्च करना है। इसी को अल्लाह अपने ऊपर ऋण क़रार देता है। जिस का बदला वह सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिक प्रदान करेगा।
(देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 261)

सूरह मुद्दस्सिर - 74

सूरह मुद्दस्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है , इस में 56 आयतें हैं।

- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ((अल मुद्दस्सिर)) कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत 11 से 31 तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लाम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा 32 से 48 तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुर्आन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बात दिल में उतर जाये।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ①

1. हे चादर ओढ़ने[1] वाले!

قُمْ فَأَنذِرْ ②

2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।

---

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रथम वह्यी के पश्चात् कुछ दिनों तक वह्यी नहीं आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज़ सुनी। ऊपर देखा तो वही फ़रिश्ता जो आप के पास «हिरा» गुफ़ा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये। और धरती पर गिर गये। फिर घर आये, और अपनी पत्नी से कहाः मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर वह्यी आने लगी। (सहीह बुख़ारीः 4925, 4926, सहीह मुस्लिमः 161) प्रथम वह्यी से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धर्म के प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पवित्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣

4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤

5. और मलीनता को त्याग दो।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥

6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

8. फिर जब फूँका जायेगा[1] नरसिंघा में।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٨

9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝٩

10. काफ़िरों पर सरल न होगा।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١٠

11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝١١

12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۝١٢

13. और पुत्र उपस्थित रहने[2] वाले।

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝١٣

14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन।

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۝١٤

15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝١٥

16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝١٦

17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी[3] चढ़ाई।

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ۝١٧

---

1 अर्थात प्रलय के दिन।

2 जो उस की सेवा में उपस्थित रहते हैं। कहा गया है कि इस से अभिप्राय वलीद पुत्र मुग़ीरा है जिस के दस पुत्र थे।

3 अर्थात कड़ी यातना दूँगा। (इब्ने कसीर)

إِنَّهُۥ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾

18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया।[1]

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾

19. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया?

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾

20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया?

ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾

21. फिर पुनः विचार किया।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾

22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾

23. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया।

فَقَالَ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾

24. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है।[2]

إِنْ هَٰذَآ إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

25. यह तो बस मनुष्य[3] का कथन है।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूँगा।

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है।

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

29. वह खाल झुलसा देने वाली।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

30. नियुक्त हैं उन पर उन्नीस (रक्षक फ़रिश्ते)।

وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحَٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلَٰٓئِكَةً

31. और हम ने नरक के रक्षक फ़रिश्ते

---

1 क़ुर्आन के संबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये, और उस के बारे में क्या कहे? (इब्ने कसीर)

2 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है। कहा जाता है कि वलीद पुत्र मुग़ीरा ने अबू जहल से कहा था कि लोगों में क़ुर्आन के जादू होने का प्रचार किया जाये।

3 अर्थात अल्लाह की वाणी नहीं है।

وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

ही बनाये हैं। और उन की संख्या को काफ़िरों के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर लें अहले[1] किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर[2] कि क्या तात्पर्य है अल्लाह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अल्लाह जिसे चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

32. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की!

وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे!

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये!

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾

35. वास्तव में (नरक) एक[3] बहुत बड़ी चीज़ है।

نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾

36. डराने के लिये लोगों को।

---

1 क्योंकि यहूदियों तथा ईसाईयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारियों की यही संख्या बताई गई है।

2 जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जहल ने कहाः हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस-दस लोग, एक-एक फ़रिश्ते के लिये काफ़ी नहीं हैं? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि 17 को मैं अकेला देख लूँगा। और तुम सब मिल कर दो को देख लेना। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है। और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे[1] आगे होना अथवा पीछे रहना।

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾

38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में बंधक है।[2]

إِلَّآ أَصْحَٰبَ ٱلْيَمِينِ ﴿٣٩﴾

39. दाहिने वालों के सिवा।

فِى جَنَّٰتٍ يَتَسَآءَلُونَ ﴿٤٠﴾

40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।

عَنِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾

41. अपराधियों से।

مَا سَلَكَكُمْ فِى سَقَرَ ﴿٤٢﴾

42. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।

قَالُوا۟ لَمْ نَكُ مِنَ ٱلْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾

43. वह कहेंगेः हम नहीं थे नमाज़ियों में से।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ ٱلْمِسْكِينَ ﴿٤٤﴾

44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ ٱلْخَآئِضِينَ ﴿٤٥﴾

45. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों के साथ।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٤٦﴾

46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल के दिन (प्रलय) को।

حَتَّىٰٓ أَتَىٰنَا ٱلْيَقِينُ ﴿٤٧﴾

47. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।

فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَٰعَةُ ٱلشَّٰفِعِينَ ﴿٤٨﴾

48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफ़ारिशियों (अभिस्तावकों) की सिफ़ारिश।[3]

فَمَا لَهُمْ عَنِ ٱلتَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾

49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस शिक्षा (क़ुर्आन) से मुँह फेर रहे हैं?

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

50. मानो वह (जंगली) गधे हैं बिदकाये हुये।

فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍۭ ﴿٥١﴾

51. जो शिकारी से भागे हैं।

---

1 अर्थात आज्ञा पालन द्वारा अग्रसर हो जाये, अथवा अवैज्ञा कर के पीछे रह जाये।

2 यदि सत्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

3 अर्थात नबियों और फ़रिश्तों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफ़ारिश की अनुमति दे।

52. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली[1] पुस्तक दी जाये।

53. कदापि यह नहीं (हो सकता) बल्कि वह आख़िरत (परलोक) से नहीं डरते हैं।

54. निश्चय यह (क़ुर्आन) तो एक शिक्षा है।

55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।

56. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾

كَلَّا ۖ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾

كَلَّآ إِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾

وَمَا يَذْكُرُوْنَ إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوٰى وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

---

1 अर्थात वे चाहते हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कसीर)

सूरह क़ियामा - 75

सूरह क़ियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम «सूरह क़ियामा» है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये संदेहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्यी ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 20 से 25 तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये, प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुराचारियों की विफलता दिखाई गई है।
- आयत 26 में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत 31 से 35 तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. मैं शपथ लेता हूँ क़्यामत (प्रलय) के दिन[1] की!

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ①

2. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा[2] करने वाली अन्तरात्मा की।

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ②

1 किसी चीज़ की शपथ लेने का अर्थ होता हैः उस का निश्चित् होना। अर्थात प्रलय का होना निश्चित् है।

2 मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराई करने पर उस की निन्दा करती है।

أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ۝٣

3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?

بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ۝٤

4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर-पोर।

بَلْ يُرِيدُ الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝٥

5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे[1] भी।

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ ۝٦

6. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧

7. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨

8. और गहना जायेगा चाँद।

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝٩

9. और एकत्र कर दिये[2] जायेंगे सूर्य और चाँद।

يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠

10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?

كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١

11. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝١٢

12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर रुकना है।

يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝١٣

13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे[3] छोड़ा।

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝١٤

14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक

---

1 अर्थात वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इसलिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।

2 अर्थात दोनों पश्चिम से अंधेरे हो कर निकलेंगे।

3 अर्थात संसार में जो कर्म किया। और जो करना चाहिये था फिर भी नहीं किया।

खुला[1] प्रमाण है।

وَّلَوۡ اَلۡقٰى مَعَاذِيۡرَهٗ ؕ‏ ﴿15﴾

15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।

لَا تُحَرِّكۡ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعۡجَلَ بِهٖ ؕ‏ ﴿16﴾

16. हे नबी! आप न हिलायें[2] अपनी ज़ुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस क़ुर्आन को।

اِنَّ عَلَيۡنَا جَمۡعَهٗ وَقُرۡاٰنَهٗ ۖ‏ ﴿17﴾

17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।

فَاِذَا قَرَاۡنٰهُ فَاتَّبِعۡ قُرۡاٰنَهٗ ۚ‏ ﴿18﴾

18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पढ़ें।

ثُمَّ اِنَّ عَلَيۡنَا بَيَانَهٗ ؕ‏ ﴿19﴾

19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।

كَلَّا بَلۡ تُحِبُّوۡنَ الۡعَاجِلَةَ ۙ‏ ﴿20﴾

20. कदापि नहीं[3], बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज़ (संसार) से।

وَتَذَرُوۡنَ الۡاٰخِرَةَ ؕ‏ ﴿21﴾

21. और छोड़ देते हो परलोक को।

وُجُوۡهٌ يَّوۡمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ‏ ﴿22﴾

22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ‏ ﴿23﴾

23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।

وَوُجُوۡهٌ يَّوۡمَئِذٍۢ بَاسِرَةٌ ۙ‏ ﴿24﴾

24. और बहुत से मुख उदास होंगे।

تَظُنُّ اَنۡ يُّفۡعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ‏ ﴿25﴾

25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।

---

1 अर्थात वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानता है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।

2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रिश्ते जिब्रील से वह्यी पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जायें। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4928, 4929)
इसी विषय को सूरह ताहा तथा सूरह आला में भी दुहराया गया है।

3 यहाँ से बात फिर काफ़िरों की ओर फिर रही है।

كَلَّآ إِذَا بَلَغَتِ ٱلتَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

26. कदापि नहीं[1], जब पहुँचेगी प्राण हंसलियों (गलों) तक।

وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾

27. और कहा जायेगाः कौन झाड़-फूँक करने वाला है?

وَظَنَّ أَنَّهُ ٱلْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾

28. और विश्वास हो जायेगा कि यह (संसार से) जुदाई का समय है।

وَٱلْتَفَّتِ ٱلسَّاقُ بِٱلسَّاقِ ﴿٢٩﴾

29. और मिल जायेगी पिंडली- पिंडली[2] से।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ ٱلْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾

30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन जाना है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾

31. तो न उस ने सत्य को माना और न नमाज़ पढ़ी।

وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾

32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ يَتَمَطَّىٰٓ ﴿٣٣﴾

33. फिर गया अपने परिजनों की ओर अकड़ता हुआ।

أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾

34. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।

ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰٓ ﴿٣٥﴾

35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।

أَيَحْسَبُ ٱلْإِنسَٰنُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़ दिया जायेगा वयर्थ?[3]

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِىٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾

37. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो (गर्भाशय में) बूंद-बूंद गिराई जाती है?

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾

38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर

---

1 अर्थात यह विचार सहीह नहीं कि मौत के पश्चात् सड़-गल जायेंगे और दोबारा जीवित नहीं किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मौत के साथ ही अपने पालनहार की ओर चली जाती है।

2 अर्थात मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे बराबर बनाया।

39. फिर उस का जोड़ाः नर और नारी बनाया।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ﴿٣٩﴾

40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों को जीवित करे दे?

أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾
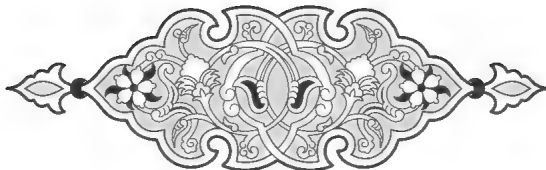
सूरह दहर - 76

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 31 आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह दहर) है। इस का दूसरा नाम (सूरह इन्सान) भी है। दहर का अर्थः ((युग)) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़िरों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत 5 से 22 तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है। और 23 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य, नमाज़ तथा तस्बीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक से अचेत हो कर मायामोह में लिप्त हैं।
- अन्त में क़ुर्आन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुःखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

هَلْ أَتٰى عَلَى الْإِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا ①

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित[1] वस्तु न था?

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ②

2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को मिश्रित (मिले हुये) वीर्य[2] से, ताकि उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे सुनने तथा देखने वाला।

---

1 अर्थात उस का कोई अस्तित्व न था।

2 अर्थात नर-नारी के मिश्रित वीर्य से।

3. हम ने उसे राह दर्शा दी।[1] (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।

إِنَّا هَدَيْنَٰهُ ٱلسَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝٣

4. निःसंदेह हम ने तय्यार की है काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये ज़ंजीर तथा तौक़ और दहकती अग्नि।

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا۟ وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا ۝٤

5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।

إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝٥

6. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)।[2]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ ٱللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝٦

7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ[3] और डरते रहे उस दिन से[4] जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।

يُوفُونَ بِٱلنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُۥ مُسْتَطِيرًا ۝٧

8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

وَيُطْعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝٨

9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ ٱللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَآءً وَلَا شُكُورًا ۝٩

10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस

إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝١٠

1 अर्थात नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बता दिया गया।

2 अर्थात उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसेः घर, बैठक आदि।

3 नज़र (मनौती) का अर्थ हैः अल्लाह के समिप्य के लिये कोई कर्म अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना। और किसी देवी-देवता तथा पीर फ़क़ीर के लिये मनौती मानना शिर्क है। जिस को अल्लाह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। अर्थात अल्लाह के लिये जो भी मनौतीयाँ मानते रहे उसे पूरी करते रहे।

4 अर्थात प्रलय और हिसाब के दिन से।

दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾

11. तो बचा लिया अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾

12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾

13. वह तकिये लगाये उस में तख़्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿١٥﴾

15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशों के होंगे।

قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾

16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।[1]

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۚ ﴿١٧﴾

17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾

18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾

19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुये मोती हैं।

وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।

---

1 अर्थात सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यक्ता से कम होंगे और न अधिक।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّ اِسْتَبْرَقٌ ۡ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾

21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चाँदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेय।

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾

22. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾

23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर क़ुर्आन थोड़ा - थोड़ा कर[1] के।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾

24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन[2] को।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंद। तथा जब हम चाहें बदला दें उन[3] के जैसे (दूसरों को)।

---

1 अर्थात नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखियेः सूरह बनी इस्राईल, आयतः 106।

2 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

3 अर्थात इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾

29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने की) राह बना ले।

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं चाह सकते।[1] वास्तव में अल्लाह सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।

يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَٱلظَّٰلِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًۢا ﴿٣١﴾

31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी दया में। और अत्याचारियों के लिये उस ने तय्यार की है दुःखदायी यातना।

1 अर्थात कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि जो चाहे कर ले। जो भलाई चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।

सूरह मुर्सलात - 77

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 50 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में मुर्सलात (हवाओं) की शपथ ली गई है। इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में झक्कड़ को प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्यावः चित्र दिखाया गया है।
- आयत 16 से 28 तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में क़्यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत 41 से 44 तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।
- अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।
- अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की वादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुख़ारीः 4930, 4931)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी वायुओं की! — وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا
2. फिर झक्कड़ वाली हवाओं की! — فَالْعَاصِفَاتِ عَصْفًا
3. और बादलों को फैलाने वालियों की![1] — وَالنَّاشِرَاتِ نَشْرًا
4. फिर अन्तर करने[2] वालों की। — فَالْفَارِقَاتِ فَرْقًا

1 अर्थात जो हवायें अल्लाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।

2 अर्थात सत्योसत्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।

5. फिर पहुँचाने वालों की वह्यी (प्रकाशना[1]) को!

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝٥

6. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी[2] के लिये!

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝٦

7. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है वह अवश्य आनी है।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝٧

8. फिर जब तारे धुमिल हो जायेंगे।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝٨

9. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝٩

10. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा दिये जायेंगे।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝١٠

11. और जब रसूलों का एक समय निर्धारित किया जायेगा।[3]

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۝١١

12. किस दिन के लिये इस को निलम्बित रखा गया है?

لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۝١٢

13. निर्णय के दिन के लिये।

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝١٣

14. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय का दिन?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝١٤

15. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٥

16. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया (अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का?

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٦

17. फिर पीछे लगा[4] देंगे उन के पिछलों को।

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٧

---

1 अर्थात जो वह्यी (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाते हैं।

2 अर्थात ईमान लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफ़िरों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।

3 उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये। और रसूल गवाही देंगे।

4 अर्थात उन्हीं के समान यातना-ग्रस्त कर देंगे।

كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝١٨

18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٩

19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٢٠

20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?

فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝٢١

21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢٢

22. एक निश्चित अवधि तक।[1]

فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ۝٢٣

23. तो हम ने सामर्थ्य[2]रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٤

24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिय!

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝٢٥

25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट[3] कर रखने वाली।

اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝٢٦

26. जीवित तथा मुर्दों को।

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ۝٢٧

27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٨

28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢٩

29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।

---

1 अर्थात गर्भ की अवधि तक।

2 अर्थात उसे पैदा करने पर।

3 अर्थात जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहते तथा बस्ते हैं। और मरण के पश्चात् उसी में चले जाते हैं।

30. चलो ऐसी छाया[1] की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।

انْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝٣٠

31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।

لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ۝٣١

32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिँगारियाँ भवन के समान।

اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝٣٢

33. जैसे वह पीले ऊँट हों।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝٣٣

34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٣٤

35. यह वह दिन है कि वह बोल[2] नहीं सकेंगे।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝٣٥

36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝٣٦

37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٣٧

38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝٣٨

39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल[3] हो तो चल लो?

فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ۝٣٩

40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٠

41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٤١

1 छाया से अभिप्रायः नरक के धुवें की छाया है। जो तीन दिशाओं में फैला होगा।

2 अर्थात उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।

3 अर्थात मेरी पकड़ से बचने की।

42. तथा मन चाहे फलों में।

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾

45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ[1] दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾

47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

48. जब उन से कहा जाता है कि (अल्लाह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾

49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

50. तो (अब) वह किस बात पर इस (कुर्आन) के पश्चात् ईमान[2] लायेंगे?

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

---

1 अर्थात संसारिक जीवन में।

2 अर्थात जब अल्लाह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नहीं लाते तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।

सूरह नबा[1] - 78

सूरह नबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम ((नबा)) है जिस का अर्थ हैः महत्व पूर्ण सूचना। जिस से अभिप्राय प्रलय तथा फिर से जीवित किये जाने की सूचना है।[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में उन को चेतावनी दी गई है जो क़्यामत का उपहास करते हैं कि वह समय दूर नहीं जब वह आ जायेगी और वह अल्लाह के सामने उपस्थित होंगे।
- आयत 6 से 16 तक में अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ बताई गई हैं। जो मरण के पश्चात् जीवन के होने का प्रमाण हैं और गवाही देती हैं कि प्रतिफल का दिन अनिवार्य है।

---

1 इस सूरह में प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) के विश्वास पर बल दिया गया है। तथा इन पर विश्वास करने और न करने का परिणाम बताया गया है। मक्का के वासी इस की हँसी उड़ाते थे। कोई कहता कि यह हो ही नहीं सकता। किसी को संदेह था। किसी का विचार था कि यदि ऐसा हुआ तो भी हमारे देवी देवता हमारी अभिस्तावना कर देंगे, जैसा कि आगामी आयतों से विद्धित होता है।
"भारी सूचना" का अर्थः कुर्आन द्वारा दी गई प्रलय और परलोक की सूचना है। प्रलय और परलोक पर विश्वास सत्य धर्म की मूल आस्था है। यदि प्रलय और परलोक पर विश्वास न हो तो धर्म का कोई महत्व नहीं रह जाता। क्योंकि जब कर्म का कोई फल ही न हो, और न कोई न्याय और प्रतिकार का दिन हो तो फिर सभी अपने स्वार्थ के लिये मनमानी करने के लिये आज़ाद होंगे, और अत्याचार तथा अन्याय के कारण पूरा मानव संसार नरक बन जायेगा।
इन प्रश्नात्मक वाक्यों में प्रकृति द्वारा मानव जाति के प्रतिपालन जीवन रक्षा और सुख सुविधा की जिस व्यवस्था की चर्चा की गई है उस पर विचार किया जाये तो इस का उत्तर यही होगा कि यह व्यवस्थापक के बिना नहीं हो सकती। और पूरी प्रकृति एक निर्धारित नियमानुसार काम कर रही है। तो जिस के लिये यह सब हो रहा है उस का भी कोई स्वाभाविक कर्तव्य अवश्य होगा जिस की पूछ होगी। जिस के लिये न्याय और प्रतिकार का दिन होना चाहिये जिस में सब को न्याय पूर्वक प्रतिकार दिया जाये। और जिस शक्ति ने यह सारी व्यवस्था की है उस दिन को निर्धारित करना भी उसी का काम है।

- आयत 17 से 20 तक में बताया गया है कि प्रतिफल का दिन निश्चित समय पर होगा। उस दिन आकाश तथा धरती की व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो जायेगा और सब मनुष्य अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।
- आयत 21 से 36 तक में दुराचारियों के दुष्परिणाम तथा सदाचारियों के शुभपरिणाम को बताया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति का चित्र दिखाया गया है और यह बताया गया है कि सिफ़ारिश के बल पर कोई जवाबदेही से नहीं बच सकेगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ①

1. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं?

عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ ②

2. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ③

3. जिस में मतभेद कर रहे हैं।

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ④

4. निश्चय वे जान लेंगे।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑤

5. फिर निश्चय वे जान लेंगे।[1]

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ⑥

6. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया?

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ⑦

7. और पर्वतों को मेख़?

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ⑧

8. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑨

9. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता (आराम) बनाया।

---

1 (1-5) इन आयतों में उन को धिक्कारा गया है, जो प्रलय की हँसी उड़ाते हैं। जैसे उन के लिये प्रलय की सूचना किसी गंभीर चिन्ता के योग्य नहीं। परन्तु वह दिन दूर नहीं जब प्रलय उन के आगे आ जायेगी और वे विश्व विधाता के सामने उत्तरदायित्व के लिये उपस्थित होंगे।

10. और रात को वस्त्र बनाया।	وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ⑩
11. और दिन को कमाने के लिये बनाया।	وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۪⑪
12. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।	وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ⑫
13. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।	وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۙ⑬
14. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।	وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۙ⑭
15. ताकि उस से अन्न और वनस्पति उपजायें।	لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۙ⑮
16. और घने घने बाग़।[1]	وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۭ⑯
17. निश्चय निर्णय (फ़ैसले) का दिन निश्चित है।	اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۙ⑰
18. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।	يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ⑱
19. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वार ही द्वार हो जायेंगे।	وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ⑲
20. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।[2]	وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۭ⑳

1 (6-16) इन आयतों में अल्लाह की शक्ति प्रतिपालन (रुबूबिय्यत) और प्रज्ञा के लक्षण दर्शाये गये हैं जो यह साक्ष्य देते हैं कि प्रतिकार (बदले) का दिन आवश्यक है, क्योंकि जिस के लिये इतनी बड़ी व्यवस्था की गई हो और उसे कर्मों के अधिकार भी दिये गये हों तो उस के कर्मों का पुरस्कार या दण्ड तो मिलना ही चाहिये।

2 (17-20) इन आयतों में बताया जा रहा है कि निर्णय का दिन अपने निश्चित समय पर आकर रहेगा, उस दिन आकाश तथा धरती में एक बड़ी उथल पुथल होगी। इस के लिये सूर में एक फूँक मारने की देर है। फिर जिस की सूचना दी जा रही है तुम्हारे सामने आ जायेगी। तुम्हारे मानने या न मानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। और सब अपना हिसाब देने के लिये अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।

21. वास्तव में नरक घात में है।	إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝٢١
22. जो दुराचारियों का स्थान है।	لِّلطَّٰغِينَ مَـَٔابًا ۝٢٢
23. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।	لَّٰبِثِينَ فِيهَآ أَحْقَابًا ۝٢٣
24. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज़) नहीं चखेंगे।	لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝٢٤
25. केवल गर्म पानी और पीप रक्त के।	إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝٢٥
26. यह पूरा पूरा प्रतिफल है।	جَزَآءً وِفَاقًا ۝٢٦
27. निःसंदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे।	إِنَّهُمْ كَانُوا۟ لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝٢٧
28. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।	وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كِذَّابًا ۝٢٨
29. और हम ने सब विषय लिख कर सुरक्षित कर लिये हैं।	وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ۝٢٩
30. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।[1]	فَذُوقُوا۟ فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝٣٠
31. वास्तव में जो डरते हैं उन्हीं के लिये सफलता है।	إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝٣١
32. बाग़ तथा अँगूर हैं।	حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ۝٣٢
33. और नवयुवति कुमारियाँ।	وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝٣٣
34. और छलकते प्याले।	وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝٣٤
35. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।	لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ۝٣٥

1 (21-30) इन आयतों में बताया गया है कि जो हिसाब की आशा नहीं रखते और हमारी आयतों को नहीं मानते हम ने उन के एक एक करतूत को गिन कर अपने यहाँ लिख रखा है। और उन की ख़बर लेने के लिये नरक घात लगाये तैयार है, जहाँ उन के कुकर्मों का भरपूर बदला दिया जायेगा।

36. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।

جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

37. जो आकाश, धरती तथा जो उन के बीच है का अति करुणामय पालनहार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।

رَّبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٱلرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

38. जिस दिन रूह (जिब्रील) तथा फ़रिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रहमान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।

يَوْمَ يَقُومُ ٱلرُّوحُ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا ۖ لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

39. वह दिन निः संदेह होना ही है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।[1]

ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمُ ٱلْحَقُّ ۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ مَـَٔابًا ﴿٣٩﴾

40. हम ने तुम को समीप यातना से सावधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करतूत देखेगा, और काफ़िर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो जाता![2]

إِنَّآ أَنذَرْنَٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ ٱلْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ ٱلْكَافِرُ يَٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرَٰبًۢا ﴿٤٠﴾

---

1 (37-39) इन आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति (हाज़िरी) का चित्र दिखाया गया है। और जो इस भ्रम में पड़े हैं कि उन के देवी देवता आदि अभिस्तावना करेंगे उन को सावधान किया गया है कि उस दिन कोई बिना उस की आज्ञा के मुँह नहीं खोलेगा और अल्लाह की आज्ञा से अभिस्तावना भी करेगा तो उसी के लिये जो संसार में सत्य वचन "ला इलाहा इल्लल्लाह" को मानता हो। अल्लाह के द्रोही और सत्य के विरोधी किसी अभिस्तावना के योग्य नहीं होंगे।

2 (40) बात को इस चेतावनी पर समाप्त किया गया है कि जिस दिन के आने की सूचना दी जा रही है, उस का आना सत्य है, उसे दूर न समझो। अब जिस का दिल चाहे इसे मान कर अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले। परन्तु इस चेतावनी के होते जो इन्कार करेगा उस का किया धरा सामने आयेगा तो पछता पछता कर यह कामना करेगा कि मैं संसार में पैदा ही न होता। उस समय इस संसार के बारे में उस का यह विचार होगा जिस के प्रेम में आज वह परलोक से अंधा बना हुआ है।

सूरह नाज़िआत[1] - 79

सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 46 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अन्नाज़िआत)) शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ हैः प्राण खींचने वाले फ़रिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 14 तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है। फिर क़्यामत का चित्र दिखाते हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
- आयत 15 से 26 तक में फ़िरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।

---

1 इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फ़रिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेगी, और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फरिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिसे असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिये अति सरल है। एक क्षण में वह संसार को विलय कर देगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसार में स्वंय को जीवित पाओगे।
फिर फ़िरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (ईश दूतों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।
27 से 33 तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।
34 से 41 तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और माया मोह को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया, तथा किस ने अपने पालनहार के सामने खड़े होने का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आना है। अब जिस के जो मन में आये करे। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे, उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

- आयत 34 से 41 तक में क़्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्दशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
- अन्त में क़्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ ①

1. शपथ है उन फ़रिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं!

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ ②

2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं।

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ ③

3. और जो तैरते रहते हैं।

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ ④

4. फिर जो आगे निकल जाते हैं।

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ ⑤

5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं।[1]

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ ⑥

6. जिस दिन धरती काँपेगी।

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۗ ⑦

7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी।

قُلُوْبٌ يَّوْمَىِٕذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ ⑧

8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे।

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ ⑨

9. उन की आंखें झुकी होंगी।

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۗ ⑩

10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे?

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۗ ⑪

11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे।

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ ⑫

12. उन्हों ने कहाः तब तो इस वापसी में क्षति है।

---

1 (1-5) यहाँ से बताया गया है कि प्रलय का आरंभ भारी भूकम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवित हो कर धरती के ऊपर होंगे।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

13. बस वह एक झिड़की होगी।

فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾

14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿١٥﴾

15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?[1]

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

16. जब पवित्र वादी "तुवा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿١٧﴾

17. फ़िरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।

فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰ أَن تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾

18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?

وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾

19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾

20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾

21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾

22. फिर प्रयास करने लगा।

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾

23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾

24. और कहाः मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ।

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾

26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।

---

1 (6-15) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफ़िरों की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार अपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है अथवा आकाश को, जिसे उस ने बनाया।[1]

ءَاَنۡتُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰىهَا ۟

28. उस की छत ऊँची की और चौरस किया।

رَفَعَ سَمۡكَهَا فَسَوّٰىهَا ۙ

29. और उस की रात को अंधेरी, तथा दिन को उजाला किया।

وَاَغۡطَشَ لَيۡلَهَا وَاَخۡرَجَ ضُحٰٮهَا

30. और इस के बाद धरती को फैलाया।

وَالۡاَرۡضَ بَعۡدَ ذٰلِكَ دَحٰٮهَا ؕ

31. और उस से पानी और चारा निकाला।

اَخۡرَجَ مِنۡهَا مَآءَهَا وَمَرۡعٰٮهَا ۪

32. और पर्वतों को गाड़ दिया।

وَالۡجِبَالَ اَرۡسٰٮهَا ۙ

33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिये।

مَتَاعًا لَّكُمۡ وَلِاَنۡعَامِكُمۡ ؕ

34. तो जब प्रलय आयेगी।[2]

فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الۡكُبۡرٰى ۟ۖ

35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद करेगा।[3]

يَوۡمَ يَتَذَكَّرُ الۡاِنۡسَانُ مَا سَعٰى ۙ

36. और देखने वाले के लिये नरक सामने कर दी जायेगी।

وَبُرِّزَتِ الۡجَحِيۡمُ لِمَنۡ يَّرٰى

1 (16 -27) यहाँ से प्रलय के होने और पुनः जीवित करने के तर्क आकाश तथा धरती की रचना से दिये जा रहे हैं कि: जिस शक्ति ने यह सब बनाया और तुम्हारे जीवन रक्षा की व्यवस्था की है, प्रलय करना और फिर सब को जीवित करना उस के लिये असंभव कैसे हो सकता है? तुम स्वंय विचार कर के निर्णय करो।

2 (28-34) "बड़ी आपदा" प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।

3 (35) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसारिक कर्म याद आयेंगे और कर्मानुसार जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उसे स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुख भोगेगा।

37. तो जिस ने विद्रोह किया।

فَأَمَّا مَنْ طَغٰىۙ

38. और सांसारिक जीवन को प्राथमिक्ता दी।

وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَاۙ

39. तो नरक ही उस का आवास होगी।

فَإِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَأْوٰىؕ

40. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ

41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰىؕ

42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَاؕ

43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?

فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَاؕ

44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَاؕ

45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।[2]

اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَاؕ

46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सवेरे से अधिक नहीं ठहरे।

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَاࣖ

---

1 (42) काफ़िरों का यह प्रश्न समय जानने के लिये नहीं, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।

2 (45) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्व मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं। जो नहीं मानेगा उसे स्वंय उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के संसारिक जीवन के स्वर्थ के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नहीं होगा।

सूरह अबस[1] - 80

सूरह अबस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 42 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अबस)) शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ((मुंह बसोरना)) है। इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 10 तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।
- आयत 11 से 16 तक में कुर्आन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे हैं वह कितनी बड़ी चीज़ है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वंय अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत 17 से 23 तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अल्लाह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये हैं।

---

1 यह सूरह मक्की है। भाष्य कारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया। आप उसे बुरा मान गये और मुँह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धर्म में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नहीं, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नहीं है कि किसी को सत्य मनवा दें। फिर कुरआन ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वंय ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस अल्लाह ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करें और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतध्नता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेगा जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नहीं रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

- अन्त में आयत 42 तक क़्यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग-अलग परिणाम बताये गये हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ①

1. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ②

2. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ③

3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ④

4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ⑤

5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ⑥

6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ⑦

7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।

وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ⑧

8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।

وَهُوَ يَخْشٰى ⑨

9. और वह डर भी रहा है।

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ⑩

10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।[1]

كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ⑪

11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात कुर्आन) एक स्मृति (याद दहानी) है।

---

1 (1-10) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे। और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नहीं करते उन के पीछे समय न गवायें। आप का यह दायित्व भी नही है कि उन्हें अपनी बात मनवा दें।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢

12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करे।

فِیْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣

13. मान्नीय शास्त्रों में है।

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝١٤

14. जो ऊँचे तथा पवित्र हैं।

بِاَیْدِیْ سَفَرَةٍ ۝١٥

15. ऐसे लेखकों (फ़रिश्तों) के हाथों में है।

كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ۝١٦

16. जो सम्मानित और आदरणीय हैं।[1]

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَاۤ اَكْفَرَهٗ ۝١٧

17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।

مِنْ اَیِّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ ۝١٨

18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया?

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝١٩

19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया।

ثُمَّ السَّبِیْلَ یَسَّرَهٗ ۝٢٠

20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया।

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝٢١

21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝٢٢

22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा।

كَلَّا لَمَّا یَقْضِ مَاۤ اَمَرَهٗ ۝٢٣

23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया।[2]

فَلْیَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰی طَعَامِهٖۤ ۝٢٤

24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे।

---

1 (11-16) इन में कुर्आन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर थोपने के लिये नहीं आया है। बल्कि वह तो फ़रिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वहीं से वह (कुर्आन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

2 (17-23) तक विश्वास हीनों पर धिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूँद से उस की रचना की तथा अपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतघ्न बना हुआ है, और पूजा उपासना अन्य की करता है।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾
25. हम ने मूसलाधार वर्षा की।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾
26. फिर धरती को चीरा फाड़ा।

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾
27. फिर उस से अन्न उगाया।

وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾
28. तथा अंगूर और तरकारियाँ।

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾
29. तथा जैतून एवं खजूर।

وَحَدَائِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾
30. तथा घने बाग़।

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾
31. एवं फल तथा वनस्पतियाँ।

مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾
32. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लिये।[1]

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾
33. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾
34. उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा।

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾
35. तथा अपने माता और पिता से।

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾
36. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।

لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾
37. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾
38. उस दिन बहुत से चेहरे उज्जवल होंगे।

ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾
39. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾
40. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।

---

1 (24-32) इन आयतों में इन्सान के जीवन साधनों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की अपार दया के परिचायक हैं। अतः जब सारी व्यवस्था वही करता है तो फिर उस के इन उपकारों पर इन्सान के लिये उचित था कि उसी की बात माने और उसी के आदेशों का पालन करे जो कुरआन के माध्यम से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। (दावतुल कुर्आन)

41. उन पर कालिमा छाई होगी।

42. वही काफ़िर और कुकर्मी लोग हैं।[1]

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

1 (33-42) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।

सूरह तक्वीर[1] - 81

सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ((कुव्विरत)) शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।[1]
- इस की आयत 1 से 6 तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत 7 से 14 तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत 15 से 25 तक में यह बताया गया है कि कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे हैं वह सत्य पर आधारित है।
- आयत 26 से 29 तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुर्आन को न मानना सत्य का इन्कार है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١

2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝٢

3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣

4. और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤

5. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये जायेंगे

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥

6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।[2]

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

---

1 यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दूतत्व (रिसालत) का वर्णन है।

2 (1-6) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल पुथल होगी उस को

7. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे।	وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۞
8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगाः	وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۞
9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई।	بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۞
10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे।	وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۞
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी।	وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۞
12. और जब नरक धहकाई जायेगी।	وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۞
13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी।	وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۞
14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।[1]	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۞
15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं।	فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۞
16. जो चलते चलते छुप जाते हैं।	الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۞
17. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है।	وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۞

दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत, सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। वन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे। सागरों के जल प्लावन से धरती जल थल हो जायेगी।

1 (7-14) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मज़लूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक भड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी को वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने नारियों को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया। आयत नं॰ 8 में उन्हीं नृशंस अपराधियों को धिक्कारा गया है।

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

19. यह (क़ुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है।

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾

20. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है।

مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾

21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है।[1]

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾

22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है।

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾

23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾

24. वह परोक्ष (ग़ैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है।[2]

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿٢٥﴾

25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है।

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾

26. फिर तुम कहाँ जा रहे हो?

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾

27. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है।

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾

28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो।

---

1 (15-21) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि क़ुर्आन ज्योतिष की बकवास नहीं। बल्कि यह ईश वाणी है। जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फ़रिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।

2 (22-24) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे हैं, और जो फ़रिश्ता वह्यी (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की बातें प्रस्तुत कर रहे हैं कोई ज्योतिष की बात नहीं, जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते हैं।

29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुछ नहीं कर सकते।[1]

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٩﴾

---

1 (27-29) इन साक्ष्यों के पश्चात सावधान किया गया है कि कुर्आन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने हैं। इन का अध्ययन कर के स्वंय सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोगे।

सूरह इन्फ़ितार[1] - 82

सूरह इन्फ़ितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- "इन्फ़ितार" का अर्थ ((फटना)) है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।
- फिर आयत 6 से 8 तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?
- आयत 9 से 12 तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।
- आयत 13 से 19 तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम बताते हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किसी के बस में कुछ न होगा, उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।
4. और जब समाधियाँ (क़बरें) खोल दी जायेंगी।
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है।[1]

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ①

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ②

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ③

وَإِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ④

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ⑤

1 (1-5) इन में प्रलय के दिन आकाश ग्रहों तथा धरती और समाधियों पर जो

6. हे इन्सान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया।	يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾
7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।	الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।[1]	فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।	كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾
10. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) हैं।	وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾
11. जो माननीय लेखक हैं।	كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿١١﴾
12. वे जो कुछ तुम करते हो जानते हैं।[2]	يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾
13. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।	اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾
14. और दुराचारी नरक में।	وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।	يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।[3]	وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾

दशा गुज़रेगी उस का चित्रण किया गया है। तथा चेतावनी दी गई है कि सब के कर्तूत उस के सामने आ जायेंगे।

1 (6-8) भावार्थ यह है कि इन्सान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षाता तथा दया के जो लक्षण हैं, उन के दर्पण में यह बताया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नहीं है कि मनमानी करो। (देखियेः तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद) इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हारा अस्तित्व और रूप रेखा कुछ भी तुम्हारे बस नहीं, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नहीं मानते?

2 (9-12) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।

3 (13-16) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

وَمَآ اَدۡرٰىكَ مَا يَوۡمُ الدِّيۡنِ ۝١٧

18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

ثُمَّ مَآ اَدۡرٰىكَ مَا يَوۡمُ الدِّيۡنِ ۝١٨

19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।[1]

يَوۡمَ لَا تَمۡلِكُ نَفۡسٌ لِّنَفۡسٍ شَيۡـًٔا ؕ وَالۡاَمۡرُ يَوۡمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۝١٩

1 (17-19) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भ्यानकता को दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णय बे लाग होगा। कोई किसी की सहायता नहीं कर सकेगा। सत्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग कुर्आन दिखा रहा है। कुर्आन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।

सूरह मुतफ़िफ़फ़ीन[1] - 83

सूरह मुतफ़िफ़फ़ीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में ((मुतफ़िफ़फ़ीन)) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: नापने-तौलने में कमी करने वाले, इसी से इस का नाम रखा गया है। [1]
- आयत 1 से 6 तक में व्यवसायिक विषय में विश्वासघात को विनाशकारी कर्म बताया गया है।
- आयत 7 से 28 तक में बताया गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ((सिज्जीन)) है, में लिखे हुये हैं और सदाचारियों के ((इल्लिय्यीन)) में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बताया गया है।
- आयत 29 से अन्त तक ईमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दुःखी न हों आज वह तुम पर हँस रहे हैं कल तुम उन पर हँसोगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾

1. विनाश है डंडी मारने वालों का।

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾

2. जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं।

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾

3. और जब उन को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾

4. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?

---

1 नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक ख़राबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशेष रूप से पाया जाता था। सूरह मुतफ़िफ़फ़ीन में इस बुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥

5. एक भीषण दिन के लिये।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦

6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।[1]

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝٧

7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "सिज्जीन" में है।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝٨

8. और तुम क्या जानो कि "सिज्जीन" क्या है?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝٩

9. वह लिखित महान् पुस्तक है।

وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٠

10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝١١

11. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते है।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢

12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣

13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैः पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٤

14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मों के कारण लोहमल लग गया है।

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝١٥

15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝١٦

16. फिर वे नरक में जायेंगे।

1 (1-6) इस सुरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नहीं चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्लाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी) एक नीति ही नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नहीं रहेगा।

17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।[1]	ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ؁
18. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र "इल्लिय्यीन" में है।	كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ؁
19. और तुम क्या जानो कि "इल्लिय्यीन" क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ؁
20. एक अंकित पुस्तक है।	كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ؁
21. जिस के पास समीपवर्ती (फ़रिश्ते) उपस्थित रहते हैं।	يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؁
22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।	اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ؁
23. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।	عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ؁
24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न अनुभव करोगे।	تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ؁
25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।	يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ؁
26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।	خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۭ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ؁
27. उस में तसनीम मिली होगी।	وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ؁

1 (7-17) इन आयतों में कुकर्मियों के दुष्परिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोंक दिये जायेंगे।
"सिज्जीन" से अभिप्रायः एक जगह है जहाँ पर काफ़िरों, अत्याचारियों और मुश्रिकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। दिलों का लोहमलः पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अंतरात्मा को अन्धकार बना देते हैं तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देते हैं।

28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।[1]

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।

إِنَّ الَّذِيْنَ أَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ آمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे।

وَإِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।

وَإِذَا انْقَلَبُوْا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾

32. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थेः यही भटके हुये लोग हैं।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوْا إِنَّ هٰؤُلَاءِ لَضَالُّوْنَ ﴿٣٢﴾

33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।

وَمَا أُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

34. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरों पर हंस रहे हैं।

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ آمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे हैं।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

36. क्या काफ़िरों (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया?[2]

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

---

1 (18-28) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं जो फ़रिश्तों के पास सुरक्षित हैं। और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। "इल्लिय्यीन" से अभिप्रायः जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। वहाँ पर समीपवर्ति फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं।

2 (29-36) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है, परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे, वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनों के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वंय इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।

सूरह इन्शिक़ाक़[1] - 84

सूरह इन्शिक़ाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 25 आयतें हैं।

- इन्शिक़ाक़ का अर्थः फटना है। इस में आकाश के फटने की सूचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है। [1]
- आयत 1 से 5 तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत 6 से 15 तक में मनुष्य के अल्लाह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत 16 से 20 तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुज़रना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुर्आन सुनकर अल्लाह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाते हैं। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो ईमान ला कर सदाचार करते हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ①

1. जब आकाश फट जायेगा।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ②

2. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ③

3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ④

4. और जो उसके भीतर है फैंक देगी तथा ख़ाली हो जायेगी।

1 इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क़यामत) तथा परलोक (आख़िरत) है।

5. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये।[1]

وَاَذِنَتۡ لِرَبِّهَا وَحُقَّتۡ ۝

6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।

يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدۡحًا فَمُلٰقِيۡهِ ۝

7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।

فَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيۡنِهٖ ۝

8. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।

فَسَوۡفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيۡرًا ۝

9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।

وَّيَنۡقَلِبُ اِلٰٓى اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ۝

10. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा

وَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِىَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهۡرِهٖ ۝

11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।

فَسَوۡفَ يَدۡعُوۡا ثُبُوۡرًا ۝

12. तथा नरक में जायेगा।

وَّيَصۡلٰى سَعِيۡرًا ۝

13. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।

اِنَّهٗ كَانَ فِىۡۤ اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ۝

14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ يَّحُوۡرَ ۝

15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।[2]

بَلٰٓى ۛ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيۡرًا ۝

---

1 (1-5) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाता के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत हैं और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे।
धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।

2 (6-15) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तुझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की ओर जा रहा है। वहाँ अपने

16. मैं सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ!

فَلَآ أُقۡسِمُ بِٱلشَّفَقِ ۝١٦

17. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे!

وَٱلَّيۡلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٧

18. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये।

وَٱلۡقَمَرِ إِذَا ٱتَّسَقَ ۝١٨

19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे।

لَتَرۡكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٖ ۝١٩

20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।

فَمَا لَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ ۝٢٠

21. और जब उन के पास कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।[1]

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيۡهِمُ ٱلۡقُرۡءَانُ لَا يَسۡجُدُونَ ۝٢١

22. बल्कि काफ़िर तो उसे झुठलाते हैं।

بَلِ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ يُكَذِّبُونَ ۝٢٢

23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है।

وَٱللَّهُ أَعۡلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝٢٣

24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।

فَبَشِّرۡهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٢٤

25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।[2]

إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمۡ أَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُونِۭ ۝٢٥

कर्मानुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह विनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में कुर्आन को नकार दिया था। और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नहीं आयेगा।

1 (16-21) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साक्ष्य स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुज़रता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुज़रना हैः संसारिक जीवन, फिर मरण, फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दुःख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।

2 (22-25) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साक्ष्यों के होते हुये कुर्आन को न मानने पर अड़े हुये हैं। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर हैं।

सूरह बुरूज[1] - 85

सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 22 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयतों में बुर्जों (राशि चक्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- आयत 1 से 3 तक प्रतिफल के दिन के होने का दावा किया गया है।
- आयत 4 से 11 तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अत्याचार करते हैं कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये हैं। और जो इस अत्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत 16 तक अत्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत 17 से 20 तक अत्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में हैं।
- अन्त में क़ुर्आन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई बात असत्य नहीं हो सकती।

---

1 यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास ज़ोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलासा दिया जा रहा है, और दूसरी ओर काफ़िरों को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये "अस्हाबे उख़्दूद" (खाईयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।
दक्षिणी अरब में नजरान, जहाँ ईसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से "ज़ू-नवास" यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गढ़ों में नर नारियों तथा बच्चों को फिकवा दिया जिस के बदले 525 ई॰ में हब्शा के ईसाईयों ने यमन पर अक्रमण कर के "ज़ू-नवास" तथा उस के हिम्यरी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पुष्टि "गुराब" के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषज्ञों को मिला है। (तर्जुमानुल क़ुर्आन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की!

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ

2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया!

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ

3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्ष्य देगा!

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ

4. खाईयों वालों का नाश हो गया![1]

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ

5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ

6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ

7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ

8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ

9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى

1 (1-4) इन में तीन चीज़ों की शपथ ली गई हैः
(1) बुर्जों वाले आकाश की,
(2) प्रलय की, जिस का वचन दिया गया है,
(3) प्रलय के भ्यावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।
प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ से यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?
दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अत्याचार करना चाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है, जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अत्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अत्यचारियों ने विवश आस्तिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٩

स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝١٠

10. जिन्हों ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝١١

11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन के तले नहरें बह रही हैं और यही बड़ी सफलता है।[1]

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝١٢

12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝١٣

13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝١٤

14. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝١٥

15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝١٦

16. वह जो चाहे करता है।[2]

---

1 (5-11) इन आयतों में जो आस्तिक सताये गये उन के लिये सहायता का वचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थित रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्हों ने उन को सताया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के सत्य को नहीं माना।

2 (12-16) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।
कुर्आन ने इस कुविचार का खण्डन किया है कि अल्लाह, पापों को क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों से भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुविचार उस समय सहीह हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ

17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओ की सूचना मिली?

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۝١٧

18. फ़िरऔन तथा समूद की।[1]

فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝١٨

19. बल्कि काफ़िर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۝١٩

20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है।[2]

وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآىِٕهِمْ مُّحِيْطٌ ۝٢٠

21. बल्कि वह गौरव वाला क़ुर्आन है।

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝٢١

22. जो लेख पत्र (लौहे महफ़ूज़) में सुरक्षित है।[3]

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢

है, वह जानता है कि किस के मन में क्या है? फिर "तौबा" इस का नाम नहीं कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किस के मन में क्या है।?

1 (17-18) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जातियों की ओर संकेत है, जिन का सविस्तार वर्णन क़ुर्आन की अनेक सूरतों में आया है। जिन्हों ने आस्तिकों पर अत्यचार किये जैसे मक्का के क़ुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जातियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चेत थे।

2 (19-20) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में क़ुर्आन को नहीं मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नहीं, और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही हैं।

3 (21-22) इन आयतों में बताया गया है कि यह क़ुर्आन कविता और ज्योतिष नहीं है जैसा कि वह सोचते हैं, यह श्रेष्ठ और उच्चतम् अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम "लौहे महफ़ूज़" में सुरक्षित है।

सूरह तारिक़[1] - 86

सूरह तारिक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ((तारिक़)) शब्द आया है जिस का अर्थ ((तारा)) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 4 तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत 5 से 8 तक मनुष्य की उत्पत्ति को उस के दोबारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत 9 से 10 तक में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत 11 से 14 तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि कुर्आन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकाट्य है।
- अन्त में काफ़िरों को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्हीं के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शपथ है आकाश तथा रात के "प्रकाश प्रदान करने वाले" की!

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝

1 इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया हैः
एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चात अल्लाह के सामने उपस्थित होना है। दूसरा यह कि कुर्आन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफ़िरों) की कोई चाल और उपाय विफल नहीं कर सकती।

2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلطَّارِقُ ۝٢

3. वह ज्योतिमय सितारा है।

ٱلنَّجْمُ ٱلثَّاقِبُ ۝٣

4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।[1]

إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝٤

5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?

فَلْيَنظُرِ ٱلْإِنسَٰنُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥

6. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।

خُلِقَ مِن مَّآءٍ دَافِقٍ ۝٦

7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।

يَخْرُجُ مِنۢ بَيْنِ ٱلصُّلْبِ وَٱلتَّرَآئِبِ ۝٧

8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।[2]

إِنَّهُۥ عَلَىٰ رَجْعِهِۦ لَقَادِرٌ ۝٨

9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।

يَوْمَ تُبْلَى ٱلسَّرَآئِرُ ۝٩

10. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।[3]

فَمَا لَهُۥ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝١٠

11. शपथ है आकाश की जो बरसता है!

وَٱلسَّمَآءِ ذَاتِ ٱلرَّجْعِ ۝١١

12. तथा फटने वाली धरती की।

وَٱلْأَرْضِ ذَاتِ ٱلصَّدْعِ ۝١٢

13. वास्तव में यह (कुर्आन) दो टूक निर्णय (फ़ैसला) करने वाला है।

إِنَّهُۥ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝١٣

---

1 (1-4) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वंय अल्लाह है।

2 (5-8) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।

3 (9-10) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जांच की जाये जिन पर संसार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

14. हँसी की बात नहीं।[1]

15. वह चाल बाज़ी करते हैं।

16. मैं भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।

17. अतः काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर दे दो।[2]

وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

وَّأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

---

1 (11-14) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का होना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नहीं एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुर्आन में जो तथ्य बताये गये हैं वह भी हँसी उपहास नहीं हैं पक्की और अडिग बातें हैं। काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुर्आन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।

2 (15-17) इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सांत्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर बात पूरी कर दी गई है कि, आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देर होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायेगा।
और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा।

सूरह ऑला[1] - 87

सूरह ऑला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस में अल्लाह के गुण ((आला)) अर्थात सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस में आयत 1 से 5 तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचानें।
- आयत 6 से 8 तक वह़्यी को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण-शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत 9 से 15 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि किस प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना ग़लत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सूरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।

---

1 इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया हैः

1- तौहीद (ऐकेश्वरवाद)

2- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।

3- परलोक (आख़िरत)।

1- प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो, जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी ग़लत आस्थायें हैं सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रूप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्हीं शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित हैं। (तर्जुमानुल क़ुर्आन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह ग़ाशिया पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिमः 878)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. अपने सर्वोचय प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।	سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾
2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।	الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾
3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।	وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ﴿٣﴾
4. और जिस ने चारा उपजाया।[1]	وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾
5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।[2]	فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾
6. (हे नबी!) हम तुहें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं।	سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ﴿٦﴾
7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है।	اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ﴿٧﴾
8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का	وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾

1 (2-4) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संतुलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नहीं निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है।

2 (4-5) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुकम से धीरे धीरे होते हैं। धरती के पौधे धीरे धीरे गुंजान और हरे भरे होते हैं। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती हैं।

साहस देंगे।[1]

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।

فَذَكِّرْ إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾

10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾

11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾

12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।

الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।[2]

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾

14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾

15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी।[3]

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾

16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

17. जबकि आख़िरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ﴿١٧﴾

18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।

إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُوْلٰى ﴿١٨﴾

---

1 (6-8) इन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की कुर्आन मुझे कैसे याद होगा, इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा। और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता कि वह सुरक्षित है, यह गर्व केवल कुर्आन को ही प्राप्त है।

2 (9-13) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार प्रसार करना है। और इस की सरल राह यह है कि जो सुने और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जो हत् भागे हैं वही नहीं सुनेंगे और नरक की यातना के रूप में अपना दुष्परिणाम देखेंगे।

3 (14-15) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था, स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज़ अदा करते रहें।

صُحُفِ إِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى ﴿١٩﴾

19. (अर्थात) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में।[1]

1 (16-19) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफ़िरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नहीं लगतीं। जब कि परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।

सूरह ग़ाशियह[1] - 88

सूरह ग़ाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 26 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((अल ग़ाशियह)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।[1]
- इस की आयत 2 से 7 तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और 8 से 16 तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं।
- आयत 17 से 20 तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। और जिन पर विचार करने से क़ुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत 21 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अतः जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्यों कि आख़िर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिसाब ले लेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क़्यामत) का समाचार आया?

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١

2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।

وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢

1 यह सूरह मक्की है तथा आरंभिक युग की है। इस में ऐकेश्वरवाद (तौहीद) तथा परलोक (आख़िरत) के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

3. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे।	عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾
4. पर वे धहकती आग में जायेंगे।	تَصْلَىٰ نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾
5. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा।	تُسْقَىٰ مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ﴿٥﴾
6. उनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।	لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ﴿٦﴾
7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी।[1]	لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِن جُوعٍ ﴿٧﴾
8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे।	وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾
9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे।	لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾
10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे।	فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾
11. उस मे कोई बकवास नहीं सुनेंगे।	لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾
12. उस में बहता जल स्रोत होगा।	فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾
13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे।	فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾
14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे।	وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾
15. पंक्तियों में गलीचे लगे होंगे।	وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾

1 (1-7) इन आयतों में प्रथम संसारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे, और दोनों के प्रतिफल भी भिन्न होंगेः एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा।
तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ हैः थक कर चूर हो जाना, अर्थात काफ़िरों को क़्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत ख़राब हो जायेगी। और वे थके थके से दिखाई देंगे। इस का दूसरा अर्थ यह भी है किः उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नहीं होंगे, इस लिये वे पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे, इसलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नहीं होगा।

16. और मख़मली क़ालीनें बिछी होंगी।[1]	وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾
17. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं?	اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾
18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?	وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾
19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?	وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾
20. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई?[2]	وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾
21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।	فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾
22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।	لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾
23. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा,	اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾
24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।	فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾
25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।	اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾
26. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।[3]	ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

---

1 (8-16) इन आयतों में जो इस संसार में सत्य आस्था के साथ क़ुर्आन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परलोक में उन के सदा के सुख का दृश्य दिखाया गया है।

2 (17-20) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है किः जो क़ुर्आन की शिक्षा तथा प्रलोक की सूचना को नहीं मानते अपने सामने उन चीज़ों को नहीं देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती हैं, ऊँटों तथा प्रवतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नहीं करते कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये हैं या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते हैं कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साझी नहीं तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते हैं? (तर्जुमानुल क़ुर्आन)

3 (21-26) इन आयतों का भावार्थ यह है कि क़ुर्आन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नहीं है, और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवायें। आप जिस से डरा रहे हैं यह मानें या न मानें वह खुली बात है। फिर भी जो नहीं सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी क़ुर्आन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती हैं कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।

सूरह फ़ज्र[1] - 89

सूरह फ़ज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वल फ़ज्र)) से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत 1 से 5 तक दिन-रात की प्राकृतिक स्थियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत 6 से 14 तक कुछ बड़ी जातियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शासक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत 15 से 20 तक में मनुष्य के साथ दुर्व्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करते हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भोर की!
2. तथा दस रात्रियों की!
3. और जोड़े तथा अकेले की!
4. और रात्री की जब जाने लगे!
5. क्या उस में किसी मतिमान (समझदार) के लिये कोई शपथ है?[1]

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾

وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾

هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ﴿٥﴾

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विष्यक चार संसारिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों

6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?	اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?	اِرَمَ ذَاتِ الۡعِمَادِ ۝
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।	الَّتِىۡ لَمۡ يُخۡلَقۡ مِثۡلُهَا فِى الۡبِلَادِ ۝
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।	وَثَمُوۡدَ الَّذِيۡنَ جَابُوا الصَّخۡرَ بِالۡوَادِ ۝
10. और मेखों वाले फ़िरऔन के साथ।	وَفِرۡعَوۡنَ ذِى الۡاَوۡتَادِ ۝
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।	الَّذِيۡنَ طَغَوۡا فِى الۡبِلَادِ ۝
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।	فَاَكۡثَرُوۡا فِيۡهَا الۡفَسَادَ ۝
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।	فَصَبَّ عَلَيۡهِمۡ رَبُّكَ سَوۡطَ عَذَابٍ ۝
14. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।[1]	اِنَّ رَبَّكَ لَبِالۡمِرۡصَادِ ۝
15. परन्तु जब इन्सान की उस का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे	فَاَمَّا الۡاِنۡسَانُ اِذَا مَا ابۡتَلٰٮهُ رَبُّهٗ فَاَكۡرَمَهٗ

का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुक्रम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अल्लाह ही इसे चला रहा है। "दस रात्रियों" से अभिप्राय "ज़ुल हिज्जा" मास की प्रारम्भिक दस रातें हैं। सहीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

1 (6-14) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलोक और प्रतिफल का इन्कार किया, और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। "आद, इरम" से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे क़ुर्आन तथा अरब में "आदे ऊला" (प्रथम आद) कहा गया है। यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास आद (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया। और इन को "आदे इरम" इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशक्रम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं॰ 11 में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गम भौतिकवाद एंव सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।

सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया। وَنَعَّمَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّىٓ أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया। وَأَمَّآ إِذَا مَا ٱبْتَلَىٰهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّىٓ أَهَٰنَنِ ﴿١٦﴾

17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते। كَلَّا ۖ بَل لَّا تُكْرِمُونَ ٱلْيَتِيمَ ﴿١٧﴾

18. तथा ग़रीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते। وَلَا تَحَٰٓضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾

19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो। وَتَأْكُلُونَ ٱلتُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾

20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।[1] وَتُحِبُّونَ ٱلْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾

21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी। كَلَّآ إِذَا دُكَّتِ ٱلْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾

22. और तेरा पालनहार स्वंय पदार्पण करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे। وَجَآءَ رَبُّكَ وَٱلْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾

23. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ- दायक न होगी। وَجِا۟ىٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ ٱلْإِنسَٰنُ وَأَنَّىٰ لَهُ ٱلذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

24. वह कामना करेगा कि काश! अपने يَقُولُ يَٰلَيْتَنِى قَدَّمْتُ لِحَيَاتِى ﴿٢٤﴾

---

1 (15-20) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायज़ा) ली गई, और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्लाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है। फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नहीं जिस का हिसाब लिया जाये?

सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।

25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान कोई दण्ड नहीं देगा।
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝٢٥

26. और न उसके जैसी जकड़ कोई जकड़ेगा।[1]
وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝٢٦

27. हे शान्त आत्मा!
يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝٢٧

28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्न।
ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝٢٨

29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।
فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝٢٩

30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।[2]
وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝٣٠

---

1 (21-26) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रूप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुकर्मियों की समझ में आयेगा कि कुर्आन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

2 (27-30) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो कुर्आन की शिक्षा का अनुपालन करते हुये आत्मा की शाँती के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सूरह बलद[1] - 90

सूरह बलद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।[1]

- इस की प्रथम आयत में ((अल-बलद)) (अर्थातः नगर) की शपथ ली गई है। जिस से अभिप्राय मक्का है। और इसी से इस सूरह का यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 4 तक में जो गवाहियाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से अभिप्राय यह है कि यह संसार सुख विलास के लिये नहीं बनाया गया है। बल्कि इस के बनाने का एक विशेष उद्देश्य है। इसी लिये मनुष्य को दुःख की स्थिति में पैदा किया गया है।
- आयत 5 से 7 तक में यह चेतावनी दी गई है कि मनुष्य यह न समझे कि उस के ऊपर उस के कर्मों की निगरानी के लिये कोई शक्ति नहीं है।
- आयत 8 से 17 तक में बताया गया है कि मनुष्य के आचरण और कर्म की ऊँचाई तथा नीचाई की राह भी खोल दी गई है। और इस ऊँचाई पर चढ़ कर जो दुर्गम है, वह आचरण और कर्म की ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।
- आयत 18 से 20 तक में बताया गया है कि मनुष्य ईमान के साथ आचरण की ऊँचाई द्वारा भाग्यशाली बन जाता है और कुफ़्र के कारण नरक की खाई में जा गिरता है जिस से निकलने का फिर कोई उपाय नहीं होगा।

---

1 इस सूरह का विषय मानव जाति (इन्सान) को यह समझाना है कि अल्लाह ने सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की दोनों राहें खोल दी हैं। और उन्हें देखने और उन पर चलने के साधन भी सुलभ कर दिये हैं। अब इन्सान के अपने प्रयास पर निर्भर है कि वह कौन सा मार्ग अपनाता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. मैं इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ!

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ①

2. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो।

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ②

3. तथा सौगन्ध है पिता एंव उस की संतान की।

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ③

4. हम ने इन्सान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ④

5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का वश नहीं चलेगा?[1]

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ⑤

6. वह कहता है कि मैं ने बहुत धन ख़र्च कर दिया।

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ⑥

7. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?[2]

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ⑦

---

1 (1-5) इन आयतों में सर्व प्रथम मक्का नगर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो घटनायें घट रही थीं, और आप तथा आप के अनुयाईयों को सताया जा रहा था, उस को साक्षी के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि: इन्सान की पेदाइश (रचना) संसार का स्वाद लेने के लिये नहीं हुई है। संसार परिश्रम तथा पीड़ायें झेलने का स्थान है। कोई इन्सान इस स्थिति से गुज़रे बिना नहीं रह सकता। "पिता" से अभिप्राय: आदम अलैहिस्सलाम, और "संतान" से अभिप्राय: समस्त मानव जाति (इन्सान) हैं।
फिर इन्सान के इस भ्रम को दूर किया है कि उस के ऊपर कोई शक्ति नहीं है जो उस के कर्मों को देख रही है, और समय आने पर उस की पकड़ करेगी।

2 (6-7) इन में यह बताया गया है कि संसार में बड़ाई तथा प्रधानता के ग़लत पैमाने बना लिये गये हैं, और जो दिखावे के लिये धन व्यय (ख़र्च) करता है उस की प्रशंसा की जाती है जब कि उस के ऊपर एक शक्ति है जो यह देख रही है कि उस ने किन राहों में और किस लिये धन ख़र्च किया है।

8. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दीं?।

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ ۝٨

9. और एक ज़बान तथा दो होंट नहीं दिये?

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝٩

10. और उसे दोनों मार्ग दिखा दिये?

وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ۝١٠

11. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।

فَلَا ٱقْتَحَمَ ٱلْعَقَبَةَ ۝١١

12. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْعَقَبَةُ ۝١٢

13. किसी दास को मुक्त करना।

فَكُّ رَقَبَةٍ ۝١٣

14. अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना।

أَوْ إِطْعَٰمٌ فِى يَوْمٍ ذِى مَسْغَبَةٍ ۝١٤

15. किसी अनाथ संबंधी को।

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝١٥

16. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।[1]

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝١٦

17. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये, और जिन्होंने धैर्य (सहन शीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।

ثُمَّ كَانَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلْمَرْحَمَةِ ۝١٧

18. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) हैं।

أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ ۝١٨

19. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا هُمْ أَصْحَٰبُ ٱلْمَشْـَٔمَةِ ۝١٩

---

1 (8-16) इन आयतों में फ़रमाया गया है कि: इन्सान को ज्ञान और चिन्तन के साधन और योग्यतायें दे कर हम ने उस के सामने भलाई तथा बुराई के दोनों मार्ग खोल दिये हैं, एक नैतिक पतन की ओर ले जाता है और उस में मन को अति स्वाद मिलता है। दूसरा नैतिक ऊँचाइयों की राह जिस में कठिनाईयाँ हैं। और उसी को घाटी कहा गया है। जिस में प्रवेश करने वालों के कर्त्तव्य में है कि दासों को मुक्त करें, निर्धनों को भोजन करायें इत्यादी वही लोग स्वर्ग वासी हैं। और वे जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वे नर्क वासी हैं। आयत नं॰ 17 का अर्थ यह है कि सत्य विश्वास (ईमान) के बिना कोई शुभकर्म मान्य नहीं है। इस में सुखी समाज की विशेषता भी बताई गई है कि: दूसरे को सहन शीलता तथा दया का उपदेश दिया जाये और अल्लाह पर सत्य विश्वास रखा जाये।

नहीं माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें हाथ वाले) हैं।

20. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾
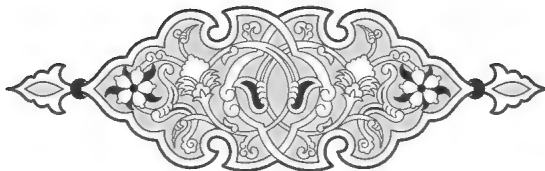
सूरह शम्स[1] - 91

सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 15 आयतें हैं।

- इस सूरह की प्रथम आयत में "शम्स" (सूर्य) की शपथ ली गई है, इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 10 तक सूर्य-चाँद और रात-दिन तथा धरती और आकाश की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस विश्व के पैदा करने वाले की पूर्ण शक्ति तथा गुणों का ज्ञान कराती हैं। और फिर मनुष्य की आत्मा की गवाही को अच्छे तथा बुरे कर्मफल के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में इस की एतिहासिक गवाही प्रस्तुत की गई है और आद तथा समूद जाति की कथा संक्षेप में बता कर उन के कुकर्मों के शिक्षाप्रद परिणाम लोगों की शिक्षा के लिये प्रस्तुत किये गये हैं ताकि वह कुर्आन तथा इस्लाम के नबी का विरोध न करें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है! — وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ﴿١﴾
2. और चाँद की शपथ जब उस के पीछे निकले! — وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ﴿٢﴾
3. और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे! — وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ﴿٣﴾
4. और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य — وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ﴿٤﴾

1 इस सूरह का विषयः पुन और पाप का अन्तर समझाना है, तथा उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी देना जो इस अंतर को समझने से इन्कार करते हैं, तथा बुराई की राह पर चलने का दुराग्रह करते हैं।

को) छुपा ले!

5. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया!　وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝

6. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया![1]　وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝

7. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा।　وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝

8. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है।[2]　فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝

9. वह सफल हो गया जिस ने अपने जीव का सुद्धिकरण किया।　قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝

10. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया।[3]　وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝

11. "समूद" जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया।　كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝

12. जब उन में से एक हत्भागा तैयार हुआ।　اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝

---

1 (1-6) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार सूर्य के विपरीत चाँद, तथा दिन के विपरीत रात है, इसी प्रकार पुन और पाप तथा इस संसार का प्रति एक दूसरा संसार परलोक भी है। और इन्हीं स्वभाविक लक्ष्यों से परलोक का विश्वास होता है।

2 (7-8) इन आयतों में कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को शारीरिक और मांसिक शक्तियाँ दे कर बस नहीं किया, बल्कि उस ने पाप और पुन का स्वभाविक ज्ञान दे कर नबियों को भी भेजा। और वह्यी (प्रकाशना) द्वारा पाप और पुन के सभी रूप समझा दिये। जिस की अन्तिम कड़ीः कुर्आन, और अन्तिम नबीः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

3 (9-10) इन दोनों आयतों में यह बताया जा रहा है कि अब भविष्य की सफलता और विसफलता इस बात पर निर्भर है कि कौन अपनी स्वभाविक योग्यता का प्रयोग किस के लिये कितना करता है। और इस प्रकाशनाः कुर्आन के आदेशों को कितना मानता और पालन करता है।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ﴿١٣﴾

13. (ईश दूतः सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوَّاهَا ﴿١٤﴾

14. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ﴿١٥﴾

15. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।[1]

---

1 (11-15) इन आयतों में समूद जाति का ऐतिहासिक उदाहरण दे कर दूतत्व (रिसालत) का महत्व समझाया गया है कि नबी इसलिये भेजा जाता है ताकि भलाई और बुराई का जो स्वभाविक ज्ञान अल्लाह ने इन्सान के स्वभाव में रख दिया है उसे उभारने में उस की सहायता करे। ऐसे ही एक नबी जिन का नाम सालेह था समूद जाति की ओर भेजे गये। परन्तु उन्होंने उन को नहीं माना, तो वे ध्वस्त कर दिये गये।
उस समय मक्का के मूर्ति पूजकों की स्थिति समूद जाति से मिलती जुलती थी। इसलिये उन को "सालेह" नबी की कथा सुना कर सचेत किया जा रहा है कि सावधानः कहीं तुम लोग भी समूद की तरह यातना में न घिर जाओ। वह तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस प्राथना के कारण बच गये कि हे अल्लाह! इन्हें नष्ट न कर। क्योंकि इन्हीं में से ऐसे लोग उठेंगे जो तेरे धर्म का प्रचार करेंगे। इस लिये कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे संसारों के लिये दयालु बना कर भेजा था।

सूरह लैल[1]- 92

सूरह लैल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 21 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "लैल" अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत 1 से 4 तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत 5 से 11 तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जाते हैं और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते हैं।
- आयत 12 से 14 तक में बताया गया है कि अल्लाह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मालिक है। उस ने बता दिया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. रात्री की शपथ जब छा जाये!
2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये!

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ①

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ②

1 इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नहीं करता। इसलिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा। अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये!

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝٣

4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं।[1]

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝٤

5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝٥

6. और भली बात की पुष्टि करता रहा,

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝٦

7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۝٧

8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝٨

9. और भली बात को झुठला दिया।

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝٩

10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।[2]

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ۝١٠

---

1 (1-4) इन आयतों का भावार्थ यह है किः जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री-पुरुष) भिन्न हैं, और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न हैं, इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास, कर्म भी दो भिन्न प्रकार के हैं। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न हैं।

2 (5-10) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाई में लगाता है तथा अल्लाह से डरता है और भलाई को मानता है। सत्य आस्था, स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नहीं रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनो लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी, तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाई को नहीं मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस बात को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ⑪

11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगा।

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ⑫

12. हमारा कर्त्तव्य इतना ही है कि हम सीधा मार्ग दिखा दें।

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ⑬

13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही हाथ में है।

فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ⑭

14. मैं ने तुम को भड़कती आग से सावधान कर दिया है।[1]

لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ⑮

15. जिस में केवल बड़ा हत्भागा ही जायेगा।

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ⑯

16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से) मुँह फेर लिया।

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ⑰

17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा लिया जायेगा।

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ⑱

18. जो अपना धन दान करता है ताकि पवित्र हो जाये।

وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ⑲

19. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं जिसे उतारा जा रहा है।

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ⑳

20. वह तो केवल अपने परम पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है।

---

1 (11-14) इन आयतों में मावन जाति (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का, दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे। और कुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मार्ग पर लगा देना उस का दायित्व नहीं है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद रखो कि संसार और परलोक दोनों ही अल्लाह के अधिकार में हैं। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।[1]

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝٢١

1 (15-21) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्मी नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्मी उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगा।
आयत नं॰10 के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियामानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुर्आन इसी लिये सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अल्लाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि अल्लाह ने उस के लिये बुराई की राह सरल कर दी। कभी कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी, जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है। (देखियेः उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह जुहा[1] - 93

सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में “जुहा” (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- आयत 1 से 2 तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये हैं इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुःख और सुख भी बनाये हैं।
- आयत 3 में बताया गया है कि सत्य की राह में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुःख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- आयत 4,5 में आप को सफलताओं की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 6 से 8 तक में उन दुःखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुलीं।

---

1 यह सूरह आरंभिक युग की है। भाष्य कारों ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (वह्यी) का उतरना रुक गया। जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सांत्वना देने के लिये यह सूरह अवतीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात्री की शपथ ले कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अप्रसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नहीं था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुर्आन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

- आयत 9 से 11 तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

وَالضُّحٰى ①

1. शपथ है दिन चढ़े की!

وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ②

2. और शपथ है रात्री की जब उस का सन्नाटा छा जाये!

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ③

3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो छोड़ा और न ही विमुख हुआ।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ④

4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे लिये प्रथम युग से उत्तम है।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ⑤

5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा कि तू प्रसन्न हो जायेगा।

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ⑥

6. क्या उस ने तुम्हे अनाथ पा कर शरण नहीं दी?

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ⑦

7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो सीधा मार्ग नहीं दिखाया?

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ⑧

8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर दिया?

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑨

9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना।[1]

---

1 (1-9) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया है किः तुम्हें यह चिन्ता कैसे हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरंतर तुम पर उपकार किये हैं। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अंजान थे तो राह दिखाई। निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही हैं कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरंतर है।

10. और माँगने वाले को न झिड़कना।

11. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना।[1]

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝١٠

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝١١

1 (10-11) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है किः हम ने तुम पर जो उपकार किये हैं उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।

सूरह शर्ह[1] - 94

सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में इन शब्दों के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ हैः साहस, संतोष तथा सत्य को अपनाना है।
- इस की प्रथम आयत 1 से 3 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह के इसी उपकार तथा आप से बोझ उतार देने का वर्णन है।[1]
- आयत 4 में आप की शखन और चर्चा ऊँची करने की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 5 से 6 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को संतोष दिलाया गया है कि वर्तमान कठिन स्थितियों के पश्चात् अच्छी स्थितियाँ आने ही को हैं।
- आयत 7 से 8 तक में यह निर्देश दिया गया है कि जब आप अपने संसारिक कार्य पूरे कर लें तो अपने पालनहार की वंदना (उपासना) में प्रयास करें और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जायें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١

2. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝٢

1 इस सूरह का विषय सूरह जुहा ही के समान है। परन्तु इस में सत्य का उपदेश देने के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जिन स्थितियों का सामना करना पड़ा कि जिस समाज में आप का बड़ा आदर मान था, वही समाज अब आप का विरोधी बन गया। कोई आप की बात सुनने को तैयार न था। यह आप के लिये बड़ी घोर स्थिति थी। अतः आप को सांत्वना दी गई कि आप हताश न हों बहुत शीघ्र ही यह अवस्था बदल जायेगी।

3. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।	الَّذِيٓ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۙ﴿۳﴾
4. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया।[1]	وَرَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ؕ﴿۴﴾
5. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।	فَاِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۙ﴿۵﴾
6. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है[2]	اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ؕ﴿۶﴾

1 (1-4) इन का भावार्थ यह है कि हम ने आप पर तीन ऐसे उपकार किये हैं जिन के होते आप को निराश होने की आवश्यक्ता नहीं। एक यह कि आप के वक्ष को खोल दिया, अर्थात आप में स्थितियों का सामना करने का साहस पैदा कर दिया। दूसरा यह कि नबी होने से पहले जो आप के दिल में अपनी जाति की मूर्ति पूजा और सामाजिक अन्याय को देख कर चिन्ता और शोक का बोझ था जिस के कारण आप दुःखित रहा करते थे। इस्लाम का सत्य मार्ग दिखा कर उस बोझ को उतार दिया। क्योंकि यही चिन्ता आप की कमर तोड़ रही थी। और तीसरा विशेष उपकार यह कि आप का नाम ऊँचा कर दिया। जिस से अधिक तो क्या आप के बराबर भी किसी का नाम इस संसार में नहीं लिया जा रहा है। यह भविष्यवाणी कुर्आन शरीफ़ ने उस समय की जब एक व्यक्ति का विरोध उस की पूरी जाति और समाज तथा उस का परिवार तक कर रहा था। और यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह इतना बड़ा विश्व विख्यात व्यक्ति हो सकता है। परन्तु समस्त मानव संसार कुर्आन की इस भविष्यवाणी के सत्य होने का साक्षी है। और इस संसार का कोई क्षण ऐसा नहीं गुज़रता जब इस संसार के किसी देश और क्षेत्र में अजानों में "अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" की आवाज़ न गूँज रही हो। इस के सिवा भी पूरे विश्व में जितना आप का नाम लिया जा रहा है और जितना कुर्आन का अध्ययन किया जा रहा है वह किसी व्यक्ति और किसी धर्म पुस्तक को प्राप्त नहीं, और यही अन्तिम नबी और कुर्आन के सत्य होने का साक्ष्य है, जिस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिये।

2 (5-6) इन आयतों में विश्व का पालनहार अपने भक्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिला रहा है कि उलझनों का यह समय देर तक नहीं रहेगा इसी के साथ सरलता तथा सुविधा का समय भी लगा आ रहा है। अर्थात आप का आगामी युग व्यतीत युग से उत्तम होगा जैसा कि "सूरह जुहा" में कहा गया है।

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾

7. अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो।

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾

8. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मगन हो जाओ।[1]

1 (7-8) इन अन्तिम आयतों में आप को निर्देश दिया गया है कि जब अवसर मिले तो अल्लाह की उपासना में लग जाओ, और उसी में ध्यान मगन हो जाओ, यही सफलता का मार्ग है।

सूरह तीन[1] - 95

सूरह तीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "तीन" शब्द, जिस का अर्थः इंजीर है, के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक उन स्थानों को गवाही में प्रस्तुत किया गया है जिन से बड़े बड़े नबी उठे और मार्गदर्शन का प्रकाश फैला।

---

1 "तीन" का अर्थ हैः इन्जीर। इसी शब्द से इस सूरह का नाम लिया गया है। फ़लस्तीन तथा शाम जो प्राचीन युग से नबियों के केंद्र चले आ रहे थे, जैतून तथा इंजीर की उपज का क्षेत्र था। और मक्के के लोग इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे, इसलिये वे उनकी मुहब्बत से भली भाँती परिचित थे।
"तूर" पर्वत सीना के मरुस्थल में है। यहीं पर मूसा (अलैहिस्सलाम) को धर्म विधान प्रदान किया गया था।
"शान्ति नगर" से अभिप्रायः मक्का नगर है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ के कारण इस का नाम शान्ति का नगर रखा गया है। जिस में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव विश्व के पथ प्रदर्शक बना कर भेजे गये।
इस की भूमिका यह है कि सर्व प्रथम उत्साह शील नबियों के केन्द्रों को शपथ अर्थात साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर के यह बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को अति उत्तम रूप रेखा में सर्वोच्च स्वभाव एवं योग्यताओं के साथ पैदा किया है। परन्तु इस उच्चता को स्थित रखने तथा इन उत्तम योग्यताओं को उभारने के लिये उस का यह नियम बनाया है किः जो ईमान (विश्वास) तथा सत्कर्म की राह अपनायेंगे, जो कुर्आन की राह है और इस राह की कठिनाईयों से संघर्ष करने का साहस करेंगे तो उन्हें परलोक में अपने प्रयासों का भरपूर पुरस्कार मिलेगा। और जो संसारिक स्वार्थ और सुख के लिये इस राह की कठिनाईयों का सामना करने का साहस नहीं करेंगे, अल्लाह उन्हें उसी राह पर छोड़ देगा। और अन्ततः उस गढ़े में जा गिरेंगे जो इस के राहियों का भाग्य है।
भावार्थ यह है कि जब इन्सानों के दो भेद हैं तो न्यायोचित यही है कि उन के कर्मों के फल भी दो हों। फिर अल्लाह जो न्यायधीशों का न्यायधीश है वह न्याय क्यो नहीं करेगा?। (तर्जुमानुल कुर्आन)

- आयत 4 से 6 तक में बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को उत्तम रूप पर पैदा किया है ताकि वह ऊँचा स्थान प्राप्त करे। किन्तु वह नीचा बन गया और बहुत नीची खाई में जा पड़ा। फिर जिस ने ईमान और सदाचार कर के ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया, तो वह सफल हो गया। और उस के लिये अनन्त प्रतिफल है।
- आयत 7 से 8 तक में कहा गया है कि अल्लाह सब से बड़ा न्यायधीश है। तो उस के यहाँ यह कैसे हो सकता है कि अच्छे-बुरे सब परिणाम में बराबर हो जायें? या दोनों का कोई परिणाम और प्रतिफल ही न हो? यह बात न्यायोचित नहीं है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. इंजीर तथा जैतून की शपथ!
وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ①

2. एंव "तूरे सीनीन" की शपथ!
وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ②

3. और इस शान्ति के नगर की शपथ!
وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ③

4. हम ने इन्सान को मनोहर रूप में पैदा किया है।
لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ④

5. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।
ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ⑤

6. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ⑥

7. फिर तुम (मानव जाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाते हो?
فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ⑦

8. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बढ़ कर अधिकारी नहीं?
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ⑧

सूरह अलक़[1]- 96

सूरह अलक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस की आयत 2 में इन्सान के अलक़ अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में क़ुर्आन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत 6 से 8 तक इन्सान को चेतावनी दी गयी है कि वह अल्लाह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अल्लाह ही के पास पहुंचना है?
- आयत 9 से 14 तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की राह में बाधायें उत्पन्न करता था।
- आयत 15 से 18 तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अल्लाह की वंदना में लगे रहो।

हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिब्रील आये और आप को यह (पाँच) आयतें पढ़ाईं। (सहीह बुख़ारीः 4955)

अबू जह्ल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौंद दूँगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहाः यदि

---

1 यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पाँच आयतें पहली वह्यी (प्रकाशना) हैं जैसा कि बुख़ारी (हदीस नं॰ 4953) और मुस्लिम (हदीस नं॰ 160) में आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जह्ल ने "काबा" के पास नमाज़ से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज़ अदा करने और धमकियों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह बुख़ारीः 4958)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿١﴾

2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾

3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है।

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ﴿٣﴾

4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾

5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।[1]

عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम वह्यी (प्रकाशना) का वर्णन है।
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर "जबले नूर" (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम "हिरा" है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वहीं कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन आप इसी गुफा में थे किः अकस्मात आप पर प्रथम वह्यी (प्रकाशना) लेकर फ़रिश्ता उतरा। और आप से कहा "पढ़ो"। आप ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। इस पर फ़रिश्ते ने आप को अपने सीने से लगाकर दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाईं। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु 40 वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उढ़ा दो। जब कुछ शांत हुये तो अपनी पत्नी ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई। उन्हों ने आप को सांत्वना दी और अपने चचा के पुत्र "वरक़ा बिन नौफल" के पास ले गईं जो ईसाई विद्वान थे। उन्हों ने आप की बात सुन कर कहाः यह वही फ़रिश्ता है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश मैं तुम्हारी नुबुव्वत (दूतत्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जो आप

6. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।	كَلَّآ إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰٓ ۝٦
7. इसलिये कि वह स्वंय को निश्चन्त (धनवान) समझता है।	أَن رَّءَاهُ اسْتَغْنَىٰٓ ۝٧
8. निः संदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है।[1]	إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰٓ ۝٨
9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।	أَرَءَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝٩
10. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।	عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰٓ ۝١٠
11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।	أَرَءَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰٓ ۝١١
12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो?	أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰٓ ۝١٢
13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो?[2]	أَرَءَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰٓ ۝١٣
14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे	أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝١٤

लाये हैं उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मैं ने आप का वह समय पाया तो आप की भरपूर सहायता करूँगा।

परन्तु कुछ ही समय गुज़रा था कि वरक़ा का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को 13 वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिज्रत (प्रस्थान) कर गये। (देखियेः इब्ने कसीर)

आयत नं॰ 1 से 5 तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेशः कुर्आन का अध्ययन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षाता से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुनः जीवित कर देने की भी शक्ति रखता है। फिर ज्ञान अर्थात कुर्आन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

1 (6-8) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और इस बात से निश्चिन्त हैं किः एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।

2 (9-13) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज़ से रोकते हैं।

देख रहा है?

15. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾

16. झूठे और पापी माथे के बल।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾

17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ﴿١٧﴾

18. हम भी नरक के फ़रिश्तों को बुलायेंगे।[1]

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾

19. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।[2]

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ۩ ﴿١٩﴾

1 (14-18) इन आयतों में सत्य के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

2 (19) इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देते हुये नमाज़ अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।

सूरह क़द्र[1] - 97

सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।[1]

- इस में कुर्आन के क़द्र की रात में उतारे जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है। क़द्र का अर्थ हैः आदर और सम्मान।
- इस में सब से पहले बताया गया है कि कुर्आन कितनी महान् रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आदर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमज़ान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषभ (ताक़) रात में करो। (सहीह बुख़ारीः 2017, तथा सहीह मुस्लिमः 1169)

दूसरी हदीस में है कि जो क़द्र की रात में ईमान के साथ पुन् प्राप्त करने के लिये नमाज़ पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारीः 37, तथा सहीह मुस्लिमः 759)

---

1 इस सूरह को अधिकांश भाष्य कारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मद्नी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में है।
इसी "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्री) को सूरह दुख़ान में "लैलतुन मुबारकह" (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमज़ान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह "बक़रः" में कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के महीने में कुर्आन शरीफ़ उतारा गया। अर्थात इसी रात्रि में सम्पूर्ण कुर्आन उन फ़रिश्तों को दे दिया गया जो वह्यी (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर 23 वर्ष में आवश्यकता के अनुसार कुर्आन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमजान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि कुर्आन रमज़ान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक़ की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. निःसंदेह हम ने उस (कुर्आन) को "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में उतारा।

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ①

2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ②

3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हज़ार मास से उत्तम है।[1]

لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ③

4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के लिये) फ़रिश्ते तथा रूह (जिबरील) अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते हैं।[2]

تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ④

5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने तक रहती है।[3]

سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ⑤

---

1 हज़ार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है किः इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में ईमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (देखियेः सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰ 35, तथा सहीह मुस्लिम, हदीस नं॰ 760)

2 "रूह" से अभिप्रायः जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं। उन की प्रधानता के कारण सभी फ़रिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बताया गया है कि वे स्वंय नहीं बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते हैं।

3 इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।

सूरह बय्यिनह[1] - 98

सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 8 आयतें हैं।[1]

- इस की प्रथम आयत में बैयिनह अर्थातः प्रकाशित प्रमाण की चर्चा हुई है जिस से इस का यह नाम रखा गया है।
- इस की आयत 1 से 3 तक में यह बताया गया है कि लोगों को कुफ़ से निकालने के लिये यह आवश्यक था कि एक ग्रन्थ के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह धर्म को सहीह रूप में प्रस्तुत करे।
- आयत 4,5 में बताया गया है कि अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) के पास प्रकाशित शिक्षा आ चुकी थी किन्तु वे विभेद में पड़ गये। और उन्होंने धर्म की वास्तविक शिक्षा भुला दी।
- आयत 6 से 8 तक रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन्कार की दुःखद यातना को और रसूल पर ईमान ला कर अल्लाह से डरते हुये जीवन बिताने की सफलता को बताया गया है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

لَمۡ يَكُنِ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ مِنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ وَٱلۡمُشۡرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ تَأۡتِيَهُمُ ٱلۡبَيِّنَةُ ۝١

1. अहले किताब के काफ़िर, और मुश्रिक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।

رَسُولٞ مِّنَ ٱللَّهِ يَتۡلُواْ صُحُفٗا مُّطَهَّرَةٗ ۝٢

2. अर्थातः अल्लाह का एक रसूल, जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

---

1 इस सूरह को साधारण भाष्यकारों ने मदनी लिखा है। परन्तु कुछ सहाबा (रजियल्लाहु अन्हुम) ने इसे मक्की कहा है। इस को इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सूरह मक्के के अन्तिम काल तथा मदीने के प्रथम काल के बीच अवतीर्ण हुई।

3. जिस में उचित आदेश हैं।[1]

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝

4. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।[2]

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝

5. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें। और यही शाश्वत धर्म है।[3]

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۝

6. निः संदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गये, तथा मुश्रिक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे। और वही सब से दुष्टतम् जन हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

---

1 (1-3) इस सूरह में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि इस पुस्तक के साथ एक रसूल (ईश दूत) भेजना क्यों आवश्यक था। इस का कारण यह है कि मानव संसार के आदि शास्त्र धारी (यहूद तथा ईसाई) हों या मिश्रणवादी अधर्म की ऐसी स्थिता में फंसे हुये थे कि एक नबी के बिना उन का इस स्थिति से निकलना संभव न था। इसलिये इस चीज़ की आवश्यक्ता आई कि एक रसूल भेजा जाये जो स्वंय अपनी रिसालत (दूतत्व) का ज्वलंत प्रमाण हो। और सब के सामने अल्लाह की किताब को उस के सहीह रूप में प्रस्तुत करे जो असत्य के मिश्रण से पवित्र हो जिस से आदि धर्म शास्त्रों को लिप्त कर दिया गया है।

2 इस के बाद आदि धर्म शास्त्रों के अनुयाईयों के कुटमार्ग का विवरण दिया गया है कि इस का कारण यह नहीं था कि अल्लाह ने उन को मार्गदर्शन नहीं दिया। बल्कि वे अपने धर्म ग्रन्थों में मन माना परिवर्तन कर के स्वंय कुटमार्ग का कारण बन गये।

3 इन में यह बताया गया है कि अल्लाह की ओर से जो भी नबी आये सब की शिक्षा यही थी कि सब रीतियों को त्याग कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये। इस में किसी देवी देवता की पूजा अर्चना का मिश्रण न किया जाये। नमाज़ की स्थापना की जाये, ज़कात दी जाये। यही सदा से सारे नबियों की शिक्षा थी।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾

7. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन हैं।

جَزَاؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ﴿٨﴾

8. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ हैं। जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।[1]

---

1 (6-8) इन आयतों में साफ़ साफ़ कह दिया गया है कि जो अहले किताब और मूर्तियों के पुजारी इस रसूल को मानने से इन्कार करेंगे तो वे बहुत बुरे हैं। और उन का स्थान नरक है। उसी में वे सदा रहेंगे। और जो संसार में अल्लाह से डरते हुये जीवन निर्वाह करेंगे तथा विश्वास के साथ सदाचार करेंगे तो वे सदा के स्वर्ग में रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया, और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गये।

सूरह ज़िलज़ाल[1]- 99

सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ((ज़िलज़ाल)) का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चकित रह जायेगा।
- आयत 4 से 5 तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है। जो उस की ओर से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़ दिया जायेगा।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ①

2. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ②

3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ③

---

1 यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है। परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुई। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिसाब लिये जाने का वर्णन है।

4. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝

5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝

6. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें।[1]

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝

7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।

فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝

8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा।[2]

وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

---

1 (1-6) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (क़्यामत) का भूकम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ भी है, सब उगल कर बाहर फेंक देगी। यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये हैं। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।

2 (7-8) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आ रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नहीं रहेगा।

सूरह आदियात[1] - 100

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((आदियात)) अर्थात दौड़ने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इस लिये इस का नाम "सूरह आदियात" रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में घोड़ों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत प्रयोग करता है।
- आयत 6 से 8 तक में मनुष्य की धन के मोह में अल्लाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे क़ब्रों से निकल कर अल्लाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस नें संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ①

1. उन घोड़ों की शपथ जो दोड़ कर हाँफ जाते हैं!

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ②

2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ!

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ③

3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों की शपथ!

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ④

4. जो धूल उड़ाते हैं।

1 इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

5. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं।

فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝

6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है।

إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝

7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वंय साक्षी (गवाह) है।[1]

وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝

8. वह धन का बड़ा प्रेमी है।[2]

وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝

9. क्या वह उस समय को नही जानता जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा?

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝

10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे?[3]

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝

11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा।[4]

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۝

---

1 (1-7) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघ्नता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रूप में एक पशु की कृतज्ञता को शपथ स्वरूप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पोसता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे अपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दोड़ता और अपनी जान जोखिम में डाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया, समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये, वह उस का उपकार नहीं मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।

2 इस आयत में उस की कृतघ्नता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्याधिक प्रेम धन से करता है।

3 (9-10) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतध्नता की है, और किस ने कृतज्ञता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अतः इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतघ्न नहीं होना चाहिये, और उस के सत्धर्म का पालन करना चाहिये।

4 (11) अर्थात वह सूचित होगा कि कौन क्या है, और किस प्रतिकार का भागी है।

सूरह क़ारिअह[1]- 101

सूरह क़ारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत को ((क़ारिअह)) कहा गया है। अर्थात खड़ खड़ाने वाली आपदा। और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 5 तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत 6,7 में जिन के कर्म न्याय के तराज़ू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बताया गया है।[1]
- आयत 8 से 11 तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराज़ू में हल्के होंगे। और नरक की वास्तविक्ता बताई गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. वह खड़खड़ा देने वाली। — اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾
2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली? — مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾
3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?[2] — وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۗ﴿۳﴾

---

1 यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) है। इस में प्रश्न के रूप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पतिंगे प्रकाश पर बिखरे होते हैं। और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उखड़ कर धुनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बताया गया है कि परलोक में हिसाब इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों को आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।

2 (1-3) "क़ारिअह": प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का

4. जिस दिन लोग बिखरे पतिंगों के समान (व्याकुल) होंगे।

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝٤

5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।[1]

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝٥

6. तो जिस के पलड़े भारी हुये

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝٦

7. तो वह मन चाहे सुख में होगा।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧

8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝٨

9. तो उस का स्थान "हाविया" है।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝٩

10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝١٠

11. वह दहक्ती आग है।[2]

نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थः द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाज़ा खटखटाने की आवश्यकता होती है। जिस से एक तो यह ज्ञात हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञात हुआ कि वह कड़ी ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी। इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

1 (4-5) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।

2 (6-11) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये, जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में झोंक दिया जायेगा।

सूरह तकासुर[1] - 102

सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((तकासुर)) अर्थातः अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे अर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जव तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे। और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न कर दिया।

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝

2. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे।[2]

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝

1 इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।

2 (1-2) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है किः मौत के पार क्या होगा इसे सोचते ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ③

3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ④

4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ⑤

5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते।)[1]

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ⑥

6. तुम नरक को अवश्य देखोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ⑦

7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे।

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ⑧

8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी।[2]

---

1 (3-5) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पार क्या है? उन्हें आँख बन्द करते ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होते। और तुम पर धन प्राप्ती की धुन इतनी सवार न होती।

2 (6-8) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जवाब देही करनी होगी। (अहसनुल बयान)

सूरह अस्र[1] - 103

सूरह अस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अस्र)) अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्र रखा गया है।[1]
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और ग़लत राह पर पड़ कर विनाश के गढ़े में गिरने से बच जायें।
- युग की गवाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान से ख़ाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. निचड़ते दिन की शपथ!
2. निःसंदेह इन्सान क्षति में है।[2]

وَالْعَصْرِ ۙ

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ

---

1 यद्धपी यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुवा है। इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है। इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।

2 (1-2) "अस्र" का अर्थः निचोड़ना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचड़ने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है किः इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान पूँजी समय है जो तेज़ी से गुज़रता है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में पड़ जायेगा।

3. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये। तथा सदाचार किये, एंव एक दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे।[1]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ③

1 इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र ईमान ही पर बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से सत्य और सहन शीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक है। (तर्जुमानुल क़ुर्आन, मौलाना आज़ाद)

सूरह हुमज़ह[1] - 104

सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

- इस का नाम ((सूरह हुमज़ह)) है क्यों कि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ हैः व्यंग करना, ताना मारना, ग़ीबत करना आदि।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारण है।
- आयत 4 से 9 तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता रहता है और चौंटे करता रहता है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝

2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे गिन गिन कर रखा।

الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝

3. क्या वह समझता है कि उस का धन उसे संसार में सदा रखेगा?[2]

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝

---

1 यह सूरह भी मक्की युग की आरंभिक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पुजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण्ड पायेंगे।

2 (1-3) इन आयतों में धन के पुजारियों के अपने धन के घमंड में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है किः यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नहीं रखेगा, एक समय आयेगा कि उसे सब कुछ छोड़ कर ख़ाली हाथ जाना पड़ेगा।

4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फेंका जायेगा।

كَلَّا لَيُنۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝٤

5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है?

وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥

6. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।

نَارُ اللّٰهِ الْمُوقَدَةُ ۝٦

7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।

الَّتِى تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْـِٔدَةِ ۝٧

8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।

إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ ۝٨

9. लँबे लँबे स्तम्भों में।[1]

فِى عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍۭ ۝٩

---

1 (4-9) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण्ड कर देगी और दिलों तक जो कुविचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।

सूरह फ़ील[1] - 105

सूरह फ़ील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((फ़ील)) शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है। इसी लिये इस का यह नाम है।[1]
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत 1 में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना कॉबा को ढहाने आई थी उस का अल्लाह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो।

---

1 यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर "कॉबा" को "अबरहा" से सुरक्षित रखने और उसे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा "अबरहा" ने अपनी राजधानी "सन्आ" में एक कलीसा (गिर्जा घर) बनाया। और लोगों को कॉबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और 570 या 571 ई० में 60 हज़ार सेना के साथ जिस में 13 या 9 हाथी थे कॉबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पड़ा। और जब मक्का से तीन कोस रह गया तो "मुहस्सर" नामी स्थान पर पड़ाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पकड़ लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के थे जो कॉबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहाः तुम ऊँट माँगते हो और कॉबा के बारे में जो तुम्हारा धर्म स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दुल मुत्तलिब ने कहाः मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ। रहा यह घर तो उस का स्वामी उस की रक्षा स्वंय करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा किः अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें। फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्रमुखों के साथ कॉबा के द्वार का कड़ा पकड़ कर दुआ (प्रार्थना) की और कहाः हे अल्लाह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पड़ने पर भी नहीं हिला। और दूसरी दशा में फेरा जाता तो दौड़ने लगता था। इतने में पंक्षियों का एक झुंड चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी, जिन से उन का शरीर गलने लगा, और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

- आयत 2 में बताया गया है कि कैसे उस की चाल असफल हो गई।
- आयत 3,4 में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत 5 में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١

2. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢

3. और उन पर पंक्षियों के दल भेजे?

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤

5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।[1]

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

1 (1-5) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि कॉबा को आकर्मण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्लाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पड़ा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नेत्रों से देखा था। अतः उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो आमंत्रण दे रहे हैं वह यही तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दबाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ। (इब्ने कसीर)

सूरह कुरैश[1] - 106

सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इस में मक्का के क़बीले ((कुरैश)) की चर्चा के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में मक्का के वासी कुरैश के अपनी व्यापारिक यात्रा से प्रेम रखने के कारण जो यात्रा वह निर्भय और शान्त रह कर किया करते थे क्योंकि कॉबा के निवासी थे उन से कहा जा रहा है कि वह केवल इस घर के स्वामी अल्लाह ही की वंदना (उपासना) करें।
- आयत 4 में इस का कारण बताया गया है कि यह जीविका और शान्ति जो तुम्हें प्राप्त है वह अल्लाह ही का प्रदान है। इस लिये तुम्हें उस का आभारी होना चाहिये और मात्र उसी की इबादत (वंदना) करनी चाहिये।

---

1 इस सूरह के अर्थ को समझने के लिये यह जानना ज़रूरी है कि कुरैश जाति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पूर्वज कुसई पुत्र किलाब के युग में "हिजाज़" में फैली हुई थी। उन्होंने सब को मक्का में एकत्र किया और अपनी सुनिती से एक राज्य की स्थापना की। और हाजियों की सेवा की ऐसी व्यवस्था की कि पूरी अरब जातियों और क्षेत्रों में उन का अच्छा प्रभाव पड़ा। कुसई के बाद उन के चार पुत्रों में राज्य पद विभाजित हो गये। परन्तु उन में अब्द मनाफ़ का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। और उन के चार पुत्रों में से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता हाशिम ने सब से पहले यह सोचा किः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लिया जाये, जिस के कारण कुरैश का संबंध अनेक देशों और सभ्यताओं से हो गया। मक्का अरब द्वीप का व्यापारिक केंद्र बन गया। और अब्रहा की पराजय ने कुरैश की मान मर्यादा और अधिक कर दी। इसलिये सूरह के चार वाक्यों में कुरैश से मात्र इतना ही कहा गया है कि जब तुम इस घर (कॉबा) को मूर्तियों का नहीं अल्लाह का घर मानते हो कि वह अल्लाह ही है जिस ने इस घर के कारण शांती प्रदान की और तुम्हारे व्यापार को यह उन्नती दी, तथा तुम्हें भुखमरी से बचाया तो तुम्हें भी मात्र उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. कुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١

2. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण।[1]

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

3. उन्हें चाहिये कि इस घर (कॉबा) के प्रभु की पूजा करें।[2]

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣

4. जिस नें उन्हें भूख में खिलाया तथा डर से निडर कर दिया।

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

---

1 (1-2) गर्मी और जाड़े की यात्रा से अभिप्राय गर्मी के समय कुरैश की व्यापारिक यात्रा है जो शाम और फ़लस्तीन की ओर होती थी। और जाड़े के समय वे दक्षिण अरब की यात्रा करते थे जो गर्म क्षेत्र है।

2 इस घर से अभिप्रायः कॉबा है। अर्थ यह है कि यह सुविधा उन्हें इसी घर के कारण प्राप्त हुई। और वह स्वंय यह मानते हैं कि 360 मूर्तियाँ उन की रब नहीं हैं जिन की पूजा कर रहे हैं। उन का रब (पालनहार) वही है जिस ने उन को अब्रहा के आक्रमण से बचाया। और उस युग में जब अरब की प्रत्येक दिशा में अशान्ति का राज्य था मात्र इसी घर के कारण इस नगर में शान्ति है। और तुम इसी घर के निवासी होने के कारण निश्चिन्त हो कर व्यापारिक यात्रायें कर रहे हो, और सुख सुविधा के साथ रहते हो। क्योंकि काबे के प्रबन्धक और सेवक होने के कारण ही लोग कुरैश का आदर करते थे। तो उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि फिर तुम्हारा कर्त्तव्य है कि केवल उसी की उपासना करो।

सूरह माऊन[1] - 107

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ((माऊन)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यक्ता की चीज़ें। [1]
- आयत 1 में उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत 2,3 में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयत 4 से 6 तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज़ पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।
- और आयत 7 में उन की कंजूसी पर पकड़ की गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाता है?

أَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ①

2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्का देता है।

فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ②

3. और ग़रीब के लिये भोजन देने पर नहीं उभारता।[2]

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ③

---

1 इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर ईमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता है।

2 (2-3) इन आयतों में उन काफ़िरों (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो

4. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये[1]
5. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।
6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।
7. तथा माऊन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते।[2]

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝٤
الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝٥
الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝٦
وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝٧

परलोक का इन्कार करते हैं।

1 इन आयतों में उन मुनाफ़िक़ों (द्वय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुसलमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं है।

इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है किः इन्सान में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। और इस्लाम प्रलोक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और ग़रीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।

2 आयत नं॰ 7 में मामूली चीज़ के लिये (माऊन) शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है साधारण माँगने के सामानः जैसे पानी, आग, नमक, डोल आदि। और आयत का अभिप्राय यह है किः आख़िरत का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है किः वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।

सूरह कौसर[1] - 108

सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "कौसर" शब्द आया है जिस का अर्थ हैः बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम "सूरह कौसर" है। [1]
- इस की आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत 2 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज़ पढ़ते रहने तथा कुर्बानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शत्रु हैं वह आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बड़ी भलाई से वंचित रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौसर एक नहर है जो तुम्हारे नबी को प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोती के और बर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुख़ारीः 4965)

---

1 यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का वासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्डन किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई।
आप अपने थोड़े से साथियों के साथ निस्सहाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खुशियाँ मनाईं। और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। वह निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा नहीं रह जायेगा। ऐसे ह्रदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव है। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर वादियों का कोई सहायक नहीं रह गया। और उन्हें विवश हो कर हथियार डाल देने पड़े। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेवा नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोड़ों मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुख़ारीः 4966)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ①

1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।[1]

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ②

2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।[2]

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ③

3. निः संदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।[3]

---

1 कौसर का अर्थ हैः असीम तथा अपार शुभ।
और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि कौसर एक हौज़ (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जल दूध से उजला और मधु से अधिक मधुर होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी, उस की सीमा और बर्तनों का सविस्तार वर्णन हदीसों में आया है।

2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करो और बली भी उसी के लिये दो। मूर्ति पूजकों की भाँति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हे कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।

3 आयत नं॰ 3 में "अब्तर": का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ हैः जड़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पेड़ सूख जाता है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये, या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये, और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा न हो। इस आयत में जो भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव संसार को इस्लाम और क़ुर्आन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)

सूरह काफ़िरून[1]- 109

सूरह काफ़िरून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((काफ़िरून)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को निर्देश दिया गया है कि काफ़िरों से कह दें कि वंदना (उपासना) के विषय में मुझ में और तुम में क्या अन्तर है?
- आयत 4 से 5 तक में यह ऐलान है कि दीन (धर्म) के विषय में कोई समझौता और उदारता असंभव है।
- आयत 6 में काफ़िरों के धर्म से अप्रसन्न (विमुख) होने का ऐलान है।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तवाफ़ की दो रक्अत में यह सूरह और सूरह इख़्लास पढ़ी थी। (सहीह मुस्लिमः 1218)

बِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْكَٰفِرُونَ ۝١

1. (हे नबी) कह दोः हे काफ़िरो!

لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝٢

2. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें

1 यह सूरह भी मक्की है। इस सूरह की भूमिका यह है कि मक्का में यद्यपि इस्लाम का कड़ा विरोध हो रहा था फिर भी अभी मूर्ति पूजक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निराश नहीं हुये थे। और उन के प्रमुख किसी न किसी प्रकार आप को संधि के लिये तैयार कर रहे थे। और आप के पास समय समय से अनेक प्रस्ताव लेकर आया करते थे। अन्त में यह प्रस्ताव लेकर आये किः एक वर्ष आप हमारे पूजितों (लात, उज़्ज़ा आदि) की पूजा करें, और एक वर्ष हम आप के पूज्य की पूजा करें। और इसी पर संधि हो जाये। उसी समय यह सूरह अवतीर्ण हुई, और सदा के लिये बता दिया गया कि दीन में कोई समझौता नहीं हो सकता है। इसीलिये हदीस में इसे शिर्क से रक्षा की सूरह कहा गया है।

तुम पूजते हो।

3. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۟

4. और न मैं उसे पूजुँगा जिसे तुम पूजते हो।

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۟

5. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۟

6. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।[1]

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۟

---

1 (1-6) पूरी सूरह का भावार्थ यह है कि इस्लाम में वही ईमान (विश्वास) मान्य है जो पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ हो, अर्थात अल्लाह के अस्तित्व तथा गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी न बनाया जाये। कुर्आन की शिक्षानुसार जो अल्लाह को नहीं मानता, और जो मानता है परन्तु उस के साथ देवी देवताओं को भी मानता है तो दोनों में कोई अन्तर नहीं। उस के विशेष गुणों को किसी अन्य मे मानना उस को न मानने के ही बराबर है और दोनों ही काफ़िर हैं। (देखियेः उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह नस्र[1] - 110

सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((नस्र)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ सहायता है, इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 में अल्लाह की सहायता आने तथा मक्का की विजय की चर्चा है।
- आयत 2 में लोगों के समुहों में इस्लाम लाने की चर्चा है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का यह प्रदान प्राप्त होने पर उस की और अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।
- हदीस में है कि इस सूरह के उतरने के पश्चात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी नमाज़ (के रुकूअ और सज्दे) में अधिक्तर ((सुब्हानका रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली)) पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारीः 4967, 4968)

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

إِذَا جَآءَ نَصۡرُ ٱللَّهِ وَٱلۡفَتۡحُ ١

1. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता एंव विजय आ जाये।

1 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि यह कुर्आन की अन्तिम सूरह है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरी। इस सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भविष्य वाणी के रूप में बताया गया है कि जब इस्लाम की पूर्ण विजय हो जाये, और लोग समूहों के साथ इस्लाम में प्रवेश करने लगें तो आप अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पवित्रता का वर्णन) करने में लग जायें। और उस से क्षमा माँगते रहें।

2. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल के दल प्रवेश करते देख लो।[1]

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢

3. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।[2]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

---

1 (1-2) इस में विजय का अर्थ वह निर्णायक विजय है जिस के बाद कोई शक्ति इस्लाम का सामना करने के योग्य नहीं रह जायेगी। और यह स्थिति सन् 8 (हिज्री) की है जब मक्का विजय हो गया। अरब के कोने कोने से प्रतिनिधि मंडल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम लाने लगे। और सन् 10 (हिज्री) में जब आप (हज्जतुल वदाअ) (अर्थातः अन्तिम हज्ज) के लिये गये तो उस समय पूरा अरब इस्लाम के आधीन आ चुका था और देश में कोई मुश्रिक (मूर्ति पूजक) नहीं रह गया था।

2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा गया है कि इतना बड़ा काम आप ने अल्लाह की दया से पूरा किया है, इस के लिये उस की प्रशंसा और पवित्रता का वर्णन तथा उस की कृतज्ञता व्यक्त करें। इस में सभी के लिये यह शिक्षा है कि कोई पुण्य कार्य अल्लाह की दया के बिना नहीं होता। इसलिये उस पर घमंड नहीं करना चाहिये।

सूरह तब्बत[1]- 111

सूरह तब्बत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में (तब्बत) शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह तब्बत) है। जिस का अर्थ तबाह होना है।[1]
- आयत 1 से 3 तक में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयत 4 और 5 में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप अपने समीप के परिजनों को डरायें तो आप ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहाः यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहाः हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहाः मैं तुम्हें अपने सामने की दुःखदायी

---

1 यह सूरह आरंभिक मक्की सूरतों में से है। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से डरायें, तो आप सफ़ा "पहाड़ी" पर गये, और पुकाराः "हाय भोर की आपदा!" यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहाः यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को तैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहाः हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आज़माया। आप ने फ़रमायाः मैं तुम्हें आग (नर्क) की बड़ी यातना से सावधान करता हूँ। इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा "अबु लहब" ने कहाः तुम्हारा सत्यानास हो! क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है?
और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यह सूरह उतारी गई। (देखियेः सहीह बुख़ारीः 4971, और सहीह मुस्लिमः 208)

यातना से डरा रहा हूँ। इस पर अबू जहल ने कहाः तुम्हारा नाश हो! क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारीः 4971)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये, और वह स्वंय भी नाश हो गया![1]

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١

2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया उस के काम नहीं आया।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢

3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में जायेगा।[2]

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣

4. तथा उस की पत्नी भी, जो ईंधन

وَّامْرَاَتُهٗ ۗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤

1 अबु लहब का अर्थः ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गोरा था। उस का नाम वास्तव में "अब्दुल उज़्ज़ा" था, अर्थातः उज़्ज़ा का भक्त और दास। "उज़्ज़ा" उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये कुर्आन ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के नर्क की ज्वाला में पड़ने का संकेत भी है।

2 (1-2) यह आयतें उस की इस्लाम को दबाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी हैं। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि "बद्र" की लड़ाई में मक्के के बड़े बड़े वीर प्रमुख मारे गये। और "अबु लहब" को इस ख़बर से इतना दुख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) की बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोई उस के पास नहीं जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पड़ा रहा। और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लकड़ी से एक गढ़े में डाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिये गये। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और जैसा कि आयत नं॰ 2 में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने "उस की संतान" लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी संतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

लिये फिरती है।

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ﴿٥﴾

5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।[1]

---

1 (1-5) अबु लहब की पत्नी का नाम "अरवा" था। और उस की उपाधि (कुनियत) "उम्मे जमील" थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।
लकड़ी लादने का अर्थ भाष्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का बोझ लाद रखने के अर्थ में है।
वह सोने का हार पहनती थी और "लात" तथा "उज़्ज़ा" की शपथ ले कर -यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं- कहा करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर ख़र्च कर दूँगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवान व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पड़ा हुआ है परन्तु आख़िरत में वह ईंधन ढोने वाली लौंडी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई मूंज की रस्सी पड़ी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लौंडियों के गले में पड़ी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस "अबु लहब" और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलादः "उत्बा", "मुअत्तब", तथा "दुरह" ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सूरह इख़्लास[1] - 112

सूरह इख़्लास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इख़्लास का अर्थ है अल्लाह की शुद्ध इबादत (वंदना) करना। इसी का दूसरा नाम तौहीद (अद्वैत) है, इस सूरह में तौहीद का वर्णन है, इसी लिये इस का यह नाम है। [1]

---

1 यह सूरह मक्की सूरतों में से है।
यद्यपि इस के उतरने से संबंधित रिवायत से लगता है कि यह सूरह मदीने में उस समय उतरी जब मदीने के यहूदियों ने आप से प्रश्न किया कि बताइये कि वह पालनहार कैसा है जिस ने आप को भेजा है? या यह कि "नजरान" के ईसाईयों ने इसी प्रकार का प्रश्न किया कि वह कैसा है, और किस धातु का बना हुआ है? तो यह सूरह उतरी। परन्तु सब से पहले यह प्रश्न स्वयं मक्का वासियों ने ही किया था। इसलिये इसे मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में गणना किया जाता है।
इस का नाम "सूरह इख़्लास" है। इख़्लास का अर्थ हैः अल्लाह पर ऐसे ईमान लाना कि उस के अस्तित्व और गुणों में किसी की साझेदारी की कोई आभा (झलक) न पाई जाये। और इसी को तौहीदे ख़ालिस (निर्मल ऐकेश्वरवाद) कहते हैं।
जहाँ तक अल्लाह को मानने की बात है तो संसार ने सदा उस को माना है परन्तु वास्तव में इस मानने में ऐसा मिश्रण भी किया है कि मानना और न मानना दोनों बराबर हो कर रह गये हैं। तौहीद को उजागर करने के लिये अल्लाह ने बराबर नबी भेजे परन्तु इन्सान बार बार इस तथ्य को खोता रहा। आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के लिये प्रस्थान किया, और अपने परिवार को एक बंजर वादी में बसाया कि वह मात्र एक अल्लाह की पूजा करेंगे। परन्तु उन्हीं के वंशज ने उन के बनाये तौहीद के केन्द्र अल्लाह के घर कॉबा को एक देव स्थल में बदल दिया। तथा अपने बनाये हुये देवताओं का अधिकार माने बिना अल्लाह के अधिकार को स्वीकार करने के लिये तैयार न थे। यह स्थिति मात्र मक्का वासियों की न थी, ईसाई और यहूदी भी यद्यपि तौहीद के दावेदार थे फिर भी उन के यहाँ तीन पूज्योंः पिता, पुत्र और पविगात्मा के योग से तौहीद बनी थी। यहूदियों के यहाँ भी अल्लाह का पुत्रः उज़ैर अवश्य था। कहीं पूज्य एक तो था परन्तु बहुत से देवी देवता भी उस के साथ पूज्य थे। (देखियेः उम्मुल किताब)

- इस की आयत 1,2 में अल्लाह के सकारात्मक गुणों को और आयत 3,4 में नकारात्मक गुणों को बताया गया है ताकि धर्मों और जातियों में जिस राह से शिर्क आया है उसे रोका जा सके। हदीस में है कि अल्लाह ने कहा कि मनुष्य ने मुझे झुठला दिया। और यह उस के लिये योग्य नहीं था। ओर मुझे गाली दी, और यह उस के लिये योग्य नहीं था। उस का मुझे झुठलाना उस का यह कहना है कि अल्लाह ने जैसे मुझे प्रथम बार पैदा किया है दोबारा नहीं पैदा कर सकेगा। जब कि प्रथम बार पैदा करना मेरे लिये दोबारा पैदा करने से सरल नहीं था। और उस का मुझे गाली देना यह है कि उस ने कहा कि अल्लाह के संतान है। जब कि मैं अकेला निर्पेक्ष हूँ। न मेरी कोई संतान है और न मैं किसी की संतान हूँ। और न कोई मेरा समकक्ष है। (सहीह बुख़ारी- 4974)
- सहीह हदीस में है कि यह सूरह तिहाई कुर्आन के बराबर है। (सहीह बुख़ारीः 5015, सहीह मुस्लिमः 811)
- एक दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा कि, हे अल्लाह के रसूल! मैं इस सूरह से प्रेम करता हूँ। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः तुम्हें इस का प्रेम स्वर्ग में प्रवेश करा देगा। (सहीह बुख़ारीः 774)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. (हे ईश दूत!) कह दोः अल्लाह अकेला है।[1]

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝

1 आयत नं॰ 1 में "अहद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ हैः उस के अस्तित्व एंव गुणों में कोई साझी नहीं है। यहाँ "अहद" शब्द का प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि वह अकेला है। वह वृक्ष के समान एक नहीं है जिस के अनेक शाखायें होती हैं।
आयत नं॰ 2 मे "समद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ हैः अब्रण होना। अर्थात जिस में कोई छिद्र न हो जिस से कुछ निकले, या वह किसी से निकले। और आयत नं॰ 3 इसी अर्थ की व्याख्या करती है कि न उस की कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

2. अल्लाह निःछिद्र है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾

3. न उस की कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ﴿٣﴾

4. और न उस के बराबर कोई है।[1]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

---

1 इस आयत में यह बताया गया है कि उस की प्रतिमा तथा उस के बराबर और सम्तुल्य कोई नहीं है। उस के कर्म, गुण, और अधिकार में कोई किसी रूप में बराबर नहीं। न उस की कोई जाति है न परिवार।
इन आयतों में कुर्आन उन बिष्यों को जो जातियों के तौहीद से फिसलने का कारण बने उसे अनेक रूप में वर्णित करता है। और देवियों और देवताओं के विवाहों और उन के पुत्र और पौत्रों का जो विवरण देव मालावों में मिलता है कुर्आन ने उसी का खण्डन किया है।

सूरह फ़लक़[1] - 113

सूरह फ़लक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((फ़लक़)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ भोर है, इस का यह नाम रखा गया है।[1]

---

1 सूरह "फ़लक़" और सूरह "नास" को मिला कर "मुअव्वज़तैन" कहा जाता है। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः आज की रात्री में मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैं ने कभी नहीं देखी। (मुस्लिमः 814)
इसी प्रकार इब्ने आबिस जुहनी (रजियल्लाहु अन्हु) से आप ने फ़रमाया किः मैं तुम्हें उत्तम यंत्र न बताऊँ जिस के द्वारा शरण (पनाह) माँगी जाती है? और आप ने यह दोनों सूरतें बतायीं, और कहा कि यह "मुअव्वज़तैन" अर्थात शरण माँगने के लिये दो सूरतें हैं। (देखियेः सहीह नसईः 5020)
जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जादू किया गया जिस का प्रभाव यह हुआ कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम को सोचते कि कर लिया है, और किया नहीं होता था, किसी वस्तु को देखा है जब कि देखा नहीं होता था। परन्तु जादू का यह प्रभाव आप के व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित था।
एक दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी पत्नी "आइशा" (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास थे कि सो गये, और जागे तो उन को बताया की दो व्यक्ति (फ़रिश्ते) मेरे पास आये, एक सिराहने की ओर था, और दूसरा पैताने की ओर। एक ने पूछाः इन्हें क्या हुआ है? दूसरे ने उत्तर दियाः इन पर जादू हुआ है। उस ने पूछाः किस ने किया है? उत्तर दियाः "लबीद बिन आसम" ने। पूछाः किस वस्तु में किया है? उत्तर दियाः कंघी, बाल और नर खजूर के ख़ोशे में। पूछाः वह कहाँ है? उत्तर दियाः बनी ज़ुरैक़ के कुवें की तह में पत्थर के नीचे है। इस के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अली, अम्मार और ज़ुबैर (रजियल्लाहु अन्हुम) को भेजा, फिर आप भी वहाँ आ गये, पानी निकाला गया, फिर जादू जिस में कंघी के दाँतों और बालों के साथ एक ताँत में ग्यारह गाँठ लगी हुई थीं। और मोम का एक पुतला था जिस में सुईयाँ चुभोई हुई थीं। आदर्णीय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आ कर बताया किः आप "मुअव्वज़तैन" पढ़ें। और जैसे जैसे आप पढ़ते जा रहे थे उसी के साथ एक एक गाँठ खुलती और पुतले से एक एक सुई निकलती जा रही थी, और अन्त के साथ ही आप जादू से इस प्रकार निकल गये जैसे कोई बंधा हुआ खुल जाता है। (देखियेः सहीह

- इस की आयत 1 में यह शिक्षा दी गई है कि शरण उस से माँगो जिस के पालनहार होने की निशानी तुम रात दिन देख रहे हो।
- आयत 2 से 5 तक में यह बताया गया है कि किन चीज़ों की बुराई से शरण माँगनी चाहिये।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि इस रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें अवतरित हुई हैं जिन के समान आयतें कभी नहीं देखी गईं। वह यह सूरह, और इस के पश्चात् की सूरह है। (सहीह मुस्लिमः 814)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١

1. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।

مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢

2. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।

وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣

3. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अंधेरा छा जाये।[1]

बुख़ारीः 5766, तथा सहीह मुस्लिमः 2189)
फिर आप ने "लबीद" को बुला कर पूछा, और उस ने अपना दोष स्वीकार कर लिया। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को क्षमा कर दिया और फ़रमाया किः अल्लाह ने मुझे स्वस्थ कर दिया है।
हदीसों से यह सिद्ध होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर रात्री में सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अपने दोनों हाथों पर फूँकते फिर अपने दोनों हाथों को अपने पूरे शरीर पर फेरते थे।
मानो अल्लाह तआला ने इन अन्तिम दो सूरतों द्वारा जादू और अन्य बुराईयों से बचाव का एक साधन भी दे दिया जो सदा मुसलमानों की जादू तंत्र आदि से रक्षा करता रहेगा।

1 (1-3) इन में संबोधित तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है, परन्तु आप के माध्यम से पूरे मुसलमानों के लिये संबोधन है। शरण माँगने के लिये तीन बातें ज़रूरी हैंः (1) शरण माँगना। (2) जो शरण माँगता हो। (3)

4. तथा गांठ लगा कर उन में फूँकने वालियों की बुराई से। وَمِنۡ شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي ٱلۡعُقَدِ ۝٤

5. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब वह द्वेष करे।[1] وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥

जिस के भय से शरण माँगी जाती हो। और अपने को उस से बचाने के लिये दूसरे की सुरक्षा और शरण में जाना चाहता हो। फिर शरण वही माँगता है जो यह सोचता है किः वह स्वंय अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और अपनी रक्षा के लिये वह ऐसे व्यक्ति या अस्तित्व की शरण लेता है जिस के बारे में उस का यह विश्वास होता है कि वह उस की रक्षा कर सकता है। अब स्वभाविक नियमानुसार इस संसार में सुरक्षा किसी वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त की जाती है जैसे धूप से बचने के लिये पेड़ या भवन आदि की। परन्तु एक ख़तरा वह भी होता है जिस से रक्षा के लिये किसी अनदेखी शक्ति से शरण माँगी जाती है जो इस विश्व पर राज करती है। और वह उस की रक्षा अवश्य कर सकती है। यही दूसरे प्रकार की शरण है जो इन दोनों सूरतों में अभिप्रेत है। और क़ुर्आन में जहाँ भी अल्लाह की शरण लेने की चर्चा है उस का अर्थ यही विशेष प्रकार की शरण है। और यह तौहीद पर विश्वास का अंश है। ऐसे ही शरण के लिये विश्वास हीन देवी देवताओं इत्यादि को पुकारना शिर्क और घोर पाप है।

1 (4-5) इन दोनों आयतों में जादू और डाह की बुराई से अल्लाह की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। और डाह ऐसा रोग है जो किसी व्यक्ति को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिये तैयार कर देता है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी जादू डाह के कारण ही किया गया था। यहाँ ज्ञातव्य है कि इस्लाम ने जादू को अधर्म कहा है जिस से इन्सान के परलोक का विनाश हो जाता है।

सूरह नास[1]- 114

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है। जिस का अर्थ इन्सान है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्न तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब बिस्तर पर जाते तो सूरह इख़्लास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थातः फ़लक़) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुख़ारीः 6319, 5748)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।

مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾

2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।

إِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾

3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।[2]

---

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1-3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤

4. भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।

الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝٥

5. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

6. जो जिन्नों में से है, और मनुष्यों में से भी।[1]

लेने की शिक्षा दी गई है। एक उस का सब मानव जाति पालनहार और स्वामी होना। दूसरे उस का सभी इन्सानों का अधिपति और शासक होना। तीसरे उस का इन्सानों का सत्य पूज्य होना।

भावार्थ यह है कि उस अल्लाह की शरण माँगता हूँ जो इन्सानों का पालनहार शासक और पूज्य होने के कारण उन पर पूरा नियंत्रण और अधिकार रखता है। जो वास्तव में उस बुराई से इन्सानों को बचा सकता है जिस से स्वंय बचने और दूसरों को बचाने में सक्षम है उस के सिवा कोई है भी नहीं जो शरण दे सकता हो।

1 (4-6) आयत नं॰ 4 में "वस्वास" शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: दिलों में ऐसी बुरी बातें डाल देना कि जिस के दिल में डाली जा रही हों उसे उस का ज्ञान भी न हो।

और इसी प्रकार आयत नं॰ 4 में "ख़न्नास" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: सुकड़ जाना, छुप जाना, पीछे हट जाना, धीरे धीरे किसी को बुराई के लिये तैयार करना आदि।

अर्थात् दिलों में भ्रम डालने वाला, और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें उत्पन्न करने वाला। चाहे वह जिन्नों में से हो, अथवा मनुष्यों में से हो। इन सब की बुराइयों से हम अल्लाह की शरण लेते हैं जो हमारा स्वामी और सच्चा पूज्य है।

فهرس بأسماء السور
सूरतों की सूची
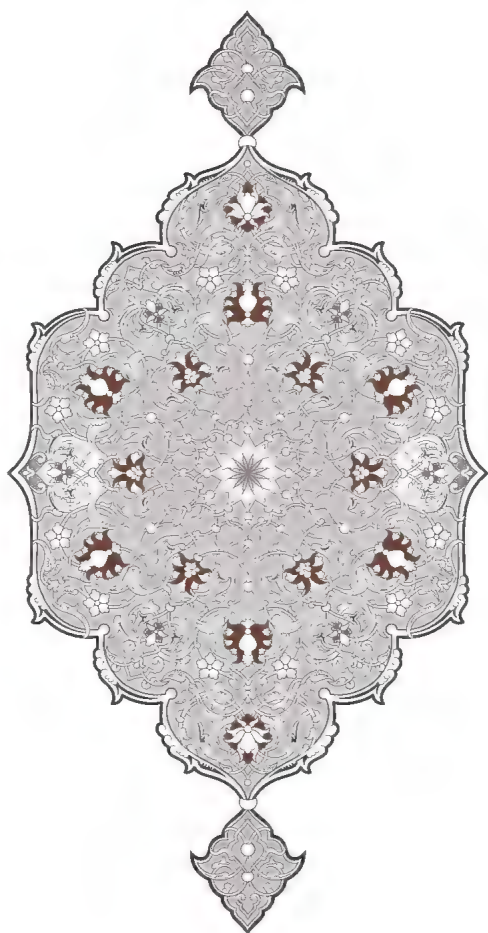
कमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
1	फ़ातिहा	1	الفاتحة
2	बक़रह	5	البقرة
3	आले इमरान	92	آل عمران
4	निसा	142	النساء
5	माइदा	197	المائدة
6	अन्आम	238	الأنعام
7	आराफ़	285	الأعراف
8	अन्फ़ाल	335	الأنفال
9	तौबा	355	التوبة
10	यूनुस	391	يونس
11	हूद	415	هود
12	यूसुफ़	442	يوسف
13	रअद	467	الرعد
14	इब्राहीम	480	إبراهيم
15	हिज्र	492	الحجر
16	नह्ल	505	النحل
17	बनी इस्राईल	532	بني إسرائيل
18	कहफ़	557	الكهف
19	मर्यम	580	مريم
20	ता-हा	596	طه
21	अम्बिया	617	الأنبياء
22	हज्ज	637	الحج
23	मुमिनून	656	المؤمنون
24	नूर	672	النور
25	फ़ुर्क़ान	692	الفرقان
26	शुअरा	706	الشعراء
27	नम्ल	730	النمل

कमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
28	क़सस	747	القصص
29	अन्कबूत	766	العنكبوت
30	रूम	781	الروم
31	लुक़मान	794	لقمان
32	सज्दा	803	السجدة
33	अहज़ाब	809	الأحزاب
34	सबा	829	سبإ
35	फ़ातिर	843	فاطر
36	यासीन	854	يس
37	साफ़्फ़ात	866	الصافات
38	साद	883	ص
39	ज़ुमर	895	الزمر
40	मुमिन	912	المؤمن
41	हा मीम सज्दा	929	حم السجدة
42	शूरा	942	الشورى
43	ज़ुख़रुफ़	956	الزخرف
44	दुख़ान	971	الدخان
45	जासियह	979	الجاثية
46	अहक़ाफ़	987	الأحقاف
47	मुहम्मद	998	محمد
48	फ़त्ह	1007	الفتح
49	हुजुरात	1018	الحجرات
50	क़ाफ़	1026	ق
51	ज़ारियात	1033	الذاريات
52	तूर	1041	الطور
53	नज्म	1048	النجم
54	क़मर	1056	القمر
55	रहमान	1063	الرحمن
56	वाक़िआ	1071	الواقعة

कमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
57	हदीद	1079	الحديد
58	मुजादला	1088	المجادلة
59	हश्र	1095	الحشر
60	मुम्तहिना	1103	الممتحنة
61	सफ़्फ़	1110	الصف
62	जुमुआ	1114	الجمعة
63	मुनाफ़िकून	1118	المنافقون
64	तग़ाबुन	1122	التغابن
65	तलाक़	1127	الطلاق
66	तहरीम	1132	التحريم
67	मुल्क	1137	الملك
68	क़लम	1143	القلم
69	हाक़्क़ा	1150	الحاقة
70	मआरिज	1156	المعارج
71	नूह	1161	نوح
72	जिन्न	1165	الجن
73	मुज़्ज़म्मिल	1170	المزمل
74	मुद्दस्सिर	1174	المدثر
75	क़ियामा	1180	القيامة
76	दहर	1185	الدهر
77	मुर्सलात	1190	المرسلات
78	नबा	1195	النبإ
79	नाज़िआत	1200	النازعات
80	अबस	1205	عبس
81	तक्वीर	1210	التكوير
82	इन्फ़ितार	1214	الانفطار
83	मुतफ़्फ़िफ़ीन	1217	المطففين
84	इन्शिक़ाक़	1221	الانشقاق
85	बुरूज	1224	البروج

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
86	तारिक	1228	الطارق
87	ऑला	1231	الأعلى
88	ग़ाशियह	1235	الغاشية
89	फ़ज्र	1238	الفجر
90	बलद	1242	البلد
91	शम्स	1246	الشمس
92	लैल	1249	الليل
93	ज़ुहा	1253	الضحى
94	श्रह	1256	الشرح
95	तीन	1259	التين
96	अलक	1261	العلق
97	क़द्र	1265	القدر
98	बय्यिनह	1267	البينة
99	ज़िलज़ाल	1270	الزلزال
100	आदियात	1272	العاديات
101	क़ारिअह	1274	القارعة
102	तकासुर	1276	التكاثر
103	अस्र	1278	العصر
104	हुमज़ह	1280	الهمزة
105	फ़ील	1282	الفيل
106	क़ुरैश	1284	قريش
107	माऊन	1286	الماعون
108	कौसर	1288	الكوثر
109	काफ़िरून	1290	الكافرون
110	नस्र	1292	النصر
111	तब्बत	1294	تبت
112	इख़्लास	1297	الإخلاص
113	फ़लक़	1300	الفلق
114	नास	1303	الناس

إنّ وزارة الشؤون الإسلاميّة والدّعوة والإرشاد

في المملكة العربيّة السّعوديّة

المشرفة على مجمّع الملك فهد

لطباعة المصحف الشّريف في المدينة المنوّرة

إذ يسرُّها أن يُصدر المجمّعُ هذه الطّبعة من القرآن الكريم

وترجمة معانيه وتفسيره إلى اللّغة الهنديّة

تسأل الله أن ينفع بها النّاس

وأن يجزي

خادم الحرمين الشّريفين الملك سلمان بن عبد العزيز آل سعود

أحسن الجزاء على جهوده العظيمة في نشر كتاب الله الكريم

والله وليُّ التوفيق

इस्लामी उमूर, तथा दावत और इर्शाद मंत्रालय, सऊदी अरब, जो किंग फहद कुर्आन परिन्टिन्ग कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, पर निरिक्षक है, को कुर्आन पाक और उस के अर्थों का हिन्दी अनुवाद और व्याख्या को छापते हुऐ अति प्रसन्नता हो रही है। वह अल्लाह तआला से दुआ करता है कि इस से लोगों को लाभ पहुँचे। और हरमैन शरीफ़ैन के सेवक किंग सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद को कुर्आन पाक के प्रचार करने में उन के महान् प्रयासों पर बहुत ही अच्छा प्रत्युपकार दे।

بعون الله وتوفيقه
تم طبع هذا المصحف الشريف
وترجمة معانيه في مجمع الملك فهد
لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة
بإشراف وزارة الشؤون الإسلامية
والدعوة والإرشاد في المملكة
العربية السعودية
عام ١٤٤٠هـ
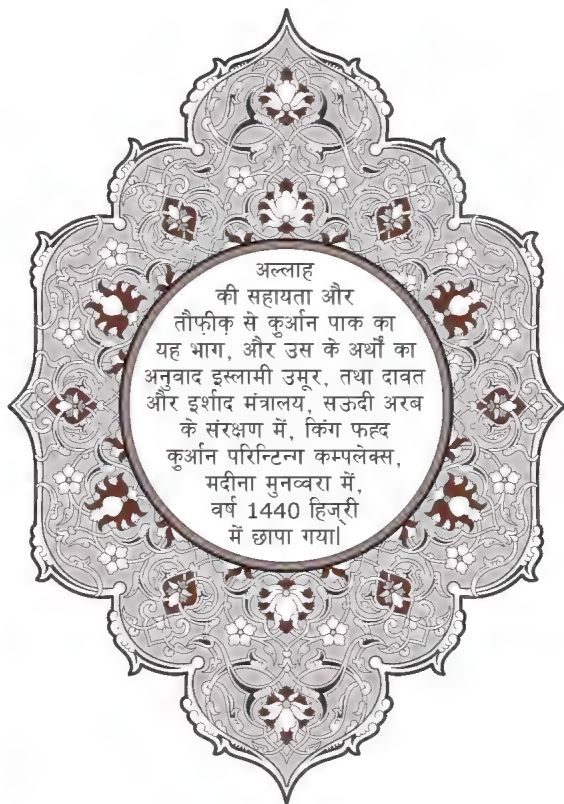
अल्लाह
की सहायता और
तौफ़ीक़ से कुर्आन पाक का
यह भाग, और उस के अर्थों का
अनुवाद इस्लामी उमूर, तथा दावत
और इर्शाद मंत्रालय, सऊदी अरब
के संरक्षण में, किंग फह्द
कुर्आन परिन्टिन्ग कम्पलेक्स,
मदीना मुनव्वरा में,
वर्ष 1440 हिज्री
में छापा गया।